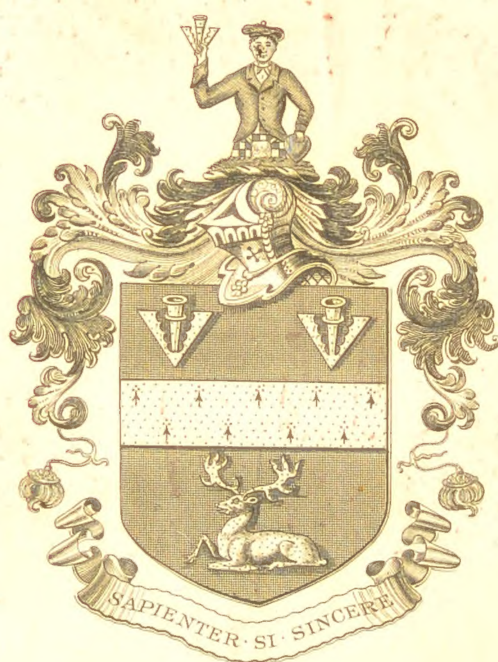



SAPIENTER · SI · SINCERE

ΙΩΑΝΝΟΥ ΣΤΟΒΑΙΟΥ
ΑΝΘΟΛΟΓΙΟΝ.

JOANNIS STOBÆI
FLORILEGIUM.

AD MANUSCRIPTORUM FIDEM EMENDAVIT ET SUPPLEVIT

THOMAS GAISFORD, A.M.

GRÆCÆ LINGUÆ PROFESSOR REGIUS.

VOL. II.



OXONII,

E TYPOGRAPHEO CLARENDONIANO.

MDCCCXXII.

ΙΩΑΝΝΟΥ ΣΤΟΒΑΙΟΥ

ΑΝΘΟΛΟΓΙΟΝ.

ΠΕΡΙ ΦΙΛΟΠΟΝΙΑΣ ΚΑΙ ΜΕΛΕΤΗΣ, ΚΑΙ ΟΤΙ ΑΣΥΜΦΟΡΟΝ ΤΟ ΟΚΝΕΙΝ. ΚΘ. 198

1 [a] Σοφοκλέους Θυέστῃ.

ΩΣ νῦν τάχος στείχωμεν· οὐ γάρ ἐσθ' ὅπως
σπουδῆς δικαίας μῶμος ἅπτεταί ποτε.

2 [a] Ἡσιόδου Ἔργων.

Εἰς ἕτερον γάρ τίς τε ἰδὼν ἔργοιο χατίζων
πλούσιον, ὃς σπεύδει μὲν [b] ἀρόμμεναι, ἠδὲ φυτεύειν,
οἶκόν τ' εὖ θέσθαι· ζηλοῖ δέ τε γείτονα γείτων
εἰς ἄφενος [c] σπεύδοντ'. ἀγαθὴ δ' ἔρις ἥδε βροτοῖσι.

3 [a] Ἐν ταυτῷ.

[b] Ἐξ ἔργων δ' ἄνδρες πολύμηλοί τ' ἀφνειοί τε.
[c] καί τ' ἐργαζόμενος πολὺ φίλτερος ἀθανάτοισιν.
[d] ἔργον δ' οὐδὲν ὄνειδος, ἀεργίη δέ τ' ὄνειδος.
εἰ δέ κεν ἐργάζῃ, τάχα σε ζηλώσει ἀεργὸς
πλουτεῦντα· πλούτῳ δ' ἀρετὴ καὶ κῦδος [e] ὀπηδεῖ.

1.
[a] Sic A. Sc. Fr. 2. Simpl. Σοφοκλέους Trinc.

2.
[a] Sic A. Scil. v. 21. Simpl. Ἡσιόδου Trinc.
[b] ἀρόμμεναι] ἀρόμεναι A. Trinc.
[c] σπεύδοντ'] σπεύδων A. σπεύδονθ' Trinc.

3.
[a] Sic A. Scil. v. 306.
[b] ἔργων τ'] ἔργων δ' A.
[c] καί τ'] καὶ τῶν A.
[d] ἔργον] ἔργων A.
[e] ὀπηδεῖ] ὀπηδῆ B. ὀποιδεῖ Trinc.

4 [a] Ἐν ταυτῷ.

Αἰδὼς δ' οὐκ ἀγαθὴ κεχρημένον ἄνδρα [b] κομίζει,
αἰδὼς, ἥ τ' ἄνδρας μέγα σίνεται ἠδ' ὀνίνησιν.
αἰδώς τοι [c] πρὸς ἀνολβίην, θάρσος δὲ πρὸς ὄλβον.
χρήματα δ' οὐχ ἁρπακτὰ, θεόσδοτα, πολλὸν ἀμείνω.

5 [a] Εὐριπίδου Ἡρακλειδῶν.

Ἁ δ' ἀρετὰ βαίνει διὰ μόχθων.

6 [a] Τοῦ αὐτοῦ Ἰφιγενείας.

Τοὺς πόνους γὰρ [b] ἁγαθοὶ
τολμῶσι, δειλοὶ δ' εἰσὶν οὐδὲν οὐδαμοῦ. 50

7 [a] Εὐριπίδης Λικυμνίῳ.

Πόνος γὰρ, ὡς λέγουσιν, εὐκλείας πατήρ.

8 [a] Ἐπιχάρμου.

Τῶν πόνων πωλοῦσιν ἡμῖν πάντα τἀγάθ' οἱ θεοί.

9 [a] Εὐριπίδου Τηλέφου.

Μοχθεῖν ἀνάγκη τοὺς θέλοντας εὐτυχεῖν.

10 [a] Κριτίου.

Ἐκ μελέτης πλείους, ἢ φύσεως, ἀγαθοί.

11 [a] Εὐριπίδου Ἐρεχθέως.

Ἐκ τῶν πόνων τοι τἀγάθ' αὔξεται βροτοῖς.

12 [a] Ἀναξανδρίδου.

Τὸ συνεχὲς ἔργον παντὸς εὑρίσκει τέλος.

4.

[a] Sic A. Scil. v. 315.
[b] κομίζει] κομίζειν A. p. m.
[c] ἀνολβίην—ὄλβον] ἀνολβίῃ—ὄλβῳ A.

5.

[a] Sic A. Scil. v. 626.

6.

[a] Sic A. Scil. Taur. 114.
[b] οἱ 'γαθοὶ] ἀγαθοὶ A. Trinc.

7.

[a] Sic A. Scil. Fr. 2.

8.

[a] Sic A.

9.

[a] Sic A. Scil. Fr. 18. Κριτίου Trinc.

10.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

11.

[a] Sic A. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

12.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

13 [a] Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.

Σοὶ δ' εἶπον, ὦ παῖ, τὰς τύχας ἐκ τῶν πόνων
θηρᾶν· ὁρᾷς γὰρ σὸν πατέρα τιμώμενον. 199

14 [a] Εὐριπίδου Ἀρχελάου.

Οὐκ ἔστιν ὅστις ἡδέως ζητῶν βιοῦν
εὔκλειαν εἰσεκτήσατ', ἀλλὰ χρὴ πονεῖν.

15 [a] Τοῦ αὐτοῦ Φιλοκτήτῃ.

[b] Τοὺς γὰρ περισσοὺς, καί τι πράττοντας πλέον
τιμῶμεν, ἄνδρας τ' ἐν πόλει νομίζομεν.

16 [a] Ὀκνῶ δὲ μόχθων τῶν πρὶν [b] ἐκχέαι χάριν.

17 [a] Μενάνδρου.

Δεῖ τοὺς [b] γενομένους, [c] μέχρις ἂν ζῶσιν, πονεῖν.
ἀπραξία γὰρ λιτὸν οὐ τρέφει βίον.

18 [a] Ἡσιόδου Ἔργων.

Εἰ γάρ κεν καὶ σμικρὸν ἐπὶ σμικρῷ καταθεῖο,
καὶ θαμὰ τοῦτ' ἔρδοις, τάχα κεν μέγα καὶ τὸ γένοιτο.

19 [a] Μενάνδρου.

Πάντα γὰρ
ταῖς [b] ἐντελεχείαις καταπονεῖται πράγματα.

13.

[a] Sic B. et Gesner. Deest lemma Trinc. locus A.

14.

[a] Sic A. Scil. Fr. 30. Deest lemma Trinc.

15.

[a] Sic B. Scil. Fr. I. 5. Deest lemma Trinc. locus A.

[b] τοὺς γὰρ] Sunt ex Philoctete Euripidis. Grotius nott. mss. Vide Valcken. Diatr. p. 117. sq.

16.

[a] Deest locus A. Præcedenti fragmento cohæret Trinc. B.

[b] ἐκχέας] ἐκχέαι B. et sic em. Grotius in annott. mss. qui observat, "Dion quoque Chrys. "ἐκχέαι legit." Ita etiam T. Canterus probante Valckenær. Diatr. p. 119.

17.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 224.

[b] γινομένους] γενομένους dedit Clericus p. 224. πενομένους Bentleius em. p. 82.

[c] μέχρι] μέχρις A. B.

18.

[a] Sic A. Scil. v. 359. Simpl. Ἡσιόδου Trinc.

19.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 216.

[b] ἐντελεχείαις] ἐνδελεχείαις A. B. Ars.

20 [a] Εὐριπίδου Ἀνδρομέδας.

Εὔκλειαν ἔλαβον οὐκ ἄνευ πολλῶν πόνων.

21 [a] Αἰσχύλου.

Φιλεῖ δὲ τῷ κάμνοντι συσπεύδειν θεός.

22 [a] Εὐριπίδου Ἐρεχθεῖ.

Ἐκ τῶν πόνων τοι τἀγάθ' αὔξεται βροτοῖς.
ὁ δ' ἡδὺς αἰὼν, ἡ κακή τ' ἀτολμία,
οὔτ' οἶκον οὔτε βίοτον οὐδὲν ὠφελεῖ.

23 [a] Εὐριπίδου Κρήσσαις.

Οὐκ ἂν δύναιο μὴ [b] καμὼν εὐδαιμονεῖν,
αἰσχρόν τε μοχθεῖν μὴ θέλειν νεανίαν.

24 [a] Αἰσχύλου.

Καλὸν δὲ καὶ γέροντα μανθάνειν σοφά.

25 [a] Σοφοκλέους Μάντεων.

[b] Οὔτοι ποθ' ἥξει τῶν ἄκρων ἄνευ πόνου.
μοχθεῖν ἀνάγκη τοὺς θέλοντας εὐτυχεῖν.

26 Ἅπαντα τὰ καλὰ τοῦ πονοῦντος γίνεται.

27 Ἅπανθ' ὁ τοῦ ζητοῦντος εὑρίσκει [a] πόνος.

20.

[a] Sic A. Scil. Fr. 9. Deest lemma Trinc.

21.

[a] Sic A. Εὐριπίδου Trinc. Fr. inc. 218. ex Apostolio XIX. 98.

22.

[a] Sic A. Scil. Fr. 10.

23.

[a] Sic A. Scil. Fr. 3.

[b] καμὼν] κακῶν B. m. p.

24.

[a] Sic A. Trinc.

25.

[a] Sic A. Simpl. Σοφοκλέους Trinc. v. Polyidi Fr. 3.

[b] Secundum versum perperam omisit Grotius e Stobæo Gesneri restituendum. Sensum loci vidit Grotius; sed ἥξει τῶν ἄκρων Græcum non est. Censebit aliquis τι interserendum, ego in ποθ' ἥξει latere puto γ' ἐφίξει Attice pro ἐφίξῃ. Æschines p. 81, 9. ἐφικόμενος τῆς ἀνδραγαθίας. Isocrates p. 3. A. τῆς ἀρετῆς ἐφ. p. 198 D. 210 C. Themistius p. 142 C. Julian. p. 132 A. Valcken. Secundus versus tribuitur Euripidi supra n. 9.

27.

[a] πόθος] πόνος leg. pro πόθος, quod habet et Grotius p. 126. Vid. seq. vs. et v. 38. p. 200, 11. &c. simillima. Valcken.

28 [a] Φιλήμονος Καταψευδομένου.

Πάντ᾽ ἐστὶν [b] ἐξευρεῖν, ἐὰν μὴ τὸν πόνον
φεύγῃ τίς, ὃς [c] πρόσεστι τοῖς ζητουμένοις.

29 [a] Ἐκ τοῦ φιλοπονεῖν γίγνεθ᾽ ὧν θέλεις κρατεῖν.

30 [a] Φιλήμονος.

Ὡς ἡδέως μοι γέγονε τὰ [b] πρότερον κακά.
εἰ μὴ τότ᾽ ἐπόνουν, νῦν ἂν οὐκ εὐφραινόμην.

31 [a] Καρκίνου.

Οὐδεὶς ἔπαινον ἡδοναῖς ἐκτήσατο.

32 [a] Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.

Οὐδεὶς γὰρ ὢν ῥᾴθυμος [b] εὐκλεὴς ἀνὴρ,
ἀλλ᾽ οἱ πόνοι τίκτουσι τὴν εὐανδρίαν.

33 [a] Ἀλέξιδος Ἀχαιΐδι.

Ὅτι πάντα τὰ ζητούμεν᾽ ἐξευρίσκεται,
ἂν μὴ προαποστῇς, μηδὲ τὸν πόνον φύγῃς.
ὅπου γὰρ εὑρήκασιν ἄνθρωποί τινες
μέρος τὶ τῶν θείων, τοσούτῳ τῷ τόπῳ
ἀπέχοντες, ἄστρων ἐπιτολὰς, δύσεις, τροπὰς,
ἔκλειψιν ἡλίου· τί [b] τῶν κοινῶν κάτω

28.

[a] Sic A. Cleric. p. 308.

[b] ἐξευρεῖν] εὑρεῖν B. Trinc.

[c] πρόσεστι] πρόσετι Ars.

29.

[a] Deest lemma A. Trinc. Cleric. p. 345.

30.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Cleric. p. 345.

[b] πρότερα] πρότερον A. B. m. s. Et sic Porsonus Adv. p. 159.

31.

[a] Sic A. ubi tamen supra scriptum γρ. Εὐριπίδου. Idem in suo ms. reperisse videtur Gesnerus, qui perperam vertit, *Euripidis in Cancro*. Εὐριπίδου Trinc. Froben. Fr. Alopes 5.

32.

[a] Sic A. Scil. Fr. 7. Deest lemma Trinc.

[b] εὐκλέης] εὐγενὴς suprasc. in A. et sic B. m. sec.

33. γρ. ἀχαιΐδι

[a] Sic Trinc. Ἀλέξιδος ἀχλίδου (sic) A. Ἀλ. ἀχαιΐδι B. *Alexidis in Orchestride* Gesner.

[b] κοινῶν τε καὶ συγγενικῶν] κοινῶν καὶ συγγενικῶν A. γρ. ὅλως κάτω pro κοινῶν B. in marg. κοινῶν καὶ Trinc.

Ib. τῶν συγγενικῶν] Articulo ad-

καὶ συγγενικῶν δύναιτ' [c] ἂν ἄνθρωπον φυγεῖν;

34 [a] Εὐριπίδου Ἱππολύτου.

Τῷ γὰρ πονοῦντι καὶ θεὸς συλλαμβάνει.

35 [a] Θεοδέκτου.

Πολλὰ δεῖ
μοχθεῖν τὸν ἥξοντ' εἰς ἔπαινον εὐκλεῶς.
ῥᾳθυμία δὲ τὴν παραυτίχ' ἡδονὴν
λαβοῦσα, λύπας τῷ χρόνῳ τίκτειν φιλεῖ.

36 [a] Εὐριπίδου Σθενοβοίας.

Ἄνευ τύχης γὰρ, ὥσπερ ἡ παροιμία,
πόνος μονωθεὶς, οὐκέτ' ἀλγύνει βροτούς.

37 [a] Σοφοκλέους.

Μόχθου γὰρ οὐδεὶς τοῦ παρελθόντος λόγος.

38 [a] Σοφοκλέους Λαοκόωντος.

Πόνου μεταλλαχθέντος, οἱ πόνοι γλυκεῖς.

39 [a] Ἀγάθωνος.

Ἰδίας ὁδοὺς ζητοῦσι φιλόπονοι φύσεις.

40 [a] Φιλίσκου.

Οὐκ ἔστιν, ὦ μάταιε, σὺν ῥᾳθυμίᾳ
τὰ τῶν πονούντων μὴ πονήσαντας λαβεῖν.

dito implevi quod versui deerat. Suspicor tamen συγγενῶν potius quam συγγενικῶν a poeta scriptum. Grotius.

[c] ἂν suprasc. in A.

34.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. ubi hic versus legitur post n. 32. Gesnerus utrobique retinuit. Musgravius retulit inter Frag. Temenid. 3. auctoritate nixus Clementis Alex. Strom. VI. p. 621=741. ubi ἐν κτιμένῳ, probantibus, ut videtur, Porsono præf. Eurip. Hec. p. xxxviii. Heynio ad Il. Δ. 249. et addend.

35.

[a] Sic A. Trinc.

36.

[a] Sic A. Scil. Fr. 5. Simpl. Εὐριπίδου. Trinc.

37.

[a] Sic Trinc. Deest locus A. Laocoontis Fr. 4. inseruit Brunckius auctoritate nixus cod. Vindobon.

38.

[a] Sic A. Fr. inc. 17.

39.

[a] Sic A. Trinc.

40.

[a] Sic A. Φιλίσβου Trinc.

41 [a] Ξενοφάνους.

Οὔ τοι ἀπ' ἀρχῆς πάντα θεοὶ θνητοῖς [b] ὑπέδειξαν,
ἀλλὰ χρόνῳ ζητοῦντες ἐφευρίσκουσιν ἄμεινον.

42 [a] Ἱππώνακτος.

Χρόνος δὲ φευγέτω σε μηδὲ εἷς ἀργός.

43 [a] Ἀπολλοδώρου.

Χρόνον γὰρ εἰς τὰ πράγματ' ἐὰν [b] λάβῃς,
ἅπαντα λήξει καὶ κατασταλήσεται.

44 [a] Εὐριπίδου.

Σὺν [b] μυρίοισι τὰ καλὰ γίγνεται πόνοις.

45 [a] Μενάνδρου Δυσκόλου.

Οὐδενὸς χρὴ πράγματος
τὸν εὖ ποιοῦνθ' ὅλως [b] ἀπογνῶναί ποτε.

46 [a] Ἁλωτὰ γίγνετ' ἐπιμελείᾳ καὶ πόνῳ
ἅπαντα.

47 [a] Μενάνδρου Εὐνούχου.

Πάντα τὰ ζητούμενα
δεῖσθαι μερίμνης φασὶν οἱ [b] σοφώτεροι.

41.

[a] Sic A. Ξενοφῶντος Trinc.

[b] ἐπέδειξαν] ὑπέδειξαν A. Voss. Ars.

42.

[a] Sic voluit, credo, Trinc. ubi Ἱππόνα. Deest locus A.

43.

[a] Sic Trinc. Deest locus A.

[b] λάβῃς] λάβῃς βραχὺν B. m. sec. χρόνον γὰρ ἱκανὸν Grotius annott. mss.

44.

[a] Sic Trinc. Sc. Fr. inc. 34. Deest locus A. Archelao tribuit Voss.

[b] μυρίοις] μυρίοισι A. B. Trinc.

45.

[a] Sic A. Simpl. Μενάνδρου Trinc. Cleric. p. 50.

[b] ἀπογνῶναι] ἐπιγνῶναι Voss.

46.

[a] A præcedentibus sejungit Trinc. ubi deest lemma. Deest item lemma A.

[b] ἁλωτὰ] ἁλωτὰ γὰρ A.

47.

[a] Sic A. Cleric. p. 7. Deest lemma Trinc.

[b] σοφώτεροι] σοφώτατοι Clemens. Grotius nott. mss.

48 [a] Σοφοκλέους Οἰδίποδος.

Τὸ ζητούμενον
ἁλωτὸν, ἐκφεύγει [b] δὲ τἀμελούμενον.

49 [a] Εὐριπίδου.

[Ὁρᾷς; ἄβουλος ὡς κεκερτομημένη
[a] τοῖς κερτομοῦσι γοργὸν ὡς ἀναβλέπει]

50 Σὴ πατρίς· ἐν [b] γὰρ τοῖς πόνοισιν αὔξεται· 31
αἱ δ' ἥσυχοι σκοτεινὰ πράσσουσιν πόλεις,
σκοτεινὰ καὶ βλέπουσιν εὐλαβούμεναι.

51 [a] Ἀντιφάνους.

Τῆς ἐπιμελείας δοῦλα πάντα γίγνεται.

52 [a] Βίωνος Σμυρναίου Βουκολικοῦ.

Ἐκ θαμινῆς ῥαθάμιγγος, ὅκως λόγος, [b] αἰὲς ἰοίσας
χὰ λίθος ἐς ῥωχμὸν κοιλαίνεται.

53 [a] Οὐ καλὸν, ὦ φίλε, πάντα λόγον ποτὶ τέκτονα φοιτῆν,
[b] μὴ δ' ἐπὶ πάντ' [c] ἄλλο χρέος [d] ἰσχέμεν, ἀλλὰ καὶ [e] αὐτὸς
τεχνᾶσθαι σύριγγα, πέλει δέ τοι εὐμαρὲς ἔργον.

48.

[a] Sic A. Scil. Tyr. 110. Σοφοκλ. Trinc.

[b] δὲ τἀμελούμενον] δ' ἀμελούμενον A. Trinc.

49.

[a] Quod heic præcedebat in vulgatis, πρεπόντων πόνων πωλοῦσιν ἁμῖν πάντα τἀγάθ' οἱ θεοὶ, male addito πρεπὸν repetitum est ex Epicharmi tetrametro quem habuimus supra. (n. 8.) Hos autem versus ὁρᾷς, et quæ sequuntur, ad sensum plenius exprimendum ex Euripide addidi. Grotius. Deest Epicharmi versus h. l. in A. Ῥεπόντων πόνων habet Trinc.

50.

[a] Deest lemma Trinc. Locus A. v. Suppl. 323.

[b] γὰρ] γε B. m. sec.

51.

[a] Sic Trinc. Deest locus A.

52.

[a] Sic B. Σμιρνέου βουκολικοῦ Tr. Deest locus A.

[b] αἰὲν] αἰὲς Voss. αἱ ἐσιοίσας B. m. p. ῥαθάμιγγος ὦ κ'ὡς λόγος αἱ ἐσιοίσας—Sic Trinc.

53.

[a] Deest lemma Trinc. locus A.

[b] μηδέτι] μηδέτοι B. Voss.

[c] ἄλλο] ἄλλου B. m. s.

[d] ἰσχέμεν] ἰσχυέμεν Voss.

[e] αὐτὸς] αὐτὸν N.

Ib. μηδ' εἰ παντελέως χρέος ἴσχεμεν ἀλλὰ καὶ αὐτὸν] Id est, *ne tum*

[a] Ἐπιχάρμου.

54 Ἃ δὲ μελέτα φύσιος ἀγαθᾶς πλεῦνα δωρεῖται [b] φίλοις.

[a] Εὐριπίδου Τηλέφῳ.

55 Οὐ [b] τἄρ᾽ Ὀδυσσεύς ἐστιν αἱμύλος μόνος.
χρεία διδάσκει, κἂν βραδύς τις ᾖ, σοφόν.

[a] Εὐριπίδου.

56 Οὐκ αἰσχρὸν οὐδὲν τῶν ἀναγκαίων βροτοῖς.

[a] Τοῦ αὐτοῦ Ἀνδρομέδᾳ.

57 Ἀλλ᾽ ἡδύ τοι σωθέντα μεμνῆσθαι πόνων.

[a] Αἰλιανοῦ.

58 Σόλων ὁ Ἀθηναῖος [b] Ἐξηκεστίδου παρὰ πότον τοῦ [c] ἀδελφιδοῦ αὐτοῦ μέλος τι Σαπφοῦς ᾄσαντος, ἥσθη τῷ μέλει, καὶ προσέταξε τῷ μειρακίῳ διδάξαι αὐτόν. Ἐρωτήσαντος δέ τινος διὰ ποίαν αἰτίαν τοῦτο ἐσπούδασεν, ὁ δὲ ἔφη, Ἵνα μαθὼν αὐτὸ ἀποθάνω.

quidem, si qua re valde opus sit. Nostra est emendatio: cum editum sit hactenus μηδέτι πάνθ' ἄλλο χρέος ἴσχεμεν. At Salmasio rectius videbatur μηδέτι πάντ' ἄλλω, ut sit ἄλλω Doricum pro ἄλλου. Sed αὐτὸν pro αὐτὸς maluimus auctore MS. recentiore. Grotius.

Ib. παντελέως] ἐπὶ πάντ' ἄλλου *in negotio quoque alterius egere operæ.* Grotius nott. mss.

54.

[a] Sic A. Trinc.

[b] φίλοις] φίλοι. Sic et alibi. Grotius nott. mss. πλέονα A.

55.

[a] Sic A. Scil. Fr. 19. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] οὐ γάρ τ'] deest τ' A. Voss. Trinc. οὐκ ἆρ' Valcken. Diatr. p. 206. τἄρ' alicubi, ni fallor, Porsonus.

56.

[a] Sic B. Deest lemma Trinc. locus A. Cum sequente versiculo vulgo confunditur. v. Fragm. Andromedæ 10.

57.

[a] Sic B.: Simpliciter Ἀνδρομέδα A. Deest lemma Trinc.

58.

[a] Sic A. Trinc. Vide Perizonium ad fragmenta Æliani p. 1053=370.

[b] ἐξηκέστου] Plutarchus habet ἐξηκεστίδου. Gesner. Sic A. B. m. sec. ὁ ἐξηκέστου Trinc.

[c] ἀδελφιδοῦ] ἀδελφοῦ A.

59 [a] Εὐσεβίου.

Πόνοι οἱ ἑκούσιοι πόνοισι τοῖς μετὰ ταῦτα [b] ἀναγκαίοις, ὥστε αὐτοὺς εὐπετεστέρους παρασκευασθῆναι, προπονέονται.

60 [a] Αἰλιανοῦ.

Δημοσθένης ὁ Δημοσθένους, εἰ ἔμελλε τῆς ὑστεραίας ἔσε- 201
σθαι ἐκκλησίας, ἀλλὰ ἐκεῖνός γε διὰ τῆς νυκτὸς ἠγρύπνει πάσης, διαφροντίζων δηλονότι, καὶ ἐκμανθάνων ταῦτα, ἃ ἔμελλεν [b] ἐρεῖν. Ὁ τοίνυν Πυθέας ἐκ τούτων ἐμοὶ δοκεῖν ἀπέσκωπτεν εἰς αὐτὸν, ἐπιλέγων, αὐτοῦ τὰ ἐνθυμήματα ἐλλυχνίων ὄζειν.

61 [a] Δημοσθένους κατὰ Φιλίππου.

Φύσει δ' ὑπάρχει τοῖς παροῦσι τὰ τῶν ἀπόντων, καὶ τοῖς ἐθέλουσι πονεῖν καὶ κινδυνεύειν τὰ τῶν ἀμελούντων.

62 [a] Θουκυδίδου.

Ἔργων ἐκ πολλοῦ μελέτη πλεῖον σώζει, ἢ λόγων δι' ὀλίγου καλῶς ῥηθέντων παραίνεσις.

63 [a] Δημοκρίτου.

Οἱ ἑκούσιοι πόνοι τὴν τῶν ἀκουσίων ὑπομονὴν ἐλαφροτέραν παρασκευάζουσι.

64 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Πόνος συνεχὴς ἐλαφρότερος ἑαυτοῦ [b] τῇ συνηθείᾳ γίνεται.

59.

[a] Sic A Trinc.

[b] ἀναγκαῖοι] ἀναγκαίοις A. B. uterque ex em. Vide infra 63. Sic et Jacobs.

60.

[a] Sic Trinc. Conf. Var. Hist. VII. 7. Deest locus A.

[b] εὑρεῖν] ἐρεῖν N. B. Gesnerus in marg. pro conjectura.

61.

[a] Sic A. Scil. Philipp. I. p. 41, 24. Simpliciter Δημοσθένους Trinc.

62.

[a] Sic A. Trinc. Scil. V. 69.

63.

[a] Sic A. Δημόσθ. Trinc.

64.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] τῇ συνηθείᾳ] deest τῇ A.

65 [a] Ἀντισθένους.

Ἡδονὰς τὰς μετὰ τοὺς πόνους διωκτέον, ἀλλ' οὐχὶ τὰς πρὸ τῶν πόνων.

66 [a] Δημοκρίτου.

Πλέονες ἐξ ἀσκήσιος ἀγαθοὶ γίγνονται, ἢ ἀπὸ φύσιος.

67 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Τὸ αἰεὶ μέλλειν, ἀτελέας [b] ποιεῖ τὰς πρήξιας.

68 [a] Σωκράτης.

Σωκράτης ἐν γήρᾳ κιθαρίζων [b] παρὰ Κόννῳ τῷ κιθαρῳδῷ ἐτύγχανε· καί τινος εἰπόντος, κιθαρίζεις τηλικοῦτος ὤν; Κρεῖττον, εἶπεν, ὀψιμαθῆ εἶναι, ἢ ἀμαθῆ.

69 [a] Φαβωρίνου.

Γραῦν τινά φασι μόσχον μικρὸν ἀραμένην, καὶ τοῦτο καθ' ἡμέραν ποιοῦσαν, λαθεῖν [b] βοῦν φέρουσαν.

70 [a] Ἐκ τῶν Ἀριστοτέλους χρειῶν.

[b] Λᾶσος Ἑρμιονεὺς [c] ἐρωτηθεὶς, τί εἴη σοφώτατον, Πεῖρα, ἔφη.

71 [a] Ξενοφῶντος Ἀγησιλάου.

[b] Δόξης δ' οὐδεμιᾶς ἥρα, ἧς οὐκ ἐξεπονεῖτο.

72 [a] Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ πρώτου τῆς Παιδείας.

Οὐκ ἀπεδίδρασκεν ἐκ τοῦ ἡττᾶσθαι εἰς τὸ μὴ ποιεῖν ἃ

65.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

66.
Sic A. Trinc.

67.
Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] ποιεῖ] ποιέει B. m. sec.

68.
[a] Sic A. Deest locus Trinc.
[b] παρακρούων] παρακόωντι τῷ κιθαρῴδῳ A. p. m. ubi supra ων compendiose scriptum ῆν. Lege παρὰ Κόννῳ Grotius nott. mss. Recte. Conf. Suidas v. Σωκράτης Menagio citatus in Diogen. Laert. II. 28 et 32.

69.
[a] Sic B. Φαβουρίνου A. Trinc.
[b] βοῦν] οὖν Trinc.

70.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] Τᾶσσος] Lege Λᾶσος. Valck.
[c] ἐρωτηθεὶς] ἐρωτηθεὶς ὑπό τινος A. Mox σοφώτερον B. m. p. Trinc. Deinde πεῖρα A. pro πεῖραν.

71.
[a] Sic A. v. xi, 9. Lemma deest Trinc.
[b] Ξενοφάνης δόξης δ' ο. Trinc.

72.
[a] Sic A. Scil. I. 4, 5. Simpl. Ξενοφῶντος Trinc.

ἡττῷτο· ἀλλ' ἐκυλινδεῖτο, ἐν τῷ πειρᾶσθαι αὖθις ἄμεινον ποιεῖν.

73 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Κῦρος ἐστὶ βασιλέως καὶ [b] ἀδελφὸς καὶ υἱὸς, καὶ ἄρχει πολλῆς χώρας, κἀκεῖνος οὔτ' ἂν ἀριστήσειεν, οὔτε δειπνήσειεν, πρὶν ἱδρῶσαι.

74 [a] Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ α τῆς Κύρου Παιδείας.

Καίτοι ἔγωγε οἶμαι οὐδεμίαν ἀρετὴν ἀσκεῖσθαι ὑπ' ἀνθρώπων, ὡς μηδὲν πλέον ἔχωσιν οἱ ἀγαθοὶ γενόμενοι τῶν πονηρῶν· ἀλλ' [b] οἵτε τῶν παραυτίκα ἡδονῶν ἀπεχόμενοι, οὐχ ἵνα μηδέποτ' εὐφρανθῶσι τοῦτο πράττουσιν, ἀλλ' ὅπως διὰ ταύτην τὴν ἐγκράτειαν πολλαπλάσια εἰς τὸν ἔπειτα χρόνον εὐφραίνωνται, οὕτω [c] παρασκευάζονται· οἵτε λέγειν προθυμούμενοι δεινοὶ γενέσθαι, οὐχ, ἵνα εὖ λέγοντες μηδέποτε παύσωνται, τοῦτο μελετῶσιν, ἀλλ' ἐλπίζοντες τῷ λέγειν εὖ πείθοντες πολλοὺς ἀνθρώπους, μεγάλα ἀγαθὰ διαπράξασθαι· οἵτ' αὖ τὰ πολεμικὰ ἀσκοῦντες, οὐχ ὡς μαχόμενοι μηδέποτε παύσωνται τοῦτ' ἐκπονοῦνται, ἀλλὰ νομίζουσι καὶ οὗτοι τὰ πολεμικὰ ἀγαθοὶ γενόμενοι, πολὺν μὲν ὄλβον, [d] πολλὴν δὲ εὐδαιμονίαν, μεγάλας δὲ τιμὰς καὶ τῇ πόλει καὶ αὐτοῖς περιάψειν. Εἰ δέ τινες ταῦτα ἐκπονήσαντες, 202
πρίν τινα ἀπ' αὐτῶν καρπὸν κομίσασθαι αὐτοὺς γήρᾳ ἀδυνάτους γινομένους [e] περιεῖδον, ὅμοιον ἔμοιγε δοκοῦσι πεπονθέναι, [f] οἷον εἴ τις γεωργὸς ἀγαθὸς προθυμηθεὶς γενέσθαι, καὶ εὖ σπείρων, καὶ εὖ φυτεύων, ὅτε ἀποκαρποῦσθαι ταῦτα δέοι,

73.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Conf. Cyrop. VIII. 1, 37.
[b] ἀδελφιδοῦς] ἀδελφὸς A. B. m. sec. Gesn. marg.

74.
[a] Sic A. Scil. I. 5, 9. Deest lemma Trinc.
[b] οἵτε] οἵγε Trinc.
[c] παρασκευάζονται] παρασκευάζωνται A.
[d] πολλὴν] πολὺν A.
[e] περιεῖδον ante αὐτοὺς γ. α. γ. collocat A. B. m. sec.
[f] οἷον om. A. p. m.

ἐῴη τὸν καρπὸν ἀσυγκόμιστον εἰς τὴν γῆν πάλιν καταρρεῖν· καὶ εἴ τις ἀθλητὴς πολλὰ πονήσας, καὶ ἀξιόνικος γενόμενος, ἀναγώνιστος διατελέσειεν, οὐδ᾽ ἂν οὗτος ἔμοιγε δοκεῖ δικαίως ἀναίτιος εἶναι ἀφροσύνης.

75 [a] Μουσωνίου ἐκ τοῦ Ὅτι πόνου καταφρονητέον.

Πρὸς δὲ τὸ ῥᾷον καὶ προθυμότερον ὑφίστασθαι τῶν πόνων ἐκείνους, οὓς ἂν ὑπὲρ ἀρετῆς καὶ καλοκαγαθίας μέλλωμεν πονεῖν, ταῦτα λελογίσθαι χρήσιμα· πόσα μὲν πονοῦσιν ἔνιοι δι᾽ ἐπιθυμίας κακὰς, ὥσπερ οἱ ἐρῶντες ἀκολάστως· πόσα δ᾽ ὑπομένουσιν [b] οἱ ἄλλοι τοῦ κερδαίνειν χάριν· πόσα δ᾽ αὖ κακοπαθοῦσιν ἔνιοι θηρώμενοι δόξαν· καὶ ὅτι οὗτοι πάντες ὑπομένουσιν αὐθαίρετοι πᾶσαν ταλαιπωρίαν. Ἆρ᾽ οὖν οὐχὶ δεινὸν, ἐκείνους μὲν ὑπὲρ οὐδενὸς τῶν καλῶν ἀνέχεσθαι ταῦτα πάσχοντας, [c] ἡμᾶς δ᾽ ὑπὲρ καλοκαγαθίας, καὶ τοῦ κακίαν μὲν ἐκφυγεῖν τὴν λυμαινομένην [d] ἡμῶν τὸν βίον, κτήσασθαι δὲ ἀρετὴν, ἥ τις ἁπάντων τῶν ἀγαθῶν ἐστι χορηγὸς, μὴ πάντα πόνον ἑτοίμως ὑφίστασθαι; Καίτοι οὐδ᾽ ἂν εἴποι τὶς ὅσῳ κρεῖττον, ἀντὶ μὲν τοῦ πονεῖν ἵνα τύχῃ τὶς γυναικὸς ἀλλοτρίας, τὸ πονεῖν ἵνα παιδαγωγήσῃ τὰς ἐπιθυμίας τὰς ἑαυτοῦ· ἀντὶ δὲ τοῦ περὶ χρημάτων ταλαιπωρεῖν, τὸ ἀσκεῖν, ὥστε ὀλίγων δεῖσθαι· πρὸ δὲ τοῦ [e] πράγματα ἔχειν ὑπὲρ δόξης, τὸ [f] πραγματεύεσθαι ὅπως μὴ δοξοκόπος εἴη· πρὸ δέ γε τοῦ ζητεῖν, ὅπως ᾧ φθονεῖ τις κακοποιήσῃ, [g] τοῦτο σκοπεῖν ὅπως [h] μηδὲν φθονήσῃ μηδενί· καὶ πρό γε τοῦ δουλεύειν τισὶ καλουμένοις φίλοις, ὥσπερ οἱ κόλακες, τὸ κακοπαθεῖν ἵνα κτήσηται φίλους ἀληθινούς· καθόλου δὲ τοῦ

75.

[a] Sic A. Simpl. Μουσωνίου Trinc. B. p. m.

[b] οἱ ἄλλοι] οἱ om. A.

[c] ἡμᾶς] ὑμᾶς A.

[d] ἡμῶν] ἡμῖν A.

[e] πράγματα] πράγματος Trinc.

[f] πραγματεύεσθαι] πραγματεύσασθαι A.

[g] τοῦτο σκοπεῖν] τοῦτον τὸ σκοπεῖν A. Trinc.

[h] μηδὲν] μὴ A.

πονεῖν πᾶσιν ἀνθρώποις ἀναγκαίου ὄντος, τοῖς τε τῶν κρειτ-
τόνων ὀρεγομένοις καὶ τοῖς τῶν χειρόνων, [i] τὸ μὴ πολλῷ εἶναι
προθυμοτέρους πονεῖν τοὺς τὰ κρείττω μετιόντας, οἷς [k] ἐλ-
πίδες μικραὶ τῶν πόνων εἰσὶν, ἀτοπώτατον. Ἀλλ' οἱ μὲν
ἄρα θαυματοποιοὶ δύσκολα οὕτως ὑφίστανται πράγματα,
καὶ τὴν ζωὴν παραβάλλονται τὴν ἑαυτῶν, οἱ μὲν εἰς μαχαί-
ρας κυβιστῶντες, οἱ δ' ἐπὶ κάλων μετέωροι βαδίζοντες, οἱ
δ' ὥσπερ ὄρνεα πετόμενοι διὰ τοῦ ἀέρος, ὧν τὸ σφάλμα
θάνατός ἐστι. Καὶ ταῦτα πάντα δρῶσι μικροῦ χάριν μι-
σθοῦ· ἡμεῖς δ' οὐκ ἀνεξόμεθα ταλαιπωρεῖν ὑπὲρ εὐδαιμονίας
ὅλης; Οὐ γὰρ ἄλλο τί γε τέλος ἐστὶ τοῦ γενέσθαι ἀγαθὸν,
ἢ τὸ εὐδαιμονεῖν, καὶ ζῆν μακαρίως εἰς τὸ λοιπόν. Εἰκό-
τως δ' ἄν τις λογίζοιτο καὶ τὸ τῶν ζώων ἐνίων ὁποῖόν ἐστι,
πάνυ [l] τι δυνάμενον ἐντρέπειν ἡμᾶς φιλοπόνους εἶναι. Οἱ
γοῦν ὄρτυγες καὶ ἀλεκτρυόνες, οὔτ' ἀρετῆς ἐπαΐοντες οὐδὲν
ὥσπερ ὁ ἄνθρωπος, οὔτε τὸ καλὸν καὶ δίκαιον εἰδότες, οὐδ'
ὑπὲρ τοιούτου πονοῦντες οὐθενὸς, ὅμως μαχόμενοι πρὸς ἀλλή- 203
λους, καὶ πηρούμενοι ἀνέχονται, καὶ μέχρι θανάτου καρτε-
ροῦσιν, ὥστε μὴ ἡττᾶσθαι θατέρου ὁ ἕτερος. Πόσῳ δὴ μᾶλ-
λον εἰκὸς ἡμᾶς ἀνέχεσθαί τε καὶ καρτερεῖν, ὅτ' ἂν [m] ἐπιστώ-
μεθα διά τι τῶν καλῶν κακοπαθοῦντες, ἢ ἵνα φίλοις βοηθή-
σωμεν, ἢ πόλιν ὠφελήσωμεν, ἢ ἵνα γυναικῶν ἢ τέκνων ὑπερ-
μαχήσωμεν; τὸ δὲ μέγιστον καὶ κυριώτατον, [n] ἵνα ἀγαθοὶ
ὦμεν καὶ δίκαιοι καὶ σώφρονες, [o] δίχα πόνων οὐ παραγί-
νεται οὐδενί. Ὅθεν ἔπεισί μοι λέγειν, ὡς ὁ μὴ θέλων πο-
νεῖν σχεδὸν καταδικάζει αὐτὸς αὑτοῦ μηδενὸς εἶναι ἀγαθοῦ

[i] τῷ μὴ] τὸ μὴ A. ex em.
μεγάλαι
[k] ἐλπίδες μικραὶ] ἐλπίδες τῶν μικρῶν. Sic A.
[l] τι] δὴ A. B. m. s.
[m] ἐφιστώμεθα] ἐπιστώμεθα A. ex em. B. m. s.
αὐτοὶ
[n] ἵνα ἀγαθοὶ] ἵνα ἀγαθοὶ A. αὐτοὶ B. m. s.
[o] δίχα] ὁ δίχα B. Mox οὐ om. A. B. m. s.

ἄξιος, ὅτι τὰ ἀγαθὰ [p] πάντα πόνῳ κτώμεθα. Ταῦτα μὲν καὶ τοιαῦθ' ἕτερα εἶπε [q] τότε, ἐπεγείρων καὶ παρορμῶν τοὺς παρόντας πόνου [r] μὴ καταφρονεῖν.

76 [a] Ξενοφῶντος.

Περὶ μὲν [b] αὐτῶν τῶν πράξεων τῶν ἐν τοῖς κυνηγεσίοις εἴρηται· ὠφελήσονται δ' οἱ ἐπιθυμήσαντες τούτου τοῦ ἔργου πολλά. Ὑγείαν τε γὰρ τοῖς σώμασι [c] παρασκευάζει, καὶ ὁρᾶν καὶ ἀκούειν μᾶλλον, γηράσκειν δὲ ἧττον· τὰ δὲ πρὸς τὸν πόλεμον μάλιστα παιδεύει. Πρῶτον μὲν γὰρ τὰ ὅπλα ὅτ' ἂν ἔχοντες [d] πορεύωνται ὁδοὺς χαλεπὰς, οὐκ ἀποροῦσιν· ἀνέξονται γὰρ τοὺς πόνους διὰ τὸ εἰθίσθαι μετὰ τούτων [e] αἱρεῖν τὰ θηρία. Ἔπειτα εὐνάζεσθαί τε σκληρῶς δυνατοὶ ἔσονται, καὶ φύλακες εἶναι ἀγαθοὶ τοῦ ἐπιταττομένου· ἐν δὲ ταῖς προσόδοις ταῖς πρὸς τοὺς πολεμίους [f] ἅμα οἷοί τε ἔσονται ἐπιέναι, καὶ τὰ παραγγελλόμενα ποιεῖν, διὰ τὸ οὕτω καὶ αὐτοὶ αἱρεῖν τὰς ἄγρας. Τεταγμένοι δὲ ἐν τῷ πρόσθεν, οὐ λείψουσι τὰς τάξεις, διὰ τὸ καρτερεῖν δύνασθαι. Ἐν φυγῇ δὲ τῶν πολεμίων, ὀρθῶς καὶ [g] ἀσφαλῶς διώξονται τοὺς [h] ἐναντίους ἐν παντὶ χωρίῳ διὰ συνήθειαν. Δυστυχήσαντος δὲ οἰκείου στρατοπέδου ἐν χωρίοις ὑλώδεσι καὶ ἀποκρήμνοις, ἢ ἄλλως χαλεποῖς, οἷοί τ' ἔσονταί [i] τε καὶ αὐτοὶ [k] σώζεσθαι μὴ αἰσχρῶς καὶ ἑτέρους σώζειν. Ἡ γὰρ συνήθεια τοῦ ἔργου παρέξει αὐτοῖς πλέον τι εἰδέναι. Καὶ ἤδη τινὲς τῶν τοιούτων πολλοῦ ὄχλου συμμάχων τρεφθέντος

[p] πάντα πόνῳ] πόνῳ πάντα A.
[q] τότε] πότε A. ex em. N.
[r] μὴ] μὴ al. non legitur. Gesn. μὴ om. B.

76.

[a] Sic A. Trinc. E libro De Venatione c. 12.
[b] αὐτῶν] αὖ τῶν B. m. s.
[c] παρασκευάζουσι] παρασκευάζει A. Trinc.
[d] πορεύονται] πορεύωνται A.
[e] αἱρεῖν] αἵρειν B.
[f] ἅμα] ἀλλ' A. Trinc.
[g] ἀσφαλῶς] ἀσφαλέως A.
[h] ἐναντίους] πολεμίους A. B. m. s.
[i] τε καὶ] B. m. s. delet τε.
[k] σώζεσθαι] σώζεσθαί τε A. B. m. s.

τῇ αὑτῶν [l] εὐταξίᾳ καὶ [m] θράσει διὰ δυσχωρίαν [n] ἁμαρτόντας τοὺς πολεμίους νενικηκότας ἀναμαχόμενοι ἐτρέψαντο. Ἀεὶ γάρ ἐστι τοῖς τὰ σώματα καὶ τὰς ψυχὰς εὖ ἔχουσιν ἐγγὺς τὸ εὐτυχῆσαι.

77 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Λέγουσι δέ τινες, ὡς οὐ χρὴ ἐρᾶν κυνηγεσίων, ἵνα μὴ τῶν οἰκείων ἀμελῶσιν, οὐκ εἰδότες ὅτι οἱ τὰς πόλεις καὶ τοὺς φίλους εὖ ποιοῦντες, πάντες τῶν οἰκείων ἐπιμελέστεροί εἰσιν. Εἰ οὖν οἱ φιλοκυνηγέται παρασκευάζουσιν αὑτοὺς τῇ πατρίδι χρησίμους εἶναι [b] τὰ μέγιστα, οὐδ᾽ ἂν τὰ ἴδια [c] ἀργοί εἰσι· σὺν γὰρ τῇ πόλει καὶ σώζεται καὶ ἀπόλλυται τὰ οἰκεῖα ἑκάστου· ὥστε πρὸς τοῖς αὑτῶν καὶ τὰ τῶν ἄλλων ἰδιωτῶν οἱ τοιοῦτοι σώζουσι. Πολλοὶ δὲ ὑπὸ φόβου ἀλόγιστοι τῶν ταῦτα λεγόντων, αἱροῦνται διὰ τὴν αὑτῶν κακίαν ἀπολέσθαι μᾶλλον, ἢ [d] ἑτέρων ἀρετῇ σώζεσθαι. Αἱ γὰρ ἡδοναὶ, [e] πολλαὶ καὶ κακαὶ, ὧν ἡττώμενοι, λέγειν ἢ πράττειν ἐπαίρονται τὰ χείρω· εἶτα ἐκ μὲν τῶν ματαίων λόγων ἔχθρας ἀναιροῦνται, ἐκ δὲ τῶν κακῶν ἔργων, νόσους καὶ ζημίας καὶ θανάτους, καὶ αὑτῶν καὶ παίδων καὶ φίλων, ἀναισθήτως μὲν τῶν κακῶν ἔχοντες, τῶν δὲ ἡδονῶν πλέον τῶν πολλῶν αἰσθανόμενοι. 204

78 [a] Μουσωνίου Περὶ Ἀσκήσεως.

Παρώρμα δὲ πρὸς ἄσκησιν τοὺς συνόντας [b] ἐντεταμένως ἀεὶ, τοιοῖσδέ τισι λόγοις χρώμενος. Ἡ ἀρετὴ, ἔφη, ἐπιστήμη ἐστὶν, οὐ θεωρητικὴ μόνον, ἀλλὰ καὶ πρακτική, κα-

[l] εὐταξίᾳ] εὐεξίᾳ Gesn. marg.
[m] θράσει] θάρσει B. m. s.
[n] ἁμαρτῶντας] ἁμαρτόντας A.

77.

[a] Scil. ibid. §. 10. Cohærent Trinc. cum præcedentibus.
[b] εἰς τὰ] εἰς om. A. μάλιστα pro μέγιστα Trinc.
[c] ἀργοί εἰσι] πρόοιντο Gesn. marg. Mox οἰκεῖα ἑκάστου A. ἑκ. οἰκ. vulgo.
[d] ἑτέρων] ἑταίρων A. p. m.
[e] αἱ πολλαὶ] deest articulus A. Trinc.

78.

[a] Sic A. Simpl. Μουσωνίου Trinc.
[b] ἐντεταγμένως] ἐντεταμένως. A. Trinc.

θάπερ ἥ τε ἰατρικὴ, καὶ [c] ἡ μουσική. Δεῖ οὖν ὥσπερ τὸν ἰατρὸν καὶ τὸν μουσικὸν, μὴ μόνον ἀνειληφέναι τὰ θεωρήματα τῆς αὐτοῦ τέχνης ἑκάτερον, ἀλλὰ καὶ γεγυμνάσθαι πράττειν [d] κατὰ τὰ θεωρήματα· οὕτω καὶ τὸν ἐσόμενον ἀγαθὸν ἄνδρα, μὴ μόνον ἐκμανθάνειν ὅσα μαθήματα φέρει πρὸς ἀρετὴν, ἀλλὰ καὶ γυμνάζεσθαι κατὰ ταῦτα φιλοτίμως καὶ φιλοπόνως. Ἐπεὶ πῶς μὲν ἂν εὐθὺς γένοιτό τις σώφρων, εἰ μόνον εἰδείη ὅτι οὐ χρὴ ἡττᾶσθαι ἡδονῶν, ἀγύμναστος δ' εἴη ἀντέχειν ταῖς ἡδοναῖς; πῶς δ' ἂν δίκαιός τις γένοιτο, μεμαθηκὼς μὲν ὅτι χρὴ τὸ ἴσον ἀγαπᾶν, μὴ μελετηκὼς δὲ φεύγειν τὸ πλεονεκτεῖν; πῶς δ' ἂν [e] ἀνδρείαν κτησαίμεθα, τὸ μὲν ὅτι μὴ φοβερὰ τὰ δοκοῦντα τοῖς πολλοῖς δεινὰ κατανενοηκότες, ἄφοβοι δ' εἶναι εἰς αὐτὰ μὴ μεμελετηκότες; πῶς δ' ἂν φρόνιμοι γενοίμεθα, τὰ μὲν ὡς ἀληθῶς ἀγαθὰ καὶ κακὰ τίνα ἐστὶν ἐγνωκότες, μὴ γεγυμνασμένοι δὲ καταφρονεῖν τῶν δοκούντων ἀγαθῶν; Διὸ χρὴ τῇ μαθήσει τῶν προσηκόντων ἀρετῇ ἑκάστῃ μαθημάτων καὶ τὴν ἄσκησιν ἐπακολουθεῖν πάντως, εἴγε μέλλει καὶ αὐτῆς τῆς μαθήσεως ὄφελός [f] τι γενήσεσθαι ἡμῖν. Καὶ τοσούτῳ γε χρὴ μᾶλλον ἀσκεῖν τὸν φιλοσοφεῖν ἀξιοῦντα, ἤ περ τὸν ἰατρικῆς, ἤ τινος τέχνης ὁμοίας ἐφιέμενον, [g] ὅσῳ καὶ μεῖζον καὶ δυσκατεργαστότερον φιλοσοφία παντὸς ἐπιτηδεύματος ἑτέρου. Καὶ γὰρ οὖν ἐπὶ μὲν τὰς ἄλλας τέχνας [h] εἶναι οἱ ἐφιέμενοι αὐτῶν, οὐ [i] προδιεφθαρμένοι τὰς ψυχὰς, οὐδ' ἐναντία μεμαθηκότες οἷς μαθήσεσθαι μέλ-

[c] ἡ μουσικὴ] deest articulus B.

[d] καὶ τὰ] Lego κατὰ Gesner. et sic A. B. uterque ex emendatione.

[e] ἀνδρείαν] ἀνδρίαν A.

[f] τι] τις B. p. m. Trinc.

[g] ὅσῳ μεῖζον] ὅσω καὶ μ. A. B. m. s. Supra ὁμοίως Trinc.

[h] εἶναι] Malim ἔρχονται. Gesner. et sic A. B. uterque ex emendatione. οἱ om. B. m. p.

[i] προσδιεφθαρμένοι] προδιεφθαρμένοι Trinc. προ διεφθαρμένοι A.

λουσιν· οἱ δὲ φιλοσοφεῖν ἐπιχειροῦντες, ἐν διαφθορᾷ γεγενημένοι πρότερον πολλῇ, καὶ ἐμπεπλησμένοι κακίας, οὕτω μετιᾶσι τὴν ἀρετὴν, ὥστε καὶ ταύτῃ πλείονος δεηθῆναι τῆς ἀσκήσεως. Πῶς οὖν καὶ τίνα τρόπον τούτοις ἀσκητέον; ἐπεὶ τὸν ἄνθρωπον οὔτε ψυχὴν [k] εἶναι μόνον συμβέβηκεν, οὔτε σῶμα μόνον, ἀλλά τι σύνθετον ἐκ τοῖν δυοῖν τούτοιν, ἀνάγκη τὸν ἀσκοῦντα ἀμφοῖν ἐπιμελεῖσθαι, τοῦ μὲν κρείττονος μᾶλλον, ὥσπερ ἄξιον, τουτέστι τῆς ψυχῆς· καὶ θατέρου δὲ, εἴγε [l] μέλλει μηδὲν ἐνδεῶς ἔχειν τοῦ ἀνθρώπου μέρος. Δεῖ γὰρ δὴ καὶ τὸ σῶμα [m] παρεσκευάσθαι καλῶς πρὸς τὰ σώματος ἔργα τὸ τοῦ φιλοσοφοῦντος, ὅτι πολλάκις αἱ ἀρεταὶ καταχρῶνται τούτῳ ὄντι ὀργάνῳ ἀναγκαίῳ πρὸς τὰς τοῦ βίου πράξεις. Τῆς οὖν ἀσκήσεως ἡ μέν τις διὰ τῆς ψυχῆς μόνης γίνοιτ' ἂν ὀρθῶς· ἡ δέ τις κοινὴ ταύτης τε καὶ τοῦ σώματος. Κοινὴ μὲν οὖν ἄσκησις ἀμφοῖν γενήσεται, συνεθιζομένων ἡμῶν ῥίγει, θάλπει, δίψει, λιμῷ, τροφῆς λιτότητι, κοίτης σκληρότητι, ἀποχῇ τῶν ἡδέων, ὑπομονῇ τῶν ἐπιπόνων. Διὰ γὰρ τούτων καὶ τῶν τοιούτων ῥώννυται μὲν τὸ σῶμα, καὶ γίνεται δυσπαθές τε καὶ στερεὸν, καὶ χρήσιμον πρὸς ἅπαν ἔργον· ῥώννυται δὲ ἡ ψυχὴ γυμναζομένη διὰ μὲν τῆς ὑπομονῆς τῶν ἐπιπόνων πρὸς [n] ἀνδρείαν, διὰ δὲ τῆς ἀποχῆς τῶν ἡδέων πρὸς σωφροσύνην. Διὰ δὲ τῆς ψυχῆς ἄσκησίς ἐστι, πρῶτον μὲν τὰς ἀποδείξεις προχείρους ποιεῖσθαι, τάς τε περὶ τῶν ἀγαθῶν τῶν δοκούντων ὡς οὐκ ἀγαθὰ, καὶ τὰς περὶ τῶν κακῶν τῶν δοκούντων ὡς οὐ κακὰ, καὶ τὰ ἀληθῶς ἀγαθὰ γνωρίζειν τε καὶ διακρίνειν ἀπὸ τῶν μὴ [o] ἀληθῶν ἐθίζεσθαι· εἶτα δὲ μελετᾶν μήτε φεύγειν μηδὲν τῶν δοκούντων κακῶν, μήτε διώκειν μηδὲν τῶν δοκούντων

[k] εἶναι μόνον] μόνην εἶναι A. μόνην B. m. s.
[l] μέλλει] μέλλοι A.
[m] παρεσκευάσθαι] παρασκευασθαι A. (ε, χ superscript)
[n] ἀνδρείαν] ἀνδρίαν A.
[o] ἀληθῶν] ἀληθῶς B.

ἀγαθῶν· καὶ τὰ μὲν ἀληθῶς κακὰ πάσῃ μηχανῇ ἐκτρέπεσθαι, τὰ δὲ ἀληθῶς ἀγαθὰ παντὶ τρόπῳ μετέρχεσθαι.

Ἐν κεφαλαίῳ μὲν οὖν σχεδὸν εἴρηται, ὁποῖος ἑκάτερος τρόπος ἀσκήσεως· οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ κατὰ μέρος ὡς ποιητέον ἕκαστα, πειράσομαι εἰπεῖν, οὐ διακρίνων, οὐδὲ χωρίζων οὐκέτι τά τε κοινὰ τῆς ψυχῆς καὶ τοῦ σώματος ἀσκήματα, καὶ τὰ ἴδια τῆς ψυχῆς, ἀλλὰ ἀναμὶξ τὰ ἑκατέρου μέρους διεξιών. Οὐκοῦν ἐπειδὴ ταῦτα μὲν τυγχάνομεν ἀκηκοότες τε καὶ ὑπειληφότες, ὅσοι γε φιλοσόφου διατριβῆς μετεσχήκαμεν, ὡς οὔτε πόνος, οὔτε θάνατος, οὔτε πενία κακὸν οὐδαμῶς ἐστιν, [p] οὐδ' ἄλλό τι τῶν κακίας ἀπηλλαγμένων· οὐδ' αὖ πάλιν ἀγαθὸν πλοῦτος, ζωὴ, ἡδονὴ, [q] οὐδ' ἄλλό τι ἕτερον τῶν μὴ μετεχόντων ἀρετῆς· ὅμως δὲ καὶ ταῦθ' ὑπειληφότες [r] διὰ τὴν ἀπὸ παίδων εὐθὺς γεγονυῖαν ἡμῖν [s] διαφθορὰν, καὶ τὴν [t] ὑπὸ τῆς διαφθορᾶς συνήθειαν πονηρὰν, πόνου μὲν προσερχομένου, κακὸν ἡγούμεθα προσέρχεσθαι [u] ἑαυτοῖς· ἡδονῆς δὲ παραγινομένης, ἀγαθὸν ἡγούμεθα παραγίγνεσθαι ἡμῖν· καὶ τὸν μὲν θάνατον ὡς ἐσχάτην συμφορὰν πεφρίκαμεν, τὴν δὲ ζωὴν ὡς τῶν ἀγαθῶν μέγιστον ἀσπαζόμεθα· καὶ διδόντες μὲν ἀργύριον, ὡς βλαπτόμενοι λυπούμεθα· λαμβάνοντες δὲ, ὡς ὠφελούμενοι χαίρομεν. Παραπλησίως δὲ καὶ ἐπὶ πλειόνων ἄλλων οὐκ ἀκολούθως ταῖς ὀρθαῖς ὑπολήψεσι [w] τοῖς πράγμασι χρώμεθα, τῷ δὲ φαύλῳ ἔθει μᾶλλον ἀκολουθοῦμεν. Ἐπεὶ οὖν ταῦτά φημι ταύτῃ [x] ἔχειν, δεῖ τὸν ἀσκοῦντα ζητεῖν περιγίγνεσθαι ἑαυτῷ, τῇ μὲν

[p] οὐδ' ἄλλό τι τῶν] ἀλλ' [οὐδὲ] ἄλλο τῶν [τι] A.

[q] οὐδ' ἄλλό τι] ὅτι A. N. Trinc.

[r] διὰ τὴν] διὰ τῶν Trinc. B. m. p.

[s] διαφθορὰν] διαφορὰν A. N. et paullo infra διαφορᾶς.

[t] ὑπὸ] ἀπὸ [υ] A.

[u] ἑαυτοῖς] αὐτοῖς B. m. s.

[w] τοῖς πράγμασι] τοῦ πράγματος A. p. m.

[x] ἔχει] ἔχειν A. Trinc.

ἡδονῇ μὴ ἀσμενίζειν, τὸν πόνον δὲ μὴ ἐκτρέπεσθαι· [y] καὶ τῷ μὲν ζῆν μὴ φιληδεῖν, τὸν δὲ θάνατον μὴ δεδιέναι· καὶ ἐπὶ χρημάτων μὴ προτιμᾶν τοῦ προΐεσθαι τὸ λαμβάνειν.

79 [a] Πλουτάρχου ἐκ τοῦ Περὶ Εὐθυμίας.

Ὁ μὲν οὖν εἰπὼν ὅτι δεῖ τὸν εὐθυμεῖσθαι μέλλοντα μὴ πολλὰ πρήσσειν μήτε ἰδίᾳ μήτε ξυνῇ, πρῶτον μὲν ἡμῖν πολυτελῆ τὴν εὐθυμίαν καθίστησι γινομένην ὤνιον ἀπραξίας, οἷον ἀῤῥώστῳ παραινῶν ἑκάστῳ

Μέν' ὦ ταλαίπωρ' ἀτρέμας σοῖς ἐν δεμνίοις.

Καίτοι κακὸν μὲν ἀναισθησία σώματι φάρμακον ἀπο- 206
νοίας· οὐδὲν δὲ [b] βελτίων ψυχῆς ἰατρὸς, [c] ὁ ῥαθυμίᾳ [d] καὶ μαλακίᾳ καὶ προδοσίᾳ φίλων, καὶ οἰκείων, καὶ πατρίδος, ἐξαίρων τὸ ταραχῶδες αὐτῆς καὶ λυπηρόν. * * *

"Οθεν οὐδὲ Ἐπίκουρος οἴεται δεῖν ἡσυχάζειν, ἀλλὰ τῇ φύσει χρῆσθαι πολιτευομένους, καὶ πράσσοντας τὰ κοινὰ, τοὺς φιλοτίμους καὶ [e] φιλοδόξους, ὡς μᾶλλον ὑπὸ ἀπραγμοσύνης ταράττεσθαι καὶ κακοῦσθαι πεφυκότας, ἂν ὧν ὀρέγωνται μὴ τυγχάνωσιν. Ἀλλ' ἐκεῖνος μὲν ἄτοπος, οὐ τοὺς δυναμένους τὰ κοινὰ πράττειν προτρεπόμενος, ἀλλὰ τοὺς ἡσυχίαν ἄγειν μὴ δυναμένους. Δεῖ δὲ μὴ πλήθει μηδὲ ὀλιγότητι πραγμάτων, ἀλλὰ τῷ καλῷ καὶ τῷ αἰσχρῷ τὸ εὔθυμον ὁρίζειν καὶ τὸ δύσθυμον. Τῶν γὰρ καλῶν [f] παράλειψις οὐχ ἧττον ἢ τῶν βλαβερῶν ἡ πρᾶξις ἀνιαρόν ἐστι καὶ ταραχῶδες.

y καὶ τὸ] καὶ τῷ A. et in fine τῶ (ὸ superscr.) λαμβάνειν.

79.

a Sic A. Scil. p. 465. C. Simpl. Πλουτάρχου Trinc.

b βελτίων] βελτίῳ Trinc.

c ὁ ῥαθυμίᾳ] ὁ om. B.

d καὶ μαλακίᾳ om. N. Mox "Οθεν οὐδὲ usque ad ταραχῶδες om. A.

e φιλοδόξους] φιλοξένους B.

f παράλειψις] παράληψις B.

80 [a] Πρωταγόρου.

Πρωταγόρας ἔλεγε, μηδὲν εἶναι μήτε τέχνην ἄνευ μελέτης, μήτε μελέτην ἄνευ τέχνης.

81 [a] Πλάτωνος.

Πρῶτον μὲν φιλοπονίᾳ οὐ χωλὸν δεῖ εἶναι τὸν ἁψάμενον, τὰ μὲν ἡμίσεα φιλόπονον, τὰ δὲ ἡμίσεα ἄπονον. Ἔστι δὲ τοῦτο, ὅτ' ἄν τις φιλογυμναστὴς μὲν ᾖ καὶ φιλομόχθηρος, καὶ πάντα τὰ διὰ τοῦ σώματος διαπονῇ, [b] μὴ φιλομαθὴς δὲ, μηδὲ φιλήκοος, μηδὲ ζητητικὸς, ἀλλ' ἐν πᾶσι τούτοις μισοπονῇ· χωλὸς δὲ καὶ ὁ τἀναντία τούτου μεταβεβληκὼς τὴν φιλοπονίαν.

82 [a] Ἀπολλώνιος Δίωνι.

Τὸ μὴ γενέσθαι, οὐδέν· τὸ δὲ γενέσθαι, πόνος.

83 [a] Ἀπολλώνιος Δαναῷ.

Οὐ κάμνει τὰ πράγματα πρασσόμενα.

84 [a] Ἐκ τῶν Ἐπικτήτου Ἀπομνημονευμάτων.

Εἰδέναι χρὴ, ὅτι οὐ ῥᾴδιον δόγμα παραγενέσθαι ἀνθρώπῳ, εἰ μὴ καθ' ἑκάστην ἡμέραν τὰ αὐτὰ καὶ λέγῃ τὶς, καὶ ἀκούῃ, καὶ ἅμα χρῷτο πρὸς τὸν βίον.

85 [a] Νικίου.

Νικίας οὕτως ἦν φιλόπονος, ὥστε πολλάκις ἐρωτᾷν τοὺς οἰκέτας, εἰ [b] λέλουται, καὶ εἰ ἠρίστηκεν.

86 [a] Ἀρχιμήδης.

Ἀρχιμήδην δὲ τῇ σανίδι προσκείμενον ἀποσπῶντες βίᾳ οἱ

80.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

81.

[a] Sic Trinc. Scil. Rep. VII. p. 535. Deest locus A.

[b] μὴ φιλομαθὴς] μὴ om. Trinc.

82.

[a] Sic A. Trinc.

83.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

84.

[a] Sic A. Simpl. Ἐπικτήτου Trinc. Fragm. 72.

85.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Hoc et sequens Fr. sunt ex Plutarcho II. p. 786. B.

[b] λέλουκε] λέλουται A. B. m. s. εἰ mox om. A.

86.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

θεραποντες ἤλειφον· ὁ δὲ ἐπὶ τοῦ σώματος ἀληλιμμένου διέγραφε τὰ σχήματα.

87 [a] Λάμπις.

Λάμπις ὁ ναύκληρος ἐρωτηθεὶς, πῶς ἐκτήσατο τὸν πλοῦτον· Οὐ χαλεπῶς, ἔφη, τὸν μέγαν· τὸν δὲ βραχὺν ἐπιπόνως.

88 [a] Δημοκρίτου.

Τῆς ἡσυχίης πάντες οἱ πόνοι ἡδίονες, ὅτ' ἂν ὧν εἵνεκεν πονέουσι τυγχάνωσιν, ἢ [b] εἰδέωσι κύρσοντες. Ἐν δὲ ἄκος τῇ [c] ἐπιτυχίῃ, τὸ πᾶν ὁμοίως ἀνιηρὸν καὶ ταλαίπωρον.

89 [a] Αἰσχύλου.

Αἰσχύλος ἐν Ἰσθμῷ ἀγῶνα ὁρῶν [b] πυκτῶν, καὶ ἐπὶ τῇ πληγῇ τοῦ θεάτρου ἐκβοήσαντος, πρὸς Ἴωνα ἔφη, Ὁρᾷς οἷόν ἐστιν ἡ ἄσκησις; ὁ πεπληγὼς σιωπᾷ, οἱ δὲ θεώμενοι βοῶσιν.

90 [a] Ἐκ τῶν Ἀριστοτέλους Χρειῶν.

Δημοσθένης [b] ἐρωτηθεὶς, πῶς τῆς ῥητορικῆς περιεγένου; Πλέον, ἔφη, ἔλαιον οἴνου δαπανήσας.

91 [a] Δημάδους.

Δημάδης ἐρωτηθεὶς, τίς αὐτοῦ διδάσκαλος γεγονὼς εἴη· Τὸ τῶν Ἀθηναίων, ἔφη, βῆμα. Ἐμφαίνων, ὅτι ἡ διὰ τῶν πραγμάτων ἐμπειρία [b] κρείττων πάσης σοφιστικῆς διδασκαλίας ἐστίν.

87.

[a] Sic A. Ex eodem Plutarcho II. p. 787. B.

88.

[a] Sic Trinc. Deest locus A.

[b] Leg. ἢ εἰδέωσι κυρέοντες ut sit futurum Ionicum. Valcken.

[c] ἐπιτυχίῃ] Malim ἀποτυχίῃ. Gesner.

89.

[a] Sic A. E Plutarcho II. p. 79. D.

[b] τακτὸν] πυκτὴν A. Gesneri marg. πυκτῶν B. m. s. Mox πρὸς Ἴωνα habet B. additum m. s. Omittit Trinc.

90.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ὑπό τινος inserit A. post ἐρωτηθείς.

91.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] κρεῖττον Trinc.

92 [a] Διογένους.

Ὁ Διογένης ἔλεγε τὴν Μήδειαν σοφὴν, ἀλλ' οὐ φαρμακίδα γενέσθαι· [b] λαμβάνουσαν γὰρ μαλακοὺς ἀνθρώπους, 207 καὶ τὰ σώματα διεφθαρμένους ὑπὸ τρυφῆς, ἐν [c] τοῖς γυμνασίοις καὶ τοῖς πειρατηρίοις διαπονεῖν, καὶ ἰσχυροὺς ποιεῖν καὶ σφριγῶντας· ὅθεν περὶ αὐτῆς ῥυῆναι τὴν δόξαν, ὅτι τὰ κρέα ἕψουσα νέους ἐποίει.

93 [a] Πλάτωνος.

Τίς οὖν ὁ τρόπος τοῦ καλῶς τε καὶ μὴ γράφειν; Δεόμεθά τι, ὦ Φαῖδρε, Λυσίαν τε περὶ τούτων ἐξετάσαι, [[b] καὶ ἄλλων ὅστις πώποτέ τι γέγραφεν, ἢ γράψει, εἴτε πολιτικὸν σύγγραμμα, εἴτε ἰδιωτικὸν, ἐν μέτρῳ ὡς ποιητὴς, ἢ ἄνευ μέτρου ὡς ἰδιώτης. Ἐρωτᾷς εἰ δεόμεθα;] Τίνος μὲν οὖν ἕνεκά τις, ὡς εἰπεῖν, ζῴη, [c] ἀλλ' ἢ τῶν τοιούτων ἡδονῶν ἕνεκα; Οὐ γάρ που [d] ἐκείνων γε ὧν προλυπηθῆναι δεῖ, ἢ [e] μηδὲ ἡσθῆναι· [f] ὃ δὴ ὀλίγου πᾶσαι αἱ περὶ τὸ σῶμα ἡδοναὶ ἔχουσι, διὸ καὶ δικαίως ἀνδραποδώδεις κέκληνται.

94 [a] Ξενοφῶντος ἐν δ'. Ἀπομνημονευμάτων.

Σωκράτης ἐπιδιωμολογήσατο τὸ μὲν ἐργάτην εἶναι, ὠφέλιμόν τε ἀνθρώπῳ, καὶ ἀγαθόν· τὸ δὲ ἀργὸν, βλαβερόν τε καὶ κακόν· καὶ τὸ μὲν ἐργάζεσθαι, ἀγαθὸν, τὸ δὲ ἀργεῖν, κακόν. Τοὺς μὲν ἀγαθόν τι ποιοῦντας ἐργάζεσθαι ἔφη, καὶ ἐργάτας ἀγαθοὺς εἶναι· τοὺς δὲ κυβεύοντας, ἢ [b] ἄλλό

92.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] λαμβάνουσαν] λαμβάνουσα Tr.
[c] τοῖς bis om. B: m. s. deletum item καὶ ante σφριγῶντας a m. s. πηρατηρίοις Trinc. καὶ ante σφριγῶντας ibid. om.

93.

[a] Sic Trinc. Scil. Phædro p. 258. D. Deest locus A.
[b] καὶ ἄλλων—δεόμεθα om. Trinc.
[c] ἀλλ' ἢ τῶν] om. B.
[d] ἐκείνων] κείνων Trinc.
[e] μηδὲ] μὴ Trinc.
[f] ὅτι] ὃ δὴ Trinc. ib. in fine κέκληται.

94.

[a] Sic A. Scil. I. 2, 57. Ξενοφῶντος Trinc.
[b] ἄλλό τι] τι ἄλλο A.

τι πονηρὸν καὶ ἐπιζήμιον ποιοῦντας ἀργοὺς ἀπεκάλει. Ἐκ δὲ τούτων, ὀρθῶς ἂν ἔχοι

Ἔργον δ' οὐδὲν ὄνειδος, ἀεργίη δέ τ' ὄνειδος.

95 [a] Ξενοφῶντος ἐν ᾱ Ἀπομνημονευμάτων.

Ἴσως οὖν εἴποιεν ἂν πολλοὶ τῶν φασκόντων φιλοσοφεῖν, ὅτι οὐκ ἄν ποτε ὁ δίκαιος ἄδικος γένοιτο, οὐδὲ ὁ σώφρων ὑβριστὴς, οὐδὲ ἄλλο οὐδὲν, [b] ὧν μάθησίς ἐστιν, ὁ μαθὼν, ἀνεπιστήμων ἄν ποτε γένοιτο. Ἐγὼ δὲ περὶ τούτων οὐχ οὕτω γιγνώσκω· ὁρῶ γὰρ, ὥσπερ τὰ [c] τοῦ σώματος ἔργα, τοὺς μὴ τὰ τοῦ σώματος ἀσκοῦντας οὐ δυναμένους ποιεῖν· οὕτω καὶ τὰ τῆς ψυχῆς ἔργα τοὺς μὴ τὴν ψυχὴν ἀσκοῦντας, οὐ δυναμένους· οὔτε γὰρ ἃ δεῖ πράττειν, οὔτε ὧν δεῖ ἀπέχεσθαι δύνανται. [d] Διὸ καὶ τοὺς υἱεῖς οἱ πατέρες, κἂν ὦσι σώφρονες, ὅμως ἀπὸ τῶν πονηρῶν ἀνθρώπων εἴργουσιν, ὡς τὴν μὲν τῶν χρηστῶν ὁμιλίαν, ἄσκησιν [e] οὖσαν τῆς ἀρετῆς· τὴν δὲ τῶν πονηρῶν, κατάλυσιν. Μαρτυρεῖ δὲ καὶ τῶν ποιητῶν, ὅ τε λέγων,

Ἐσθλῶν μὲν γὰρ ἀπ' ἐσθλὰ [f] διδάξεαι· ἢν δὲ κακοῖσι
συμμιγῇς, ἀπολεῖς καὶ τὸν ἐόντα νόον.

καὶ ὁ λέγων,

Αὐτὰρ ἀνὴρ ἀγαθὸς, [g] τοτὲ μὲν κακὸς, ἄλλοτε δ' ἐσθλός.

Κἀγὼ δὲ μαρτυρῶ τοῦτό γε· ὁρῶ [h] γὰρ ὥσπερ τῶν ἐν μέτρῳ πεποιημένων ἐπῶν τοὺς μὴ μελετῶντας ἐπιλανθανομένους, οὕτω καὶ τῶν διδασκαλικῶν λόγων τοῖς ἀμελοῦσι λήθην ἐγγιγνομένην. Ὅτ' ἂν δὲ τῶν [i] νουθετικῶν λόγων ἐπι-

95.

[a] Sic A. I. 2, 19. τοῦ αὐτοῦ Ξενοφῶντος Trinc.

[b] ὧν] ᾧ Trinc.

[c] τὰ τοῦ] τοῦ om. A.

[d] διὸ καὶ] καὶ om. A. Trinc.

[e] οὖσαν] εἶναι A. p. m.

[f] μαθήσεαι] διδάξεαι A. Gesn. marg.

[g] τοτὲ] πότε A.

[h] γὰρ] μὲν præfigit A. in marg.

[i] νομοθετικῶν] νουθετικῶν A. B. m. s. Gesneri marg.

λάθηταί τις, [k] ἐπιλέλησται καὶ ὧν ἡ ψυχὴ πάσχουσα τῆς σωφροσύνης ἐπιθυμεῖ. Τούτων δ' ἐπιλαθόμενον, οὐδὲν θαυμαστὸν καὶ τῆς σωφροσύνης ἐπιλαθέσθαι. Ὁρῶ δὲ καὶ 208
τοὺς εἰς φιλοποσίαν προαχθέντας, καὶ τοὺς εἰς ἔρωτας ἐγκυλισθέντας, ἧττον δυναμένους τῶν τε δεόντων ἐπιμελεῖσθαι, καὶ τῶν μὴ δεόντων ἀπέχεσθαι· πολλοὶ γὰρ καὶ χρημάτων δυνάμενοι φείδεσθαι πρὶν ἐρᾶν, ἐρασθέντες, οὐκέτι δύνανται· καὶ τὰ χρήματα καταναλώσαντες, ὧν πρόσθεν ἀπείχοντο κερδῶν, [l] αἰσχρὰ νομίζοντες εἶναι, τούτων οὐκ ἀπέχονται. Πῶς οὖν οὐκ ἐνδέχεται σωφρονήσαντα πρόσθεν, αὖθις μὴ σωφρονεῖν; καὶ δίκαια δυνηθέντα πράττειν, αὖθις ἀδυνατεῖν; Πάντα μὲν οὖν ἔμοιγε δοκεῖ τὰ καλὰ καὶ τὰ ἀγαθὰ ἀσκητὰ εἶναι, οὐχ ἥκιστα δὲ σωφροσύνη· ἐν τῷ γὰρ αὐτῷ σώματι συμπεφυτευμέναι τῇ ψυχῇ αἱ ἡδοναὶ πείθουσιν αὐτὴν μὴ σωφρονεῖν, ἀλλὰ τὴν ταχίστην ἑαυταῖς τε καὶ τῷ σώματι χαρίζεσθαι.

96 Ἐκ τῶν [a] Σερήνου.

Συβαρίτης ἐπιδημήσας Λακεδαίμονι, καὶ τὰ ἔθη ἰδὼν καὶ τὰς καρτερήσεις οἷς ἐκ παίδων ἀνατρέφονται, οὐδὲν ἔφη θαυμαστὸν αὐτοὺς ποιεῖν, ῥαδίως ἐν τοῖς πολέμοις ἀποθνήσκοντας ὑπὲρ τοῦ μὴ οὕτω ζῆν.

97 [a] Πλάτωνος.

Ἡ τῶν σωμάτων ἕξις ὑπὸ ἡσυχίας μὲν καὶ ἀργίας διόλλυται, ὑπὸ γυμνασίων δὲ καὶ κινήσεων ὡς ἐπιτοπολὺ σώζεται· ἡ δ' ἐν τῇ ψυχῇ ἕξις ὑπὸ μαθήσεως μὲν καὶ μελέτης, κινήσεων οὐσῶν, [b] κτᾶταί τε μαθήματα, καὶ σώζεται,

[k] ἐπιλέλησται] ἐπιλέληθε A. p. m.
[l] αἰσχρὰ] αἰσχρὸν A.

96.

[a] Σερίνου A. Trinc.

97.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Theætet. p. 153 B.

[b] κτᾶται τε μαθήματα] κατὰ τὰ μ. A. ubi mox καὶ om. κατὰ τὰ μ. Trinc.

καὶ γίνεται βελτίων· ὑπὸ δὲ ἡσυχίας, ἀμελετησίας τε καὶ ἀμαθίας οὔσης, οὔτε τι μανθάνει, [c]ἅ τε ἂν [d]μάθῃ, ἐπιλανθάνεται.

98 [a]Κηφισοδώρου.

Κηφισόδωρος ἔλεγεν, ὅτι οὐδεὶς οὐσίαν, ἣν αὐτὸς ἐκτήσατο, κατέφαγεν, ἣν δὲ παρ' ἄλλου παρέλαβε.

99 [a]Πυθαγόρου.

Πυθαγόρας παρῄνει [b]τοῖς ἑταίροις αἱρεῖσθαι βίοτον ἄριστον· καὶ γὰρ εἰ ὁ ἐπιπονώτατος εἴη, ἀλλὰ τῇ συνηθείᾳ ἡδὺν [c]αὐτὸν ποιήσειν.

100 [a]Διονυσίου.

Διονύσιος Λακωνικὸν μάγειρον πριάμενος, ἐκέλευσεν αὐτὸν σκευάσαι τὸν Λακωνικὸν ζωμόν· καὶ σκευάσαντος, οὐκ ἤσθιεν· ἤρετο δὲ [b]κατὰ τί αὐτῷ ἥδονται ἀηδεστάτῳ ὄντι οἱ Λάκωνες· ὁ δὲ οὐκ ἔχειν ἔφη [c]τοῦτον τὰ ἡδύσματα, ἃ ἐκεῖνος ἔχει, διὰ τοῦτο αὐτῷ μὴ ἀρέσαι. Καὶ ὃς ἐπύθετο, τίνα εἴη ταῦτα· αὐτὸν γὰρ κελεῦσαι τῷ ταμίᾳ πάντα ἔκπλεα αὐτῷ δοῦναι· ὁ δ' εἶπεν· ἃ μὴ ἔστι παρὰ σοὶ, πρὸ τοῦ δείπνου [d]πόνοι, καὶ τὸ ἐν τῷ Εὐρώτῃ λουτρόν.

101 [a]Πλάτωνος ἐκ τοῦ Λάχητος.

Καὶ οὐδὲν οἶμαι κακὸν εἶναι τὸ ὑπομιμνήσκεσθαι, ὅτι μὴ καλῶς ἢ πεποιήκαμεν ἢ ποιοῦμεν· ἀλλ' εἰς τὸν ἔπειτα βίον [b]προμηθέστερον ἀνάγκη τὸν ταῦτα εἶναι μὴ φεύγοντα, ἀλλ'

[c] ἅτε] οὔτε B. p. m. Trinc.

[d] μάθῃ] μάθῃ (superscr. οι) A.

98.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

99.

[a] Sic A.

[b] τοῖς ἑταίροις] τοὺς ἑταίρους B. Trinc. Mox f. l. βίον τὸν ἄριστον— τὴν συνήθειαν. Vide supra I. 29.

[c] αὐτὸν] αὐτῷ B.

100.

[a] Sic A. Vide Plutarch. II. p. 236 F.

[b] καὶ] καὶ (superscr. κατὰ) A.

[c] τοῦτο] τοῦτον B.

[d] πόνοι] πο (superscr. ος) A. Dein εὐρῶτι Tr. B. p. m. εὐρώτα m. s.

101.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 188. A.

[b] προμηθέστερον] προθυμέστερον A. p. m.

ἐθέλοντα κατὰ τὸ τοῦ Σόλωνος, καὶ ἀξιοῦντα μανθάνειν ἕως ἂν ζῇ, καὶ μὴ οἰόμενον αὐτῷ τὸ γῆρας νοῦν ἔχον προσιέναι.

102 [a] Ἐν ταυτῷ.

Πολλάκις ἀκήκοά σου λέγοντος, ὅτι ταυτὰ ἀγαθὸς ἕκαστος ἡμῶν, ἅπερ σοφός· ἃ δὲ ἀμαθὴς, ταῦτα δὲ κακός.

103 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδρου.

Σχολὴ μὲν δὴ, ὡς ἔοικε, καὶ ἅμα μοι δοκοῦσιν ὡς ἐν τῷ 209
πνίγει ὑπὲρ κεφαλῆς ἡμῶν οἱ τέττιγες ᾄδοντες, καὶ ἀλλήλοις διαλεγόμενοι καθορᾶν καὶ ἡμᾶς. Εἰ οὖν ἴδοιεν καὶ νὼ καθάπερ τοὺς πολλοὺς ἐν μεσημβρίᾳ μὴ διαλεγομένους, ἀλλὰ νυστάζοντας, καὶ κηλουμένους ὑφ᾽ αὑτῶν δι᾽ ἀργίαν τῆς διανοίας, δικαίως ἂν καταγελῷεν, ἡγούμενοι ἀνδράποδ᾽ ἄττα σφίσιν ἐλθόντα εἰς τὸ καταγώγιον, ὥσπερ προβάτια μεσημβριάζοντα περὶ τὴν κρήνην εὕδειν· ἐὰν δὲ ὁρῶσι διαλεγομένους, καὶ παραπλέοντας σφᾶς, ὥσπερ Σειρῆνας, ἀκηλήτους, ὃ γέρας [b] παρὰ θεῶν ἔχουσιν ἀνθρώποις διδόναι, τάχ᾽ ἂν δοῖεν ἀγασθέντες. Ἔχουσι δὲ δὴ τί [c] τοῦτο; ἀνήκοος γὰρ, ὡς ἔοικε, τυγχάνω ὤν. Οὐ μὲν δὴ πρέπει γε φιλόμουσον ἄνδρα τῶν τοιούτων [d] ἀνήκοον εἶναι. Λέγεται δ᾽ ὥς ποτ᾽ ἦσαν οὗτοι ἄνθρωποι τῶν πρὶν Μούσας γεγονέναι· γενομένων δὲ Μουσῶν, καὶ φανείσης ᾠδῆς, οὕτως ἄρα τινὲς τῶν τότε ἐξεπλάγησαν ὑφ᾽ ἡδονῆς, [e] ὥστε ᾄδοντες ἠμέλησαν σίτων τε καὶ ποτῶν, καὶ ἔλαθον [f] τελευτήσαντες αὑτούς. Ἐξ ὧν τὸ τεττίγων γένος μετ᾽ ἐκείνων φύεται, γέρας τοῦτο παρὰ Μουσῶν λαβὸν, μηδὲν τροφῆς δεῖσθαι [g] γενόμενον, ἀλλ᾽

102.

[a] Sic A. Sc. p. 194. D.

103.

[a] Sic A. Scil. p. 258. E. Simpl. Πλάτωνος Trinc. ubi Σχολῇ. et mox om. ὡς.

[b] παρὰ θεῶν ἔχουσιν] ἔχουσι παρὰ θεῶν A.

[c] τοῦτο] τοιοῦτον A. in textu.

[d] ἀνήκοον] ἀνήκοον εἶναι A. Trinc.

ὥστι
[e] ὥστε] ὡς ὅτε A.

[f] τελευτήσαντες] τετεύτησαντες B.

[g] γενόμενον] γεννώμενον A. B. uterque ex em.

ἄσιτόν τε καὶ ἄποτον εὐθὺς ᾄδειν, ἕως ἂν τελευτήσῃ· καὶ μετὰ ταῦτα [h] ἐλθὸν παρὰ Μούσας ἀπαγγέλλειν, τίς τίνα αὐτῶν τιμᾷ τῶν ἐνθάδε. [i] Τερψιχόρῃ μὲν οὖν τοὺς ἐν τοῖς χοροῖς τετιμηκότας αὐτὴν ἀπαγγέλλοντες, ποιοῦσι [k] προσφιλεστέρους· τῇ δὲ Ἐρατοῖ, τοὺς ἐν τοῖς ἐρωτικοῖς, καὶ ταῖς ἄλλαις οὕτω κατὰ τὸ εἶδος ἑκάστης τιμῆς· τῇ δὲ πρεσβυτάτῃ Καλλιόπῃ, καὶ τῇ μετ᾽ αὐτὴν Οὐρανίᾳ, τοὺς ἐν φιλοσοφίᾳ διάγοντάς τε καὶ τιμῶντας τὴν ἐκείνων μουσικὴν ἀγγέλλουσιν· αἳ δὴ μάλιστα τῶν Μουσῶν, περί τε οὐρανὸν καὶ λόγους οὖσαι θείους τε καὶ ἀνθρωπίνους, ἱᾶσι καλλίστην φωνήν.

ΠΕΡΙ ΑΡΓΙΑΣ. Λ.

1 [a] Εὐριπίδου.

Ἀνὴρ γὰρ ὅστις εὖ βίον κεκτημένος,
τὰ μὲν κατ᾽ οἴκους [b] ἀμελίᾳ παρεὶς ἐᾷ·
μολπαῖσι δ᾽ ἡσθεὶς, τοῦτ᾽ ἀεὶ [c] θηρεύσεται·
ἀργὸς μὲν οἴκοις καὶ πόλει γενήσεται,
φίλοισι δ᾽ οὐδείς. ἡ φύσις γὰρ οἴχεται,
ὅτ᾽ ἂν γλυκείας ἡδονῆς [d] ἥσσων τις ᾖ.

2 [a] Εὐριπίδου Ἱππολύτου.

Τὰ χρήστ᾽ [b] ἐπιστάμεσθα καὶ γιγνώσκομεν,
οὐκ ἐκπονοῦμεν δ᾽· οἱ μὲν ἀργίας ὕπο,

[h] ἐλθὸν] ἐλθὼν A.

[i] τερψιχόρᾳ] τερψιχορ (η, α superscript) A. τερψιχόρῃ B. m. s.

[k] προσφιλεστέρους] προσφιλεστάτους B.

1.

[a] Sic Trinc. Deest locus A. Fr. Antiopæ 29.

[b] ἀμελείᾳ παρειάσει] ἀμελίᾳ παρεὶς ἐᾷ Valcken. Diatr. Eurip. pp. 71. 82.

[c] θηρεύσεται] Ita MS. R. congruentius ad ea quæ præcedunt et sequuntur. Grotius. Sic Tr. Vulgo θηρεύεται.

[d] ἥσσων] ἧσσόν Trinc.

2.

[a] Sic A. Scil. v. 380. Deest lemma Trinc.

[b] ἐπιστάμεσθα] Male vulgo ἐπιστάμεθα. Grotius.

οἱ δ' ἡδονὴν προθέντες ἀντὶ τοῦ καλοῦ
ἄλλην τιν'· εἰσὶ δ' ἡδοναὶ πολλαὶ βίου,
[c] μακραὶ δὲ λέσχαι, καὶ σχολὴ, τερπνὸν κακόν.

3 [a] Τοῦ αὐτοῦ Ἑκάβῃ.

Ὅστις γὰρ οὐκ εἴωθε γεύεσθαι [b] πόνων,
φέρει μὲν, ἀλγεῖ δ' αὐχέν' ἐντιθεὶς ζυγῷ·
θανὼν δ' ἂν εἴη [c] μᾶλλον εὐτυχέστερος,
ἢ ζῶν. Τὸ γὰρ ζῆν [d] ἐν κακοῖς, πόνος μέγας. 210

4 [a] Φιλήμονος.

Ὦ [b] Κλέων, παῦσαι φλυαρῶν, ἂν ὀκνῇς τὸ μανθάνειν,
ἀνεπικούρητον σεαυτοῦ τὸν βίον λήσῃ [c] ποιῶν.
οὔτε γὰρ ναυαγὸς, ἂν μὴ γῆς λάβηται φερόμενος,
οὔποτ' ἂν σώσειεν αὑτόν· οὔτ' ἀνὴρ πένης γεγὼς,
μὴ οὐ τέχνην μαθὼν, δύναιτ' ἂν ἀσφαλῶς ζῆν τὸν βίον.
ἀλλὰ χρήματ' ἐστιν ἡμῖν, [d] ἅ γε τάχιστ' ἀπόλλυται,
κτήματ', οἰκίαι· τύχης δὲ μεταβολὰς οὐκ ἀγνοεῖς,
ὅτι τὸν εὔπορον τίθησι πτωχὸν εἰς τὴν αὔριον·
κἂν μὲν [e] ὁρμισθῇ τις ἡμῶν εἰς λιμένα [f] τὸν τῆς τύχης,
ἔβαλετ' ἄγκυραν καθάψας ἀσφαλείας [g] εἵνεκα·
ἂν δ' [h] ἀπαιδεύτου μετάσχῃ πνεύματος φορούμενος,
τῆς ἀπορίας εἰς τὸ γῆρας οὐκ ἔχει σωτηρίαν.

[c] μακραί τε] μακραὶ δὲ A. Trinc.

3.

[a] Sic A. Scil. v. 375. Deest lemma Trinc.

[b] πόνων] κακῶν A. suprasc. m. s. Gesn. marg.

[c] μᾶλλον] πάντων A. (sic) (suprasc. μᾶλλον)

[d] ἐν κακοῖς] μὴ καλῶς Gesn. marg.

4.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 344.

[b] κλέον] κλέων A. Trinc.

[c] ποιῶν] πονῶν B. m. p. ποῶν Trinc.

[d] ἄγε] ἄγε Trinc. τάδε malit Gesnerus.

[e] ὁρμισθῇ] ὁρμησθῇ Trinc.

[f] τὸν τῆς τύχης] Addidi τὸν ob versum. Grotius. Atqui τὸν præbent omnes edd. τῆς addidit Grotius. Pro τύχης Bentleius legendum suadet τέχνης.

[g] εἵνεκεν] εἵνεκα A.

[h] ἀπαιδεύτου] ἀπαίδευτος Bentleius.

ἀλλ' ἑταῖροι καὶ φίλοι σοι [i] καὶ συνήθεις, νὴ Δία,
ἔρανον εἰσοίσοισιν· εὔχου μὴ λαβεῖν [k] πεῖραν φίλων.
εἰ δὲ μὴ, [l] γνώσῃ σεαυτὸν ἄλλο μηδὲν πλὴν σκιάν.

5 [a] Ἡσιόδου Ἔργων καὶ Ἡμερῶν.

Τῷδε θεοὶ [b] νεμεσῶσι καὶ ἀνέρες, ὅστις ἀεργὸς
ζώῃ, κηφήνεσσι [c] κοθούροις εἴκελος ὀργὴν,
οἵτε μελισσάων κάματον νήποινον ἔδουσι.

6 [a] Σοφοκλέους Ἰφιγενείας.

Τίκτει γὰρ οὐδὲν ἐσθλὸν εἰκαῖα σχολή.
[b] Θεὸς δὲ τοῖς ἀργοῦσιν οὐ παρίσταται.

7 [a] Μενάνδρου Ἐπιτρεπόντων.

Ἀργὸς δ' ὑγιαίνων, τοῦ πυρέττοντος πολὺ
[b] ἀθλιώτερος, διπλάσια γοῦν ἐσθίει μάτην.

8 [a] Ἀλέξιδος.

[b] Ὅστις ἥδεται γὰρ ἐσθίων
ὁσημέραι, δεῖ καὶ ποιεῖν τῶν σιτίων
ἐπάξιόν τι, μηδὲ περινοστεῖν σχολὴν
ἄγοντα, τῷ ζῆν πολεμιώτατον κακόν.

[i] καὶ om. A. συνήθης μὴ Trinc.
[k] πεῖραν φίλων] φίλων πεῖραν A.
[l] γνώσεις ἂν αὐτοὺς] Verissima emendatio viri optimi atque eruditissimi Isaaci Casauboni. Vulgo, γνώσῃ σεαυτόν. Grotius. Vulgatum recte defendit Bentleius.

5.

[a] Sic A. suprasc. tamen ἔργοις καὶ ἡμεραῖς. Sc. v. 301. Simpl. Ἡσιόδου Trinc.

[b] νεμεσῶσι] νεμεσοῦσι A.

[c] κοθούροις] κουθούροις A. et mox ὀργὴν pro ὁρμήν.

6.

[a] Sic A. Scil. Fr. 1. Simpl. Σοφοκλέους Trinc.
[b] θεὸς δὲ] θεὸς γὰρ A.

7.

[a] Sic A. Simpl. Μενάνδρου Trinc. Cleric. p. 68.

[b] ἀθλιώτερος· διπλάσια γὰρ ἐσθίει μάτην] Ita versum hunc concinnavimus, inducto ἔστ', quod in capite versus supererat, et pro γοῦν posito γάρ. Grotius. Illud ἔστ' deest A. δίπλαοι ἄγουν A. διπλᾶ οἷα γοῦν N. Trinc. cf. Vinetus ad Auson. Ep. CX.

8.

[a] Sic Trinc. Deest locus A.

[b] Hoc fragmentum emendavit Porsonus Adv. p. 303. Vulgo ἀεὶ pro δεῖ. deinde τι omisit Gesnerus, habent N. Trinc. μηδὲν, περινοστεῖν δὲ omnes.

9 [a] Εὐριπίδου Ἀντιόπης.

Πολλοὶ δὲ θνητῶν τοῦτο πάσχουσιν κακὸν,
γνώμῃ [b] φρονοῦντες, οὐ θέλουσ' ὑπηρετεῖν
ψυχῇ, τὰ πολλὰ πρὸς φίλων νικώμενοι.

10 [a] Ἡσιόδου Ἔργων.

[b] Πολλὰ δ' ἀεργὸς ἀνὴρ κενεὴν ἐπὶ ἐλπίδα μίμνων,
χρηΐζων βιότοιο, κακὰ προσελέξατο θυμῷ.
ἐλπὶς δ' οὐκ ἀγαθὴ κεχρημένον ἄνδρα κομίζει
ἥμενον ἐν λέσχῃ, τῷ μὴ βίος ἄρκιος εἴη.

11 [a] Εὐριπίδου.

Ἀργὸς πολίτης κεῖνος, ὡς κακός γ' ἀνήρ.

12 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀργὸς γὰρ οὐδεὶς θεοὺς ἔχων ἀνὰ στόμα
βίον δύναιτ' ἂν συλλέγειν ἄνευ πόνων.

13 [a] Ἀνάξαρχος ἔλεγεν, εἰ μέν τινί τις καταράσαιτο ἀχρήστους αὐτῷ γενέσθαι τὰς χεῖρας καὶ τοὺς πόδας, [b] ὀργίζεσθαι ἂν αὐτῷ· τοὺς δὲ πλουσίους ἔργῳ ἀχρήστους τοὺς πόδας καὶ τὰς χεῖρας ποιοῦντας αὐτῶν, μακαρίζειν σφᾶς ἐπὶ τούτων.

14 [a] Δημοσθένους.

Πρὸς θεῶν τίς οὕτως εὐήθης ὑμῶν, ὅστις ἀγνοεῖ τὸν ἐκεῖθεν

9.

[a] Sic A. Scil. Fr. 9. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] φρονοῦντες] φρονοῦντος B.

10.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Opp. v. 496.

[b] πολλὰ δ' ἀεργὸς ἀνὴρ] Post hæc verba magna est lacuna in A. Adscripsit recentior manus, λείπει περὶ αἰδοῦς, περὶ ἀναιδείας, περὶ σιωπῆς, περὶ τοῦ εὐκαίρως λέγειν. Quod ad posteriora attinet minus recte; desunt enim tit. XXXIV. tantummodo ss. 13. priores et pars s. 14. Incipit iterum codex a verbis ἢ βρωμάτων.

11.

[a] Sic Trinc. in *Melanippe* Gesner. v. Fr. 4.

12.

[a] Cum præcedente conjungunt edd. Sed leguntur hi vss. Electr. 80.

13.

[a] Deest lemma Trinc.

[b] ὀργίζεσθαι ἂν αὐτῷ] ὀργίζεσθαι δ' ἂν αὐτόν Trinc.

14.

[a] Sic Trinc. Scil. Ol. I. p. 13.

πόλεμον δεῦρ' [b] ἥξοντα, ἂν ἀμελήσωμεν; ἀλλὰ μὴν εἰ τοῦτο γενήσεται, δέδοικα, ὦ Ἀθηναῖοι, μὴ τὸν αὐτὸν τρόπον ὥσπερ οἱ δανειζόμενοι ῥᾳδίως ἐπὶ τοῖς μεγάλοις τόκοις, μικρὸν εὐπορήσαντες χρόνον, ὕστερον καὶ τῶν ἀρχαίων ἀπέστησαν· οὕτω καὶ ἡμεῖς ἂν ἐπιπολὺ φανῶμεν ἐρραθυμηκότες, καὶ 211
ἅπαντα πρὸς ἡδονὴν ζητοῦντες, πολλὰ καὶ χαλεπὰ ὧν [c] ἐβουλόμεθα ὕστερον εἰς ἀνάγκην ἔλθωμεν ποιεῖν, καὶ κινδυνεύσωμεν περὶ τῶν ἐν αὐτῇ τῇ χώρᾳ.

15 [a] Εὐσεβίου.

Σῶμα ἀργίη τήκει, ψυχὴν δὲ ἀμελετησίη ἀσκήσιος [b] τῶν αὐτὴν ἀειρόντων πρὸς τὸ [c] θεοειδέστατον.

16 [a] Ξενοφῶντος.

Σχολὴν δὲ σκοπῶν τί εἴη, ποιοῦντας [b] μέν τι τοὺς πλείστους εὑρίσκειν ἔφη· καὶ [c] γὰρ τοὺς πεττεύοντας, καὶ τοὺς [d] γελωτοποιοῦντας, ποιεῖν τι, πάντας δὲ τούτους ἔφη σχολάζειν· [e] ἐξεῖναι γὰρ αὐτοῖς ἰέναι πράξοντας τὰ βελτίω τούτων· ἀπὸ μέντοι τῶν βελτιόνων ἐπὶ τὰ χείρω ἰέναι, οὐδένα σχολάζειν· εἰ δέ τις ἴοι, τοῦτον ἀσχολίας αὐτῷ οὔσης [f] κακῶς ἔφη τοῦτο πράττειν.

17 [a] Πλάτωνος.

Τὸ γὰρ ὅλην διατελεῖν ἡντινοῦν νύκτα καθεύδοντα, καὶ ὀν-

[b] ἥξοντα] ἐξήξοντα B.
[c] ἐβουλόμεθα] addo μή. Gesner. οὐκ ed. Demosth.

15.

[a] Sic Trinc.
[b] τῶν αὐτὴν] Mal. τὴν αὐτὴν ἀειρούσης. Gesner. Frustra tentavit Gesnerus, ubi nihil depravatum præter distinctionem. Scribe: ψυχὴν δ' ἀμελετησίη ἀσκήσιος τῶν α. α. πρὸς τὸ θεοδέστατον. *animam vero neglecta exercitatio earum rerum, quæ eam ad divinam similitudinem extollunt.* Jacobs. in Athen. p. 172. Tentat male Gesner. Nisi quid desit lego, ἀσκήσιες (scil. εἰσι) τῶν αὐτὴν ἀειρόντων πρὸς τὸ θεοειδέστατον. An θεωδέστατον? Valcken. annott. mss.
[c] θεοειδέστατον N. Trinc. ubi locus recte distinguitur. Vulgo θεοδέστατον.

16.

[a] Sic Trinc. Scil. Memorab. III. 9, 9.
[b] μέν τι] μέν τοι Trinc.
[c] γὰρ τοὺς] deest articulus B.
[d] γελωτοποιοῦντας] γελωποιοῦντας B.
[e] ἐξεῖναι γὰρ αὐτοῖς om. Trinc.
[f] κακῶς ἔφη] om. N. Trinc.

17.

[a] Sic Tr. Scil. Legg. III. p. 807.

τινοῦν τῶν πολιτῶν, καὶ μὴ φανερὸν εἶναι πᾶσι τοῖς οἰκέταις ἐγειρόμενόν τε, καὶ ἐξανιστάμενον αἰεὶ πρῶτον, τοῦτ' αἰσχρὸν δεῖ δεδόχθαι πᾶσι, καὶ οὐκ ἐλευθέρου· εἴτ' οὖν νόμον, εἴτ' ἐπιτήδευμα τὸ τοιοῦτον καλεῖν ἐστι χρεών. [b] Καὶ δὴ δέσποιναν ἐν οἰκίᾳ ὑπὸ θεραπαινίδων ἐγείρεσθαί τινων, καὶ μὴ πρώτην αὐτὴν ἐγείρειν τὰς ἄλλας, αἰσχρὸν λέγειν χρὴ πρὸς αὐτοὺς δούλην τε καὶ δοῦλον καὶ παῖδα, καὶ εἴ πως [c] ἦν οἷόν τε ὅλην καὶ πᾶσαν τὴν οἰκίαν. Ἐξεγειρομένους δὲ νύκτωρ, δεῖ [d] πάντως πράττειν τῶν τε πολιτικῶν [e] μέρη πολλὰ καὶ τῶν οἰκονομικῶν, [f] ἄρχοντας μὲν κατὰ πόλιν, δεσποίνας δὲ καὶ δεσπότας ἐν οἰκίαις ἰδίαις. Ὕπνος γὰρ δὴ πολὺς, οὔτε τοῖς σώμασιν, οὔτε ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν, οὐδ' αὖ ταῖς πράξεσι ταῖς περὶ ταῦτα πάντα ἁρμόττων ἐστὶ κατὰ φύσιν. Καθεύδων γὰρ οὐδεὶς οὐδενὸς ἄξιος, οὐδὲν μᾶλλον τοῦ μὴ ζῶντος. Ἀλλ' ὅστις τοῦ ζῆν ἡμῶν καὶ τοῦ φρονεῖν μάλιστά ἐστι κηδεμὼν, ἐγρήγορε χρόνον ὡς πλεῖστον, τὸ πρὸς ὑγείαν αὐτοῦ φυλάττων μόνον χρήσιμον· ἔστι δὲ τοῦτ' οὐ πολὺ [g] καλῶς εἰς ἔθος ἰόν. Ἐγρηγορότες δὲ ἄρχοντες ἐν πόλεσι νύκτωρ, φοβεροὶ μὲν κακοῖς, πολεμίοις ἅμα καὶ πολίταις· ἀγαστοὶ δὲ καὶ τίμιοι τοῖς δικαίοις τε καὶ σώφροσιν· ὠφέλιμοι δὲ αὐτοῖς τε καὶ ξυμπάσῃ [h] τῇ πόλει.

ΠΕΡΙ ΑΙΔΟΥΣ. ΛΑ.

1 [a] Εὐριπίδου.

Αἰδὼς γὰρ ὀργῆς πλεῖον ὠφελεῖ βροτούς.

[b] καὶ δὴ] δὴ om. N. Trinc.
[c] ἦν οἷόν τε] ἦν om. Trinc.
[d] πάντως] πάντας Gesn. marg.
[e] μέρη] ἡ μέρα N. Trinc.
[f] ἄρχοντας] ἄρχοντα B. et mox ἰδέαις.
[g] καλῶς—πόλεσι om. Trinc.

[h] τῇ πόλει] deest articulus B.

1.

[a] Sic Trinc. *Euripidis in Timæo* Gesner. Temen. Fr. 4. apud Musgravium. *Temenisi* Grotius in annott. mss.

2 [a] Εὐριπίδου Ἰφιγενείας.

Βούλομαί σ᾽ εἰπεῖν [b] κακῶς εὖ, βραχέα, μὴ λίαν [c] ἄνω 50
βλέφαρα πρός τἀναιδὲς ἀγαγὼν, ἀλλὰ σωφρονεστέρως,
[d] ὡς ἀδελφὸν ὄντ᾽. ἀνὴρ γὰρ χρηστὸς αἰδεῖσθαι φιλεῖ.

3 [a] Τοῦ αὐτοῦ Ἱππολύτου.

Ὦ πότνι᾽ αἰδὼς, [b] εἴθε τοῖς πᾶσιν βροτοῖς
συνοῦσα, τἀναίσχυντον ἐξῄρου φρενῶν.

4 [a] Ἡσιόδου.

Αἰδὼς ἥτ᾽ ἄνδρας μέγα σίνεται, ἠδ᾽ ὀνίνησιν.

5 [a] Μενάνδρου Ὁμοπατριῶν.

[b] Πᾶς ἐρυθριῶν χρηστὸς εἶναί μοι δοκεῖ. 212

6 [a] Μουσωνίου.

Αἰδοῦς παρὰ [b] πᾶσιν ἄξιος ἔσῃ, ἐὰν πρῶτον [c] ἄρξῃς [d] σαυτὸν αἰδεῖσθαι.

7 [a] Δημοκρίτου.

Φαῦλον, κἂν μόνος ᾖς, μήτε λέξῃς, μήτ᾽ ἐργάσῃ· μάθε δὲ πολὺ μᾶλλον τῶν ἄλλων σεαυτὸν αἰσχύνεσθαι.

8 Πυθιὰς ἡ Ἀριστοτέλους [a] τοῦ φιλοσόφου θυγάτηρ ἐρωτηθεῖ-

2.

[a] Deest lemma Trinc. v. Iphigen. Aul. 378.

[b] κακῶς om. Arsen.

[c] ἄνω] Ita rectius in Stobæi codicibus quam apud Euripidem ἂν ὦ. Grotius.

[d] ὡς ἀδελφὸν ὄντ᾽· ἀνὴρ γὰρ χρηστὸς αἰδεῖσθαι φιλεῖ] Ita nos: nam edebatur ἀνὴρ γὰρ χρηστὸς χρηστὸν contra versus legem et præter sensum. At in Euripide legimus, ἀνὴρ γὰρ αἰσχρὸς αἰδεῖσθ᾽ οὐ φιλεῖ. Minus recte. Grotius. αἰσχρὸς αἰδεῖσθ᾽ οὐ φιλεῖ Gesneri margo.

3.

[a] Deest lemma Trinc. Sed Hippolyto tribuit Gesnerus. v. Fr. 3.

[b] εἴθε] εἴτε Trinc.

4.

[a] Sic Trinc. Sc. Opp. v. 316.

5.

[a] Sic Gesner. Cleric. p. 134. Μουσωνίου Trinc.

[b] πᾶς ἐρυθριῶν] ἐρυθριῶν πᾶς Jacobs. in Athen. p. 24. Malim ἅπας ἐρ. cum Grotio.

6.

[a] Sic Gesner. Deest lemma Trinc.

[b] πᾶσιν] πάντων Voss.

[c] ἄρξῃς] ἄρξῃ Damasc.

[d] σαυτὸν αἰδεῖσθαι] σεαυτὸν αἰσχύνεσθαι. Voss. ἐὰν πρῶτον σεαυτὸν αἰδεῖσθαι Trinc.

7.

[a] Sic Trinc.

8.

[a] τοῦ φιλοσόφου om. Voss.

σα ποῖον κάλλιστον χρῶμα, ἔφη, Τὸ διὰ τὴν αἰδῶ τοῖς ἐλευθέροις ἐπιγιγνόμενον.

9 [a] Ἰαμβλίχου.

Τοιαῦτα δ' ἂν εἴη καὶ τὰ τῆς αἰδοῦς ἀντεχόμενα, τιμῶντα [b] μὲν τὰ χρηστὰ ἤθη, δι' ἣν τῶν αἰσχρῶν πάντων ἀπεχόμεθα· τὴν δὲ ἀναίδειαν ἐξορίζοντα τῆς ψυχῆς, δι' ἣν ὑπὸ τῶν αἰσχρῶν οἱ πολλοὶ ἁλίσκονται.

10 [a] Θεοφράστου.

Αἰδοῦ σαυτὸν, καὶ ἄλλον οὐκ αἰσχυνθήσῃ.

11 [a] Κάτωνος.

Μάλιστα δὲ νόμιζε δεῖν ἕκαστον αἰδεῖσθαι ἑαυτόν· μηδὲν γὰρ ἑαυτοῦ μηδέποτε χωρὶς εἶναι.

12 [a] Στασίνου.

Ζῆνα δὲ τὸν ῥέξαντα, καὶ ὃς τάδε πάντ' ἐφύτευσεν,
οὐκ ἐθέλεις εἰπεῖν. Ἵνα γὰρ δέος, ἔνθα καὶ αἰδώς.

13 [a] Ὁμήρου.

Αἰδοῖός τέ μοι ἐσσὶ, φίλε ἑκυρὲ, δεινός τε.

14 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

[b] Ἀλλ' αἰδέομαι, καὶ δείδια.

15 [a] Εὐριπίδου.

[b] Αἰδὼς ἐν ὀφθαλμοῖσι γίγνεται τέκνον.

9.

[a] Sic Trinc. Παμβλίων Damasc. *Iamblichi ad Sopatrum de Virtute.* Gesner.

[b] μὲν] δὲ N. Trinc. et mox om. δὲ post τήν.

10.

[a] Sic Trinc.

11.

[a] Sic Trinc.

12.

[a] Στασίμου Trinc. *Stasini in Cypriacis* Gesner. v. Schol. Platonis p. 4. ed. Ruhnken.

13.

[a] Sic Trinc. Scil. Il. γ. 172.

14.

[a] Deest lemma Trinc. v. Od. ρ. 188.

[b] ἀλλὰ καὶ αἰδέομαι] Vulgo, ἀλλ' αἰδέομαι. Grotius.

15.

[a] Sic Trinc. *Euripidis in Cresphonte* Gesner. v. Fr. 3.

[b] αἰδὼς] αἰδὼς δ' Trinc.

16 [a] Θεόγνιδος.

Οὐδένα θησαυρὸν καταθήσεαι ἔνδον ἀμείνω
αἰδοῦς, ἣν ἀγαθοῖς ἀνδράσι, Κύρνε, δίδως.

17 [a] Ἀγάθωνος.

[b] Ἀδικεῖν νομίζων, ὄψιν αἰδοῦμαι φίλων.

18 [a] Πλάτωνος.

Λέγω γὰρ δὴ τὸ ἐναντίον [b] ἢ ὁ ποιητὴς ἐποίησεν, ὁ ποιήσας,

Ζῆνα δὲ τὸν ῥέξαντα, καὶ ὃς τάδε πάντ' ἐφύτευσεν,
οὐκ ἐθέλεις εἰπεῖν. Ἵνα γὰρ δέος, ἔνθα καὶ αἰδώς.

[c] Ἐγὼ οὖν τούτῳ διαφέρομαι τῷ ποιητῇ· εἴπω σοι ὅπῃ; Πάνυ γε. Οὐ δοκεῖ μοι εἶναι ἵνα δέος, ἔνθα καὶ αἰδώς· πολλοὶ γάρ μοι δοκοῦσι καὶ νόσους καὶ πενίας καὶ ἄλλα πολλὰ τοιαῦτα [d] δεδιότες, [e] δεδιέναι μὲν, αἰδεῖσθαι δὲ μηδὲν ταῦτα ἃ δεδίασιν· οὐ καὶ σοὶ δοκεῖ; Πάνυ γε. Ἀλλ' ἵνα γε αἰδὼς, ἔνθα καὶ δέος [f] εἶναι. Ἐπεί ἐστιν ὅστις αἰδούμενός τι πρᾶγμα καὶ αἰσχυνόμενος, οὐ πεφόβηταί τε καὶ δέδοικεν ἅμα δόξαν πονηρίας; Δέδοικε μὲν οὖν. Οὐκ ἄρα ὀρθῶς ἔχει λέγειν, ἵνα γὰρ δέος, ἔνθα καὶ αἰδώς· ἀλλ' [g] ἵνα μὲν αἰδὼς, ἔνθα καὶ δέος. Οὐ μέντοι γε ἵνα γε δέος, πανταχοῦ αἰδώς· ἐπιπλέον γὰρ οἶμαι δέος αἰδοῦς· μόριον γὰρ αἰδὼς δέους, ὥσπερ ἀριθμοῦ περιττόν. Ὥστε οὐχ ἵνα περ ἀριθμὸς, ἔνθα καὶ περιττόν· ἵνα δὲ περιττὸν, ἔνθα καὶ ἀριθμός.

16.
[a] Sic Trinc. Scil. v. 409.

17.
[a] Sic Trinc.
[b] ἀδικεῖν] δοκεῖν Damasc.

18.
[a] Sic Trinc. Scil. Euthyph. p. 12.
[b] ἢ ὁ ποιητὴς] ἢ ὅπη Trinc.
[c] ἐγὼ—καὶ αἰδὼς om. Voss.
[d] δεδιότες om. Trinc.
[e] δεδιέναι μ. αι. δὲ μ. τ. om. B.
[f] εἶναι] ἔστιν Voss.
[g] ἵνα μὲν] ἵνα τε Trinc.

ΠΕΡΙ ΑΝΑΙΔΕΙΑΣ. ΛΒ.

1 [a] Μενάνδρου.

Ἀπερυθριᾷ πᾶς, ἐρυθριᾷ δ' οὐδεὶς [b] ἔτι.

2 [a] Διφίλου.

Ὃς δ' οὔτ' ἐρυθριᾶν [b] οἶδεν, οὔτε δεδιέναι,
τὰ πρῶτα πάσης τῆς ἀναιδείας ἔχει.

3 [a] Διφίλου.

Οὐκ ἔστιν ἀναιδοῦς ζῶον εὐθαρσέστερον. 213
κακὴ γὰρ αἰδὼς ἔνθα [b] τἀναιδὲς κρατεῖ.

4 [a] Θεόγνιδος.

Ἤδη νῦν αἰδὼς μὲν ἐν ἀνθρώποισιν ὄλωλεν,
αὐτὰρ ἀναιδείη γαῖαν [b] ἐπέρχεθ' ὁμῶς.

5 [a] Εὐριπίδου.

Οὔ τοι θράσος τόδ' ἐστὶν, οὐδ' εὐτολμία,
[b] φίλους κακῶς δράσαντ' ἐναντίον βλέπειν·
ἀλλ' ἡ μεγίστη τῶν ἐν ἀνθρώποις νόσων
πασῶν, ἀναίδει'. Εὖ δ' ἐποίησας μολών.

6 [a] Θεοδέκτου.

Ἅπαντ' ἐν ἀνθρώποισι γηράσκειν ἔφυ,
καὶ πρὸς τελευτὴν ἔρχεται [b] τὴν τοῦ χρόνου,

1.

[a] Sic Trinc. Cleric. p. 217.
[b] ἔτι] ἐστι B. N.

2.

[a] Sic Gesner. Menandro tribuere videtur Trinc.
[b] οἶδεν] ἐπίσταται Voss. N. Trinc.

3.

[a] Sic Trinc.
[b] γ' ἀναιδές.] Sic MSS. et edd. ante Grotium, qui reposuit γ' ἀναιδεία. Recte τἀναιδὲς correxit Valckenærius ad Eurip. Hippol. 385.

4.

[a] Sic Trinc. Scil. v. 648.
[b] ἐπέρχεθ' ὅμως] ἐπιστρέφεται Damasc. ἀλλ' ἐπιστρέφεται marg. Gesneri. Pro ἀλλ' voluit forte ἄλλως.
Ib. ἐπιστρέφεται] Ita apud Theognidem legitur rectius, ni fallor, quam quod heic exstabat, γαῖαν ἐπέρχεθ' ὁμῶς. GROTIUS.

5.

[a] Sic Trinc. Scil. Med. 469.
[b] φίλους] φίλοις Gesneri margo. ἀλλ' ἡ μεγίστη—μολών om. B.

6.

[a] Θεοτεύκτου Trinc.
[b] τὴν τοῦ] τὰ τοῦ Voss. Damasc. Arsen.

πλὴν, ὡς ἔοικε, τῆς ἀναιδείας μόνον.
αὕτη δ' ὅσωπερ αὔξεται θνητῶν γένος,
τοσῷδε μείζων γίγνεται καθ' ἡμέραν.

7 [a] Μενάνδρου.

Ὦ μεγίστη τῶν θεῶν
νῦν οὖσ' ἀναίδει', εἰ θεὸν καλεῖν σε δεῖ.
δεῖ δέ· τὸ κρατοῦν γὰρ νῦν νομίζεται θεός.
ἐφ' ὅσον βαδίζεις; ἐφ' ὅσον ἥξειν μοι δοκεῖς;

8 [a] Ἡροδότου.

Ἅμα δὲ χιτῶνι ἐκδυομένῳ ἐκδύεται καὶ τὴν αἰδῶ γυνή. 20

9 [a] Ξενοφῶντος.

Ἕπεσθαι [b] δὲ δοκεῖ μάλιστα τῇ ἀχαριστίᾳ ἀναισχυντία· καὶ γὰρ αὕτη δοκεῖ εἶναι μεγίστη ἐπὶ πάντα τὰ αἰσχρὰ ἡγεμών.

ΠΕΡΙ ΣΙΩΠΗΣ. ΛΓ. 50

1 [a] Καρκίνου.

Πολλοῖς γὰρ ἀνθρώποισι φάρμακον κακῶν
σιγὴ, μάλιστα δ' ἐστὶ σώφρονος τρόπου.

2 [a] Μενάνδρου.

Οὐθὲν σιωπῆς ἐστι χρησιμώτερον.

3 [a] Σοφοκλέους Ἀλέασι.

Ὦ παῖ, σιώπα· πόλλ' ἔχει [b] σιγὴ καλά. 214

7.
[a] Sic Trinc. *Menandri in Carine* Gesner. Cleric. p. 96.

8.
[a] Sic Trinc. Scil. I. 8.

9.
[a] Deest lemma Trinc. v. Cyropæd. I. 2, 7.
[b] δὲ om. B.

1.
[a] Sic Trinc.

2.
[a] Sic Trinc. Cleric. p. 216.

3.
[a] Sic Gesner. v. Aload. Fr. 4. Deest lemma Trinc.
[b] σιωπὴ] σιγὴ Gesneri margo.
Ib. σιγὴ] Sic Plut. citat. Vulgo male σιωπή. Grotius in nott. mss. v. Plutarch. de Garrul. p. 502. E.

4 [a] Χάρητος.

Γλώσσης μάλιστα πανταχοῦ πειρῶ κρατεῖν.
ὃ καὶ γέροντι καὶ νέῳ τιμὴν φέρει,
ἡ γλῶσσα σιγὴν καιρίαν κεκτημένη.

5 [a] Ἀθηνοδώρου.

[b] Ἔστι καὶ τὸ σιγῆς ἀκίνδυνον γέρας.

6 [a] Ἄμφιδος.

Οὐκ ἔστι κρεῖττον τοῦ σιωπᾶν οὐδὲ ἕν.

7 [a] Φιλωνίδου.

Κρεῖττον σιωπᾶν ἐστιν, ἢ λαλεῖν μάτην.

8 [a] Κλεάνθους.

Σιωπῶντος τοῦ Κλεάνθους, ἐπεί τις ἔφη, Τί σιγᾷς; καὶ μὴν ἡδὺ τοῖς φίλοις ὁμιλεῖν. Ἡδὺ, ἔφη, ἀλλ' [b] ὅσῳ ἥδιον, τοσῷδε μᾶλλον αὐτοῦ τοῖς φίλοις παραχωρητέον.

9 [a] Πλουτάρχου.

Ἄνευ δὲ τούτου τὴν περὶ τὴν γλῶσσαν ἐγκράτειαν, οὐ μικρὸν ἀρετῆς μέρος οὖσαν, ὑπήκοον ἀεὶ τῷ λογισμῷ καὶ πειθήνιον ἔχειν οὐκ ἔστιν, ἂν μή τις ἀσκήσει καὶ μελέτῃ καὶ φιλοπονίᾳ τὰ κάκιστα τῶν παθῶν, οἷόν ἐστιν ἡ ὀργὴ, κατεργάσηται.

10 [a] Ζήνων, Ἀντιγόνου πρέσβεις Ἀθήναζε πέμψαντος, κληθεὶς ὑπ' αὐτῶν σὺν ἄλλοις φιλοσόφοις ἐπὶ δεῖπνον, κἀκεί-

4.

[a] Sic Trinc.

5.

[a] Sic Trinc.

[b] ἀλλ' ἔστι καὶ σιγῆς] Ita versus constat: vulgo ἔστι καὶ τὸ. Usurpavit Horatius: *Est et fideli tuta silentio Merces.* Grotius. σιγᾶν pro σιγῆς habet margo Gesneri. Omnino conferatur Wyttenbach. Bibl. Crit. III. ix. p. 40.

6.

[a] Sic Trinc.

7.

[a] Sic Trinc.

8.

[a] Sic Trinc.

[b] ὅσον] ὅσῳ Voss.

9.

[a] Locus deest Trinc. Gesnerus: *Plutarchi in libro quomodo quis fructum ab inimicis capiat.* Vid. p. 90 B.

10.

[a] Deest lemma Trinc. v. Plutarch. II. p. 504. A. Diogen. Laërt. VII. 24.

νων παρὰ πότον σπευδόντων ἐπιδείκνυσθαι τὴν αὐτῶν ἕξιν, αὐτὸς ἐσίγα. Τῶν δὲ πρέσβεων ζητούντων τί ἀπαγγείλωσι περὶ αὐτοῦ πρὸς Ἀντίγονον, Τοῦτ᾽ αὐτὸ, ἔφη, ὃ βλέπετε· δυσκρατέστατον γὰρ πάντων ὁ λόγος.

11 [a] Ξενοκράτης διαιρῶν ἕκαστον μέρος τῆς ἡμέρας εἰς πρᾶξίν τινα, καὶ τῇ σιωπῇ μέρος ἀπένεμε.

12 [a] Σιμωνίδης ἔλεγε, μηδέποτε αὐτῷ μεταμελῆσαι σιγήσαντι, φθεγξαμένῳ δὲ πολλάκις.

13 [a] Πολλὴν ἐπιμέλειαν ποιεῖσθαι περὶ τοῦ μὴ λέγειν ἃ μὴ δεῖ. Παντελῶς γὰρ ἀπαιδεύτου τινός ἐστι τὸ μὴ δύνασθαι σιωπᾶν, ἀλλ᾽ ἐκλαλεῖν τὰ μὴ καλῶς ἔχοντα.

14 Διογένης πρὸς τὸν φιλόσοφον εἶναι φήσαντα, ἐρωτῶντα δὲ ἐριστικῶς, Κακόδαιμον, ἔφη, τὸ βέλτιστον τῶν ἐν τῷ βίῳ τοῦ φιλοσόφου λυμαινόμενος τῷ λόγῳ φιλοσοφεῖν φής.

15 Θεόκριτος ἐρωτηθεὶς ὑπὸ ἀδολέσχου ὅπου αὐτὸν αὔριον ὄψοιτο· Ὅπου, ἔφη, ἐγώ σε οὐκ ὄψομαι.

16 [a] Δίωνος.

[b] Μὴ νομίσητέ με, ὦ Ἀθηναῖοι, ἀγνοεῖν, ὅτι ἀσφαλὲς τὸ σιγᾶν ἐστι.

17 [a] Πλουτάρχου.

Περὶ τῆς καθ᾽ Ὅμηρον ἐχεμυθίας διὰ τούτου σαφῶς δείκνυται. Λέγει γάρ·

Θερσίτ᾽ ἀκριτόμυθε, λιγύς περ ἐὼν ἀγορητής,
ἴσχεο, μηδ᾽ ἔθελ᾽ οἶος ἐριζέμεναι βασιλῆϊ.

11.

[a] Deest lemma Trinc. v. Diogen. Laert. IV. 11.

12.

[a] Deest lemma Trinc. v. Plutarch. II. p. 515. A.

13.

[a] Deest lemma Trinc. Gesner.: *Apollonii ad familiares.*

16.

[a] Sic Trinc. Gesner.: *Dionis alias Demosthenis.* v. Reiskii ind. Demosthen. v. σιγᾶν.

[b] om. B.

17.

[a] Sic Trinc. Vid. Fragm. inc. 1.

καὶ τοῦ Τηλεμάχου εἰπόντος,

ἦ μάλα τὶς θεῶν ἔνδον, [b] οἳ οὐρανὸν εὐρὺν ἔχουσιν·

ἐπιλαμβανόμενος ὁ πατὴρ, ἔφη·

σίγα, καὶ κατὰ σὸν νόον ἴσχανε, μηδ' ἐρέεινε.
αὕτη τοι δίκη ἐστὶ θεῶν οἳ ὄλυμπον ἔχουσι.

τοῦτο ἐξήγησιν οἱ Πυθαγορικοὶ καλοῦντες, οὐδὲν ἀπεκρίνοντο τῶν περὶ θεῶν ὅτε τύχοιεν ἰταμῶς καὶ [c] εὐχερῶς ἐρωτῶσι.

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΕΥΚΑΙΡΩΣ ΛΕΓΕΙΝ. ΛΔ. 215

1 [a] Εὐριπίδου.

Ἢ λέγε τι σιγῆς κρεῖττον, ἢ σιγὴν ἔχε.

2 [a] Εὐριπίδου.

Ἁπλοῦς ὁ μῦθος, [b] μὴ λέγ' εὖ· τὸ γὰρ λέγειν
εὖ, δεινόν ἐστιν, εἰ φέροι τινὰ βλάβην.

3 [a] Εὐριπίδου.

Εἰ μὴ [b] καθέξεις γλῶσσαν, ἔσται σοι κακά.

4 [a] Ἀντιφάνους.

Οὐκ ἔστιν οὐδὲν λεγόμενον μακρῶς, ὅτε
ὁ λέγων ὑποτάττει [b] τοῖς λόγοις τὰ πράγματα.

5 [a] Αἰσχύλου.

Πρὸ τῶν τοιούτων χρὴ λόγων δάκνειν στόμα.

[b] οἳ οὐρανὸν—ἔχουσι om. B.
[c] δυσχερῶς] εὐχερῶς N. Trinc. τοῖς π. θ. ὅ τι correxit Wyttenbachius.

1.
[a] Sic Trinc. Scil. Fr. inc. 36. Gesner.: *Euripidis alias Dionysii.*

2.
[a] Deest lemma Trinc. *Euripidis in Archelao* Gesner. Fr. Archel. 8.
[b] λέγε] λέγ' εὖ Valcken. Diatr. p. 256. Male Grotius ex Scaligeri emend. λάλει.

3.
[a] Deest lemma Trinc. *Ejusdem in Ægeo* Gesner. v. Fr. 3.
[b] καθέξῃς—ἔστι] καθέξεις—ἔσται Porsonus Advers. p. 274. ἔσται præceperat edit. Francof.

4.
[a] Ἀντιλόχου Trinc. *Antilochi alias Antiphanis* Gesner.
[b] τοῖς λόγοις] om. Trinc.

5.
[a] Sic Trinc. Scil. Fr. 19.

6 [a] Ἰσοκράτους.

Δύο καιροὺς ποιοῦ τοῦ λέγειν, ἢ περὶ ὧν οἶσθα σαφῶς, ἢ περὶ ὧν ἀναγκαῖον εἰπεῖν. Ἐν τούτοις γὰρ μόνοις ὁ λόγος τῆς σιωπῆς κρείττων· ἐν δὲ τοῖς ἄλλοις ἄμεινον σιγᾶν ἢ λέγειν.

7 [a] Πυθαγόρου.

Ἔλεγεν ὁ Πυθαγόρας, χρὴ σιγᾶν, ἢ κρείσσονα σιγῆς λέγειν.

8 Ἢ σιγὴν καίριον, ἢ λόγον ὠφέλιμον ἔχε.

9 [a] Σόλωνος.

Σφραγίζου τοὺς μὲν λόγους σιγῇ, τὴν δὲ σιγὴν καιρῷ.

10 Αἰσχίνης ὁ Σωκρατικὸς ἐπιπληχθεὶς, ὅτι Σωκράτει ἐσχολακὼς σιωπᾷ· Οὐ γὰρ μόνον, εἶπε, λέγειν ἔμαθον παρὰ Σωκράτει, ἀλλὰ καὶ σιωπᾶν.

11 [a] Πυθαγόρου.

Αἱρετώτερόν σοι ἔστω λίθον εἰκῇ βάλλειν, ἢ λόγον ἀργόν.

12 [a] Εὐριπίδου Ἀνδρομέδας.

Σιγᾷς; σιωπὴ δ' ἄπορος ἑρμηνεὺς λόγων.

13 [a] Θεόγνιδος.

Ἀργαλέον φρονέοντα παρ' ἄφροσι πόλλ' ἀγορεύειν,
καὶ σιγᾶν αἰεί· τοῦτο γὰρ οὐ δυνατόν.

14 [a] Ἐκ τῶν Ἐπικτήτου.

Τάξον τινὰ ἤδη σεαυτῷ χαρακτῆρα καὶ τύπον, ὃν [b] φυλάξεις ἐπί τε σεαυτοῦ ὢν καὶ ἑτέροισιν ἐντυγχάνων. Σιωπὴ τὰ πολλὰ ἔστω, ἢ λαλείσθω τὰ ἀναγκαῖα, καὶ δι' ὀλίγων.

6.

[a] Sic Trinc. *Isocratis ad Demonicum* Gesner.

7.

[a] Sic Trinc.

9.

[a] Sic Trinc.

11.

[a] Sic Trinc.

12.

[a] Gesner.: *Euripidis in Andromeda.* Fr. 25. Deest lemma Trinc.

13.

[a] Sic Trinc. Scil. v. 625.

14.

[a] Sic Trinc. v. Enchir. c. 33.

[b] φυλάξεις] φυλάξεις N. Trinc.

Σπανίως δέ ποτε, καιροῦ καλοῦντος, ἐπὶ τὸ [c] λέγειν τι ἥξομεν, ἀλλὰ περὶ οὐδενὸς τῶν εἰκαίων, μὴ περὶ ἀθλητῶν ἢ μονομάχων, ἢ περὶ ἵππων, ἢ βρωμάτων, ἢ πομάτων τῶν ἑκασταχοῦ, μὴ περὶ [d] ἀνθρώπων ψέγοντα, ἢ ἐπαινοῦντα, ἢ συγκρίνοντα. Λοιπὸν ἐκείνου ἔχου, τοῦ μὴ καθιέναι εἰς ὁμιλίας ἰδιωτικάς, ἀλλὰ ἂν οἷός τε ᾖς, μέταγε τοὺς λόγους ἐπὶ τὸ προσῆκον· εἰ δὲ μή, ἀπόλειπε σιωπᾶν.

15 [a] Σόλωνος.

Σόλων ἐρωτηθεὶς ὑπὸ Περιάνδρου παρὰ πότον, ἐπεὶ σιωπῶν ἐτύγχανε, πότερα διὰ λόγων σπάνιν ἢ διὰ μωρίαν [b] σιωπᾷ· Ἀλλ' οὐδεὶς ἄν, εἶπε, μωρὸς ἐν συμποσίῳ [c] σιωπᾶν δύναιτο.

16 [a] Ἐκ τῶν Δίωνος Χρειῶν.

Τῶν συνόντων τις μειρακίων Διογένει, ἐρωτώμενος ὑπ' αὐτοῦ, ἐσιώπα· ὁ δὲ ἔφη· Οὐκ οἴῃ τοῦ αὐτοῦ εἶναι εἰδέναι τε ἃ λεκτέον, καὶ πότε, καὶ τίνα σιωπητέον, καὶ πρὸς τίνα;

17 [a] Κλεοστράτου.

Κλεόστρατος πρὸς τὸν εἰπόντα, οὐκ αἰσχύνῃ μεθύων; Σὺ δὲ οὐκ αἰσχύνῃ, ἔφη, μεθύοντα νουθετῶν;

18 [a] Σωκράτους.

Τῷ γελοίῳ καθάπερ ἁλὶ [b] πεφεισμένως δεῖ χρῆσθαι.

19 [a] Ἀναξάρχου.

Πολυμαθίη κάρτα μὲν ὠφελέει, κάρτα δὲ βλάπτει τὸν 216 ἔχοντα. Ὠφελέει μὲν τὸν δεξιὸν ἄνδρα, βλάπτει δὲ τὸν

[c] λέγειν τὶ] λέγειν τὲ Trinc.
[d] ἀνθρώπων] ἄνθρωπον Trinc.

15.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] σιωπᾶ] σιωπᾶν B.
[c] σιωπᾶν ἐν συμποσίῳ δύναται] ἐν συμπ. σ. δύναιτο A. Vid. Plutarch. II. p. 503 F. Diogen. Laert. I. 69.

16.
[a] Sic A. Trinc.

17.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

18.
[a] Sic A. Trinc.
[b] πεφεισμένως] πεφυσμένως B.

19.
[a] Ionica hæc videntur esse Democriti. Valcken. Valckenærius ed. Trinc. non videtur inspexisse, ubi hæc Anaxarcho tribuuntur cum A. Deest lemma edd. Gesner. 23.

ῥηϊδίως φωνεῦντα πᾶν ἔπος, καὶ ἐν παντὶ δήμῳ. Χρὴ δὲ καιροῦ μέτρα εἰδέναι, σοφίης γὰρ οὗτος ὅρος. [c]Εἰ δὲ οἱ ἔξω καιροῦ ῥῆσιν μουσικὴν πεπνυμένως [d]ἀείσουσιν, οὐ παραδέχονται ἐν ἀργίῃ γνώμην, [e]αἰτίην δ' ἔχουσι μωρίας.

ΠΕΡΙ ΒΡΑΧΥΛΟΓΙΑΣ. ΛΕ.

1 [a]Ἡσιόδου Ἔργων.

Γλώσσης τοι θησαυρὸς ἐν ἀνθρώποισιν [b]ἄριστος
φειδωλῆς· πλείστη δὲ χάρις κατὰ μέτρον ἰούσης.

2 [a]Εὔπολις ἐν Δήμοις.

Καὶ τοῦ μὲν [b]ἐν κύκλῳ γε παύσομαι λόγου,
[c]φράσω δέ σοι τὸ πρᾶγμα διὰ τῶν χωρίων.

3 [a]Εὐριπίδου Αἰόλῳ.

Παῖδες, σοφοῦ πρὸς ἀνδρὸς, ὅστις ἐν βραχεῖ
πολλοὺς λόγους οἷός τε συντέμνειν καλῶς.

4 [a]Σοφοκλῆς Ἀλήτῃ.

Βραχεῖ [b]λόγῳ δὲ πολλὰ πρόσκειται σοφά.

5 [a]Μενάνδρου Ἐπαγγελλομένῳ.

Τοῖς [b]ἀναιδέσιν βοηθεῖ γὰρ λόγοις τοῦθ' ἓν μόνον,
ἂν βραχεῖς αὐτοὺς [c]ποιῇ τις, τόν τε καιρὸν εὖ λάβῃ.

[c] οἱ δὲ] εἰ δὲ οἱ A. Paullo ante οὗτως Trinc.
[d] ἀείσωσιν] ἀείσουσιν A.
[e] αἰτεῖν] αἰτίην A. αἰτίαν Gesn. marg.

1.

[a] Sic A. Sc. v. 717. Simpl. Ἡσιόδου Trinc. NB. Epigraphe hujus tituli in A. a p. m. fuit περὶ ἀργολογίας.
[b] ἄριστος] μέγιστος A. m. p.

2.

[a] Sic A. Εὐπόλιδος Simpl. Trinc.
[b] ἐν κύκλῳ] Illud ἐν contra versum in libris omittitur. Grotius.
[c] φράσω—χωρίων] Quem sensum esse putarem Latino versu ostendi. At Salmasius rectius putabat legi καιρίων. Grotius. τὸ προῖκα pro σοὶ τὸ πρᾶγμα B. m. p. et sic Trinc.

3.

[a] Sic A. Scil. Fr. 5. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

4.

[a] Sic fere A. ubi ἀλείτῃ. v. Fr. 2. Σοφοκλ. Trinc.
[b] λόγῳ δὲ] λ. καὶ A. B.

5.

[a] Sic A. Cleric. p. 62. Simpl. Μενάνδρου Trinc.
[b] ἀναιδέεσι] ἀναιδέσι A. B. Trinc.
[c] ποιῇ] ποῇ Trinc.

6 [a] Φιλωνίδου.

Ἅπαντ' ἐρίζεις καὶ [b] συνιεὶς οὐδὲ ἕν.
γράμματα μαθεῖν δεῖ, καὶ μαθόντα νοῦν ἔχειν.

7 Οὐκ ἄν τις εἴπῃ πολλὰ, θαυμασθήσεται·
ὁ μικρὰ δ' εἰπὼν μᾶλλον, ἂν ᾖ χρήσιμα.

8 [a] Πυθάγορου.

Μὴ ἐν πολλοῖς ὀλίγα λέγε, ἀλλ' ἐν ὀλίγοις πολλά.

9 [a] Λυκούργου.

Λυκοῦργος πρὸς τὸν εἰπόντα, διὰ τί Λακεδαιμόνιοι τὴν βραχυλογίαν ἀσκοῦσιν, εἶπεν, Ὅτι ἐγγύς ἐστι τοῦ σιγᾶν.

10 [a] Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου Ἐγχειριδίου.

Μηδενὸς οὕτως ἐν παντὶ [b] προνοοῦ, ὡς τοῦ ἀσφαλοῦς· ἀσφαλέστερον γὰρ τοῦ λέγειν τὸ σιγᾶν. Ἐὰν δὲ τὸ λέγειν, ὅσα δίχα ἔσται νοῦ, καὶ [c] ψόγου· ἀπέστω δὲ τὸ πολὺ, καὶ αὑτοῦ τινων ἔργων μεμνῆσθαι, ἢ κινδύνων. Οὐ γὰρ ὡς [d] σοὶ ἡδύ ἐστι τὸ τῶν σῶν κινδύνων μεμνῆσθαι, οὕτω καὶ τοῖς ἄλλοις ἡδύ ἐστι τὸ τῶν συμβαινόντων ἀκούειν.

11 [a] Πλάτωνος Νόμων ᾱ.

[b] Τὴν πόλιν ἅπαντες ἡμῶν Ἕλληνες ὑπολαμβάνουσιν, ὡς φιλόλογός τε ἐστι καὶ πολύλογος· Λακεδαίμονα δὲ καὶ Κρήτην, τὴν μὲν βραχύλογον, τὴν δὲ πολύνοιαν μᾶλλον, [c] ἢ πολυλογίαν ἀσκοῦσαν.

6.
[a] Sic A. Φιλονίδου Trinc.
[b] σύνιεὶς] συνιεὶς (η supra) A. B.

8.
[a] Sic A. Trinc.

9.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

10.
[a] Sic A. Scil. c. 33, 14. cf. Schweighæuser. ad Fr. 77. Ἐκ τῶν Ἐπικτήτου Trinc.
[b] προνοεῖ] προνοοῦ A. B. m. s.
[c] ψόγου] Mal. λόγου. Gesner.
[d] σοὶ] σὺ B. m. p. Trinc. ἡδὺ om. Trinc.

11.
[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 641.
[b] τὴν π.—πολύλογος habet A. in marg. πολύλαλος in textu. πολυλόγος B. m. s.
[c] πολυλογίαν] βραχυλογίαν A. p. m.

ΠΕΡΙ ΑΔΟΛΕΣΧΙΑΣ. Λϛ. 50

1 [a] Θεόγνιδος.

Πολλοῖς ἀνθρώπων γλώσσῃ θύρα οὐκ ἐπίκειται
ἁρμοδίη, καί σφιν πόλλ' [b] ἀλάλητα πέλει.
πολλάκι γὰρ τὸ κακὸν κατακείμενον ἔνδοθεν ἦλθεν·
ἐσθλὸν δ' ἐξελθεῖν λώϊον, ἢ τὸ κακόν.

2 [a] Εὐριπίδου Ἱππολύτῳ.

Γλώσσῃ γὰρ οὐδὲν πιστὸν, ἣ θυραῖα μὲν
φρονήματ' ἀνδρῶν νουθετεῖν [b] ἐπίσταται, 217
αὐτὴ δ' ὑφ' αὑτῆς πλεῖστα κέκτηται κακά.

3 [a] Τοῦ αὐτοῦ Μηδείας.

Οὐ νῦν με πρῶτον, ἀλλὰ πολλάκις, [b] Κρέων,
ἔβλαψε γλῶσσα, μεγάλα τ' εἴργασται κακά.

4 [a] Ἀστυδάμαντος.

Γλώσσης περίπατός ἐστιν [b] ἀδολεσχία.

5 [a] Ληρεῖς ἐν οὐ δέοντι καιρῷ φιλοσοφῶν.

6 [a] Ὁμήρου.

Καί τι ἔπος προέηκεν, [b] ὅπερ τ' ἄρρητον ἄμεινον.

7 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀλλ' αἰεὶ [b] μύθους λαβρεύεαι, οὐδέ τι σὲ χρὴ
[c] λαβραγόρην τ' ἔμεναι.

1.
[a] Sic A. Trinc.
[b] ἀλάλητα] ἀλάληλα B. m. p. Trinc.

2.
[a] Sic A. Scil. v. 395. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.
[b] ἐπίσταται] ἐπίσταμαι B. m. p. Trinc.

3.
[a] Sic A. Scil. v. 293. Simpl. Μηδείας Trinc.
[b] Κρέον] Κρέων A. Vid. supra 30, 4.

4.
[a] Sic A. Trinc.
[b] ἡ ἀδολεσχία] addidimus ἡ ob versum. Grotius. Male. Ἀδολεσχία primam producit. Vide Aristoph. Nub. 1482. 1487.

5.
[a] Deest lemma A. Trinc.

6.
[a] Sic A. Trinc. Scil. Od. ξ. 466.
[b] ὅπερ τ'] τ' om. Trinc. sed statim additur post ἄρρητον.

7.
[a] Sic A. Il. ψ. 478.
[b] μύθους] μύθοις B. ex em.
[c] λαβραγόραν] λαβραγόρην A.

8 [a] Νικοστράτου.

Εἰ τὸ συνεχῶς καὶ πολλὰ καὶ ταχέως λαλεῖν,
ἦν τοῦ φρονεῖν [b] παράσημον, αἱ χελιδόνες
ἐλέγοντ' ἂν ἡμῶν σωφρονέστεραι πολύ.

9 [a] Εὐριπίδου Πενθεῖ.

Σὺ δ' εὔτροχον μὲν γλῶσσαν ὡς φρονῶν ἔχεις,
[b] ἐν τοῖς λόγοισι δ' οὐκ ἔνεισί σοι φρένες.

10 [a] Εὐριπίδου Ἀντιόπης.

Κόσμος δὲ σιγῆς στέφανος ἀνδρὸς οὐ κακοῦ.
[b] τὸ δ' ἐκλαλοῦν τοῦθ' ἡδονῆς μὲν ἅπτεται,
κακὸν δ' ὁμίλημ', ἀσθενὲς δὲ καὶ πόλει.

11 [a] Σοφοκλέους Ἀλεάδαις.

Τί ταῦτα πολλῶν ῥημάτων ἔτ' ἐστί σοι;
τὰ γὰρ περισσὰ πανταχοῦ λυπηρ' ἔπη.

12 [a] Μενάνδρου.

Αἰσχρόν γ' ὅτ' ἂν τις [b] ἐπὶ γλώσσῃ [c] φυεὶς
γλώσσῃ ματαίους ἐξακοντίσῃ λόγους.

8.

[a] Sic A. Trinc.
[b] παράσημον] παράσημ^ου, A.

9.

[a] Sic A. Scil. Bacch. 268. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.
[b] ἐν τοῖς] Vulgo editur ἐν τοῖσι. Grotius. τοῖς Trinc.

10.

[a] Sic A. Scil. Fr. 10. Deest lemma Trinc.
[b] ἐκλαλοῦν, οὔθ'] ἐκλαλοῦν τοῦθ' Porsonus Adv. p. 323. Vid. Eurip. Orest. 228. ed. 1811.

11.

[a] ἀλε^ευάδαις sic A. Aload. Fr. 5. Simpl. Σοφοκλέους Trinc.

12.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 216.
[b] ἐπὶ] εὖ addiderim. Gesner. ed. 3.
[c] φυεὶς] εὐφυὴς Arsen. δεινὸς ἐπὶ γ. φ. vel εὖ ἐπὶ γ. φ. Grotius in notis mss. Mox ἐξακοντίζῃ Voss.

Ib. αἰσχρόν θ' ὅτ' ἂν τις ἤπιος] Nostra est conjectura versui et sensui. Vulgo legitur ὅταν τις ἐπὶ γλώσσῃ φυείς. Salmasius legi posse putabat, ὅταν τις εὐγενὴς φυείς. Grotius.

Ib. F. αἰσχρόν γ' ὅταν τις ἐνεπὴς γλώσσῃ φυείς. Mihi vero locus e Tragœdia videtur potius quam e comœdia petitus. Verbum ἐξακοντίσαι videtur Euripidis, et ab eo alibi adhibetur. Imo tota illius videtur sententia. Valcken. qui consulatur Diatr. Eurip. p. 262.

13 [a] Εὐριπίδου Βάκχαις.

Ἀχαλίνων στομάτων,
[b] ἀνόμου δ' ἀφροσύνας
τὸ τέλος δυστυχία.

14 [a] Μενάνδρου.

Οὔτ' ἐκ χερὸς μεθέντα καρτερὸν λίθον
ῥᾷον κατασχεῖν, οὔτ' ἀπὸ γλώσσης λόγον.

15 [a] Εὐριπίδου Δικτύος.

Τυραννικόν [b] τι πόλλ' [c] ἐπίστασθαι λέγειν.

16 [a] Σοφοκλῆς Ἀλήτῃ.

Ἀνὴρ γὰρ ὅστις ἥδεται λέγων ἀεί,
λέληθεν αὑτὸν τοῖς ξυνοῦσιν ὢν βαρύς.

17 [a] Αἰσχύλου.

Γλώσσῃ ματαίᾳ ζημία προστρίβεται.

18 [a] Φιλήμονος.

[b] Τὸν μὴ λέγοντα τῶν δεόντων μηδὲ ἓν,
μακρὸν νόμιζε, κἂν δύ' εἴπῃ συλλαβάς·
τὸν δ' εὖ λέγοντα, μὴ νόμιζ' εἶναι μακρὸν,
μηδ' ἂν σφόδρ' εἴπῃ πολλὰ, καὶ πολὺν χρόνον.
τεκμήριον δὲ τοῦδε τὸν Ὅμηρον λάβε·

13.

[a] Sic A. Scil. v. 385. Simpl. Εὐριπίδου. Trinc.

[b] ἀνόμου τ'] ἀνόμου δ' A. Trinc.

14.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 216.

15.

[a] Sic A. Scil. Fr. 3. Deest lemma Trinc. Æschylo tribuit Gesner.

[b] τι] τε A.

[c] ἐφίεσθαι] Ita nos emendavimus pro ἐπίστασθαι, quod sensum forte aliquem habere posset, sed huic titulo minus convenientem. Grotius.

16.

[a] Sic fere A. ubi ἀλειτῃ. v. Fr. 3. *Euripidis in Dictye* Gesner. Deest locus Trinc.

17.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Prom. 329.

18.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 346.

[b] *Non sunt longa, quibus nihil est, quod demere possis.* Martial. II. 77. *Sciat, si materiæ immoratur, non esse longum; longissimum, si aliquid arcessit atque attrahit. Vides, quot versibus Homerus, quot Virgilius arma, hic Æneæ, Achillis iste, describat:*

οὗτος γὰρ ἡμῖν μυριάδας ἐπῶν γράφει,
ἀλλ' οὐδὲ εἷς Ὅμηρον [c] εἴρηκεν μακρόν.

19 [a] Ζήνωνος.

Ζήνων πρὸς τὸν πλείω λαλεῖν θέλοντα ἢ ἀκούειν, Νεανίσκε, εἶπεν, ἡ φύσις ἡμῖν γλῶτταν μὲν μίαν, δύο δὲ ὦτα παρέσχεν, ἵνα [b] διπλασίονα ὧν λέγομεν, ἀκούωμεν.

20 [a] Θεοκρίτου.

Θεόκριτος, Ἀναξιμένους λέγειν μέλλοντος, Ἄρχεται, εἶπε, λέξεων μὲν ποταμὸς, νοῦ δὲ σταλαγμός.

21 [a] Διογένους.

Διογένης [b] ᾔτησέ ποτε Πλάτωνα τῶν ἐκ τοῦ κήπου ἰσχάδων τρεῖς· ὡς δ' ἐκεῖνος μέδιμνον ἀπέστειλεν, Οὕτως, ἔφη, καὶ [c] ἀποκρίνῃ ἐρωτηθεὶς μυρία.

22 [a] Πλάτωνος.

Πλάτων, Ἀντισθένους ἐν τῇ διατριβῇ ποτε μακρολογήσαντος, Ἀγνοεῖς, εἶπεν, ὅτι τοῦ λόγου μέτρον ἐστὶν, οὐχ ὁ λέγων, ἀλλ' ὁ ἀκούων.

23 [a] Ζήνωνος.

Τῶν τις ἐν Ἀκαδημίᾳ νεανίσκων περὶ ἐπιτηδευμάτων διελέγετο [b] ἀφρόνων· ὁ δὲ Ζήνων, Ἐὰν μὴ τὴν [c] γλῶσσαν, 218

brevis tamen uterque est, quia facit, quod instituit. Plin. Epist. V. 6. Grotius in mss. Plutarch. II. p. 504. D. Τῶν δὲ περὶ τοῦ ποιητοῦ λεγομένων ἀληθέστατόν ἐστιν, ὅτι μόνος Ὅμηρος τῆς τῶν ἀνθρώπων ἀψικορίας περιγέγονεν, ἀεὶ καινὸς ὢν καὶ πρὸς χάριν ἀκμάζων.

[c] εἴρηκε] εἴρηκεν Grotius.

19.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Vide Plutarch. II. p. 502. C.

[b] διπλάσιον] διπλασίονα A. Vide Diogenem Laertium VII. 23. et Menag.

20.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

21.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] Ἤτησε ποτε Πλάτωνα Διογένης A.

[c] ἀποκρίνῃ] ἀποκρίνου A. m. p.

22.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Vide Plutarch. II. p. 513. C. Wyttenbach. Bibl. Crit. XII. p. 66.

23.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἀφρόνων] ἀφρονῶν (σ superscript) A. B.

[c] γλῶσσαν εἰς νοῦν] Videatur

ἔφη, εἰς νοῦν ἀποβρέξας διαλέγῃ, πολὺ πλείω [d] ἔτι καὶ ἐν τοῖς λόγοις πλημμελήσεις.

24 [a] Δημοκρίτου.

Πλεονεξίη, τὸ πάντα λέγειν, μηδὲν δὲ ἐθέλειν ἀκούειν.

25 [a] Ἰσοκράτους.

Ἰσοκράτης ὁ ῥήτωρ [b] Καρεῶνος ὄντος λάλου, καὶ σχολάζειν αὐτῷ βουλομένου, διττοὺς ᾔτησε μισθούς. Τοῦ δὲ τὴν αἰτίαν πυθομένου, Ἕνα, ἔφη, μὲν ἵνα λαλεῖν [c] μάθῃς· τὸν δ' ἕτερον, ἵνα σιγᾶν.

26 [a] Ζήνωνος.

Ζήνων τῶν μαθητῶν ἔφασκε τοὺς μὲν φιλολόγους εἶναι, τοὺς δὲ λογοφίλους.

27 [a] Θεοκρίτου.

Ἐριστικοῦ ἀνδρὸς ἐρωτῶντος αὐτὸν, εἰ ἡ ἀρετὴ ὠφέλιμος, ἀνένευσεν, οὐ βουλόμενος παρασχεῖν αὐτῷ ἐκ τῆς ἀποκρίσεως ἀφορμὴν εἰς ἔριν.

28 [a] Ἀπολλωνίου Τοῖς γνωρίμοις.

Πολυλογία πολλὰ σφάλματα ἔχει· τὸ δὲ σιγᾶν, ἀσφαλές.

29 [a] Τοῦ αὐτοῦ Εὐφράτῃ.

Οἱ κράτιστοι τῶν ἀνθρώπων, βραχυλογώτατοι. Οἱ οὖν [b] ἀδολέσχαι, εἰ ἠνιῶντο ὡς ἀνιῶσιν, οὐκ ἂν ἐμακρηγόρουν.

Quintilian. IV. 117. cum n. Spaldingii.

[d] ἔτι] ἔστι B. m. p. Trinc.

24.

[a] Sic A. Δημοκράτους Trinc.

25.

[a] Sic A.

[b] καρεῶνος] κάρεώνος B. m. s.

[c] μάθῃ] μάθῃς A. B. m. s.

26.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

27.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

28.

[a] Sic A. Simpl. Ἀπολλωνίου Trinc.

29.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἀδολέσχαι, εἰ] εἰ ἀδολέσχ^οι A. p. m. Hoc item B. m. s. εἰ οὖν οἱ ἀ. A. m. s.

30 [a] Εὐσεβίου.

Ἄνθρωποι λόγων κούφων μέγα ὀδόντων [b] ἕρκος ἐκτέαται. Ἀλλὰ γὰρ ἐπὶ [c] παντὶ νόου χρήζομεν· ἐπεὶ ἂν οὗτος μὴ κατιθύνῃ αὐτὰ τὰ ἔπεα, πρὶν βουλευθῆναι ἐκφεύγει πολλάκις, καὶ κατηλογήσαντα τοσούτου ἕρκεος ἄκριτα [d] προεκθρώσκει.

31 [a] Ξενοφῶντος ἐκ τῆς Κύρου Παιδείας.

Ἔτι δὲ καὶ διὰ τὸ φιλομαθὴς εἶναι, πολλὰ μὲν αὐτὸς [b] ἀεὶ τοὺς παρόντας ἀνηρώτα, πῶς ἔχοντα τυγχάνοι, καὶ ὅσα αὐτὸς ὑπὸ ἄλλων ἐρωτῷτο, διὰ τὸ ἀγχίνους εἶναι, ταχὺ [c] ἀπεκρίνετο, ὥστ' ἐκ πάντων τούτων ἡ πολυλογία συνελέγετο αὐτῷ. Ἀλλ' ὥσπερ [d] γὰρ ἐν σώμασιν, ὅσοι νέοι ὄντες μέγεθος ἔλαβον, ὅμως ἐμφαίνεταί τι αὐτοῖς νεαρὸν, ὃ κατηγορεῖ τὴν ὀλιγοετίαν· οὕτω καὶ Κύρου ἐκ τῆς πολυλογίας οὐ θράσος διεφαίνετο, ἀλλὰ [e] πρᾳότης τις καὶ φιλοστοργία, ὥστ' ἐπεθύμει ἄν τις ἐπιπλείω ἀκούειν αὐτοῦ, ἢ σιωπῶντι παρεῖναι.

ΠΕΡΙ ΧΡΗΣΤΟΤΗΤΟΣ. ΛΖ. 219

[a] Μενάνδρου.

1 Οὐθεὶς πονηρὸν πρᾶγμα, χρηστὸς ὢν, [b] ποιεῖ.

[a] Τοῦ αὐτοῦ.

2 Ὡς ἡδὺ συνέσει χρηστότης κεκραμένη.

30.

[a] Sic A. Trinc.

[b] Plutarch. II. p. 503. C. οὐδὲν οὕτως ἡ φύσις εὐερκῶς κεχαράκωκε τῶν παρ' ἡμῖν ὡς τὴν γλῶσσαν, βαλλομένη φρουρὰν πρὸ αὐτῆς τοὺς ὀδόντας.

[c] παντὸς] παντὶ A. Gesn. marg.

[d] προεκτρώσκει] προεκθρώσκει A. Trinc.

31.

[a] Sic A. Scil. I. 4,3.

[b] ἀεὶ om. A. Trinc.

[c] ἀπεκρίνατο] ἀπεκρίνετο A. B. Mox ἡ om. Trinc.

[d] γὰρ] om. A. Trinc.

[e] πραότης] πραό τις A. ἁπλότης Gesneri margo.

1.

[a] Sic A. Cleric. p. 216. Deest lemma Trinc.

[b] ποιεῖ] ποεῖ Trinc. In pr. οὐδεὶς A.

2.

[a] Sic A. Cleric. ibid.

E 2

3 [a] Θεόγνιδος.

Κύρν', ἀγαθὸς μὲν ἀνὴρ γνώμην ἔχει ἔμπεδον αἰεὶ,
[b] τολμᾷ δ' ἔν τ' ἀγαθοῖς κείμενος, ἔν τε κακοῖς.
εἰ δὲ θεὸς κακῷ ἀνδρὶ βίον καὶ πλοῦτον ὀπάσσῃ,
ἀφραίνων βίοτον οὐ δύναται κατέχειν.

4 [a] Σοφοκλῆς Ἠλέκτρα.

Οὐδεὶς τῶν ἀγαθῶν ζῶν κακῶς
εὔκλειαν αἰσχύναι θέλει.

5 [a] Μενάνδρου.

Σὺ μὲν παραινεῖς [b] ταῦτα ὅσα σοι πρέπει·
ἐμὲ δὲ ποιεῖν τὸ καθῆκον οὐχ ὁ σὸς λόγος,
εὖ ἴσθ' ἀκριβῶς, ὁ δ' ἴδιος πείθει τρόπος.

6 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ὁ χρηστός ἐστι πολλαχοῦ σωτήριος.

7 Τοῦ αὐτοῦ.

Τὸ χρηστὰ πράττειν ἔργον ἐστ' ἐλευθέρου.

8 Τοῦ αὐτοῦ.

Μέγιστον ἀγαθόν ἐστι μετὰ νοῦ χρηστότης.

9 [a] Διφίλου.

Ὦ μακάριον φρόνησις ἐν χρηστῷ τρόπῳ.

10 [a] Μενάνδρου Ὁμοπάτριοι.

[b] Χρηστοῖς νομιζομένοις ἐφόδιον ἀσφαλὲς
εἰς πάντα καιρὸν, καὶ τύχης [c] πᾶσαν ῥοπήν.

3.

[a] Sic A. Trinc. Scil. v. 319.
[b] τολμᾷ δ'] τόλμα τ' Voss. τολμὰ δ' ἔνθ' Trinc.

4.

[a] Sic A. Scil. v. 1082. Simpl. Σοφοκλ. Trinc.

5.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 218.
[b] ταῦτα ὅσα] ταῦτα χὤσα Bentleius. An πάντα ταῦθ' ὅσα vel πάντα ταῦθ' ἃ? Trinc. ὅσα.

6.

[a] Sic A. et sic 7. 8. Deest lemma Trinc. Cleric. ibid. N. 8. om. Trinc.

9.

[a] Sic A. Trinc. Forte Ὡς μ.

10.

[a] Sic A. Cleric. p. 134. Deest lemma Trinc.
[b] χρηστοὺς νομιζομένους] χρηστοῖς νομιζομένοις Grotius.
[c] ῥοπὴν πᾶσαν] Vel potius πᾶσαν ῥοπήν. GESNERUS.

11 [a] Μενάνδρου Παλλακῇ.

Ἀλλὰ τῶν χρηστῶν ἔχει τιν' ἐπιμέλειαν καὶ θεός.

12 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Κἂν ταῖς ἀπορίαις ἔσθ' ὁ χρηστὸς [b] χρήσιμος.

13 [a] Ἀντιφάνους.

Τρόπος δίκαιος, κτῆμα τιμιώτατον.

14 [a] Ποσειδίππου.

Διὰ τὴν τέχνην μὲν γνωρίμους ἐκτησάμην
πολλοὺς, διὰ τὸν τρόπον δὲ τοὺς πλείστους φίλους.

15 [a] Πειρίθου.

[b] Τρόπος ἐστὶ χρηστὸς ἀσφαλέστερος νόμου.
τὸν μὲν γὰρ οὐδεὶς ἂν [c] διαστρέψαι ποτὲ
ῥήτωρ δύναιτο· τὸν δ' ἄνω τε καὶ κάτω
λόγοις ταράσσων, πολλάκις λυμαίνεται.

16 [a] Ἐπιχάρμου.

Ὁ τρόπος ἀνθρώποισι δαίμων ἀγαθὸς, [b] οἷς δὲ καὶ κακός.

17 [a] Θεόγνιδος.

Ἀνδράσι τοῖς ἀγαθοῖς ἕπεται γνώμη τε καὶ αἰδὼς,
οἳ νῦν ἐν πολλοῖς ἀτρεκέως ὀλίγοι.

11.

[a] Sic A. Cleric. p. 142. Deest lemma Trinc.

12.

[a] Sic A.

[b] χρήσιμον] χρήσιμος A. B. m. sec.

13.

[a] Sic A. Trinc.

14.

[a] Sic A. Trinc.

15.

[a] Sic Trinc. πειρθις A.

[b] Valckenaerius Diatr. Eurip. p. 197. postquam monuit dubitatum esse de Pirithoo dramate, utrum Euripidis esset, an Critiæ, ita pergit; "Ipsius in hoc "dramate verba forte fuerint, ex "Tragœdia certe Pirithoi, quæ "sub nomine prostant Pirithi "vel Pirithöi in Stobæo Gesneri "p. 220, 17.—v. ult. corrigo, "λόγῳ σπαράσσων pro λόγοις τα-"ράσσων." τρόπος δὲ χ. Trinc.

[c] διαστρέψαι] διαστρέψῃ B. m. p. Trinc.

16.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

[b] οἷς δὲ] οἷς δὲ καὶ A.

17.

[a] Sic Trinc. Scil. v. 635. Deest locus A.

18 [a] Μενάνδρου Ὕμνις.

Νὴ τὴν Ἀθηνᾶν, μακάριον ἡ χρηστότης
πρὸς πάντα, καὶ θαυμαστὸν ἐφόδιον [b] βίῳ.
[c] τούτῳ λαλήσας ἡμέρας σμικρὸν [d] μέρος,
εὔνους ἐγὼ νῦν εἰμι. [e] πιστικὸν λόγος,
πρὸς τοῦτ' ἂν εἴποι τις μάλιστα τῶν σοφῶν·
τί οὖν ἑτέρους λαλοῦντας [f] οὐ βδελύττομαι;

19 [a] Μενάνδρου Ὕμνις.

Τρόπος ἐσθ' ὁ πείθων τοῦ λέγοντος, οὐ λόγος.

20 [a] Εὐριπίδου Αὐγῆς.

[b] Τὸ δ' ἐπιεικὲς ὠφελεῖ τὰς ξυμφοράς.

21 [a] Θεοφράστου.

Ὀλίγων οἱ ἀγαθοὶ [b] νόμων δέονται· οὐ γὰρ τὰ πράγματα πρὸς τοὺς νόμους, ἀλλ' οἱ νόμοι πρὸς τὰ πράγματα τίθενται.

22 [a] Δημοσθένους.

Πολλῶν χρημάτων τὸ χρηστὸν εἶναι λυσιτελέστερόν ἐστιν.

23 [a] Δημοκρίτου.

Ἀγαθὸν ἢ εἶναι χρεὼν, ἢ μιμέεσθαι.

24 [a] Λυκούργου.

Λυκοῦργος ὁ νομοθέτης εἶπε, τὸ μὲν ἀξιόχρεων τῶν ἀνθρώπων ἐν τῇ οὐσίᾳ κεῖσθαι, τὸ δὲ ἀξιόπιστον ἐν [b] τῷ τρόπῳ.

18.

[a] Sic Voss. Simpl. Μενάνδρου Trinc. Cleric. p. 218. Deest locus A.

[b] βίῳ] τῷ βίῳ Voss. N. Trinc.

[c] τούτῳ] τούτῳ Voss. ultimæ syllabæ οις suprasc.

[d] μέρος] μέρους Voss. Trinc.

[e] πιστικὸν] πειστικὸν B. m. s.

[f] οὐ] εὖ N. Trinc. εὖ (οὐ suprasc.) Voss.

19.

[a] Sic fere A. ubi ὕμνυσ. Cum præcedentibus conjungit Trinc.

20.

[a] Sic A. Scil. fr. 1. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] τὸ γὰρ ἐ.] Id versus postulat, non quod vulgo τὸ δ' ἐπιεικές. Grotius.

21.

[a] Sic A. Trinc.

[b] νόμων] νόμοι B. m. p. Trinc.

22.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Phorm. p. 960, 16.

23.

[a] Sic A. Trinc.

24.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] τῷ τρόπῳ] τοῖς τρόποις A.

25 [a] Ἀρίστιππος.

Ἀρίστιππος ἐρωτηθεὶς τί [b] θαυμαστόν ἐστιν ἐν τῷ βίῳ, Ἄνθρωπος ἐπιεικὴς, εἶπε, καὶ μέτριος, ὅτι ἐν πολλοῖς ὑπάρχων μοχθηροῖς οὐ διέστραπται.

26 [a] Δημοκρίτου.

Οἷσιν ὁ τρόπος ἐστὶν εὔτακτος, τουτέοισι καὶ βίος συντέτακται.

27 [a] Σωκράτους.

Ἡ μὲν ἐσθὴς, τὴν [b] ἀρυθμίαν· ἡ δὲ [c] εὔνοια, τὴν ἁμαρτίαν περιστέλλει.

28 [a] Ἐκ τῶν Ξενοφῶντος Οἰκονομικοῦ.

Τί οὖν, ἔφη ὁ Σωκράτης, ὦ Κριτόβουλε, ἐάν σοι ἐξ ἀρχῆς διηγήσωμαι, ὡς συνεγενόμην ποτὲ ἀνδρὶ, ὃς ἐμοὶ ἐδόκει εἶναι τῷ ὄντι τούτων τῶν ἀνδρῶν, ἐφ᾿ οἷς τοῦτο τοὔνομα δικαίως ἐστὶν, ὃ καλεῖται καλός τε καὶ ἀγαθὸς ἀνήρ; Πάνυ ἂν, ἔφη, βουλοίμην, ὁ Κριτόβουλος, οὕτως [b] σου ἀκούειν, 221
ὡς καὶ ἔγωγε ἐρῶ τούτου τοῦ ὀνόματος ἄξιος γενέσθαι. Λέξω τοίνυν ἔφη σοι [c] ὁ Σωκράτης, ὡς καὶ ἦλθον ἐπὶ τὴν σκέψιν αὐτοῦ· τοὺς μὲν γὰρ ἀγαθοὺς τέκτονας, ἀγαθοὺς χαλκεῖς, ἀγαθοὺς ζωγράφους, ἀγαθοὺς ἀνδριαντοποιοὺς, καὶ πάντα τὰ τοιαῦτα, πάνυ ὀλίγος μοι χρόνος ἐγένετο [d] ἱκανῶς περιελθεῖν τε καὶ θεάσασθαι τὰ δεδοκιμασμένα [e] καλὰ ἔργα αὐτῶν εἶναι· ὅπως δὲ [f] δὴ καὶ τοὺς ἔχοντας τὸ

25.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] θαυμαστόν A. suprascripto ἀξιο et B. m. s. Mox εἶπε ἄν. ἐπ. A.

26.

[a] Sic A. Trinc.

27.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] εὐρυθμίαν] ἀρυθμίαν A. m. p. ῥαθυμίαν malim ἀρρυθμίαν Gesn. in marg.

[c] εὔνοια] ἔννοια A. B. m. s.

28.

[a] Sic A. Scil. VI. 12. Simpl. Ξενοφῶντος Trinc.

[b] σου] Al. abest. Gesner. in marg

[c] ὁ Σωκ.] ὦ Σωκ. Trinc.

[d] ἱκανῶς om. A. Trinc.

[e] καλὰ ἔργα αὐτῶν] αὐτῶν κ. ἔ. A.

[f] δὴ] δεῖ A.

σεμνὸν ὄνομα τοῦτο καλός τε καὶ ἀγαθὸς ἐπισκεψαίμην, τί ποτε ἐργασάμενοι τοῦτο ἀξιοῦνται καλεῖσθαι, πάνυ μοι ἡ ψυχὴ ἐπεθύμει αὐτῶν τινὶ συγγενέσθαι. Καὶ πρῶτον μὲν ὅτι προσέκειτο [g] ὁ καλὸς τῷ ἀγαθῷ, [h] ὅν τινα ἴδοιμι καλὸν τούτῳ [i] προσήειν, καὶ ἐπειρώμην καταμανθάνειν, εἴ που ἴδοιμι προσηρτημένον τῷ κάλλει τὸ ἀγαθόν. Ἀλλ' οὐκ ἄρα εἶχεν οὕτως, ἀλλ' ἐνίους ἐδόκουν καταμανθάνειν τῶν καλῶν τὰς μορφὰς πάνυ μοχθηροὺς ὄντας τὰς ψυχάς. Ἔδοξεν οὖν μοι ἀφέμενον τῆς καλῆς [k] ὄψεως, ἐπ' αὐτῶν τινα ἐλθεῖν τῶν καλουμένων καλῶν τε καὶ ἀγαθῶν.

29 [a] Τὰ γὰρ [b] καλά τε καὶ ἀγαθὰ, ἔφην ἐγὼ, οὐ διὰ τὰς ὡραιότητας, ἀλλὰ διὰ τὰς [c] ἐν τῷ βίῳ ἀρετὰς τοῖς ἀνθρώποις ἐπαύξεται.

30 [a] Θεμιστοκλέους.

Θεμιστοκλῆς χωρίον πωλῶν, ἐκέλευσε κηρύττειν, ὅτι καὶ γείτονα χρηστὸν ἔχει.

31 [a] Σόλωνος.

[b] Τρόπου καλοκαγαθίαν ὅρκου πιστοτέραν ἔχε.

32 [a] Ἀριστοτέλους.

Ἀριστοτέλης ὁ φιλόσοφος αἰτηθείς ποτε ἔρανον ὑπὸ μοχθηροῦ, καὶ παρασχόμενος, ἐπειδὴ [b] ἐπελάβετό τις αὐτοῦ ὅτι τοιούτῳ ἔδωκεν, Οὐ τῷ ἀνθρώπῳ, ἔφη, ἀλλὰ τῷ ἀνθρωπίνῳ.

[g] ὁ καλὸς] deest articulus A.
[h] ἂν τινα] ὃν τ. A. Trinc.
[i] προσήειν] προσήκειν B. m. p. Trinc.
[k] τῆς ὄψεως] articulus om. A. Trinc.

29.
[a] Cohærent hæc cum præcedentibus A. Trinc. Sejunxit Gesnerus. v. Œconom. VII. 43.
[b] καλὰ καὶ] κ. τε καὶ A.
[c] ἐν τῷ β.] Deest articulus A.

30.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Puto Plutarchi esse. Vid. Schol. Hesiod. Ἐργ. 344.

31.
[a] Sic A. Trinc.
[b] Diogen. Laert. I. 60.

32.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] ἐπελάβετο] ἐλάβετο B. Trinc. Vid. Menag. ad Diogen. Laert. V. 17.

33 [a] Ἐκ τῆς Ἰαμβλίχου Σωπάτρῳ Περὶ Ἀρετῆς.

Ἀγαθὸς νομιζέσθω, ὁ τὴν τελειοτάτην κατὰ τὸν [b] χωριστὸν νοῦν ἐνέργειαν διασώζων, καὶ τὴν μετουσίαν τοῦ νοητοῦ κάλλους παραδεχόμενος, καὶ τῆς τοῦ θεοῦ οὐσίας καὶ δυνάμεως μέτοχος.

34 Δημοσθένης λέγων ποτὲ ἐπ' ἐκκλησίας, [a] καὶ Φωκίωνα ἰδὼν ἐρχόμενον, εἶπεν, Ἡ τῶν ἐμῶν λόγων σφυρὰ καὶ κοπὶς ἔρχεται. Οὕτως οὐ τοσοῦτον ὁ λόγος, ὅσον ὁ τρόπος πείθειν δύναται.

35 [a] Σκιπίωνος.

Ὁ Σκιπίων τὸ Πολυβίου παράγγελμα διαφυλάττων, ἐπειρᾶτο μὴ πρότερον ἐξ ἀγορᾶς ἀνελθεῖν, ἢ ποιήσασθαί τινα συνήθη καὶ φίλον.

36 [a] Βίαντος.

Βίας ἔφη, Οἱ ἀγαθοὶ εὐαπάτητοι.

37 [a] Φωκίωνος.

[b] Ἀλεξάνδρου ἑκατὸν τάλαντα δωρεὰν τῷ Φωκίωνι πέμψαντος, ἠρώτησε τοὺς κομίσαντας, Τί δὴ πολλῶν ὄντων Ἀθηναίων αὐτῷ μόνῳ ταῦτα δίδωσιν· εἰπόντων δὲ ἐκείνων, [c] Ὅτι μόνον αὐτὸν ἡγεῖται καλόν τε κἀγαθόν· Οὐκοῦν, [d] ἔφη, ἐασάτω με καὶ δοκεῖν καὶ εἶναι τοιοῦτον.

38 [a] Ἐκ τῶν Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.

Πραΰσιοι τοὺς ἀστυγείτονας, ἐὰν λιμῷ πιεσθῶσι, τρέφουσι.

33.

[a] Sic A. Simpl. Ἰαμβλίχου Tr.

[b] χρηστὸν] χωριστὸν A. B. τὸ χωριστὸν Trinc. In Cohort. p. 330. χωριστὴν ζωὴν bene interpretatur Kiesslingius *vitam a sensibus rebusque humanis avocatam.*

34.

[a] καὶ φ.—ἐμῶν] ὡς εἶδε Φωκίωνα παριόντα ἵνα εἴπῃ, ἔρχεται εἶπε τ. ε. A. Vide Plutarch. I. p. 744. A. 850. D. II. 803. E.

35.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. E Plutarcho II. p. 199 F.

36.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

37.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. E Plutarcho II. p. 188 B.

[b] Ἀλεξάνδρου] τοῦ βασιλέως addit A.

[c] ὅτι] εἰπόντων δ' ἐκείνων ὅτι A. omisso ἔφασαν.

[d] ἔφη] εἶπε A. et mox καὶ δοκεῖν. Vulgo om. καὶ.

38.

[a] Sic A. Ἐκ τῶν Νικολάου Trinc.

Θύνοι τοὺς ναυαγοὺς [b] φιλανθρώπως δεχόμενοι, φίλους ποιοῦνται· τῶν δὲ ξένων, τοὺς μὲν ἑκουσίως ἐλθόντας σφόδρα τιμῶσι· τοὺς δ' ἀκουσίως, κολάζουσιν.

ΠΕΡΙ ΦΘΟΝΟΥ. ΛΗ. 222

1 [a] Φιλήμονος.

Ὁ φθόνος ἐν ἑαυτῷ τοῦθ' ἓν [b] ἐπιεικῶς ποιεῖ,
τὸν [c] αἱρετιστὴν ὄντα τῶν αὑτοῦ τρόπων
λυμαίνεται μάλιστα διὰ παντὸς συνών.

2 [a] Διονυσίου.

Ἔπειτα δ' οὐδὲ τοῦτο γιγνώσκεις, ὅτι
τοῖς οὐδὲν οὖσιν οὐδὲ εἷς ὅλως φθονεῖ;
ἀεὶ τὰ σεμνὰ πάντα [b] κέκτηται φθόνον.
ἅπαν τὸ λίαν συνετὸν ἔστ' ἐπίφθονον.

3 [a] Χάρητος.

Μὴ φθόνει τοῖς εὐτυχοῦσι, μὴ δοκῇς εἶναι κακός.

4 [a] Ἀδικώτατον πρᾶγμ' ἐστὶν τῶν πάντων φθόνος.

5 [a] [b] Ἐγὼ δ' ἐν ἀνθρώποισι μέχρι τοῦ δοκῶ
† εὖ πράττειν, μέχρις ἂν φθονεῖσθαί μοι δοκῶ.

6 [a] Διονυσίου.

Λιτὸς γενόμενος, τοῖς ἔχουσι μὴ φθόνει.
εἰσὶν τινὲς νῦν, οὓς τὸ βασκαίνειν τρέφει.

[b] φιλανθρώπως] φιλανθρώπους Tr.

1.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 346.
[b] ἐπιεικῶς] ἐπιεικῶν Trinc.
[c] ἐρεθιστὴν] Malim αἱρετιστήν. Gesner. Sic ed. Grotius.

2.

[a] Sic A. Trinc.
[b] κέκτηται] κέκτηνται A.

3.

[a] Sic A. Trinc.

4.

[a] Cum præcedentibus conjungit Trinc. Nihil enotatum ex A.

5.

[a] Cum præcedentibus conjungit Trinc. Deest lemma A.
[b] Versus hos ita castiores faciebat Salmasius: ἐγὼ δ' ἐν ἀνθρώποισιν εὖ πράττειν δοκῶ Μέχρι τοῦδε, μέχρις ἂν φθονεῖσθαί μοι δοκῶ. Grotius.

6.

[a] Sic A. Voss. Διογένους Trinc.

7 [a] Ὄλοιθ' ὁ τοῖς ἔχουσι τἀγαθὰ φθονῶν.

8 [a] Εὐριπίδου ἐξ Ἰνοῦς.

Τίς ἆρα μήτηρ ἢ πατὴρ κακὸν μέγα
βροτοῖς ἔφυσε τὸν δυσώνυμον φθόνον;
ποῦ καὶ [b] πότ' οἰκεῖ σώματος λαχὼν μέρος;
ἐν χερσὶν, ἢ σπλάγχνοισιν, ἢ παρ' ὄμματα
ἔσθ' ἡμῖν; ὡς ἦν μόχθος ἰατροῖς μέγας
τομαῖς ἀφαιρεῖν, ἢ πότοις, ἢ φαρμάκοις,
πασῶν μεγίστην τῶν ἐν ἀνθρώποις νόσων.

9 [a] Εὐριπίδου Οἰδίποδι.

Φθόνος δ' ὁ πολλῶν φρένα διαφθείρων βροτῶν,
ἀπώλεσ' αὐτὸν, κἀμὲ συνδιώλεσεν.

10 [a] Ἐκ τοῦ Νικομάχου Ναυμαχίας.

Ἐργῶδές ἐστιν ἐν βίῳ βεβιωκότα,
τοὺς τῶν φθονούντων πάντας ὀφθαλμοὺς λαθεῖν.

11 [a] Μενάνδρου.

Ὁ φθονερὸς αὐτῷ πολέμιος καθίσταται.
αὐθαιρέτοις γὰρ συνέχεται λύπαις ἀεί.

12 [a] Ἀγάθωνος.

Οὐκ [b] ἦν ἂν ἀνθρώποισιν ἐν βίῳ φθόνος,
εἰ πάντες ἦμεν ἐξ ἴσου πεφυκότες.

13 [a] Εὐριπίδου.

Φθονοῦσιν αὐτοὶ χείρονες πεφυκότες.

7.

[a] Deest h. l. lemma A. Tanquam Dionysii habet Voss. Infra repetit A post n. 21. cum lemmate Ἀγάθωνος.

8.

[a] Sic A. Scil. Fr. 5. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] ποῦ καὶ ποτ'] Lege ποθ' pro ποθί. Gesner. τί δή ποτ' Valcken. Diatr. Eurip. p. 176. qui infra legit ποτοῖσι pro πότοις ἢ—

9.

[a] Sic A. Scil. Fr. 7. Deest lemma Trinc. ubi ὁ φθόνος δ'. et sic A. m. p.

10.

[a] Sic A. Simpl. Νικομάχου. Tr.

11.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 218.

12.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ἦν ἂν ἀ.] ἦν ἐν ἀ. Voss. Arsen.

13.

[a] Sic A. *in Bellerophonte* addit Gesner. cujus v. Fr. 10. Deest vs. Trinc.

εἰς τἀπίσημα δ' ὁ φθόνος πηδᾶν φιλεῖ.

14 [a]Τοῦ αὐτοῦ Φοίνικι.

Φθόνον οὐ σέβω, φθονεῖ-
σθαι δὲ θέλοιμ' ἂν ἐπ' ἐσθλοῖς.

15 [a]Ἱπποθόωντος.

Φθόνος κάκιστος κἀδικώτατος θεὸς,
κακοῖς τε χαίρει, κἀγαθοῖς ἀλγύνεται.

16[a] Οὐδεὶς ἂν εἴποι κεῖνον [b]ἀνθρώπων κακῶς,
οὐδ' εἰ φθόνου γένοιτο δυσμενέστερος.

17 Χρὴ δ' ἢ λέγειν τι χρηστὸν, ἢ λέγουσιν εὖ
μὴ [a]δυσμεναίνειν τῷ φθόνῳ νικώμενον.

18 [a]Καρκίνου.

Χαίρω σ' ὁρῶν φθονοῦντα, τοῦτ' εἰδὼς, ὅτι
[b]ἓν δρᾷ μόνον δίκαιον ὧν ποιεῖ φθόνος.
λυπεῖ γὰρ αὐτὸ [τὸ] κτῆμα τοὺς κεκτημένους.

19 [a]Εὐριπίδου Βελλεροφόντης.

Ἤδη γὰρ εἶδον καὶ δίκης παραστάτας
ἐσθλοὺς πονηρῷ τῷ φθόνῳ νικωμένους.

20 [a]Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου.

Οἴμοι, θανοῦμαι διὰ τὸ χρήσιμον φρενῶν,
[b]ὃ τοῖσιν ἄλλοις γίγνεται σωτηρία.

14.
[a] Sic A. v. Fr. 2. Simpl. Εὐριπίδου. Trinc.

15.
[a] Sic A. Trinc.

16.
[a] Hoc et sequens fragmentum cum præcedente cohærent in A. Trinc.
[b] ἀνθρώπων] ἄνθρωπον Grotius.

17.
[a] δυσμεναίειν] δυσμενέειν B. δυσμεναίνειν Trinc. Grotius, et Gesner. ed. 3.

18.
[a] Sic A. Trinc.
[b] ἓν δρᾶμα μοῦνον ἴδιον] Ita emendabat Salmasius pro ἓν δρᾷ μόνον ἴδιον. Grotius. ἓν δρᾷ μόνον τόδ' ἴ.— et v. seq. del. τὸ Wakefield. ἓν δρᾷ μόνον δίκαιον Porsonus.

19.
[a] Sic Voss. Scil. Fr. 29. Simpl. Εὐριπίδου Trinc. Deest locus A.

20.
[a] Sic A. Scil. Fr. 4. Τοῦ αὐτοῦ Voss. Deest lemma Trinc.
[b] ἃ τοῖσιν] ὃ τοῖσιν Trinc.

21 [a] Ἐπιχάρμου.

[b] Τίς δέ κα λώη γενέσθαι μὴ φθονούμενος φίλος;
δῆλον ὡς ἀνὴρ [c] γὰρ οὐδεὶς ἔσθ', ὁ μὴ φθονούμενος. 223
τυφλὸν ἠλέησ' ἰδών τις, ἐφθόνησε δ' οὐδὲ εἷς.

22 [a] Πινδάρου.

Κρέσσον γὰρ [b] οἰκτιρμοῦ φθόνος.

23 [a] Ἀγάθωνος.

Σοφίας φθονῆσαι μᾶλλον ἢ πλούτου καλόν.

24 [a] Φιλήμονος.

Πολλά με διδάσκεις ἀφθόνως διὰ φθόνον,
ὅπως ἀκούων [b] πολλὰ, μηδὲ ἓν μάθω.

25 [a] Ἡσιόδου Ἔργων.

Καὶ κεραμεὺς κεραμεῖ κοτέει, καὶ τέκτονι τέκτων·
καὶ πτωχὸς πτωχῷ φθονέει, καὶ ἀοιδὸς ἀοιδῷ.

26 [a] Σοφοκλέους Κρέουσα.

[b] Οὔτε γὰρ γάμον, ὦ φίλαι,
οὔτ' ἂν ὄλβον ἔκμετρον
ἔνδον εὐξαίμαν ἔχειν·
φθονεραὶ γὰρ ὁδοί.

21.

[a] Sic A. Trinc.

[b] τίς ἐγκαλοίη] τίς δ' ἐγκ. A. B. m. s. Voss. τίς δέ κα λώη correxit Porsonus Adv. p. 303. Vide Koen. ad Gregor. de Dial. Att. §. LIII.

[c] γὰρ om. Voss. Ars. v. seq. τίς ἰδὼν A.

22.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Pyth. I. 164.

[b] οἰκτιρμοῦ] οἰκτειρμοῦ B. οἰκτισμοῦ Trinc. Κρέσσων A.

23.

[a] Sic Trinc. A.

24.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 346.

[b] πολλὰ] τὰ πολλὰ A.

25.

[a] Sic A. Sc. v. 25. Simpl. Ἡσιόδου. Trinc.

26.

[a] Sic A. Fr. 3. Simpl. Σοφοκλέους. Trinc.

[b] οὐ γὰρ γάμον ὦ φίλαι, οὔτ' ὄλβον | ἔκμετρον ἔνδον εὔξαιμ' ἂν ἔχειν | φθ. γ. ὁ.] φίλαι est in MS. A. ut sit vox mulieris ad chorum. Cætera in anapæstos digessimus, cum confuse in hunc modum legerentur: οὔτε γὰρ γάμον ὦ φίλε οὔτ' ἂν ὄλβον ἔκμετρον | ἔνδον εὔξαιμ' ἂν ἔχειν, φθονεραὶ γὰρ ὁδοί. Grotius. Aliter constituit Brunckius, ita tamen ut anapæstos efficeret. Præstat in talibus manuscriptorum vestigia pressius sectari. Mihi quidem videtur fragmentum hoc minime ex anapæstis consistere. Barbarum est εὔξαιμ' ἄν. Itaque leviter correxi.

27 [a] Τοῦ αὐτοῦ Ἐπίγονοι.

Φιλεῖ γὰρ ἡ δύσκλεια [b] τοῖς φθονουμένοις
νικᾶν ἐπ' αἰσχροῖς, ἢ [c] 'πὶ τοῖς καλοῖς πλέον.

28 [a] Αἰσχύλου.

[b] Παύροις γὰρ ἀνδρῶν ἐστι συγγενὲς τόδε, 53
φίλον τὸν εὐτυχοῦντ' ἄνευ [c] φθόνου σέβειν.

29 [a] Μενάνδρου.

Μειράκιον, οὔ μοι κατανοεῖν δοκεῖς, ὅτι
ὑπὸ τῆς ἰδίας ἕκαστα κακίας σήπεται,
καὶ πάντα τὰ [b] λυμαινόμεν' ὅσ' ἐστὶν ἔνδοθεν.
οἷον, ὁ μὲν ἰὸς, [c] ἂν σκοπῇς, [d] τὸ σιδήριον·
τὸ δ' ἱμάτιον, οἱ σῆτες· [e] ὁ δὲ θρὶψ, τὸ ξύλον. 224
ὁ δὲ τὸ κάκιστον τῶν κακῶν πάντων φθόνος,
φθισικὸν πεποίηκε, καὶ ποιήσει, καὶ [f] ποιεῖ,
ψυχῆς πονηρᾶς [g] δυσσεβὴς παράστασις.

27.

[a] Sic fere A. ubi ἐπίπονοι. Scil. Fr. 1. Deest lemma Trinc.

[b] τοῖς φθονουμένοις] τοὺς φθονουμένους Grotius in mss.

[c] 'πὶ] πὸ A. textu ἢ 'πὶ marg.

28.

[a] Sic A. Scil. Agam. 841. Sophocli tribuit Arsenius. Deest lemma Trinc.

[b] παυροῖς] Vulgo editur παυροῖσι Grotius. παυροῖς A. B. m. s.

[c] ψόγου] malim φθόνου. Gesner.

29.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 218.

[b] λυμαινόμεν' ἔστιν ἔνδοθεν] λ. ἔνδοθέν ἐστιν A. Voss. Trinc. ἔνεστιν reposuit Grotius, repugnante Bentleio, cujus emendatio λυμαινόμενά γ' haud multo magis videtur probanda. Scribe sine elisione λυμαινόμενά ἐστιν, et statim librarii errorem corrige, qui α pro οσ exaravit, πάντα τὰ λυμαινόμεν' ὅσ' ἔστιν.

[c] ἂν σκοπῇς] ἐὰν Voss. τἂν σκοπῇ A. Illud σ suprascr. a. m. sec.

[d] τὸν σίδηρον] τὸ σίδηρον A. τὸ σιδήριον Bentleius, τὸν σίδηρον ἂν σκοπῇς Grotius.

Ib. Est autem plane huic similis comparatio apud Polybium VI. 10. καθάπερ γὰρ σιδήρῳ μὲν ἰὸς, ξύλοις δὲ θρίπες καὶ τερηδόνες συμφυεῖς εἰσι λῦμαι, δι' ὧν, κἂν πάσας ἔξωθεν διαφύγωσι βλάβας, ὑπ' αὐτῶν φθείρονται τῶν συγγενομένων· τὸν αὐτὸν τρόπον καὶ τῶν πολιτειῶν κατὰ φύσιν ἑκάστῃ καὶ παρέπεταί τις κακία. Grotius. not. mss.

[e] ἡ δὲ θρὶψ] ὁ δὲ θρὶψ A. B. m. sec. Voss. Vide Porsoni Adv. p. 289.

[f] ποιεῖ] ποεῖ Voss. Trinc.

[g] δυσσεβεῖς παραστάσεις] δυσσεβὴς παράστασις A. B. m. s. Voss. Ars. δυσσεβὴς παραστάτης. Grotius.

30 [a] Θεοφράστου.

Θεόφραστος [b] ἔφη τοὺς μοχθηροὺς τῶν ἀνθρώπων οὐχ οὕτως ἥδεσθαι ἐπὶ τοῖς ἰδίοις ἀγαθοῖς, ὡς ἐπὶ τοῖς ἀλλοτρίοις κακοῖς.

31 [a] Πλουτάρχου ἐκ τοῦ διαβάλλειν.

Τὸν φθόνον ἔνιοι τῷ καπνῷ εἰκάζουσι· πολὺς γὰρ ἐν [b] τοῖς ἀρχομένοις ὢν, ὅτ᾽ ἂν [c] ἐκλαμφθῶσιν, ἀφανίζεται. Ἥκιστα γοῦν τοῖς πρεσβυτέροις φθονοῦσιν.

32 [a] Πλουτάρχου ἐκ τοῦ διαβάλλειν.

Ἱππίας λέγει δύο εἶναι φθόνους· τὸν μὲν δίκαιον, ὅτ᾽ ἄν τις τοῖς κακοῖς φθονῇ [b] τιμωμένοις· τὸν δὲ ἄδικον, ὅτ᾽ ἂν τοῖς ἀγαθοῖς. Καὶ [c] διπλᾶ τῶν ἄλλων οἱ φθονεροὶ κακοῦνται· οὐ γὰρ μόνον τοῖς οἰκείοις κακοῖς ἄχθονται, ὥσπερ ἐκεῖνοι, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἀλλοτρίοις ἀγαθοῖς.

33 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου.

[b] Ἀγαθὸς ἦν· ἀγαθῷ δὲ οὐδεὶς περὶ οὐδενὸς οὐδέποτε ἐγγίνεται φθόνος.

34 [a] Σωκράτης.

Τὸ τῆς δόξης κάλλος ὥσπερ ὑπὸ νόσου τοῦ φθόνου ταχὺ μαραίνεται.

35 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Τοῖς μὲν διὰ τοῦ ἡλίου πορευομένοις ἕπεται κατ᾽ ἀνάγκην

30.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἔφη] εἶπε A.

31.

[a] Sic A. Simpl. Πλουτάρχου Trinc. v. Fragm. XXIII. 2. An Seni II. p. 787. C.

[b] τοῖς ἀρχομένοις] τῷ ἀρχομένῳ B. Trinc.

[c] ἐκλαμφθῶσιν] ἐκκαλυφθῶσιν A. m. p. ibid. mox πρεσβυτέρων p. m.

32.

[a] Sic A. Scil. Fr. ib. 3. Deest lemma Trinc.

[b] τιμωμένοις] τοῖς τιμωμένοις A.

[c] διπλῶ] διπλὰ Voss. διπλᾶ Ars. A. B. m. s.

[d] οἰκείοις] ἰδίοις Ars. Voss.

33.

[a] Sic A. Scil. p. 29 E. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] Ἀγαθῷ] ἀγαθὸς ἦν· ἀγαθῷ A. οὐδέποτε om. Trinc.

34.

[a] Sic A. Σοκράτους Trinc.

35.

[a] Sic A. Ἐκ τῶν Ἀριστονύμου Trinc.

σκιά· τοῖς δὲ διὰ τῆς δόξης βαδίζουσιν ἀκολουθεῖ φθόνος.

36 [a] Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου Τομαρίων.

Ὁ φθόνος, ὥσπερ φαῦλος δημαγωγὸς, ταῖς καλαῖς ἀντιπολιτεύεται [b] πράξεσιν.

37 [a] Ἐκ τῶν κοινῶν Ἀριστοτέλους διατριβῶν.

Οὐχ ἡ λύπη μέγιστον κακὸν ἀκολουθεῖ τῷ φθόνῳ, ἀλλὰ πολὺ μεῖζον, τὸ καὶ [b] πρὸς τοὺς γνωρίμους γίνεσθαι· τῷ γὰρ αἰσχρῷ καὶ φαύλῳ τὴν ὑπεροχὴν δοτέον, οὐ τῇ λύπῃ.

38 [a] Εὐσεβίου.

Ἀνδρὶ ἀγαθῷ εὖ πρήσσοντι φθονέων τις, καὶ πατρίδι, καὶ παντὶ τῷ κοινῷ, καὶ ἑωυτῷ φθονέει. Ἀνὴρ ἀγαθὸς [b] γὰρ εὖ πρήσσων, πόλιος, καὶ παντὸς τοῦ δυναμένου τῆς εὐμοιρίης αὐτοῦ μεταλαγχάνειν, κοινὴ εὐδαιμονίη.

39 [a] Φθόνος ὁ κατὰ τῶν [b] εὐδοκιμεόντων ἐπὶ τοῖς καλλίστοις ἀργῶν καὶ ἀπρακτῶν· τῶν δὲ ἀγαθῶν, καὶ οἵων τε τεκέειν τι παρ' ἑωυτῶν χρηστὸν, οὐχ ἅπτεται.

40 [a] Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι.

Μὴ [b] φθονεῖτε τοῖς παρ' ἐμοὶ πρωτεύουσιν, ἀλλ' ἁμιλλᾶσθε, χρηστοὺς ὑμᾶς αὐτοὺς [c] παρέχοντες ἐξισοῦσθαι τοῖς προέχουσι.

41 [a] Θουκυδίδου.

Φθόνος τοῖς ζῶσι πρὸς τὸ ἀντίπαλον· τὸ δὲ μὴ ἐμποδὼν ἀνανταγωνίστῳ εὐνοίᾳ τετίμηται.

36.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] πράξεσιν] τάξεσιν A.

37.

[a] Sic voluisse videtur Trinc. ubi ἐκ τῶν κοινῶν ἀριστο. τριβῶν. Deest locus A.

[b] πρὸς] πρὸ B.

38.

[a] Sic A. Trinc.

[b] γὰρ deest A. B. m. s.

39.

[a] Deest lemma Trinc. locus A.

[b] εὐδοκιμεόντων] εὐδοκιμούντων B. Mox οἷόν Trinc.

40.

[a] Sic A. Scil. p. 39 B. Simpl. Ἰσοκράτους Trinc.

[b] φθονεῖτε] φθονεῖ B. m. p. Trinc.

[c] παρέχοντες καὶ ἐξισοῦσθε] παρέχοντες ἐξισοῦσθαι A. B. m. s.

41.

[a] Sic A. Sc. II. 45. Θεοφράσ. Tr.

42 [a] Ἰσοκράτους Εὐαγόρᾳ.

Τούτων δ᾽ αἴτιος ὁ φθόνος, ᾧ τοῦτο μόνον ἀγαθὸν πρόσεστιν, ὅτι μέγιστον κακὸν τοῖς ἔχουσίν ἐστι.

43 [a] Θεοφράστου.

[b] Τοσούτῳ δέ εἰσιν οἱ φθονεροὶ δυστυχέστεροι τῶν ἄλλων, ὅσον οἱ μὲν ἐπὶ ταῖς αὐτῶν συμφοραῖς ἀλγοῦσιν· οἱ δὲ φθονοῦντες πρὸς τοῖς ἑαυτῶν κακοῖς, καὶ ἐπὶ τοῖς τῶν ἄλλων ἀγαθοῖς λυπούμενοι διατελοῦσιν.

44 [a] Ἀναξιμένους.

Οἱ γὰρ μέτα φθόνου κρίνοντες, τὸ πρωτεῖον ἀπονέμουσι τοῖς χειρίστοις, οὐ τοῖς βελτίστοις.

45 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ὅσοι γὰρ τὰ καλῶς ῥηθέντα ἢ πραχθέντα διὰ φθόνον οὐκ 225
[b] ἐπαινοῦσι, πῶς οὗτοι ἂν τοῖς ἔργοις ὠφελήσειαν;

46 [a] Δημοκρίτου.

Μωμεομένων φλαύρων ὁ ἀγαθὸς οὐ ποιέεται λόγον.

47 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ὁ φθονέων ἑωυτὸν ὡς ἐχθρὸν λυπέει.

48 [a] Σωκράτους.

Σωκράτης τὸν φθόνον εἶπεν ἕλκος εἶναι τῆς ψυχῆς.

49 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Μενεξένου ἢ Ἐπιταφίου.

Εἰρήνης δὲ γενομένης, καὶ τῆς πόλεως τιμωμένης, ἦλθεν ἐπ᾽ αὐτὴν (ὃ δὴ φιλεῖ ἐκ τῶν ἀνθρώπων τοῖς εὖ πράττουσι προσπίπτειν) πρῶτον μὲν ζῆλος, ἀπὸ ζήλου δὲ φθόνος.

42.

[a] Sic A. Scil. p. 190. B. Theophrasto tribuit Trinc.

43.

[a] Sic A. Εὐαγόρου Trinc.

[b] τοσοῦτον] τοσούτῳ A. τοσοῦτο Voss.

44.

[a] Sic A. Trinc.

45.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἐπαινοῦσι] ἐπαινοῦνται Trinc. B. m. p.

46.

[a] Sic A. Δημοκρά. Trinc.

47.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

48.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

49.

[a] Sic A. Scil. p. 242. A. Simpl. Πλάτωνος. Trinc.

50 [a] Βίωνος.

Βίων [b] ὁ σοφιστὴς ἰδὼν [c] τινα φθονερὸν σφόδρα κεκυφότα, εἶπεν· ἢ τούτῳ μέγα κακὸν συμβέβηκεν, ἢ ἄλλῳ μέγα ἀγαθόν.

51 [[a] Περιάνδρου.

Μηδενὶ φθόνει.

52 Ὥσπερ ἡ ἐρυσίβη ἴδιόν ἐστι τοῦ σίτου νόσημα, οὕτως φθόνος φιλίας ἐστὶν ἀρρώστημα.

53 Ὥσπερ ὁ ἰὸς σίδηρον, οὕτως ὁ φθόνος τὴν ἔχουσαν αὐτὸν ψυχὴν ἐξαναψήχει.

54 Ὅσῳ γὰρ ἂν φθονῇς, τοσούτῳ μειζόνων γίνῃ πρόξενος ἀγαθῶν τῷ φθονουμένῳ.]

55 [a] Κάτωνος πρεσβυτέρου.

Ἥκιστα φθονεῖσθαι ἔλεγε τοὺς τῇ [b] τύχῃ χρωμένους ἐπιεικῶς καὶ μετρίως· οὐ γὰρ ἡμῖν, ἀλλὰ τοῖς περὶ ἡμᾶς φθονοῦσι.

56 [a] Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.

Τελχῖνες ἄνθρωποι ὀνομαζόμενοι τὸ ἀνέκαθεν Κρῆτες, οἰκήσαντές τε καὶ ἐν Κύπρῳ, μεταναστάντες δ' εἰς Ῥόδον, καὶ πρῶτοι τὴν νῆσον [b] κατασχόντες, βάσκανοί τε σφόδρα ἦσαν καὶ φθονεροί· τεχνῖται δὲ ὄντες, καὶ τὰ τῶν προτέρων ἔργα μιμησάμενοι, Ἀθηνᾶς Τελχινίας ἄγαλμα πρῶτοι ἱδρύσαντο, ὥσπερ εἴ τις λέγοι Ἀθηνᾶς βασκάνου.

50.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ὁ σοφιστὴς om. Trinc.

[c] φθονερὸν] τινα φθ. A. Vide Menag. ad Diogen. Laërt. IV. 51.

51.

[a] Hanc et tres quæ sequuntur sententias addidit Gesnerus. Desunt MSS. et Trinc.

55.

[a] Sic A. Trinc.

τυχη
[b] τύχῃ] ψυχῇ A.

56.

[a] Sic A. Ἐκ τῶν τοῦ Νικολάου ἐθῶν. Trinc.

[b] κατασχόντες] κατέχοντες A. B.

57 [a] Δημοκρίτου.

Οὐκ ἂν ἐκώλυον οἱ νόμοι ζῆν ἕκαστον κατ' ἰδίην ἐξουσίην, εἰ μὴ ἕτερος ἕτερον ἐλυμαίνετο. Φθόνος γὰρ στάσιος ἀρχὴν ἀπεργάζεται.

58 [a] Ἀπολλώνιος τοῖς ἀδελφοῖς.

Οὐδενὶ φθονητέον. Ἀγαθοὶ μὲν γὰρ ἄξιοι· κακοὶ δ' ἂν εὐτυχῶσι, κακῶς ζῶσιν.

59 [a] Εὐσεβίου.

Ἀνὴρ πολλὰ ἔχων χρηστὰ μαθήματα, ἔπειτα γνώμῃ πονηρῇ [b] διαχρεόμενος, καὶ μὴ βουλόμενος τοῖς μεταποιευμένοις ὑπὸ φθόνου μεταδιδόναι, ἔοικεν ἀγγείῳ πονηρῷ πολλὰ καὶ χρηστὰ ἔχοντι ἐν ἑωυτῷ [c] ἀποκείμενα, καὶ τὰ ἐνεόντα πρὶν φανῆναι διαφθείροντι.

60 [a] Ξενοφῶντος ἐν τρίτῳ Ἀπομνημονευμάτων.

Φθόνον δὲ σκοπῶν ὅ τι εἴη, λύπην μέν τινα ἐξεύρισκεν αὐτὸν ὄντα, οὔτε μέντοι τὴν ἐπὶ φίλων ἀτυχίαις, οὔτε τὴν ἐπ' ἐχθρῶν εὐτυχίαις γιγνομένην, ἀλλὰ μόνους ἔφη φθονεῖν τοὺς ἐπὶ ταῖς τῶν φίλων εὐπραξίαις ἀνιωμένους. Θαυμαζόντων δέ τινων εἴ τις φιλῶν τινα ἐπὶ τῇ εὐπραξίᾳ αὐτοῦ λυποῖτο, ὑπεμίμνησκεν ὅτι πολλοὶ οὕτω πρός τινας ἔχουσιν, ὥστε κακῶς μὲν πράττοντας μὴ δύνασθαι περιορᾶν, ἀλλὰ βοηθεῖν ἀτυχοῦσιν, εὐτυχούντων δὲ λυπεῖσθαι. Τοῦτο μέντοι φρονίμῳ μὲν ἀνδρὶ οὐκ ἂν συμβῆναι, τοὺς ἠλιθίους δὲ πάσχειν αὐτό.

61 [a] Ἡροδότου ἱστορίας ζ.

Ὅτι [b] πολιήτης μὲν πολιήτῃ εὖ πρήσσοντι φθονέει, καὶ

57.

[a] Sic A. Trinc.

58.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

59.

[a] Sic A. Ἀπολλώνιος τῷ ἀδελφῷ Trinc.

[b] διαχρεόμενος] διαχρώμενος A.

[c] ἀποκείμενα] ὑποκείμενα A:

60.

[a] Sic A. Scil. III. 9, 8. Ξενοφῶν.

61.

[a] Sic A. Scil. VII. 237. Θροδότου ἱστορίου. Trinc.

[b] πολίτης—πολίτῃ—πολίτης] πο-

ἔστι δυσμενὴς τῇ σιγῇ· οὐδ᾽ ἂν συμβουλευομένου τοῦ ἀστοῦ πολιήτης ἀνὴρ τὰ ἄριστά οἱ δοκέοντα [c]ὑποθέοιτο, εἰ μὴ 226 πρόσω ἀρετῆς ἀνήκοι· σπάνιοι δέ εἰσιν οἱ τοιοῦτοι. Ξεῖνος δὲ ξείνῳ εὖ πρήσσοντί ἐστιν [d]εὐμενέστατον πάντων· συμβουλευομένου τε ἂν συμβουλεύσειε τὰ ἄριστα.

62 [a]Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φιλήβου.

Ἀλλὰ μὴν ὁ φθονῶν γε ἐπὶ κακοῖς τοῖς τῶν πέλας ἡδόμενος ἀναφανήσεται. Σφόδρα γε.

63 [a]Ἰωσήπου ἐκ τῆς Ἁλώσεως.

Οὐδὲν οὕτως τῶν ἀγαθων [b]παθῶν ἰσχυρὸν, ὃ τῷ φθόνῳ μέχρι παντὸς ἀντέχει.

ΠΕΡΙ ΠΑΤΡΙΔΟΣ. ΛΘ.

1 [a]Εὐριπίδου Τημενίσι.

Εἰκὸς δὲ παντὶ καὶ λόγῳ καὶ μηχανῇ
πατρίδος ἐρῶντας [b]ἐκπονεῖν σωτηρίαν.

2 [a]Μὴ κάμνε πατρίδα [b]σὴν λαβεῖν πειρώμενος.

3 [a]Εὐριπίδου Φοινίσσαις.

Ἡ πατρὶς, ὡς ἔοικε, φίλτατον βροτοῖς,
οὐδ᾽ ὀνομάσαι δύναιμ᾽ ἂν ὡς ἐστιν φίλον.

4 [a]Πολλοῦ γὰρ χρυσοῦ καὶ πλούτου

λιήτης—πολιήτη—πολιήτης A. Tr.
[c] ὑποτεθοῖτο] ὑποθέοιτο A. ὑποθεοῖτο Trinc. B. m. p. ὑποθέοιτο m. s.
[d] εὐμενέστατον] εὐδαιμονέστατον B.

62.

[a] Sic A. Sc. p. 48. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

63.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.
[b] παθῶν] Forte πάντων. GESNER. Verbum hoc delet Jacobs.

1.

[a] Sic B. Voss. Deest locus A. Simpl. Εὐριπίδου Trinc. Temen. fr. 5.
[b] ἐκπονεῖν] Ita nos pro ἐκτονεῖν, quod vulgo. MS. R. ἐκπορεῖν. GROTIUS. ἐκπορεῖν item Trinc.

2.

[a] Deest lemma Trinc. locus A. v. Euripid. Ed. Beck. T. II. p. 479. n. 41.
[b] σὴν λαβεῖν] συλλαβεῖν B. m. s.

3.

[a] Sic A. Scil. v. 420. Deest lemma Trinc.

4.

[a] Deest lemma Trinc. locus A.

κρείσσων πάτρα σώφρονι ναίειν.
[b] τὸ δὲ σύντροφον ἁδύ τι θνητοῖς
ἐν βίῳ χωρεῖ.

5 [a] Εὐριπίδου Αἰόλῳ.

Ἀλλ' ὅμως
οἰκτρός τις αἰὼν πατρίδος ἐκλιπεῖν ὅρους.

6 [a] Εὐριπίδου Αἰγέως.

Τί γὰρ πατρῴας ἀνδρὶ φίλτερον χθονός;

7 [a] Εὐριπίδου Δικτύος.

Εἰ δ' ἦσθα μὴ κάκιστος, οὔποτ' ἂν πόλιν
τὴν σὴν ἀτίζων, τήνδ' ἂν εὐλόγεις πάτραν.

8 [a] Τοῦ αὐτοῦ Δικτύος.

Ὡς ἔν γέ μοι κρίνοιτ' ἂν οὐ καλῶς φρονεῖν,
ὅστις πατρῴας γῆς ἀτιμάζων ὅρους,
ἄλλην [b] ἐπαινεῖ, καὶ τρόποισιν ἥδεται.

9 [a] Τοῦ αὐτοῦ Φοίνικι.

Σὺ δ' ὦ πατρῴα χθὼν [b] ἐμῶν γεννητόρων,
[c] χαῖρ'. ἀνδρὶ γάρ τοι, κἂν ὑπερβάλλῃ κακοῖς,
οὐκ ἔστι τοῦ θρέψαντος ἥδιον πέδον.

10 [a] Εὐριπίδου Τήλεφος.

Σπάρτην ἔλαχες, κείνην κόσμει,
τὰς δὲ Μυκήνας ἡμεῖς ἰδίᾳ.

[b] τὸ δὲ σύντ.] Distinximus hæc in anapæstos, inducto quod post finem sine sensu supererat ἐν βίῳ χωρεῖ. GROTIUS.

5.

[a] Sic B. Deest lemma Trinc. locus A.

6.

[a] Sic A. Scil. fr. 4. τοῦ αὐτοῦ Αἰγεῖ B. Deest lemma Trinc.

7.

[a] Sic A. Sc. fr. 4. Deest lemma Trinc.

8.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] ἐπαινεῖ] ἐπαινεῖν Trinc.

9.

[a] Sic A. Scil. fr. 4. Deest lemma Trinc.
[b] ἐμὴ] ἐμῶν A. Vide Valcken. Diatr. p. 271.
[c] χαῖρ' usque ad πέδον om. B. m. sec.

10.

[a] Sic A. Scil. fr. 20. Deest lemma Trinc.

11 [a] Μενάνδρου Ἑαυτὸν Τιμωρούμενος.

Οἴκοι μένειν χρὴ, καὶ μένειν ἐλεύθερον,
ἢ μηκέτ' εἶναι τὸν καλῶς εὐδαίμονα.

12 [a] Σοφοκλέους Τηρέως.

Πολλά σε ζηλῶ βίου,
κάλλιστα δ' [b] εἰ γῆς μὴ πεπείρασαι ξένης.

13 [a] Εὐριπίδου ἐν Φιλοκτήτῃ.

Μακάριος ὅστις εὐτυχῶν οἴκοι μένει.

14 [a] Σοφοκλέους.

Οἴκοι μένειν δεῖ τὸν καλῶς εὐδαίμονα.

15 [a] Θεόγνιδος.

Πατρίδα κοσμήσω λιπαρὴν πόλιν, οὔτ' ἐπὶ δήμῳ
τρέψας, οὔτ' ἀδίκοις ἀνδράσι πειθόμενος.

16 [a] Σοφοκλέους.

Οὔτ' ἂν φίλον πότ' ἄνδρα [b] δυσμενῆ χθονὸς
θείμην ἐμαυτῷ, τοῦτο γιγνώσκων, ὅτι
ἥδ' ἐστιν ἡ σώζουσα, καὶ ταύτης ἔπι
πλέοντες ὀρθῆς τοὺς λόγους ποιούμεθα.
τοιοῖσδ' ἐγὼ νόμοισι τήνδ' αὔξω πόλιν.

17 [a] Εὐριπίδου.

Τί τὸ στέρεσθαι πατρίδος, ἢ κακὸν μέγα;
Μέγιστον· [b] ἔργῳ δ' ἐστὶ μεῖζον ἢ λόγῳ.

11.
[a] Sic A. Cleric. p. 54. Deest lemma Trinc.

12.
[a] Sic A. Scil. fr. 6. Simpl. Σοφοκλέους Trinc.
[b] εἰ] εἶναι Trinc.

13.
[a] Sic A. Scil. fr. 8. Deest lemma Trinc.

14.
[a] Sic A. Deest locus Trinc. Æschylo tribuit Grotius, Clementem Alexandrinum secutus Strom. VI. p. 739.

15.
[a] Sic A. Trinc. Sc. v. 941.

16.
[a] Sic A. Trinc. Scil. Antig. 187.
[b] δυσμενῆ] δυσμενεῖ B. m. p.

17.
[a] Sic Trinc. Scil. Phœn. 391. Deest locus A.
[b] ἔργῳ δ'] δ' ἔργον B. et mox ib. τίς τρόπος. Trinc. τίς ὁ τρόπος.

Τίς δ' ὁ τρόπος αὐτοῦ; τί φυγάσιν τὸ δυσχερές;
Ἓν μὲν μέγιστον, οὐκ ἔχει παρρησίαν.

18 [a] Ὁμήρου.

Εἷς οἰωνὸς ἄριστος ἀμύνεσθαι περὶ πάτρης.

19 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀλλὰ μάχεσθ' ἐπὶ νηυσὶν ἀολλέες, εἰσόκεν [b] ἡμέων 227
βλήμενος, ἠὲ τυπεὶς, θάνατον καὶ πότμον ἐπίσπῃ,
τεθνάτω· οὔ οἱ ἀεικὲς ἀμυνομένῳ περὶ πάτρης.

20 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

[b] Αὐτὰρ Ὀδυσσεὺς
ἱέμενος καὶ καπνὸν ἀποθρώσκοντα νοῆσαι
ἧς γαίης, θανέειν ἱμείρεται.

21 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ὡς οὐδὲν γλύκιον ἧς πατρίδος, ἠδὲ τοκήων.

22 [a] Εὐριπίδου.

Μῆτερ, φρονῶν εὖ, κοὐ φρονῶν, ἀφικόμην
ἐχθροὺς ἐς ἄνδρας· ἀλλ' ἀναγκαίως ἔχει
πατρίδος ἐρᾶν ἅπαντας· ὃς δ' ἄλλως λέγει,
λόγοισι χαίρει, τὸν δὲ νοῦν ἐκεῖσ' ἔχει.

23 [a] Πλάτωνος ἐν τῷ Κρίτωνι.

Ἢ οὕτως εἶ σοφὸς, ὥστε λέληθέ σε, [b] ὅτι μητρός τε καὶ πατρὸς καὶ τῶν ἄλλων προγόνων ἁπάντων τιμιώτερον πατρίς [c] ἐστι, καὶ σεμνότερον, καὶ ἁγιώτερον, καὶ ἐν μείζονι μοίρᾳ, καὶ παρὰ θεοῖς, καὶ παρ' ἀνθρώποις τοῖς νοῦν ἔχουσι,

18.
[a] Sic A. Scil. Il. M. 243. Deest locus Trinc.

19.
[a] Sic A. Scil. Il. O. 494. Desunt duo priores vss. Trinc.
[b] ἡμέων] ὑμέων A.

20.
[a] Sic A. Scil. Od. A. 57.
[b] Sic Trinc: ἀτὰρ Ὀδυσσεὺς ἱμείρετο ἧς γαίης καὶ καπνὸν ἀποθρώσκοντα νοῆσαι.

21.
[a] Sic A. Scil. Od. I. 34.

22.
[a] Sic A. Scil. Phœn. 360.

23.
[a] Sic A. Scil. p. 51. A. Simpl. Πλάτωνος Trinc.
[b] ὅτι] τὸ B. m. p. Trinc.
[c] ἐστι] om. A. Trinc.

καὶ σέβεσθαι δεῖ, καὶ μᾶλλον ὑπείκειν, καὶ θωπεύειν πατρίδα χαλεπαίνουσαν, ἢ πατέρα [d] καὶ μητέρα, καὶ ἢ πείθειν ἢ ποιεῖν [e] ᾗ ἂν [f] κελεύῃ, καὶ πάσχειν ἐάν τι προστάττῃ παθεῖν, ἡσυχίαν ἄγοντα, ἐάν τε τύπτεσθαι, ἐάν τε δεῖσθαι, ἐάν τε εἰς πόλεμον ἄγῃ τρωθησόμενον, ἢ ἀποθανούμενον, ποιητέα ταῦτα· καὶ τὸ δίκαιον οὕτως ἔχει, καὶ οὐχ ὑπεικτέον, οὐδ᾽ ἀναχωρητέον, [g] οὐδὲ λειπτέον τὴν τάξιν· ἀλλὰ καὶ ἐν πολέμῳ, καὶ ἐν δικαστηρίῳ, καὶ πανταχοῦ ποιητέον [h] ὃ ἂν κελεύῃ ἡ πόλις, καὶ ἡ πατρὶς, ἢ καὶ πείθειν αὐτὴν [i] ᾗ δίκαιον πέφυκε· βιάζεσθαι δὲ οὐχ ὅσιον οὔτε μητέρα, οὔτε πατέρα, πολὺ δὲ τούτων ἔτι ἧττον τὴν πατρίδα.

24 [a] Εὐσεβίου.

Πατράσι παῖδας ἐπιζώειν εὐτυχὲς, καὶ χρὴ τοῦτο παρὰ τῆς τύχης αἰτέειν καὶ τοὺς μετὰ ταῦτα [b] διαδεξομένους, καὶ ὅκως καὶ αὐτῶν ἕκαστοι τάξει τῇ εἰρημένῃ τοὺς πρὸ ἑωυτῶν διαδεχοίατο. Κοινὴ δὲ εὐχὴ δικαιοτάτη αὕτη, [c] ἂν παρὰ πάντων φυλαχθείη ἐπιτηδεία μόνη τοῦ μηκίστου, τὴν [d] ὑποδεχομένην ἑκάστοτε, καὶ ἐκτρέφουσαν πάντας πατρίδα, καὶ δοῦσαν τοὺς προηγησαμένους, αὐτήν τε καὶ θεῶν τῶν ἐγχωρίων τὰς καθεστώσας τιμὰς, τῷ [e] πλεῦνι αἰεὶ [f] ὑπερβάλλειν.

25 [a] Πυθαγόρου.

Πυθαγόρας ἐρωτηθεὶς, πῶς δεῖ ἀγνωμονούσῃ πατρίδι προσφέρεσθαι· εἶπεν, ὡς μητρί.

[d] καὶ μητέρα] Alias non habetur καὶ μητέρα. GESNER.
[e] ἃ] ᾗ A. Trinc.
[f] κελεύῃ] κελεύσῃ A.
[g] οὐδὲ λειπτέον] οὐδ᾽ ἐλλειπτέον B. m. s. ληπτέον Trinc.
[h] ὃ ἂν κελεύει] ᾗ ἂν κελεύῃ A. m. p. Trinc. Mox ὅμως Trinc.
[i] ᾗ om. A. Trinc.

24.

[a] Sic A. Trinc.
[b] διαδεξομένους] διδαξομένους B.
[c] ἂν] ἣν B. In vv. ἐπιτηδεία μόνη cum Jacobsio latere credo ἐπὶ τῇ διαμονῇ. Cætera non expedio.
[d] ἀποδεχομένην] ὑποδεχομένην A. B. m. s. Gesn. marg.
[e] πλεῦνι] πλέονι A.
[f] ὑπερβάλλειν] ὑπερβάλλει Trinc.

25.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

26 [a] Τιμοθέου.

Τιμόθεος ὁ τῶν Ἀθηναίων στρατηγὸς ἀκούσας τινὸς τῶν συστρατηγούντων αὐτῷ λέγοντος, Ἆρά γε, Τιμόθεε, ἡ πατρὶς ἡμῶν χάριτας ἀποδώσει; ἔφη· Ἀλλ' ἡμῖν γένοιτο τὰς ἀξίας ἀποδοῦναι.

27 [a] Ἐκ τῶν Σερήνου.

Οἱ Λάκωνες οἱ ἐπὶ τὸ ὑποσχεῖν δίκας ὑπὲρ τῶν κηρύκων ὡς τὸν [b] μέγαν βασιλέα ἐλθόντες, ἀφείθησάν τε καὶ διὰ τὴν ἀρετὴν ἠξίου αὐτοὺς παρ' αὐτῷ μένειν. Καὶ πῶς, ἔφασαν, ἂν δυναίμεθα τοιαύτην πατρίδα καταλιπεῖν, ὑπὲρ ἧς τοσαύτην ὁδὸν ἤλθομεν ἀποθανούμενοι;

28 [a] Ἀριστείδου.

Ἀριστείδης [b] ἐρωτώμενος, τί μάλιστα αὐτὸν [c] ἐν τῇ φυγῇ ἐλύπει· τὸ τῆς πατρίδος ὄνειδος, ἔφη, κακῶς ἀκουούσης ἐπὶ τῇ αὐτοῦ φυγῇ.

29 [a] Σεριφίου.

Σερίφιος ὀνειδιζόμενος ὑπὸ [b] Ἀθηναίου τῇ μικροπολιτείᾳ, 228
Ἐμοὶ μέν, ἔφη, ἡ πατρὶς ὄνειδος, σὺ δὲ [c] τῇ πατρίδι.

30 [a] Ἀριστείδου.

Ἡ γυνὴ τῷ Ἀριστείδῃ περὶ [b] τὰ πολιτικὰ διατρίβοντι, Εἴθε, ἔφη, τὰ μὲν ἴδια κοινὰ ἐνόμισας· τὰ δὲ κοινά, ἴδια.

26.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

27.

[a] Σερίνου A. Trinc.

[b] πέρσην] μέγαν βασιλέα A. Gesn. marg.

28.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἐρωτώμενος] ἐρωτηθεὶς Voss. in textu.

[c] ἐν τῇ] ἐπὶ τῇ Voss.

29.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἀθηναίου] ἀθηναίων B. m. p. Trinc. Mox τὴν μικροπολίτειαν pro τῇ μικροπολιτείᾳ A. B. m. s.

[c] τῇ πατρίδι] Articulus deest B. De hoc dicto consulatur Menagius ad Diog. Laert. I. 104. necnon Astius ad Platonis Rep. p. 330. A. sive I. 4.

30.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] τὰ πολιτικὰ] τὰ om. A. Voss.

31 [a] Χρυσέρμου ἐν β Περσικῶν.

Περσῶν τὴν Ἑλλάδα λεηλατούντων, καὶ πάντων τῶν ἐγχωρίων συγκεχυμένων, Παυσανίας ὁ τῶν Λακεδαιμονίων στρατηγὸς ἀπὸ Ξέρξου [b] πεντακόσια τάλαντα χρυσίου λαβὼν, ἔμελλε προδιδόναι τὴν Σπάρτην. Τῶν δὲ ἐπιστολῶν μεσολαβηθεισῶν, [c] Ἡγησίλαος ὁ πατὴρ τοῦ προειρημένου [d] περὶ τῶν συμβεβηκότων ἀκούσας, τὸν υἱὸν μέχρι τοῦ ναοῦ τῆς χαλκιοίκου συνεδίωξεν Ἀθηνᾶς, καὶ τὰς θύρας τοῦ τεμένους πλίνθοις ἐμφράξας, μετὰ τῆς γυναικὸς τὴν εἴσοδον ἐφρούρησε, καὶ λιμῷ τὸν προδότην ἀνεῖλεν, ὃν ἡ μήτηρ ἀείρασα ὑπὲρ τοὺς ὅρους ἔρριψεν.

32 [a] Δημαράτου β Ἀρκαδικῶν.

Τεγεατῶν πρὸς [b] Φενεάτας πόλεμον ἐχόντων, καὶ χρονίου τῆς παρατάξεως ὑπαρχούσης, συνεφώνησε τοῖς δήμοις [c] τριδύμους ἀδελφοὺς πέμψαι τοὺς μαχησομένους ὑπὲρ τῆς νίκης. Ἀρέσαντος δὲ τοῦ [d] δόγματος, ἔπεμψαν Τεγεᾶται μὲν [e] τοὺς Ῥηξιμάχου παῖδας, Φενεᾶται δὲ [f] τοὺς Δημοστράτου. Συμβληθείσης [g] δὲ τῆς παρατάξεως, [h] ἐφονεύθησαν ἐκ τῶν Ῥηξιμάχου δύο· ὁ δὲ τρίτος, τοὔνομα Κριτόλαος, [i] στρατηγήματι τῶν ἀντιπάλων [k] περιεγένετο· προσποιητὴν γὰρ [l] σκεψάμενος φυγὴν, καθ' ἕνα τῶν ἐπιδιωκόντων ἀνεῖλε, [m] καὶ ἐγκρατὴς γενόμενος τῆς νίκης, περιχαρὴς

31.

[a] Sic A. Trinc. v. Plutarch. Parall. p. 308. B.

[b] πεντακόσια] προτακίσια Trinc.

[c] ἡγησίλαος] Κλεόμβροτος A. B. uterque in margine.

[d] περὶ] παρὰ B. m. p. Trinc.

32.

[a] Sic A. Simpl. Δημαράτου Trinc. v. Plut. Parall. p. 309. C.

[b] φανέας] φανεάτας Gesn. marg. φενεάτας A. pro v. l. et sic B. m. s. Mox φαινεᾶται Trinc.

[c] τριδύμους] τριδήμους B. m. p. Trinc.

[d] δόγματος] δόματος A.

[e] διὰ ῥηξ.] τοὺς ῥηξ. A. Trinc.

[f] τοῦ] τοῦ A. (s superscr.)

[g] οὖν] δὲ A. Deest Trinc.

[h] ἐφονεύθησαν] ἐφόνευσαν A. p. m.

[i] στρατηγημάτων A. p. m.

[k] περιεγένετο] παρεγ. B. m. p. Trinc.

[l] σκεψάμενος] σκηψάμενος B. m. s.

[m] καὶ] ὃς καὶ A.

πρὸς τοὺς οἰκείους ἔδραμε· πάντων δ' αὐτῷ περιπλοκὰς συμπαθεῖς διδόντων, οὐ συνεχάρη [n] μόνη τῷ προειρημένῳ ἡ ἀδελφὴ [o] Δημοδίκη· πεφονεύκει γὰρ αὐτῆς τὸν κατηγγυημένον ἄνδρα Δημόδικον. Ἀναξιοπαθήσας δὲ ἐπὶ τούτοις ὁ νέος, τὴν παρθένον [p] ἀποκτεῖναι, καὶ ὑπὸ τῆς μητρὸς φόνου κριθεὶς, ἀπελύθη τοῦ ἐγκλήματος.

33 [a] Δημαράτου ἐν τρίτῳ Τραγῳδουμένων.

Ἀθηναίων πρὸς Εὔμολπον [b] τὸν Θρακῶν βασιλέα πόλεμον ἐχόντων, Ἐρεχθεὺς ὁ τῆς Ἀττικῆς προϊστάμενος χρησμὸν ἔλαβεν, ὅτι νικήσει τοὺς ἐχθροὺς, ἐὰν [c] τὴν πρεσβυτάτην τῶν θυγατέρων Περσεφόνην θύσῃ. [d] Παραγενόμενος [e] δ' εἰς Ἀθήνας [f] Θρασιθέᾳ τῇ γυναικὶ τὴν [g] πυθόχρηστον μαντείαν ἀπήγγειλεν· εἶθ' οὕτω τὴν κόρην προσαγαγὼν τοῖς βωμοῖς ἀνεῖλε, καὶ συμβαλὼν τὸν πόλεμον ἐγκρατὴς ἐγένετο τῆς νίκης.

34 [a] Ἱεροκλέους ἐκ τοῦ Πῶς πατρίδι χρηστέον.

Μετὰ τὸν περὶ θεῶν λόγον εὐλογώτατόν ἐστιν ὑποθέσθαι, πῶς πατρίδι χρηστέον. Ἔστι γὰρ ὡσανεὶ δεύτερός τις θεὸς αὕτη, νὴ Δία, [b] πρῶτος καὶ μείζων γονεύς· παρ' ὃ δὴ καὶ ὁ τοὔνομα τῷ πράγματι [c] τιθέμενος, οὐκ ἀνεντρεχὲς ἔθετο, παρασχηματίσας μὲν τῷ πατρὶ, θηλυκῶς δ' ἐξενεγκὼν, ἵν' οἷον μίγμα [d] τυγχάνοι, τῆς τε τοῦ πατρὸς καὶ τῆς μητρώας.

[n] μόνη] μόνῳ B. m. p. Trinc.
[o] δημοδίκη] Prius in A. scr. Δημονίκη. sed em. a p. m.
[p] ἀποκτεῖναι] Lego ἀπεκτεῖνε. Gesner.

33.

[a] Sic A. Simpl. Δημαράτου Trinc.
[b] τῶν θρ.] τὸν θρακῶν A.
[c] μὲν] τὴν A. Trinc. Mox Gesnerus corrigit Περσεφόνῃ.
[d] παραγενόμενος] περιγ. B. Trinc.
[e] δ'] ὁ δ'. A. Trinc.
[f] θρασιθέᾳ] φρασιθέᾳ A. Πραξιθέᾳ emendavit Valesius ad Harpocrat. p. 262. ex Lycurgo adv. Leocratem p. 143=202. Reisk.
[g] Πυθόχριστον] πυθόχρηστον A.

34.

[a] Sic A. Simpl. Ἱεροκλέους Trinc. p. 284. ed. Needham.
[b] πρῶτος] πρῶτον Trinc.
[c] τιθέμενος] θέμενος B. τὸ πρᾶγμα τιθέμενος Trinc.
[d] τυγχάνοι] τυγχάνῃ τῆς τοῦ τε π. et in marg. τοῦ τε πρς καὶ τῆς μητρός· ἢ τῆς τε πατρῴας καὶ τῆς μητρώας. A.

Καὶ δὴ οὗτος μὲν ὁ λόγος ὑπαγορεύει πατρίδα τιμᾶν, ἐπί-
σης τοῖς δυσὶ γονεῦσι τὴν μίαν· ὥστε [c] θατέρου μὲν τῶν γι-
νομένων [f] ὁποτερουοῦν καὶ δεῖ [g] προκρίνειν τὴν πατρίδα, προ- 229
τιμᾶν [h] δ' αὐτῆς μηδ' ἅμα τοὺς δύο, δι' ἴσης δὲ μοίρας
ἄγειν. Ἀλλ' ἕτερος αὖ λόγος ἐστὶν, ὃς παρακαλεῖ καὶ
προτιμᾶν αὐτὴν τῶν γονέων, [i] ἅμα τοῖν [k] δυοῖν· καὶ οὔ τοι
[l] μόνον τούτων, ἀλλὰ καὶ γυναικὸς σὺν αὐτοῖς καὶ τέκνων
καὶ φίλων, καὶ ἀπαξαπλῶς μετὰ θεοὺς τῶν ἄλλων ἁπάν-
των.

35 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ὥσπερ οὖν ἀνόητος μὲν ὁ τῶν πέντε δακτύλων τὸν ἕνα προκρίνων, [b] εὐλόγιστος δὲ ὁ τοὺς πέντε τοῦ ἑνός· ὁ μὲν γὰρ ἀτιμάζει καὶ [c] τὸ προκείμενον, ὁ δ' ἐν τοῖς πέντε καὶ τὸν ἕνα περισώζει· τοῦτον δ' αὖ τὸν τρόπον, καὶ ὁ μὲν ἑαυτὸν τῆς πατρίδος πλέον σώζειν βουλόμενος, [d] πρὸς τῷ δρᾶν ἀθέμιτα, καὶ ἄλλως ἀνόητος ἱμείρων ἀδυνάτων· ὁ δὲ ἑαυτοῦ προτιμῶν τὴν πατρίδα, θεοφιλής τε καὶ τοῖς λογισμοῖς ἀραρώς. Εἴρηται δ' ὅμως, ὡς [e] κἂν εἰ μὴ [f] συναριθμοίη τις τῷ συστήματι, κατ' ἰδίαν δ' ἐξετάζοιτο, καθήκειν τῆς ἑαυτοῦ σωτηρίας τὴν τοῦ συστήματος προκρίνειν, ὅτι τὴν ὡς πολίτου σωτηρίαν ἀνύπαρκτον ἀπέφαινεν ἡ τῆς πόλεως ἀπώλεια, καθάπερ καὶ τὴν [g] τοῦ ἑνὸς δακτύλου, ὡς μέρους χειρὸς, ἡ τῆς χειρὸς ἀναίρεσις. Καὶ δὴ κατὰ τούτων

[c] θατέρου] θατέρους A. Trinc. Mox γειναμένων Bentleius.
[f] ὁποτερονοῦν] ὁποτεροῦν καὶ δὴ Trinc.
[g] προκρίνειν] προκρίνων Trinc.
[h] δ'] δι' B. m. p. Trinc.
[i] ἀλλὰ] Malim ἅμα. Gesnerus.
[k] τῶν δυεῖν] τῶν δυοῖν A.
[l] μόνων] μόνον A. B. m. s.

35.

[a] Sic A. p. 284. ed. Needham.
[b] εὐλόγιστος] ἀλόγιστος A. p. m. εὔλογος B. et A. m. sec.
[c] τὸ] τὸν A. τὸν προκρινόμενον Bentleius.
[d] πρὸς τῷ] πρὸς τὸ A.
[e] κἂν] ἂν B.
[f] συναριθμοίη] συναριθμώη A. Trinc. Sequentia ad Thucydid. II. 60. spectare notat Wassius.
[g] τοῦ ἑνὸς δακτύλου, ὡς μέρους] τὴν ὡς δ. ὡς μέρος A. τὴν ὡς δ. ὡς μέρους Trinc.

ἡμῖν συγκεφαλαιώσθω, διότι χρὴ τὸ [h] κοινὸν συμφέρον τοῦ [i] ἰδίᾳ μὴ χωρίζειν, ἀλλ' ἓν ἡγεῖσθαι καὶ ταυτόν· τό τε γὰρ τῇ πατρίδι συμφέρον κοινόν ἐστι καὶ τῶν κατὰ μέρος ἑκάστῳ, τὸ γὰρ ὅλον δίχα τῶν μερῶν ἐστιν οὐδέν· [k] τό τε τῷ πολίτῃ συμφέρον προσήκει καὶ τῇ πόλει, ἐάν γε ὡς [l] συμφέρον πολίτῃ λαμβάνηται. Καὶ γὰρ [m] τὸ χορευτῇ ὡς χορευτῇ λυσιτελὲς καὶ τῷ ὅλῳ χορῷ κερδαλέον ἂν εἴη. Τοῦτον οὖν τὸν λόγον ἐνθέμενοι πάντα ταῖς διανοίαις, πολὺ φῶς ἕξομεν ἐν τοῖς κατὰ μέρος, ὥστε ἐν μηδενὶ παραλιπεῖν καιρῷ τὸ πρὸς τὴν πατρίδα καθῆκον.

36 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ὧν [b] οὕνεκά φημι δεῖν [c] ἀποικονομεῖσθαι πᾶν καὶ πάθος καὶ νόσημα τῆς ἑαυτοῦ ψυχῆς τὸν πατρίδι χρησόμενον καλῶς. Δεῖ δὲ καὶ τοὺς νόμους τῆς πατρίδος καθάπερ τινὰς θεοὺς δευτέρους συντηρεῖν αὐτὸν [d] τελειοῦντα κατὰ τὴν τούτων ὑφήγησιν· κἂν ᾖ παραβαίνειν τις αὐτοὺς ἢ νεωχμοῦν [e] ἐπιχειροίη, σπουδῇ πάσῃ κωλύοντα καὶ πάντα τρόπον ἐναντιούμενον. Οὐ γὰρ ἀγαθὸν ἐπιτήδευμα πόλει, δι' ἀτιμίας ἀγόμενοι νόμοι, καὶ τὰ νέα προκρινόμενα τῶν παλαιῶν. Ὅθεν καὶ τῶν ψηφισμάτων καὶ τῆς παραθέρμου ταύτης [f] καινουργίας εἰρκτέον τοὺς αὐθαδέστερον ἐπὶ τοῦτ' ἰόντας. Ἀποδέχομαι [g] γοῦν ἔγωγε καὶ τὸν τῶν Λοκρῶν νομοθέτην

[h] κοινὸν συμφέρον] κοινὸν ἢ σ. A. B. m. p. Trinc.

[i] ἰδίᾳ μὴ] μὴ ἰδία (μη) sic A. μὴ ἰδία Trinc. B. m. p. ἰδία μὴ m. s.

[k] τό τε τῷ] τό τε τὸ Trinc.

[l] συμφέρον πολίτῃ] πολίτῃ συμφέρον A.

[m] τὸ] τῷ A. Trinc. Mox χορῷ om. Trinc.

36.

[a] Sic. A. p. 286. ed. Needham.

[b] οὕνεκα] οὖν ἕνεκα B. m. s.

[c] ἀποικονομεῖσθαι] ἀποκομεῖσθαι A. ἀποκοδομεῖσθαι Gesnerus margine, e conjectura.

[d] τελειοῦντα] τελειότητα B. m. p. Trinc. κἂν ᾖ pro κἂν εἰ Needham.

[e] ἐπιχειρῶν] ἐπιχειρώη B. m. s. ἐπιχειροίη Bentleius. Mox πᾶσι Trinc. Infra pro προκρινόμενα vulgo ἀποκρινόμενα. Correxit Bentleius.

[f] κακουργίας] κενουργίας Trinc. B. p. m. καινουργίας B. m. s. ed. Francof. Mox εἰκτέον A. Trinc.

[g] δ' οὖν] γοῦν A.

Ζάλευκον, ὃς ἐνομοθέτησε τὸν [h] καινὸν εἰσοίσοντα νόμον, βρόχου περικειμένου τῷ τραχήλῳ τοῦτο ποιεῖν, ὡς [i] ἀκαρὴς οἴχοιτο πνιγεὶς, εἰ μὴ μάλα σφόδρα λυσιτελῶς τῷ [k] κοινῷ παραδιατάττοιτο τὴν ἐξ ἀρχῆς τῆς πολιτείας [l] κατάστασιν. Οὐδὲν δ' ἧττον τῶν νόμων καὶ τὰ ἔθη φυλακτέον [m] τά γε ὄντως πάτρια, καὶ τάχα που πρεσβύτερα καὶ τῶν νόμων αὐτῶν· [n] εἰ τά τε χθιζὰ ταῦτα καὶ [o] πρωϊζὰ τὰ νῦν εἰς ἅπασαν εἰσηγμένα πόλιν, οὔτε πάτρια ἡγητέον, καὶ τάχ' οὐδὲ ἔθη τὸ σύνολον. Εἶτα τὸ μὲν ἔθος ἄγραφός τις εἶναι βούλεται νόμος, καλὸν ἐπιγεγραμμένος νομοθέτην, τὴν τῶν χρωμένων ἁπάντων εὐαρέστησιν, ἴσως δέ που καὶ τοῖς φύσει δικαίοις ἐγγὺς βάλλων.

ΠΕΡΙ ΞΕΝΗΣ. Μ.

1 [a] Εὐριπίδου Φιλοκτήτῃ.

Πατρὶς καλῶς πράσσουσα τὸν εὐτυχοῦντ' ἀεὶ
μείζω τίθησι, [b] δυστυχοῦντα δ' ἀσθενῆ.

2 [a] Τοῦ αὐτοῦ Φαέθοντι.

Ὡς πανταχοῦ γε πατρὶς ἡ βόσκουσα γῆ.

3 [a] Ἐκ τῶν Πλουτάρχου Περὶ Φυγῆς.

Ὅθεν εὖ μὲν ὁ Ἡρακλῆς εἶπεν ἐρωτηθεὶς,

Ἀργεῖος, ἢ Θηβαῖος; οὐ γὰρ εὔχομαι
[b] μιᾶς· ἅπας μοι πύργος Ἑλλήνων πατρίς.

[h] καινὸν] κοινὸν B. m. p. Trinc.
[i] ἀναρὴς] ἀκαρὴς A. B. ὁ καρὴς Trinc. Vide Wesselingium ad Diod. Sic. XII. 17.
[k] καινῷ] κοινῷ A. Trinc. παραδιαλλάττοιτο pro παραδιατάττοιτο Bentleius.
[l] κατάστασιν] σου κ. A. p. m. Postea σου delet.
[m] τά γε] τά τε B.
[n] εἰ τάτε] τάδε Gesneri margo. τὰ δὲ sine εἰ Needhamus.
[o] προϊζὰ] πρωιζὰ A. B.

1.
[a] Sic A. Scil. Fr. 12. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.
[b] δυστυχοῦντα] δυστυχοῦσα B.

2.
[a] Sic A. Scil. Fr. 2. Deest lemma Trinc.

3.
[a] Sic Trinc. A. m. sec. τοῦ Πλ. pr. v. p. 600. F.
[b] μιᾶς] om. B. Supra ἀργεῖος εἶ, ἢ Trinc.

4 [a] Ἀλλ' ἡμεῖς, ὥσπερ μύρμηκες ἢ μέλιτται μυρμηκιᾶς μιᾶς ἢ κυψέλης ἐκπεσόντες, ἀδημονοῦμεν, [b] καὶ ξενοπαθοῦμεν, οὐκ εἰδότες οὐδὲ μεμαθηκότες οἰκεῖα τὰ πάντα ποιεῖσθαι, καὶ νομίζειν ὥσπερ ἐστίν. [c] Καίτοι γελῶμεν τὴν ἀβελτηρίαν τοῦ φάσκοντος ἐν Ἀθήναις βελτίονα σελήνην τῆς ἐν Κορίνθῳ· τρόπον τινὰ τὸ αὐτὸ πάσχοντες, [d] ὅτ' ἂν ἀμφιγνοῶμεν ἐπὶ [e] ξένης γενόμενοι τὴν γῆν, τὴν θάλατταν, τὸν ἀέρα, τὸν οὐρανὸν, ὡς ἕτερα καὶ διαφέροντα τῶν συνήθων. Ἡ μὲν γὰρ φύσις ἐλευθέρους ἡμᾶς καὶ λελυμένους ἀφίησιν, αὐτοὶ δὲ ἡμεῖς συνδέομεν ἑαυτοὺς [f] καὶ στενοχωροῦμεν. Πλοῦτον [g] γὰρ ἀποβάλλοντα ῥᾳδίως καὶ ταχέως οὐκ ἔστιν [h] ἄλλον συναγαγεῖν· πατρὶς δὲ γίνεται πᾶσα πόλις εὐθὺς ἀνθρώπῳ χρῆσθαι μεμαθηκότι· ἂν γὰρ σκοπῇς ἄνευ κενῆς δόξης τὴν ἀλήθειαν, ὁ μίαν πόλιν ἔχων, ξένος ἐστὶ τῶν ἄλλων ἁπασῶν καὶ ἀλλότριος. Ἀριστοτέλης ἦν ἐκ Σταγείρων, Θεόφραστος ἐξ Ἐρεσίου, Στράτων ἐκ Λαμψάκου, Γλαύκων δὲ ἐκ Τρωάδος, Ἀρίστων ἐκ [i] Κέω. Τούτους ἐδίωξεν οὐδεὶς, ἀλλ' αὐτοὶ διώκοντες ἡσυχίαν καὶ σπουδὴν, ἧς οὐ πάνυ μέτεστιν οἴκοι τοῖς ἡντινοῦν δόξαν [k] ἢ δύναμιν ἔχουσι, τὰ μὲν ἄλλα λόγοις, τοῦτο δὲ ἡμᾶς ἔργῳ διδάσκουσι. Καὶ γὰρ νῦν οἱ δοκιμώτατοι καὶ κράτιστοι ζῶσιν ἐπὶ [l] ξένης, οὐ μετασταθέντες, ἀλλὰ μεταστάντες.

5 [a] Ἐν ταυτῷ.

Τὸ δὲ [b] ἀληθέστατον ἡ ψυχὴ φεύγει, καὶ πλανᾶται, θείοις

4.

[a] p. 601. C. Cum præcedentibus conjungunt A. Trinc.
[b] καὶ ξενοπαθοῦμεν om. A. N. Damasc. Trinc.
[c] καί τοι usque ad πάσχοντες om. A. Trinc.
[d] ὅταν] εἶτα ἐὰν A. Trinc.
[e] ξένης] ξένοις A. m. p.
[f] καὶ om. A. Trinc.
[g] γὰρ] δὲ A. Trinc. Dein ἀποβάλλοντι B. pro ἀποβάλλοντα.
[h] ἄλλον] ἄλλο A. Infra ὁμοίαν Tr.
[i] κέω] κωτιέων A. B. m. s. κωτιεοῦν m. p. Trinc.
[k] ἢ] καὶ A.
[l] ξένης] ξένοις Trinc. et mox μεταθέντες pro μετασταθέντες.

5.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. p. 607. D.
[b] ἀληθέστατον] ἀμαθέστατον B. m. p. Trinc.

ἐλαυνομένη δόγμασι καὶ νόμοις, εἶτα ὥσπερ ἐν νήσῳ σάλον ἐχούσῃ [c] πολὺν, καθάπερ [d] φησὶν ὁ Πλάτων, ὀστρέου τρόπον [e] ἐνδεδεμένη τῷ σώματι, διὰ τὸ μὴ ἀναφέρειν μηδὲ μνημονεύειν,

ἐξ οἵης τιμῆς τε καὶ ὅσσου μήκεος ὄλβου

μεθέστηκεν, οὐ Σάρδεων Ἀθήνας, οὐδὲ Κορίνθου Λῆμνον [f] ἢ Σκύρον, ἀλλ' οὐρανοῦ καὶ σελήνης γῆν ἀμειψαμένη, καὶ τὸν ἐπὶ γῆς βίον. Ἂν μικρὸν δὲ ἐνταῦθα τόπον ἐκ τόπου παραλλάξῃ, δυσανασχετεῖ καὶ ξενοπαθεῖ, καθάπερ φυτὸν [g] ἀ- 231
γεννὲς ἀπομαραινομένη. Καίτοι [h] φυτῷ μέν ἐστί τις χώρα μᾶλλον ἑτέρας ἑτέρα πρόσφορος, ἐν ᾗ τρέφεται, καὶ βλαστάνει [i] βέλτιον· ἀνθρώπου δὲ οὐδεὶς ἀφαιρεῖται τόπος εὐδαιμονίαν, ὥσπερ οὐδὲ [k] ἀρετὴν, οὐδὲ φρόνησιν.

6 [a] Δημοκρίτου.

Ξενιτείη βίου αὐτάρκειαν διδάσκει· μάζα γὰρ καὶ στιβὰς λιμοῦ καὶ κόπου γλυκύτατα ἰάματα.

7 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀνδρὶ σοφῷ πᾶσα γῆ βατή· ψυχῆς γὰρ ἀγαθῆς πατρὶς ὁ ξύμπας κόσμος.

8 [a] Τέλητος Περὶ Φυγῆς.

Μήποτε πρὸς μὲν τὸν οἰόμενον ἀλογιστοτέρους τὴν φυγὴν ποιεῖν, ὀρθῶς ἂν παραβάλλοιτο τὰ ἐπὶ τῶν τεχνῶν· ὅτι ὃν τρόπον [b] οὐδὲ αὐλεῖν, οὐδὲ ὑποκρίνεσθαι χεῖρόν ἐστιν ἐπὶ ξένης ὄντα, οὕτως οὐδὲ βουλεύεσθαι· πρὸς δὲ τὸν κατ' ἄλλό τι ἡγούμενον τὴν φυγὴν [c] βλαβερὸν εἶναι, μὴ οὐδὲν [d] λέγητε πρὸς

[c] πολὺν om. Damasc. A. N. Trinc. Supra νήσει Trinc.
[d] ὁ φησὶν] φησὶν ὁ A. Trinc.
[e] ἐνδεδεμένη] δεδεμένη A. N. Trinc.
[f] ἢ σκύρον om. A. Damascen. Trinc.
[g] ἀγενὲς] ἀγεννὲς A. Trinc.
[h] φυτῷ] φοιτῷ Trinc.
[i] βέλτιον] μέτριον Damasc.
[k] ἀρετὴν] τὴν ἀρετὴν B.

6.
[a] Sic A. Trinc.

7.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

8.
[a] Sic A. Trinc.
[b] οὐδὲν αὐλεῖν] οὐδὲ αὐχεῖν Damasc. οὐδὲ A.B.
[c] βλαβερὸν] βλαβερὰν A. ex em.
[d] λέγητε] λέγηται A.

τὸ τοῦ Στίλπωνος, ὃ καὶ πρῴην [c] εἰπόντι λέγειν φησί· Καὶ τίνων ἡ φυγὴ, ποίων ἀγαθῶν στερίσκει, τῶν περὶ ψυχὴν, ἢ τῶν περὶ [f] τὸ σῶμα, ἢ τῶν ἐκτός; εὐλογιστίας, ὀρθοπραγίας, εὐπραγίας ἡ [g] φυγὴ στερίσκει; Οὐ δή. Ἀλλὰ μὴ [h] ἀνδρείας, ἢ δικαιοσύνης, ἢ ἄλλης τινὸς ἀρετῆς; Οὐδὲ τοῦτο. Ἀλλὰ μὴ τῶν περὶ τὸ σῶμά τινος ἀγαθῶν, ἢ οὐχ ὁμοίως ἐστὶν ἐπὶ ξένης ὄντα ὑγιαίνειν, καὶ ἰσχύειν, καὶ ὀξὺ ὁρᾷν, καὶ ὀξὺ ἀκούειν, ἐνίοτε δὲ μᾶλλον [i] ἢ ἐν τῇ ἰδίᾳ μένοντα; Καὶ μάλα. Ἀλλὰ μὴ τῶν ἐκτὸς [k] στερίσκει ἡ φυγή; ἢ οὐ πολλοῖς ὤφθη τὰ πράγματα κατὰ τὴν [l] τῶν τοιούτων ὕπαρξιν ἐπιφανέστερα [m] γεγονότα φυγάδων γενομένων; ἢ οὐ Φοῖνιξ ἐκ Δολοπίας ἐκπεσὼν ὑπὸ Ἀμύντορος εἰς Θεσσαλίαν φεύγει;

Πηλέα [n] δ' ἐξικόμην,
Καί μ' ἀφνειὸν ἔθηκε, πολὺν δέ μοι ὤπασε λαόν.

Θεμιστοκλῆς [o] ἐκεῖνος, ὦ παῖ, φησὶν, [p] ἀπωλόμεθ' ἂν εἰ μὴ ἀπωλόμεθα· νῦν δὲ πολλὴ τῶν τοιούτων ἀφθονία. Ποίων οὖν ἀγαθῶν ἡ φυγὴ στερίσκει, ἢ τίνος κακοῦ παραιτία ἐστίν; ἐγὼ μὲν γὰρ οὐχ ὁρῶ. Ἀλλ' ἡμεῖς πολλαχοῦ [q] αὐτοὺς κατορύττομεν, καὶ φυγάδες γενόμενοι καὶ ἐν τῇ ἰδίᾳ μένοντες. Οὐκ ἄρχουσί φησιν, οὐ πιστεύονται, οὐ παρρησίαν ἔχουσιν. Ἔνιοι δέ [r] γε καὶ φρουροῦσι τὰς πόλεις παρὰ βασιλεῦσι, καὶ ἔθνη πιστεύονται, καὶ δωρεὰς μεγάλας καὶ συντάξεις λαμβάνουσι. Λυκῖνος ἐκεῖνος, οὐ παρ' ἡμῖν ἐφρούρει φυγὰς ὢν ἐκ τῆς Ἰταλίας, πιστευόμενος παρ' Ἀντιγόνῳ; καὶ τὸ προσ-

[c] εἰπόντι] εἰπόν τι Damasc. Mox καὶ ποίων Gesnerus in versione, ἢ ποίων Jacobs.

[f] τὸ σῶμα] deest τὸ B.

[g] φυγὴ στερίσκει] φυγῆς στερίσκῃ A. ἢ φυγῆς στερίσκει Trinc.

[h] ἀνδρείας] ἀνδρίας A.

[i] ἢ om. Trinc. B. p. m.

[k] στερίσκει] στερίσκῃ A.

[l] τῶν τοιούτων] τῶν om. Trinc.

[m] γεγονότα om. A. γεγονότων Tr.

[n] δ'] γὰρ B. Trinc.

[o] ἐκεῖνος] δ' ἐκεῖνος B. ubi mox φησιν a m. s. Deest Trinc.

[p] ἀπωλόμεθα] ἀπωλόμεθ' ἂν εἰ μὴ ἀπωλόμεθα Damasc. A. in marg. B. m. s. Vide Plutarch. II. 185. F. 328. F. 602. A.

[q] αὐτὰς] αὐτοὺς A. B. m. s. Damasc. Gesneri margo.

[r] γε om. Trinc.

ταττόμενον ἐποιοῦμεν Λυκίνῳ ἡμεῖς ἐν τῇ ἰδίᾳ μένοντες; Ἱππομέδων ὁ Λακεδαιμόνιος ὁ νῦν ἐπὶ Θρᾴκης [s]καθιστάμενος ὑπὸ Πτολεμαίου, Χρεμωνίδης καὶ Γλαύκων οἱ Ἀθηναῖοι, οὐ πάρεδροι καὶ [t]σύμβουλοι; ἵνα μὴ τὰ παλαιά σοι λέγω, ἀλλὰ [u]τὰ καθ' ἡμᾶς. Καὶ τὸ τελευταῖον οὐκ ἐπὶ στόλου τηλικούτου ἐξαπεστάλη, καὶ χρημάτων τοσούτων πιστευόμενος, καὶ τὴν ἐξουσίαν ἔχων ὡς βούλοιτο χρῆσθαι; Ἀλλ' ἔν γε τῇ ἰδίᾳ οὐκ ἄρχουσιν οἱ φυγάδες· οὐδὲ γὰρ [w]αἱ γυναῖκες οἴκοι μένουσαι, οὐδ' οἱ παῖδες, οὐδὲ τὰ μειράκια ταυτὶ, οὐδ' οἱ ἔξωροι τῇ ἡλικίᾳ. Ἀλλὰ [x]μή τι δυσχερὲς αὐτοῖς εἴη [y]ὀδυνῷντο ἐπὶ τούτῳ, οὐκ ἂν ἦσαν βάκηλοι; τί 232
δὲ καὶ διαφέρει ἄρχειν ἢ ἰδιωτεύειν; ἢ πολλῶν, ἢ ὀλίγων καὶ ἡβώντων βασιλεύσεις, ἐγὼ δὲ ὀλίγων καὶ ἀνήβων παιδαγωγὸς γενόμενος, καὶ τὸ τελευταῖον ἐμαυτοῦ· τῇ γὰρ αὐτῇ ἐμπειρίᾳ χρώμενον, καὶ τοὺς πολλοὺς καὶ τὸν ἕνα, καὶ δημοσιεύοντα, καὶ κατ' οἰκίας ἐργολαβοῦντα, καὶ ἐπὶ ξένης ὄντα, καὶ ἐν τῇ ἰδίᾳ μένοντα, καὶ κατὰ τὴν αὐτὴν εὐβουλίαν, καὶ τῇ ἀρχῇ καλῶς καὶ τῇ ἰδιωτείᾳ ἐστὶ χρῆσθαι. Τί οὖν διοίσει [z]μοι, εἰ μὴ ἄρξω, ἀλλὰ ἰδιωτεύσω; Ἀλλ' οὐδὲ ἐξουσίαν ἕξεις εἰσελθεῖν εἰς τὴν ἰδίαν. Οὐδὲ γὰρ νῦν εἰς τὸ [a]Θεσμοφόριον ἐξουσίαν ἔχω, οὐδὲ γυναῖκες εἰς τὸ τοῦ [b]Ἐνυαλίου, οὐδ' εἰς τὰ ἄβατα ἕξομεν. Ἀλλὰ εἰ ἐπὶ [c]τούτῳ ἄχθοιτό τις, οὐκ ἂν παιδαριώδης εἴη; Οὐδὲ εἰς τὸ γυμνάσιον ἐνίοτε ἐξουσίαν ἔχω, ἀλλ' ἀπελθὼν εἰς τὸ βαλανεῖον ἠλειψάμην τῇ αὐτῇ παλαιστρικῇ χρώμενος, ἢ καὶ [d]πρὸ τοῦ

[s] καθεστάμενος] καθιστάμενος A.
[t] σύμβουλοι] σύμβολοι A.
[u] τὰ καθ'] τὰ om. A. Vid. Wyttenbach. in Annot. ad J. Bakii Posidonium pag. 263. Plutarch. Disput. de Puer. Educ. p. 23 = 38.
[w] αἱ γυναῖκες] deest articulus A.
[x] ἀλλὰ εἰ] εἰ om. A. Damasc. Trinc. Videtur leg. ἀλλὰ μή τι δ. αὐτοῖς ἦ; εἰ δ.
[y] ὠδυνῶντο] ὠδυνῶντο A. ὀδυνῶντο B.
[z] μοι om. A.
[a] θεσμοφόριον] θεσμοφορ~ιον A. m. s.
[b] ἐνυαλίου] ἐναυλίου Damasc.
[c] τούτῳ] τοῦτο A.
[d] πρὸ τοῦ] πρὸ τῶν Damasc.

ἐν τῷ γυμνασίῳ. Οὕτω καὶ δεῦρο ἄβατον ἡγησάμενος τὴν ἰδίαν, μεταβὰς ἀλλαχοῦ κατοικῶ. Οὐκ οὖν ἀκλήρημά τι καὶ ὄνειδος ἐμὸν, [e]εἰ μετὰ πονηρῶν οἰκήσω; δύναμαι δὲ μεταβὰς ὥσπερ ἐξ ἑτέρας νεὼς εἰς ἑτέραν ὁμοίως εὐπλοεῖν, οὕτως ἐξ ἑτέρας πόλεως εἰς ἑτέραν πόλιν ὁμοίως εὐδαιμονεῖν. Ἢ ἐμὸν ὄνειδος, ἀλλὰ οὐ τῶν ἐμὲ ἐκβαλλόντων ἐπιεικῆ καὶ δίκαιον ὄντα; Οὐκ ἀηδῶς [f]Φιλήμων· [g]ἡσσωμένου γάρ ποτε αὐτοῦ καὶ ἀπηλλαχότος [h]ἄστεως συναντῶντές τινες, [i]ὡς εὐημέρηκας, ἔφασαν, Φιλῆμον· Ὑμεῖς μὲν [k]οὖν, φησιν οἴεσθε οὕτω [l]τεθεαμένοι· ἐγὼ μὲν γὰρ ἀεὶ ἀγαθὸς ὢν διατελῶ. Τί οὖν; ὑπὸ χειρόνων φυγαδεύεσθαι, [m]οὐ παροινία; Σὺ δ' ἂν ἐβούλου, φησὶν, ὑπὸ καλῶν καὶ ἀγαθῶν; ἢ οὐχ οὕτω μὲν σὸν ἔγκλημα; οὐθένα γὰρ ἀγνωμόνως καὶ ἀδίκως ἄνδρες ἀγαθοὶ φυγαδεύουσιν· οὐ γὰρ ἂν ἦσαν δίκαιοι. Παρευδοκιμεῖσθαι οὖν ὑπὸ τῶν τοιούτων καὶ χειροτονίᾳ καὶ ψήφῳ, οὐκ ὄνειδος; Οὐ σόν γε, ἀλλὰ τῶν τούτους χειροτονούντων, καὶ ψηφοφορούντων· ὥσπερ εἰ τὸν ἄριστον ἰατρὸν ἀφέντες, φαρμακοπώλην εἵλοντο, καὶ τούτῳ τὸ δημόσιον ἔργον ἐνεχείρισαν, πότερ' [n]ἂν τοῦ ἰατροῦ εἴπας ἂν ὄνειδος καὶ [o]ἀκλήρημα [p]τοῦτο, ἢ τῶν ἑλομένων; Ἀλλὰ τοῦτό γε εὑρεθῆναι τὴν πατρίδα μοχθηρὰν καὶ [q]ἀχάριστον οὖσαν, εἰς [r]ἣν πολλά τις ἐπόνησε, πῶς οὐκ ἀκλήρημα; Καὶ πῶς ἂν εἴη τοῦτο ἀκλήρημα, ἀλλ' οὐκ [s]εἰ δεῖ εἰπεῖν οὕτως εὐκλήρημα, τὸ γνῶναι ποία

[e] εἰ μὴ] μὴ om. A.

[f] φιλήμων] φῖλῆμ (ο, ων superscr.) A.

[g] ἡσσωμένου] Dedi hoc facili emendatione. ἧσσων ἴσμεν οὐ A. Tr. ἧσσω ἴσμεν καὶ Gesner. qui in marg. leg. Φιλήμονι σύνισμεν.

[h] ἀστείως] ἄστεως margo ed. Francof.

[i] ὡς εὐημ.] Leg. οὐκ εὐημ. Margo ed. Franc.

[k] οὖν] Lego οὐ vel οὐκ, ut sensus constet. GATAKER M. A. p. 254. ἡμεῖς Trinc.

[l] τεθεαμένοι] For. διατεθειμένοι. Margo ed. Franc.

[m] οὐ om. Damasc.

[n] ἂν om. A.

[o] ἀκλήρημα] ἀνακλήρημα A.

[p] τοῦτο] τοῦτον A.

[q] ἀχάριστον οὖσαν] ἀχαριστοῦσαν A.

[r] ἣν πολλά τις] ὃν πολλάκις B.

[s] ἤδη εἰπεῖν] ἤδει εἰπεῖν οὕτως A. εἰ δεῖ ἐιπεῖν οὕτως Damasc.

τις [t]πρότερον μὴ εἰδότα; Ἀλλ' εἰ μὲν τὴν γυναῖκα ᾔσθου πονηρὰν καὶ ἐπίβουλον οὖσαν, πρότερον μὴ εἰδὼς, ἂν [u]ἔσχες χάριν, καὶ [w]εἰ τὸν οἰκέτην δραπέτην, καὶ κλέπτην, ἵνα φυλάττῃ· εἰ δὲ τὴν πατρίδα πονηρὰν καὶ ἀχάριστον ᾔσθου, ἀκληρεῖν [x]ἡγήσῃ, ἀλλ' οὐ χάριν ἔχεις; Ἀλλ' ὅμως μέγα [y]μοι δοκεῖ τὸ ἐν ᾗ [z]ἐγένετό τις καὶ ἐτράφη, [a]καὶ ἐν ταύτῃ καταγενέσθαι. [b]Πότερον καὶ ἐν οἰκίᾳ ἐν ᾗ ἐτράφης καὶ ἐγένου, ἐν ταύτῃ καταγενέσθαι, κἂν ᾖ σαπρὰ καὶ ῥέουσα καὶ καταπίπτουσα· καὶ ἐν νηῒ ἐν ᾗ ἐγένου, καὶ ἐκ παιδίου [c]ἔπλεις, ἐνταῦθα κἂν 233
ἀκάτιον [d]ᾖ, οὐδ' εἰ κωπηλατοῦντα ἀπορρήγνυσθαι δέοι, [e]εἰς τὴν εἰκόσορον [f]μεταβάντα ἀσφαλῶς καὶ [g]ἀκόπως; Καὶ ὀνειδίζουσι μὲν, ὅτι Κύπριος, [h]ὅτι Μυκόνιος, ἢ [i]ὅτι Βελβινήτης· ὅμως δὲ μέγα τί φασι τὸ ἐν ᾗ ἐγένετό τις καὶ ἐτράφη, ἐν ταύτῃ καταβιῶναι, καὶ τὰς πλείους μὲν ἐξώλεις τῶν πόλεων, καὶ τοὺς ἐνοικοῦντας ἀσεβεῖς, μέγα δὲ καὶ προσηνὲς τὴν πατρίδα, ὥσπερ καὶ αὐτή. Ἀλλὰ [k]καὶ ὅτι μέτοικος, ὀνειδίζουσι δὲ πολλοὶ [l]λέγοντες, μέτοικε,

σὺ δ' [m]εὐγενὴς ὢν, τήνδε δουλώσας ἔχεις.

[t] πρότερον] πότερον Damasc.
[u] ἔσχες] εἶχες Damasc.
[w] εἰ om. Damasc.
[x] ἡγῇ σε] ἡγήσῃ A. B. m. s. Damasc. ἡγῇ σου B. m. p. Trinc.
[y] μοι] σοι B. m. p. Trinc.
[z] ἐγένετο] ἐγίνετο Trinc.
[a] ἐν ταύτῃ] καὶ ἐν ταύτῃ A.
[b] πότερον usque ad γενέσθαι om. Damasc.
[c] ἔπλεις] κατὰ τύχην ἔπλεις Damasc.
[d] ᾖ καὶ] οὐ δεῖ ᾖ A. B. m. s. Damasc. οὐ δεῖ Trinc.
[e] ἐξὸν εἰς] ἐξὸν om. A. Damasc. Tr. Addidit, puto, Gesnerus e conjectura, ut paullo post πλεῖν.
[f] μεταβάντα] μεταβὰν τις Damasc. μεταβάντες Trinc.
[g] ἀκόπως πλεῖν] πλεῖν om. A. N. Trinc. Mox ὀνειδίζουσί με Trinc.
[h] ὁ μυκώνιος] ἢ μ. Damasc. ὅτι μ. A. m. s. Dedi Μυκόνιος.
[i] ὁ βελβινθείτης] ὅτι βελβινοείτης A. ὅτι βελβινθείτης B. m. s. ἢ ὅτι Μεμφίτης Damasc. ὁ B. om. Trinc.
Ib. Lege Βελβινήτης ab urbe Laconices Belbina. Valcken. quem vide ad Herodot. VIII. 125. ubi Κύθνιος pro Κύπριος reponit.
[k] ὅτι καὶ A.
[l] λέγοντες μέτοικε] μετοί κατηλέγοντες Damasc. λέγοντες A. marg.
[m] εὐγενὴς] Incerti tragici versus a Grotio p. 159. omissus. Leg. ἐγγενὴς pro εὐγενὴς, opponitur enim μέτοικος. F. versus est Sophoclis: dubito tamen. Valcken.

καὶ Κάδμον μὲν τὸν κτίστην Θηβῶν θαυμάζει, ἐμὲ δ' [n] εἰ μὴ πολίτης, ὀνειδίζει. Καὶ Ἡρακλέα μὲν ὡς ἄριστον ἄνδρα γεγονότα ἐπαινοῦμεν· [o] τὸ δὲ μέτοικον εἶναι, ὄνειδος ἡγούμεθα. Ἡρακλῆς δ' ἐξ Ἄργους [p] ἐκπεσὼν, [q] Θήβαις κατῴκει. Λακεδαιμόνιοι δὲ οὐδὲν τῶν τοιούτων ὄνειδος ἡγοῦνται· ἀλλὰ τὸν μὲν μετασχόντα τῆς ἀγωγῆς καὶ ἐμμείναντα, κἂν ξένος, κἂν ἐξ εἵλωτος, ὁμοίως τοῖς ἀρίστοις τιμῶσι· τὸν δὲ μὴ ἐμμείναντα, κἂν ἐξ αὐτοῦ τοῦ βασιλέως, εἰς τοὺς εἵλωτας ἀποστέλλουσι, καὶ τῆς πολιτείας ὁ τοιοῦτος οὐ μετέχει. Ἀλλὰ τό γε ἐν τῇ ἰδίᾳ μὴ ἐξεῖναι ταφῆναι, πῶς οὐκ ὄνειδος; Καὶ πῶς μέλλει τοῦτο ὄνειδος εἶναι, ὃ τοῖς ἀρίστοις πολλάκις συνέβη; [r] ἢ τίς τιμὴ αὕτη, ἥτις τοῖς κακίστοις περιγίνεται; καὶ [s] Σωκράτην μὲν ἐπαινοῦσιν, ὅτ' ἂν [t] ἐπιλαμβανόμενος Ἀθηναίων λέγῃ· οἱ μὲν γὰρ στρατηγοὶ ἐφ' οἷς καλλωπίζονται ὑπερόριοι [u] τεθαμμένοι εἰσὶ, τὰ δὲ ὀνείδη τῆς δημοκρατίας ἐν τοῖς δημοσίοις τάφοις. Ὁμοίως [w] δὲ καὶ τὸ μὲν ἐπὶ ξένης ταφῆναι, ὄνειδος· τὸ δ' ἐν τοῖς δημοσίοις τάφοις, τίμιον. [x] Ὅτι δὲ καὶ διαφέρειν ἂν δόξῃ ἐπὶ ξένης ταφῆναι, ἢ ἐν τῇ ἰδίᾳ· οὐκ ἀηδῶς γάρ τις τῶν Ἀττικῶν φυγάδων λοιδορουμένου τινὸς αὐτῷ καὶ λέγοντος, ἀλλ' οὐδὲ ταφήσῃ ἐν τῇ ἰδίᾳ, ἀλλ' ὥσπερ οἱ ἀσεβεῖς Ἀθηναίων ἐν τῇ Μεγαρικῇ· ὥσπερ μὲν οὖν, [y] ἔφη, οἱ εὐσεβεῖς Μεγαρέων ἐν τῇ Μεγαρικῇ. Τί γὰρ τὸ [z] διάφορον; ἢ οὐ πανταχόθεν, φησὶν ὁ Ἀρίστιππος, ἴση καὶ ὁμοία ἡ εἰς ᾅδου ὁδός; ἢ τὴν ἀρχὴν εἰ μὴ ταφήσῃ, τί σοι μέλει; ἀλλ' ἡ περὶ ταφῆς [a] ἀγ-

[n] εἰ μὴ] μὴ om. Damasc.
[o] τὸ δὲ] τὸν δὲ B. m. p. Trinc.
[p] ἐκπεσὼν] πεσὼν A. m. p.
[q] θήβαις] θήβας B. m. s. Damasc.
[r] ἢ τὶς] εἶναι Damasc.
[s] Σωκράτην] Σωκράτους Damasc.
[t] ἐπιλαμβανόμενος] ἐπιλαβόμενος Damasc.
[u] τεθαμμένοι] τεθεαμένοι Damasc.
[w] δὲ καὶ] καὶ om. A.
[x] ὅτι] f. ἔτι Wyttenbach.
[y] ἔφη] om. A. Trinc.
[z] διάφορον] διάφερον A.
[a] ἄγνοια] Malim πρόνοια. Gesner. Forte ἡ περὶ ταφὴν ἄνοια, ve-

νοια, φησὶν ὁ Βίων, πολλὰς τραγῳδίας ἐποίησεν. Ὥσπερ καὶ ὁ Πολυνείκης ἐντέλλεται·

θάψον δέ μ', ὦ τεκοῦσα, [b] καὶ σὺ, σύγγονε,
ἐν γῇ πατρῴᾳ, καὶ πόλιν θυμουμένην
παρηγορεῖτον, ὡς [c] τοσόνδε γοῦν τύχω
χθονὸς πατρῴας, κεἰ δόμους ἀπώλεσα.

[d] Εἰ δὲ μὴ τύχης χθονὸς πατρῴας, ἀλλ' ἐπὶ ξένης ταφήσῃ, τί ἔσται τὸ διάφορον; [e] ἦ ἐκ Θηβῶν μόνον εἰς ᾅδου ὁ Χάρων πορθμεύει;

καὶ γῆς [f] φίλης ὄχθοισι [g] κρυφθῆναι τάφῳ,

εἰ δὲ μὴ κρυφθείης, ἀλλὰ [h] ἄταφος, τί τὸ δυσχερές; ἢ τί διαφέρει, ὑπὸ πυρὸς κατακαυθῆναι, ἢ ὑπὸ κυνὸς καταβρω- 234
θῆναι, ἢ ἐπάνω τῆς γῆς ὄντα ὑπὸ κοράκων, ἢ κατορυχθέντα ὑπὸ σκωλήκων;

συνάρμοσον δέ μου βλέφαρα τῇ σῇ [i] χερὶ
μῆτερ.

Ἂν δὲ μὴ συναρμόσῃ σου, ἀλλὰ βλέπων καὶ [k] κεχηνὼς ἀποθάνῃς, τί ἔσται τὸ χαλεπόν; ἢ καὶ τῶν ἐν τῇ θαλάττῃ καὶ ἐν τοῖς πολέμοις ἀποθνησκόντων συναρμόζει τις; Ἀλλ' ἔμοιγε δοκεῖ ταῦτα παιδιά τις ἡμετέρα εἶναι. Καὶ ἡμεῖς μὲν καὶ ἰδεῖν καὶ ἅψασθαι ὀκνοῦμεν· [l] οἱ δὲ σκελετεύσαντες ἔνδον

sana sepulturæ sollicitudo. Valcken. ad Eurip. Ph. 1456. Vulgatum defendit Abreschius Auct. Dilucid. Thucyd. p. 388.

[b] σὺ σύγγονε] τὸ σύγγονον Damasc. Mox τῇ pro γῇ Trinc.

[c] τοσόνδε] τοσοῦδε A. B. m. s.

[d] εἰ δὲ usque ad πατρῴας om. Damasc. Mox f. τύχοις.

[e] εἰ] ἢ A. Damasc. Trinc. ἢ ἐ. θ. μόνον Gesn. marg. Recte ἦ Valckenærius, assumpto μόνον pro μέν.

[f] φίλης] φίλοις Damasc.

[g] κρυφθῶ καὶ] Sic Damasc. κρυφθ" καὶ A. κρυφθῆ καὶ Trinc. Citat Diogenes Laertius IV. 25. versum auctoris incerti, ἐν γῆς φίλοις μυχοῖσι κρυφθῆναι καλόν: ubi Casaubonus: "Videtur παρῳδηθὲν "ex isto Euripidis apud Stobæum, "ἐν γῆς φίλης ὄχθοισι κρυφθῶ καὶ "τάφῳ, ubi legendum fortasse "μυχοῖσι, hic vero φίλης, non φί- "λοις."

[h] ἄταφος] Forte μείνῃς subaudiendum, ni scripserit, εἰ δὲ, μὴ κρυφθεὶς, εἴης ἄταφος. Valckenær. l. c.

[i] χερὶ] χειρὶ Trinc.

[k] κεχηνὼς] κεχηνὸς Trinc.

[l] οἱ δὲ] εἰ δὲ Trinc.

ἔχουσιν ὡς καλόν τι, καὶ ἐνέχυρα τοὺς νεκροὺς λαμβάνουσιν. Οὕτως ἀντέστραπται [m] τῷ ἡμετέρῳ ὁ ἐκείνων [n] τύπος.

9 [a] Μουσωνίου ἐκ τοῦ Ὅτι οὐ κακὸν ἡ φυγή.

Φυγάδος δέ τινος ὀδυρομένου ὅτι φεύγει, οὕτω πως παρεμυθήσατο αὐτόν. Φυγὴν γάρ, ἔφη, πῶς ἄν τις μὴ ἀνόητος ὢν βαρύνοιτο; ἥτις ὕδατος μὲν καὶ γῆς καὶ ἀέρος, ἔτι δὲ ἡλίου, καὶ τῶν ἄλλων ἄστρων, οὐκ ἀπείργει ἡμᾶς οὐδαμῶς, ἀλλ' οὐδὲ ἀνθρώπων ὁμιλίας, [b] ἁπανταχοῦ γὰρ καὶ πάντῃ τούτων μετουσία ἐστίν. Εἰ δὲ μέρους [c] τινὸς τῆς γῆς ἀφαιρούμεθα, καί τινων ἀνθρώπων συνουσίας, τί τοῦτο δεινόν; οὐδὲ γὰρ οἴκοι ὄντες ἁπάσῃ τῇ γῇ ἐχρώμεθα, οὐδὲ ἀνθρώποις ἅπασι συνῆμεν· τοῖς μέντοι φίλοις καὶ νῦν συνείημεν ἄν, τοῖς γε ἀληθινοῖς, καὶ ὧν προσήκει ποιεῖσθαί τινα λόγον· οὐ γὰρ ἂν οὗτοι προδοῖεν ποτὲ ἡμᾶς, οὐδὲ ἐγκαταλίποιεν· εἰ δέ τινες πλαστοὶ καὶ οὐκ ἀληθινοὶ φίλοι εἰσί, τούτων ἀπηλλάχθαι κρεῖττον, ἢ συνεῖναι αὐτοῖς. Τί δ'; οὐχὶ κοινὴ πατρὶς [d] ἀνθρώπων ἁπάντων ὁ κόσμος ἐστίν, ὥσπερ ἠξίου Σωκράτης; ὥστε [e] οὐδὲ φεύγειν τῇ γε ἀληθείᾳ τὴν πατρίδα νομιστέον, ἂν ἀπέλθῃς ἐντεῦθεν, ἔνθα ἔφυς τε καὶ ἐτράφης, πόλεως δὲ μόνον ἐστερῆσθαί τινος, ἄλλως τε κἂν [f] ἄξιός τις εἶναι ἐπιεικής. Ὁ γὰρ τοιοῦτος χωρίον μὲν οὐδὲν οὔτε τιμᾷ, οὔτ' ἀτιμάζει, οὕτως ὡς εὐδαιμονίας αἴτιον· αὐτὸς δὲ ἐν αὐτῷ τίθεται τὸ πᾶν, καὶ νομίζει εἶναι πολίτης τῆς τοῦ Διὸς πόλεως, ἣ συνέστηκεν ἐξ ἀνθρώπων καὶ

[m] τῷ ἡμετέρῳ] τῶν ἡμετέρων Trinc.
[n] τύπος] Forte τρόπος. Gesner.

9.

[a] Sic A. Trinc.
[b] ἁπανταχῆ Trinc. Paullo supra ἡλίου καὶ τῶν ἄλλων ἄστρων locutio est Platonica Phædon. p. 109 C. et alibi.
[c] τῆς γῆς τινὸς] τινὸς τῆς γῆς A.
[d] ἀνθρώπων ἁπάντων] ἁπάντων ἀνθρώπων A. B. m. s.
[e] οὐ] οὐδὲ A. Gesn. marg. B. m. s. ὡς τοῦδε Damasc.
[f] ἄξιος] forte ἀξιοῖς. Gesnerus. Sic A. B. uterque ex emend. ἄξιον A. m. p. Mox τις om. A.

θεῶν. Σύμφωνα δὲ τούτοις λέγει καὶ Εὐριπίδης ἐν οἷς φησιν,

ἅπας μὲν ἀὴρ ἀετῷ περάσιμος·
ἅπασα δὲ χθὼν ἀνδρὶ γενναίῳ πατρίς.

Ὥσπερ οὖν εἴ τις ἐν [g] τῇ πατρίδι ὢν, καὶ ἑτέραν οἰκίαν οἰκῶν, οὐκ ἐν ᾗ ἐτέχθη, [h] δεινοπαθοίη διὰ τοῦτο, καὶ ὀδύροιτο, μάταιος ἂν εἴη καὶ καταγέλαστος· οὕτω καὶ ὅστις ἑτέραν πόλιν οἰκῶν, οὐκ ἐν ᾗ τυγχάνει γεγονὼς, συμφορὰν ἡγεῖται, ὁ τοιοῦτος εἰκότως ἂν ἄφρων [i] νομίζοιτο καὶ ἀνόητος. Καὶ 50
μὴν πρός [k] γε τὴν ἐπιμέλειαν τὴν ἑαυτῶν, καὶ πρὸς κτῆσιν ἀρετῆς, πῶς ἂν τὸ φεύγειν ἐνίσταιτο; ὁπότε γε μήτε μαθήσεως, μήτε ἀσκήσεως, καὶ ὧν χρὴ εἴργεταί τις διὰ τὴν φυγήν. Πῶς [l] μὲν οὐκ ἂν ἡ φυγὴ καὶ συνεργοίη πρὸς τὸ τοιοῦτον, παρέχουσά γε σχολὴν, καὶ ἐξουσίαν τοῦ μανθάνειν τε τὰ καλὰ, καὶ πράττειν μᾶλλον ἢ πρότερον, ἅτε μήθ᾽ ὑπὸ πατρίδος τῆς δοκούσης [m] περιελκομένοις εἰς ὑπη- 235
ρεσίας πολιτικὰς, μήτε ὑπὸ φίλων τῶν δοκούντων ἢ συγγενῶν ἐνοχλουμένοις, οἵ τινες ἐμποδίσαι δεινοὶ, καὶ ἀποσπάσαι τῆς ἐπὶ τὰ κρείττω ὁρμῆς; Ἤδη δέ τισι καὶ παντάπασι τὸ φεύγειν συνήνεγκεν, ὥσπερ Διογένει, ὃς ἐκ μὲν ἰδιώτου φιλόσοφος ἐγένετο φυγών· ἀντὶ δὲ τοῦ [n] καθῆσθαι εἰς Σινώπην διέτριψεν ἐν τῇ Ἑλλάδι, ἀσκήσει δὲ τῇ πρὸς ἀρετὴν τῶν φιλοσόφων διήνεγκεν. Ἄλλοις δέ γε κακῶς
[o] τὰ σώματα διακειμένοις ὑπὸ μαλακίας καὶ τρυφῆς 10
ἔρρωσεν ἡ φυγὴ, βιασθεῖσιν [p] ἀνδρικώτερον διαιτᾶσθαι· καὶ

[g] τῇ πατρίδι] τῇ om. Trinc.

[h] δεινοπαθοίη] δεινοπαθεῖ (οίη superscr.) A.

[i] νομίζοιτο] λογίζοιτο A. B. m. s.

[k] γε om. A.

[l] μὲν οὐκ] μὲν οὖν οὐκ A. B. uterque m. s.

[m] περιελκομένοις] περιελόμενος Damasc. et mox ἐνοχλούμενος Damasc.

[n] καθῆσθαι] καθῆσται Trinc.

[o] τὰ σώματα] τὸ σῶμα A.

[p] ἀνδρικώτερον] ἀνδρικωτέρους Damasc.

ἴσμεν τινὰς χρονίων νοσημάτων ἐν τῷ φεύγειν ἀπολυθέντας, ὥσπερ ἀμέλει Σπαρτιατικὸς οὗτος ὁ Λακεδαιμόνιος, ὃς ἀπὸ πολλοῦ ἔχων τὸ πλευρὸν κακῶς, κἀκ τούτου πολλάκις νοσῶν, διὰ τὴν [q] φυγὴν, ἐπειδὴ ἐπαύσατο τρυφῶν, ἐπαύσατο καὶ [r] νοσηλευόμενος. Ἄλλους δέ γε τῶν ἁβροδιαίτων ποδάγρας ἀπολυθῆναί φασι, πάνυ δὴ [s] κατατεινομένους πρότερον ὑπὸ τούτου τοῦ πάθους, [t] οὓς ἡ φυγὴ σκληρότερον διαιτᾶσθαι συνεθίσασα, κατ' αὐτὸ τοῦτο ὑγιεῖς γενέσθαι παρεσκεύασεν. Οὕτως ἄρα [u] πρὸς τὸ διακεῖσθαι κρεῖττον ἑαυτοὺς ἑαυτῶν καὶ σῶμα καὶ ψυχὴν συνεργεῖ μᾶλλον, ἢ ἀντιπράττει ἡ φυγή.

Ἀλλ' οὐδ' ἀπορεῖν τῶν ἀναγκαίων [w] πάντως ὑπάρχει τοῖς φεύγουσιν. Ὅσοι μὲν γὰρ ἀργοὶ καὶ ἀμήχανοι, καὶ οὐχ οἷοί τε ἀνδρίζεσθαι, οὗτοι μὲν κἂν τῇ πατρίδι ὄντες ἀποροῦσιν ὡς τὸ πολὺ καὶ ἀμηχανοῦσιν· οἱ δὲ γεννικοὶ, καὶ φιλόπονοι, καὶ συνετοὶ, κἂν ὅποι ποτε ἔλθωσιν, εὐποροῦσι καὶ διάγουσιν ἀνενδεῶς· καὶ γὰρ οὐδὲ δεόμεθα πολλῶν, ἂν μὴ [x] βουλώμεθα τρυφᾶν.

ἐπεὶ τί δεῖ βροτοῖσι, πλὴν δυοῖν [y] μόνον,
Δήμητρος ἀκτῆς, [z] πώματός θ' ὑδρηχόου,
ἅπερ πάρεστι, καὶ πέφυχ' ἡμᾶς τρέφειν;

[a] Ἐγὼ δὲ τούς γε λόγου ἀξίους ἄνδρας, οὐ τῶν ἀναγκαιο-

[q] φυγὴν] τρυφὴν A. B. Damasc.

[r] νοσηλευόμενος] νοσηλεύεσθαι Damasc.

[s] κατατεινομένους] γε καταπονουμένους Damasc.

[t] ὡς] οὓς Damasc. A. B. uterque ex em.

[u] τὸ διακ.] τῷ διακ. pr. πρὸς τὸ δ. ex em. A. et sic B. ex em.

[w] πάντων] πάντως A. Damasc.

[x] βουλόμεθα] βουλώμεθα A.

[y] μόνων] μόνον A.

[z] πώματος A. ex em. ὑδροχόου Tr.

[a] Ἐγὼ δὲ] Οἶδα δ' ἐγὼ A. B. uterque a m. sec. Λέγω pro ἐγὼ reponit Wyttenbachius Bibl. Crit. IX. p. 53. Mihi pronomen omnino necessarium videtur: sic paullo infra ἐγὼ δὲ φαίην. Objicit præterea Reisigius Conject. p. 240. "Sed pro λέγω Græcus homo dixisset φημί·" et inserendum commendat ἀξιῶ ante ἔξω. Gesnerus addit οἶδα post πολλάκις. Hoc vel simile quid certe excidit.

τάτων [b] μόνον πρὸς τὸν βίον ῥᾳδίως ἂν εὐπορεῖν ἔξω τῆς οἰκίας ὄντας, ἀλλὰ καὶ πολλὰ [c] περιποιήσασθαι χρήματα πολλάκις. Ὁ γοῦν Ὀδυσσεὺς, παντὸς φυγάδος ὡς ἄν τις εἴποι ἀθλιώτερον διακείμενος, καὶ [d] μόνος ὢν, καὶ γυμνὸς, καὶ ναυαγὸς, ὅμως ἀφικόμενος εἰς ἀνθρώπους ἀγνῶτας τοὺς Φαίακας ἐδυνήθη χρηματίσασθαι ἀφθόνως. Θεμιστοκλῆς δ' ἐπεὶ [e] ἔφευγεν οἴκοθεν, [f] οὐ παρὰ μὴ φίλους μόνον, ἀλλὰ καὶ παρὰ πολεμίους καὶ βαρβάρους ἐλθὼν τοὺς Πέρσας, τρεῖς ἔλαβε πόλεις δῶρον, Μυοῦντα, καὶ Μαγνησίαν, καὶ Λάμψακον, ὥστ' ἀπὸ τούτων βιοῦν. Δίων [g] δὲ ὁ Συρακούσιος, ἀφαιρεθεὶς ὑπὸ Διονυσίου τοῦ τυράννου τὴν οὐσίαν πᾶσαν, [h] ὅτ' ἐξέπιπτε τῆς πατρίδος, [i] οὕτως ἐν τῇ φυγῇ χρημάτων εὐπόρησεν, ὥστε καὶ ξενικὸν θρέψαι στράτευμα, μεθ' οὗ ἦλθεν ἐπὶ Σικελίαν, καὶ [k] ἠλευθέρωσεν αὐτὴν ἀπὸ τοῦ τυράννου. Τίς ἂν οὖν εὖ φρονῶν, [l] εἰς ταῦτ' ἀφορῶν, ἔτι τὴν φυγὴν ἀπορίας αἰτίαν εἶναι πᾶσι τοῖς φεύγουσιν ὑπολαμβάνοι; Ἀλλ' οὐδὲ κακοδοξεῖν πάντως ἀνάγκη τοὺς [m] φυγόντας διὰ τὴν φυγὴν, γνωρίμου [n] γε πᾶσιν ὄντος, ὅτι καὶ δίκαι πολλαὶ δικάζονται κακῶς, καὶ ἐκβάλλονται 23 πολλοὶ τῆς πατρίδος ἀδίκως, καὶ ὅτι ἤδη τινὲς ἄνδρες ἀγαθοὶ ὄντες ἐξηλάθησαν ὑπὸ τῶν πολιτῶν· ὥσπερ Ἀθήνηθεν μὲν Ἀριστείδης ὁ δίκαιος, ἐξ Ἐφέσου δὲ Ἑρμόδωρος, ἐφ' ᾧ καὶ Ἡράκλειτος ὅτι ἔφυγεν ἡβηδὸν ἐκέλευεν [o] Ἐφεσίους [p] ἀπάγξασθαι. Ἔνιοι δέ γε καὶ ἐνδοξότατοι φεύγοντες ἐγένοντο, καθάπερ Διογένης ὁ Σινωπεὺς, καὶ Κλέαρχος ὁ Λακεδαι-

[b] μόνον] μόνον ἦν A. m. p.
[c] περιποιήσασθαι] πεποιῆσθαι Damasc. περιποιήσεσθαι Trinc. B. m. s.
[d] μόνως] μόνος A. Trinc.
[e] ἔφευγεν] ἔφυγεν A. B. m. s.
[f] οὐ παρὰ μὴ] καὶ παρὰ Damasc.
[g] δὲ καὶ] καὶ om. A. Trinc.
[h] ὅτ'] ὡς Damasc.
[i] οὕτως] οὗτος A. m. p.
[k] ἠλευθέρωσεν] ἐλευθέρωσεν Trinc.
[l] εἰς ταῦτ' ἀφορῶν] om. Damasc. A. m. p. ubi manus altera inter lineas scripsit. ευ
[m] φυγόντας] φυγόντας A.
[n] τε] γε A.
[o] ἐφεσίοις] ἐφεσίους A. Damasc. Trinc.
[p] ἀπάγξασθαι] ἐπάγξασθαι A. α

μόνιος, ὁ μετὰ [q] Κύρου στρατεύσας ἐπ' Ἀρταξέρξην, καὶ ἄλλους ἂν τις ἔχοι βουλόμενος λέγειν πολλούς. Καίτοι πῶς ἂν εἴη τοῦτο κακοδοξίας αἴτιον, ἐν ᾧ τινες ἐνδοξότεροι γεγόνασιν, ἢ πρότερον [r] ἦσαν;

Νὴ Δί', ἀλλ' Εὐριπίδης φησὶν, ἐλευθερίας στέρεσθαι τοὺς φυγάδας, ἐπεὶ καὶ παρρησίας. [s] Πεποίηκε γὰρ τὴν μὲν Ἰοκάστην πυνθανομένην Πολυνείκους τοῦ [t] υἱέως, τίνα δυσχερῆ τῷ φεύγοντί ἐστιν· ὁ δ' ἀποκρίνεται ὅτι,

ἓν μὲν μέγιστον, οὐκ ἔχει παρρησίαν,

ἡ δ' αὖ πρὸς αὐτὸν,

δούλου τόδ' εἶπας, μὴ λέγειν ἅ τις φρονεῖ.

Ἐγὼ δὲ φαίην ἂν πρὸς τὸν Εὐριπίδην, ὅτι, ὦ Εὐριπίδη, τοῦτο μὲν ὀρθῶς ὑπολαμβάνεις, [u] ὡς δούλου ἐστὶν, ἃ φρονεῖ μὴ λέγειν, [w] ὅτ' ἂν γε δέῃ λέγειν· οὐ γὰρ ἀεὶ καὶ πανταχοῦ καὶ πρὸς ὀντινοῦν λεκτέον ἃ φρονοῦμεν. Ἐκεῖνο δὲ οὔ μοι δοκεῖς εὖ [x] εἰρηκέναι, τὸ μὴ μετεῖναι τοῖς φεύγουσι παρρησίας, εἴπερ παρρησία σοι δοκεῖ τὸ μὴ σιγᾶν ἃ φρονῶν [y] τυγχάνει τίς. Οὐ γὰρ οἱ φεύγοντες ὀκνοῦσι λέγειν ἃ φρονοῦσιν, ἀλλ' οἱ δεδιότες μὴ ἐκ τοῦ εἰπεῖν γένηται αὐτοῖς πόνος, ἢ θάνατος, ἢ ζημία, ἤ τι τοιοῦτον ἕτερον. Τοῦτο δὲ τὸ δέος, μὰ Δία, οὐχ ἡ φυγὴ ποιεῖ. Πολλοῖς γὰρ ὑπάρχει καὶ τῶν ἐν τῇ πατρίδι ὄντων, μᾶλλον δὲ τοῖς πλείστοις, τὰ δοκοῦντα δεινὰ δεδιέναι. Ὁ δὲ ἀνδρεῖος οὐδὲν ἧττον φυγὰς ὢν ἤπερ οἴκοι θαρρεῖ πρὸς ἅπαντα τὰ τοιαῦτα, διὸ καὶ λέγει ἃ φρονεῖ θαρρῶν οὐδὲν [z] μᾶλλον, [a] ὅτ' ἂν ῇ μὴ φυγὰς,

[q] Ξέρξου] Κύρου A. B. m. s. Damasc. Gesn. marg.

[r] ἦσαν; νὴ δί'] ἦσαν ἐν ἰδίᾳ Damasc.

[s] πεποίηκε] πεποιήκει A.

[t] υἱέως] υἱέος A. B. m. s. Damasc.

[u] ὡς] ὅτι A.

[w] ὅταν γε δέῃ λέγειν A. habet in marg.

[x] εἰρηκέναι] Addo εὖ vel ὀρθῶς. Al. legitur εὑρηκέναι. Gesner. εὕρηκεν A. m. p. εὖ εἰρηκέναι m. sec. et sic Damasc. B. item m. sec.

[y] τυγχάνει] τυγχάνοι A.

[z] μᾶλλον] Mal. ἧττον. Gesn.

[a] ῇ h. l. erasum, addit A. post φυγάς. Similiter B. m. s.

ἢ ὅτ' ἂν φεύγων τύχῃ. Ταῦτα μὲν πρὸς Εὐριπίδην εἴποι τις ἄν· σὺ δ' εἰπέ [b] μοι, ὦ ἑταῖρε, ὅτε Διογένης φεύγων ἦν Ἀθήνησιν, ἢ ὅτε πραθεὶς ὑπὸ τῶν λῃστῶν ἦλθεν εἰς Κόρινθον, ἆρα τότε πλείω παρρησίαν ἄλλος τις [c] ἐπεδείξατο Διογένους, ἢ Ἀθηναῖος ἢ Κορίνθιος; [d] τί δ' ἐλευθεριώτερος ἄλλος τις ἢ Διογένης τῶν τότε ἀνθρώπων ἦν; ὃς καὶ Ξενιάδου τοῦ πριαμένου αὐτὸν ὡς δεσπότης δούλου ἦρχε. Καὶ τί δεῖ τὰ [e] παλαιὰ λέγειν; ἀλλ' ἐγώ σοι οὐ δοκῶ εἶναι φυγάς; ἆρ' οὖν ἐστέρημαι παρρησίας; ἆρα ἀφῄρημαι τὴν ἐξουσίαν τοῦ ἃ φρονῶ λέγειν; ἤδη δέ με εἶδες ἢ σὺ ἢ ἕτερος [f] ὑποπτήσσοντά [g] τῳ ὅτι φεύγω; [h] ἢ χεῖρον ἔχειν τὰ πράγματα νομίζοντα νῦν, ἢ πρότερον; Ἀλλ' οὐδὲ μὰ Δία λυπούμενον ἢ ἀθυμοῦντα διὰ τὴν φυγὴν φαίης ἂν ἑωρακέναι με. Καὶ γὰρ εἰ τὴν πατρίδα τις ἡμᾶς ἀφῄρηται, τό γε δύνασθαι φέρειν φυγὴν οὐκ ἀφῄρηται.

Οἷς [i] δὲ λογισμοῖς χρῶμαι πρὸς ἐμαυτὸν, ὥστε μὴ 237
ἄχθεσθαι [k] τῇ φυγῇ, τούτους καὶ πρὸς σὲ [l] εἴποιμι ἄν. Δοκεῖ μοι ἡ φυγὴ στερίσκειν μὲν [m] ἀνθρώπους οὐ [n] πάντως, οὐδ' ὧν οἱ πολλοὶ νομίζουσιν ἀγαθῶν, καθάπερ ἄρτι [o] ἐδείκνυον. Εἰ δ' οὖν καὶ [p] στερίσκοι ἤ τινος, ἢ πάντων τούτων, τῶν γε ἀληθῶς ἀγαθῶν οὐ στερίσκει· οὔτε γὰρ [q] ἀνδρείαν, ἢ δικαιοσύνην ὁ φεύγων ἔχειν κωλύεται, διὸ φεύγει οὔτε σωφροσύνην, ἢ φρόνησιν, οὐδ' [r] ἀρετὴν ἄλλην ἡντι-

[b] με] μοι A. Trinc.
[c] ἐπεδείξατο] ἀπεδείξατο A.
[d] τι] τις A.
[e] πολλὰ] παλαιὰ A. B. m. s. Damasc. Gesn. marg.
[f] ὑποπτήσσοντα] ὑποπάσσοντα Damasc.
[g] τῷ] τὸ A.
[h] ἢ χεῖρον ἔχειν] ἢ χεῖρον ἔχ A. (ὅτι μοι … ει η above)
[i] δὲ] δὴ Trinc. B. m. p.
[k] τῇ φυγῇ om. Trinc. B. m. p.
[l] εἴποιμι] εἴποιμι ἂν Damasc. B. m. s. εἴποιμι. ὧν A. m. p. εἴποιμ' ἄν. Οὐ A. ex em.
[m] ἀνθρώπους] ἀνθρώπων Damasc. Trinc.
[n] πάντων] πάντως A. Damasc. Trinc.
[o] ἐδείκνυον] ἀπεδείκνυον Damasc.
[p] στερίσκοι] στερίσκει A.
[q] ἀνδρείαν] ἀνδρίαν A.
[r] ἀρετὴν] αὖ ἀρετὴν B. m. s.

νοῦν, αἳ παροῦσαί τε κοσμεῖν καὶ ὠφελεῖν πεφύκασι τὸν ἄνθρωπον, καὶ ἐπαινετὸν ἀποφαίνειν καὶ [s] εὐκλεῆ, ἀποῦσαί τε βλάπτειν καὶ καταισχύνειν, κακὸν ἀποφαίνουσαι καὶ ἀκλεῆ. Τούτων δὲ ταύτῃ ἐχόντων, εἰ μὲν ἀγαθὸς εἶ [t] οὗτος, καὶ τὰς ἀρετὰς ἔχεις, οὐκ ἄν σε βλάπτῃ ἡ φυγὴ, οὐδ' ἂν [u] ταπεινώῃ, [w] παρόντων γε τῶν ὠφελεῖν καὶ ἐπαίρειν μάλιστα [x] δυναμένων· εἰ δὲ τυγχάνεις κακὸς ὢν, ἡ κακία σε βλάπτει, καὶ οὐχ ἡ φυγή· καὶ τήν γε λύπην ἡ κακία σοι ἐπάγει, οὐχ ἡ φυγή· διὸ ταύτης ἀπολυθῆναι δεῖ σε σπεύδειν μᾶλλον, ἢ τῆς φυγῆς. Ταῦτα καὶ πρὸς ἐμαυτὸν ἔλεγον ἀεὶ, καὶ [y] νῦν πρὸς σὲ λέγω. Σὺ δ', ἂν σωφρονῇς, οὐ τὴν φυγὴν δεινὸν ἡγήσῃ εἶναι, ἥν γε φέρουσιν ἕτεροι εὐπετῶς· τὴν δὲ κακίαν, ἧς ἐνούσης, ἄθλιος πᾶς ὅστις ἂν [z] ἔχῃ αὐτήν. Καὶ [a] γὰρ δὴ δυοῖν ἀνάγκη τὸ ἕτερον, ἢ ἀδίκως, ἢ δικαίως σε φεύγειν· εἰ μὲν δὴ δικαίως, πῶς ποτε ὀρθὸν ἢ προσῆκον ἄχθεσθαι τοῖς δικαίοις; εἰ δ' ἀδίκως, τῶν [b] ἐξελασάντων τοῦτ' ἂν εἴη κακὸν, οὐχ ἡμέτερον· εἴπερ νὴ Δία τὸ μὲν ἀδικεῖν θεομισέστατόν ἐστιν, ὅπερ [c] ἐν ἐκείνοις συμβέβηκε· τὸ δ' ἀδικεῖσθαι, ὅπερ συμβέβηκεν ἡμῖν, καὶ παρὰ θεοῖς καὶ παρ' ἀνθρώποις τοῖς ἐπιεικέσιν [d] ἐπιμελείας, ἀλλ' οὐχὶ μίσους ἄξιον εἶναι ὑπείληπται.

[s] εὐκλεῆ] εὐκλεινῆ Trinc. B. m. s.
[t] αὐτὸς] οὗτος Damasc. Trinc. ὦ οὗτος A. N. B. m. s.
[u] ταπεινοίῃ] ταπεινώῃ B.
[w] παρόντος γε τοῦ] παρόντων γε τῶν A. Damasc.
[x] δυναμένου] δυναμένων A. Damasc.
[y] νῦν πρὸς σὲ λέγω] πρὸς σὲ λέγω νῦν A.
[z] ἔχοι] ἔχῃ A.
[a] γὰρ] γὰρ δὴ A. B. m. s.
[b] ἐλασάντων] ἐξελασάντων A. B. Damasc. Gesn. marg.
[c] ἐν om. B. m. s.
[d] ἐπιμελείας] ἐπικουρίας A. B. m. s. Damasc.

ΠΕΡΙ ΑΠΟΡΡΗΤΩΝ. ΜΑ.

1 [a] Εὐριπίδου Ἰνοῖ.

Ἴστω δὲ μηδεὶς ταῦθ' ἃ σιγᾶσθαι χρεών.
μικροῦ γὰρ ἐκ λαμπτῆρος Ἴδαιον λέπας
[b] πρήσειεν ἄν τις· κἂν [c] πρὸς ἕν' εἴποις ποτὲ,
[c] πύθοιντ' ἂν ἀστοὶ πάντες, ἃ κρύπτειν χρεών.

2 [a] Ἀναξανδρίδου.

[b] Ὅστις λόγους γὰρ παρακαταθήκην λαβὼν
ἐξεῖπεν, ἄδικός ἐστιν, ἢ ἀκρατὴς ἄγαν·
ὁ μὲν διὰ κέρδος, ἄδικος· ὁ δὲ τούτου δίχα,
ἀκρατής· [c] ἴσως δέ γ' εἰσὶν ἀμφότεροι κακοί.

3 [a] Σοφοκλέους.

Μή μοι κρυφαῖον [b] μηδὲν [c] ἐξείπῃς ἔπος,
κλεῖθρον γὰρ οὐδέν· ὡς δ' ἂν εὐπετὲς λάβοις,
γλώσσης κρυφαῖον οὐδὲν οὐ διέρχεται.

4 [a] Τοῦ αὐτοῦ Ἀλεάδαις.

Μὴ πάντ' ἐρεύνα, πολλὰ καὶ λαλεῖν [b] κακόν.

5 [a] Σωκράτους.

Σωκράτης ἔλεγεν, ὅτι ῥᾷον ἄν τις διάπυρον ἄνθρακα ἐπὶ τῆς γλώττης κατάσχοι, ἢ λόγον ἀπόρρητον.

1.

[a] Sic A. Scil. Fr. 6. Οἰνοῖ Voss Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] πρήσειεν] πλήσειεν (ρ) Voss.

[c] πρὸς ἕνα] Valckenærius Diatr. p. 174. ex Plutarcho II. 507 B. restituit, καὶ πρὸς ἄνδρ' εἰπὼν ἕνα.

[d] πύθοιντ'] πύθοιεν τ' Trinc.

2.

[a] Sic A. Trinc.

[b] Ὅστις λόγους γὰρ π. λ. Sic Trinc. Gesn. Grot. ὡς ante λαβὼν pessime infercit Brunckius Gnom. p. 184. Lege vocula γὰρ transposita ὅστις λόγους παρακαταθήκην γὰρ λαβών. Porson. *Tracts*, p. 249. Similiter Reisigius Conject. in Aristoph. p. 36. ἐξεῖπεν om. Trinc.

[c] ἴσως—κακοί] ἴσου—κακοῦ Tr. B. κακοῦ item A. ἴσον—κακόν Reisigius ubi supra.

3.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Fr. 18.

[b] μηδὲν] οὐδὲν A. B.

[c] ἐξείπῃς] ἐξείποις Voss.

4.

[a] Sic A. Scil. Aload. Fr. 6. Deest lemma Trinc.

[b] κακὸν] κακὰ B.

5.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

6 [a] Εὐριπίδου.

Εὐριπίδης, ὀνειδίζοντος αὐτῷ τινὸς ὅτι τὸ στόμα δυσῶδες ἦν, Πολλὰ γὰρ, εἶπεν αὐτῷ, ἀπόρρητα ἐγκατεσάπη.

7 [a] Περιάνδρου.

Λόγων ἀπορρήτων ἐκφορὰς μὴ ποιοῦ.

8 [a] Ἀριστοτέλους.

Ἀριστοτέλης [b] ἐρωτηθεὶς, τί δυσκολώτατόν ἐστιν ἐν τῷ βίῳ, 238
εἶπε· Τὸ σιωπᾶν ἃ μὴ δεῖ λαλεῖν.

9 [a] Πυθαγόρου.

Ἀείσω συνετοῖσι, θύρας δ' [b] ἐπίθεσθε βέβηλοι.

10 [a] Ἰσοκράτους ἐκ τοῦ Πρὸς Δημόνικον.

Μᾶλλον [b] τήρει τὰς τῶν λόγων, ἢ τὰς τῶν χρημάτων παρακαταθήκας· δεῖ γὰρ τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας τρόπον [c] ὅρκου πιστότερον φαίνεσθαι παρεχομένους.

ΠΕΡΙ ΔΙΑΒΟΛΗΣ. ΜΒ.

1 [a] Μενάνδρου Βοιωτίας.

Οὐ δεῖ διαβολῆς καταφρονεῖν, οὐδ' ἂν σφόδρ' ᾖ
ψευδής· ἐπίσταντ' αὐξάνειν αὐτήν τινες,
δι' οὓς φυλάττεσθαι τὰ τοιαῦτ' ὀρθῶς ἔχει.

6.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

7.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

8.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἐρωτηθεὶς] παρά τινος addunt A. B.

Ib. τῷ βίῳ] τῷ om. A.

9.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ἐπίθεσθε] ἐπιτίθεσθε A.

Ib. συνετοῖσι—βεβήλοις] Ita nos: vulgo συνετοῖς contra versum, et βέβηλοι contra sensum. Grotius. Recte συνετοῖσι, sed vulg. βέβηλοι moveri non debebat. Vide Ruhnkenium ad Timæum p. 60. βεβήλοις habet quidem Suidas v. βέβηλος etiam in edit. Mediol. sed βέβηλοι præbent duo MSS. Paris. et C. C. C.

10.

[a] Sic A. Simpl. Ἰσοκράτους Trinc.

[b] τήρει om. A.

[c] ὅρκου] ἔρκου Trinc.

1.

[a] Sic A. Cleric. p. 30. Simpl. Μενάνδρου Trinc. vs. ult. ἔχειν Tr.

2 [a] Κλεάνθους.

Κακουργότερον οὐδὲν διαβολῆς ἐστι πω.
λάθρα γὰρ ἀπατήσασα τὸν πεπεισμένον,
μῖσος ἀναπλάττει πρὸς τὸν οὐδὲν αἴτιον.

3 [a] Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου.

Ἄναξ, διαβολαὶ δεινὸν ἀνθρώποις κακόν.
[b] ἀγλωσσίᾳ δὲ πολλάκις ληφθεὶς ἀνὴρ
δίκαια λέξας, ἧσσον εὐγλώσσου φέρει.

4 [a] Μενάνδρου.

Οὐδὲν διαβολῆς ἐστιν ἐπιπονώτερον.
τὴν [b] ἐν ἑτέρῳ γὰρ κειμένην ἁμαρτίαν
[c] εἰς μέμψιν ἰδίαν αὐτὸν ἐπάναγκες λαβεῖν.

5 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Τὸ δοκεῖν διαβολὴν ἔσχε μείζω τοῦ ποιεῖν.

6 [a] Μενάνδρου.

Ὅστις δὲ διαβολαῖσι πείθεται ταχὺ,
ἤτοι πονηρὸς αὐτός ἐστι τοὺς τρόπους,
ἢ παντάπασι παιδαρίου γνώμην ἔχει.

7 [a] Ἰσοκράτους Πρὸς Δημόνικον.

Εὐλαβοῦ τὰς διαβολὰς, κἂν ψευδεῖς ὦσιν. Οἱ γὰρ

2.

[a] Sic A. Trinc.

3.

[a] Hoc lemma in suo codice invenisse videtur Gesnerus, cujus margo habet *Euripidis in Alexandra*. Deest enim hoc fragmentum A. B. Simpl. Εὐριπίδου. Trinc.

[b] εὐγλωσσίᾳ] ἀγλωσσίᾳ Th. Canteri V. L. II. 5. et Heathii correctionem adoptat Valckenærius Diatr. p. 147. Grotius dederat λειφθεὶς ex emend. Scaligeri, sed in mss. notat, "ληφθεὶς Clem. "Alex. Str. I. 212."

4.

[a] Sic Trinc. Frob. Cleric. p. 220. Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου A. Εὐριπίδ. Ἀλεξάνδ. ἢ Μενάνδρου B.

[b] ἐν ἑτέρῳ] Deest ἐν Trinc.

[c] ἀεὶ μέμψιν] forte ὡς Gesner. εἰς μέμψιν dedit Grotius ex emend. Scaligeri.

5.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Cleric. p. 220.

6.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Cleric. p. 220.

7.

[a] Sic A. Simpl. Ἰσοκράτους Trinc.

πολλοὶ τὴν μὲν ἀλήθειαν ἀγνοοῦσι, πρὸς [b] δὲ τὴν δόξαν ἀποβλέπουσι.

8 [a] Δημοσθένους.

Διαβολὴ καιρῷ μὲν ἰσχυρὰν [b] ἀπεργάζεται τοῖς ἀκούουσι τὴν ὑπόληψιν, χρόνῳ δὲ πάντων ἀσθενεστέρα γίνεται.

9 [a] Θουκυδίδου.

Διαβολὰς [b] οὐ σώφρον οὔτε λέγειν πρὸς ἀλλήλους, οὔτε ἀκούοντας ἀποδέχεσθαι.

10 [a] Πλουτάρχου ἐκ τοῦ διαβάλλειν.

Ἱππίας φησὶν, ὅτι δεινόν ἐστιν ἡ διαβολία, οὕτως ὀνομάζων, ὅτι οὐδὲ τιμωρία τις [b] κατ' αὐτῶν γέγραπται ἐν τοῖς νόμοις, ὥσπερ τῶν κλεπτῶν· καίτοι ἄριστον [c] ὂν κτῆμα τὴν φιλίαν κλέπτουσιν, ὥστε ἡ ὕβρις κακοῦργος οὖσα, δικαιοτέρα ἐστὶ τῆς διαβολῆς, διὰ τὸ [d] μὴ ἀφανὴς εἶναι.

11 [a] Ῥηγίνου ἐκ τοῦ Περὶ Φιλίας.

Πολλοὶ γοῦν ἤδη [b] μείζω κακὰ πεπόνθασιν ὑπὸ τῶν διαβολῶν, ἢ τῶν πολεμίων· καὶ πολλοὶ [c] ἤδη μείζω ἠδίκηνται ὑπὸ τῆς τῶν ὤτων ἀσθενείας, ἢ ὑπὸ τῆς τῶν ἐχθρῶν ἐπιβουλῆς.

12 [a] Δίωνος ἐκ τοῦ Οἰκουμενικοῦ.

[b] Ἀρξώμεθα δὲ ἀπὸ τοῦ μάλιστα ὠφελοῦντος οἰκίαν· εἴη

[b] δὲ om. A.

8.

[a] Sic A. Trinc.
[b] ἐργάζεται] ἀπεργάζεται A.

9.

[a] Sic A. Trinc. Scil. VI. 41.
[b] οὐ σώφρον'] ὁ σώφρων A. οὐ σώφρων Trinc. ἐς ἀλλήλους Arsen. Gesn. marg. διαβολὰς μὲν οὐ σώφρον' οὔτε λ. τίνας ἐς ἀλ. οὔτε τοὺς ἀ. ἀ.

10.

[a] Sic A. Simpl. Πλουτάρχου Trinc. v. T. V. p. 563=846.
[b] κατ' αὐτῶν γέγραπται] γέγραπται κατ' αὐτῶν A.
[c] ὂν κτῆμα] κτῆμα ὂν A.
[d] μὴ ἀφανὴς] μὴ deest Trinc.

11.

[a] Sic A. Simpl. Ῥηγίνου Trinc.
[b] μείζω] μείζονα A. B.
[c] ἤδη] ἤδει Trinc.

12.

[a] Sic A. B. Simpl. Δίωνος Trinc. *In Œconomico* Gesner.
[b] ἀρξόμεθα] ἀρξώμεθα A.

δ' ἂν τοῦτο ἐπιτίμησις διαβολῆς. Διαβολὴ γὰρ [c] κακὸν τὸ ὀξύτατον καὶ ἐπιβουλότατον.

13 [a] Πελοπίδου.

Πελοπίδας, ἀνδρείου στρατιώτου διαβληθέντος αὐτῷ, ὡς [b] βλασφημήσαντος αὐτὸν, Ἐγὼ τὰ μὲν ἔργα, ἔφη, αὐτοῦ βλέπω, τῶν δὲ λόγων οὐκ ἤκουσα.

14 [a] Φιλοκτήτου.

[b] Διαβολὰς, ἄνδρα τοιοῦτον εἰς προκλήσεις αἰσχράς. Τὸ 239
γὰρ ἔλεγξον καὶ τὸ, προσταχθεὶς, ταῦτα πάντα ἔρρωται μὲν, τὸ δ' ἀνδρὸς ἀρετῇ πρέπον οὐκ ἔχει.

15 Τὸ νικᾶν τὰ τοιαῦτα, φέρει τινὰ αἰσχύνην τοῖς διαβληθεῖσιν, ἃ μηδὲ δοκεῖν ἔδει.

16 [a] Ἡροδότου Ἱστορίας ζ.

Διαβολὴ [b] γάρ ἐστι [c] δεινότατον· ἐν τῇ δύο μέν εἰσιν οἱ ἀδικέοντες, εἷς δὲ [d] ὁ ἀδικεόμενος· ὁ μὲν γὰρ διαβάλλων ἀδικέει, οὐ [e] παρεόντος κατηγορέων· ὁ δὲ [f] ἀδικεῖ ἀναπειθόμενος πρὶν [g] ἢ ἀτρεκέως ἐκμάθῃ· [h] ὁ δὲ δὴ ἀπεὼν τοῦ λόγου, τάδε ἐν αὐτοῖς ἀδικέεται, διαβληθείς [i] τε ὑπὸ τοῦ ἑτέρου, καὶ [k] νομισθεὶς πρὸς τοῦ ἑτέρου κακὸς εἶναι.

17 [a] Ἰωσήπου ἐκ τῆς Ἁλώσεως.

Πᾶσαν εὔνοιαν καὶ φύσιν [b] κόπτει διαβολή.

[c] κακὸν] κακὸν τὸ ὀξύτατον A. B. Gesn. marg.

13.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] Βλασφημήσαντος] βλασφημοῦντος A. et mox αὐτῷ a p. m. pro αὐτόν.

14. 15.

[a] Sic Trinc. F. l. Ρούφου ἐκ τῶν Ἐπικτήτου.

[b] Græcum exemplar corruptum est: et in exemplaribus quibusdam prorsus non leguntur hæc. Gesner. Desunt A. B.

16.

[a] Sic A. Scil. VII. 10, 7. Simpl. Ἡροδότου Trinc.

[b] γὰρ om. A. B.

[c] δεινότατον] ἀδικώτατον A.

[d] ἀδικεόμενος] ὁ ἀδ. A. Trinc.

[e] παρέοντι] παρέοντος B. A. ex em.

[f] ἀδικεῖν] ἀδικεῖ A. B.

[g] ἢ om. A. B.

[h] ὁ δὲ] ὁ δὲ δὴ A. Trinc.

[i] γε] τε A. B.

[k] νομισθεὶς] νομισθείς τε B.

17.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

[b] καὶ φύσιν κόπτει] ἐκκόπτει A. ex em. καὶ κόπτει a p. m. ἐκκόπτει B. ubi totus locus scr. a m. sec.

ΠΕΡΙ ΠΟΛΙΤΕΙΑΣ. ΜΓ.

1 [a] Εὐριπίδου.

Εἰ γὰρ λαβὼν ἕκαστος ὅ τι δύναιτό τις
χρηστὸν διέλθοι τοῦτο, κεἰς κοινὸν φέροι
πατρίδι, [b] κακῶν ἂν αἱ πόλεις ἐλασσόνων
πειρώμεναι, τὸ λοιπὸν εὐτυχοῖεν ἄν.

2 [a] Εὐριπίδου Φαέθοντι.

Ἐν τοῖσι μωροῖς [b] τοῦτ' ἐγὼ κρίνω βροτῶν,
ὅστις [c] πατὴρ ὢν παισὶ μὴ φρονοῦσιν εὖ,
ἢ καὶ πολίταις παραδίδωσ' ἐξουσίαν.

3[a] [b] Ναῦν τοι μί' ἄγκυρ' οὐδαμῶς σώζειν φιλεῖ,
ὡς τρεῖς ἀφέντι, προστάτης θ' ἁπλοῦς πόλει
σφαλερὸς, ὑπὼν δὲ κἄλλος οὐ κακὸν πόλει.

4 [a] Εὐριπίδου Φρίξῳ.

Αἱ γὰρ πόλεις εἴσ' ἄνδρες, οὐκ ἐρημία.

5 [a] Σοφοκλέους Φαίδρα.

Οὐ γάρ ποτ' ἂν [b] γένοιτ' ἂν ἀσφαλὴς πόλις,
ἐν ᾗ τὰ μὲν δίκαια καὶ τὰ σώφρονα
λάγδην πατεῖται, κωτίλος δ' ἀνὴρ λαβὼν

1.

[a] Sic Trinc. Scil. Phœniss. 1022. Deest locus A.

[b] κακῶς αἱ] Lego κακῶς ἄν. GESNER. Voluit κακῶν; quod restituit Grotius. Supra φέρει Trinc. et mox λειπόν.

2.

[a] Sic A. Fragm. 3. Deest lemma Trinc.

[b] τοῦτον] τοῦτ' A. B. Trinc. Gesn. marg. τόνδ' Toup.

[c] πατὴρ ὢν] Ita reposui pro ὅστις τῶν πατέρων. GROTIUS.

3.

[a] Deest lemma A. Trinc. Euripid. Phaëth. Fr. 4.

[b] Locus incerti, quem ut Euripidis vulgavit Barnes. VALCKEN.

4.

[a] Sic A. Fr. 9. Deest locus Trinc.

[b] Vide Valckenær. Diatr. p. 216.

5.

[a] Sic A. Fr. 3. Simpl. Σοφοκλέους Trinc.

[b] γένοιτ' ἂν ἀσφαλὴς πόλις] γένοιντ' ἂν ἀσφαλεῖς πόλεις Voss. ἂν alterum om. A.

πανοῦργα χειροῖν κέντρα κηδεύει πόλιν.

6 [a] Σοφοκλέους Ἀλεάδαι.

Κοὐκ οἶδ' ὅ τι χρὴ πρὸς ταῦτα λέγειν,
ὅτ' ἂν οἵ τ' ἀγαθοὶ πρὸς τῶν [b] ἀγενῶν
κατανικῶνται,
ποία πόλις ἂν τάδ' ἐνέγκοι;

7 [a] Τοῦ αὐτοῦ Ἐριφύλη.

Ὅπου δὲ μὴ [b] τὰ ῥᾷστ' ἐλευθέρως λέγειν
ἔξεστι, νικᾷ δ' ἐν πόλει τὰ χείρονα,
[c] ἁμαρτίαι σφάλλουσι τὴν σωτηρίαν.

8 [a] Βίωνος Βουκολικά.

Μηδὲ λίπῃς μ' ἀγέραστον, ἐπὴν χὠ Φοῖβος ἀείδειν
μισθὸν [b] ἔδωκε· τιμὰ δὲ τὰ πράγματα κρέσσονα ποιεῖ.

9 [a] Εὐπόλιδος.

Καὶ μὴν ἐγὼ πολλῶν παρόντων οὐκ ἔχω τί λέξω,
οὕτω σφόδρ' ἀλγῶ τὴν πολιτείαν ὁρῶν παρ' ἡμῖν.
ἡμεῖς γὰρ οὐχ οὕτω τέως ᾠκοῦμεν, ὦ γέροντες,
ἀλλ' ἦσαν ἡμῖν τῇ πόλει πρῶτον μὲν οἱ στρατηγοὶ
ἐκ τῶν μεγίστων οἰκιῶν, πλούτῳ γένει τε πρῶτοι,
οἷς ὡσπερεὶ θεοῖσιν [b] ηὐχόμεσθα· καὶ γὰρ ἦσαν.
ὥστ' ἀσφαλῶς ἐπράττομεν· νυνὶ δ' [c] ὅποι τύχοιμεν,
[d] στρατευόμεσθ' αἱρούμενοι καθάρματα στρατηγούς.

6.

[a] Sic A. Aload. Fr. 4. Deest lemma Trinc.

[b] ἀγενῶν] Male vulgo ἀγεννῶν. Grotius. ὅταν οἵ γ' ἀγαθοὶ πρὸς ἀγεννήτων. Valcken. Diatr. p. 15. Grotianæ correctioni adstipulatur Jacobs. in Athen. p. 347.

7.

[a] Sic A. Fr. 3. Deest lemma Trinc.

[b] τὰ ῥᾷστ'] τὰ λῷστ' Mus. Crit. Cant. T. I. p. 144. τὰ χρήστ' Reisigius Conject. p. 129.

[c] ἁμαρτίαι] ἁμαρτίαις A.

8.

[a] Sic Trinc. Deest locus A.

[b] ἔδωκε] ἔδω edidit Grotius ob versum.

9.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ηὐχόμεσθα.] Ita edd. Gesneri sec. tert. Prius ηὐχόμεθα.

[c] ὅποι] ὅπη A. Voss.

[d] στρατευόμεσθ'] στρατευόμενοι Voss. στρατευοίμεσθ' A. B.

10 [a] Εὐριπίδου Ἱκετίδων.
Τρεῖς γὰρ [b] πολιτῶν μερίδες· οἱ μὲν ὄλβιοι, 240
ἀνωφελεῖς [c] τε, πλειόνων τ' ἐρῶσ' ἀεί.
οἱ δ' οὐκ ἔχοντες καὶ σπανίζοντες βίου,
δεινοὶ, νέμοντες τῷ φθόνῳ πλεῖον μέρος,
εἰς τοὺς ἔχοντας κέντρ' ἀφιᾶσιν κακὰ
γλώσσῃ πονηρῶν προστατῶν [d] φηλούμενοι.
τριῶν δὲ μοιρῶν ἡ μέση σώζει πόλιν,
κόσμον φυλάσσουσ' ὅντιν' ἂν δόξῃ πόλει.

11 [a] Σοφοκλέους.
Ὅπου γὰρ οἱ [b] φύσαντες ἡσσῶνται τέκνων,
οὐκ ἔστιν αὕτη σωφρόνων ἀνδρῶν πόλις.

12 [a] Εὐριπίδου.
Δεινὴ πόλις νοσοῦσ' ἀνευρίσκειν κακά.

13 [a] Οὐκ ἔστιν οὐδὲν τῶν ἐν ἀνθρώποις ἴσον.
χρὴ γὰρ τύχας μὲν τὰς μάτην πλανωμένας
μηδὲν δύνασθαι, τἀμφανῆ δ' ὑψήλ' ἄγειν.
ὅστις κατ' ἰσχὺν πρῶτος ὠνομάζετο,
ἢ τόξα πάλλων, ἢ μάχῃ δορὸς σθένων,
[b] τοῦτον τυραννεῖν τῶν κακιόνων ἐχρῆν.

14 [a] Σοφοκλέους Αἴαντι.
Καίτοι κακοῦ πρὸς ἀνδρὸς ἄνδρα δημότην

10.

[a] Sic A. Scil. v. 238. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] πολιτῶν] πολιτειῶν Voss.

[c] τε] δὲ A. B. et mox δ' pro τ'.

[d] φιλούμενοι] Ita edd. mss. Nihilominus minime dubitavi reponere φηλούμενοι.

11.

[a] Sic A. Trinc. Fr. inc. 19.

[b] φυλακτῆρες] Ita ob versum posui, cum exstaret φυλάσσοντες, quod illius vocis interpretamentum est. At Salmasius πλάσαντες malebat. Grotius. φύσαντες (e conjectura Piersoni Brunckio recepta) probavit Porsonus Adv. p. 215. ubi hoc fr. Scyriis adscribere videtur.

12.

[a] Sic Trinc. Fr. inc. 38. Deest locus A.

13.

[a] Deest lemma Trinc. locus A. Euripid. Fr. inc. 39.

[b] τούτων] τοῦτον Grotius.

14.

[a] Scil. v. 1071. Deest lemma

μηδὲν δικαιοῦν τῶν ἐφεστώτων κλύειν.
οὐ γάρ ποτ' οὔτ' ἂν ἐν πόλει νόμοι καλῶς
[b] φέροιντ' ἂν, ἔνθα μὴ παρεστήκει δέος·
οὔτ' ἂν στρατός τε σωφρόνως [c] ἄρχοιτ' ἔτι,
μηδὲν φόβου πρόβλημα, μηδ' αἰδοῦς ἔχων.

15 [a] Μενάνδρου Ἐμπιμπραμένῃ.

Τρία γάρ ἐστι, δέσποτα,
δι' ὧν ἅπαντα γίγνετ', ἢ κατὰ τοὺς νόμους,
ἢ ταῖς ἀνάγκαις, ἢ τὸ τρίτον [b] ἔθει τινί.

6 [a] Εὐριπίδου.

Ἀλλ' οὔποτ' αὐτὸς ἀμπλακὼν ἄλλον βροτὸν
παραινέσαιμ' ἂν παισὶ προσθεῖναι κράτη,
πρὶν ἂν κατ' ὅσσων τυγχάνῃ [b] μέλας σκότος,
εἰ χρὴ διελθεῖν πρὸς τέκνων νικώμενον.

7 [a] Σοφοκλῆς Αἴαντι.

[b] Ὅπου δ' ὑβρίζειν δρᾷν θ' ἃ βούλεται [c] παρῇ,
ταύτην νόμιζε τὴν πόλιν χρόνῳ ποτὲ
ἐξ [d] οὐρίας δραμοῦσαν εἰς βυθὸν πεσεῖν.
ἀλλ' ἑστάτω μοι καὶ δέος τι καίριον.

Trinc. τοῦ αὐτοῦ Αἴαντι A. ubi duo priores vss. desunt.

[b] φέροιντ'] φέρειν τ'. Trinc.

[c] ἔχοιτ'] ἄρχοιτ' A. Gesn. marg.

15.

[a] Sic A. Cleric. p. 63. Simpl. Μενάνδρου Trinc.

[b] γ' ἔθει] Addidi γ' illud. Respexisse autem videtur hanc Menandri sententiam Modestinus, cujus fragmentum exstat titulo de legibus. Grotius. Melius Bentleius κατὰ τοὺς νόμους ἢ τ. ἀ. ἢ τὸ τρίτον ἔ. τ. Vulgo desunt τοὺς et τό. Modestini verba sunt Digest. I. 3, 40. *Ergo omne jus aut consensus fecit, aut necessitas constituit, aut firmavit consuetudo.*

16.

[a] Sic Trinc. Fr. inc. 40. Deest locus A.

[b] μέλας σκότος] Meum est pro eo quod ante erat μὲ καὶ σκότος. Grotius. τινὰ pro με καὶ corrigit Gesnerus in margine, qui v. seq. ἢ malit pro εἰ. κιγκάνῃ pro τυγχάνῃ reponit Monkius ad Eurip. Hippol. 1442. τυγχάῃ Trinc.

17.

[a] Sic A. Scil. Ajac. 1081. Simpl. Σοφοκλέους Trinc.

[b] ὅπου δ'] ὅπου θ' A.

[c] παρῇ] πάρα B. Gesn. marg. παρῆν Trinc.

[d] οὐρίας] οὐρίων B.

καὶ μὴ δοκῶμεν δρῶντες [e]ἂν ἡδώμεθα,
[f]οὐκ ἀντιτίσειν [g]αὖθις ἂν λυπώμεθα·
[h]ἕρπει παραλλὰξ ταῦτα.

18 [a]Σοφοκλῆς Αἴαντι.

Πρὸς γὰρ τὸν ἔχονθ' ὁ φθόνος ἕρπει,
καίτοι σμικροὶ μεγάλων χωρὶς
σφαλερὸν πύργου ῥῦμα πέλονται.
μετὰ γὰρ μεγάλων βαιὸς [b]ἄριστ' ἂν,
καὶ μέγας ὀρθοῖθ' ὑπὸ σμικροτέρων.
ἀλλ' οὐ δυνατὸν τοὺς ἀνοήτους 50
τούτων γνώμας [c]προδιδάσκειν.

19 [a]Εὐριπίδου Ἑκάβῃ.

[b]Ἐν τῷδε γὰρ κάμνουσιν αἱ πολλαὶ πόλεις,
ὅτ' ἄν τις ἐσθλὸς καὶ πρόθυμος ὢν ἀνὴρ,
μηδὲν φέρηται τῶν κακιόνων πλέον.

20 [a]Εὐριπίδου Αἰόλῳ.

Δοκεῖτ' ἂν οἰκεῖν [b]γαῖαν, εἰ πένης ἅπας
λαὸς πολιτεύοιτο πλουσίων ἄτερ;
οὐκ ἂν γένοιτο χωρὶς ἐσθλὰ καὶ κακά·
ἀλλ' ἔστι τις σύγκρασις, ὥστ' ἔχειν καλῶς.
ἃ μὴ γάρ ἐστι τῷ πένηθ', ὁ πλούσιος 241
δίδωσ'· [c]ἃ δ' οἱ πλουτοῦντες οὐ κεκτήμεθα,

[e] ἂν] ἃ B.
[f] οὐκ] οὐδ' εἰκ' A.
[g] αὖθις] αὖτις A. Trinc. ἂν pro ἂν B.
[h] ἕρπει] ἕρπει γὰρ A. Trinc.

18.

[a] Sic A. Scil. v. 157. Deest lemma Trinc.
[b] ἄριστ' ἂν δράσοι] ἄριστα omisso δράσοι A. Voss. δράσοι item om. B.
[c] προδιδάσκειν] προσδιδάσκειν B.

19.

[a] Sic A. Scil. v. 306. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.
[b] Eustratius in præf. ad Ethic. Aristot. hoc loco utitur. Grotius not. mss. Sc. p. 1. b. ubi ἐν τούτῳ pro ἐν τῷδε.

20.

[a] Sic A. Fr. 6. Deest lemma Trinc.
[b] γαῖαν] γᾶν A. Trinc.
[c] ἃ δ' οἱ] ἃ δὲ Grotius.

τοῖσιν πένησι χρώμενοι [d] τιμώμεθα.

21 [a] Εὐριπίδου Ἀντιγόνη.

Οἰκεῖος ἀνθρώποισι γίγνεσθαι φιλεῖ
πόλεμος ἐν ἀστοῖς, ἢν διχοστατῇ πόλις.

22 [a] Εὐριπίδου Ἀλκμήνης.

Ἀτρέκεια δ' ἄριστον ἀνδρὸς ἐν πόλει [b] δικαίου πέλει.

23 [a] Μενάνδρου.

Κοινὸν ἀγαθόν [b] ἐστι τοῦτο χρηστὸς εὐτυχῶν.

24 [a] Μενάνδρου.

Τὸ καλῶς ἔχον που κρεῖττόν ἐστι καὶ νόμου.

25 [a] Σοφοκλέους.

Νόμοις ἕπεσθαι [b] τοῖς ἐγχωρίοις καλόν.

26 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀναρχίας δὲ μεῖζον οὐκ ἔστι κακόν.

27 [a] Ἡνιόχου.

[b] Ἐγὼ δ' ὄνομα τὸ μὲν καθ' ἑκάστην αὐτίκα
λέξω· συνάπασαι δ' εἰσὶ [c] παντοδαπαὶ πόλεις,
[d] αἳ νῦν ἀνοηταίνουσι πολὺν ἤδη χρόνον.

[d] τιμώμεθα] πειθώμεθα A. πειθόμεθα B.

21.

[a] Sic A. Fr. 4. Deest lemma Trinc.

22.

[a] Sic A. Fr. 3. Deest lemma Trinc.

[b] δικαίου πέλει] Hæc verba suprascripta sunt in A.

23.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 220.

[b] τοῦτ' ἐστι pro ἔστι τοῦτο metri gratia reponendum docuit Dobræus in Aristoph. Eccles. 70. p. (142). Verius forte δὲ pro ἐστι.

24.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Cleric. p. 96. Vide supra IX. 17.

25.

[a] Sic A. Fr. inc. 19. Deest lemma Trinc.

[b] τοῖσιν ἐγχώροις] Vulgo τοῖς ἐγχωρίοις. GROTIUS. τοῖσιν habet B. Nescio an scripserit Soph. ν. ἕπεσθε τ. ἐ. absque καλόν. Conf. H. Steph. Thesaur. L. G. IV. p. 666. G.

26.

[a] Sic A. Σοφοκλέ. Trinc. Scil. Antig. 672.

27.

[a] Sic Tr. Frob. Deest locus A.

[b] ἐγὼ δ' ὀνόματα μὲν] Ita malui, quam quod vulgo ὄνομα τὸ μὲν. GROTIUS. ὄνομα τὸ male mutat Grotius. VALCKEN.

[c] παντοδαπαὶ] παντοδαπὴν Trinc.

[d] ἀνοηταίνουσι] Ita legendum

τάχ' ἄν τις ὑποκρούσειεν ὅ τι ποτ' ἐνθάδε
νῦν εἰσι, κἂν ἔροιτο, παρ' ἐμοῦ πεύσεται·
τὸ χωρίον μὲν [e] γὰρ τόδ' ἐστὶ πᾶν κύκλῳ
'Ολυμπία, [f] τηνδὶ δὲ τὴν σκηνὴν ἐκεῖ,
σκηνὴν ὁρᾶν [g] θεωρικὴν [h] νομίζετε.
εἶεν· τί οὖν ἐνταῦθα δρῶσιν αἱ πόλεις;
[i] ἐλευθέρι' ἀφίκοντο θύσουσαί ποτε,
ὅτε τῶν φόρων ἐγένοντ' ἐλεύθεραι σχεδόν.
κἄπειτ' ἀπ' ἐκείνης τῆς θυσίας διέφθορεν
αὐτὰς ξενίζουσ' ἡμέραν ἐξ ἡμέρας
ἀβουλία κατέχουσα πολὺν ἤδη χρόνον.
γυναῖκε δ' [k] αὐτὴν δύ' ἐταράττετόν τινε
ἀεὶ συνοῦσαι, δημοκρατία θατέρᾳ
ὄνομ' ἐστὶ, τῇ δ' ἀριστοκρατία θατέρᾳ,
δι' ἃς πεπαρῳνήκασιν ἤδη πολλάκις.

28 [a] 'Αριστοφάνους.

Τῶν πολιτῶν θ' οὓς μὲν ἴσμεν εὐγενεῖς καὶ σώφρονας
ἄνδρας [b] ὄντας καὶ δικαίους καὶ καλούς τε κἀγαθοὺς,
καὶ τραφέντας ἐν παλαίστρᾳ, [c] καὶ χοροῖς, καὶ μουσικῇ,
[d] προυγελοῦμεν· τοῖς δὲ χαλκοῖς, καὶ ξένοις, καὶ πυρρίαις,

pro eo quod vulgo est ἀνοηταίνουσαι monebat Salmasius. Grotius.

[e] γὰρ τόδ' ἐστι πᾶν] πᾶν τόδ' ἐστιν Voss.

[f] τὴν δ' εἶδε] τηνδὶ δὲ Valcken. Diatr. p. 278.

[g] θεωρικὴν] Πυθικὴν Voss. Gesn. marg.

[h] νομίζετε] Ita Porsonus pro νομίζεται ad Aristoph. Eccles. 752. qui actum tamen egit. Ita enim Grotius, ut ex annotatione ejus patet.

[i] ἐλευθερίᾳ] ἐλευθέρια Gesn. marg.

[k] αὐτὰς] Ita nos pro αὐτὴν, nam de urbibus sermo. Grotius.

28.

[a] Sic Trinc. Scil. Ran. 739. Deest locus A.

[b] ὄντας deest Trinc.

[c] χοροῖς καὶ] Confer Plautum Bacchidibus Act. III. sc. 3. Grotius nott. mss.

[d] προυξελῶμεν] Ita nos cum et hic et in Aristophane vulgo esset προσελοῦμεν. In MS. A. προυγελοῦμεν. Atqui apud Æschylum quoque Prometheo reperiri προσελούμενον, et quidem contra naturam vocalis producta syllaba prima,

καὶ πονηροῖς, κἀκ πονηρῶν, εἰς ἅπαντα χρώμεθα
ὑστάτοις ἀφιγμένοισιν, οἷσιν ἡ πόλις πρὸ τοῦ
οὐδὲ φαρμακοῖσιν εἰκῆ ῥᾳδίως ἐχρήσατ᾽ ἄν.
ἀλλὰ καὶ νῦν, ὦ 'νόητοι, μεταβαλόντες τοὺς τρόπους
[e]χρῆσθε τοῖς χρηστοῖσιν αὖθις· καὶ κατορθώσασι γὰρ
εὔλογον, κἄν τι σφάλητ᾽, ἐξ ἀξίου [f]γὰρ τοῦ ξύλου,
ἤν τι καὶ πάσχητε, πάσχειν [g]τοῖς σοφοῖς δοκήσετε.

29 [a] Εὐριπίδου.

Παῦσαι· τὸ [b]μὲν γὰρ συνέχον ἀνθρώπων πόλεις
τοῦτ᾽ ἔσθ᾽, ὅτ᾽ ἄν τις τοὺς [c]νόμους σώζῃ καλῶς.

30 [a] Μενάνδρου.

Εἴπερ τὸν [b]ἀδικοῦντ᾽ ἀσμενῶς ἠμύνετο
ἕκαστος ἡμῶν, καὶ [c]συνηγωνίζετο,
ἴσως νομίζων ἴδιον εἶναι τὸ γεγονὸς
ἀδίκημα, καὶ συνέπραττον ἀλλήλοις [d]πικρῶς,
οὐκ ἂν ἐπιπλεῖον τὸ κακὸν ἡμῖν [e]ηὔξετο
τὸ τῶν πονηρῶν· ἀλλὰ παρατηρούμενοι, 242
καὶ τυγχάνοντες ἧς ἔδει τιμωρίας,
ἤτοι σπάνιοι [f]σφόδρ᾽ ἂν ἦσαν, ἢ πεπαυμένοι.

et exponi ὑβριζόμενον, monuit me Salmasius. Grotius. προυγελοῦμεν habet Trinc. In Grotii nota pro MS. A. lege MS. N.

[e] χρῆσθε] Ita recte apud Aristophanem. Nam in Stobæi codd. erat χρῆσθαι. Grotius. Recte χρῆσθε Gesn. ed. 2.

[f] γοῦν] Pro γοῦν male γὰρ est in Stobæi libris. Grotius.

[g] τοῖς σοφοῖς] τῶν σοφῶν Trinc.

29.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Suppl. 312.

[b] μὲν γὰρ] μὲν deest Trinc.

[c] αὐτοὺς] νόμους A. B. Gesn. marg. Mox σώζοι A.

30.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 2.

[b] ἀδικοῦντ᾽ ἀσμένως] Nostra est emendatio cum ante legeretur ἀδικοῦντα μὲν ὡς ἠμύνετο. Grotius.

[c] συνηγωνίσατο] συνηγωνίζετο A. B. quemadmodum divinavit Bentleius. συνήγαγεν Trinc.

[d] πικρῶς] πονηρῶς Voss.

[e] ἤρξατο] ηὔξαιτο B. et A. teste Grotio. Ego nihil enotatum reperio. ηὔξετο certissime correxit Bentleius.

[f] σφόδρ᾽ ἂν] σφόδρα μὲν Voss.

31 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ἔργον ἐστὶ [b] Πανία,
μακρὰν συνήθειαν βραχεῖ λῦσαι χρόνῳ.

32 [a] Αἰσχίνου ἐν τῷ κατὰ Τιμάρχου.

Τὸν γὰρ τὴν ἰδίαν οἰκίαν κακῶς οἰκήσαντα, καὶ τὰ κοινὰ [b] τῆς πόλεως παραπλησίως ἡγήσατο διαθήσειν.

33 [a] Δημοκρίτου.

Ὁ νόμος βούλεται μὲν εὐεργετεῖν βίον ἀνθρώπων· δύναται δὲ ὅτ' ἂν αὐτοὶ βούλωνται πάσχειν· τοῖσι γὰρ πειθομένοισι τὴν ἰδίην ἀρετὴν ἐνδείκνυται.

34 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Στάσις ἐμφύλιος ἐς ἑκάτερα κακόν· καὶ γὰρ νικέουσι καὶ ἡσσωμένοις [b] ὁμοίη φθορή.

35 [a] Αἰσχίνου.

Πονηρὰ φύσις μεγάλης ἐξουσίας λαβομένη, μεγάλας ἀπεργάζεται συμφοράς.

36 [a] Δημοσθένους ἐκ τοῦ κατ' Ἀνδροτίωνος.

Τὸν γὰρ ὑπὲρ τῆς πόλεως πράττοντά τι δεῖ τὸ τῆς πόλεως ἦθος μιμεῖσθαι, καὶ σώζειν ἡμῖν τοὺς τοιούτους, ὦ Ἀθηναῖοι, [b] προσήκει, καὶ μισεῖν τοὺς, [c] οἷός περ οὗτος. Ὡς (ἐκεῖνο εἰδόσι μὲν ἴσως, ὅμως δὲ ἐρῶ) ὁποίους τινὰς ἂν φαίνησθε ἀγαπῶντες καὶ σώζοντες, τούτοις ὅμοιοι [d] δόξετε εἶναι.

31.

[a] Sic A. Cleric. p. 270. ex Antonio. Deest locus Trinc. MS. Barocc. 143, fol. 138. Ἀμήχανον μακρὰν συνήθειαν ἐν βραχὺ λύσειν χρόνῳ. τὸ γὰρ συνηθὲς οὐδαμοῦ παροπτέον. v. infra XLIV. 5.

[b] Πανία] Φανία Porsonus in Advers. p. 291. qui in v. seq. βραχεῖ pro ἐν βραχεῖ, monens præpositionem habere item Melissam p. 484.

32.

[a] Sic A. Scil. p. 55. Simpl. Αἰσχίνου Trinc.

[b] τὰ τῆς] τὰ om. B.

33.

[a] Sic A. Trinc.

34.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ὁμοίη] ὡμοιώθη Gesn. marg.

35.

[a] Sic A. Trinc. v. c. Ctes. p. 537.

36.

[a] Sic A. Scil. p. 613. Simpl. Δημοσθένους Trinc.

[b] προσῆκε] προσήκειν A.

[c] οἷος] οἵους A. Mox ἂν om. Tr.

[d] δόξετε] δόξεται A.

37 [a] Ξενοφῶντος ἐν δ̄ Σωκρατικῶν Ἀπομνημονευμάτων.

[b] Βασιλείας δὲ καὶ τυραννίδας, ἀρχὰς μὲν ἀμφοτέρας ἡγεῖτο εἶναι· διαφέρειν δὲ ἀλλήλων ἐνόμιζε. Τὴν μὲν γὰρ ἑκόντων τε [c] τῶν ἀνθρώπων καὶ κατὰ τοὺς νόμους τῶν πόλεων [d] ἀρχὴν, βασιλείαν ἡγεῖτο· τὴν δὲ ἀκόντων τε καὶ μὴ κατὰ νόμους, ἀλλ' ὅπως ὁ ἄρχων βούλοιτο, τυραννίδα. Καὶ ὅπου μὲν ἐκ τῶν τὰ νόμιμα ἐπιτελούντων αἱ ἀρχαὶ καθίστανται, ταύτην μὲν τὴν πολιτείαν, ἀριστοκρατίαν ἐνόμιζεν εἶναι· ὅπου δὲ ἐκ τιμημάτων, [e] πλουτοκρατίαν· ὅπου δ' ἐκ πάντων, δημοκρατίαν.

38 [a] Ἡροδότου ἱστορίας ε̄.

Δηλοῖ δὲ οὐ καθ' ἓν μοῦνον, ἀλλὰ πανταχῆ, ἡ ἰσηγορίη, ὡς ἔστι χρῆμα σπουδαῖον.

39 [a] Τοῦ αὐτοῦ Ἱστορίας ϛ.

Φιλέει δέ κως προσημαίνειν, εὖτ' ἂν μέλλῃ μεγάλα κακὰ ἢ πόλει ἢ ἔθνει ἔσεσθαι.

40 [a] Δημοκρίτου.

Ἀπὸ ὁμονοίης τὰ μεγάλα ἔργα, [b] καὶ ταῖς πόλεσι τοὺς πολέμους δυνατὸν κατεργάζεσθαι, ἄλλως δ' οὔ.

41 [a] Πολυαίνου ἐν τῷ Ὑπὲρ τοῦ Συνεδρίου.

Οὐ γὰρ ἀγνοεῖς, ὡς ἐν τοῖς κοινοῖς, κἂν τοὐλάχιστόν τις [b] παρέληται, ἀφορμὴ τῆς τῶν πλειόνων ἀπωλείας γίνεται.

37.

[a] Sic fere A. ubi ᾱ pro δ̄. vide Memor. IV. 6, 12.

[b] βασιλείαν δὲ καὶ τυραννίδα ἀρχὰς μὲν] βασιλείας μὲν καὶ τυραννίδας ἀρχὰς A. B. βασιλείας δὲ καὶ τυραννίδας Trinc.

[c] τῶν] om. B.

[d] ἀρχὴν] ἄρχειν A. Trinc.

[e] πλουτουκράτειαν] πλουτοκρατίαν A. B.

38.

[a] Sic A. Scil. V. 78.

39.

[a] Sic A. Scil. VI. 27.

40.

[a] Sic A. Trinc.

[b] καὶ] κἂν B.

41.

[a] Sic A. Πολυδίν. nec amplius Trinc. vitiose, ut puto, pro Πολυαίν. Gesner. *Polydici, alias Polyæni.*

[b] ἀφέληται] παρέληται A. B.

42 [a] Δημοκρίτου.

[b]Ἡ ἐν δημοκρατίῃ πενίη τῆς παρὰ τοῖς [c]δυναστῇσι καλεομένης εὐδαιμονίης τοσοῦτόν ἐστιν αἱρετωτέρη, ὁκόσον ἐλευθερίη δουλείης.

43[a] Τὰ κατὰ τὴν πόλιν χρεὼν τῶν λοιπῶν μέγιστα ἡγεῖσθαι, ὅκως [b]ἄξεται εὖ, μήτε φιλονεικέοντα παρὰ τὸ ἐπιεικὲς, μήτε ἰσχὺν ἑαυτῷ περιτιθέμενον παρὰ τὸ χρηστὸν τὸ τοῦ [c]ξυνοῦ. Πόλις γὰρ εὖ ἀγομένη μεγίστη ὄρθωσίς ἐστι, καὶ ἐν τούτῳ πάντα ἔνι, καὶ τούτου σωζομένου πάντα σώζεται, καὶ τούτου [d]φθειρομένου τὰ πάντα διαφθείρεται.

44 Τοῖς [a]χρηστοῖσιν οὐ συμφέρον [b]ἀμελέοντας τῶν ἑωυτῶν,
ἄλλα πρήσσειν· τὰ γὰρ ἴδια [c]κακῶς ἔσχεν. Εἰ δὲ ἀμελέ- 243
οιτο τῶν [d]δημοσίων, κακῶς ἀκούειν γίγνεται, καὶ ἢν μη-
δὲν μήτε κλέπτῃ, μήτε ἀδικῇ· ἐπεὶ καὶ ἀμελέοντι ἢ ἀδικέ-
οντι κίνδυνος κακῶς ἀκούειν, [f]καὶ δὴ καὶ παθεῖν τι. Ἀνάγκη
δὲ ἁμαρτάνειν, συγγιγνώσκεσθαι δὲ τοὺς ἀνθρώπους οὐκ εὐ-
πετές.

45[a] Οἱ κακοὶ [b]ἰόντες ἐς τὰς τιμὰς, ὁκόσῳ ἂν μᾶλλον ἀνάξιοι ἐόντες ἴωσι, τοσούτῳ μᾶλλον ἂν [c]ἀκηδέες γίγνονται, καὶ ἀφροσύνης καὶ θράσεος πίμπλανται.

42.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] Ἡ] deest A.
[c] δυνατοῖσι] δυναστῇσι A. B.

43.

[a] Cum præcedente cohæret in A. Similiter 44.
[b] αὔξεται] Lege ἄξεται, nam in eodem fr. infr. est πόλις εὖ ἀγομένη. Koen. ad Greg. Dial. Dor. §. XLIV.
[c] ξένου] Mal. κοινοῦ. Gesner. Eodem sensu, una tantum litera mutata, reposui ξυνοῦ. Et sic Wakefieldus.
[d] φθειρομένου] διαφθειρομένου A. B.

44.

[a] χρηστοῖς] χρηστοῖσιν A.
[b] ἀμελέοντας] ἀμελαίνοντας A.
[c] κακῶς ἔσχεν] κακῶς ἂν ἔσχεν Jacobs. in Athen. p. 16. qui hoc fr. Eusebio tribuit.
[d] δημοσίων τι] τι deest A. Trinc. Scrib. f. supra ἀμελέοιτο τι, saltim τι cogitatione supplendum.
[e] καὶ δεῖ] καὶ δὴ A. B. ut Jacobsius emendandum vidit.

45.

[a] Deest lemma A. Trinc. et n. 46.
[b] ἰόντες] ὄντες A.
[c] ἀκηδέες] ἀκυδέες A. B. f. del. ἄν.

46 Ὅτ' ἂν οἱ δυνάμενοι τοῖς μὴ ἔχουσι καὶ προτελεῖν τολμέωσι καὶ ὑπουργεῖν καὶ χαρίζεσθαι, ἐν τούτῳ ἤδη καὶ τὸ οἰκτείρειν ἔνεστι, καὶ μὴ ἐρήμους εἶναι, καὶ τὸ [b]ἑταίρους γίγνεσθαι, καὶ τὸ ἀμύνειν ἀλλήλοισι, καὶ τοὺς πολιήτας ὁμονόους εἶναι, καὶ ἄλλα ἀγαθὰ, [c]ὅσσα οὐδεὶς ἂν δύναιτο καταλέξαι.

47 [a] Σωκράτους.

Τῆς εὐτυχίας, [b] ὥσπερ πολιτικῆς ὁμιλίας, κοινὴν εἶναι δεῖ τοῖς ἀξίοις τὴν ἀπόλαυσιν.

48 [a] Ὅρκος τῶν Ἀθήνησιν Ἐφήβων.

Οὐ καταισχυνῶ ὅπλα τὰ ἱερὰ, οὐδ' ἐγκαταλείψω τὸν παραστάτην, [b]ὅτῳ ἂν στοιχήσω, ἀμυνῶ δὲ καὶ ὑπὲρ ἱερῶν, καὶ ὑπὲρ ὁσίων, καὶ μόνος καὶ μετὰ πολλῶν· τὴν πατρίδα δὲ οὐκ ἐλάσσω παραδώσω, πλείω δὲ καὶ ἀρείω, ὅσην ἂν παραδέξωμαι· καὶ εὐηκοήσω τῶν ἀεὶ κρινόντων [c]ἐμφρόνως, καὶ τοῖς θεσμοῖς τοῖς ἱδρυμένοις πείσομαι, καὶ οὕς τινας ἂν ἄλλους τὸ πλῆθος ἱδρύσηται ὁμοφρόνως· καὶ ἄν τις ἀναιρῇ τοὺς θεσμοὺς, ἢ μὴ [d]πείθηται, οὐκ ἐπιτρέψω, ἀμυνῶ δὲ καὶ μόνος, καὶ μετὰ πάντων· καὶ ἱερὰ τὰ πάτρια τιμήσω. Ἵστορες θεοὶ τούτων.

49 [a] Ἐκ τῶν Ἀριστοξένου Πυθαγορικῶν ἀποφάσεων.

Καθόλου δὲ ᾤοντο δεῖν ὑπολαμβάνειν μηδὲν εἶναι μεῖζον κακὸν ἀναρχίας· οὐ γὰρ πεφυκέναι τὸν ἄνθρωπον διασώζεσθαι μηδενὸς ἐπιστατοῦντος. Περὶ δὲ ἀρχόντων καὶ ἀρχο-

46.

[a] ἑταίρους] ἑτέρους (αι above ε) A. ἑτέρους Trinc.

[b] ὅσσα] ἄσσ (ου above) A.

47.

[a] Sic A. Trinc.

[b] τῆς πολιτικῆς] ὥσπερ πολιτικῆς A. B.

48.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ὅτῳ] ᾧ B. et sic Pollux VIII. 105. quem vide.

[c] ἐμφρόνως] εὐφρόνως A. B.

[d] πείθηται] πίθηται B. μὴ deest Trinc.

49.

[a] Sic A. Ἀριστοτέλους Πυθαγορικῶν ἀποφθεγμάτων. Vide Mahnium de Aristoxeno §. 30.

μένων, οὕτως ἐφρόνουν· τοὺς μὲν γὰρ ἄρχοντας ἔφασκον οὐ μόνον ἐπιστήμονας, ἀλλὰ καὶ φιλανθρώπους δεῖν εἶναι· καὶ τοὺς ἀρχομένους, οὐ μόνον πειθηνίους, [b] ἀλλὰ καὶ φιλάρχοντας. Ἐπιμελητέον δὲ πάσης ἡλικίας ἡγοῦντο, καὶ τοὺς μὲν παῖδας ἐν γράμμασι καὶ τοῖς ἄλλοις μαθήμασιν ἀσκεῖσθαι· τοὺς δὲ νεανίσκους τοῖς τῆς πόλεως ἔθεσί τε καὶ νόμοις γυμνάζεσθαι· τοὺς δὲ ἄνδρας ταῖς πράξεσί τε καὶ δημοσίαις λειτουργίαις προσέχειν· τοὺς δὲ πρεσβύτας ἐνθυμήσεσι, καὶ κριτηρίοις, καὶ συμβουλίαις δεῖν [c] ἐναναστρέφεσθαι μετὰ πάσης ἐπιστήμης ὑπελάμβανον, ὅπως μήτε οἱ παῖδες νηπιάζοιεν, μήτε οἱ νεανίσκοι παιδαριεύοιντο, μήτε ἄνδρες νεανιεύοιντο, μήτε οἱ γέροντες παραφρονοῖεν. Δεῖν δὲ ἔφασκον εὐθὺς ἐκ παίδων καὶ τὴν τροφὴν τεταγμένως προσφέρεσθαι, [d] διδάσκουσαν ὡς ἡ μὲν τάξις καὶ συμμετρία [e] καλὴ καὶ σύμφορος, ἡ δ' ἀταξία καὶ ἀσυμμετρία αἰσχρά τε καὶ ἀσύμφορος.

50 [a] Ξενοφῶντος ἐκ τῆς Ἀθηναίων Πολιτείας.

Ὅτι μισεῖσθαι μὲν ἀνάγκη τὸν ἄρχοντα ὑπὸ τοῦ ἀρχομένου. Εἰ δὲ [b] ἰσχύσουσιν οἱ πλούσιοι καὶ [c] ἰσχυροὶ ἐν ταῖς πόλεσιν, ὀλίγιστον χρόνον ἡ ἀρχὴ ἔσται τοῦ δήμου. Διὰ ταῦτα τοὺς μὲν χρηστοὺς [d] ἀτιμῶσι, καὶ χρήματα ἀφαι- 244
ροῦνται, καὶ [e] ἐξελαύνουσι, καὶ [f] ἀποκτείνουσι, τοὺς δὲ πονηροὺς αὔξουσι.

[b] ἀλλὰ καὶ φιλανθ.—οὐ μόνον om. Trinc.

[c] ἀναστρέφεσθαι] ἐναστρέφεσθαι A. ἐναναστρέφεσθαι Trinc. ubi om. μετά.

[d] διδάσκουσαν] διδάσκουσα A. διδάσκοντες corrigit Gesnerus.

[e] καλὴ καὶ σύμφορος] καλὰ καὶ σύμφορα B. et in extr. ἀσύμφορα. καλὴ—ἀσυμμετρία om. Trinc. ubi in fine ἀσύμφορα.

50.

[a] Sic A. Scil. I. 14. Simpl. Ξενοφῶντος Trinc.

[b] ἰσχύσουσιν] ἰσχύουσιν B. δὲ om. Trinc.

[c] ἰσχυροὶ] οἱ ἰσχυροὶ A. B.

[d] ἀτιμοῦσι] ἀτιμῶσι B.

[e] ἐξελαύνουσι] ἐξελαύνονται A. B.

[f] ἀποκτείνουσι] ἀποκτένουσι A.

51 [a] Ἐν ταυτῷ.

Δημοκρατίαν δ' ἐγὼ αὐτῷ μὲν τῷ δήμῳ συγγινώσκω. Ἑαυτὸν μὲν γὰρ εὖ ποιεῖν [b] πάντη συγγνώμη ἐστίν· ὅστις δὲ, μὴ ὢν τοῦ δήμου, εἵλετο ἐν δημοκρατουμένῃ πόλει οἰκεῖν μᾶλλον [c] ἢ ὀλιγαρχουμένῃ, ἀδικεῖν παρεσκευάσατο, καὶ ἔγνω ὅτι μᾶλλον οἷόν τε διαλαθεῖν κακῷ ὄντι ἐν δημοκρατουμένῃ πόλει, ἢ ἐν ὀλιγαρχουμένῃ.

52 [a] Δημοσθένους Φιλιππικῶν.

Ἔστι τοίνυν νὴ Δί', ἔφην ἐγὼ, παντοδαπὰ εὑρημένα ταῖς πόλεσι πρὸς φυλακὴν καὶ σωτηρίαν, οἷον χαρακώματα, καὶ τείχη, καὶ τάφροι, καὶ τἄλλα ὅσα τοιαῦτα. [b] Καὶ ταῦτα μέν ἐστιν ἅπαντα χειροποίητα, καὶ δαπάνης πολλῆς προσδεῖται· ἓν δέ τι κοινὸν ἡ φύσις τῶν εὖ φρονούντων ἐν ἑαυτῇ κέκτηται φυλακτήριον, ὃ πᾶσι μέν ἐστιν ἀγαθὸν καὶ σωτήριον, μάλιστα δὲ τοῖς πλήθεσι πρὸς τοὺς τυράννους. Τί οὖν ἐστι τοῦτο; Ἀπιστία. Ταύτην φυλάττετε, ταύτης ἀντέχεσθε· ἂν ταύτην σώζητε, οὐδὲν μὴ δεινὸν πάθητε.

53 [a] Ἐκ τοῦ Πολυαίνου Ὑπὲρ τοῦ κοινοῦ τῶν Μακεδόνων.

Πρὸς μὲν δὴ τὸ μικρὸν τέλος, φήμ' ἔγωγε, ἀλλὰ τὸ ἔθος μέγα. Ἔστι δὲ ὁ λόγος, οὐ περὶ τῆς ποσότητος, ἀλλὰ περὶ τοῦ δικαίου· καὶ πρόδηλον ὡς αἰεὶ τὰ πονηρὰ τῶν ἐθῶν ἄρχεται μὲν ἀπὸ μικρῶν, [b] ἀμελούμενα δὲ ἰσχὺν μείζω λαμβάνει.

54 [a] Θουκυδίδου.

Νῦν δὲ, ὅπερ καὶ ἄρτι ἐδηλώσαμεν, ἀρχαιότροπα ὑμῶν τὰ

51.

[a] Sic A. Scil. II. 20. Deest lemma Trinc.

[b] πάντη] παντὶ B.

[c] ἢ ὀλιγαρχουμένῃ usque ad μᾶλλον om. A.

52.

[a] Sic A. Scil. II. p. 71, 18. Simpl. Δημοσθένους Trinc.

[b] καὶ τὰ] καὶ ταῦτα Trinc.

53.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἀμελούμενα] ἀμελουμένην Voss. mox τὴν ἰσχὺν A. B. Voss.

54.

[a] Sic Trinc. Scil. I. 71. Deest locus A.

ἐπιτηδεύματα πρὸς αὐτούς ἐστιν. Ἀνάγκη δὲ [b] ὥσπερ τέχνης ἀεὶ τὰ ἐπιγιγνόμενα κρατεῖν· καὶ ἡσυχαζούσῃ μὲν πόλει τὰ ἀκίνητα νόμιμα ἄριστα· πρὸς πολλὰ δὲ ἀναγκαζομένοις ἰέναι, πολλῆς καὶ τῆς ἐπιτεχνήσεως δεῖ.

55 [a] Πολυαίνου.

Οὐκ εἰδὼς ὅτι πᾶν τὸ νεωτεριζόμενον ἐν ταῖς πολιτείαις ἀρχὴ δυνάμεως μείζονος γίνεται· [b] ἄνδρας δὲ γεωργοὺς οὐκ ὀξεῖα τῶν κοινῶν ἀδικημάτων [c] ἡ αἴσθησις εἰσέρχεται.

56 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας ᾱ, δημηγορίας Ἀθηναίων.

Ὑπὸ γοῦν τοῦ [b] Μήδου δεινότερα τούτων πάσχοντες ἠνείχοντο· ἡ δὲ ἡμετέρα ἀρχὴ χαλεπὴ δοκεῖ εἶναι, εἰκότως· τὸ παρὸν γὰρ ἀεὶ βαρὺ τοῖς ὑπηκόοις.

57 [a] Αἰσχίνου ἐν τῷ κατὰ Τιμάρχου.

Αἱ γὰρ ἴδιαι ἔχθραι πολλὰ πάνυ τῶν κοινῶν ἐπανορθοῦσι.

58 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας τρίτης, δημηγορίας Κλέωνος.

Πάντων δὲ δεινότατον, εἰ βέβαιον ἡμῖν μηδὲν [b] καθίστησιν, ὧν ἂν δόξῃ πέρι· μηδὲ γνωσόμεθα, ὅτι χείροσι νόμοις ἀκινήτοις χρωμένη πόλις κρείσσων ἐστὶν, ἢ καλῶς ἔχουσιν ἀκύροις· ἀμαθία τε μετὰ σωφροσύνης ὠφελιμώτερον, ἢ δεξιότης μετὰ ἀκολασίας.

59 [a] Ἐν ταυτῷ.

Οἵτε [b] φαυλότεροι τῶν ἀνθρώπων, πρὸς τοὺς ξυνετωτέρους,

[b] ὥσπερ] Lego μετὰ vel διὰ. Gesner. Hoc quidem male, sed recte νόμιμα pro μόνιμα cum Thucydide. Mox ἀναγκαζομένους vulgo.

55.

[a] Sic dedi secutus Gesnerum, qui habet *Polyæni*: Ἐκ τοῦ Πολυδίκου Trinc. Πολυαίνου ἐν τῷ ὑπὲρ λαγόνων B. Ἐκ τοῦ Πολυαίνου ὑπὲρ λαγόνων A.

[b] ἄνδρας δὲ] δὲ om. A. B.

[c] ἡ αἴσθησις] ἡ om. A. B.

56.

[a] Sic A. Scil. c. 77. Deest lemma Trinc.

[b] μήδου] μίδου A. et Voss. ubi mox εἶναι δοκεῖ.

57.

[a] Sic A. Scil. init. p. 20. Simpl. Αἰχύνου Trinc.

58.

[a] Sic A. Sc. III. 37. Simpl. Θουκυδίδου Trinc.

[b] καθίστησιν] καθεστήκει B.

59.

[a] Sic A. ibid. Deest lemma Trinc.

[b] φαυλότεροι] φαυλότατοι Trinc.

ὡς ἐπιτοπλεῖστον ἄμεινον οἰκοῦσι τὰς πόλεις. Οἱ μὲν γὰρ τῶν τε νόμων σοφώτεροι βούλονται φαίνεσθαι, τῶν τε ἀεὶ λεγομένων ἐς τὸ κοινὸν περιγίγνεσθαι, ὡς ἐν [c]ἄλλοις μείζοσιν οὐκ ἂν δηλώσοντες τὴν γνώμην, καὶ ἐκ τοῦ τοιούτου τὰ πολλὰ σφάλλουσι τὰς πόλεις· οἱ δὲ ἀπιστοῦντες τῇ 245 ἑαυτῶν ξυνέσει, ἀμαθέστεροι μὲν τῶν νόμων ἀξιοῦσιν εἶναι, ἀδυνατώτεροι δὲ τὸν τοῦ καλῶς εἰπόντος μέμφεσθαι λόγον· κριταὶ δὲ ὄντες ἀπὸ τοῦ ἴσου μᾶλλον, ἢ ἀγωνισταὶ, διορθοῦνται τὰ πλείω.

60 [a] Δημοσθένους ἐκ τῶν Φιλιππικῶν.

Τοιγάρτοι διεστηκότων εἰς δύο ταῦτα τῶν ἐν ταῖς πόλεσι, τῶν μὲν εἰς τὸ μήτ' ἄρχειν βίᾳ βούλεσθαι μηδενὸς, μήτε [b]δουλεύειν ἄλλῳ, ἀλλ' ἐν [c]ἐλευθερίᾳ καὶ [d]νόμοις ἐξ ἴσου πολιτεύεσθαι, τῶν δ' εἰς τὸ ἄρχειν μὲν τῶν πολιτῶν ἐπιθυμεῖν, ἑτέρῳ δ' ὑπακούειν, δι' ὅτου ποτ' ἂν οἴωνται τοῦτο δυνήσεσθαι ποιῆσαι· [e]οἱ τῆς ἐκείνου προαιρέσεως, [f]οἱ τυραννίδων καὶ δυναστειῶν ἐπιθυμοῦντες, κεκρατήκασι πανταχοῦ.

61 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας ἐκ τῆς δημηγορίας Νικίου.

[b]Νομίζω ὁμοίως ἀγαθὸν πολίτην εἶναι, ὃς ἂν καὶ [c]τοῦ σώματός τι καὶ τῆς οὐσίας [d]πρόηται· μάλιστα γὰρ ἂν ὁ τοιοῦτος καὶ τὰ τῆς πόλεως δι' [e]αὐτὸν βούλοιτο ὀρθοῦσθαι.

62 [a] Αἰσχίνου ἐν τῷ κατὰ Τιμάρχου.

Ὁμολογοῦνται τρεῖς εἶναι πολιτεῖαι ἐν ἅπασιν ἀνθρώποις· τυραννὶς, καὶ ὀλιγαρχία, καὶ δημοκρατία. Διοικοῦνται

[c] ἄλλοις] πολλοῖς A. Trinc.

60.

[a] Sic A. Scil. IV. p. 132, 12. Simpl. Δημοσθένους Trinc.

[b] βουλεύειν] δουλεύειν A. B.

[c] ἐλευθερίᾳ] τῇ ἐλ. A. B.

[d] νόμοις] τοῖς νόμοις A. B.

[e] οἱ τῆς ἐκείνου προαιρέσεως om. B.

[f] οἱ τυραννίδων usque ad fin. A. habet in marg.

61.

[a] Sic A. Scil. VI. 9.

[b] νομίζω] νομίζων B.

[c] σώματός τε] τοῦ σώματός τι A. Trinc.

[d] πρόηται] προνοῆται B.

[e] αὐτὸν] ἑαυτὸν B.

62.

[a] Sic A. Scil. p. 29. Simpl. Αἰσχίνου Trinc.

δ' αἱ μὲν τυραννίδες καὶ ὀλιγαρχίαι τοῖς τρόποις τῶν ἐφεστηκότων· αἱ δὲ πόλεις αἱ δημοκρατούμεναι, τοῖς νόμοις τοῖς κειμένοις.

63 [a] Πλάτωνός ἐκ τοῦ Πολιτικοῦ.

Ἆρ' οὐ μοναρχία τῶν πολιτικῶν ἡμῖν ἀρχῶν ἐστι μία; Ναί. Καὶ [b] μετὰ μοναρχίαν [c] εἴποι τις ἄν, οἶμαι, τὴν ὑπὸ τῶν ὀλίγων δυναστείαν; Πῶς δ' οὔ; Τρίτον δὲ σχῆμα πολιτείας οὐχ ἡ τοῦ πλήθους ἀρχὴ, δημοκρατία τοὔνομα κληθεῖσα; Καὶ πάνυ γε. Τρεῖς δ' οὖσαι, μῶν οὐ πέντε τρόπον τινὰ [d] γίγνονται, δύ' ἐξ αὐτῶν ἄλλα πρὸς [e] ἑαυταῖς [f] ὀνόματα τίκτουσαι; Ποῖα δή; Πρὸς τὸ βίαιόν που καὶ ἑκούσιον ἀποσκοποῦντες νῦν, καὶ πενίαν, καὶ πλοῦτον, καὶ νόμον, καὶ ἀνομίαν ἐν αὐταῖς γιγνόμενα, διπλῆν ἑκατέραν τοῖν δυοῖν διαιροῦντες, μοναρχίαν μὲν προσαγορεύουσιν, ὡς δύο παρεχομένην εἴδη, δυοῖν ὀνόμασιν, τὸ μὲν τυραννίδι, τὸ δὲ βασιλικῇ; Τί μήν; Τὴν δὲ ὑπὸ ὀλίγων γε ἑκάστοτε κρατηθεῖσαν πόλιν, ἀριστοκρατία, καὶ ὀλιγαρχία; Καὶ πάνυ γε. Δημοκρατίας γε μὴν, ἐάν τ' οὖν βιαίως ἐάν τε ἑκουσίως τῶν τὰς οὐσίας ἐχόντων τὸ πλῆθος ἄρχῃ, καὶ ἐάν τε τοὺς νόμους ἀκριβῶς φυλάττον ἐάν [g] τε καὶ μὴ, πάντως τοὔνομα οὐδεὶς αὐτῆς εἴωθε [h] μεταλλάττειν; Ἀληθῆ.

64 [a] Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Κριτίου ἢ Ἀτλαντικοῦ.

Λέγω δὲ [b] ταῦτα τεκμαιρόμενος, ὅτι Κέκροπός τε καὶ Ἐρεχθέως καὶ Ἐριχθονίου καὶ [c] Ἐρυσίχθονος, τῶν τε ἄλλων τὰ πλεῖστα [d] ὅσαπερ καὶ Θησέως τῶν ἄνω περὶ τῶν

63.

[a] Sic A. Scil. p. 291. C. Simpl. Πλάτωνος Trinc.
[b] μετὰ om. Trinc.
[c] εἴποι] εἴπῃ A.
[d] γίγνονται] γίγνεται A. B.
[e] ἑαυταῖς] αὐταῖς A. Trinc.
[f] ὀνόματα] ὀνόματι A. B.
[g] τε μὴ] τε καὶ μὴ A. B.
[h] μεταλλάττειν] μεταλάσσειν A.

64.

[a] Sic fere A. ubi τῶν Κρ. Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Κριτίου Trinc. Scil. p. 110.
[b] ταῦτα] αὐτὰ Gesn. marg.
[c] ἐρισίχθονος] ἐρυσίχθονος A. B.
[d] ὅσαπερ] Deest περ Trinc. cum lacuna.

ὀνομάτων ἑκάστων ἀπομνημονεύεται, τούτων ἐκείνους τὰ πολλὰ [e] ἐπονομάζοντας τοὺς ἱερέας Σόλων ἔφη [f] τὸν τότε διηγεῖσθαι πόλεμον, [g] καὶ τὰ τῶν γυναικῶν κατὰ [h] ταῦτα, καὶ δὴ καὶ τὸ [i] τῆς θεοῦ σχῆμα καὶ ἄγαλμα, ὡς κοινὰ τότε ἦν ἐπιτηδεύματα [k] ταῖς τε γυναιξὶ καὶ τοῖς ἀνδράσι τὰ περὶ τὸν πόλεμον, οὕτω κατ' ἐκεῖνον τὸν [l] νόμον ὡπλισμένην τὴν θεὸν ἀνάθημα [m] θεῖναι τοῖς τότε, ἔνδειγμα ὅτι πάνθ' ὅσα [n] ξύννομα ζῶα θήλεα, καὶ ὅσα ἄρρενα, τὴν προσήκουσαν ἀρετὴν ἑκάστῳ γένει [o] πᾶν κοινῇ δυνατὸν ἐπιτηδεύειν πέφυκε.

65 [a] Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι.

Περὶ μὲν οὖν τῶν πολιτειῶν, ἐντεῦθεν γὰρ ὑποτιθέμενος ἠρ- 246
ξάμην, οἶμαι πᾶσι δεινότατον μὲν εἶναι, τὸ τῶν αὐτῶν ἀξιοῦσθαι τοὺς χρηστοὺς καὶ τοὺς πονηρούς· δικαιότατον δὲ τὸ διορθώσασθαι περὶ τούτων, καὶ μὴ τοὺς ἀνομοίους τῶν ὁμοίων τυγχάνειν, ἀλλὰ καὶ πράττειν καὶ τιμᾶσθαι κατὰ τὴν ἀξίαν.

66 [a] Θουκυδίδου δημηγορίας Ἀλκιβιάδου.

Ἐγὼ δέ φημι πρῶτα μὲν δῆμον [b] ξύμπαν ὠνομάσθαι, ὀλιγαρχίαν δὲ μέρος· ἔπειτα φύλακας μὲν ἀρίστους εἶναι χρημάτων τοὺς πλουσίους, βουλεῦσαι δ' ἂν βέλτιστα τοὺς ξυνετοὺς, κρῖναι δ' ἂν ἀκούσαντας ἄριστα τοὺς πολλούς. Καὶ ταῦτα ὁμοίως καὶ κατὰ μέρη καὶ ξύμπαντα ἐν δημοκρατίᾳ [c] ἰσομοιρεῖ· ὀλιγαρχία δὲ τῶν μὲν κινδύνων τοῖς

[e] ἐπονομάζοντας τοὺς ἱερέας σόλων] ἐπονομάζοντας ἔφης ὅλων τόν τε A. ἐπονομάζοντας ἔφης ὅλον τὸν τότε Tr.
[f] τὸν τότε] τόν τε B.
[g] καὶ τὰ] κτ (ἢ ἀ) A. κἆτα B.
[h] ταῦτα] τὰ αὐτὰ B.
[i] τοῦ θεοῦ] τῆς θ. A. B.
[k] ταῖς τε] τε om. A.
[l] νόμον] πόνον Gesn. marg.
[m] θεῖναι] εἶναι Gesn. marg. B. m. s.
[n] ξύνομα] ξύννομα A. Trinc. ubi mox ζώῳ.
[o] πᾶν κοινῇ] παγκοινῇ A.

65.

[a] Sic A. Scil. p. 29. C. Simpl. Ἰσοκράτους Tr.

66.

[a] Sic A. Scil. VI. 39. Simpl. Θουκυδίδου Trinc. Pro Ἀλκιβιάδου l. Ἀθηναγόρου.
[b] ξύμπαν] ξύμπαντα A.
[c] ἰσομόιρεῖν] ἰσόμοιρεῖ A. Trinc.

πολλοῖς μεταδίδωσι, τῶν δὲ ὠφελίμων οὐ [d] πλεονεκτεῖ μόνον, ἀλλὰ καὶ [e] σύμπαν ἀφελομένη ἔχει.

67 [a] Δημοσθένους Φιλιππικῶν.

Οὐδέ γε μοι δοκεῖ δικαίου τοῦτ' εἶναι πολίτου, τοιαῦτα πολιτεύμαθ' εὑρίσκειν, ἐξ ὧν ἐγὼ μὲν πρῶτος ὑμῶν ἔσομαι εὐθέως, ὑμεῖς δὲ τῶν ἄλλων ὕστατοι· ἀλλὰ συναυξάνεσθαι δεῖ τὴν πόλιν τοῖς τῶν ἀγαθῶν πολιτῶν πολιτεύμασι, καὶ τὸ βέλτιστον αἰεὶ, μὴ τὸ ῥᾷστον ἅπαντας λέγειν. Ἐπ' ἐκείνῳ μὲν γὰρ ἡ φύσις αὐτὴ βαδιεῖται· ἐπὶ τούτῳ δὲ τῷ λόγῳ δεῖ προσάγεσθαι διδάσκοντα τὸν ἀγαθὸν πολίτην, [b] ἵν' ὑμῶν ἕκαστος, ὦ Ἀθηναῖοι, τοῦτο γνῷ καὶ εἰδῇ, ὅτι ἡ καθ' ἡμέραν ῥᾳστώνη καὶ ῥᾳθυμία, ὥσπερ τοῖς ἰδίοις βίοις, οὕτω καὶ ταῖς πόλεσιν, οὐκ εὐθέως, ἀλλ' ἐπὶ τῷ κεφαλαίῳ τῶν πραγμάτων ἀπαντᾷ.

68 [a] Δημοσθένους Φιλιππικῶν.

Ὥσπερ τοίνυν ἑνὸς ἡμῶν ἑκάστου τις ἔστι γονεὺς, οὕτω [b] συμπάσης τῆς πόλεως κοινοὺς δεῖ [c] τοὺς γονέας τοὺς σύμπαντας ἡγεῖσθαι, καὶ προσήκειν τούτους, οὐχ ὅπως ὧν ἡ πόλις δίδωσιν ἀφελέσθαι τι· ἀλλ', εἰ καὶ μηδὲν ἦν τούτων, ἄλλοθεν σκοπεῖν, ὅπως μηδενὸς ὄντες ἐνδεεῖς περιοφθήσωνται.

69 [a] Δημοσθένους Φιλιππικῶν.

Δεῖ γὰρ, ὦ Ἀθηναῖοι, δικαίως ἀλλήλοις τῆς πολιτείας κοινωνεῖν· τοὺς μὲν εὐπόρους, εἰς μὲν τὸν βίον τὸν ἑαυτῶν ἀσφαλῶς ἔχειν νομίζοντας, καὶ ὑπὲρ [b] τούτου μὴ δεδοικότας· εἰς δὲ τοὺς κινδύνους, κοινὰ ὑπὲρ τῆς σωτηρίας τὰ ὄντα τῇ πατρίδι παρέχοντας· τοὺς δὲ λοιποὺς, τὰ μὲν κοινὰ, κοινὰ

[d] πλεονεκτεῖ] πλεονεκτεῖν A.
[e] σύμπαν] ξύμπαντα A. B. m. s.

67.

[a] Sic A. Scil. Cherson. p. 107, 24. Simpl. Δημοσθ. Trinc.
[b] ἵν' ὑμῶν κ. τ. λ. omittit A. h. l. sed addit infra post §. 71.

68.

[a] Sic A. Scil. IV. p. 142, 3.
[b] συμπάσης] καὶ σ. B.
[c] τοὺς γονέας] τοὺς om. B. m. s.

69.

[a] Sic A. Scil. ib. p. 142, pen.
[b] τούτου] τούτων A.

νομίζοντας καὶ μετέχοντας τὸ μέρος, τὰ δὲ ἑκάστου, ἴδια τοῦ κεκτημένου. Οὕτω καὶ ἡ μικρὰ πόλις μεγάλη γίγνεται, καὶ μεγάλη σώζεται.

70 [a] Θουκυδίδου δημηγορίας Εὐφήμου.

Ἀνδρὶ δὲ τυράννῳ ἢ πόλει ἀρχὴν ἐχούσῃ, οὐδὲν ἄλογον ὅ τι ξυμφέρον· οὐδ᾽ οἰκεῖον ὅ τι μὴ πιστόν· πρὸς ἕκαστα δὲ δεῖν ἐχθρὸν ἢ φίλον μετὰ καιροῦ γίγνεσθαι.

71 [a] Ἰαμβλίχου ἐκ τῶν Προτρεπτικῶν εἰς φιλοσοφίαν λόγων.

Ὁμοίως ἐπισφαλὲς μαινομένῳ δοῦναι μάχαιραν, καὶ μοχθηρῷ δύναμιν.

72 [a] Θεοφράστου.

Θεόφραστος [b] ἐρωτηθεὶς, τί συνέχει τὸν τῶν ἀνθρώπων βίον, ἔφη, Εὐεργεσία, καὶ τιμὴ, καὶ τιμωρία.

73 [a] Χαρίλλου.

Χάριλλος ὁ βασιλεὺς ἐρωτηθεὶς, διὰ τὶ [b] νόμους ὀλίγους ὁ 247 Λυκοῦργος ἔθηκεν, ἀπεκρίνατο, Τοὺς ὀλίγοις χρωμένους νόμοις [c] μὴ πολλῶν δεῖσθαι νόμων.

74 [a] Ἡροδότου.

Ἐσθίουσι δὲ ἔξω ἐν τῇσιν ὁδοῖσιν ἐπιλέγοντες, ὡς τὰ μὲν αἰσχρὰ ἀναγκαῖα δὲ ἐν ἀποκρύφῳ ἐστὶ ποιέειν χρεών· τὰ δὲ μὴ αἰσχρὰ, ἀναφανδόν.

75 [a] Ξενοφῶντος ἐν ᾱ Ἀπομνημονευμάτων.

Ἐγὼ δ᾽ οἶμαι τοὺς φρόνησιν ἀσκοῦντας, καὶ νομίζοντας ἱκανοὺς ἔσεσθαι τὰ συμφέροντα διδάσκειν τοὺς πολίτας,

70.
[a] Sic A. Scil. VI. 85. Simpl. Θουκυδίδου Trinc.

71.
[a] Sic A. Sc. c. 2. Simpl. Ἰαμβλίχου Trinc.

72.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] ἐρωτηθεὶς] ὑπό τινος addit A.

73.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Est e Plutarcho II. p. 189. F. Utrobique reponendum Χαριλάου.
[b] νόμους] νόμους ὀλίγους A. Trinc.
[c] μὴ δεῖσθαι] μὴ πολλῶν δεῖσθαι A. B. uterque m. sec.

74.
[a] Sic Trinc. Scil. II. 35. Deest locus A.

75.
[a] Sic A. Scil. I. 2, 10. Simpl. Ξενοφῶντος Trinc.

ἥκιστα γίγνεσθαι βιαίους, [b] εἰδότας ὅτι τῇ μὲν βίᾳ πρόσεστιν ἔχθρα καὶ κίνδυνος· διὰ δὲ τοῦ πείθειν ἀκινδύνως τε καὶ μετὰ φιλίας τὰ αὐτὰ γίγνεται. Οἱ μὲν γὰρ βιασθέντες, ὡς ἀφαιρεθέντες μισοῦσιν· οἱ δὲ πεισθέντες, ὡς κεχαρισμένοι φιλοῦσιν. Οὐκ οὖν οὐ τῶν φρόνησιν ἀσκούντων τὸ βιάζεσθαι, ἀλλὰ τῶν ἰσχὺν ἄνευ γνώμης ἐχόντων τὰ τοιαῦτα πράττειν ἐστίν. Ἀλλὰ μὴν καὶ συμμάχων ὁ μὲν βιάζεσθαι τολμῶν δέοιτ' ἂν οὐκ ὀλίγων· ὁ δὲ πείθειν δυνάμενος, οὐδενός· καὶ γὰρ μόνος ἡγοῖτ' ἂν δύνασθαι πείθειν. Καὶ φονεύειν δὲ τοῖς τοιούτοις ἥκιστα συμβαίνει· τίς γὰρ ἀποκτεῖναί τινα βούλοιτ' ἂν μᾶλλον, ἢ ζῶντι πειθομένῳ χρῆσθαι;

76 [a] Σόλωνος.

Σόλων ἐκείνην εἶπεν ἄριστα [b] τὴν πόλιν οἰκεῖσθαι, ἐν ᾗ τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας συμβαίνει τιμᾶσθαι· καὶ τὸ ἐναντίον, ἐν ᾗ τοὺς κακοὺς ἀμύνεσθαι.

77 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Σόλων ἐρωτηθεὶς, πῶς ἂν μὴ γίγνοιτο ἀδίκημα ἐν [b] τῇ πόλει, εἶπεν· Εἰ ὁμοίως ἀγανακτοῖεν οἱ μὴ ἀδικούμενοι τοῖς ἀδικουμένοις.

78 [a] Περιάνδρου.

[b] Περίανδρος ἐρωτηθεὶς, διὰ τὶ οὐκ ἀποτίθεται τὴν ἀρχὴν, εἶπεν· Ὅτι τῷ κατ' ἀνάγκην ἄρχοντι καὶ τὸ ἑκουσίως ἀποστῆναι κίνδυνον φέρει.

[b] εἰδότας] εἰδότες Trinc.

76.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] τὴν πόλιν κεῖσθαι] διοικεῖσθαι τὴν πόλιν Voss.

77.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Vid. Menag. ad Diogen. Laërt. I. 59. Wyttenbach. Plutarch. II. p. 154. D.

[b] τῇ πόλει] τῇ om. A. Trinc.

78.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] Vide Menagium ad Diogen. Laërt. I. 97.

79 [a] Πυθαγόρου.

Πυθαγόρας εἶπεν, εἰσιέναι εἰς τὰς πόλεις πρῶτον τρυφὴν, ἔπειτα κόρον, εἶτα ὕβριν, [b] μετὰ δὲ ταῦτα ὄλεθρον.

80 [a] Σωκράτους.

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς, ποία [b] ἰσχυροτάτη τῶν πόλεων, εἶπεν, [c] Ἡ ἄνδρας ἔχουσα ἀγαθούς.

81 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς, ποία [b] εὐνομεῖται πόλις, Ἐν ᾗ, ἔφη, οἱ ἄρχοντες μεθ' [c] ἑταιρείας καθίστανται.

82 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς, τίς ἀρίστη πόλις, Ἐν ᾗ, ἔφη, πλεῖστα ἀρετῆς ἆθλα.

83 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς, ποία πόλις ἄριστα οἰκεῖται, εἶπεν, Ἡ μετὰ νόμου ζῶσα, καὶ τοῖς ἀδικοῦσιν ἐπεξιοῦσα.

84 [a] [b] Πυθαγόρας τῶν πόλεων ἐκείνην εἶπεν ἀρίστην τὴν ἄνδρας ἀγαθοὺς ἔχουσαν.

85 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

[b] Ὁ αὐτὸς τούτους ἔφη καθιστάναι ἄρχοντας, οἵτινες ἐκ παίδων καλῶς ἤχθησαν, καὶ εἰς ἡλικίαν ἐλθόντες

79.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] μετὰ] παρὰ Voss.

80.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

[b] ἰσχυρωτάτη] ἰσχυροτάτη A.

[c] ἡ ἄνδρας ἔχουσα ἀγαθοὺς] οἱ ἄνδρας ἀγαθοὺς ἔχουσα A.

81.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

[b] εὐνομεῖται] ἀνομεῖται A.

[c] ἑταιρίας] ἑταιρείας A.

82.

[a] Sic A. Deest locus Trinc. Eandem sententiam Soloni mox tribuit A.

83.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

84.

[a] Deest locus A.

[b] Πυθαγόρας] ὁ αὐτὸς Trinc. ubi præcedit n. 79.

85.

[a] Sic A. i. e. Σωκράτους. Deest lemma Trinc.

[b] ὁ αὐτὸς τούτους ἔφη καθιστάναι ἄρχοντας, οἵ τινες] Σωκράτης ἐρωτηθεὶς εἰς τὰς ἀρχὰς ὁποίους δεῖ καθιστάναι, εἶπεν, οἵ τινες A.

μὴ γεγόνασι προδόται τῆς αὐτῶν [c] ἡλικίας [d] λήμματος χάριν.

86 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Μενεξένου ἢ Ἐπιταφίου.

Πολιτεία γὰρ [b] ἀνατροφὴ ἀνθρώπων ἐστὶ, καλὴ μὲν ἀγαθῶν· μὴ καλὴ δὲ, κακῶν.

87 [a] Αἰσχίνου.

Κἀκεῖνο ἐκλογίσασθε, ὅτι ἐὰν μὲν τὰς δωρεὰς ὀλίγοις καὶ 248 ἀξίοις ἢ κατὰ τοὺς νόμους δίδῶτε, πολλοὺς ἀγωνιστὰς ἕξετε τῆς ἀρετῆς· ἐὰν δὲ τῷ βουλομένῳ καὶ τοῖς [b] διαπραξαμένοις χαρίζησθε, καὶ τὰς ἐπιεικεῖς φύσεις διαφθερεῖτε.

88 [a] Ζήνωνος.

Ζήνων ἔφη δεῖν τὰς πόλεις κοσμεῖν οὐκ ἀναθήμασιν, ἀλλὰ ταῖς τῶν οἰκούντων ἀρεταῖς.

89 [a] Σόλωνος.

Σόλων, πῶς ἄριστα αἱ πόλεις οἰκοῖντο, ἐρωτηθεὶς, εἶπεν, [b] Ἐὰν οἱ μὲν πολῖται τοῖς ἄρχουσι πείθωνται, οἱ δὲ ἄρχοντες τοῖς νόμοις.

90 [a] Θουκυδίδου ἐκ τοῦ Ἐπιταφίου.

Ἆθλα γὰρ οἷς κεῖται ἀρετῆς μέγιστα, τοῖσδε καὶ ἄνδρες ἄριστοι πολιτεύουσιν.

91 [a] Ἀρκεσιλάου.

Ἀρκεσίλαος ἔλεγεν, ὥσπερ ὅπου φάρμακα πολλὰ καὶ

[c] ἡλικίας] ἡλικίαν A. Trinc.
[d] λήμματος] λημμάτων Gesn. marg. λημάτων Voss.

86.

[a] Sic A. Scil. p. 238. C. Simpl. Πλάτωνος Trinc.
[b] ἀναστροφὴ] ἀνατροφὴ A. Vide Schæferi Melet. p. 63. ἀναστροφὴν Trinc.

87.

[a] Sic A. Trinc. c. Ctesiph. p. 569.
[b] διαπραξαμένοις] Nimirum aliquid deest. Gesner. Nihil deest. Pro ἢ κατὰ lege καὶ κατὰ ex Æschinis libris.

88.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

89.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] ἐὰν μὲν οἱ] ἐὰν οἱ μὲν A.

90.

[a] Sic A. II. 46. Simpl. Θουκυδίδου Trinc.

91.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

ἰατροὶ πολλοὶ, ἐνταῦθα νόσοι πλεῖσται· [b] οὕτω δὴ καὶ ὅπου νόμοι πλεῖστοι, ἐκεῖ καὶ ἀδικίαν εἶναι μεγίστην.

92 [a] Ἱπποδάμου Πυθαγορείου ἐκ τοῦ Περὶ Πολιτείας.

Φαμὶ δ' ἐγὼ εἰς μοίρας τρεῖς [b] διεστᾶσθαι τὴν σύμπασαν πολιτείαν· καὶ μίαν μὲν εἶναι μοῖραν τῶν [c] ἀγαθῶν, κυβερνώντων τὰ κοινά· δευτέραν δὲ τῶν δυνάμει· τρίταν δὲ τῶν ἐκπλαρώσει καὶ χορηγίᾳ τῶν ἀναγκαίων. [d] Ὀνομαίνω δὲ τὸ μὲν πρῶτον πλᾶθος, βουλευτικόν· τὸ δὲ δεύτερον, ἐπίκουρον· τὸ δὲ τρίτον, βάναυσον. Καὶ τὰ μὲν [e] αὐτῶν ἐλευθέραν βιοτὰν ἐχόντων οἰκῆα φαμὶ εἶμεν· τὸ δὲ τρίτον, τῶν βιοπόνων. Καὶ τὸ μὲν βουλευτικὸν, ἄριστον εἶμεν· τὸ δὲ βάναυσον, χερήϊον· τὸ δ' ἐπίκουρον, μέσον. Καὶ τὸ μὲν βουλευτικὸν, [f] ἄρχεν δεῖ· τὸ δὲ βάναυσον, ἄρχεσθαι· τὸ δὲ ἐπίκουρον, καὶ ἄρχεν καὶ ἄρχεσθαι. Τὸ μὲν γὰρ καὶ [g] τί δεῖ πράττειν προβουλεύει· τὸ δ' ἐπίκουρον, τῷ μὲν προπολεμεῖν, ἄρχει τῷ βαναύσῳ παντός· τῷ δὲ προβουλεύεσθαι, ἄρχεται.

93 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

[b] Ταύταν δὲ τᾶν μοιρᾶν [c] ἑκάστα πάλιν εἰς τρία τέτακται. Τῶ τε γὰρ βουλευτικῶ [d] μέρεος τὸ μέν ἐστι πρόεδρον· τὸ δὲ, ἀρχοντικόν· τὸ δὲ, κοινοβουλευτικόν· πρόεδρον μὲν, τὸ προσυνεδρεῦον, καὶ τὸ προβουλευόμενον περὶ τῶν πραγμάτων, καὶ ὕστερον [e] ἐπαναφέρον ἐπὶ τὰν βουλάν· [f] ἀρχοντικὸν δὲ, τὸ ἤτοι ἄρχον, ἢ γεγεναμένον ἀρχοντικόν· κοινο-

[b] οὕτω δὲ] οὕτω δὴ A.

92.

[a] Sic A. Ἱπποδάμου Πυθαγόρου Trinc.

[b] διεστᾶσθαι] διέστασθαι A.

[c] ἀγαθῶν] h. v. suprasc. in A. B. βουλῇ ἢ ἀγαθῷ.

[d] ὀνομάνω] ὀνομανῶ B. m. s.

[e] αὐτῶν suprasc. A.

[f] ἄρχεν] ἄρχειν B.

[g] τί δεῖ] τινα δεῖ A.

93.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ταύταν] τούτων B. Trinc. τούταν A.

[c] ἕκαστα] ἑκάστα A.

[d] μέρος] μέρεος A. B.

[e] ἐπαναφέρον] ἐπ' ἀμφοτέρου altera lectione suprascripta A.

[f] ἀρχοντικὸν] Videtur locus corrupt. Gesner.

βουλευτικὸν δὲ, τὸ ἄλλο πλᾶθος τὸ [g] παραδεχόμενον τὰ [h] προσυνεδρευμένα, καὶ ἐπιψαφιζόμενον καὶ ἐπικυροῦν τὰ ἐπὶ κρίσει. Ὡς δ' ἁπλῶς εἰπεῖν, δεῖ τοὺς μὲν προέδρους, ἐπὶ τὸ κοινοβουλευτικὸν ἀναφέρεν· τὸ δὲ κοινοβουλευτικὸν, διὰ τῶν στρατηγῶν ἐπὶ τὰν ἐκκλησίαν. Ὡσαύτως δὲ καὶ τῷ ἐπικούρῳ [i] καὶ τῷ δυναμικῷ μέρεος, τὸ μὲν τί ἐστιν ἀρχοντικὸν, τὸ δὲ προμαχατικὸν, τὸ δὲ λοιπὸν καὶ πλεῖον μέρος ἀγελαῖον καὶ στρατιωτικόν· ἀρχοντικὸν μὲν ὦν ἐστιν, ἐξ ὧν στρατοπεδάρχαι καὶ ταξιάρχαι καὶ λοχαγοὶ καὶ πρόμαχοι καθίστανται, καὶ καθόλου πάντες οἱ ἁγεμονίαν ἔχοντες· προμαχατικὸν δὲ, τὸ τῶν ἀνδρικωτάτων καὶ [k] θυμικωτάτων καὶ τολματικωτάτων πᾶν γένος· ἀγελαῖον δὲ καὶ στρατιωτικὸν, τὸ λοιπὸν πλᾶθος. [l] Τῷ δὲ βαναύσῳ 249
καὶ βιοπονατικῷ, τὸ μέν ἐστι γεωπόνον καὶ περὶ τὰν κατεργασίαν τᾶς χώρας κατασχολούμενον· τὸ δὲ [m] τεχνατικὸν, ὄργανα καὶ ἐπιμαχανήματα τοῖς τῷ βίῳ πράγμασιν ἐκποριζόμενον· τὸ δὲ μεταβατικὸν καὶ ἐμπορικὸν, ὃ τὰ μὲν ἐν τᾷ πόλει περιουσιάζοντα ἐπὶ τὰν ξέναν διάγεται, τὰ δὲ ἀπὸ τᾶς ξένας ἐς τὰν πόλιν. Τὰ μὲν ὦν συστάματα τᾶς πολιτικᾶς κοινωνίας διὰ τοσούτων καὶ τοιῶνδε μερέων συντέτακται· ἔπειτα [n] δὲ καὶ περὶ ἁρμογᾶς καὶ [o] ἑνώσιος αὐτῶν ῥητέον.

Ἐπεὶ δὲ πᾶσα πολιτικὰ κοινωνία [p] λύρᾳ παντελῆ ποτέοικε, τῷ ἐξαρτύσιός τε δέεσθαι καὶ συναρμογᾶς καὶ

[g] περιδεχόμενον] παραδεχόμενον A. B. m. s. Gesn. marg.

[h] προσυνεδρευμένα] προσυνιδρευμένα Trinc.

[i] καὶ τῷ δυναμικῷ μέρος] δυναμικῷ μέρεος A. B. m. s. Desunt B. m. p. Mox μέντοι B. m. s.

[k] θυμικωτάτων] θερμικωτάτων A. p. m.

[l] τῷ δὲ βαναύσῳ] τῶν δὲ βαναύσῳ Trinc.

[m] τεχναστικὸν] τεχνατικὸν A. Gesn. marg.

[n] δὲ περὶ] δὲ καὶ περὶ A.

[o] ἑνώσιος] συνέσεως Trinc. B. m. p. ἑνώσεως B. m. s.

[p] λύρας παντελῆ ἀποτέοικε] Lego λύρᾳ παντελῶς ποτέοικε. Gesner. παντελεία ποτέοικε A. B. uterque ex em.

τὸ τελευταῖον ἐπαφᾶς τινος καὶ προσχράσιος μωσικᾶς· περὶ μὲν [q] ὧν ἐξαρτύσιος πολιτείας ἐκ τίνων καὶ πόσων συνέστηκεν, εἴρηταί μοι καὶ ἐν τοῖς ἔμπροσθεν· περὶ δὲ συναρμογᾶς καὶ ἑνώσιος αὐτῶν πειρασεῦμαι νῦν λέγειν. Φαμὶ δὲ ἔγωγε τρισὶ τούτοις συναρμόζεσθαι τὰν πολιτικὰν κοινωνίαν· λόγοις, ἐπιτηδεύμασιν ἐθῶν, νόμοις· καὶ διὰ τριῶν τούτων παιδεύεσθαι τὸν ἄνθρωπον καὶ σπουδαιότερον γίγνεσθαι. [r] Τοὶ μὲν γὰρ λόγοι διδάσκοντι, καὶ ἐπιθυμίας ἐμποιεῦντι, προτρεπόμενοι πρὸς ἀρετάν· [s] τοὶ δὲ νόμοι τὰ μὲν φόβοις κατέχοντες, ἀπερύκοντι, τὰ δὲ τιμαῖς τε καὶ δωρεαῖς δελεάζοντες, ἐκκαλέονται· τὰ δὲ ἔθη καὶ ἐπιτηδεύματα πλάσσει καὶ κηροχυτεῖ τὰν ψυχὰν, φυσίωσιν ἐμποιεῦντα διὰ τῆς συνεχέος [t] ἐνεργείας. Δεῖ δὲ τὰ τρία [v] ταῦτα συντετάχθαι ποτί τε τὸ καλὸν καὶ τὸ συμφέρον καὶ τὸ δίκαιον, καὶ ἐν ἑκάστῳ αὐτῶν, εἰ μὲν δυνατὸν, στοχάζεσθαι πάντων· εἰ δὲ μή γε, [w] δυοῖν ἢ ἑνός· ὥστ' εἶναι καὶ τὸν λόγον καλὸν καὶ δίκαιον καὶ συμφέροντα, καὶ τὸ ἔθος, καὶ τὸν νόμον· προτιμῆσθαι δὲ πρᾶτον τὸ καλόν· δεύτερον δὲ, τὸ δίκαιον· τρίτον δὲ, τὸ συμφέρον. Τὸ καθόλου [x] δὲ πειρᾶσθαι διὰ τούτων, ὡς ὅτι μάλιστα ποιεῖν τὰν πόλιν, ὅπως ὁμολογήσῃ καὶ σύμφωνος τοῖς αὐτᾶς μέρεσιν, ἀλλὰ μὴ στασιάζουσα καὶ διαμαχομένα. Ἐσεῖται δὲ τοῦτο, αἴκα τὰ πάθεα τᾶς ψυχᾶς παιδεύηται τῶν νέων, καὶ ἐς τὸ μέτριον [y] ἀγινῆται, τοῖς ἀδέσι τε καὶ [z] λυπαροῖς· καὶ αἴκα περὶ τὰς οὐσίας μέτρια, καὶ ἀπὸ γεωπονίας [a] ἔχοντα τὰν πρόσοδον· καὶ αἴκα τὰς ἀρχὰς [b] ἄρχωντι,

[q] οὖν] ὧν B. τῶν Trinc.
[r] τοὶ μὲν] οἱ μὲν Trinc.
[s] τοὶ δὲ] τοὶ μὲν B. m. p. Trinc.
[t] ἐνεργίης] ἐνεργείας A.
[v] ταῦτα] ταύτη (sic) Trinc.
[w] δυοῖν ἢ ἑνός] δυοίων ἑνὸς A. p. m. In marg. δυοῖν ἑνός. δυοιώμενος B. m. p. δυοῖν ἑνὸς m. s. δυοιώμενος Trinc.
[x] δὲ] τε A. Trinc. Mox excidisse videtur ᾖ post σύμφωνος, nisi malis ὁμολόγος ᾖ.
[y] ἀγινῆται] ἀγενεῖτε A. textu.
[z] λυπαροῖς] λιπαροῖς A.
[a] ἔχοντα] ἔχοντι A. m. sec. in marg.
[b] ἄρχοντι] ἄρχωνται A.

τὰς μὲν ἀρετὰς δεομένας τοὶ ἀγαθοί· τὰς δ' ἐμπειρίας τινός, [c] τοὶ ἔμπειροι· τὰς δὲ παροχὰς τινὸς καὶ δαπάνας, τοὶ εὔποροι· καὶ τούτοις πᾶσι κατὰ τρόπον ἄρξασι τὰς κατ' ἀξίας [d] ἀρχὰς διανέμωντι τὰς τιμάς. Ἐπεὶ δὲ τὰς ἀρετὰς αἰτίαι τυγχάνοντι τρεῖς, φόβος, ἐπιθυμία, αἰδώς· [e] δυνασεῖται δὲ τὸν μὲν φόβον ὁ νόμος ἐμπαρασκευάζειν, τὰν δὲ αἰδῶ, τὰ [f] ἔθεα· τοὶ γὰρ ἐθισθέντες καλῶς αἰδέονται τὰ αἰσχρὰ πράσσειν· ὁ δὲ λόγος τὰν ἐπιθυμίαν· [g] ἀγωγὸν γάρ, τᾶς αἰτίας ἀπόδοσις ἅμα, καὶ ἐφελκυστικὸν τᾶς ψυχᾶς, ἄλλως τε δὴ καὶ γιγνόμενον μετὰ προτροπᾶς· [h] διὸ καὶ φρατρίας καὶ συσσίτια καὶ συσκανίας καὶ συναγελισμούς, τὰ μὲν στρατιωτικούς, τὰ δὲ καὶ πολιτικούς, ἐγκατασκευάζειν [i] δεῖ ταῖς τῶν νέων ψυχαῖς, συναρμόζειν δὲ καὶ τὸ τῶν πρεσβυτέρων γένος [k] αὐτοῖς, ἐπειδήπερ τοὶ μὲν νέοι δέονται [l] σωφρονισμῶ καὶ καταρτύσιος, τοὶ δὲ πρεσβύτεροι, [m] φιλοφροσύνας καὶ διαγωγᾶς ἀλύπω.

94 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ἐπεὶ οὖν διὰ τριῶν ἐλέγομεν [b] ἀποτελεῖσθαι τὸν ἄνθρωπον σπουδαῖον, διά τε τῶν ἐθέων, καὶ [c] τῶν νόμων, καὶ τοῦ λόγου, σκοπιάζεσθαι δεῖ, πῶς τε διαφθείρεσθαι πέφυκε τὰ [d] ἔθεα, καὶ πῶς διαμένειν. Εὑρήσομες δὴ τὰ ἔθεα φθειρόμενα κατὰ δύο τρόπους· ἢ γὰρ δι' αὐτῶς, ἢ [e] διὰ τῶς ἐκτός.

οι οἱ
[c] τοὶ ἔμπειροι] τοῦ ἐμπείρου A. Mox ἔμποροι Trinc. pro εὔποροι.

[d] ἀρχᾶς] ἀρχὰς B. et mox τὰς ἀρετὰς pro τᾶς ἀρετᾶς. Infra dedi διανέμωντι pro διανέμοντι, et ἐπεὶ pro ἐπὶ.

[e] δυνασσεῖται] δυνήσεται A. δυνασεῖται γὰρ B. m. p. δὲ om. Trinc.

[f] ἔθεα] ἤθεα B. m. sec.

ἀγωγὸν
[g] ἀγωγὸν] ἀγαγὼν A.

[h] διὸ] διὸ καὶ A.

[i] δεῖ] δεῖται A.

[k] αὐτοῖς] αὐταῖς Trinc.

[l] σωφρονισμῷ] σωφρονισμοῦ A.

[m] φιλοφροσύνας] φιλοσοφροσύνας Trinc.

94.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἀποτελεῖσθαι τὸν ἄνθρωπον σπουδαῖον] σπουδαῖον ἀ. τ. ἀ. A. τὴν ἄνθρωπον Trinc.

[c] τῶν νόμων] τοῦ νόμου A. habet suprasc. pro v. l. et sic Trinc.

[d] ἔθεα] ἤθεα B. m. s. et sic paullo infra.

ἢ διὰ τὼς
[e] ἔκτος] ἐκτὸς A. διὰ τὼς Trinc.

Καὶ διὰ μὲν αὑτὼς, ἤτοι διὰ τὸ φεύγειν τὰς λύπας, ἢ διὰ τὸ αἱρέεσθαι τὰς ἡδονάς·—διὰ μὲν γὰρ τὸ φεύγεν τὰς λύπας τὼς πόνως οὐχ ὑπομένοντι, διὰ δὲ τὸ διώκειν τὰς ἡδονὰς τὰ ἀγαθὰ [f] τοὶ ἀποβάλλοντι· ἐργατεύοντι δὲ τοὶ μὲν πόνοι τὰ ἀγαθὰ τοῖς ἀνθρώποις· ταὶ δὲ ἁδοναὶ, τὰ κακά· ἀκρατέες ὦν καὶ μαλακοὶ γιγνόμενοι, θηλύτεροι γίγνονται ταῖς ψυχαῖς, καὶ ποτὶ τὰς ἀναλώσιας πολυδαπανώτεροι·—διὰ δὲ τὼς ἐκτὸς, αἴκα ξενικὸς ἐπίδαμος [g] ὄχλος γένηται εὐαμερίαις ἐμπορικαῖς χαίρων, ἢ καὶ τοὶ ἀστυγείτονες φιλάδονοι καὶ τρύφακες ἐόντες, μεταδιδῶντι τοῖς πλασιάζουσι τῶν παρ' αὐτοῖς [h] ἐθέων. Διὸ δεῖ τὼς νομοθέτας καὶ τὼς ἀγελάρχας ἐπιμελῶς παρατηρεῖν, εἰ ἐπιμελῶς [i] συνασκεῖται τὰ ἔθεα, καὶ ὁμαλῶς πορεύεται διὰ πάντων· ἔτι δ' εἰ τὸ γνάσιον καὶ τὸ αὐθιγενὲς πλᾶθος τᾶς πολιτείας διαμένει ἀκέραιον καὶ ἀπαράμικτον ὑπάρχον ἀπὸ [k] τῶ ἄλλω γένευς· καὶ εἰ τὰ μεγέθεα τῶν βίων ἐν τοῖς αὐτοῖς διαμένει, καὶ οὐ [l] παραπόλλυται· ἅμα γὰρ τῷ τὰ περισσὰ κτᾶσθαι, καὶ τὰ περισσὰ [m] μαστεύοντι.

Καὶ τὰ μὲν ἔθεα οὕτως ἀσφαλίζεσθαι χρή· τὼς δὲ λόγως, τὸ τῶν σοφιστῶν γένος ἐπικρίνοντας καὶ δοκιμάζοντας, εἰ ποτὶ τὼς νόμως καὶ τὰ πολιτικὰ δόγματα καὶ τὰς ἰδίας οἰκονομίας τῶν βίων ὠφέλιμα λέγοντι· οὐ γὰρ τὰν τυχοῦσαν, ἀλλὰ τὰν μεγίσταν κακοδαιμοσύναν ἐντίκτοντι [o] τοι τῶν σοφιστῶν λόγοι ταῖς τῶν ἀνθρώπων ψυχαῖς, αἳ [p] κατατολμῶντι

[f] τοὶ] τως (supra τοι) A.
[g] ὄχλος A. inter lineas.
[h] ἐθέων] ἠθέων B. et mox ἤθεα et infra. Dedi supra μεταδιδῶντι pro μεταδίδοντι.
[i] παρασκεῖται] συνασκεῖται A. B. Gesn. marg. εἰ ἀσκεῖται τὰ ἔθεα, omissis vocibus ἐπιμελῶς παρὰ, quæ librarii oscitantia repetivit, scribendum censet Jacobs. in Athenæum p. 283.
[k] τῷ ἄλλῳ γένευς] τοῦ ἄλλου γένεος A.
[l] καὶ οὐ παρὰ πολὺ] οὐ παραπολυται (supra καὶ, λ) A. Mox κτᾶσθαι κ. τ. π. ibid. in marg.
[m] μασσεύοντι] μαστεύοντι A. Trinc.
[o] τῶν] τοι τῶν A. B. m. sec.
[p] κατατολμῶσι] κατατολμῶντι A. An l. αἴκα τολμῶντι?

κινῆν παρὰ τὰς κοινὰς ἐννοίας [q] ἤ τι τῶν θείων, ἢ τῶν ἀνθρωπίνων· [r] οὐδὲ ποτ' ἀλάθειαν, οὐδὲ ποτ' ἀσφάλειαν, [s] οὐδὲ ποτὶ δόξαν κύριόν ἐστι, ζόφωσιν δὲ καὶ σύγχυσιν ἐπιφέρει τῷ [t] κοινῷ βίῳ τῶν ἀνθρώπων. Τοιοῦτοι δὲ λόγοι τυγχάνοντι οἱ πάντες, ἤτοι μὴ εἶμεν τὸ θεῖον, ἢ καὶ ἐὸν, μὴ ἔχεν οὕτως ποτὶ τὸ τῶν ἀνθρώπων γένος, ὥστ' ἐπιβλέπεν αὐτὸ καὶ φροντίζεν, ἀλλ' ἐᾶν καὶ [v] κατολιγωρεῖν. Καὶ γὰρ [w] ἁ τοιαύτα παραδοχὰ τοῖς ἀνθρώποις ἀφροσύναν καὶ ἀδικίαν ἐντίκτει, οὐδ' εἰπεῖν [x] δηλομένοις εὐμαρές ἐστι. Πᾶς γὰρ ἄνθρωπος ἀναρχίας πλαρωθεὶς, [y] καὶ τὸν ὕποπτον ἀπωσάμενος φόβον, σκιρτᾷ τε καὶ παρανομεῖ, παντοδαπὸς [z] γινόμενος. Χρέεσθαι [a] δὲ τῷ λόγῳ πολιτικῷ καὶ σεμνῷ καὶ οἰκείῳ τᾶς διαθέσιος τῶ λέγοντος, ἀλλὰ μὴ προσποιητῷ· οὕτω γὰρ ἁ λέξις ἐσεῖται τὸ τοῦ λέγοντος ἦθος ἐμφαίνουσα.

Ἐκ δὲ τῶν νόμων [b] δεῖ τὰν ἀσφάλειαν οὕτως ἐπιφέρεν, εἰ 251
καὶ σύνθετος ἁ πολιτεία ἢ καὶ συντεταγμένα ἐκ πασᾶν τᾶν ἄλλαν· λέγω δὲ οὐ τῶν παρὰ φύσιν, [c] ἀλλὰ τῶν κατὰ φύσιν. Τυραννίδος γὰρ [d] οὐδεμία χρεία ταῖς πόλεσιν, εἰ μή πω καὶ τᾶς ὀλιγαρχίας ἐπὶ βραχύ. [e] Δεῖ τοίνυν βασιλείαν [f] πράταν ἐντετάχθαι, καὶ δεύτερον, ἀριστοκρατίαν. Βασιλεία μὲν γὰρ θεομίματον πρᾶγμα, καὶ δυσφύλακτον ὑπὸ ἀνθρωπίνας ψυχᾶς· ταχέως γὰρ ὑπὸ τρυφᾶς καὶ ὕβριος ἀλλάσσεται· διόπερ οὐ δεῖ κατὰ πᾶν [g] αὐτᾷ χρέ-

[q] ἢ τῶν] ἢ τῶν A. (τι supra) τι habet B. a m. sec.
[r] οὐδέποτ'] ὁ οὐδέποτ' Gesnerus.
[s] οὐδὲ ποτὶ] οὐδέποτε B. m. p.
[t] κοινῷ] κοινῷ βίῳ A. Trinc.
[v] κατολιγωρεῖν] κατωλιγωρεῖν A.
[w] ἁ] αὖ A. in textu.
[x] δηλουμένοις] δηλομένοις B. m. s.
[y] καὶ τὸν—παρανομεῖ habet B. in marg. om. Trinc.
[z] γινόμενος] πενόμενος A. m. s. γενόμενος p. m.
[a] δεῖ] δὲ A. B. m. s. deest vocula Trinc.
[b] δεῖ τὰν] δὲ τὰν Trinc.
[c] ἀλλὰ τῶν κατὰ φύσιν] Habet A. inter lineas.
[d] οὐδεμία] οὐδαμῇ B. m. s.
[e] δεῖ] ἀεὶ Trinc.
[f] πράταν] πρῶτον A. m. sec. B.
[g] αὐτᾷ] αὐτῷ Trinc.

εσθαι, μέχρι δὲ τῶ δυνατῶ καὶ ποτὶ τὰν πολιτείαν χρησίμω· τὰν δ᾽ ἀριστοκρατίαν ἐπιπλέον [h] ἐμπλέκεν, τῷ πλείονας εἶμεν τὼς ἄρχοντας, καὶ φιλοζήλως διατίθεσθαι ποτ᾽ αὐτοὺς, καὶ πολλάκις [i] ἀντιμεταβάλλεσθαι [k] τὰς ἀρχάς. Δαμοκρατίαν δὲ [l] ἀναγκαῖον μὲν [m] ἦμεν πάντως· δεῖ γὰρ τὸν πολίταν μέρος ὑπάρχοντα τᾶς συμπάσας πολιτείας φέρεσθαί τι ἀπ᾽ αὐτᾶς γέρας· [n] ἐπέχεσθαι δ᾽ ἱκανῶς [o] αὐτὰν δεῖ· θρασὺ γὰρ καὶ [p] προπετὲς τὸ πολὺ πλᾶθος.

95 [a] Διωτογένους Πυθαγορείου ἐκ τοῦ Περὶ Ὁσιότητος.

Τὼς δὲ νόμως οὐκ ἐν οἰκήμασι [b] καὶ θυρώμασιν ἐπῆμεν δεῖ, ἀλλ᾽ ἐν τοῖς ἠθέεσι τῶν πολιτευομένων. Τίς οὖν ἀρχὰ πολιτείας [c] ἁπάσης; Νέων τροφά. Οὐ γὰρ μήποκα τὸν καρπὸν [d] ὀνασιφόρον ἄμπελοι [e] γεννήσοντι, μὴ φυτοτροφηθεῖσαι καλῶς· οὐδ᾽ ἵπποι μήποκα [f] γένωνται καλοὶ πωλοτροφίαν παρέντες. Τὰ γὰρ νεόχρηστα τῶν σιτίων μάλιστα τῷ ἁψαμένῳ καὶ [g] πλατιάζοντι ὅμοιον τὸ σχῆμα λαμβάνει. Τοῖς ἀνθρώποις περὶ μὲν ἀμπέλων, πῶς χρὴ τμηθῆμέν τε καὶ ἐποφθῆμεν, πεφρονημένως ἔχει· τὰ δ᾽ ἐπὶ τῶν [h] ἀνθρώπων ἤθη, ἀμελέως τε καὶ εἰκαίως· καί τοι οὐχ [i] ἁ ἄμ-

[h] ἐμπλέκεν] ἐκπλέκεν Trinc.
[i] ἀντιμεταλαμβάνεσθαι] ἀντιμεταβάλλεσθαι A.
[k] τὰς ἀρχὰς] τᾶς ἀρχᾶς B.
[l] ἀναγκαῖον] ἀναγκαίαν (ον superscript) A. δὲ om. Trinc.
[m] ἦμεν] εἶμεν Trinc.
[n] ἐπεύχεσθαι] Forte ἐπέχεσθαι. Gesner. Sic A.
[o] αὐτὰν] αὐτῶν Trinc.
[p] προπετὲς] τὸ προπετὲς A.

95.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] καὶ θυρώμασιν om. B. m. p. Tr. conf. infr. p. 269, 19. Rectius paullo quam in vulg. edd. legitur initium hujus loci scriptum proponit Brunckius ad Aristoph. Lys. 704.
[c] ἁπάσης om. B. m. p. Trinc.
[d] ὀνασηφόρον] ὀνασιφόρον A.
[e] γεννήσωνται] γεννήσωντι A. B. m. s.
[f] γεννῶνται] γένωνται Gesn. marg. A. m. sec. B.
[g] πλασιάζοντι] πλατιάζοντι A. Paullo ante φυτῶν pro σιτίων corrigit Jacobsius in Athen. p. 366. et mox τοῖς οὖν ἀνθρώποις περὶ μὲν ἀμπέλων—μὲν ἀμπέλων non καὶ ἀ. habet A.
[h] ἀνθρώπων] ἀνθρώπων ἤθη A.
[i] ἁ ἄμπελος] ἁ deest B.

πελος, οὐδὲ οἶνος [k]τᾶς πολιτείας ἀγεμὼν, ἀλλ' ὁ ἄνθρωπος [l]καὶ ἁ ψυχὰ τῶ ἀνθρώπω. Καὶ τῷ μὲν φυτῷ πλέονος εἰώθαμες ἄξιον παρακαθιστάμεν, καὶ τὸν ἐπιμελησόμενον, οὐ [m]μῆον ἢ δύο μνᾶν ἄξιον· τοῖς δὲ νέοις, Ἰλλυριὸν ἢ Θρᾷκα, οὐδενὸς ἄξιον. Οἱ δ' ἐξ ἀρχᾶς νομοθέται τὸ μέσον τῶν ἀνθρώπων στάσιμον οὐκ ἂν δύναιντο ποιῆσαι, κινάσιος δὲ μόνας καὶ [n]τάξιος [o]κεκοινωνηκυῖαν [p]παρακατέζευξαν ὄρχησιν καὶ ῥυθμὸν, ἔτι δὲ [q]παιγνιὰς τὰς μὲν ἐς κοινωνίαν προτρεπομένας, τὰς δ' ἐς ἀλάθειαν καὶ ὀξύτατα ψυχᾶς· ὁμοίως δὲ καὶ τοῖς ὑπὸ μέθας ἢ πλησμονᾶς φαῦλόν τι καταπράξασιν τὸν αὐλὸν καὶ τὰν ἁρμονίαν [r]ἐς τὰς [s]συνέσιας κατέταξαν, ὅπως πεπαινόμενον τὸ ἦθος δύναιτο καὶ [t]κατακοσμεῖσθαι.

96 [a]Πλάτωνος Πολιτείας δ̄.

Ὅτ' ἂν δὴ ἄρα καλῶς ἀρξάμενοι παῖδες παίζειν εὐνομίαν διὰ τῆς μουσικῆς εἰσδέξωνται, πάλιν [b]τοὐναντίον ἢ ἐκείνοις εἰς πάντα συνέπεταί τε καὶ αὔξει, ἐπανορθοῦσα εἴ τι καὶ πρότερον τῆς πόλεως ἔκειτο. Ἀληθῆ μέντοι, ἔφη. Καὶ τὰ σμικρὰ ἄρα, εἶπον, δοκοῦντα εἶναι νόμιμα ἐξευρίσκουσιν οὗτοι, ἃ οἱ πρότερον [c]ἀπώλλυσαν ἅπαντα; Ποῖα; Τὰ τοιάδε· σιγάς τε τῶν νεωτέρων παρὰ πρεσβυτέροις, [d]ὡς πρέπει, καὶ κατακλίσεις, καὶ ὑπαναστάσεις, καὶ γονέων θε- 252

[k] καὶ τᾶς πολιτ.] deest καὶ A. Trinc. et delevit Jacobs.
[l] ἁ ψυχὰ] καὶ ἁ ψ. A. Trinc. et sic Jacobs.
[m] μεῖον] μῆον A. B.
[n] τάξεως] τάξιος A.
[o] κεκοινωνηκυίας] κεκοινωνηκυῖαν A. Gesn. marg.
[p] παρακατέζευξαν] παρακατάζευξαν A.
[q] παιγνιὰς] παιδιὰς A. m. s. B. m. s.
[r] ἐς ὃ] ὃ om. A. B. m. s.
[s] συνέσεας κατέσταξαν] συνέσιας κατέταξαν A. B. συνέσιας Trinc.
[t] κατακοσμεῖσθαι] καὶ κατακοσμεῖσθαι A.

96.

[a] Sic A. Scil. p. 425. Simpl. Πλάτωνος Trinc.
[b] τοὐναντίον ἢ ἐκείνοις] τουναντίον ἥκειν ὡς εἰς πάντα A. τοὐναντίον ἥκειν ὡς εἰς Trinc.
[c] ἀπόλλυσαν] ἀπώλλυσαν A. B.
[d] ὡς πρέπει] ἃ πρέπει A. m. p. ἃς m. sec. Trinc.

ραπείας, καὶ κουράς τε καὶ ἀμπεχόνας, καὶ ὑποδέσεις, καὶ ὅλον τὸν τοῦ σώματος σχηματισμὸν, καὶ τἄλλα ὅσα τοιαῦτα. Ἢ οὐκ οἴει; Ἔγωγε. Νομοθετεῖν δὲ αὐτὰ οἶμαι εὔηθες· οὔτε γάρ που γίγνεται, [c] οὔτ᾽ ἂν μείνειεν λόγῳ τε καὶ [f] γράμμασι νομοθετηθέντα. Πῶς γάρ; [g] Κινδυνεύει γοῦν, ἦν δ᾽ ἐγὼ, ὦ Ἀδείμαντε, ἐκ τῆς παιδείας, [h] ὅποι ἄν τις ὁρμήσῃ, τοιαῦτα καὶ τὰ ἑπόμενα εἶναι. Ἢ οὐκ ἀεὶ τὸ [i] ὅμοιον ὂν, ὅμοιον παρακαλεῖ; Τί μήν; Καὶ τελευτῶν δὴ, οἶμαι, [k] φαῖμεν ἂν εἰς ἕν τι τέλεον καὶ νεανικὸν ἀποβαίνειν αὐτὸ, ἢ ἀγαθὸν, ἢ καὶ τοὐναντίον.

97 [a] Ἐν ταυτῷ.

Σωτηρίαν ἔγωγε, εἶπον, [b] λέγω τινὰ εἶναι τὴν [c] ἀνδρείαν. Ποίαν δὴ σωτηρίαν; Τὴν τῆς δόξης [d] τῆς ὑπὸ [e] νόμου διὰ τῆς παιδείας γεγονυῖαν περὶ τῶν δεινῶν, ἅ τε ἐστι καὶ οἷα· διὰ παντὸς δὲ [f] ἔλεγον αὐτὴν σωτηρίαν, τῷ ἔν τε λύπαις ὄντα διασώζεσθαι αὐτὴν, καὶ ἐν ἡδοναῖς, καὶ ἐν [g] ἐπιθυμίαις, καὶ ἐν φόβοις, καὶ μὴ ἐκβάλλειν. [h] Ὧι δέ μοι δοκεῖ ὅμοιον εἶναι, ἐθέλω ἀπεικάσαι, εἰ βούλει. Ἀλλὰ βούλομαι. Οὐκ οὖν οἶσθα, ἦν δ᾽ ἐγὼ, ὅτι οἱ βαφεῖς ἐπειδ᾽ ἂν βουληθῶσι βάψαι ἔρια, ὥστ᾽ εἶναι ἁλουργὰ, πρῶτον μὲν ἐκλέγονται ἐκ τοσούτων χρωμάτων μίαν φύσιν [i] τὴν τῶν λευκῶν· ἔπειτα προπαρασκευάζουσιν οὐκ ὀλίγῃ παρασκευῇ θεραπεύσαντες,

[e] οὔτ᾽ ἂν μένειν] ὅταν μείνειεν A. οὔτ᾽ ἂν μείνειεν Trinc.

[f] γράμμασι] γράμμα B. m. p. Tr.

[g] κινδυνεύει] κινδυνεύειν A.

[h] ὁποῖά τις ὁρμηθῇ] ὅποι ἄν τις ὁρμήσῃ Gesn. marg. B. m. sec. A. m. sec. prius ὁρμήθη.

[i] ὅμοιον ὂν] ὂν habet A. inter lineas. In B. item legitur a m. sec. Deest Trinc.

[k] φαῖμεν] φαμὲν B. m. p. Trinc. Mox τέλειον A.

97.

[a] Sic A. Sc. p. 429.

[b] λέγω] λέγων A. B. m. sec. εἶναι om. Trinc.

[c] ἀνδρείαν] ἀνδρίαν A.

[d] τῆς] τοῦ B. m. p. Trinc.

[e] νόμον] νόμου A. Trinc.

[f] ἔλεγον] ἔλεγεν B. m. p. Trinc. Dedi mox τῷ pro τό.

[g] ἐπιθυμίαις] ἐν ἐπιθυμίαις A. B. uterque a m. sec. Mox ἐν φόβοις A. B. m. s.

[h] ὃ] ᾧ A. B. m. s.

[i] τοῦ λευκοῦ] τὴν τῶν λευκῶν A. B. m. s. Gesn. marg.

ὅπως [k] δέξεται ὅτι μάλιστα τὸ ἄνθος, καὶ οὕτω δὴ βάπτουσι; καὶ ὃ μὲν ἂν τούτῳ τῷ τρόπῳ [l] βαφῇ, δευσοποιὸν γίγνεται τὸ βαφὲν, καὶ ἡ πλύσις [m] οὔτ' ἄνευ ῥυμμάτων οὔτε μετὰ ῥυμμάτων δύναται [n] αὐτῶν τὸ ἄνθος [o] ἀφαιρεῖσθαι· ἃ δ' ἂν μὴ, οἶσθα οἷα δὴ γίγνεται, [p] ἐάν τε τὶς ἄλλα χρώματα βάπτῃ, ἐάν τε καὶ ταῦτα, μὴ προθεραπεύσας. Οἶδα, ἔφη, ὅτι [q] καὶ ἔκπλυτα καὶ γελοῖα. Τοιοῦτον τοίνυν, ἦν δ' ἐγὼ, [r] ὑπόλαβε κατὰ δύναμιν ἐργάζεσθαι καὶ ἡμᾶς, ὅτε ἐξελεγόμεθα τοὺς στρατιώτας, καὶ ἐπαιδεύομεν [s] ἐν μουσικῇ καὶ γυμναστικῇ· καὶ μηδὲν οἴου ἄλλο μηχανᾶσθαι, ἢ ὅπως ἡμῖν ὅτι [t] κάλλιστα τοὺς νόμους πεισθέντες δέξοιντο ὥσπερ βαφὴν, ἵνα δευσοποιὸς αὐτῶν ἡ δόξα γίγνοιτο, καὶ περὶ δεινῶν καὶ περὶ τῶν ἄλλων, διὰ τὸ τήν τε φύσιν καὶ τὴν τροφὴν ἐπιτηδείαν ἐσχηκέναι, καὶ μὴ αὐτῶν ἐκπλύναι τὴν βαφὴν τὰ ῥύμματα ταῦτα, δεινὰ ὄντα ἐκκλύζειν· ἥ τε ἡδονὴ [v] παντὸς χαλαστραίου δεινοτέρα οὖσα τοῦτο δρᾶν καὶ κονίας, λύπη τε καὶ φόβος καὶ ἐπιθυμία παντὸς ἄλλου ῥύμματος. [w] Τὴν δὴ τοιαύτην δύναμιν καὶ σωτηρίαν διὰ παντὸς δόξης [x] ὀρθῆς τε καὶ [y] νομίμου δεινῶν τε πέρι καὶ μὴ, ἀνδρείαν ἔγωγε καλῶ καὶ τίθεμαι, εἰ μή τι σὺ ἄλλο λέγεις. Ἀλλ' οὐδὲν, ἦ δ' ὃς, λέγω· δοκεῖς γάρ μοι τὴν ὀρθὴν δόξαν περὶ τῶν αὐτῶν τούτων ἄνευ παι-

[k] δέξεται] δέξηται A. Vide Porsonum in Addend. ad Euripid. Hec. 1149.

[l] βαφῇ habet A. inter lineas. B. m. s. Deest Trinc.

[m] οὔτ' ἄνευ ῥυμμάτων] οὔτ' ἂν μετὰ ῥυμμάτων suprascriptis τριμμάτων οὔτε μετὰ A. τριμμάτων B. m. s. οὔτ' ἂν μετὰ ῥυμμάτων δύναται Trinc.

[n] αὐτῶν] αὐτοῦ B. m. p. Trinc.

γρ. ἀφαιρεῖσθαι
[o] ἀφαιρεῖσθαι] ἀποπλῦναι A.

[p] ἄντε] ἐάντε A. B.

[q] καὶ ἐ. καὶ γ.] καὶ bis expunxit B. m. s.

γρ. ὑπόλαβε
[r] ὑπόλαβε] φρονῶ A. φρονῶ B. p. m. Trinc.

[s] ἐν μουσικῇ] delet ἐν B. m. s.

[t] κάλλιστα τοὺς] καλλίστους A. p. m. B. p. m. Trinc.

[v] παντὸς χαλαστραίου δεινοτέρα οὖσα] δεινοτέρα οὖσα παντὸς χαλαστραίου A. χαλαστρέου Trinc.

γρ. δὴ
[w] τὴν δὴ] τὴν δε A.

[x] ὀρθῆς τε] τε ὀρθῆς A.

[y] μονίμου] νομίμου A. B. m. s. Gesn. marg.

δείας γεγονυῖαν, τήν τε θηριώδη καὶ ἀνδραποδώδη, οὔτε πάνυ 253 [z] νόμιμον ἡγεῖσθαι, ἄλλο τέ τι ἢ ἀνδρείαν καλεῖν.—

Κόσμος πού τις, ἦν δ' ἐγὼ, ἡ σωφροσύνη ἐστὶ, καὶ ἡδονῶν τινῶν καὶ ἐπιθυμιῶν ἐγκράτεια, ὥς φασι, κρείττω δὴ αὑτοῦ [a] λέγοντες, οὐκ οἶδα ὅντινα τρόπον, καὶ [b] ἄλλα τινὰ τοιαῦτα, ὥσπερ ἴχνη αὐτῆς λέγεται. Ἦ γάρ; Πάντων μάλιστα, ἔφη. Οὐκ οὖν τὸ μὲν [c] κρείττω αὑτοῦ γελοῖον; ὁ γὰρ ἑαυτοῦ κρείττων, καὶ ἥττων [d] δήπου ἂν αὑτοῦ εἴη, καὶ ὁ ἥττων, κρείττων· ὁ αὐτὸς γὰρ ἐν ἅπασι τούτοις προσαγορεύεται. Τί δ' οὔ; Ἀλλ', ἦν δ' ἐγὼ, φαίνεταί μοι βούλεσθαι λέγειν οὗτος ὁ λόγος, [e] ὥς τι ἐν αὐτῷ τῷ ἀνθρώπῳ περὶ τὴν ψυχὴν τὸ μὲν βέλτιον [f] ἔνι τὸ δὲ χεῖρον· καὶ ὅτ' ἂν μὲν τὸ βέλτιον φύσει τοῦ χείρονος [g] ἐγκρατέστερον ᾖ, τοῦτο λέγειν [h] τὸ κρείττω αὑτοῦ· ἐπαινεῖ γοῦν· ὅτ' ἂν δὲ ὑπὸ τροφῆς κακῆς ἤ τινος ὁμιλίας κρατηθῇ ὑπὸ πλήθους τοῦ χείρονος [i] σμικρότερον τὸ βέλτιον ὂν, τοῦτο δὲ ὡς ἐν ὀνείδει ψέγειν τε καὶ καλεῖν ἥττω ἑαυτοῦ, καὶ ἀκόλαστον τὸν οὕτω διακείμενον. Καὶ γὰρ ἔοικεν, ἔφη. Ἀπόβλεπε τοίνυν, ἦν δ' ἐγὼ, πρὸς τὴν νέαν ἡμῖν πόλιν, καὶ εὑρήσεις ἐν αὐτῇ τὸ ἕτερον τούτων ἐνόν· κρείττω γὰρ αὐτὴν αὑτῆς δικαίως φήσεις [k] προσαγορεύειν. Εἴπερ οὖν τὸ ἄμεινον τοῦ χείρονος ἄρχει, [l] σῶφρον κλητέον, καὶ κρεῖττον αὑτοῦ. Ἀλλὰ ἀποβλέπω, ἔφη, καὶ ἀληθῆ λέγεις. Καὶ μὴν [m] καὶ τάς τε πολλὰς καὶ παντοδαπὰς ἐπιθυμίας,

[z] μόνιμον] νόμιμον Gesn. marg. suprasc. in A. B. m. s.

[a] φαίνονται] λέγοντες A. B. uterque a p. m.

[b] ἄλλα τινα] ἄττα A. B. uterque m. s.

[c] κρεῖττον] κρείττω A.

[d] δήπου ἂν αὐτοῦ εἴη] αὐτοῦ ἂν αὐ-
δήπου εἴη
τοῦ εἴη A. m. p. αὐτοῦ ἂν sic A. m. sec. αὐτοῦ pro δήπου habet B. m. p.

[e] ὥς τι] ὥστ' Trinc.

[f] ἔνι] εἶναι Gesn. marg. A. m. s.

[g] ἐγκρατέστερον] ἐγκρατὲς Gesn. marg.

[h] τὸ κρείττω] τὸν κρείττω B. m. s.

[i] μικρότερον] σμικρότερον A. B. m. s. Mox ὂν deest B. m. p. Trinc.

[k] προσαγορεύειν] προσαγορεύεσθαι A. B. uterque a m. s. προαγορεύεσθαι Gesn. marg.

[l] σῶφρον κλητέον] σωφρονηστέον A. m. p.

[m] καὶ μὴν] καὶ om. A.

καὶ ἡδονάς τε καὶ λύπας, ἐν πᾶσι μάλιστ' ἄν τις εὕροι, καὶ γυναιξὶ καὶ οἰκέταις καὶ τῶν ἐλευθέρων λεγομένων ἐν τοῖς πολλοῖς τε καὶ φαύλοις. Πάνυ μὲν οὖν. Τὰς δέ γε ἁπλᾶς τε καὶ μετρίας, αἳ δὴ μετὰ νοῦ τε καὶ δόξης ὀρθῆς λογισμῷ ἄγονται, ἐν [n]ὀλίγοις τε ἐπιτεύξῃ, καὶ τοῖς βέλτιστα μὲν [o]τραφεῖσι, βέλτιστα δὲ παιδευθεῖσιν; Ἀληθῆ, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ ταῦτα ὁρᾷς ἐνόντα σοι ἐν τῇ πόλει, καὶ κρατουμένας αὐτόθι τὰς ἐπιθυμίας τὰς ἐν τοῖς πολλοῖς τε καὶ [p]φαύλοις ὑπό τε τῶν ἐπιθυμιῶν καὶ τῆς φρονήσεως, τῆς ἐν τοῖς ἐλάττοσί τε καὶ ἐπιεικεστέροις; Ἔγωγ', ἔφη. [q]Εἰ ἄρα [r]δεῖ τινὰ πόλιν προσαγορεύειν κρείττω ἡδονῶν τε καὶ ἐπιθυμιῶν καὶ αὐτὴν [s]αὑτῆς, ταύτην προσρητέον. Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη. Ἆρ' [t]οὖν οὐ καὶ σώφρονα κατὰ πάντα ταῦτα; Καὶ μάλα, ἔφη. Καὶ μὴν [u]αὖ εἴπερ ἐν ἄλλῃ πόλει ἡ αὐτὴ δόξα ἔνεστι τοῖς τε ἄρχουσι καὶ [w]τοῖς ἀρχομένοις, περὶ τοῦ οὕστινας δεῖ ἄρχειν, καὶ ἐν ταύτῃ ἂν εἴη τοῦτο ἐνόν. Ἦ οὐ δοκεῖ; Καὶ μάλα, ἔφη, σφόδρα. Ἐν ποτέροις οὖν φήσεις τῶν πολιτῶν τὸ [x]σωφρονεῖν ἐνεῖναι, ὅτ' ἂν οὕτως ἔχωσιν; ἐν τοῖς ἄρχουσιν, ἢ ἐν τοῖς ἀρχομένοις; Ἐν ἀμφοτέροις [y]που, ἔφη. Ὁρᾷς οὖν, ἦν δ' ἐγώ, ὅτι ἐπιεικῶς ἐμαντευόμεθα ἀρτίως, ὡς ἁρμονίᾳ τινὶ ἡ σωφροσύνη [z]ὡμοίωται; Τί δή; Ὅτι [a]οὐχ ὥσπερ ἡ [b]ἀνδρεία καὶ ἡ σοφία, ἐν μέρει τινὶ ἑκατέρα ἐνοῦσα, ἡ μὲν σοφήν, ἡ δὲ ἀνδρείαν [c]τὴν πόλιν παρείχετο, οὐχ οὕτω τὴν πόλιν ποιεῖ αὕτη, ἀλλὰ δι' ὅλης ἀτεχνῶς [d]τέταται,

[n] ὀλίγοις] ὅλοις A.
[o] τραφεῖσι] φῦσι Gesner. marg.
[p] φαύλοις] τοῖς φαύλοις A.
[q] εἰ] om. B.
[r] δεῖ] δὴ A. B.
[s] αὑτῆς ταύτην om. A.
[t] καὶ οὖν οὐ] οὖν οὐ καὶ A.
[u] ἂν] αὖ A.
[w] ἀρχομένοις] τοῖς ἀρχομένοις A.
[x] σωφρονεῖν ἐνεῖναι] σῶφρον εἶναι B. ubi mox om. ἐν τοῖς ἄρχουσιν.
[y] που] οὖν που B.
[z] ὁμοίηται] ὡμοίωται A. Trinc. ἡ ante σωφροσύνη deest Trinc.
[a] οὐχ] οὐδ' A. Trinc.
[b] ἀνδρεία] ἀνδρία A. et mox ἀνδρίαν.
[c] τὴν πόλιν om. A. Trinc.
[d] τέταται] τέτατται B.

[c] διὰ πασῶν παρεχομένη ξυνᾴδοντας, τούς τε ἀσθενεστάτους ταυτὸν, καὶ τοὺς ἰσχυροτάτους, καὶ τοὺς μέσους, εἰ μὲν βού- 254 λει, φρονήσει, εἰ δὲ βούλει, ἰσχύϊ, εἰ δὲ, [f] καὶ πλήθει, ἢ χρήμασιν, ἢ ἄλλῳ ὁτῳοῦν τῶν τοιούτων. Ὥστε ὀρθότατα ἂν [g] φαῖμεν ταύτην τὴν ὁμόνοιαν σωφροσύνην εἶναι, χείρονός τε καὶ ἀμείνονος κατὰ φύσιν [h] ξυμφωνίαν, ὁπότερον δεῖ ἄρχειν καὶ ἐν [i] πόλει καὶ [k] ἐν ἑνὶ ἑκάστῳ. Πάνυ μοι, ἔφη, ξυνδοκεῖ.

98 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ἀλλ', ἦν δ' ἐγὼ, ἄκουε, εἴ τι ἄρα λέγω. Ὃ γὰρ ἐξ ἀρχῆς ἐθέμεθα [b] δεῖν ποιεῖν διὰ παντὸς, ὅτε τὴν πόλιν κατῳκίζομεν, τοῦτό ἐστιν, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ, ἤτοι τούτου [c] τι εἶδος ἡ δικαιοσύνη· ἐθέμεθα δὲ δήπου, καὶ πολλάκις ἐλέγομεν, εἰ μέμνησαι, ὅτι ἕνα ἕκαστον ἓν δέοι ἐπιτηδεύειν τῶν περὶ τὴν πόλιν, εἰς ὃ αὐτοῦ ἡ φύσις ἐπιτηδειοτάτη [d] πεφυκυῖα εἴη. Ἐλέγομεν γάρ. Καὶ μὴν ὅτι γε τὸ τὰ αὑτοῦ πράττειν καὶ μὴ πολυπραγμονεῖν δικαιοσύνη ἐστὶ, καὶ τοῦτο ἄλλων τε πολλῶν ἀκηκόαμεν, καὶ αὐτοὶ πολλάκις εἰρήκαμεν. Εἰρήκαμεν γάρ. Τοῦτο τοίνυν, ἦν δ' ἐγὼ, ὦ φίλε, κινδυνεύει τρόπον τινὰ γιγνόμενον [e] ἡ δικαιοσύνη εἶναι, τὸ τὰ αὑτοῦ πράττειν. Οἶσθα ὅθεν τεκμαίρομαι; Οὐκ, ἀλλὰ λέγε, ἔφη. Δοκεῖ μοι, ἦν δ' ἐγὼ, τὸ ὑπόλοιπον ἐν τῇ [f] πόλει ὧν ἐσκέμμεθα, σωφροσύνης καὶ ἀνδρείας καὶ φρονήσεως, τοῦτο εἶναι τὸ πᾶσιν ἐκείνοις τὴν δύναμιν παρέχον ὥστε [g] ἐγγενέσθαι

[c] διὰ πασῶν] δι' ἁπασῶν A.
[f] καὶ πλήθει] καὶ deest A.
[g] φάμεν] φαῖμεν Gesner. marg.
[h] ξυμφωνίαν] ξυμφωνίας B.
[i] τῇ πόλει] articulus deest A.
[k] ἐν ἑνὶ] om. præpositionem B.

98.

[a] Sic A. Sc. p. 432. 433.
[b] δεῖν ποιεῖν] δεῖν om. Trinc.
[c] τι εἶδος ἡ] τι et ἡ om. A. Trinc.
[d] πεφυκυῖα εἴη] εἴη πεφυκυῖα A.
[e] ἡ δικαιοσύνη] articulus deest A. Trinc.
[f] πόλει ὧν ἐσκέμμεθα] πόλει τῶν πολιτῶν ἐσκ. A. τῶν pro ὧν Trinc.
[g] ἐγγενέσθαι] γενέσθαι Trinc.

καὶ [h]ἐγγενομένοις σωτηρίαν παρέχειν, [i]ἕως περ ἂν ἐ͂ῃ· καίτοι ἔφαμεν δικαιοσύνην ἔσεσθαι τὸ ὑπολειφθὲν ἐκείνων, εἰ τὰ τρία εὕροιμεν. Καὶ γὰρ ἀνάγκη, ἔφη. Ἀλλὰ μέντοι, ἦν δ' ἐγὼ, εἰ δέοι κρῖναι [k]τί τὴν πόλιν ἡμῖν τούτων μάλιστα ἀγαθὴν [l]ἀπεργάσεται ἐγγενόμενον, δύσκριτον ἂν εἴη, πότερον ἡ ὁμοδοξία τῶν ἀρχόντων τε καὶ ἀρχομένων, ἢ ἡ περὶ δεινῶν τε καὶ μὴ, ἅττα ἐστὶ, δόξης ἐννόμου σωτηρία ἐν τοῖς στρατιώταις ἐγγενομένη, ἢ ἡ ἐν τοῖς ἄρχουσι φρόνησίς τε καὶ φυλακὴ ἐνοῦσα· ἢ τοῦτο μάλιστα ἀγαθὴν αὐτὴν ποιεῖ ἐνὸν, καὶ ἐν παιδὶ, καὶ ἐν γυναικὶ, καὶ δούλῳ, καὶ ἐλευθέρῳ, καὶ δημιουργῷ, καὶ ἄρχοντι, καὶ ἀρχομένῳ, ὅτι τὸ αὑτοῦ ἕκαστος εἷς [m]ὢν ἒν ἔπραττε, καὶ οὐκ ἐπολυπραγμόνει. Δύσκριτον, ἔφη· πῶς δ' οὔ; Ἐνάμιλλον ἄρα, ὡς ἔοικε, [n]πρὸς ἀρετὴν πόλεως, τῇ τε σοφίᾳ αὐτῆς, καὶ τῇ σωφροσύνῃ, καὶ τῇ ἀνδρείᾳ, ἡ τοῦ [o]ἕκαστον ἐν αὐτῇ τὰ αὑτοῦ πράττειν δύναμις. Καὶ μάλα, ἔφη. Οὐκ οὖν δικαιοσύνην τό γε τούτοις ἐνάμιλλον ἂν εἰς ἀρετὴν πόλεως θείης; Παντάπασι μὲν οὖν. [p]Σκόπει δὴ καὶ τῇδε, εἰ οὕτω δόξει· ἆρα τοῖς ἄρχουσιν ἐν τῇ πόλει τὰς δίκας προστάξεις [q]δικάζειν; Τί μήν; Ἢ ἄλλου [r]οὗ τίνος οὖν μᾶλλον ἐφιέμενοι δικάσουσιν, ἢ [s]τούτου, ὅπως ἂν ἕκαστοι μήτ' ἔχωσι τἀλλότρια, μήτε τῶν αὑτῶν στέρωνται; Οὔκ· ἀλλὰ τούτου. Ὡς δικαίου ὄντος; Ναί. Καὶ [t]ταύτῃ ἄρα πῇ ἡ τοῦ οἰκείου τε καὶ ἑαυτοῦ ἕξις τε καὶ πρᾶξις, δικαιοσύνη ἂν ὁμολογοῖτο. Ἔστι ταῦτα.

[h] ἐγγενομένα γε σωτηρίαν] ἐγγενομ̃δ', σρῑαν A. i. e. ἐγγενομένοις σωτηρίαν. et sic Trinc. Sic A.

[i] ἕως περ ἂν ἐ͂ῃ] ἕως ἂν ἐνῇ Gesn. marg.

[k] τί τὴν] τινα A. mox τούτων (sic) A. τί τούτων Trinc.

[l] ἀπεργάσεται] ἀπείργασται A. Trinc. ἀπείργασθαι B.

[m] ὢν ἒν] Al. abest ἒν. Gesner.

[n] πρὸς] τὶ πρὸς Trinc.

[o] ἕκαστον] ἑκάστου Trinc.

[p] σκόπει δὴ] σκόπει δὲ Trinc. ubi τήνδε pro τῇ δὲ.

[q] δικάζειν] εἰπεῖν καὶ δικάζειν A.

[r] οὗτινοσοῦν] τινος οὐ A. Trinc.

[s] τοῦτο] τούτου A. καὶ τούτου Trinc.

[t] ταύτῃ ἄρα πῃ] ταῦτα ἄρα ἡ A. ταῦτα ἀ. πη ἡ Trinc.

99 [a] Ἐν ταυτῷ.

Δεῦρο νῦν, ἦν δ' ἐγὼ, ἵνα καὶ εἰδῇς ὅσα εἴδη ἔχει ἡ κακία, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ, ἅ γε δὴ καὶ ἄξια θέας. Ἕπομαι, ἔφη, μόνον λέγε. Καὶ [b] μὴν, ἦν δ' ἐγὼ, ὥσπερ ἀπὸ σκοπιᾶς μοι 255
φαίνεται, ἐπειδὴ ἐνταῦθα ἀναβεβήκαμεν τοῦ λόγου, ἓν μὲν εἶναι εἶδος τῆς ἀρετῆς, ἄπειρα δὲ τῆς κακίας· τέτταρα δὲ [c] ἐν αὐτῇ ὄντα ὧν καὶ ἄξιον ἐπιμνησθῆναι. Πῶς λέγεις, ἔφη; Ὅσοι, ἦν δ' ἐγὼ, πολιτειῶν τρόποι εἰσὶν [d] εἴδη ἔχοντες, τοιοῦτοι κινδυνεύουσι καὶ ψυχῆς τρόποι εἶναι. Πόσοι δή; Πέντε μὲν, ἦν δ' ἐγὼ, πολιτειῶν, πέντε [e] δὲ ψυχῆς. Λέγ', ἔφη, τίνες; Λέγω, εἶπον, ὅτι εἷς μὲν οὗτος, ὃν [f] ἡμεῖς διεληλύθαμεν, πολιτείας εἴη ἂν τρόπος, ἐπονομασθείη δ' ἂν καὶ διχῇ· ἐγγενομένου γὰρ ἀνδρὸς ἑνὸς ἐν τοῖς ἄρχουσι διαφέροντος, βασιλεία ἂν κληθείη· [g] πλειόνων δὲ, ἀριστοκρατία. Ἀληθῆ ἔφη. Τοῦτο μὲν τοίνυν, ἦν δ' ἐγὼ, ἓν εἶδος λέγω· οὔτε γὰρ ἂν πλείους οὔτε εἷς ἐγγενόμενοι κινήσειεν [h] ἄν τινα τῶν ἀξίων λόγου νόμων τῆς πόλεως, τροφῇ τε καὶ παιδείᾳ χρησάμενος, ᾗ διεληλύθαμεν.

100 [a] Πλάτωνος Πολιτείας ε̄.

Ἀποδυτέον δὴ ταῖς τῶν φυλάκων γυναιξὶν, ἐπείπερ ἀρετὴν ἀντὶ ἱματίων ἀμφιέσονται, καὶ κοινωνητέον πολέμου τε καὶ τῆς ἄλλης φυλακῆς [b] τῆς περὶ τὴν πόλιν, καὶ οὐκ ἄλλο πρακτέον· τούτων δὲ αὐτῶν τὰ ἐλαφρότερα ταῖς γυναιξὶν ἢ τοῖς ἀνδράσιν ἀποδοτέον, διὰ τὴν τοῦ γένους ἀσθένειαν· ὁ δὲ γελῶν ἀνὴρ ἐπὶ γυμναῖς γυναιξὶ τοῦ βελτίστου ἕνεκα γυμνα-

99.
[a] Sic A. Scil. p. 445.
[b] μὴν] νῦν A.
[c] ἐν αὐτῇ ὄντα] ἐν αὐτοῖς ἄττα Gesn. marg.
[d] εἴδη usque ad τρόποι εἶναι desunt A. Trinc.
[e] δὲ καὶ] καὶ om. A.
[f] ἡμεῖς om. A.
[g] πλειόνων δὲ] δὲ om. A.
[h] τινα] ἄν τινα A. B. Gesn. marg.

100.
[a] Sic A. p. 457. Deest lemma Trinc.
[b] τῆς] καὶ τῆς B.

ζομέναις, ἀτελῆ τοῦ γελοίου σοφίας δρέπων καρπὸν, οὐδὲν οἶδεν, ὡς ἔοικεν, ἐφ' ᾧ γελᾷ, οὐδὲ [c] τί πράττει· [d] κάλλιστα γὰρ δὴ τοῦτο καὶ λέγεται καὶ λελέξεται, ὅτι τὸ μὲν ὠφέλιμον, καλόν· τὸ δὲ βλαβερὸν, αἰσχρόν.

101 [a] Ἐν ταυτῷ.

Τούτῳ, ἦν δ' ἐγὼ, ἕπεται νόμος, καὶ τοῖς ἔμπροσθεν τοῖς ἄλλοις, ὡς ἐγῷμαι, [b] ὅδε. Τίς; Τὰς γυναῖκας ταύτας τῶν ἀνδρῶν τούτων πάντων πάσας εἶναι κοινὰς, [c] ἰδίᾳ δὲ μηδενὶ μηδεμίαν συνοικεῖν· καὶ τοὺς παῖδας αὖ κοινοὺς, καὶ μήτε [d] γονέα εἰδέναι ἔκγονον τὸν αὑτοῦ, μήτε παῖδα, γονέα. Πολὺ, ἔφη, τοῦτο ἐκείνου μεῖζον πρὸς ἀπιστίαν, καὶ τοῦ δυνατοῦ πέρι καὶ ὠφελίμου. Οὐκ οἶμαι, ἦν δ' ἐγὼ, περί γε τοῦ ὠφελίμου ἀμφισβητεῖσθαι ἂν, ὡς οὐ μέγιστον ἀγαθὸν, κοινὰς μὲν τὰς γυναῖκας εἶναι, κοινοὺς δὲ τοὺς παῖδας.

102 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ἡ μὲν δὴ κοινωνία, ὦ Γλαύκων, αὕτη τε καὶ τοιαύτη γυναικῶν τε καὶ παίδων τοῖς φύλαξί σοι τῆς πόλεως· [b] ὡς δὲ ἑπομένη τε τῇ ἄλλῃ πολιτείᾳ καὶ μακρῷ βελτίστη, δεῖ δὴ τὸ μετὰ τοῦτο βεβαιώσασθαι παρὰ τοῦ λόγου· ἢ πῶς ποιῶμεν; Οὕτω νὴ Δία, ἦ δ' ὅς. Ἆρ' οὖν οὐχ ἥδε ἀρχὴ τῆς ὁμολογίας ἔρεσθαι ἡμᾶς αὐτοὺς, τί ποτε τὸ μέγιστον ἀγαθὸν ἔχομεν εἰπεῖν εἰς πόλεως κατασκευὴν, οὗ [c] δεῖ στοχαζόμενον τὸν νομοθέτην τιθέναι τοὺς νόμους, καὶ τί μέγιστον κακὸν, εἶτα ἐπισκέψασθαι; ἆρα ἃ νῦν διήλθομεν, εἰς μὲν τὸ τοῦ ἀγαθοῦ [d] ἴχνος ἡμῖν ἁρμόττει, τὸ δὲ τοῦ κα-

[c] τι] ὅ τι Gesn. marg.
[d] κάλλιστα] κάλλιον A. μάλιστα B.

101.

[a] Sic A. p. 457. Deest lemma Trinc.
[b] ὧδε] Dedi ὅδε ex Platone. Mox πάντων deest A. Trinc.
[c] ἰδίῳ] ἰδία A. Trinc.
[d] γονέα] γονέας A. Trinc.

102.

[a] Sic A. ubi om. usque ad ἔχομεν οὖν. Scil. p. 461. Deest lemma Trinc.
[b] ὧδε] ὡς δὲ Gesn. marg.
[c] δεῖ στοχαζόμενον] δὴ στοχαζομένου B.
[d] ἴχνος] ὄχνας B.

κοῦ ἀναρμοστεῖ; Πάντων μάλιστα, ἔφη. Ἔχομεν οὖν [e] τί
μεῖζον κακὸν πόλει, ἢ ἐκεῖνο ὃ ἂν αὐτὴν διασπᾷ, καὶ ποιῇ
πολλὰς ἀντὶ μιᾶς; ἢ μεῖζον ἀγαθὸν τοῦ [f] ὃ δὴ ξυνδεῖ τε
καὶ ποιεῖ μίαν; Οὐκ ἔχομεν. Οὐκ οὖν ἡ μὲν ἡδονῆς τε 256
καὶ λύπης κοινωνία ξυνδεῖ, ὅτ' ἂν [g] ὅτι μάλιστα πάντες οἱ
πολῖται τῶν αὐτῶν γιγνομένων τε καὶ ἀπολλυμένων παρα-
πλησίως χαίρωσι καὶ λυπῶνται; Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη.
Ἡ δέ γε τῶν τοιούτων ἰδίωσις διαλύει ὅτ' ἂν οἱ μὲν περι-
αλγεῖς οἱ δὲ περιχαρεῖς γίγνωνται ἐπὶ τοῖς αὐτοῖς [h] παθή-
μασι τῆς πόλεώς τε καὶ τῶν ἐν τῇ πόλει; Τί δ' οὔ; Ἆρ'
οὖν ἐκ τοῦδε τὸ [i] τοιόνδε γίγνεται, ὅτ' ἂν μὴ ἅμα φθέγγων-
ται ἐν τῇ πόλει [k] τὰ τοιάδε ῥήματα, τό τε ἐμὸν καὶ τὸ οὐκ
ἐμὸν, καὶ περὶ τοῦ ἀλλοτρίου κατὰ ταυτά; Κομιδῇ μὲν οὖν.
Ἐν ᾗ τινι [l] δὲ πόλει πλεῖστοί σοι τὸ αὐτὸ κατὰ ταυτὰ τοῦ-
το λέγουσι τὸ ἐμὸν καὶ τὸ οὐκ ἐμὸν, αὕτη ἄριστα διοικεῖται;
Πολύ γε. Καὶ [m] ἥ τις δὴ ἐγγύτατα ἑνὸς ἀνθρώπου ἔχει·
οἷον, ὅτ' ἂν [n] που ἡμῶν δάκτυλός του πληγῇ, πᾶσα ἡ κοινω-
νία ἡ κατὰ τὸ σῶμα πρὸς τὴν ψυχὴν [o] τεταμένη εἰς μίαν
σύνταξιν τὴν τοῦ ἄρχοντος ἐν αὐτῇ, ᾔσθετό τε καὶ πᾶσα
ἅμα συνήλγησε μέρους πονήσαντος ὅλη· καὶ οὕτω δὴ λέγο-
μεν, ὅτι ὁ ἄνθρωπος τὸν δάκτυλον ἀλγεῖ· καὶ περὶ ἄλλου
ὁτουοῦν τῶν τοῦ ἀνθρώπου ὁ [p] αὐτὸς λόγος, περί τε λύπης,
πονοῦντος μέρους, καὶ περὶ ἡδονῆς, ῥαΐζοντος. Ὁ αὐτὸς,
γὰρ, ἔφη. Καὶ τοῦτο ὃ ἐρωτᾷς, τοῦ τοιούτου ἐγγύτατα
[q] ἡ ἄριστα πολιτευομένη πόλις οἰκεῖ· ἑνὸς δὴ, οἶμαι, πάσχον-
τος τῶν πολιτῶν ὁτιοῦν, ἢ ἀγαθὸν ἢ κακὸν, ἡ τοιαύτη πόλις
μάλιστά τε φήσει ἑαυτῆς εἶναι τὸ πάσχον, καὶ ἢ ξυνησθή-

[e] τι μεῖζον] τὸ μ. A. Mox dedi ποιῇ pro ποιεῖ.
[f] ὃ δὴ] ὁ δεῖ A.
[g] ὅτι om. B.
[h] παθήμασι] μαθήμασι Trinc.
[i] τοιόνδε] τοιοῦτον A.
[k] τὰ] τῇ B.
[l] δὲ] δὴ A.
[m] ἥ τις] εἴ τις A.
[n] του] που A.
[o] τεταμένη] τεταγμένη B.
[p] αὐτὸς λόγος] ἀπόλογος A.
[q] ἡ] ἢ B.

σεται ἅπασα, ἢ [r] ξυλλυπήσεται. Ἀνάγκη, ἔφη, τήν γε εὔνομον. Ὥρα ἂν εἴη, ἦν δ᾽ ἐγώ, ἐπανιέναι ἡμῖν ἐπὶ τὴν ἡμετέραν πόλιν, καὶ τὰ τοῦ λόγου ὁμολογήματα σκοπεῖν ἐν αὐτῇ, εἰ αὐτὴ μάλιστα ἔχει εἴτε καὶ ἄλλη τὶς μᾶλλον. Οὐκ οὖν χρή, ἔφη. Τί οὖν; ἔστι μέν που καὶ ἐν ταῖς ἄλλαις πόλεσιν ἄρχοντές τε καὶ δῆμος, ἔστι δὲ καὶ ἐν [s] ταύτῃ; Ἔστι. Πολίτας μὲν δὴ πάντες οὗτοι ἀλλήλους προσεροῦσι; Πῶς δ᾽ οὔ; Ἀλλὰ πρὸς τῷ πολίτας, [t] τί καὶ ὁ ἐν ταῖς ἄλλαις δῆμος τοὺς ἄρχοντας προσαγορεύει; Ἐν μὲν ταῖς πολλαῖς, δεσπότας· ἐν δὲ ταῖς δημοκρατουμέναις, αὐτὸ τοῦτο τοὔνομα ἄρχοντας. Τί δ᾽ ὁ ἐν τῇ ἡμετέρᾳ [u] δῆμος; πρὸς τῷ πολίτας, τί τοὺς ἄρχοντας φησὶν εἶναι; Σωτῆράς τε καὶ ἐπικούρους, ἔφη. Τί δ᾽ οὗτοι τὸν δῆμον; Μισθοδότας τε καὶ τροφέας. Οἱ δὲ ἐν ταῖς ἄλλαις ἄρχοντες τοὺς δήμους; Δούλους, ἔφη. Τί δ᾽ οἱ ἄρχοντες ἀλλήλους; Ξυνάρχοντας, ἔφη. Ἔχεις οὖν εἰπεῖν τῶν ἀρχόντων ἐν ταῖς ἄλλαις πόλεσιν, εἴ τις τινὰ ἔχει προσειπεῖν τῶν ξυναρχόντων, τὸν μὲν ὡς οἰκεῖον, τὸν δ᾽ ὡς ἀλλότριον; Καὶ πολλούς γε. Οὐκ οὖν τὸν μὲν οἰκεῖον ὡς ἑαυτοῦ νομίζει τε καὶ λέγει, τὸν δ᾽ ἀλλότριον, ὡς οὐχ ἑαυτοῦ; [w] Οὕτω. Τί δ᾽ οἱ παρὰ σοὶ φύλακες, ἔσθ᾽ ὅστις αὐτῶν ἔχοι ἂν τῶν ξυμφυλάκων νομίσαι τινὰ ἢ προσειπεῖν [x] ὡς ἀλλότριον; Οὐδαμῶς, ἔφη. Παντὶ γὰρ ᾧ ἂν ἐντυγχάνῃ, ἢ ὡς ἀδελφῷ, ἢ ὡς ἀδελφῇ, ἢ
ὡς πατρὶ, ἢ ὡς μητρὶ, ἢ ὡς υἱεῖ, [y] ἢ θυγατρὶ, ἢ τούτων [z] ἐγ- 257
γόνοις, ἢ προγόνοις, νομιεῖ ἐντυγχάνειν. Κάλλιστα, ἦν δ᾽ ἐγώ, λέγεις· [a] ἀλλ᾽ ἔτι καὶ τόδε εἰπέ· πότερον αὐτοῖς τὰ

[r] ξυλλυπήσεται] ξυλλυπηθήσεται A. ubi mox om. ἀνάγκη usque ad χρὴ ἔφη.

[s] ταύτῃ] αὐτῇ Gesn. marg.

[t] τί ὁ] τὶ καὶ ὁ A.

[u] δῆμος] δῆμος τοὺς ἄρχοντας A.

[w] οὕτω γε] οὕτω A. Trinc.

[x] ἀλλότριον] ὡς ἀλλότριον A. Mox ibid. om. τις post ἐντυγχάνῃ. ἐντυγχάνοι sine τις Trinc.

[y] ἢ θυγατρὶ] ἢ ὡς θ. B.

[z] ἐγγόνοις] ἐκγόνοις Gesn. marg. mox ἢ προγόνοις om. B. κομιεῖ Trinc.

[a] ἀλλ᾽ ἔτι καὶ usque ad μάλιστα ἔφη om. A.

ὀνόματα μόνον [b] οἰκεῖα νομοθετήσεις, ἢ καὶ τὰς πράξεις πάσας [c] κατὰ τὰ ὀνόματα πράττειν, περί τε τοὺς πατέρας ὅσα νόμος περὶ πατέρας αἰδοῦς τε πέρι καὶ κηδεμονίας, καὶ τοῦ ὑπήκοον δεῖν εἶναι τῶν γονέων· ἢ μήτε πρὸς θεῶν μήτε πρὸς ἀνθρώπων [d] αὐτῷ ἄμεινον ἔσεσθαι, ὡς οὔτε δίκαια οὔτε ὅσια πράττοντος ἄν, εἰ ἄλλα πράττοι ἢ ταῦτα; αὗταί σοι ἢ ἄλλαι φῆμαι ἐξ ἁπάντων τῶν πολιτῶν ὑμνήσουσιν εὐθὺς περὶ τὰ τῶν παίδων ὦτα, καὶ περὶ πατέρων, οὓς ἂν αὐτοῖς ἀποφήνῃ, καὶ περὶ τῶν ἄλλων ξυγγενῶν; Αὗται, ἔφη· γελοῖον γὰρ ἂν εἴη, εἰ ἄνευ ἔργων ὀνόματα οἰκεῖα διὰ τῶν στομάτων μόνον φθέγγοιντο. Πασῶν ἄρα πόλεων μάλιστα ἐν αὐτῇ ξυμφωνήσουσιν, ἑνός τινος ἢ εὖ ἢ κακῶς πράττοντος, ὃ νῦν δὴ [e] ἐλέγομεν τὸ ῥῆμα, τὸ, ὅτι τὸ ἐμὸν εὖ πράττει, ἢ ὅτι τὸ ἐμὸν κακῶς. Ἀληθέστατα, ἦ δ' ὅς. Οὐκ οὖν μετὰ τούτου τοῦ δόγματός τε καὶ ῥήματος ἔφαμεν ξυνακολουθεῖν τάς τε ἡδονὰς καὶ λύπας κοινῇ; Καὶ ὀρθῶς [f] γε ἔφαμεν. Οὐκ οὖν μάλιστα τοῦ αὐτοῦ κοινωνήσουσιν οἱ πολῖται ἡμῖν, ὃ δὴ ἐμὸν [g] ὀνομάζουσι, τούτου δὲ κοινωνοῦντες, οὕτω δὴ [h] λύπης τε καὶ ἡδονῆς μάλιστα κοινωνίαν ἕξουσι; Πολύ γε. Ἆρ' οὖν τούτων αἰτία πρὸς τῇ ἄλλῃ καταστάσει, ἡ τῶν γυναικῶν τε καὶ παίδων κοινωνία τοῖς φύλαξι; Πάνυ μὲν οὖν μάλιστα, ἔφη. Ἀλλὰ μὴν μέγιστόν γε πόλει αὐτὸ ὡμολογήσαμεν ἀγαθὸν, ἀπεικάζοντες εὖ οἰκουμένην πόλιν σώματι πρὸς μέρος αὐτοῦ λύπης τε πέρι καὶ ἡδονῆς, ὡς ἔχει. Καὶ ὀρθῶς γε, ἔφη, ὡμολογήσαμεν. Τοῦ μεγίστου ἄρα ἀγαθοῦ τῇ πόλει αἰτία ἡμῖν [i] πέφανται ἡ κοινωνία τοῖς ἐπικούροις [k] τῶν

[b] οἰκεῖα] οἰκεῖον B.
[c] κατὰ] καὶ N. Trinc.
[d] αὐτῶν ἀμείνονες] αὐτῷ ἄμεινον Gesn. marg.
[e] ἐλέγομεν] ἐμέγομεν Trinc. et mox ἀληθέστατα αὖ ἦδ' ὅς.
[f] γε] με A.
[g] ὀνομάζουσι] ὀνομάσουσι Trinc.
[h] λύπης τε] τε om. B.
[i] πέφυκεν] πέφανται A. Gesn. marg.
[k] τῶν τε] deest τε A.

τε παίδων καὶ τῶν γυναικῶν; Καὶ μάλα, ἔφη. Καὶ μὴν δὴ καὶ τοῖς πρόσθεν [l] γε ὡμολογοῦμεν· ἔφαμεν γάρ που, οὔτε οἰκίας τούτοις [m] ἰδίας δεῖν εἶναι, οὔτε γῆν, οὔτε κτῆμα, ἀλλὰ παρὰ τῶν ἄλλων τροφὴν λαμβάνοντας μισθὸν τῆς φυλακῆς, κοινῇ πάντας ἀναλίσκειν, εἰ μέλλοιεν ὄντως φύλακες εἶναι. Ὀρθῶς, ἔφη. Ἆρ' οὖν οὐχ ὅπερ λέγω, τά τε πρόσθεν εἰρημένα καὶ τὰ νῦν [n] λεγόμενα ἔτι μᾶλλον ἀπεργάζεται αὐτοὺς ἀληθινοὺς φύλακας, καὶ ποιεῖ μὴ διασπᾶν τὴν πόλιν [o] τὸ ἐμὸν ὀνομάζοντας, μὴ τὸ αὐτὸ, ἀλλ' ἄλλον ἄλλο, τὸν μὲν εἰς τὴν αὑτοῦ οἰκίαν ἕλκοντα ὅ τι [p] ἂν δύνηται χωρὶς τῶν ἄλλων κτήσασθαι, τὸν δὲ εἰς τὴν ἑαυτοῦ ἑτέραν [q] οὖσαν, καὶ γυναῖκά τε καὶ παῖδας ἑτέρους, ἡδονάς τε καὶ ἀλγηδόνας ἐμποιοῦντας, ἰδίων ὄντων ἰδίας, ἀλλ' ἑνὶ δόγματι, [r] τοῦ οἰκείου πέρι, ἐπὶ τὸ αὐτὸ τείνοντας πάντας εἰς τὸ δυνατὸν, ὁμοιοπαθεῖς λύπης τε καὶ ἡδονῆς εἶναι; Κομιδῇ μὲν οὖν, ἔφη. Τί δέ; [s] δίκαι τε καὶ ἐγκλήματα πρὸς ἀλλήλους οὐκ οἰχήσεται ἐξ αὐτῶν, ὡς ἔπος εἰπεῖν, διὰ τὸ μηδὲν ἴδιον κεκτῆσθαι πλὴν τὸ σῶμα, τὰ δὲ ἄλλα κοινά; [t] ὅθεν δὴ ὑπάρχει τούτοις ἀστασιάστοις εἶναι, 258 ὅσα γε διὰ χρημάτων ἢ παίδων ἢ ξυγγενῶν κτῆσιν [u] ἄνθρωποι στασιάζουσι. Πολλή, ἔφη, ἀνάγκη ἀπηλλάχθαι. Καὶ μὴν οὐδὲ βιαίων γε οὐδὲ αἰκίας δίκαι δικαίως ἂν εἶεν ἐν αὐτοῖς· ἥλιξι μὲν γὰρ ἥλικας ἀμύνεσθαι καλὸν καὶ δίκαιόν που θήσομεν, ἀνάγκην σωμάτων ἐπιμελείας τιθέντες. Ὀρθῶς, ἔφη. Καὶ γὰρ καὶ τόδε ὀρθὸν ἔχει, ἦν δ' ἐγὼ, οὗτος ὁ νόμος, εἴπου τίς τῳ θυμοῖτο, ἐν [w] τῷ τοιούτῳ πληρῶν

[l] ὡμολογοῦμεν] γε ὁμολογοῦμεν A.
[m] ἰδίως] ἰδίας A.
[n] λεγόμενα] λελεγμένα Trinc.
[o] τὸ ἐμὸν] ταύτην Trinc.
[p] ἂν δύνηται] ὧν δύναται A. ὧν δύνηται Trinc.
[q] οὖσαν, καὶ] οὖσαν, ὅτι Trinc.
[r] τοῦ οἰκείου] οὐ τοῦ οἰκ. A. N.
[s] δίκαι] αἱ δίκαι A.
[t] ὅθεν δὴ] ὅθεν δὲ Trinc.
[u] ἄνθρωποι] ἀνθρώποις A. ubi mox desunt a καὶ μὴν usque ad ἄλλως ἀτιμάσει.
[w] γὰρ] γε Gesn. marg. τῷ N. B.

τὸν θυμὸν, ἧττον ἐπὶ μείζους ἂν [x]ἴοι στάσεις. Πάνυ μὲν οὖν. Πρεσβυτέρῳ μὲν νεωτέρων [y]πάντων ἄρχειν τε καὶ κολάζειν προστετάξεται. Δῆλον. Καὶ μὴν ὅτι γε νεώτερος πρεσβύτερον, ἂν μὴ ἄρχοντες προστάττωσιν, οὔτε [z]ἄλλως βιάζεσθαι ἐπιχειρήσει ποτὲ οὔτε τύπτειν, ὡς τὸ εἰκὸς, οἶμαι δὲ οὐδ' ἄλλως ἀτιμάσει· ἱκανὼ γὰρ τὼ φύλακε [a]κωλύοντε, δέος τε καὶ [b]αἰδώς· αἰδὼς μὲν, ὡς γονέων μὴ ἅπτεσθαι εἴργουσα· δέος δὲ, τὸ τῷ πάσχοντι τοὺς ἄλλους βοηθεῖν, τοὺς μὲν ὡς υἱεῖς, τοὺς δὲ ὡς ἀδελφοὺς, τοὺς δὲ ὡς πατέρας. Ξυμβαίνει γὰρ οὕτως, ἔφη. Πανταχῇ δὴ ἐκ τῶν νόμων εἰρήνην πρὸς ἀλλήλους οἱ ἄνδρες [c]αὔξουσι. Πολλήν γε. Τούτων [d]μὴν ἐν ἑαυτοῖς μὴ στασιαζόντων, οὐδὲν δεινὸν μή ποτε ἡ ἄλλη πόλις πρὸς τούτους ἢ πρὸς ἀλλήλους διχοστατήσῃ. Οὐ γὰρ οὖν. Τά [e]γε μὴν σμικρότατα τῶν κακῶν δι' ἀπρέπειαν ὀκνῶ καὶ λέγειν, ὧν ἀπηλλαγμένοι ἂν εἶεν· κολακείας τε πλουσίων πένητες, ἀπορίας [f]τε καὶ ἀλγηδόνας ὅσας ἐν [g]παιδοτροφίαις καὶ χρηματισμοῖς διὰ τροφὴν οἰκετῶν ἀναγκαίαν ἴσχουσι, τὰ μὲν δανειζόμενοι, τὰ δ' [h]ἐξαρνούμενοι, τὰ δὲ πάντως πορισάμενοι, [i]θέμενοι παρὰ γυναῖκάς τε καὶ οἰκέτας, [k]ταμιεύειν παραδόντες· ὅσα τε, ὦ φίλε, περὶ αὐτὰ καὶ οἷα πάσχουσι, δῆλά τε καὶ ἀγεννῆ καὶ οὐκ ἄξια λέγειν. Δῆλα γὰρ, ἔφη, καὶ τυφλῷ. Πάντων [l]τε δὴ τούτων ἀπαλλάξονται, [m]ζήσουσί τε τοῦ μακαριστοῦ βίου, ὃν οἱ Ὀλυμπιονῖκαι ζῶσι, μακαριώτερον. Πῇ;

[x] ἴοι] εἴη Trinc. et mox μὴν pro μὲν. Dedi στάσεις pro στάσις ex Platone.
[y] πάντων] πάντη B. τάντη Trinc.
[z] ἄλλως] ἄλλον N. Trinc.
[a] κωλύοντε] κωλύονται A.
[b] αἰδώς] αἶδὼς bis A.
[c] αὔξουσι] ἄρξουσι A. ἕξουσι Gesn. marg. f. l. ἄξουσι.
[d] μὴν] μὲν B.
[e] γε μὴν] γὰρ δὴ A.
[f] τε καὶ] τε om. Trinc.
[g] παιδοτροφίαις] παιδοτροφία A.
[h] ἐξαρνούμενοι] ἐξαρκούμενοι A. Trinc.
[i] θέμενοι deest A.
[k] ταμιεύειν παραδόντες] παραδιδόντες ταμιεύειν A.
[l] δὴ] δὲ δὴ A. πάντοτε δὴ Trinc. πάντοτε δέ B.
[m] ζήσουσι] ζήτουσι A.

Διὰ σμικρόν που μέρος εὐδαιμονίζονται ἐκεῖνοι, ὧν τούτοις ὑπάρχει· ἥ τε γὰρ τῶνδε νίκη, καλλίων, ἥ τ' ἐκ τοῦ δημοσίου [n] τροφὴ, τελεωτέρα· [o] νίκην τε γὰρ νικῶσι, [p] ξυμπάσης τῆς πόλεως [q] σωτηρίαν· τροφῇ τε καὶ τοῖς ἄλλοις πᾶσιν ὅσων [r] βίος δεῖται αὐτοί τε καὶ παῖδες [s] ἀναδοῦνται. Καὶ γέρα δέχονται παρὰ τῆς αὐτῶν πόλεως ζῶντες, [t] καὶ τελευτήσαντες ταφῆς ἀξίας μετέχουσι. Καὶ μάλα, ἔφη, [u] καλά.

103 [a] Ἐν ταυτῷ.

Φαίνεταί μοι, ὥσπερ καὶ ὀνομάζεται δύο ταῦτα τὰ ὀνόματα, πόλεμός τε καὶ στάσις, οὕτω καὶ εἶναι δύο ὄντα ἐπὶ δυοῖν τινοῖν διαφοραῖν. Λέγω δὲ τὰ δύο, τὸ μὲν οἰκεῖον καὶ ξυγγενὲς, τὸ δὲ ἀλλότριον καὶ ὀθνεῖον. Ἐπὶ μὲν οὖν τῇ τοῦ οἰκείου ἔχθρᾳ, στάσις κέκληται· ἐπὶ δὲ τῇ τοῦ ἀλλοτρίου, πόλεμος.

104 [a] Ἐν ταυτῷ.

Τιθῶμεν δὴ καὶ τοῦτον τὸν νόμον τοῖς φύλαξι, μήτε γῆν τέμνειν, μήτε οἰκίας ἐμπιπράναι; Θῶμεν, ἔφη, καὶ ἔχειν γε καλῶς ταῦτά τε καὶ τὰ πρόσθεν. Ἀλλὰ [b] γάρ μοι δοκεῖς, ὦ Σώκρατες, ἐάν τις σοὶ τὰ τοιαῦτα ἐπιτρέπῃ λέγειν, οὐδέποτε [c] μνησθήσεσθαι ὃ ἐν τῷ πρόσθεν παρωσάμενος, πάντα ταῦτα εἴρηκας, τὸ, ὡς δυνατὴ αὕτη ἡ πολιτεία γενέσθαι, καὶ τίνα τρόπον ποτὲ δυνατή· ἐπεὶ ὅτι γε εἰ γένοιτο, πάντ' ἂν εἴη ἀγαθὰ πόλει [d] ᾗ γένοιτο· καὶ ἃ σὺ παραλεί-

[n] τροφὴ] τρυφὴ A.
[o] νίκην. Hinc usque ad τὸ μὲν init. n. 109. om. Trinc.
[p] ξυμπάσης] ξυναπάσης A.
[q] σωτηρίαν] σώτειραν A.
[r] βίος] βι' A.
[s] ἀναδοῦνται] ἀναιδοῦνται A.
[t] καὶ] τε καὶ A.
[u] καλὰ] καλῶς A.

103.
[a] Sic A. Scil. p. 470.

104.
[a] Sic A. Scil. p. 471.
[b] γάρ μοι] γὰρ om. A.
[c] μνησθήσεσθαι] μνήσεσθαι A.
[d] ᾗ γένοιτο] om. A.

πεις, ἐγὼ λέγω, ὅτι καὶ τοῖς πολεμίοις ἄριστ' ἂν [c] μάχοιντο, τῷ ἥκιστα ἀπολείπειν ἀλλήλους, γινώσκοντές τε καὶ ἀνακαλοῦντες ταῦτα τὰ ὀνόματα [f] ἑαυτοῖς, ἀδελφοὺς, πατέρας, υἱεῖς.

105 [a] Ἐν ταυτῷ.

Σκόπει δὲ, ὃ μέλλω λέγειν. Λέγε, ἔφη. Ἐὰν μὴ, ἦν δ' ἐγὼ, ἢ οἱ φιλόσοφοι βασιλεύωσιν ἐν ταῖς πόλεσιν, ἢ οἱ βασιλεῖς τε νῦν λεγόμενοι καὶ δυνάσται φιλοσοφήσωσι γνησίως τε καὶ ἱκανῶς, καὶ τοῦτο εἰς ταυτὸ ξυμπέσῃ δύναμίς τε πολιτικὴ καὶ φιλοσοφία, τῶν δὲ νῦν πορευομένων χωρὶς ἐφ' ἑκάτερον αἱ πολλαὶ φύσεις ἀποκαθιστῶσι, οὐκ ἔστι κακῶν παῦλα, ὦ φίλε Γλαύκων, ταῖς πόλεσι, ἀλλὰ μὴ δοκῶ δὲ οὐδὲ τῷ ἀνθρωπίνῳ γένει, οὐδὲ αὕτη ἡ πολιτεία μήτε πρότερον φυῇ τε ἐς τὸ δυνατὸν καὶ φῶς ἡλίου ἴδῃ, καὶ νῦν λόγῳ διεληλύθαμεν· ἀλλὰ τοῦτό ἐστιν ὃ ἐμοὶ πάλαι ὄκνον ἐντίθησι λέγειν [b] ὁρῶντι ὡς πολὺ παρὰ δόξαν ῥηθήσεται. Χαλεπὸν γὰρ ἰδεῖν, ὅτι οὐκ ἂν ἄλλη τις εὐδαιμονήσειεν, οὔτε ἰδίᾳ οὔτε δημοσίᾳ.

106 [a] Πλάτωνος Πολιτείας ϛ.

Ἀλλὰ τοῦτο καὶ ἐπαιτιῶμαι μηδεμίαν ἀξίαν εἶναι [b] τῶν νῦν κατάστασιν πόλεως φιλοσόφου φύσεως· διὸ καὶ στρέφεσθαί τε καὶ ἀλλοιοῦσθαι αὐτὴν, ὥσπερ ξενικὸν σπέρμα ἐν γῇ ἄλλῃ σπειρόμενον, ἐξίτηλον εἰς τὸ ἐπιχώριον φιλεῖ κρατούμενον ἰέναι, οὕτω καὶ τοῦτο τὸ γένος, νῦν μὲν οὐκ [c] ἴσχον τὴν αὑτοῦ δύναμιν, [d] εἰς ἀλλότριον εἶδος ἐκπίπτειν· εἰ δὲ λήψεται τὴν ἀρίστην πολιτείαν, ὥσπερ καὶ αὐτὸ ἄριστόν ἐστι,

[c] μάχοιτο] μάχοιντο A.
[f] ἑαυτοῖς] ἑαυτοὺς A.

105.

[a] Accedit hic locus ex A. Scil. p. 473.
[b] ὁρῶν τε et mox παραδόξων A.

106.

[a] Sic A. Scil. p. 497.
[b] τὴν] τῶν A.
[c] ἴσχον] ἴσχυν A. Voluit ἴσχειν, quod habent mss. quidam Platonis.
[d] εἰς ἀλλότριον εἶδος] ἀλλ' εἰς ἀ. ἦθος A.

[c] τότε δηλώσει ὅτι τοῦτο μὲν τῷ ὄντι θεῖον ἦν· τὰ δὲ ἄλλα ἀνθρώπινα, τά τε τῶν φύσεων καὶ τῶν ἐπιτηδευμάτων.

107 [a] Πλάτωνος Πολιτείας ζ.

Τὸ δέ που ἀληθὲς ὧδ' ἔχει· ἐν πόλει ᾗ ἥκιστα πρόθυμοι ἄρχειν οἱ μέλλοντες ἄρξειν, ταύτην ἄριστα καὶ [b] ἀστασιαστότατα ἀνάγκη οἰκεῖσθαι· τὴν δ' ἐναντίους ἄρχοντας σχοῦσαν, ἐναντίως.

108 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ἐν μόνῃ γὰρ αὐτῇ ἄρξουσιν οἱ τῷ ὄντι πλούσιοι, οὐ χρυσίου, ἀλλ' οὗ δεῖ τὸν εὐδαίμονα πλουτεῖν, ζωῆς ἀγαθῆς τε καὶ ἔμφρονος· εἰ δὲ πτωχοὶ καὶ πεινῶντες ἀγαθῶν ἰδίων ἐπὶ τὰ δημόσια [b] ἴασιν, ἐντεῦθεν οἰόμενοι τἀγαθὸν δεῖν ἁρπάζειν, οὐκ ἔστι. Περιμάχητον γὰρ τὸ ἄρχειν γιγνόμενον, οἰκεῖος ὢν καὶ ἔνδον ὁ τοιοῦτος πόλεμος αὐτούς τε ἀπόλλυσι καὶ τὴν ἄλλην πόλιν.

109 [a] Τὸ μὲν τοίνυν ἀληθές, ἦν δ' ἐγώ, οὕτω· εἰ δὲ καὶ τοῦτο προθυμηθῆναι χρὴ σὴν χάριν ἀποδεῖξαι πῇ μάλιστα καὶ κατὰ τί δυνατώτατα ἂν εἴη, πάλιν μοι πρὸς τὴν τοιαύτην ἀπόδειξιν τὰ αὐτὰ [b] διωμολόγησαι. Τὰ ποῖα; Ἆρ' οἷόν τέ τι πραχθῆναι ὡς λέγεται, [c] ἢ φύσιν ἔχει πρᾶξιν λέξεως ἧττον ἀληθείας ἐφάπτεσθαι, κἂν εἰ μή τῳ δοκῇ; ἀλλὰ σὺ πότερον ὁμολογεῖς οὕτως, ἢ οὔ; Ὁμολογῶ, ἔφη. [d] Τούτῳ μὲν δὴ μὴ ἀνάγκαζέ με, οἷα τῷ λόγῳ διήλθομεν, τοιαῦτα παντάπασι καὶ τῷ ἔργῳ [e] δὴ γιγνόμενα ἀποφαίνειν, ἀλλ' ἐὰν οἷοί τε γενώμεθα εὑρεῖν, ὡς ἂν ἐγγύτατα τῶν εἰρημένων πόλις

[c] τότε] ποτε A.

107.

[a] Sic A. Scil. p. 520. D.

[b] ἀστασιαστότατα] ἀστασίαστα A. ubi desunt a τήνδ' usque ad ἐναντίως. Supra dedi ταύτην pro ταύτῃ.

108.

[a] Sic A. Scil. p. 521. A.

[b] ἴασιν] ζῶσιν A.

109.

[a] Ibid. V. p. 472. E. Deest hic locus A. et sequentia usque ad 113. inclusive.

[b] διωμολόγησαι] διομολογῆσαι Gesn. marg.

[c] ἢ] ἦ Gesn. marg. Mox πρότερον Trinc.

[d] τούτῳ] τοῦτο Gesn. marg.

[e] δεῖ] δεῖν Trinc. et mox εὑρῶν.

οἰκήσειε, φάναι ἡμᾶς ἐξευρηκέναι, ὡς δυνατὰ ταῦτα γίγνεσθαι ἃ σὺ ἐπιτάττεις. Ἢ οὐκ ἀγαπήσεις τούτων τυγχάνων; ἐγὼ μὲν γὰρ ἀγαπῴην. Καὶ γὰρ ἔγωγε, ἔφη. Τὸ δὲ δὴ μετὰ τοῦτο, ὡς ἔοικε, πειρώμεθα ζητεῖν τε καὶ ἀποδεικνύναι, τί ποτε νῦν κακῶς ἐν ταῖς πόλεσι πράττεται, δι' ὃ οὐχ οὕτως οἰκοῦνται· καὶ τίνος ἂν σμικροτάτου μεταβαλόντος, [f] ἔλθοι εἰς τοῦτον τὸν τρόπον τῆς πολιτείας πόλις· μάλιστα μὲν, ἑνός· εἰ δὲ μὴ, δυοῖν· εἰ δὲ μὴ, ὅτι ὀλιγίστων τὸν ἀριθμὸν καὶ σμικροτάτων τὴν δύναμιν. Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη. Ἑνὸς μὲν τοίνυν, ἦν δ' ἐγὼ, μεταβαλόντος, [g] δοκοῦμέν μοι ἔχειν δεῖξαι, ὅτι μεταπέσοι ἄν· οὐ μέντοι μικροῦ γε, οὐδὲ ῥᾳδίου, δυνατοῦ δέ. Τίνος; ἔφη. Ἐπ' [h] αὐτὸ δὴ, ἦν δ' ἐγὼ, εἶμι, ὃ τῷ μεγίστῳ [i] προσεικάζομεν σχήματι· εἰρήσεται δ' οὖν, εἰ καὶ μέλλει γέλωτί τε ἀτεχνῶς, ὥσπερ κῦμα ἐκγελῶν, καὶ [k] ἀταξίαν καταλύσειν· σκόπει δὲ ὃ μέλλω λέγειν. Λέγε, ἔφη. Ἐὰν μὴ, ἦν δ' ἐγὼ, ἢ οἱ φιλόσοφοι βασιλεύσωσιν [l] ἐν ταῖς πόλεσι, ἢ οἱ βασιλεῖς τε νῦν λεγόμενοι, φιλοσοφήσωσιν.

110[a] Ἀλλὰ μέντοι, εἶπον, τό γε φιλομαθὲς καὶ φιλόσοφον ταυτόν ἐστι. Ταυτὸν γὰρ, ἔφη. Οὐκ οὖν θαρροῦντες τιθῶμεν καὶ ἐν τῷ ἀνθρώπῳ, εἰ μέλλει πρὸς τοὺς οἰκείους γε καὶ γνωρίμους πρᾶός τις ἔσεσθαι φύσει, καὶ φιλόσοφον καὶ φιλομαθῆ αὐτὸν δεῖν εἶναι; Τιθῶμεν, ἔφη. Φιλόσοφος δὴ καὶ θυμοειδὴς καὶ ἰσχυρὸς καὶ ταχὺς ἡμῖν τὴν φύσιν ἔσται, ὁ μέλλων καλὸς κἀγαθὸς φύλαξ ἔσεσθαι πόλεως. Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη.

[f] ἔλθοι] ἔλθῃ Trinc.
[g] δοκοῦμεν] δοκεῖ Gesn. marg.
[h] αὐτὸ] αὐτῷ Trinc.
[i] προσεικάζομεν σχήματι] παρεικάζομεν κύματι Gesn. marg.
[k] ἀταξίαν καταλύσειν] ἀδοξίᾳ κατακλύσειν Gesn. marg.
[l] ἐν ταῖς πόλεσιν καὶ τὰ λοιπὰ] Paullo plura hic adduntur in Platone. GESNER. Vide supra 105.
Ib. ταῖς—φιλοσοφήσωσιν om. B.

110.
[a] Rep. II. p. 376. B. Conjungit Trinc. cum præcedentibus, om. A.

111 [a] Χαλεπὸν μὲν οὖν πόλεώς τε καὶ πολιτείας μὴ παντάπασιν εὐχὰς εἰρηκέναι, ἀλλὰ χαλεπὸν μὲν, δυνατὸν δέ πη, καὶ οὐκ ἄλλῃ πῃ εἴρηται, [b] ἢ ὅτ᾽ ἂν οἱ ἀληθῶς φιλόσοφοι δυνάσται ἢ πλείους ἢ εἷς ἐν πόλει γενόμενοι, τῶν μὲν νῦν τιμῶν καταφρονήσωσιν, [c] ἡγησάμενοι ἀνελευθέρους εἶναι καὶ οὐδενὸς ἀξίους, τὸ δὲ ὀρθὸν περὶ πλείστου ποιησάμενοι, καὶ τὰς ἀπὸ τούτου τιμὰς (μέγιστον δὲ καὶ ἀναγκαιότατον τὸ δίκαιον) καὶ τούτῳ δὴ ὑπηρετοῦντές τε καὶ αὔξοντες αὐτὸ [d] διασκευωρήσωνται τὴν ἑαυτῶν [e] πόλιν. Πῶς; ἔφη. Ὅσοι μὲν οὖν, ἦν δ᾽ ἐγὼ, πρεσβύτεροι τυγχάνωσι δέκα ἐν τῇ πόλει πάντας ἐκπέμψωσιν εἰς τοὺς ἀγροὺς, τοὺς δὲ παῖδας αὐτῶν παραλαβόντες ἐκτὸς τῶν συνήθων, ἃ καὶ οἱ γονεῖς ἔχουσι, θρέψονται ἐν τοῖς σφετέροις τρόποις καὶ νόμοις οὖσιν, οὓς διεληλύθαμεν τότε· καὶ οὕτω τάχιστά τε καὶ ῥᾷστα πόλιν τε καὶ πολιτείαν, ἣν ἐλέγομεν καταστᾶσαν, αὐτήν τε εὐδαιμονήσειν, καὶ τὸ ἔθνος ἐν ᾧ ἂν ἐγγένηται, πλεῖστα ὀνήσειν.

112 [a] Ὁρᾷς τοῦτον ὡς [b] ἐριστικὸν λόγον κατάγεις; ὡς οὐκ ἄρα ἐστὶ ζητεῖν [c] ἀνθρώπῳ, οὔτε ὃ οἶδεν, οὔτε ὃ μὴ οἶδεν· οὔτε γὰρ ἂν ὅ γε οἶδε ζητεῖ, (οἶδε γὰρ, καὶ οὐδὲν δεῖ τῷ γε τοιούτῳ [d] ζητήσεως,) οὔτε ὃ μὴ οἶδεν· οὔτε γὰρ οἶδεν ὅ τι ζητήσει. Οὐκ οὖν καλῶς σοι δοκεῖ λέγεσθαι [e] ὁ λόγος οὗτος, ὦ Σώκρατες; Οὐκ ἔμοιγε. Ἔχεις λέγειν ὅπῃ; Ἔγωγε· ἀκήκοα γὰρ ἀνδρῶν τε καὶ γυναικῶν σοφῶν περὶ τὰ θεῖα πράγματα. [f] Τίνα λόγον λεγόντων; Ἀληθῆ, ἔμοιγε δοκεῖν,

111.

[a] Rep. VII. p. 540. D. Cum præcedentibus conjungit Trinc. Om. A.

[b] ἢ ὅταν] Deest ἢ Trinc.

[c] ἡγησάμενοι—ποιησάμενοι om. B.

[d] διασκευωρήσωνται] διασκευωρήσονται Trinc.

[e] πόλιν] πάλιν B.

112.

[a] E Menone p. 80. E. Deest lemma Trinc. locus A.

[b] ἐρειστικὸν] ἐριστικὸν B.

[c] ἀνθρώπῳ] αὐτῷ Trinc.

[d] ζητήσεως] ζητῆσαι Trinc. et mox μοι pro σοι.

[e] ὁ λόγος οὗτος] ὅλον οὗτος Trinc.

[f] τινα λόγον] λόγον om. B.

[g] καὶ καλόν. Τίνα τοῦτον, καὶ τίνες οἱ λέγοντες; Οἱ μὲν λέγοντές εἰσι τῶν [h] ἱερέων τε καὶ τῶν ἱερειῶν, ὅσοις μεμελέτηκε περὶ ὧν μεταχειρίζονται [i] λόγον οἵοις τε εἶναι δίδοναι· λέγει δὲ καὶ Πίνδαρος καὶ ἄλλοι πολλοὶ τῶν ποιητῶν, ὅσοι [k] θεῖοί εἰσιν· ἃ δὲ λέγουσι, ταυτί ἐστιν· ἀλλὰ σκόπει εἴ σοι δοκοῦσιν ἀληθῆ λέγειν· φασὶ γὰρ τὴν ψυχὴν τοῦ ἀνθρώπου εἶναι ἀθάνατον, καὶ τοτὲ μὲν τελευτᾶν, ὃ δὴ ἀποθνήσκειν [l] καλοῦσι, τοτὲ δὲ πάλιν γίγνεσθαι, ἀπόλλυσθαι δὲ οὐδέποτε· δεῖν δὴ διὰ ταῦτα, ὁσιώτατα διαβιῶναι τὸν βίον·

Οἷσι γὰρ ἂν
Φερσεφόνα ποινὰν παλαιοῦ πένθεος 261
δέξηται, ἐς τὸν ὕπερθεν
[m] ἅλιον κείνων ἐνάτῳ ἔτει
[n] ἀνδιδοῖ ψυχὰν πάλιν,
ἐκ τῶν βασιλῆες ἀγαυοὶ,
καὶ σθένει κραιπνοὶ, [o] σοφίᾳ τε μέγιστοι
ἄνδρες αὔξονται· ἐς δὲ τὸν λοιπὸν χρόνον
ἥρωες ἁγνοὶ πρὸς ἀνθρώπων καλεῦνται.

Ἅτε οὖν ἡ ψυχὴ ἀθάνατος οὖσα, καὶ πολλάκις γεγονυῖα, [p] καὶ ἑωρακυῖα καὶ τὰ [q] ἐνθάδε καὶ τὰ ἐν ᾅδου καὶ πάντα πράγματα, οὐκ ἔστιν ὅ τι οὐ μεμάθηκεν· ὥστε οὐδὲν θαυμαστὸν, καὶ περὶ ἀρετῆς καὶ περὶ ἄλλων οἷόν τε εἶναι αὐτὴν ἀναμνησθῆναι, ἅ γε καὶ πρότερον ἠπίστατο. Ἅτε γὰρ τῆς φύσεως ἁπάσης συγγενοῦς οὔσης, καὶ μεμαθηκυίας ἅπαντα τῆς ψυχῆς, οὐδὲν κωλύει ἓν μόνον ἀναμνησθέντα, ὃ δὴ μάθησιν καλοῦσιν ἄνθρωποι, τἄλλα πάντα αὐτὸν ἀνευρεῖν, ἐάν τις ἀνδρεῖος ᾖ, καὶ μὴ ἀποκάμῃ ζητῶν. Τὸ γὰρ

[g] καὶ καλὸν] καὶ om. B. Mox ib. om. οἱ μὲν λέγοντες. ἃ pro οἱ Trinc.
[h] ἱερέων] ἱερῶν B. ἱερῶς Trinc.
[i] λόγον] λόγων Trinc. οἵους ib.
[k] θεῖοι] θεοὶ Trinc.
[l] καλοῦσι om. Trinc.
[m] ἅλιον κείνων] ἅλιος κείνῳ Trinc.
[n] ἀνδιδοῖ] ἂν διδῶ Trinc.
[o] σοφίᾳ usque ad ἁγνοὶ om. B.
[p] καὶ ἑωρακυῖα om. Trinc.
[q] ἔνθαδε] ἔνθενδε Trinc. et mox ὅτ' οὐ.

ζητεῖν ἄρα καὶ τὸ μανθάνειν, ἀνάμνησις ὅλον ἐστίν. Οὐκ οὖν οὐ δεῖ πείθεσθαι [r]τούτῳ τῷ ἐριστικῷ λόγῳ· οὗτος μὲν γὰρ [s]ἂν ἡμᾶς ἀργοὺς ποιήσειε, καὶ ἔστι τοῖς μαλακοῖς τῶν ἀνθρώπων ἡδὺς ἀκοῦσαι· ὅδε δὲ ἐργαστικούς τε καὶ ζητητικοὺς ποιεῖ, ᾧ ἐγὼ πιστεύων ἀληθῆ εἶναι, ἐθέλω [t]μετὰ σοῦ ζητεῖν ὅ τι ἀρετή ἐστι. Ναί, ὦ Σώκρατες. Ἀλλὰ πῶς λέγεις τοῦτο ὅτι οὐ μανθάνομεν, ἀλλὰ ἣν καλοῦμεν μάθησιν, ἀνάμνησίς ἐστιν, ἔχεις με τοῦτο διδάξαι, ὡς οὕτως ἔχει; Καὶ ἄρτι εἶπον, ὦ Μένων, ὅτι πανοῦργος εἶ, καὶ νῦν ἐρωτᾷς, εἰ ἔχω σε διδάξαι, ὃς οὐ φημὶ διδαχὴν εἶναι, ἀλλ' ἀνάμνησιν, ἵνα δὴ εὐθὺς φαίνωμαι αὐτὸς ἐμαυτῷ τἀναντία λέγων. Οὐ μὰ τὸν Δία, ὦ Σώκρατες, οὐ πρὸς τοῦτο βλέψας εἶπον.

113[a] Ἀκούοι δὴ πᾶς, ὥσπερ νῦν τὰ περὶ θεῶν τε ἤκουε, καὶ τῶν φίλων προπατόρων. Πάντων γὰρ [b]τῶν ἐν τῷ βίῳ κτημάτων μετὰ θεοὺς ψυχὴ θειότατον, [c]οἰκειότατον ὄν· τὰ δ' αὐτοῦ διττὰ [d]παρὰ πᾶσι· τὰ μὲν οὖν κρείττω καὶ ἀμείνω, δεσπόζοντα· τὰ δ' ἥττω καὶ χείρω, δοῦλα. Τῶν οὖν [e]δύο, τὰ δεσπόζοντα ἀεὶ προτιμητέον τῶν δουλευόντων. Οὕτω δὴ τὴν αὑτοῦ ψυχὴν μετὰ θεοὺς ὄντας δεσπότας, καὶ τοὺς τούτοις ἑπομένους, τιμᾶν δεῖν λέγων [f]δευτέραν, ὀρθῶς παρακελεύομαι. Τιμᾷ δ', ὡς ἔπος εἰπεῖν, ἡμῶν οὐδεὶς ὀρθῶς· δοκεῖ δέ· θεῖον γὰρ ἀγαθόν που τιμή· τῶν δὲ κακῶν οὐδὲν τίμιον. Ὁ δ' ἡγούμενος ἤ τισι λόγοις, ἢ δώροις [g]αὐ-

[r] τούτῳ τῷ] τῷ om. Trinc.
[s] ἂν ἡμᾶς] ἂν om. Trinc.
[t] μετὰ σοῦ ζητεῖν] διὰ τὸ ζ. Trinc. ubi mox om. ἀλλά. Deest in fine εἶπον Trinc.

113.

[a] Legg. V. p. 726. Deest lemma Trinc. Locus A.
[b] ἐν τῷ] αὐτῷ Gesn. marg. τῶν ἐν τῷ Trinc.
[c] οἰκειότατον om. B.
[d] παρὰ πᾶσι] παντάπασι Gesn. marg.
[e] δύο] αὐτοῦ Gesn. marg. Mox ἀεὶ om. Trinc.
[f] δευτέραν] δεύτερ' ἄρ' ἂν Trinc. et mox παρακελεύωμαι, τιμᾶν.
[g] αὐτοῖς] αὐτὴν Gesn. marg. ἄξειν pro αὔξειν Trinc. omisso mox μηδὲν.

τοῖς αὔξειν, [h] ἢ τισιν ὑπείξεσι, μηδὲν βελτίω δ' [i] ἐκ χείρονος αὐτὴν ἀπεργαζόμενος, [k] τιμᾶν μὲν δοκεῖ, δρᾷ δὲ τοῦτο οὐδαμῶς. Αὐτίκα παῖς γενόμενος εὐθὺς ἄνθρωπος πᾶς, [l] ἡγεῖται πάντα ἱκανὸς εἶναι γιγνώσκειν, καὶ τιμᾶν οἴεται, ἐπαινῶν τὴν αὑτοῦ ψυχὴν, καὶ προθυμούμενος ἐπιτρέπει πράττειν, [m] ὅ τι ἂν ἐθέλῃ· τὸ δὲ νῦν λεγόμενόν ἐστιν, ὡς δρῶν ταῦτα βλάπτει, καὶ οὐ τιμᾷ· δεῖ δὲ, ὥς φαμεν, μετά γε θεοὺς, δευτέραν· οὐδέ γε ὅτ' ἂν ἄνθρωπος τῶν αὑτοῦ [n] ἕκαστος ἁμαρτημάτων μὴ ἑαυτὸν αἴτιον ἡγῆται, καὶ τῶν πλείστων κακῶν καὶ μεγίστων, ἀλλὰ ἄλλους, ἑαυτὸν δὲ αἰεὶ ἀναίτιον ἐξαιρῇ, [o] τιμῶν τὴν ἑαυτοῦ ψυχὴν, [p] ὡς δὴ 262
δοκεῖ, ὧδε πολλοῦ δεῖ δρᾶν τοῦτο, [q] βλάπτει γάρ· οὐδὲ ὁπότ' ἂν ἡδοναῖς παρὰ λόγον τὸν τοῦ νομοθέτου καὶ ἔπαινον χαρίζηται, τότε οὐδαμῶς τιμᾷ· ἀτιμάζει δὲ, κακῶν καὶ μεταμελείας ἐμπιπλὰς αὐτήν· οὐδέ γε ὁπότ' ἂν αὖ τἀναντία τοὺς ἐπαινουμένους [r] πόνους καὶ φόβους καὶ ἀλγηδόνας καὶ λύπας μὴ διαπονῇ καρτερῶν, ἀλλ' ὑπείκῃ, τότε οὐ τιμᾷ [s] ἀτιμάζων· ἄτιμον γὰρ αὐτὴν ἀπεργάζεται, δρῶν τὰ τοιαῦτα [t] σύμπαντα· οὐδ' ὁπότ' ἂν ἡγῆται [v] ζῆν τοῦτο ἀγαθὸν εἶναι, τιμᾷ, ἀτιμάζει δ' αὐτὴν καὶ τότε· τὰ γὰρ ἐν ᾅδου πράγματα πάντα κακὰ ἡγούμενος τῆς ψυχῆς εἶναι, ὑπείκει τε καὶ οὐκ ἀντιτείνει, διδάσκων τε καὶ ἐλέγχων, ὡς οὐκ [w] οἶδεν οὐδ' εἰ τἀναντία πέφυκε μέγιστα εἶναι πάντων

[h] (ἢ τισιν ὑπεῖξαι) alias non habentur parenthesi inclusa. GESNER. ἀπεῖξαι B. Restitui ὑπείξεσι cum Platonis mss.

[i] εἰς χείρονος] ἐγχειρόμενος Trinc.

[k] τιμᾶν μὲν] τ. δὲ B. Mox ἄρα pro δρᾷ Trinc.

[l] ἡγεῖται usque ad ἀναίτιον om. B.

[m] ὅτι ἂν] ὅταν Trinc.

[n] ἕκαστος] ἑκάστοτε Gesn. margo. Mox ἡγεῖται Trinc.

[o] τιμῶν] τιμᾷ Gesn. marg.

[p] ὡς δὴ] ᾧ ὁ δὴ Trinc.

[q] βλάπτει] πράττει Trinc.

[r] πόνους καὶ om. Trinc.

[s] ἀτιμάζων] ὑπείκων Gesn. marg.

[t] σύμπαντα om. B.

[v] ζῆν] τὸ ζῆν πάντως Gesn. marg.

[w] οἶδεν] οἶδ' ἂν Trinc. ubi mox τὰ οὐράνια pro τἀναντία et om. τοὺς ante ἐκεῖ.

ἀγαθῶν ἡμῖν, τὰ περὶ τοὺς θεοὺς τοὺς ἐκεῖ· οὐδὲ μὴν, [x] πρὸ ἀρετῆς ὁπότ' ἂν αὖ προτιμᾷ τις κάλλος, τοῦτ' ἔστιν οὐχ ἕτερον ἢ ἡ τῆς ψυχῆς [y] ὄντως καὶ πάντως ἀτιμία· ψυχῆς γὰρ σῶμα [z] ἐντιμότερον οὗτος ὁ λόγος φησὶν εἶναι, ψευδόμενος· οὐδὲν γὰρ [a] γηγενὲς Ὀλυμπίων ἐντιμότερον, ἀλλ' ὁ περὶ ψυχῆς [b] ἄλλως δοξάζων, ἀγνοεῖ ὡς θαυμαστοῦ [c] τούτου κτήματος [d] ἀμελεῖ· οὐδέ γε ὁπότ' ἂν χρήματά τις [e] ἐρᾷ κτᾶσθαι μὴ καλῶς, ἢ μὴ δυσχερῶς φέρῃ κτώμενος, δώροις ἄρα τιμᾷ τότε τὴν αὐτοῦ ψυχήν· παντὸς μὲν οὖν λείπει· τὸ γὰρ αὐτῆς τίμιον ἅμα καὶ καλὸν ἀποδίδοται [f] σμικροῦ χρυσίου. Πᾶς γὰρ ὅ τ' ἐπὶ γῆς καὶ ὑπὸ γῆς χρυσὸς ἀρετῆς οὐκ ἀντάξιος, οὐδ', ὡς εἰπεῖν ξυλλήβδην, ὅσα περ νομοθέτης αἰσχρὰ εἶναι καὶ κακὰ διαριθμούμενος [g] τάττῃ καὶ τοὐναντίον ἀγαθὰ καὶ καλὰ, τῶν μὲν ἀπέχεσθαι μὴ [h] ἐθέλῃ πάσῃ μηχανῇ, τὰ δ' ἐπιτηδεύειν ξύμπασαν κατὰ δύναμιν, οὐκ οἶδεν ἐν τούτοις πᾶσι πᾶς ἄνθρωπος ψυχὴν, θειότατον ὂν, ἀτιμότατα καὶ κακοσχημονέστατα διατιθείς. Τὴν γὰρ λεγομένην δίκην τῆς κακουργίας τὴν μεγίστην οὐδεὶς, ὡς ἔπος εἰπεῖν, λογίζεται, ἔστι δὲ ἡ μεγίστη, τὸ ὁμοιοῦσθαι τοῖς οὖσι κακοῖς ἀνδράσιν· ὁμοιούμενον δὲ, τοὺς μὲν ἀγαθοὺς φεύγειν ἄνδρας καὶ λόγους, καὶ τῶν μὲν ἀποσχίζεσθαι, τοῖς δὲ προσκολλᾶσθαι διώκοντα [i] κατὰ τὰς ξυνουσίας· προσπεφυκότα δὲ τοῖς τοιούτοις, ἀνάγκη ποιεῖν καὶ πάσχειν, ἃ πεφύκασιν ἀλλήλους οἱ τοιοῦτοι ποιεῖν καὶ λέγειν. Τοῦτο δὴ οὖν τὸ πάθος δίκη μὲν οὐκ ἔστι· καλὸν γὰρ τό γε δίκαιον καὶ ἡ δίκη· τιμωρία δὲ, ἀδικίας ἀκολου-

[x] πρὸ ἀρετῆς, ὁπόταν αὖ] προᾶραι ταῦτ' ἂν αὖ Trinc. π. ταῦτ' ἂν οὖν B.

[y] ὄντως] οὕτως B. ibid. mox om. καὶ πάντως. et sic Trinc. ubi ante τῆς ψυχῆς deest ἡ.

[z] ἐντιμότερον οὗτος ὁ λόγος] ἀτιμότερον αὐτῆς ὅλον Trinc.

[a] γηγενὲς] τι γένος Trinc.

[b] ἄλλως] καλῶς Trinc.

[c] τούτου] τοῦ Trinc.

[d] ἀμελεῖ] ἀεὶ Trinc.

[e] ἐρᾷ om. Trinc.

[f] σμικροῦ] τοῦ Trinc.

[g] τάττῃ] ταύτῃ Trinc.

[h] ἐθέλῃ] ἐθέλειν Trinc.

[i] κατὰ τὰς] καὶ τὰς Trinc.

θος πάθη, ἧς ὅ τε τυχὼν καὶ μὴ τυγχάνων, ἄθλιος· ὁ μὲν οὐκ ἰατρευόμενος, ὁ δ', ἵνα ἕτεροι πολλοὶ σώζωνται, ἀπολλύμενος. Τιμὴ δ' ἐστὶν ἡμῖν, ὡς τὸ ὅλον εἰπεῖν, τοῖς μὲν ἀμείνοσιν ἕπεσθαι· τὰ δὲ χείρω, γενέσθαι βελτίω δυνατὰ, τοῦτ' αὐτὸ ὡς ἄριστα ἀποτελεῖν. Ψυχῆς [i] οὖν ἀνθρώπῳ κτῆμα οὐκ ἔστιν εὐφυέστερον εἰς τὸ φυγεῖν μὲν τὸ κακὸν, ἰχνεῦσαι δὲ καὶ ἑλεῖν τὸ πάντων ἄριστον, καὶ [j] ἑλόντα αὖ, ξυνοικεῖν κοινῇ τὸν ἐπίλοιπον βίον· [k] διὸ δεύτερον ἐτάχθη [l] τιμή. Τὸ δὲ τρίτον, πᾶς ἂν τοῦτό γε [m] νοήσειε τὴν τοῦ σώματος εἶναι κατὰ φύσιν τιμήν. Τὰς δ' αὖ τιμὰς δεῖ σκο- 263
πεῖν, καὶ [n] τούτων τίνες ἀληθεῖς, καὶ ὅσαι κίβδηλοι· [o] τοῦτο δὲ νομοθέτου. Μηνύειν δὴ φαίνεται, τάσδε καὶ τοιάσδε [p] τινὰς αὐτὰς εἶναι, τίμιον εἶναι σῶμα οὐ τὸ καλὸν οὐδὲ τὸ ἰσχυρὸν οὐδὲ τὸ τάχος ἔχον οὐδὲ μέγα οὐδὲ τὸ ὑγιεινὸν, καίτοι γε πολλοῖς ἂν τοῦτο δοκοῖ, καὶ μὴν οὐδὲ τὰ τούτων γε ἐναντία, τὰ δ' ἐν τῷ μέσῳ ἁπάσης ταύτης τῆς ἕξεως ἐφαπτόμενα σωφρονέστατα [q] ἅμα τε καὶ ἀσφαλέστατα εἶναι μακρῷ· τὰ μὲν γὰρ χαύνους τὰς ψυχὰς καὶ θρασείας ποιεῖ, τὰ δὲ, ταπεινάς τε καὶ ἀνελευθέρους. Ὡς δ' αὔτως [r] ἡ τῶν χρημάτων [καὶ κτημάτων δουλείας, ὡς τὸ πολὺ] κτῆσις καὶ τιμήσεως, κατὰ τὸν αὐτὸν ῥυθμὸν [s] ἔχει· τὰ μὲν ὑπέρογκα γὰρ ἑκάστων τούτων ἔχθρας καὶ στάσεις ἀπεργάζεται ἐν ταῖς πόλεσι, καὶ ἰδίᾳ· τὰ δ' ἐλλείποντα, δοῦλον. Μὴ δή τις [t] φιλοχρηματείτω παίδων γε ἕνεκα,

[i] οὖν] αὖ Gesn. marg. Mox ἐμφυέστερον Trinc.
[j] ἑλόντα] ἐλθόντα Trinc.
[k] διὸ] τὸ δὲ B.
[l] τιμὴ om. Trinc.
[m] νοήσεις] ὀνήσει εἰ Trinc.
[n] τούτων] τούτου Trinc.
[o] τοῦτο δὲ] τούτου δὲ Trinc.
[p] τινὰς] τιμάς B.
[q] ἅμα τε] ἅμα τε καὶ B.
[r] ἡ τῶν χρημάτων κτῆσις καὶ τιμήσεων mediis omissis Trinc. Gesneri mentem non assecutus est typographus: voluit nempe h. l. ex Platone inserere καὶ κτημάτων, et mox δουλείας ὡς τ. π. pro δοῦλον.
[s] ἔχει om. B. et mox τούτων.
[t] φιλοχρηματείτω] φιλοχρημονείτω Gesn. marg. Paullo ante δῆλον Trinc. pro δοῦλον.

[u]ἵνα ὅτι πλουσιωτάτους καταλείπῃ· οὔτε γὰρ ἐκείνοις, οὔτε αὖ τῇ πόλει ἄμεινον· ἡ γὰρ τῶν νέων ἀκολάκευτος οὐσία, τῶν δὲ ἀναγκαίων [v]μὴ [w]ἐνδεὴς, αὕτη πασῶν μουσικωτάτη τε καὶ ἀρίστη· [x]ξυμφωνοῦσα γὰρ ἡμῖν καὶ ξυναρμόττουσα εἰς πάντα, ἄλυπον [y]τὸν βίον ἀπεργάζεται. [z]Παισὶ δὲ αἰδῶ χρὴ πολλὴν, οὐ χρυσὸν [a]καταλείπειν· οἰόμεθα δὲ ἐπιπλήττοντες τοῖς νέοις ἀναισχυντοῦσι τοῦτο [b]καταλείψειν· τὸ δ' ἐστὶν οὐκ ἐκ τοῦ νῦν παρακελεύσματος τοῖς νέοις γιγνόμενον, ὃ [c]παρακελεύονται, λέγοντες, ὡς δεῖ πάντα αἰσχύνεσθαι [d]τὸν νέον· ὁ δὲ ἔμφρων νομοθέτης τοῖς πρεσβυτέροις ἂν μᾶλλον παρακελεύοιτο αἰσχύνεσθαι τοὺς νέους, καὶ πάντων μάλιστα εὐλαβεῖσθαι, μήποτέ τις [e]αὐτὸν ἴδῃ τῶν νέων, ἢ καὶ ἐπακούσῃ, δρῶντα ἢ λέγοντά τι τῶν αἰσχρῶν· ὡς ὅπου ἀναισχυντοῦσι γέροντες, ἀνάγκη καὶ νέους ἐνταῦθα εἶναι ἀναιδεστάτους· παιδεία γὰρ νέων διαφέρουσά ἐστιν ἅμα καὶ [f]αὐτῶν, οὐ τὸ νουθετεῖν, ἀλλ', ἅπερ ἂν ἄλλον νουθετῶν εἴποι τις, φαίνεσθαι ταῦτα αὐτὸν δρῶντα διὰ βίου. Ξυγγένειάν [g]τε καὶ ὁμογνίων θεῶν κοινωνίαν πᾶσαν ταὐτοῦ φύσιν αἵματος ἔχουσαν τιμῶν τις καὶ σεβόμενος, εὔνους ἂν [h]γενεθλίους θεοὺς εἰς παίδων [i]αὐτοῦ σπορὰν ἴσχοι κατὰ λόγον. Καὶ μὴν τό γε φίλων καὶ [k]ἑταίρων πρὸς τὰς ἐν βίῳ ὁμιλίας [l]εὐμενὲς ἄν τις κτῷτο, μείζους μὲν καὶ σεμνοτέρας τὰς ἐκείνων [m]ὑπηρεσίας εἰς αὐτὸν ἡγούμενος, ἢ

[u] ἵνα om. Trinc. qui mox dat καταλείπει, et καλὸν pro ἐκείνοις.
[v] μὴ] μηδ' B.
[w] ἐνδεὴς αὕτη πασῶν] ἐνδεχομένη Trinc. B.
[x] ξυμφωνοῦσα] ξυμφυτοῦσα B.
[y] τὸν βίον] om. Trinc. et mox om. τοῖς νέοις.
[z] παισὶ] πᾶσι B.
[a] καταλείπειν] καταλίπειν B.
[b] καταλείψειν] καταλείψει B.
[c] παρακελεύονται] πάντες Trinc.
[d] τὸν νέον—αἰσχύνεσθαι om. Tr.
[e] αὐτὸν om. Trinc.
[f] αὐτῶν οὐ τὸ] αὐτὸ Trinc. qui sup. om. νέων.
[g] τε καὶ] τε om. Trinc.
[h] γενεθλίους] γενέσθαι οὓς Gesn. marg.
[i] αὐτοῦ] αὖ τούτου Trinc. ubi τόγε om. ante φίλων.
[k] ἑταίρων] ἑτέρων B. et sic infra.
[l] εὐμενὲς om. Trinc.
[m] ὑπηρεσίας εἰς αὐτὸν] ὑπὲρ αὐτῶν Trinc.

ἐκεῖνοι, ἐλάττους δ' [n] αὖ τὰς αὑτοῦ διανοούμενος εἰς τοὺς φίλους χάριτας [o] ὑπὲρ αὐτῶν τῶν φίλων [p] καὶ ἑταίρων· [q] εἰς γε μὴν πόλιν καὶ πολίτας μακρῷ ἄριστος, ὅστις [r] πρὸ τοῦ νικῆσαι Ὀλυμπιᾶσι καὶ ἁπάντων ἀγώνων πολεμικῶν τε καὶ εἰρηνικῶν, νικᾶν δέξαιτ' ἂν [s] δόξῃ ὑπηρεσίας τῶν οἰκοῖ νόμων, ὡς ὑπηρετηκὼς πάντων [t] μάλιστ' ἀνθρώπων αὐτοῖς ἐν τῷ βίῳ. Πρὸς δ' αὖ τοὺς ξένους διανοητέον, ὡς ἁγιώτατα [v] ξυμβόλαια ὄντα· σχεδὸν γὰρ πάντα ἐστὶ τὰ τῶν ξένων καὶ εἰς τοὺς ξένους ἁμαρτήματα παρὰ τῶν πολιτῶν εἰς θεὸν ἀνηρτημένα, τιμωρὸν μᾶλλον· ἔρημος γὰρ ὢν ὁ ξένος ἑταίρων τε καὶ ξυγγενῶν, ἐλεεινότερος ἀνθρώποις καὶ θεοῖς· [w] ὁ δυνάμενος οὖν τιμωρεῖν, μᾶλλον βοηθεῖ προθυμότερον, 264 δύναται δὲ διαφερόντως ὁ ξένιος ἑκάστων δαίμων καὶ θεὸς, [x] τῷ ξενίῳ συνεπόμενοι [y] Διΐ. Πολλῆς οὖν εὐλαβείας, ᾧ καὶ σμικρὸν προμηθείας ἔνι, μηδὲν [z] ἁμάρτημα περὶ ξένους ἁμαρτόντα ἐν τῷ βίῳ, πρὸς τὸ τέλος [a] αὑτοῦ πορευθῆναι. Ξενικῶν δ' αὖ καὶ ἐπιχωρίων ἁμαρτημάτων, [b] τὸ περὶ τοὺς ἱκέτας μέγιστον γίγνεται ἁμάρτημα ἑκάστοις· μεθ' οὗ γὰρ ἱκετεύσας μάρτυρος ὁ ἱκέτης θεοῦ ἔτυχεν [c] ὁμολογιῶν, φύλαξ διαφέρων οὗτος τοῦ παθόντος γίγνεται· ὥστ' οὐκ ἂν ποτε ἀτιμώρητος πάθοι, ὁ τυχὼν ὧν [d] ἔπαθε. Τὰ μὲν οὖν περὶ γονέας τε καὶ [e] ἑαυτὸν καὶ τὰ ἑαυτοῦ, περὶ πόλιν τε καὶ φίλους καὶ ξυγγένειαν, ξενικά τε καὶ ἐπιχώρια διεληλύ-

[n] αὖ τὰς] αὐτὰς B.
[o] ὑπὲρ αὐτῶν] ὑπὲρ non est alias. Gesner.
[p] δὲ καὶ] δὲ om. Trinc.
[q] εἰς τὴν] εἰς γε μὴν Trinc.
[r] πρὸ τοῦ] πρὸ τοῦ νικῆσαι Trinc.
[s] δόξῃ] δόξης Trinc. Dedi mox οἴκοι νόμων pro οἰκονόμων, et ὑπηρετηκὼς pro ὑπηρετικῶς.
[t] μάλιστ'] κάλλιστα Gesn. marg.
[v] ξυμβόλαια ὄντα] ξύμβολα ὄντας Trinc.
[w] ὁ δυνάμενος] οὐ δυν. Trinc.
[x] τῷ ξενίῳ—διΐ] τὰ ξένια—δὴ Trinc.
[y] διΐ] δὲ B.
[z] ἁμάρτημα] ἁμαρτήματα B. Tr.
[a] αὑτοῦ] αὐτὸν Trinc.
[b] τὸ περὶ τοὺς] τοὺς περὶ τοὺς Trinc. et om. μέγιστον.
[c] ὁμολογιῶν] ὁμολογεῖ ἂν Trinc.
[d] ἔπαθες] ἔπαθε B. Supra πάθῃ Trinc.
[e] ἑαυτὸν] ἑαυτῶν Trinc.

θαμεν σχεδὸν ὁμιλήματα· τὸ δὲ ποῖός τις ὢν αὐτὸς ἂν [f] κάλλιστα διαγάγοι τὸν βίον, ἑπόμενον τούτῳ διεξελθεῖν· [g] ὅσ᾽ οὖν μὴ νόμος ἀλλ᾽ ἔπαινος παιδεύων καὶ ψόγος ἑκάστους [h] εὐηνίους μᾶλλον τοῖς τεθήσεσθαι μέλλουσι νόμοις ἀπεργάζεται, ταῦτ᾽ ἐστὶ μετὰ τοῦτο ἡμῖν [i] ῥητέον. Ἀλήθεια δὴ πάντων μὲν ἀγαθῶν θεοῖς ἡγεῖται, πάντων δὲ ἀνθρώποις, ἧς, ὁ γενήσεσθαι μέλλων μακάριός τε καὶ εὐδαίμων, ἐξ ἀρχῆς εὐθὺς μέτοχος εἴη, ἵνα ὡς ὅτι πλεῖστον χρόνον ἀληθὴς ὢν [k] διαβιοῖ· πιστὸς γάρ· ὁ δὲ ἄπιστος, ᾧ φίλον ψεῦδος ἑκούσιον· ὅτῳ δὲ ἀκούσιον, ἄνους· ὧν οὐδέτερον ζηλωτόν· [l] ἄφιλος γὰρ δὴ πᾶς ὅ γε ἄπιστος καὶ ἀμαθής, χρόνου δὲ προϊόντος γνωσθεὶς, εἰς τὸ χαλεπὸν γῆρας [m] ἐρημίαν αὐτῷ πᾶσαν κατεσκευάσατο ἐπὶ τέλει τοῦ βίου, ὥστε, ζώντων καὶ μὴ ἑταίρων καὶ παίδων, σχεδὸν [n] ὁμοίως ὀρφανὸν αὐτῷ γενέσθαι τὸν βίον. Τίμιος μὲν δὴ καὶ ὁ μηδὲν ἀδικῶν· ὁ δὲ [o] μὴ δ᾽ ἐπιτρέπων τοῖς [p] θέλουσιν ἀδικεῖν, πλέον ἢ διπλασίας τιμῆς ἄξιος ἐκείνου· ὁ μὲν γὰρ ἑνὸς, ὁ δὲ [q] πολλῶν ἀντάξιος ἑτέρων, μηνύων τὴν τῶν ἄλλων τοῖς ἄρχουσιν ἀδικίαν· ὁ δὲ καὶ ξυγκολάζων εἰς δύναμιν τοῖς ἄρχουσιν, ὁ μέγας ἀνὴρ ἐν πόλει καὶ τέλειος οὗτος ἀναγορευέσθω νικηφόρος ἀρετῇ. Τὸν [r] αὐτὸν δὴ τοῦτον ἔπαινον, καὶ περὶ σωφροσύνης χρὴ λέγειν, καὶ περὶ φρονήσεως, καὶ ὅσα ἄλλα ἀγαθά τις κέκτηται, [s] δυνατὰ μὴ μόνον αὐτὸν ἔχειν, ἀλλὰ καὶ ἄλλοις [t] μεταδιδόναι. Τὸν μὲν μεταδιδόντα, ὡς ἀκρό-

[f] κάλλιστα] μάλιστα B.
[g] ὃς ἂν οὖν μὴ] ὅσον μὴ Trinc.
[h] εὐηνίους] εὐνοϊκοὺς καὶ εὐμενεῖς Gesn. marg. et mox ἑκούσιον.
[i] ῥητέα] ῥητέον Trinc.
[k] διαβιοῖ καὶ ἄπιστος. ὧ φίλον ψ. ἑκούσιος Trinc.
[l] ἄφιλος γὰρ δὴ] ἀλλὰ Trinc.
[m] ἐρημίαν αὐτῷ πᾶσαν]. κατὰ πᾶσαν Trinc. et mox κατεσκευαστο.
[n] ὁμοίως om. Trinc.
[o] μὴ ἐπιτρέπων] μὴ δ᾽ ἐ. Trinc.
[p] θέλουσιν] ἀδικοῦσιν Gesn. marg.
[q] πολλῶν om. Trinc.
[r] αὐτὸν δὴ τ.] αὐτὸν om. Trinc. ib. paullo ante ἔχουσιν pro ἄρχουσιν.
[s] δυνατὰ] καλὰ Trinc.
[t] μεταδιδόναι] εἶναι διδόναι Trinc.

τατον χρὴ τιμᾶν· τὸν δὲ αὖ μὴ δυνάμενον, ἐθέλοντα δὲ, ἐὰν δεύτερον· τὸν δὲ φθονοῦντα, καὶ [v] θέλοντα μηδενὶ κοινωνὸν διὰ φιλίας γιγνόμενον ἀγαθῶν τινῶν, αὐτὸν μὲν ψέγειν, τὸ δὲ κτῆμα μηδὲν μᾶλλον διὰ τὸν κεκτημένον ἀτιμάζειν, ἀλλὰ κτᾶσθαι κατὰ δύναμιν.

114 [a] Πλάτωνος Πολιτείας η̄.

[b] Εἶεν. Ταῦτα μὲν δὴ ὡμολόγηται, ὦ Γλαύκων, τῇ μελλούσῃ ἄκρως οἰκεῖν πόλει κοινὰς μὲν γυναῖκας, κοινοὺς δὲ παῖδας εἶναι, καὶ πᾶσαν παιδείαν· ὡσαύτως δὲ τὰ ἐπιτηδεύματα κοινὰ, ἐν πολέμῳ τε καὶ [c] εἰρήνῃ· [d] βασιλέας δὲ αὐτῶν εἶναι τοὺς ἐν φιλοσοφίᾳ τε καὶ πρὸς τὸν πόλεμον γεγονότας ἀρίστους. Ὡμολόγηται, ἔφη. Καὶ μὴν καὶ τάδε ξυνεχωρήσαμεν, ὡς ὅτ' ἂν δὴ καταστῶσιν οἱ ἄρχοντες ἄγοντες τοὺς στρατιώτας, κατοικιοῦσιν εἰς οἰκήσεις, οἵας προείπομεν, [e] ἴδιον μὲν οὐδὲν οὐδενὶ ἐχούσας, κοινὰς δὲ πᾶσι.

115 [a] Ἐν ταυτῷ.

Σχεδὸν γὰρ καθάπερ [b] νῦν διελήλυθας, περὶ τῆς πόλεως τοὺς λόγους [c] ἐποιοῦ, λέγων, ὡς ἀγαθὴν μὲν τὴν τοιαύτην, οἵαν τότε διῆλθες, τιθείης πόλιν, καὶ ἄνδρα τὸν ἐκείνῃ ὅμοιον, [d] καὶ ταῦτα, ὡς ἔοικε, καλλίω ἔτι ἔχων εἰπεῖν πόλιν τε καὶ ἄνδρα· ἀλλ' οὖν δὴ τὰς ἄλλας ἡμαρτημένας ἔλεγες, [e] εἰ αὕτη ὀρθή. Τῶν δὲ λοιπῶν πολιτειῶν ἔφησθα, ὡς μνημονεύω, τέτταρα εἴδη [f] εἶναι.—Καὶ μὴν, ἦδ' ὅς, ἐπιθυμῶ γε καὶ αὐτὸς ἀκοῦσαι τίνας λέγεις τὰς τεττάρας πολιτείας. Οὐ

[v] θέλοντα] ἑκόντα Gesn. marg.

114.

[a] Sic A. Scil. p. 543. A. Deest lemma Trinc.

[b] εἶεν ταῦτα] ταῦτα B.

[c] εἰρήνῃ] ἐν εἰρήνῃ A.

[d] βασιλέας τε] βασιλέας δὲ A. mox om. ἐν.

[e] ἴδιον δὲ οὐδὲν οὐδενὶ] ἴδιον μὲν οὐδὲν A. οὐδενὶ deest item B.

115.

[a] Sic A. Scil. p. 543. C. Deest locus Trinc.

[b] νῦν διελήλυθας] ϛʹ διεληλυθϛʹ A. i. e. ὡς διεληλυθὼς ut unus saltem ms. Platonis.

[c] ἐποιοῦ] ἐποίουν A.

[d] καὶ ταῦτα—ἄνδρα om. A.

[e] εἰ αὕτη] ἡ α. A.

[f] ἔχειν] εἶναι A. ubi reliqua, omissa in editis, leguntur.

χαλεπῶς, ἦν δ' ἐγὼ, ἀκούσῃ. Εἰσὶ γὰρ ἃς λέγω, αἵπερ καὶ ὀνόματ' ἔχουσι, ἥ τε ὑπὸ τῶν πολλῶν ἐπαινουμένη ἡ Κρητική τε καὶ Λακωνικὴ αὕτη· καὶ δευτέρα καὶ δευτέρως ἐπαινουμένη, καλουμένη δὲ ὀλιγαρχία, συχνῶν γέμουσα κακῶν πολιτεία· ἥ τε ταύτῃ διάφορος καὶ ἐφεξῆς γιγνομένη, δημοκρατία· καὶ ἡ γενναία δὴ τυραννὶς, καὶ πασῶν τούτων διαφέρουσα καὶ ἔσχατον πόλεως νόσημα· ἤ τινα ἄλλην ἔχεις ἰδίαν πολιτείαν, ἥ τις καὶ ἐν εἴδει διαφανεῖ τινι κεῖται; δυναστεῖαι γὰρ καὶ ὠνηταὶ βασιλεῖαι, καὶ τοιαῦταί τινες πολιτεῖαι, μεταξύ τι τούτων που εἰσί. Εὕροι δ' ἄν τις αὐτὰς οὐκ ἐλάττους περὶ τοὺς βαρβάρους ἢ τοὺς Ἕλληνας. Πολλοὶ γοῦν καὶ ἄτοποι, ἔφη, λέγονται. Οἶσθα οὖν, ἦν δ' ἐγὼ, ὅτι καὶ ἀνθρώπων εἴδη τοσαῦτα ἀνάγκη τρόπον εἶναι, ὁσάπερ καὶ πολιτειῶν; ἢ οἴει ἐκ δρυὸς ποθὲν ἢ ἐκ πέτρας τὰς πολιτείας γίγνεσθαι, ἀλλ' οὐχὶ ἐκ τῶν ἠθῶν τῶν ἐν ταῖς πόλεσιν, αἳ ἂν ὥσπερ ῥέψαντα τὰ ἄλλα ἐφελκύσηται; Οὐδαμῶς ἔγωγε, ἔφη, ἄλλοθεν ἢ ἐντεῦθεν. Οὐκ οὖν αἱ τῶν πόλεων πέντε, καὶ αἱ τῶν ἰδιωτῶν κατασκευαὶ τῆς ψυχῆς πέντε ἂν εἶεν; Τί μάν;

116 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ἡ γὰρ ἄγαν ἐλευθερία ἔοικεν οὐκ εἰς ἄλλό τι ἢ εἰς ἄγαν δουλείαν μεταβάλλειν καὶ [b] ἰδιώτῃ καὶ πόλει. Εἰκὸς γάρ. Εἰκότως τοίνυν, εἶπον, οὐκ ἐξ ἄλλης πολιτείας τυραννὶς καθίσταται, ἢ ἐκ δημοκρατίας.

117 [a] Τοῦ αὐτοῦ Πολιτείας θ̄.

Μὴ ἐκπληττώμεθα [b] εἰς τὸν τύραννον ἕνα ὄντα βλέποντες, μηδ' εἴ τινες ὀλίγοι περὶ ἐκεῖνον· ἀλλ' [c] ὡς χρὴ, ὅλην τὴν

116.

[a] Sic A. Scil. p. 564. A. Deest locus Trinc.

[b] ἰδιώτῃ] ἰδιώτην A. et mox πόλιν pro πόλει.

117.

[a] Sic A. Scil. p. 576. Deest lemma Trinc.

[b] εἰς] πρὸς A.

[c] ὡς] εἰς A. Mox articulus ante πόλιν deest A. Trinc.

πόλιν εἰσελθόντας θεάσασθαι, καταδύντες εἰς ἅπασαν, καὶ ἰδόντες, οὕτω δόξαν [d]ἀποφαινώμεθα. Ἀλλ' ὀρθῶς, ἔφη, [e]προκαλεῖ· καὶ δῆλον παντὶ ὅτι τυραννουμένης μὲν οὐκ ἔστιν ἀθλιωτέρα, βασιλευομένης δὲ οὐκ εὐδαιμονεστέρα.

118 [a]Ἐν ταυτῷ.

Ἴθι δή μοι, ἔφην ἐγὼ, νῦν ἤδη ὥσπερ ὁ διὰ πάντων κριτὴς ἀποφαίνεται, καὶ σὺ οὕτω· τίς πρῶτος κατὰ τὴν σὴν δόξαν [b]εὐδαιμονίᾳ, [c]καὶ τίς δεύτερος, καὶ τοὺς ἄλλους ἑξῆς πέντε ὄντας [d]κρῖναι, βασιλικὸν, τιμοκρατικὸν, ὀλιγαρχικὸν, δημοκρατικὸν, τυραννικόν. Ἀλλὰ ῥᾳδία, ἔφη, κρίσις· καθάπερ γὰρ εἰσῆλθον ἔγωγε ὥσπερ χοροὺς [e]κρίνω ἀρετῇ καὶ κακίᾳ, καὶ εὐδαιμονίᾳ, καὶ τῷ ἐναντίῳ. Μισθωσώμεθα οὖν κήρυκα, ἦν δ' ἐγὼ, ἢ αὐτὸς ἂν εἴπω, ὅτι ὁ Ἀρίστωνος υἱὸς, τὸν ἄριστόν τε καὶ δικαιότατον εὐδαιμονέστατον ἔκρινε· [f]τοῦτον δ' εἶναι τὸν βασιλικώτατον καὶ βασιλεύοντα αὑτοῦ· τὸν δὲ κάκιστόν τε καὶ ἀδικώτατον, [g]ἀθλιώτατον· τοῦτον δ' αὖ τυγχάνειν ὄντα, ὃς ἂν τυραννικώτατος ὢν, ἑαυτοῦ τε ὅτι μάλιστα τυραννῇ, καὶ τῆς πόλεως.

119 [a]Πλάτωνος Νόμων γ̄.

Ἧι δ' ἄν ποτε ξυνοικίᾳ μήτε πλοῦτος ξυνοικῇ μήτε πενία, σχεδὸν ἐν ταύτῃ [b]γενναιότατα ἤθη γίγνοιτ' ἄν· οὔτε γὰρ ὕβρις, οὔτ' ἀδικία, ζῆλοί τε αὖ [c]καὶ φθόνοι οὐκ ἐγγίγνονται.

120 [a]Ἐν ταυτῷ.

Τὸ δὲ ἐμὸν [b]ἔλεγον, ὅτι τοῦτο μὲν πρὸς μίαν ἀρετὴν, οὐσῶν

[d] ἀποφαινόμεθα] ἀποφαινώμεθα A. Trinc.
[e] προκαλῇ] προκαλεῖ A.

118.
[a] Sic A. Scil. p. 580. A. Deest lemma Trinc.
[b] εὐδαιμονίᾳ] εὐδαιμονίαν Trinc.
[c] καί τις] καὶ om. A.
[d] κρῖναι] κρίνε A.
[e] κρίνω] κρίνων Trinc.
[f] τοῦτον δ'] δ' om. A. Trinc.
[g] ἀθλιώτατον] καὶ ἀθ. A. Trinc. Dedi mox τυραννῇ pro τυραννεῖ.

119.
[a] Sic A. Scil. p. 679. B. Deest lemma Trinc.
[b] δικαιότατα] γενναιότατα A. Tr.
[c] καὶ] οὐ A.

120.
[a] Sic A. Scil. p. 688. A. Deest lemma Trinc.
[b] ἔλεγον] ἔλεγεν Trinc.

τεττάρων, κελεύοι τίθεσθαι τοὺς νόμους· [c]δέοι [d]δὲ δὴ πρὸς πᾶσαν μὲν βλέπειν, μάλιστα δὲ πρὸς τὴν πρώτην, [e]καὶ τῆς ξυμπάσης ἡγεμόνα ἀρετῆς· φρόνησις δ' εἴη τοῦτο, καὶ [f]νοῦς καὶ δόξα, μετ' ἔρωτός τε καὶ ἐπιθυμίας τούτοις [g]ἑπομένης.

121 [a]Ἐν ταυτῷ.

Φάμεν δὲ δὴ νῦν, καθ' ὁδὸν ἰόντες τὴν λοιπὴν τοῦ λόγου, τὴν μεγίστην ἀμαθίαν τότε ἐκείνην τὴν δύναμιν ἀπολέσαι, καὶ νῦν ταυτὸ πεφυκέναι ποιεῖν· ὥστε τόν γε νομοθέτην, εἰ τοῦθ' οὕτως ἔχει, πειρατέον ταῖς πόλεσι φρόνησιν μὲν ὅσην δυνατὸν ἐμποιεῖν, τὴν δὲ ἄνοιαν ὅτι μάλιστα ἐξαιρεῖν. Δῆλον. Τίς οὖν ἡ μεγίστη δικαίως ἂν λέγοιτο ἀμαθία; σκοπεῖτε εἰ συνδόξει καὶ σφῷν λεγόμενον. Ἐγὼ μὲν δὴ τὴν τοιάνδε τίθεμαι. Ποίαν; Τὴν ὅτ' ἄν τῳ τι δόξῃ καλὸν ἢ ἀγαθὸν εἶναι, μὴ φιλεῖ τοῦτο, ἀλλὰ μισεῖ, τὸ δὲ πονηρὸν καὶ ἄδικον δοκοῦν εἶναι φιλεῖ τε καὶ ἀσπάζεται. Ταύτην διαφωνίαν λύπης τε καὶ ἡδονῆς πρὸς τὴν κατὰ λόγον δόξαν ἀμαθίαν φημὶ εἶναι τὴν ἐσχάτην, μεγίστην δέ, ὅτι πλήθους ἐστὶ τῆς ψυχῆς· τὸ γὰρ λυπούμενον καὶ ἡδόμενον αὐτῆς ὅπερ δῆμός τε καὶ πλῆθος πόλεώς ἐστιν. Ὅτ' ἂν οὖν ἐπιστήμαις ἢ δόξαις ἢ λόγῳ ἐναντιῶται τοῖς φύσει ἀρχικοῖς ἡ ψυχή, τοῦτο ἄνοιαν προσαγορεύω· πόλεώς τε, ὅτ' ἂν ἄρχουσι καὶ νόμοις μὴ πείθηται τὸ πλῆθος, ταυτὸν καὶ δὴ καὶ ἑνὸς ἀνδρός, ὁπότ' ἂν καλοὶ ἐν ψυχῇ λόγοι ἐνόντες μηδὲν ποιῶσι πλέον, ἀλλὰ δὴ τούτοις πᾶν τοὐναντίον· ταύτας πάσας ἀμαθίας τὰς πλημμελεστάτας ἔγωγ' ἂν θείην πόλεώς τε καὶ

[c] δέοι] δέον A. Trinc.
[d] δὲ δὴ] δὲ δεῖ A. δὴ Trinc.
[e] τὴν] καὶ A. Trinc.
[f] σοφία] νοῦς A. Gesn. marg.
[g] ἑπομένοις] ἑπομένης Trinc.

121.

[a] Sic A. Scil. p. 688. E. Φάμεν—διαπεπονημένοι ἅπαντα accedunt ex A. Ceterum dedi ex Platone αὐτῆς pro αὐτοῖς, ἐπιστήμαις pro ἐπὶ στόματος, ἡ ψυχὴ pro ἢ ταχυτῆτι, καλοὶ —λόγοι ἐνόντες pro καλὴν—ἄγοιεν ἄν τις, ἀλλὰ δὴ pro ἀλλὰ ζῇ, ξένοι pro ξένε.

ἑνὸς ἑκάστου τῶν πολιτῶν, ἀλλ' οὐ τὰς τῶν δημιουργῶν, εἰ
ἄρα που καταμανθάνετε, ὦ ξένοι, ὃ λέγω. Μανθάνομέν γε,
ὦ φίλε, καὶ ἐγχωροῦμεν ἃ λέγεις. Τοῦτο μὲν τοίνυν οὕτω
κεχωρίσθω δεδογμένον καὶ λεγόμενον, ὡς τοῖς εἰς ταῦτα
ἀμαθαίνουσι τῶν πολιτῶν οὐδὲν ἐπιτρεπτέον ἀρχῆς ἐχόμενον,
καὶ ὡς ἀμαθέσιν ὀνειδιστέον, ἂν καὶ πανὺ λογιστικοί τε
ὦσι, καὶ πάντα τὰ κομψὰ καὶ ὅσα πρὸς τάχος τῆς ψυχῆς
πεφυκότα διαπεπονημένοι ἅπαντα· [b]τοὺς δὲ τοὐναντίον
ἔχοντας τούτων, ὡς σοφούς τε προσρητέον, ἂν καὶ, τὸ λεγό-
μενον, μήτε γράμματα μήτε [c]νεῖν ἐπιστῶνται, καὶ τὰς ἀρ- 266
χὰς δοτέον ὡς ἔμφροσι· πῶς γὰρ ἂν, ὦ φίλοι, ἄνευ ξυμ-
φωνίας [d]γένοιτ' ἂν φρονήσεως καὶ τὸ σμικρότατον εἶδος;
οὐκ ἔστιν· ἀλλ' ἡ καλλίστη καὶ μεγίστη τῶν [e]ξυμφωνιῶν,
μεγίστη δικαιότατ' ἂν λέγοιτο σοφία· ἧς, ὁ μὲν κατὰ λό-
γον ζῶν, μέτοχος· ὁ δὲ ἀπολειπόμενος, οἰκοφθόρος, καὶ περὶ
πόλιν οὐδαμῇ σωτήρ· ἀλλὰ πᾶν τοὐναντίον, ἀμαθαίνων εἰς
[f]ταυτὰ ἑκάστοτε [g]φαίνεται.

122 [a]Ἐν ταυτῷ.

Ἐάν τις μείζονα διδοῖ τοῖς ἐλάττοσι [b]δύναμιν, παρεὶς τὸ μέτριον, [c]πλοίοις τε ἱστία, καὶ σώμασι τροφὴν, καὶ [d]ψυχαῖς ἀρχὰς, ἀνατρέπεταί που πάντα, καὶ ἐξυβρίζοντα, τὰ μὲν εἰς νόσους [e]θεῖ, τὰ δ' εἰς ἔκγονον ὕβρεως ἀδικίαν.

123 [a]Τοῦ αὐτῷ.

Λέγομεν τοίνυν ὅτι πόλιν, ὡς ἔοικε, τὴν μέλλουσαν σώζε-

[b] τοὺς δὲ τοὐναντίον ἔχοντας τούτων] τοὺς γοῦν ἔχοντας τοῦτο Trinc.
[c] νεῖν ἐπίστανται] νεῖναι ἐπιστῶνται A. νεῖν ἐπιστῶνται Trinc.
[d] γένοιτ' ἂν] ἂν γένοιτο B.
[e] ξυμφωνιῶν] ξυμφων^χ A. ξυμφώνων Trinc.
[f] ταυτὰ] ταῦτα B.
[g] φανεῖται] φαίνεται A. Trinc.

122.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 691. C.

[b] δύναμιν om. A. Trinc.
[c] πλοίοις τε] πλοίοις δὲ B.
[d] ψυχᾶς ἀρχὰς ἀνατρέπεται π. π.] ψυχαῖς ἀρχὰς ὀνειδίζοντά τε π. π. A. ψυχαῖς Trinc. et post paullo ἀνατρέποντα.
[e] θεῖ] θεῖον A.

123.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 697. A.

σθαί τε καὶ εὐδαιμονήσειν εἰς δύναμιν ἀνθρωπίνην δεῖ καὶ ἀναγκαῖον τιμάς τε καὶ ἀτιμίας [b] διανέμειν ὀρθῶς. Ἔστι δὲ ὀρθῶς ἄρα, τιμιώτατα μὲν καὶ πρῶτα τὰ περὶ [c] τὴν ψυχὴν ἀγαθὰ κεῖσθαι, σωφροσύνης ὑπαρχούσης αὐτῇ· δεύτερα δὲ, τὰ περὶ τὸ σῶμα [d] καλὰ καὶ ἀγαθά· καὶ τρίτα, τὰ περὶ τὴν οὐσίαν καὶ χρήματα λεγόμενα. Τούτων δὲ ἂν ἐκτός τις βαίνῃ νομοθέτης ἢ πόλις, εἰς τιμὰς [e] ἢ χρήματα [f] προάγουσα, ἤ τι τῶν ὕστερον εἰς τὸ πρόσθεν τιμαῖς τάττουσα, οὔθ' ὅσιον οὔτε [g] πολιτικὸν [h] ἂν δρῴη πρᾶγμα.

124 [a] Τοῦ αὐτοῦ Νόμων τετάρτῳ.

Πρόσοικος γὰρ θαλάττῃ χώρα, τὸ μὲν παρ' ἑκάστην ἡμέραν ἡδύ· μάλα γε μὴν ὄντως ἁλμυρὸν καὶ πικρὸν γειτόνημα· [b] ἐμπορίας γὰρ καὶ [c] χρηματισμοῦ διὰ [d] καπηλείας ἐμπιπλᾶσα [e] αὐτὴν, ἤθη παλίμβολα καὶ ἄπιστα ταῖς ψυχαῖς ἐντίκτουσα, [f] αὐτήν τε πρὸς αὐτὴν τὴν πόλιν ἄπιστον καὶ ἄφιλον ποιεῖ, καὶ πρὸς τοὺς ἄλλους ἀνθρώπους ὡσαύτως. Παραμύθιον δὲ [g] δὴ πρὸς ταῦτα καὶ τὸ [h] πάμφορος εἶναι κέκτηται· τραχεῖα δὲ οὖσα δῆλον ὡς οὐκ ἂν [i] πολύφορός τις εἴη καὶ πάμφορος ἅμα· τοῦτο γὰρ ἔχουσα, πολλὴν [k] ἐξαγωγὴν ἂν παρεχομένη, νομίσματος ἀργύρου καὶ χρυσοῦ πάλιν [l] ἀντεμπίπλαιτ' ἄν, οὗ μεῖζον κακὸν, ὡς ἔπος εἰπεῖν, πόλει ἀνθ' ἑνὸς ἓν οὐδὲν ἂν γίγνοιτο εἰς γενναίων καὶ δικαίων [m] ἠθῶν κτῆσιν, ὡς ἔφαμεν, εἰ μεμνήμεθα, ἐν τοῖς πρόσθεν λό-

[b] διανέμειν ὀρθῶς ἔστι δὲ om. B.
[c] τὴν ψυχὴν deest articulus A.
[d] καλὰ om. Trinc.
[e] ἢ om. A. Trinc.
[f] προάγουσα] προσάγουσα A.
[g] πολιτικῶν] πολιτικὸν A.
[h] ἂν δρῴη] ἀνδρῶν Trinc.

124.
[a] Sic ferc A. ubi τετάρτων. Scil. p. 705. Deest locus Trinc.
[b] ἐμπορίας] ἐμπορείας A.
[c] χρηματισμοῦ] χρηματισμοὺς A.
[d] καπηλίας] καπηλείας A.
[e] ἑαυτὴν] αὐτὴν A.
[f] αὐτήν τε] αὐτήν περ A.
[g] δὴ om. B.
[h] πάμφορος] πάμφορον A.
[i] πολύφορός τε] πολύφορός τις A.
[k] ἐξαγωγὴν] ἐξάγωγεῖν A.
[l] ἀντεμπίπλατ'] ἀντεμπίπλωντα A. Voluit, credo, ἀντεμπίπλαιτο.
[m] ἠθῶν] ἐθῶν A.

γοις. [n]Ἀλλὰ μεμνήμεθα, καὶ συγχωροῦμεν τότε λέγειν ἡμᾶς ὀρθῶς καὶ τὰ νῦν.

125 [a]Ἐν ταυτῷ.

Ὡς οὐδείς ποτε ἀνθρώπων οὐδὲν νομοθετεῖ, [b]τύχαι δὲ καὶ ξυμφοραὶ παντοῖαι πίπτουσαι, παντοίως νομοθετοῦσι [c]τὰ πάντα ἡμῖν· ἢ γὰρ πόλεμός τις βιασάμενος [d]ἀνέτρεψε πολιτείας καὶ μετέβαλε νόμους, ἢ πενίας χαλεπῆς ἀπορία· πολλὰ δὲ καὶ νόσοι ἀναγκάζουσι καινοτομεῖν, λοιμῶν τε ἐμπιπτόντων, καὶ χρόνον ἐπὶ πολὺν ἐνιαυτῶν πολλῶν πολλάκις [e]ἀκαιρία· ταῦτα δὴ πάντα προσιδών τις ἄρξειεν ἂν εἰπεῖν, ὅπερ ἐγὼ νῦν δὴ, θνητὸν μηδένα νομοθετεῖν μηδὲν, τύχας δ' εἶναι σχεδὸν ἅπαντα τὰ ἀνθρωπινὰ πράγματα. Τὸ δ' ἔστι, περί τε ναυτιλίαν καὶ κυβερνητικὴν καὶ ἰατρικὴν καὶ στρατηγικὴν πάντα ταῦτ' εἰπόντα δοκεῖν εὖ λέγειν· ἀλλὰ γὰρ ὅμως αὖ καὶ τόδ' ἐστὶν εὖ λέγοντα λέγειν ἐν τοῖς αὐτοῖς τούτοις. Τὸ ποῖον; Ὡς θεὸς μὲν πάντα καὶ μετὰ θεοῦ τύχη καὶ καιρὸς τὰ ἀνθρωπινὰ διακυβερνῶσι ξύμπαντα, ἡμερώτερον μὴν τρίτον συγχωρῆσαι τούτοις δεῖν ἕπεσθαι τέχνην· καιρῷ γὰρ χειμῶνος συλλαβέσθαι κυβερνητικὴν, μέγα πλεονέκτημα ἔγωγ' ἂν θείην· ἢ πῶς; Οὐκ οὖν καὶ τοῖς ἄλλοις ὡσαύτως κατὰ τὸν αὐτὸν ἂν ἔχοι λόγον, καὶ δὴ καὶ νομοθεσίᾳ ταυτὸν τοῦτο δοτέον, τῶν ἄλλων ξυμπιπτόντων ὅσα δεῖ χώρᾳ συντυχεῖν, εἰ μέλλει ποτὲ εὐδαιμόνως οἰκήσειν, τὸν νομοθέτην ἀληθείας ἐχόμενον τῇ τοιαύτῃ παραπεσεῖν ἑκάστοτε πόλει δεῖν. Ἀληθέστατα λέγεις.

126 [a]Τοῦ αὐτοῦ Νόμων ε̄.

Ἡμῖν δὲ ἡ τῶν νόμων ὑπόθεσις ἐνταῦθα ἔβλεπεν, ὅπως ὡς

[n] ἀλλὰ κ. τ. λ. adjeci ex A.

125.

[a] Sic A. Scil. p. 708. Deest locus Trinc.

[b] τύχαι] τάχα A.

[c] τὰ πάντα] ἅπαντα A.

[d] ἀνέτρεψε] ἀνέστρεψαι A.

[e] ἀκαιρία. Reliqua accedunt ex A.

126.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 743.

εὐδαιμονέστατοι ἔσονται, καὶ ὅτι μάλιστα ἀλλήλοις φίλοι· εἶεν δὲ οὐκ ἄν ποτε [b] πολῖται [c] ἀλλήλοις φίλοι, ὅπου πολλαὶ μὲν δίκαι ἐν ἀλλήλοις εἶεν, πολλαὶ δὲ ἀδικίαι, ἀλλ' ὅπου ὡς ὅτι σμικρόταται καὶ ὀλίγισται. Λέγομεν δὴ, μήτε εἶναι χρυσὸν δεῖν, μήτε ἄργυρον [d] ἐν τῇ πόλει, μήτε αὖ 267
χρηματισμὸν πολὺν διὰ βαναυσίας καὶ τόκων, μηδὲ βοσκημάτων αἰσχρῶν, ἀλλ' ὅσα γεωργία δίδωσι καὶ φέρει, καὶ [e] τούτων ὁπόσα μὴ χρηματιζόμενον ἀναγκάσειεν ἀμελεῖν, ὧν ἕνεκα πέφυκε τὰ χρήματα· ταῦτα δ' ἐστὶ ψυχὴ καὶ σῶμα, [f] ἃ χωρὶς γυμναστικῆς καὶ τῆς ἄλλης παιδείας οὐκ ἄν ποτε γένοιτο [g] ἄξια λόγου. Διὸ δὴ χρημάτων ἐπιμέλειαν οὐχ ἅπαξ εἰρήκαμεν ὡς χρὴ τελευταῖον [h] τιμᾶν· ὄντων γὰρ τριῶν τῶν ἁπάντων, [i] περὶ ἃ πᾶς ἄνθρωπος σπουδάζει, τελευταῖον καὶ τρίτον ἐστὶν, ἡ τῶν χρημάτων ὀρθῶς σπουδαζομένη σπουδὴ, σώματος [k] δὲ πέρι μέση, πρώτη δὲ ἡ τῆς ψυχῆς. Καὶ δὴ καὶ νῦν, ἣν διεξερχόμεθα πολιτείαν, εἰ μὲν τὰς τιμὰς οὕτω τάττεται, ὀρθῶς [l] νομοθετεῖται· εἰ δέ τις τῶν [m] προσταττομένων αὐτόθι νόμων σωφροσύνης ἔμπροσθεν ὑγίειαν ἐν τῇ πόλει [n] φανεῖται ποιῶν τιμίαν, ἢ πλοῦτον ὑγιείας καὶ τοῦ σωφρονεῖν, οὐκ ὀρθῶς ἂν φανεῖται τιθέμενος.

127 [a] Ἐν ταυτῷ.

[b] Δεῖ γὰρ ἐν πόλει που, φαμὲν, τῇ τοῦ μεγίστου νοσήματος οὐ [c] μεθεξούσῃ, ὃ διάστασιν ἢ στάσιν [d] ὀρθότερον ἂν εἴη

[b] πολῖται om. Trinc.
[c] ἀλλήλοις om. A.
[d] ἐν τῇ] αὐτῇ Trinc.
[e] τούτων] τούτου B.
[f] ἃ χωρὶς] ἃ om. A. Trinc.
[g] ἄξια λόγου] ἀξιολόγου A.
[h] τιμᾶν usque ad τελευταῖον om. B.
[i] περὶ ἃ πᾶς] πῶς ἅπας A.
[k] δὲ μέση] δὲ πέρι μέση A. Trinc.
[l] νομοθετεῖται] νομοθετεῖτε A. B. ἐνομοθέτηται Gesn. marg. τάττετε—νομοθετεῖται Trinc.
[m] προσταττομένων αὐτόθι νόμων] πραττομένων νόμων αὐτόθι A.
[n] φανεῖται] φανῆται A. ubi mox καὶ pro ἢ.

127.
[a] Sic A. Scil. p. 744. D. Deest locus Trinc.
[b] Δεῖν] δεῖ A.
[c] μεθεξούσῃ ὃ] μετεχούσῃ ἢ A.
[d] ὀρθότερον] ὀρθώτερον A.

κεκλῆσθαι, μήτε πενίαν τὴν χαλεπὴν ἐνεῖναι παρά τισι τῶν πολιτῶν, μήτ' αὖ πλοῦτον, ὡς ἀμφότερα τικτόντων ταῦτα ἀμφότερα.

128 [a] Πλάτωνος Νόμων θ̄.

Ὡς ἄρα νόμους ἀνθρώποις ἀναγκαῖον τίθεσθαι, καὶ ζῆν κατὰ νόμους, ἢ μηδὲν διαφέρειν τῶν πάντῃ ἀγριωτάτων θηρίων. Ἡ δὲ αἰτία τούτων ἥδε, ὅτι φύσις ἀνθρώπων οὐδενὸς ἱκανὴ φύεται, ὥστε γνῶναί τε τὰ συμφέροντα ἀνθρώποις εἰς πολιτείαν, καὶ γνοῦσα τὸ βέλτιστον ἀεὶ δύνασθαί [b] τε καὶ ἐθέλειν πράττειν· γνῶναι μὲν γὰρ πρῶτον [c] χαλεπὸν, ὅτι πολιτικῇ καὶ ἀληθεῖ τέχνῃ οὐ τὸ ἴδιον, ἀλλὰ τὸ κοινὸν [d] ἀνάγκη μέλειν· τὸ μὲν γὰρ κοινὸν ξυνδεῖ, τὸ δὲ ἴδιον διασπᾷ τὰς πόλεις· καὶ ὅτι ξυμφέρει τῷ κοινῷ τε καὶ ἰδίῳ τοῖν ἀμφοῖν, [e] ἢν τὸ κοινὸν τιθῆται καλῶς μᾶλλον ἢ τὸ ἴδιον.

129 [a] Ἀρχύτα.

Πονηρῶν ἀθέων νόμοι θεῶν ἄγραφοι ἀντινομιζόμενοι, πονηρὰν μοῖραν καὶ ζημίαν τῷ μὴ πειθομένῳ διδόντες, πατέρες καὶ ἡγεμόνες τῶν γεγραμμένων νόμων, καὶ δογμάτων ἀνθρώποις [b] τεθέντων.

130 [a] Διωτογένους Πυθαγορείου ἐκ τοῦ Περὶ Ὁσιότητος.

[b] Καλῶς [c] δὲ καὶ [d] τὸ τὸν θεὸν ἐν ἀρχᾷ τῷ δείπνῳ καὶ τῷ ἀρίστῳ ἐπικαλεῖσθαι, οὐχ ὡς δεόμενον τινὸς [e] τῶν τοιούτων, ἀλλ' εἰς τὸ μνασθέντα κατακοσμηθῆμεν τὰν ψυχάν· ἐπειδὴ

128.

[a] Sic A. Sc. p. 874. E. Deest locus Trinc.

[b] τε καὶ] τε om. A.

[c] ὅτι χαλεπὸν A.

[d] ἀνάγκη μέλειν] ἀνάγκην μένειν A.

[e] ἢν] εἰ A. Mox μᾶλλον ἢ τὸ ἴδιον om. A.

129.

[a] Sic fere Trinc. ubi Ἀρχίτα. Deest locus A.

[b] τεθέντων] τιθέντων Trinc.

130.

[a] Sic A.

[b] Καλῶς usque ad δικαιοπραγέοντας om. Trinc. qui sequentia inde ab ἔπειτα γὰρ superiori Archytæ fragmento subjicit.

[c] δὲ καὶ] δέδοκται Valcken. Eurip. Ph. 1619.

[d] τὸ τὸν] τὸ deest A.

[e] τῶν τοιούτων] τῶν om. A.

γὰρ ἀπ' [f]αὐτῶν ἐσμὲν, καὶ [g]κεκοινωνήκαμεν τῷ θείῳ, † κρίνοντι ἄμμε· διὸ καὶ βουλεύονται ἰκελῶς αὐτοῖς ἅπαντα ἡμᾶς ἐπιτελέειν δικαιοπραγέοντας. Ἔπειτα γὰρ [h]τέτορες αἰτίαι τὰ σύμπαντα περαίνοντι, καὶ ἐπὶ τέλος ἐπιτίθεντι, φύσις, καὶ νόμος, καὶ τέχνα, καὶ τύχα· καὶ τῶν μὲν ἐξ ἄθεος ποτὶ συμφωνίαν [i]πολιτικὰν φερόντων νόμος ἐπιστάτης καὶ δημιουργός· τῶν δὲ [k]διὰ φρονάσιος ἀνθρωπίνας [l]τελεθόντων, τέχνα λέγοιτο δικαίως μάτηρ τε καὶ ἡγεμὼν ἦμεν· τῶν δὲ εἰκᾷ τε καὶ ὡς ἔτυχεν ἀπὸ τοῦ αὐτομάτου ὁμοίως [m]ποτιπιπτόντων τοῖς χρηστοῖς τε καὶ πονηροῖς, [n]τύχαν τῶν τοιούτων αἰτίαν [o]φασοῦμες· ταύταν δ' οὔτ' ἐν μέτρῳ οὔτ' 268
[p]ἐν ὅρῳ [q]τεταγμέναν, καὶ πεφρονημένως ἕκαστα ποιεῦν, †[r]γενναθεῖσα δὲ, ἃ ἐξ αὐτῶν τῷ γένεος ἄμφω [s]κινεῖται.

131 [a]Τῶν ἕπτα σοφῶν Περὶ Πολιτείας.

Εἰ δὲ βούλει καὶ νῦν, ἔφη ὁ Σόλων, περὶ πολιτείας ἀκοῦσαι, δοκεῖ μοι πόλις ἄριστα πράττειν, καὶ μάλιστα σώζειν δημοκρατίαν, ἐν ᾗ τὸν ἀδικήσαντα τοῦ ἀδικηθέντος [b]οὐδὲν ἧττον οἱ μὴ ἀδικηθέντες προβάλλονται καὶ κολάζουσι.

Δεύτερος δὲ ὁ Βίας ἔφη, κρατίστην εἶναι δημοκρατίαν, ἐν ᾗ πάντες ὡς τύραννον [c]φοβοῦνται τὸν νόμον.

[f] αὐτῷ] αὐτῶν A.
[g] κεκοινωνήκαμεν τῷ θείῳ, (κρίνοντι ἄμμε. διὸ καὶ βουλεύονται) δικαίως ἂν ἅπαντα ἡμᾶς] Parenthesi inclusa obscura sunt. Apparet autem aliquid deesse, quoniam de natura nihil dixit. GESNER. κεκοινωνήκαμεν τῷ θείῳ πόθ῀ ἀκοντὶ κρίναντί ἄμμε διὸ καὶ βουλεύονται ἰκελῶς αὐτοῖς ἅπαντα ἡμᾶς ἐπιτ. A.
[h] τέττορες] τέτταρες A. τέτορες Trinc.
[i] πολιτικὰν] πολιτικῶν A. Trinc.
[k] διὰ φρονήσιος] διαφρονάσιας A.
[l] τελεσθέντων] τελεθόντων A. Tr.
[m] ποτιπιπτόντων] μεταπιπτόντων Trinc. δὲ om. A.
[n] τύχαν] τυχὸν B.
[o] φάσκομες] φασοῦμες A.
[p] ἐν ὅρῳ] ἂν ὁ. B.
[q] τεταγμέναν καὶ πεφρονηκυῖαν] τεταγμένως καὶ πεφρονημένως Gesner. marg. πεφρονημένως A.
[r] γενναθεῖσα δὲ] δὲ om. B.
[s] κινεῖται] ἐνεῖτα B.

131.

[a] Sic A. Trinc. v. Plutarch. II. p. 154. D.
[b] οὐδὲν ἧττον οἱ μὴ ἀδικηθέντες om. A. Trinc.
[c] φοβοῦνται] κρατοῦσι A. m. p. τύραννοι Trinc.

Ἔπειτα Θαλῆς, τὴν μήτε [d] πλουσίους ἔχουσαν ἄγαν, μήτε πένητας [e] πολίτας.

[f] Μετὰ δὲ τοῦτον ὁ Περίανδρος, ἐν ᾗ τῶν ἄλλων ἴσων νομιζομένων, ἀρετῇ τὸ [g] βέλτιον ὁρίζεται, κακίᾳ [h] δὲ τὸ χεῖρον.

Πέμπτος δὲ ὁ Κλεόβουλος ἔφη, μάλιστα σωφρονεῖν δῆμον, ὅπου τὸν ψόγον [i] μᾶλλον οἱ πολιτευόμενοι δεδοίκασιν ἢ τὸν νόμον.

Ἕκτος δὲ [k] Πιττακὸς, ὅπου τοῖς πονηροῖς οὐκ ἔστιν ἄρχειν.

Ὁ δὲ [l] Χείλων ἀπεφήνατο, τὴν μάλιστα νόμων ἥκιστα δὲ ῥητόρων ἀκούουσαν πολιτείαν, ἀρίστην εἶναι.

132 [a] Ἀρχύτα Πυθαγορείου ἐκ τοῦ Περὶ Νόμου καὶ Δικαιοσύνης.

[b] Νόμος ποτ' ἀνθρώπου ψυχάν τε καὶ βίον ὅπερ ἁρμονία ποτ' ἀκοάν τε καὶ φωνάν· ὅ τε γὰρ νόμος παιδεύει μὲν τὰν ψυχὰν, συνίστησι δὲ τὸν βίον, ἅ τε ἁρμονία ἐπιστάμονα μὲν ποιεῖ τὰν ἀκοὰν, ὁμόλογον δὲ τὰν φωνάν. [c] Φαμὶ δὴ ἐγὼ πᾶσαν κοινωνίαν ἐξ ἄρχοντος καὶ ἀρχομένω συνεστάμεν, καὶ τρίτον νόμων. Νόμων δὲ ὁ μὲν ἔμψυχος, βασιλεύς· ὁ δὲ ἄψυχος, γράμμα. Πρῶτος ὦν ὁ νόμος· [d] τούτων γὰρ ὁ μὲν βασιλεὺς, νόμιμος· ὁ δ' ἄρχων, ἀκόλουθος· ὁ δ' ἀρχόμενος, ἐλεύθερος· ἁ δ' ὅλα κοινωνία, εὐδαίμων· καὶ τούτων παραβάσει μὲν βασιλεὺς, τύραννος· ὁ δὲ ἄρχων, ἀνακόλουθος· ὁ δ' ἀρχόμενος, δοῦλος· ἁ δ' ὅλα κοινωνία, κακοδαίμων.

[d] πλουσίους] πλουσίως Trinc.
[e] πολίτας] ἔχουσαν πολίτας A.
[f] μετὰ τοῦτον] μετὰ δὲ τ. A. Tr.
[g] βέλτιον] βέλτιστον B.
[h] δὲ] δὴ A.
[i] μᾶλλον] μάλιστα A. cum μᾶλλον pro v. l.
[k] Πιττακὸς] Π. ἔφη A. et mox ἔξεστιν pro ἔστιν cum B. et Gesn. marg.
[l] Χίλων] Χείλων A.

132.
[a] Sic A.
[b] Νόμος usque ad τὰν φωνὰν accedunt ex A. Deest locus Trinc.
[c] φαμὶ δὴ] φαμὶ δ' A.
[d] τούτων γὰρ ὁ μὲν βασιλεύς. Vertit Gesnerus, *Hujus enim conservatione rex legitimus erit,* ac si scriptum voluisset, τ. γ. τηρήσει ὁ β.

Συνείρονται [c] μὲν γὰρ ταὶ πράξιες ἐκ τοῦ ἄρχειν, καὶ ἐκ τοῦ ἄρχεσθαι, καὶ τρίτον ἐκ τοῦ κρατεῖν. Τὸ μὲν οὖν ἄρχεν τῷ κρείσσονος οἰκῆον, τὸ δ' ἄρχεσθαι τῷ χερήονος, τὸ δὲ κρατὲν, ἀμφοτέρων· ἄρχει μὲν γὰρ τὸ λόγον ἔχον τᾶς ψυχᾶς, ἄρχεται δὲ τὸ ἄλογον, κρατοῦντι δὲ τῶν παθέων ἀμφότερα. Γίνεται γὰρ ἐκ τᾶς ἑκατέρων [f] συναρμογᾶς ἀρετὰ, αὐτὰ δὲ καὶ ἀπὸ τῶν ἁδονᾶν καὶ ἀπὸ [g] τᾶν λυπᾶν ἐς ἀρεμίαν καὶ ἀπάθειαν ἀπάγει τὰν ψυχάν.

133 [a] Ἐν ταυτῷ.

Δεῖ δὲ τὸν νόμον ἀκόλουθον ἦμεν τῇ φύσει, δυνατὸν τοῖς πράγμασι, συμφέροντα τᾷ πολιτικᾷ κοινωνίᾳ· αἴτε γὰρ ἑνὸς τούτων αἴτε πλεόνων αἴτε πάντων ἀπολείπηται, ἤτοι οὐ νόμος ἢ οὐ τέλειος νόμος ἐσεῖται. Ἀκόλουθος μὲν οὖν [b] κα ᾖ τᾷ φύσει, μιμεόμενος τὸ τᾶς φύσιος δίκαιον· τοῦτο δέ ἐστιν τὸ ἀνάλογον, καὶ τὸ ἐπιβάλλον ἑκάστῳ καττὰν ἑκάστου ἀξίαν. Δυνατὸς δὲ, εἰ ποτὶ τοὺς νομοθετουμένους ἔχει τὰν συναρμογάν· πολλοὶ γὰρ τὸ τᾷ φύσει καὶ πρᾶτον ἀγαθὸν (οὐχ) ἱκανοὶ δέξασθαι, τὸ δὲ ποθ' αὐτοὺς καὶ τὸ ἐνδεχόμενον· οὕτω γὰρ καὶ τοὶ νοσέοντι καὶ τοὶ κάμνοντι τυγχάνοντι ἐπιμελείας. [c] Συμφέροντα δὲ τᾷ πολιτικᾷ κοινωνίᾳ, αἴκα μὴ μόναρχος ᾖ καὶ ἰδιωφελὴς ὁ νόμος, κοινωφελὴς δὲ καὶ διὰ πάντων διατείνων· δεῖ δὲ καὶ ποτὶ τὰν χώραν, καὶ ποτὶ τὼς τόπως ἀποβλέπειν τὸν νόμον, οὔτε γὰρ γᾶ τὼς αὐτὼς καρπὼς, οὔτε ψυχὰ ἀνθρώπων τὰν αὐτὰν ἀρετὰν παραδέξασθαι δύναται. [d] Διὸ τὸ δίκαιον τοὶ μὲν ἀριστοκρατικὸν, τοὶ δὲ δημοκρατικὸν, τοὶ δὲ ὀλιγαρχικὸν ποιοῦντι· καὶ τὸ ἀριστοκρατικὸν καττὰν ὑπεναντίαν μεσότατα· τοῖς μὲν γὰρ μέζοσι

[c] γὰρ ταῖς] μὲν γὰρ ταὶ A.
[f] συναρμογᾶς] ἁρμογᾶς A.
[g] τῶν] τᾶν A.

133. Accedit hic locus usque ad ἐπιμελείας ex A.
[b] κα ᾖ] Dedi hoc, cum in ms. sit καὶ ἤ.
[c] Ἐν ταυτῷ] præfigit A.
[d] Sequentia ex A.

μέζονας τὼς [δὲ] λόγως, τοῖς δὲ μείοσι μείζονας διανέμει ἀναλογία αὐτά· τὸ δὲ δημοκρατικὸν κατὰν γεωμετρικάν· ἐν γὰρ ταύτᾳ τοι λόγοι ἴσοι τῶν μειζόνων καὶ μειόνων μεγεθέων· τὸ δὲ ὀλιγαρχικὸν καὶ τυραννικὸν καττὰν ἀριθμητικάν· ἀντιάζει γὰρ αὐτὰ τᾷ ὑπεναντίᾳ· τοῖς γὰρ μείοσι μέζονας τοὺς λόγως, τοῖς δὲ μείζοσι μείονας. Ταὶ μὲν ὦν ἰδέαι τᾶς διανομᾶς τοσαῦται· ταὶ δὲ εἰκόνες ἐν ταῖς πολιτείαις καὶ τοῖς οἴκοις θεωρέονται· τιμαί τε γὰρ καὶ κολάσεις καὶ ἀρεταὶ ἐξ ἴσω τοῖς μείζοσι καὶ μείοσι διανέμεται, ἢ ἐξ ἀνίσω, ἢ τᾷ ἀρετᾷ ὑπερέχεν, ἢ τῷ πλούτῳ, ἢ καὶ δυνάμει. Τὸ μὲν ὦν ἐξ ἴσω δημοκρατικόν· τὸ δὲ ἐξ ἀνίσω ἀριστοκρατικὸν ἢ ὀλιγαρχικόν.

134 [a] Ἐν ταυτῷ.

[b] Δεῖ δὲ τὸν νόμον τὸν κάρρονα καὶ τὰν πόλιν ἐκ πασᾶν σύνθετον [c] εἶμεν τᾶν ἄλλαν πολιτειᾶν· καὶ ἔχεν τὶ δαμοκρατίας, ἔχεν τὶ ὀλιγαρχίας, ἔχεν τὶ βασιλείας, καὶ ἀριστο- 269
κρατίας· ὥσπερ καὶ ἐν τᾷ Λακεδαίμονι· τοὶ μὲν γὰρ βασιλέες, τᾶς μοναρχίας· τοὶ δὲ γέροντες, τᾶς ἀριστοκρατίας· τοὶ δὲ ἔφοροι, τᾶς ὀλιγαρχίας· [d] ἱππαγρέται δὲ καὶ κόροι, τᾶς δαμοκρατίας. [e] Δεῖ τοίνυν τὸν νόμον μὴ μόνον ἀγαθὸν καὶ καλὸν ἦμεν, ἀλλὰ καὶ ἀντιπεπονθέναι τοῖς [f] αὐτῶ μερέεσσιν· οὗτος γὰρ ἰσχυρὸς καὶ βέβαιος· τὸ δ' ἀντιπεπονθέναι λέγω αὐτῶ, καὶ ἄρχεν καὶ ἄρχεσθαι τὰν αὐτὰν ἀρχάν, ὥσπερ καὶ ἐν τᾷ εὐνομωτάτᾳ Λακεδαίμονι. Τοῖς μὲν γὰρ βασιλεῦσιν [g] τοὶ ἔφοροι ἀντικάθηνται, τούτοις δ' οἱ γέροντες, μέσοι δ' οἱ κόροι καὶ ἱππαγρέται· ἐφ' ὃ γὰρ ἂν ῥέψοντι τοὶ πλεονεκτέοντες τῶν ἀρχόντων, οὗτοι τοῖς ἄλλοις ὑποτίθενται.

134.
a Sic A. Deest locus Trinc.
b δεῖ δὲ] δεῖ δὴ A.
c εἶναι] εἶμεν A.
d ἱππαγρέται] V. Schneiderus ad Xenoph. Lac. Rep. IV.
e δεῖ τὸν] δεῖ τοίνυν τὸν A.
f αὐτοῦ] αὐτῶ A.
g οἱ ἔφ.] τοὶ ἔφ. A.

Δεῖ τὸν νόμον τὰ περὶ θεοὺς καὶ δαίμονας καὶ γονέας, καὶ ὅλως τὰ καλὰ καὶ [h] τίμια πρᾶτα τίθεσθαι, δεύτερον δὲ τὰ συμφέροντα· τὰ γὰρ [i] μήονα τοῖς μείζοσιν ἀκολουθεῖν ποθάκει· καὶ μὴ ἐν οἰκήμασι καὶ θυρώμασιν ἐνῆμεν, ἀλλ' ἐν τοῖς ἄθεσι τῶν πολιτευομένων. Οὐδὲ γὰρ ἐν Λακεδαίμονι τᾷ εὐνομωτάτᾳ πλάθει γραμμάτων ἁ πόλις διοικεῖται, πολὺ δὲ μᾶλλον ἐν τοῖς τρόποις τῶν πολιτευομένων. Συμφέροντι δὲ τᾷ πολιτικᾷ κοινωνίᾳ, αἴκα μὴ μόναρχος ᾖ καὶ [k] ἰδιοτελὴς, κοινωφελὴς δὲ καὶ [l] διὰ πάντων διατείνων ὁ νόμος· καὶ τὰν [m] ζαμίαν ἐς τὰν αἰσχύναν καὶ τὰν ἀτιμίαν [n] ἀμφέρῃ, μὴ ἐς τὰν τῶν χρημάτων ἀποβολάν. [o] Ἐκ μὲν γὰρ τῶ τᾷ αἰσχύνᾳ ζαμιοῦσθαι, [p] κοσμιότατα καὶ χρηστότατα σπουδάζοντι, ὅπως τὰν ἐν τοῖς νόμοις ζαμίαν ἀκοινώνατον [q] ἔχωντι· ἐκ δὲ τῶ χρήμασι, χρήματα περὶ πλείστου ποιησοῦνται, μέγιστον φάρμακον ὑπολαμβάνοντες ἦμεν τῶν ἁμαρτημάτων. Ἄριστον μὲν οὖν τὰν ὅλαν πόλιν οὕτως συντετάχθαι, ὥστε μηδενὸς ποτιδεῖσθαι ἔξωθεν, μήτε κατ' ἀρετὰν, μήτε κατὰ δύναμιν, μήτε κατ' ἄλλαν μηδεμίαν αἰτίαν· οὕτω [r] γὰρ καὶ σῶμα καὶ οἰκίαν καὶ στράτευμα συντετάχθαι καλῶς, τὸ ἐν αὑτῷ ἔχον τὰν αἰτίαν τῆς σωτηρίας, ἀλλὰ μὴ ἔξωθεν· σῶμα μέντοι κάρρον, οἰκία δὲ συγκειμένα καλῶς, στράτευμα δὲ τὸ μὴ [s] μισθοφόρον μηδὲ ἀγύμναστον· κρέσσονα γὰρ τὰ οὕτως συνταχθέντα γίνεται τῶν ἄλλων· καὶ ἐλεύθερα μὲν καὶ ἀδούλωτα, οὐ πολλῶν ποτιδεόμενα ποτὶ τὰν [t] διαμονὰν, ὀλίγων δὲ καὶ [v] εὐπαρακο-

[h] τίμα] τίμια A.

[i] μείονα] μείονα A.

[k] ἰδιοτέλης] ἰδιωφελὴς ut paulo superius. GESNER. n. 133.

[l] διαπαντὸς] διὰ πάντων ut sup. GESNER. Sic A.

[m] ζημίαν] ζαμίαν A.

[n] ἀναφέρῃ] ἀμφέρῃ A.

[o] ἐκ μὲν γὰρ τῶ τᾷ] ἐν μὲν γὰρ τᾷ A.

[p] κοσμιότατα] κοσμιώτατα A.

[q] ἔχωντι] ἔχοντι A.

[r] γὰρ σῶμα] γὰρ καὶ σῶμα A.

[s] μισθοφόρων] μισθοφόρον A.

[t] διαμονὰν] διανομὰν A.

[v] εὐποτακομίστων] εὐπαρακομίστων A.

μίστων· οὕτω γὰρ ἂν ὁ μὲν ἰσχυρὸς τῶ βάρεος, ὁ δὲ [w] γυμναττὰς τῶ ῥίγεος περιγίνεται· γυμνάζοντι γὰρ [x] ταὶ τύχαι καὶ ταὶ συμφοραὶ τὼς ἀνθρώπως· ἐπεὶ καὶ τῷ σώφρονι, καὶ διαποναθέντι καὶ σώματι καὶ ψυχᾷ, καὶ τροφὰ ἀδέα φαίνεται πᾶσα, καὶ [y] ποτὸν, καὶ εὐνὰ δὲ ἁ μετὰ φυλλάδος, τῷ δὲ τρυφᾶν καὶ συβαρίζειν [z] προαιρουμένῳ, καὶ [a] ἁ τῶ μεγάλω βασιλέως παρασκευὰ δυσάρεστος καὶ ἀλλοτρία. Τὸν νόμον ὦν ἐν τοῖς ἄθεσι καὶ τοῖς ἐπιτηδεύμασι τῶν πολιτῶν [b] ἐγχρώζεσθαι δεῖ· τοὺς γὰρ πολίτας αὐταρκέας θήσει, καὶ διανεμεῖ τὸ κατ᾽ ἀξίαν ἑκάστῳ καὶ τὸ ἐπιβάλλον, οὕτω γὰρ καὶ ὁ ἅλιος φερόμενος διὰ τῶ ζωοφόρω κύκλω διανέμει τοῖς ἐπὶ γᾶς πᾶσι καὶ γενέσιος καὶ τροφᾶς καὶ βιοτᾶς τὰν ποθάκουσαν μοῖραν, οἷον εὐνομίαν, τὰν εὐκρασίαν τῶν [c] ὡρῶν παρασκευαζόμενος. Διὸ καὶ [d] Νόμιος καὶ Νεμήϊος Ζεὺς καλέεται, καὶ νομεὺς ὁ διανέμων τὰς τροφὰς τοῖς ὀΐεσιν· καὶ τὰ τῶν κιθαρωδᾶν δὲ [e] ᾄσματα, νομοί· συντάσσοντι γὰρ καὶ ταῦτα τὰν ψυχὰν, ἁρμονίᾳ καὶ ῥυθμοῖς καὶ μέτροις ἀειδόμενα.

135 [a] Ἐκ τοῦ Ἀρχύτου Περὶ μαθημάτων.

Δεῖ γὰρ ἢ μαθόντα παρ᾽ ἄλλου, ἢ αὐτὸν ἐξευρόντα ὧν ἐπιστάμων ἦσθα, ἐπιστάμονα γενέσθαι. Τὸ μὲν οὖν μαθεῖν παρ᾽ ἄλλου καὶ ἀλλότριον· τὸ δὲ ἐξευρὲν αὐτὸν δι᾽ αὐτοῦ καὶ ἴδιον. Ἐξευρεῖν δὲ μὴν ζητοῦντα, εὔπορον καὶ ῥᾴδιον· μὴ [b] ἐπιστάμενον δὲ ζητεῖν, ἀδύνατον. Στάσιν μὲν ἔπαυσεν, ὁμόνοιαν δὲ αὔξησεν λογισμὸς εὑρεθείς· πλεονεξία [c] τε

[w] γυμνατὰς] γυμναστὰς A.
[x] ταὶ] τε A.
[y] ποτὸν] ποτῶ A.
[z] ἐμπορτουμένῳ] ἐμποριουμένῳ A. προαιρουμένῳ Gesn. ed. 2. in corrigendis.
[a] ἁ τῶ] αὐτῶ A.
[b] ἐνκρώνεσθαι] ἐσκρώζεσθαι A.
[c] ὁρῶν] ὡρῶν A.
[d] νόμιος] νομήϊος A.
[e] ᾄσματα] αἴσματα A.

135.

[a] Sic A. Deest locus Trinc. cf. Villoisoni Anecd. Gr. T. II. p. 202.
[b] ἐπιστάμενα] ἐπιστάμενον A. ἐπιστάμονα Canter.
[c] τε γὰρ] τε om. A.

γὰρ οὐκ ἔστι, τούτου γενομένου, καὶ ἰσότας ἐστίν· τούτῳ γὰρ περὶ τῶν συναλλαγμάτων διαλλασσόμεθα. Διὰ τοῦτον οὖν οἱ πένητες λαμβάνοντι παρὰ τῶν δυναμένων, οἵ τε πλούσιοι διδόντι τοῖς δεομένοις, πιστεύοντες ἀμφότεροι διὰ τούτω τὸ [d] ἶσον ἕξειν. Κανὼν δὲ καὶ κωλυτὴρ τῶν ἀδικούντων τοὺς μὲν ἐπισταμένους [e] ὀργίζεσθαι πρὶν ἀδικεῖν παύσας, πείσας ὅτι οὐ δυνασοῦνται λαθεῖν, ὅτ᾽ ἂν ἐπ᾽ [f] αὐτὸ ἔλθωντι, τοὺς δὲ μὴ ἐπισταμένους ἐν αὐτῷ δηλώσας ἀδικοῦντας, ἐκώλυσεν [g] ἀδικῆσαι.

136 [a] Πλουτάρχου ἐκ τοῦ Ὅτι γυναῖκα παιδευτέον.

Μὴ παιδὶ μάχαιραν, ἡ παροιμία φησίν· ἐγὼ δὲ φαίην, μὴ παιδὶ πλοῦτον, μὴ δὲ ἀνδρὶ ἀπαιδεύτῳ δυναστείαν.

137 [a] Αἰσώπου.

Αἴσωπος τότε ἔλεγεν κακῶς ἔσεσθαι πᾶσιν, ὅτ᾽ ἂν πάντες πάντα [b] ἐπιτηδεύωσιν.

138 [a] Ἐκ τῶν Δημοσθένους Φιλιππικῶν.

Αἴτιον δὲ τούτων, ὅτι πάντας, ὦ Ἀθηναῖοι, τοὺς πλεονεκτεῖν ζητοῦντας ἔργῳ κωλύειν καὶ πράξεσιν, οὐχὶ λόγοις, δέον.

139 [a] Ἐπικούρου.

Οἱ νόμοι χάριν τῶν σοφῶν κεῖνται, οὐχ [b] ἵνα μὴ ἀδικῶσιν, ἀλλ᾽ ἵνα μὴ ἀδικῶνται.

140 [a] Ἐκ τῶν Ἀριστοτέλους Χρειῶν.

Δημοσθένης ὁ ῥήτωρ ἔφη, πόλεως [b] εἶναι τὴν ψυχὴν τοὺς νό-

[d] ἶτον] ἶσον A. Paullo supra διδόντι Canter. pro διδόντες.
[e] ὀργίζεσθαι πρὶν ἀδικεῖν παύσεως] τοῦ ὀ. πρὶν ἀδικεῖ ἔπαυσε Gesn. marg. Canter. παύσας pro παύσεως A.
[f] αὐτὸν] αὐτὸ A. αὐτῷ Gesn. marg.
[g] ἀδικῆσαι] ἀδικεῖσαι A.

136.
[a] Sic A. Fragm. T. V. p. 561 =843. Deest locus Trinc.

137.
[a] Sic A. Deest locus Trinc.
[b] ἐπιτηδεύουσιν] ἐπιτηδεύωσιν A.

138.
[a] Sic A. Scil. p. 66, 7. Deest locus Trinc.

139.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] ἵνα—ἵνα—ἀδικοῦνται] ὅπως—ὅπως—ἀδικῶνται A. B.

140.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] ψυχὴν εἶναι] εἶναι τὴν ψυχὴν A. et mox om. γάρ.

μους. Ὥσπερ γὰρ τὸ σῶμα στερηθὲν ψυχῆς πίπτει· οὕτω καὶ πόλις, μὴ ὄντων νόμων, [c] καταλύεται.

141 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας ἐκ δημηγορίας Ἀθηναίων.

Ὡς [b] οἵ τινες τοῖς μὲν ἴσοις μὴ εἴκουσι, τοῖς δὲ κρείττοσι καλῶς προσφέρονται, [c] εἰς δὲ τοὺς ἥσσους μέτριοί εἰσι, πλεῖστ' ἂν ὀρθοῖντο.

142 [a] Εὐσεβίου.

Πλοῦτος ἐν πόλει τῇ μελλούσῃ εὐδαιμονέειν ἀρετῆς μήποτε προτιμηθείη, ὅκως μὴ διὰ τοῦτο ἐς τὴν ἐκείνου ἐπιθυμίην πάντων συρρεόντων ὀλιγωρίη καὶ ἀνασκησίη [b] ἀρετῆς ψυχαῖς [c] τῶν κατὰ τὴν πόλιν ἐμφυῇ. Ἀρετῆς γὰρ ἀτιμαζομένης, πλοῦτος μοῦνος σπουδαζόμενος καὶ ἐνδυναστεύσας, ὕβριός τε καὶ ὑπερηφανίης ὑπηρέτης, καὶ πάντων κακῶν ([d] ὑπ' ἐξουσίης τὲ καὶ τοῦ ἀνεπιπλήκτου. Τὰς ἀπεστώσης ἀρετῆς οὐδεὶς ἀνακαλέσεται) χορηγὸς γίγνεται.

143 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ἄρχουσιν ἡ [b] ὀφειλευμένη αἰδὼς καὶ τιμὴ φυλασσομένη κόσμον σώζει πόλεως, καὶ διατηρέει.

144 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Γοργίου.

Μετὰ τοῦτο δὲ, [b] περὶ οὗ τὸ δεύτερον ἠμφισβητήσαμεν, 271

[c] οὐχ ἵσταται] καταλύεται A. B. m. sec. Gesn. marg.

141.

[a] Sic A. Scil. V. 111. Simpl. Θουκυδίδου Trinc.

[b] οἵ τινες] εἴ τινες A. B.

[c] εἰ δὲ τοὺς ἥσσους] πρὸς δ. τ. ἥττους A. εἰς δ. τ. ἥ. Trinc.

142.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ἀρετῆς] κὸ ετῆς (sic) Trinc.

[c] ταῖς κατὰ πόλιν] τῶν κατὰ τὴν πόλιν A.

[d] ὑπ' ἐξουσίης τε καὶ τοῦ ἀνεπιπλήκτου. τὰ ἀπεστώσης ἀρετῆς] Ita edd. Gesnerus in marg. *Locus in græco non est integer.* Idem vertit: *Sic abeunte virtute, idque irrevocabili, quia potentis sunt, et metuunt neminem, omne malorum genus producunt.* Cod. A. habet sine lacunæ indicio, ὑπ' ἐξουσίης τε καὶ τοῦ ἀνεπιπλήκτου τᾶς ἀπεστώσης ἀ. ο. α. χ. γ. Si verba parenthesi inclusa abessent, locum lacuna laborare nemo suspicaretur.

143.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ὀφειλομένη] ὀφειλευμένη A.

144.

[a] Sic A. Scil. p. 476. A. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] περὶ οὗ] περὶ ἂν καὶ B.

σκεψώμεθα, τὸ ἀδικοῦντα διδόναι δίκην ἆρα μέγιστον τῶν κακῶν ἐστιν, ὡς σὺ ᾤου, ἢ μεῖζον τὸ μὴ διδόναι, [c] ὡς αὖ ἐγὼ ᾤμην. Σκοπώμεθα δὲ τῇδε· τὸ διδόναι δίκην καὶ τὸ κολάζεσθαι δικαίως ἀδικοῦντα, ἆρα τὸ αὐτὸ καλεῖς; Ἔγωγε. Ἔχεις οὖν λέγειν, ὡς οὐχὶ [d] τά γε δίκαια πάντα καλά ἐστι καθόσον καὶ δίκαια; καὶ διασκεψάμενος εἰπέ. Ἀλλά μοι δοκεῖ, ὦ Σώκρατες. Σκόπει δὴ καὶ τόδε· ἆρα εἴ τις τὶ ποιεῖ, ἀνάγκη τὶ εἶναι, καὶ πάσχειν ὑπὸ τούτου τοῦ ποιοῦντος; Ἔμοιγε δοκεῖ. Ἆρα τοῦτο πάσχον, ὃ τὸ ποιοῦν ποιεῖ, καὶ τοιοῦτον οἷον ποιεῖ τὸ [e] ποιοῦν; λέγω δὲ τοιόνδε· εἴ τις τύπτει, ἀνάγκη τι τύπτεσθαι; Ἀνάγκη. Καὶ εἰ σφόδρα τύπτει ἢ ταχὺ ὁ τύπτων, οὕτω καὶ τὸ τυπτόμενον τύπτεσθαι; Ναί. Τοιοῦτον ἄρα [f] πάθος τῷ τυπτομένῳ ἐστὶν, οἷον ἂν τὸ τύπτον [g] ποιῇ. Πάνυ γε. Οὐκ οὖν καὶ εἰ καίει τὶς, ἀνάγκη τι καίεσθαι; Πῶς γὰρ οὔ; Καὶ εἰ σφόδρα γε [h] καὶ εἰ ἀλγεινῶς, οὕτως καίεσθαι τὸ καιόμενον, ὡς ἂν τὸ καῖον καίῃ. Πάνυ γε. Οὐκ οὖν καὶ εἰ τέμνει τὶς, ὁ αὐτὸς λόγος; [i] τέμνεται γάρ τι. Ναί. Καὶ εἰ μέγα γε ἢ βαθὺ τὸ τμῆμα ἢ ἀλγεινὸν, τοιοῦτον τμῆμα τέμνεται τὸ τεμνόμενον, οἷον τὸ τέμνον τέμνει; Φαίνεται. Συλλήβδην δὴ ὅρα, εἰ ὁμολογεῖς ὃ ἄρτι ἔλεγον περὶ πάντων, οἷον ἂν ποιῇ τὸ ποιοῦν τοιοῦτον τὸ πάσχον πάσχειν. Ἀλλ' ὁμολογῶ. Τούτων δὴ ὁμολογουμένων, τὸ δίκην διδόναι πότερον πάσχειν τί ἐστιν, ἢ ποιεῖν; Ἀνάγκη, ὦ Σώκρατες, πάσχειν. Οὐκ οὖν ὑπό τινος ποιοῦντος; Πῶς γὰρ οὔ; ὑπό γε τοῦ κολάζοντος. Ὁ δὲ ὀρθῶς κολάζων δικαίως κολάζει; Ναί.

[c] ὡς αὖ] ὡς ἂν A. m. p.
[d] τάγε] τὰ δὲ A.
[e] ποιοῦν] ποιοῦν ποιεῖ Trinc.
[f] πάθος] πάθης B.
[g] ποιεῖ] ποιῇ A. Mox καίει om. B. καὶ τὸ καιόμενον A.
[h] καὶ εἰ ἀλγείνως] εἰ om. Trinc.
[i] τέμνεται γάρ τι. ναί] Al. plura adduntur usque ad initium sequentis hic loci: Οὐκοῦν χρημάτων. Gesner. Addidimus reliqua ex A.

Δίκαια ποιῶν, ἢ οὐ; Δίκαια. Οὐκ οὖν ὁ κολαζόμενος, δίκην διδοὺς, δίκαια πάσχει; Φαίνεται. Τὰ δὲ δίκαιά που [k] καλὰ ὁμολογεῖται; Πάνυ γε. Τούτων ἄρα ὁ μὲν ποιεῖ καλὰ, ὁ δὲ πάσχει, ὁ κολαζόμενος; Ναί. Οὐκ οὖν εἴπερ καλὰ, ἀγαθά; ἢ γὰρ ἡδέα ἢ ὠφέλιμα; Ἀνάγκη. Ἀγαθὰ ἄρα πάσχει ὁ δίκην διδούς; Ἔοικεν. Ὠφελεῖται ἄρα; Ναί. Ἆρα ἥνπερ ἐγὼ ὑπολαμβάνω τὴν ὠφέλειαν; βελτίων τὴν ψυχὴν γίγνεται, εἴπερ δικαίως κολάζεται; Εἰκός γε. Κακίας ἄρα ψυχῆς ἀπαλλάττεται ὁ δίκην διδούς; Ναί. Ἆρ' οὖν τοῦ μεγίστου ἀπαλλάττεται κακοῦ; Ὧδε δὲ σκοπεῖ· ἐν χρημάτων κατασκευῇ ἀνθρώπου κακίαν ἄλλην τινα ἐνορᾷς ἢ πενίαν; Οὐκ, ἀλλὰ πενίαν. Τί δ'; ἐν σώματος κατασκευῇ κακίαν φήσαις ἀσθένειαν εἶναι, καὶ νόσον, καὶ αἶσχος, καὶ τὰ τοιαῦτα; Ἔγωγε. Οὐκ οὖν καὶ ἐν ψυχῇ ἡγῇ πονηρίαν τινα εἶναι; Πῶς γὰρ οὔ; Ταύτην οὖν οὐκ ἀδικίαν καλεῖς καὶ ἀμαθίαν καὶ δειλίαν καὶ τὰ τοιαῦτα; Πάνυ μὲν οὖν. Οὐκ οὖν χρημάτων καὶ σώματος καὶ ψυχῆς, τριῶν ὄντων, τριττὰς [l] εἴρηκας πονηρίας, πενίαν, νόσον, ἀδικίαν; Ναί. Τίς τούτων τῶν πονηριῶν αἰσχίστη; οὐχ ἡ ἀδικία, καὶ συλλήβδην ἡ τῆς ψυχῆς πονηρία; Πολύ γε. Εἰ δὴ αἰσχίστη, καὶ κακίστη; Πῶς, ὦ Σώκρατες, λέγεις; Ὡδί. Ἀεὶ τὸ αἴσχιστον, ἤτοι λύπην μεγίστην [m] παρέχον, ἢ βλάβην, ἢ ἀμφότερον, αἴσχιστόν ἐστιν ἐκ τῶν [n] ὡμολογημένων ἐν τῷ ἔμπροσθεν. Μάλιστα. Αἴσχιστον δὲ ἀδικία, καὶ ξύμπασα ψυχῆς πονηρία, νῦν δὴ ὡμολόγηται ἡμῖν; Ὡμολόγηται γάρ. Οὐκ οὖν [o] ἢ ἀνιαρώτατόν ἐστι, καὶ ἀνίᾳ ὑπερβάλλον, αἴσχιστον τούτων ἐστὶν, ἢ βλάβῃ, [p] ἢ ἀμφότερα; Ἀνάγκη. Ἆρ'

[k] κατὰ A.
[l] εἴρηκας] εἴρηκ^{α} A.
[m] παρέχον] παρεῖχον B.
[n] ὡμολογημένων] ὁμολογουμένων A. ὡμολογουμένων Trinc.
[o] ἢ] εἰ A. Trinc.
[p] ἢ ἀμφότερα] deest ἢ Trinc.

οὖν ἀλγεινότερόν ἐστι τοῦ [q]πένεσθαι καὶ κάμνειν τὸ ἄδικον εἶναι, καὶ ἀκόλαστον, καὶ δειλὸν, καὶ ἀμαθῆ; Οὐκ ἔμοιγε δοκεῖ, ὦ Σώκρατες, ἀπὸ τούτων γε. Ὑπερφυεῖ τινι ἄρα [r]ὡς μεγάλῃ βλάβῃ καὶ κακῷ θαυμασίῳ ὑπερβάλλουσα τὰ ἄλλα ἡ τῆς ψυχῆς πονηρία, αἴσχιστόν ἐστι πάντων· ἐπειδὴ οὐκ ἀλγηδόνι γε [ὡς ὁ σὸς] λόγος. [s]Οὕτως φαίνεται. Ἀλλὰ μήν που τὸ μεγίστῃ βλάβῃ ὑπερβάλλον, μέγιστον ἂν κακὸν εἴη τῶν ὄντων. Ναί. Ἡ ἀδικία ἄρα καὶ ἡ ἀκολασία, καὶ ἡ ἄλλη ψυχῆς πονηρία, μέγιστον τῶν ὄντων κακῶν ἐστι. Φαίνεται. Τίς οὖν τέχνη πενίας ἀπαλλάττει; οὐ χρηματιστική; Ναί. Τῆς δὲ νόσου, οὐκ ἰατρική; Ἀνάγκη. [t]Τίς δὲ πονηρίας καὶ ἀδικίας; Εἰ μὴ οὕτως [v]εὐπορεῖς, ὧδε σκόπει· ποῖ ἄγομεν, καὶ παρὰ τίνας τοὺς κάμνοντας τὰ σώματα; Παρὰ τοὺς ἰατροὺς, ὦ Σώκρατες, φής. Ποῖ δὲ τοὺς ἀδικοῦντας, καὶ ἀκολασταίνοντας; Παρὰ τοὺς δικαστὰς λέγεις. Οὐκ οὖν δίκην δώσοντας; Φημί. Ἆρ' οὖν οὐ δικαιοσύνῃ τινὶ χρώμενοι κολάζουσιν οἱ ὀρθῶς κολάζοντες; Δῆλον [w]δή. Χρηματιστικὴ μὲν ἄρα πενίας ἀπαλλάττει, ἰατρικὴ δὲ νόσου, δίκη δὲ ἀκολασίας [x]καὶ ἀδικίας. Φαίνεται. Τί τούτων κάλλιστόν ἐστιν 272
ὧν λέγεις; [y]Τίνων λέγεις; [z]Χρηματιστικῆς, ἰατρικῆς, δίκης. Πολὺ διαφέρει, ὦ Σώκρατες, ἡ δίκη. Οὐκ οὖν αὖ ἤτοι ἡδονὴν [a]πλείστην ποιεῖ, ἢ ὠφέλειαν, ἢ ἀμφότερα, [b]εἴπερ κάλλιστόν ἐστιν; Ναί. [c]Ἆρ' οὖν τὸ ἰατρεύεσθαι ἡδύ ἐστι, καὶ χαίρουσιν οἱ ἰατρευόμενοι; Οὐκ ἔμοιγε δοκεῖ. Ἀλλὰ ὠφέλιμόν γε. Ἦ γάρ; Ναί. Μεγάλου γὰρ κα-

[q] πένεσθαι] γενέσθαι B.
[r] καὶ] ὡς A. Trinc. βλάβῃ usque ad μεγίστῃ om. B. Trinc.
[s] φαίνεται] οὕτως φ. A.
[t] τῆς δὲ] τίς δὲ A.
[v] εὐπορεῖς] ἀπορεῖς Trinc.
[w] δὴ] δὲ B.
[x] καὶ ἀδικίας om. B.
[y] τίνων λέγεις om. B.
[z] χρηματιστικῆς] χρηματικῆς A.
[a] πλείστην] ἢ πλείστην A.
[b] εἶπου] εἴπερ A.
[c] ἆρ' οὖν—ναί om. B. Sequentia addidimus ex A. ubi mox μεγάλα.

κοῦ ἀπαλλάττεται, ὥστε [d]λυσιτελεῖ ὑπομεῖναι τὴν ἀλγηδόνα καὶ ὑγιῆ εἶναι. Πῶς γὰρ οὔ; Ἆρ' οὖν οὕτως ἂν περὶ σῶμα εὐδαιμονέστατος ἄνθρωπος εἴη ἰατρευόμενος, ἢ μὴ δὲ κάμνων ἀρχήν; Δηλονότι μὴ δὲ κάμνων. Οὐ γὰρ τοῦτ' ἦν εὐδαιμονία, ὡς ἔοικε, κακοῦ ἀπαλλαγὴ, ἀλλὰ τὴν ἀρχὴν μὴ δὲ κτῆσις. Ἔστι ταῦτα. [e]Τί δέ; ἀθλιώτερος πότερος δυοῖν ἐχόντοιν κακὸν, εἴτε ἐν σώματι εἴτε ἐν ψυχῇ, ὁ ἰατρευόμενος, καὶ ὁ ἀπαλλαττόμενος τοῦ κακοῦ, ἢ ὁ μὴ ἰατρευόμενος, ἔχων δέ; Οὐκ οὖν τὸ δίκην διδόναι μεγάλου κακοῦ ἀπαλλαγὴ ἦν, πονηρίας; Ἦν γάρ. Σωφρονίζει γάρ που καὶ δικαιοτέρους ποιεῖ καὶ ἰατρικὴ γίνεται πονηρίας ἡ δίκη. Ναί. Εὐδαιμονέστατος μὲν ἆρα ὁ μὴ ἔχων κακίαν ἐν ψυχῇ, ἐπειδὴ μέγιστον τῶν κακῶν ἐφάνη. Δῆλον δή. Δεύτερος δήπου ὁ ἀπαλλαττόμενος. Ἔοικεν. Οὗτος δ' ἦν ὁ νουθετούμενός τε καὶ ἐπιπληττόμενος καὶ δίκην διδούς. Ναί. Κάκιστ' ἆρα ζῇ ὁ ἔχων καὶ μὴ ἀπαλλαττόμενος. Φαίνεται. Οὐκ οὖν οὗτος τυγχάνει ὢν, [f]ὃς ἂν μέγιστα ἀδικῶν καὶ χρώμενος μεγίστῃ ἀδικίᾳ διαπράξηται ὥστε μήτε νουθετεῖσθαι μήτε κολάζεσθαι μήτε δίκην διδόναι, ὥσπερ σὺ φῇς Ἀρχέλαον παρεσκευάσθαι καὶ τοὺς ἄλλους τυράννους καὶ ῥήτορας καὶ δυνάστας; Σχέδον γάρ που οὗτοι, ὦ ἄριστε, τὸ αὐτὸ διαπεπραγμένοι εἰσὶν, ὥσπερ ἄν τις τοῖς νοσήμασι συνισχόμενος διεπράξατο μὴ διδόναι δίκην τῶν περὶ τὸ σῶμα ἁμαρτημάτων τοῖς ἰατροῖς μὴ δὲ ἰατρεύεσθαι, φοβούμενος, ὥσπερ ἂν [g]εἰ παῖς, τὸ καίεσθαι καὶ τὸ τέμνεσθαι, ὅτι ἀλγεινόν. Ἢ οὐ δοκεῖ καὶ σοὶ οὕτως; Ἔμοι γε. Ἀγνοῶν γε, ὡς ἔοικεν, οἷόν ἐστιν ἡ ὑγίεια καὶ ἡ ἀρετὴ τοῦ σώματος. Κινδυνεύουσι γὰρ ἐκ τῶν νῦν ἡμῖν ὡμολογημένων τοιοῦτόν τι ποιεῖν καὶ οἱ τὴν δίκην φεύγοντες, ὦ Πῶλε, τὸ ἀλγεινὸν [h]αὐτοῦ καθορᾶν, πρὸς δὲ τὸ ὠφέλιμον τυφλῶς ἔχειν,

[d] λυσιτελῆ A. [f] ὂν A. [g] εἰ εἴποις A.
[e] τίς δὲ—πότερον A. [h] αὐτὸ A.

καὶ ἀγνοεῖν ὅσῳ ἀθλιώτερόν ἐστι μὴ ὑγιοῦς σώματος μὴ ὑγιεῖ ψυχῇ συνοικεῖν, ἀλλὰ σαθρᾷ καὶ ἀδίκῳ καὶ ἀνοσίῳ· ὅθεν καὶ πᾶν ποιοῦσιν ὥστε δίκην μὴ διδόναι, μὴ δὲ ἀπαλλάττεσθαι τοῦ μεγίστου κακοῦ, καὶ χρήματα παρασκευαζόμενοι καὶ φίλους καὶ ὅπως ἂν ὦσιν ὡς πιθανώτατοι λέγειν.

145 [a] Τοῦ αὐτοῦ Νόμων η.

Τέχνην γὰρ ἱκανὴν, πολλῆς ἀσκήσεως ἅμα καὶ μαθημάτων πολλῶν δεομένην, κέκτηται πολίτης ἀνὴρ, [b] τὸν κοινὸν τῆς πόλεως κόσμον σώζων καὶ κτώμενος, οὐκ ἐν παρέργῳ δεόμενον ἐπιτηδεύειν. Δύο δὲ ἐπιτηδεύματα ἢ δύο τέχνας ἀκριβῶς διαπονεῖσθαι σχεδὸν οὐδεμία φύσις ἱκανὴ [c] τῶν ἀνθρωπίνων.

146 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Ἀλκιβιάδου.

Τί δὲ δὴ πόλις; τίνος [b] παραγιγνομένου καὶ ἀπογιγνομένου, βελτίων τε γίγνεται καὶ ἄμεινον θεραπεύεται καὶ διοικεῖται; Ἐμοὶ μὲν δοκεῖ, ὦ Σώκρατες, ὅτ' ἂν φιλία μὲν αὐτοῖς γίγνηται πρὸς ἀλλήλους, τὸ δὲ μισεῖν τε καὶ στασιάζειν ἀπογίγνηται. Ἆρ' οὖν φιλίαν λέγεις ὁμόνοιαν, ἢ διχόνοιαν; [c] Ὁμόνοιαν. Διὰ τίνα οὖν τέχνην ὁμονοοῦσιν αἱ πόλεις περὶ ἀριθμούς; Διὰ τὴν ἀριθμητικήν. Τί δέ; οἱ ἰδιῶται, οὐ διὰ τὴν αὐτήν; [d] Ναί. Οὐκ οὖν καὶ αὐτὸς αὐτῷ ἕκαστος; Ναί. Διὰ τίνα δὲ τέχνην αὐτὸς αὐτῷ ἕκαστος ὁμονοεῖ περὶ σπιθαμῆς καὶ πήχεως, [e] ὁπότερον μεῖζον; οὐ διὰ τὴν μετρητικήν; Τί μήν; Οὐκ οὖν καὶ οἱ ἰδιῶται ἀλλήλοις καὶ αἱ πόλεις; [f] Ναί. Τί δέ;

145.
[a] Sic A. Scil. p. 846. Deest lemma Trinc.
[b] τὸν κοινὸν] τὸ κοινὸν Trinc.
[c] τῶν ἀνθρωπίνων om. A. Trinc.

146.
[a] Sic A. Scil. p. 126. B.
[b] παραγιγνομένου] παραγενομένου A.
[c] ὁμόνοιαν—τινα οὖν habet A. in marg.
[d] ναί. καὶ] ναί. οὐκοῦν καὶ A.
[e] ὁπότερον] πότερον A.
[f] ναί om. A. Sequentia post σταθμοῦ addidimus ex A. ubi τί δὲ αἱ περὶ σ.

περὶ σταθμοῦ οὐχ ὡσαύτως; Φημί. Ἣν δὲ σὺ λέγεις ὁμόνοιαν, τίς ἐστι, καὶ περὶ τοῦ, καὶ τὶς αὐτὴν [g]τέχνη παρασκευάζει, καὶ ἆρα ἥπερ πόλει, αὐτὴ καὶ ἰδιώτῃ, αὐτῷ τε πρὸς αὑτὸν καὶ πρὸς ἄλλον; Εἰκός γε. Τίς οὖν ἐστι; μὴ κάμῃς ἀποκρινόμενος, ἀλλὰ προθυμοῦ εἰπεῖν. Ἐγὼ μὲν οἶμαι φιλίαν τε λέγειν καὶ ὁμόνοιαν, ἥνπερ πατήρ τε καὶ υἱὸν φιλῶν ὁμονοεῖ, καὶ μήτηρ, καὶ ἀδελφὸς ἀδελφῷ, καὶ γυνὴ ἀνδρί. Οἴει οὖν ἂν, ὦ Ἀλκιβιάδη, ἄνδρα γυναικὶ περὶ ταλασιουργίας δύνασθαι ὁμονοεῖν, τὸν μὴ ἐπιστάμενον τῇ ἐπισταμένῃ; Οὐ δῆτα. Οὐδέ γε [h]δεῖ οὐδέν· γυναικεῖον γὰρ τοῦτο μάθημα. Ναί. Τί δέ; γυνὴ ἀνδρὶ περὶ ὁπλιτικῆς δύναιτ' ἂν ὁμονοεῖν, μὴ μαθοῦσα; Οὐ δῆτα. Ἀνδρεῖον γὰρ τοῦτο ἴσως ἂν φαίης εἶναι; Ἔγωγε. Ἔστιν ἄρα τὰ μὲν γυναικεῖα, τὰ δὲ ἀνδρεῖα μαθήματα, κατὰ τὸν σὸν λόγον. Πῶς δ' οὔ. Οὐκ ἄρα ἔν γε τούτοις ἐστὶν ὁμόνοια γυναιξὶ πρὸς ἄνδρας. Οὔ. Οὐδ' ἄρα φιλία, εἴπερ φιλία ὁμόνοια ἦν. Οὐ φαίνεται. [i]Ἧι ἄρα αἱ γυναῖκες τὰ αὑτῶν πράττουσιν, οὐ φιλοῦνται ὑπὸ τῶν ἀνδρῶν. Οὐκ ἔοικεν. Οὐδ' ἄρα οἱ ἄνδρες ὑπὸ τῶν γυναικῶν, ᾗ τὰ αὑτῶν. Οὔ. Οὐδ' αὖ ἆρα ταύτῃ οἰκοῦνται αἱ πόλεις, ὅτ' ἂν τὰ αὑτῶν ἕκαστοι πράττωσιν. Οἶμαι γ' ἔγωγε, ὦ Σώκρατες. Πῶς λέγεις, φιλίας μὴ παρούσης, ἧς ἔφαμεν ἐγγινομένης εὖ οἰκεῖσθαι τὰς πόλεις, ἄλλως δ' οὔ; Ἀλλά μοι δοκεῖ καὶ κατὰ ταῦτ' αὐτοῖς φιλία ἐγγίνεσθαι, ὅτι τὰ αὑτῶν ἑκάτεροι πράττουσιν. Οὐκ ἄρτι γε. Νῦν δὲ πῶς αὖ λέγεις; ὁμονοίας μὴ ἐγγινομένης φιλία ἐγγίνεται; ἢ οἷόν τε ὁμόνοιαν ἐγγίγνεσθαι περὶ τούτων, ὧν οἱ μὲν ἴσασιν, οἱ δ' οὔ; Ἀδύνατον. Δίκαια δὲ πράττουσιν, ἢ ἄδικα, ὅτ' ἂν τὰ αὑτῶν ἕκαστοι πράττωσι; Δίκαια· πῶς γὰρ οὔ; Τὰ δίκαια οὖν πραττόντων ἐν τῇ πόλει τῶν πολιτῶν, φιλία οὐκ ἐγγίγνεται πρὸς

[g] τέχνην A. [h] δι' A. [i] εἰ A. Infra id. οὐδὲν ἆρα.

ἀλλήλους; Ἀνάγκη οὖν δοκεῖ μοι, ὦ Σώκρατες. Τίν᾽ οὖν ποτε λέγεις τὴν φιλίαν ἢ ὁμόνοιαν, περὶ ἧς δεῖ ἡμᾶς σοφούς τε εἶναι καὶ εὐβούλους, ἵνα ἀγαθοὶ ἄνδρες ὦμεν;

147 [a] Ἐν ταυτῷ.

Οὐκ ἄρα τειχῶν, οὐδὲ τριήρων, οὐδὲ νεωρίων δέονται αἱ πόλεις, ὦ Ἀλκιβιάδη, εἰ μέλλουσιν [b] εὐδαιμονήσειν, οὐδὲ πλήθους, οὐδὲ μεγέθους, ἄνευ ἀρετῆς. Οὐ μέντοι. [c] Εἰ δὴ μέλλεις τὰ τῆς πόλεως [d] πράξειν ὀρθῶς καὶ καλῶς, ἀρετῆς σοι [e] μεταδοτέον τοῖς πολίταις. Πῶς γὰρ οὔ; Δύναιτο δ᾽ ἄν τις μεταδιδόναι [f] ὃ μὴ ἔχει; Καὶ πῶς; Αὐτῷ ἄρα σοι πρῶτον κτητέον ἀρετὴν, καὶ ἄλλῳ, ὃς μέλλει μὴ ἰδίᾳ μόνον αὐτοῦ [g] τε καὶ τῶν αὐτοῦ ἄρξειν καὶ ἐπιμελήσεσθαι, ἀλλὰ πόλεως καὶ τῶν τῆς πόλεως. Ἀληθῆ λέγεις. Οὐκ ἄρα ἐξουσίαν σοι οὐδ᾽ ἀρχὴν παρασκευαστέον σαυτῷ ποιεῖν ὅ τι ἂν βούλῃ, οὐδὲ τῇ πόλει· ἀλλὰ δικαιοσύνην καὶ σωφροσύνην. Φαίνεται. Δικαίως μὲν γὰρ πράττοντες καὶ σωφρόνως, [h] σύ τε καὶ ἡ πόλις, θεοφιλῶς πράξετε. Εἰκός γε. Καὶ, ὅ πέρ γε ἐν τοῖς πρόσθεν ἐλέγομεν, εἰς τὸ θεῖον καὶ [i] λαμπρὸν ὁρῶντες πράξετε. [k] Φαίνεται. Ἀλλὰ μὴν ἐνταῦθά γε βλέποντες, ὑμᾶς τε αὐτοὺς καὶ τὰ ὑμέτερα ἀγαθὰ κατόψεσθε καὶ γνώσεσθε. Ναί. Οὐκ οὖν ὀρθῶς καὶ εὖ πράξετε; Ναί. Ἀλλὰ μὴν οὕτω γε πράττοντας ὑμᾶς ἐθέλω ἐγγυήσασθαι ἦ μὴν εὐδαιμονήσειν. Ἀσφαλὴς γὰρ εἶ ἐγγυητής. Ἀδίκως δὲ πράττοντες εἰς τὸ ἄθεον καὶ τὸ σκοτεινὸν βλέποντες, ὡς τὰ εἰκότα, ὅμοια τούτοις πράξετε ἀγνοοῦντες ὑμᾶς αὐτούς. Ἔοικεν. Ὧι γὰρ, ὦ φίλε Ἀλ-

147.

[a] Sic A. Sc. p. 134. B.
[b] εὐδαιμονήσειν] εὐδαιμονεῖν A.
[c] εἰ δὴ] εἰ δὲ A. Mox τὰ om. A.
[d] πρᾶξαι] πράξειν A.
[e] μεταδοτέον] μεταδιδόναι A.
[f] ὃ μὴ ἔχει] οὗ μὴ ἕλα A.
[g] τε καὶ] γε καὶ A.
[h] σή τε] σύ τε A.
[i] λαμπρὸν] τὸ λαμπρὸν A.
[k] φαίνεται. Dedimus reliqua ex A. ubi infra l. ἡμέτερα—ἡμᾶς—ἡμῖν. et ἀγαθὸν pro ἄθεον.

κιβιάδη, ἐξουσία μὲν ᾖ ποιεῖν ὃ βούλεται, [l] νοῦν δὲ μὴ ἔχῃ, τί τὸ εἰκὸς συμβαίνειν ἰδιώτῃ ἢ καὶ πόλει; οἷον, νοσοῦντι ἐξουσίας οὔσης δρᾶν ὃ βούλεται, νοῦν ἰατρικὸν μὴ ἔχοντι, τυραννοῦντι δὲ, ὡς μὴ δ' ἐπιπλήττοι τις αὐτῷ, τὶ τὸ συμβησόμενον; Ἆρ' οὐχ ὡς τὸ εἰκὸς, διαφθαρῆναι τὸ σῶμα; Τί δ'; [m] ἐν νηῒ εἴ τῳ ἐξουσία εἴη ποιεῖν ὃ δοκεῖ, νοῦ τε καὶ ἀρετῆς κυβερνητικῆς ἐστερημένῳ, καθορᾷς ὃ ἂν ξυμβαίη αὐτῷ τε καὶ τοῖς [n] συνναύταις; Ἔγωγε, ὅτι ἀπόλοιντο πάντες ἄν. Οὐκ οὖν ὡσαύτως ἐν πόλει τε καὶ πάσαις ἀρχαῖς καὶ ἐξουσίαις ἀπολειπομέναις ἀρετῆς ἕπεται τὸ κακῶς πράττειν; Ἀνάγκη. Οὐκ ἄρα τυραννίδα χρὴ, ὦ ἄριστε Ἀλκιβιάδη, παρασκευάζεσθαι οὔτε ἑαυτῷ, οὔτε τῇ πόλει, εἰ μέλλετε εὐδαιμονεῖν, ἀλλ' ἀρετήν. Ἀληθῆ λέγεις. Πρὶν δέ γε ἀρετὴν ἔχειν, τὸ ἄρχεσθαι ἄμεινον ὑπὸ τοῦ βελτίονος ἢ τὸ ἄρχειν ἀνδρὶ, οὐ μόνον παιδί. Φαίνεται. Οὐκ οὖν τό γ' ἄμεινον καὶ κάλλιον; Ναί. Τὸ δὲ κάλλιον, πρεπωδέστερον; Πῶς δ' οὔ; Πρέπει ἄρα τῷ κακῷ δουλεύειν· ἄμεινον γάρ. Ναί. Δουλοπρεπὲς ἄρα ἡ κακία. Φαίνεται. Ἐλευθεροπρεπὲς δ' ἡ ἀρετή. Ναί. Οὐκ οὖν φεύγειν χρὴ, ὦ ἑταῖρε, τὴν δουλοπρέπειαν; Μάλιστά γε, ὦ Σώκρατες. Αἰσθάνῃ δὲ νῦν πῶς ἔχεις, δουλοπρεπῶς, ἢ οὔ; Δοκῶ μοι καὶ μάλα σφόδρα αἰσθάνεσθαι.

148 [a] Ξενοφῶντος ἐν τῷ η̄ τῆς Κύρου παιδείας.

Ἐννοήσατε γὰρ [b] δὴ, τίς ἂν, πόλις πολεμία ὑπὸ μὴ πειθομένων ἁλοίη; ἢ τίς δ' ἂν φιλία ὑπὸ μὴ πειθομένων [c] διαφυλαχθείη; ποῖον δ' ἂν ἀπειθοῦν στράτευμα νίκης [d] τύχοι; πῶς δ' ἂν μᾶλλον ἡττῶνται ἐν ταῖς μάχαις ἄνθρωποι,

[l] νῦν δὲ μὴ ἔχει A.
[m] ἔννοτ' εἴη τω A.
[n] σὸν αὐτοῖς A.

148.
[a] Sic A. Scil. VIII. 1, 2.
[b] δή τις] δή om. A. Trinc. Mox πόλις om. Trinc.
[c] διαρκεσθείη] διαφυλαχθείη A. Gesn. marg.
[d] τύχοι] τύχῃ Trinc.

ἢ ἐπειδ᾽ ἂν ἄρξωνται [e] ἰδίᾳ ἕκαστος [f] περὶ σωτηρίας βουλεύεσθαι; τί δ᾽ ἂν [g] ἄλλο ἀγαθὸν [h] τελεσθείη ὑπὸ μὴ πειθομένων 273
[i] τοῖς κρείττοσι; ποῖαι δὲ πόλεις νομίμως [k] ἂν οἰκήσειαν; ποῖοι δ᾽ οἶκοι σωθείησαν; πῶς δ᾽ ἂν νῆες ὅποι [l] δεῖ ἀφίκοιντο; ἡμεῖς δὲ, [m] ἃ νῦν ἔχομεν ἀγαθὰ, διὰ τί [n] ἄλλο μᾶλλον κατεπράξαμεν, ἢ διὰ τὸ πείθεσθαι τῷ ἄρχοντι;—Εἰ τοίνυν μέγιστον ἀγαθὸν τὸ πειθαρχεῖν φαίνεται εἰς τὸ καταπράττειν τὰ ἀγαθὰ, εὖ ἴστε ὅτι [o] τὸ αὐτὸ τοῦτο καὶ εἰς τὸ διασώζειν ἃ δεῖ μέγιστον ἀγαθόν ἐστιν.

149 [a] Πλάτωνος Πολιτείας β.

[b] Ἡμέτερον [c] δ᾽ ἂν εἴη ἔργον, ὡς ἔοικεν, εἴπερ οἷοί τε ἐσμὲν ἐκλέξασθαι τίνες τε καὶ ποῖαι φύσεις ἐπιτήδειαι εἰς πόλεως φυλακήν. Ἡμέτερον μέντοι. Μὰ Δί᾽, ἦν δ᾽ ἐγὼ, οὐκ ἄρα φαῦλον πρᾶγμα ἠράμεθα, ὅμως δὲ οὐκ ἀποδειλιατέον, εἰς ὅσον δὴ δύναμις παρήκει. Οὐ γὰρ οὖν, ἔφη. Οἴει οὖν τι, ἦν δ᾽ ἐγὼ, [d] διαφέρειν τὴν φύσιν γενναίου σκύλακος εἰς φυλακὴν νεανίσκου εὐγενοῦς; Τὸ ποῖον λέγεις; Οἷον, ὀξύν τέ που δεῖ αὐτοῖν ἑκάτερον εἶναι [e] πρὸς αἴσθησιν, καὶ ἐλαφρὸν πρὸς τὸ αἰσθανόμενον διωκάθειν, καὶ ἰσχυρὸν αὖ ἐὰν δέῃ ἑλόντα διαμάχεσθαι. Δεῖ γὰρ οὖν, ἔφη, πάντων τούτων. Καὶ μὴν ἀνδρεῖόν γε, εἴπερ εὖ μαχεῖται. Πῶς δ᾽ οὔ; Ἀνδρεῖος δ᾽ εἶναι ἆρ᾽ ἂν ἐθέλοι ὁ μὴ θυμοειδὴς, [f] εἴτε ἵππος, εἴτε κύων, εἴτε ἄλλο ὁτιοῦν ζῶον; ἢ οὐκ ἐννενόηκας, ὡς ἄμαχόν τε καὶ ἀνίκητον θυμὸς, οὗ παρόντος, [g] ψυχὴ πᾶσα

[e] ἰδίᾳ ἕκαστος] ἕκαστος ἰδίᾳ A.
[f] περὶ σωτηρίας] περὶ τῆς αὐτοῦ σωτηρίας Gesn. marg.
[g] ἄλλο om. Trinc.
[h] τελεσθείη] τελεῖσθαι A. Trinc.
[i] τοῖς κρείττοσι om. A. Trinc.
[k] οἰκήσειαν] διοικήσειαν B.
[l] δεῖ] δὴ B.
[m] ἃ νῦν] τὰ νῦν A. τανῦν Trinc.
[n] ἄλλο] ἄλλων A. Trinc.
[o] τὸ αὐτὸ τοῦτο καὶ] καὶ αὐτὸ τοῦτο A.

149.
[a] Sic A. Scil. II. p. 374. E.
[b] Ἡμέτερον usque ad ἐννενόηκα om. A.
[c] δ᾽] δὴ Gesn. marg.
[d] διαφέρειν] διαφέρον B. Mox ἑκατέροιν Trinc.
[e] πρὸς αἴσθησιν om. N. Trinc.
[f] εἴτε ἵππος] εἴτε om. N. Trinc.
[g] ψυχὴ— ἀήττητος om. B.

πρὸς πάντα ἄφοβός τε καὶ ἀήττητος; Ἐννενόηκα. Τὰ μὲν τοίνυν τοῦ σώματος οἷον δεῖ τὸν φύλακα [h] εἶναι τῆς πόλεως δῆλα; Ναί. Καὶ μὴν καὶ τὰ τῆς ψυχῆς, [i] ὅτι γε θυμοειδῆ; [k] Καὶ τοῦτο. Πῶς οὖν, ἦν δ' ἐγὼ, ὦ Γλαύκων, οὐκ ἄγριοι [l] ἀλλήλοις τε ἔσονται καὶ τοῖς [m] ἀλλοτρίοις πολίταις, ὄντες τοιοῦτοι τὰς φύσεις; Μὰ Δί', ἢ δ' ὃς, οὐ ῥᾳδίως. Ἀλλὰ μέντοι δεῖ γε [n] πρὸς μὲν τοὺς οἰκείους πρᾴους αὐτοὺς εἶναι, πρὸς δὲ τοὺς πολεμίους, χαλεπούς· εἰ δὲ μὴ, οὐ [o] μενοῦσιν ἄλλους σφᾶς διολέσαι, ἀλλ' αὐτοὶ [p] φθήσονται αὐτὸ δράσαντες. Ἀληθῆ, ἔφη. Τί οὖν, ἦν δ' ἐγὼ, ποιήσομεν; πόθεν πρᾷόν τε ἅμα καὶ [pp] μεγαλόθυμον ἦθος εὑρήσομεν; ἐναντία γάρ που θυμοειδεῖ πρᾳεῖα φύσις. Φαίνεται. Ἀλλὰ μέντοι [q] τούτων γε ὁποτέρου ἂν στέρηται, φύλαξ ἀγαθὸς οὐ μὴ γένηται. Ταῦτα δὲ ἀδυνάτοις ἔοικεν· καὶ οὕτω δὴ ξυμβαίνει ἀγαθὸν φύλακα ἀδύνατον γενέσθαι. Κινδυνεύει, ἔφη. Καὶ ἐγὼ ἀπορήσας τε καὶ ἐπισκεψάμενος τὰ ἔμπροσθεν, εἶπον, Δικαίως, ἦν δ' ἐγὼ, ὦ φίλε, ἀποροῦμεν· ἧς γὰρ προυθέμεθα εἰκόνος ἀπελείφθημεν. Πῶς λέγεις; ἔφη. Οὐκ ἐνενοήσαμεν ὅτι ἄρα τοιαῦταί εἰσι φύσεις οἵας ἡμεῖς οὐκ ᾠήθημεν, ἔχουσαι τἀναντία ταῦτα; Ποῦ δή; Ἴδοι μὲν ἄν τις καὶ ἐν ἄλλοις πολλοῖς ζώοις, οὐ μέντ' ἂν ἥκιστα (ἐν ᾧ) ἡμεῖς παρεβάλλομεν τῷ φύλακι. Οἶσθα γάρ που τῶν γενναίων κυνῶν ὅτι [r] τοῦτο αὐτῶν φύσει τὸ ἦθος· πρὸς μὲν τοὺς συνήθεις τε καὶ γνωρίμους ὡς οἷόν τε πραοτάτους εἶναι, πρὸς δὲ τοὺς ἀγνῶτας τἀναντία. Οἶδα μέντοι, ἔφη. Τοῦτο μὲν ἆρα, ἦν δ' ἐγὼ, δυνατόν· καὶ οὐ παρὰ φύσιν ζητοῦμεν τοιοῦτον εἶναι τὸν φύλακα. Οὐκ ἔοικεν. Ἆρ' οὖν σοι δοκεῖ

[h] εἶναι] εἶναι τῆς πόλεως A.
[i] ὅτι γε] ἔτι γε B. ὅσα γε A.
[k] καὶ τοῦτο usque ad φύσεις habet A. in marg.
[l] ἀλλήλοις] ἄλλοις A.
[m] ἀλλοτρίοις] ἀλλήλοις Trinc.
[n] πρὸς μὲν] μὲν om. A.
[o] μενοῦσιν] μονοῦσιν B. περιμενοῦσιν Gesn. marg.
[p] φθάσονται] φθήσονται A. B.
[pp] μεγάθυμον Trinc.
[q] τούτων] τούτου A. Post γένηται sequentia addidimus ex A.
[r] οὐ τῶν A. et mox οὐκ pro ὡς.

ἔτι τοῦδε προσδεῖσθαι ὁ φυλακτικὸς ἐσόμενος, πρὸς τῷ θυμοειδεῖ ἔτι προσγενέσθαι φιλόσοφος τὴν φύσιν; Πῶς δή; ἔφη, οὐ γὰρ ἐννοῶ. Καὶ τοῦτο, ἦν δ' ἐγὼ, ἐν τοῖς κυσὶ κατόψει, ὃ καὶ ἄξιον θαυμάσαι τοῦ θηρίου. Τὸ ποῖον; Ὅτι ὃν μὲν ἂν ἴδῃ ἀγνῶτα, μίσει καὶ χαλεπαίνει, οὐδὲν κακὸν πεπονθώς· ὃν δ' ἂν γνώριμον, ἀσπάζεται, κἂν μηδὲν πώποτε ὑπ' αὐτοῦ [r] πεπόνθῃ ἀγαθόν· ἢ οὔπω τοῦτο ἐθαύμασας; Οὐ πάνυ, ἔφη, μεχρὶ τούτου προσέσχον τὸν νοῦν· ὅτι δέ που [s] δρᾷ ταῦτα, δῆλον.

150 [a] Ἐν ταυτῷ.

Φιλόσοφος δὴ καὶ θυμοειδὴς καὶ ἰσχυρὸς καὶ ταχὺς ἡμῖν τὴν φύσιν ἔσται, ὁ μέλλων καλὸς καὶ ἀγαθὸς φύλαξ ἔσεσθαι πόλεως. Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη.

151 [a] Πλάτωνος Πολιτείας Τρίτης.

Εἰ ἄρα τὸν πρῶτον λόγον διασώσομεν, τοὺς φύλακας ἡμῖν τῶν ἄλλων πασῶν [b] δημιουργιῶν ἀφειμένους [c] δεῖν εἶναι δημιουργοὺς ἐλευθερίας τῆς πόλεως πάνυ ἀκριβεῖς, καὶ μηδὲν ἄλλο ἐπιτηδεύειν, ὅ τι μὴ εἰς τοῦτο φέρει· οὐδὲν δὲ [d] δὴ δέοι ἂν αὐτοὺς ἄλλο πράττειν, οὐδὲ μιμεῖσθαι, [e] ἐὰν δὲ μιμῶνται, μιμεῖσθαι τὰ τούτοις προσήκοντα εὐθὺς ἐκ παίδων, ἀνδρείους, σώφρονας, ὁσίους, ἐλευθέρους, καὶ τὰ τοιαῦτα πάντα· τὰ δὲ ἀνελεύθερα [f] μήτε ποιεῖν, μήτε δεινοὺς εἶναι [g] μιμήσασθαι, μηδ' ἄλλο μηδὲν τῶν αἰσχρῶν, ἵνα μὴ ἐκ τῆς μιμήσεως τοῦ εἶναι ἀπολαύσωσιν. [h] Ἢ οὐκ ᾔσθησαι, ὅτι αἱ μιμήσεις, ἐὰν ἐκ νέων πόρρω διατελέσωσιν, εἰς ἤθη τε καὶ

[r] πεπόνθει A.
[s] ἄρα A.

150.

[a] Sic A. Scil. p. 376. C. Deest locus edd.

151.

[a] Sic A. Scil. p. 395. B.
[b] δημιουργῶν] δημιουργιῶν A. δημιουργιῶν ἀφειμένους Gesn. marg. vulgo ἀφείλομεν, οὕς.
[c] δεῖ εἶναι] δεῖν εἶναι Gesner. marg. Mox ἀκριβῶς Trinc.
[d] δὴ δέοι] δὴ om. B.
[e] ἐὰν δὲ μιμῶνται μιμεῖσθαι om. A. Trinc.
[f] μήτε ποιεῖν om. B.
[g] μιμήσασθαι] αἰσθάνεσθαι Trinc.
[h] ἢ οὐκ—διατελέσωσιν om. B.

φύσιν καθίστανται, καὶ κατὰ σῶμα, καὶ φωνὰς, καὶ κατὰ τὴν διάνοιαν. Καὶ μάλα, ἦ δ' ὅς.

152 [a] Ἐν ταυτῷ.

Τὸ δὴ μετὰ τοῦτο, τί ἂν ἡμῖν διαιρετέον εἴη; ἆρ' οὐκ αὐτῶν τούτων οἵ τινες ἄρξουσίν τε καὶ ἄρξονται; Τί μήν; Οὐκ οὖν ὅτι μὲν πρεσβυτέρους τοὺς ἄρχοντας δεῖ εἶναι, νεωτέρους δὲ τοὺς ἀρχομένους; Δῆλον. Καὶ ὅτι γε τοὺς ἀρίστους αὐτῶν τούτων; Καὶ τοῦτο. Οἱ δὲ γεωργῶν ἄριστοι ἆρ' οὐ γεωργικώτατοι γίνονται; Ναί. Ἐπειδὴ φυλάκων αὐτοὺς ἀρίστους δεῖ εἶναι, ἆρ' οὐ φυλακικωτέρους πόλεως; Ναί. Οὐκ οὖν φρονίμους τε εἰς τοῦτο δεῖ ὑπάρχειν, καὶ δυνατοὺς, καὶ ἔτι κηδεμόνας τῆς πόλεως; Ἔστι ταῦτα. Κήδοιτο δ' ἄν τις μάλιστα τούτου, ὃ τυγχάνει φιλῶν; Ἀνάγκη. Καὶ μὴν τοῦτό γ' ἂν μάλιστα [b] φιλοῖ, ᾧ ξυμφέρειν ἡγοῖτο ταῦτα καὶ ἑαυτῷ, καὶ ὅτι μάλιστα ἐκείνου μὲν εὖ πράττοντος οἴοιτο ξυμβαίνειν καὶ ἑαυτῷ εὖ πράττειν, μὴ δὲ τουναντίον; Οὕτως, ἔφη. Λεκτέον ἄρα ἐκ τῶν ἄλλων φυλάκων τοιούτους ἄνδρας, οἳ ἂν σκοποῦσιν ἡμῖν φαίνωνται παρὰ πάντα τὸν βίον, ὃ μὲν ἂν τῇ πόλει ἡγήσωνται ξυμφέρειν, πάσῃ προθυμίᾳ ποιεῖν, ὃ δ' ἂν μὴ, μηδενὶ τρόπῳ πρᾶξαι ἂν ἐθέλειν. Ἐπιτήδειοι γὰρ, ἔφη. Δοκεῖ δή μοι τηρητέον αὐτοὺς εἶναι ἐν ἁπάσαις ταῖς ἡλικίαις, εἰ φυλακικοί εἰσι τούτου τοῦ δόγματος, καὶ μήτε γοητευόμενοι μήτε βιαζόμενοι οἱ ἐκβάλλοιεν ἐπιλανθανόμενοι δόξαν τὴν τοῦ ποιεῖν δεῖν ἃ τῇ πόλει βέλτιστα. Τίνα, ἔφη, λέγεις τὴν ἐκβολήν; Ἐγὼ σοὶ, ἔφην, ἐρῶ. Φαίνεταί μοι δόξα ἐξιέναι ἐκ διανοίας, ἢ ἑκουσίως ἢ ἀκουσίως· ἑκουσίως μὲν, ἡ ψευδὴς τοῦ μεταμανθάνοντος, ἀκουσίως δὲ πᾶσα ἡ ἀληθής. Τὸ μὲν τῆς ἑκουσίου, ἔφη, μανθάνω, τὸ δὲ τῆς ἀκουσίου δέομαι μαθεῖν. Τί δέ; οὐ καὶ σὺ ἡγῇ, ἔφην 274

152. [a] Sic A. Scil. p. 412. B. Vulgo desunt usque ad δέομαι μαθεῖν. [b] φιλεῖ ὡς A.

ἐγώ, τῶν μὲν ἀγαθῶν ἀκουσίως στέρεσθαι τοὺς ἀνθρώπους, τῶν δὲ κακῶν ἑκουσίως; ἢ οὐ τὸ μὲν ἐψεῦσθαι τῆς ἀληθείας κακόν, τὸ δὲ ἀληθεύειν, ἀγαθόν; ἢ οὐ τὸ τὰ ὄντα δοξάζειν, ἀληθεύειν δοκεῖ σοι εἶναι; Ἀλλ', ἦ δ' ὅς, ὀρθῶς λέγεις, καί μοι δοκοῦσιν ἄκοντες ἀληθοῦς [b]δόξης στερίσκεσθαι. Οὐκ οὖν κλαπέντες, ἢ γοητευθέντες, ἢ βιασθέντες τοῦτο πάσχουσιν; Οὐδὲ νῦν, ἔφη, μανθάνω. Τραγικῶς ἄρα, ἦν δ' ἐγώ, κινδυνεύω λέγειν· [c]κλαπέντας γάρ, τοὺς [d]μεταπεισθέντας λέγω, καὶ τοὺς ἐπιλανθανομένους, ὅτι τῶν μὲν χρόνος, τῶν δὲ λόγος ἐξαιρούμενος, λανθάνει. Νῦν γάρ που μανθάνεις; Ναί. Τοὺς τοίνυν βιασθέντας λέγω, οὓς ἂν ὀδύνη τις ἢ ἀλγηδὼν μεταδοξάσαι ποιήσῃ. Καὶ τοῦτο, ἔφη, ἔμαθον, καὶ ὀρθῶς λέγεις. Τοὺς μὴν γοητευθέντας, [dd]ὡς ἐγ' ᾦμαι, καὶ σὺ φαίης εἶναι, οἳ ἂν μεταδοξάσωσιν, ἢ ὑφ' ἡδονῆς [e]κηληθέντες, ἢ ὑπὸ φόβου τὶ δείσαντες. Ἔοικε γάρ, ἦ δ' ὅς, γοητεύειν πάντα ὅσα [f]ἀπατᾷ. Ὃ τοίνυν ἄρτι ἔλεγον, ζητητέον, τίνες ἄριστοι φύλακες τοῦ παρ' αὐτοῖς δόγματος, [g](τοῦ ὡς ποιητέον. Ὃ δ' ἂν τῇ πόλει ἀεὶ δοκῶσι βέλτιστον εἶναι αὐτοῖς ποιεῖν) τηρητέον δὴ εὐθὺς ἐκ παίδων προθεμένοις ἔργα, ἐν οἷς ἄν τις τὸ τοιοῦτον μάλιστα ἐπιλανθάνοιτο, καὶ ἐξαπατῷτο· καὶ τὸν μὲν μνήμονα καὶ δυσεξαπάτητον, ἐγκριτέον· τὸν δὲ μή, ἀποκριτέον. Ἦ γάρ; Ναί. Καὶ πόνων γε αὖ καὶ [h]ἀλγηδόνων ἀγῶνας αὐτοῖς θετέον, ἐν οἷς ταυτὰ [i]ταῦτα τηρητέον. Ὀρθῶς, ἔφη. Οὐκ οὖν, ἦν δ' ἐγώ, καὶ τρίτου εἴδους τοῦ τῆς γοητείας ἅμιλλαν ποιητέον, καὶ θεατέον, ὥσπερ τοὺς πώ-

[b] δόξης] λόγου A. p. m.
[c] κλαπέντες] κλαπέντας Trinc.
[d] μεταπεισθέντας] μεταπισθέντας B.
[dd] οὓς Trinc.
[e] κηληθέντες] κληθέντες A. Trinc.
[f] ἀπατᾷ] ἀπαντᾷ Trinc.
[g] (τοῦ ὡς ποιητέον. Ὃ δ' ἂν τῇ πόλει ἀεὶ δοκῶσι βέλτιστον εἶναι αὐτοῖς ποιεῖν)] τοῦτο ὃ ἂν τῇ πόλει δοκῶσι βέλτιστον εἶναι. Gesn. marg. ποιητέον τοῦτο ὃ ἂν τ. π. δ. β. ε. exempl. Platonis. τὸν δὲ μὴ ἀποκριτέον om. Tr.
[h] ἀλγηδόνων] ἀλγηδόνας καὶ A. καὶ πόνους τε αὖ καὶ ἀλγηδόνας καὶ ἀγῶνας Trinc.
[i] ταῦτα om. A. ἐν ἀνθρώποις ταῦτα τηρητέον Trinc.

λους ἐπὶ τοὺς ψόφους τε καὶ θορύβους ἄγοντες [k]σκοποῦσιν εἰ φοβεροὶ, [l]οὕτως νέους ὄντας εἰς δείματα κομιστέον, καὶ εἰς ἡδονὰς αὖ μεταβλητέον, βασανίζοντας πολὺ μᾶλλον ἢ χρυσὸν ἐν πυρὶ, εἰ δυσγοήτευτος καὶ εὐσχήμων ἐν ἅπασι φαίνεται, φύλαξ αὑτοῦ ὢν ἀγαθὸς, καὶ τῆς μουσικῆς, [m]ἧς ἐμάνθανεν, εὔρυθμόν τε καὶ εὐάρμοστον ἑαυτὸν ἐν πᾶσι τούτοις παρασχών· οἷος δὴ ἂν (ὢν) καὶ ἑαυτῷ καὶ πόλει χρησιμώτατος εἴη· καὶ τὸν ἀεὶ ἔν τε παισὶ καὶ νεανίσκοις καὶ ἀνδράσι βασανιζόμενον, καὶ ἀκήρατον ἐκβαίνοντα, καταστατέον ἄρχοντα τῆς πόλεως καὶ φύλακα, καὶ τιμὰς δοτέον καὶ ζῶντι καὶ τετελευτηκότι, τάφων τε καὶ τῶν ἄλλων μνημείων μέγιστα [n]γέρα λαγχάνοντα· τὸν δὲ μὴ τοιοῦτον ἀποκριτέον. Τοιαύτη τις, ἦν δ' ἐγὼ, ὦ Γλαύκων, δοκεῖ μοι ἡ ἐκλογὴ εἶναι καὶ κατάστασις τῶν ἀρχόντων τε καὶ φυλάκων, ὡς ἐν τύποις, μὴ δι' ἀκριβείας εἰρῆσθαι. Καὶ ἐμοὶ, ἦ δ' ὃς, οὕτω πη φαίνεται. Ἆρ' οὖν ὡς ἀληθῶς ὀρθότατον καλεῖν τούτους μὲν φύλακας παντελεῖς τῶν τε ἔξωθεν πολεμίων, τῶν τε ἐντὸς φίλων, ὅπως μὴ βουλήσωνται, οἱ δὲ μὴ δυνήσωνται κακουργεῖν· τοὺς δὲ νέους, οὓς δὴ νῦν φύλακας ἐκαλοῦμεν, ἐπικούρους τε καὶ βοηθοὺς τοῖς τῶν ἀρχόντων δόγμασιν.

153 [a]Ἐν ταυτῷ.

Ὃ μέντοι ἄρτι ἐλέγομεν, ἄξιον, ὅτι δεῖ αὐτοὺς τῆς ὀρθῆς τυχεῖν παιδείας, ἥ τις ποτ' ἐστιν, εἰ μέλλουσι [b]τὸ μέγιστον ἕξειν πρὸς τῷ ἡμέροι εἶναι αὐτοῖς τε καὶ τοῖς φυλαττομένοις ὑπ' αὐτῶν. Καὶ ὀρθῶς γε, ἦ δ' ὅς. Πρὸς τοίνυν τῇ παιδείᾳ ταύτῃ φαίη ἄν τις νοῦν ἔχων δεῖν καὶ τὰς οἰκήσεις καὶ τὴν ἄλλην οὐσίαν τοιαύτην αὐτοῖς παρεσκευάσθαι, ἥτις μήτε

[k] σκοποῦμεν] σκοποῦσιν A. Trinc.
[l] οὕτω] οὕτως A. Post ἀγαθὸς multa addidimus ex A.
[m] ἧ ὃ A.
[n] ἱερα A.

153.
[a] Sic A. Scil. p. 416. B. Vulgo desunt usque ad πρῶτον μὲν.
[b] τὸν et mox τὸ ἥμερον A.

τοὺς φύλακας ὡς ἀρίστους ἀναγκάσει αὐτοὺς κακουργεῖν,
μήτε ἐπαίρει περὶ τοὺς ἄλλους πολίτας. Καὶ ἀληθῶς γε
φήσει. Ὅρα δὴ, εἶπον ἐγὼ, εἰ τοιόνδε τινα τρόπον δεῖ αὐ-
τοὺς [a] ζῆν τε καὶ οἰκεῖν, εἰ μέλλουσι τοιοῦτοι ἔσεσθαι. Πρῶ-
τον μὲν, οὐσίαν [b] κεκτημένον οὐδεμίαν μηδένα ἰδίαν, ἣν μὴ
πᾶσα ἀνάγκη· ἔπειτα οἴκησιν καὶ ταμιεῖον μηδενὶ εἶναι
μηδὲν τοιοῦτον, εἰς ὃ οὐ πᾶς ὁ βουλόμενος εἴσεισι· τὰ δ'
ἐπιτήδεια, ὅσων δέονται ἄνδρες ἀθληταὶ πολέμου, σώφρονές
τε καὶ ἀνδρεῖοι, ταξαμένους παρὰ τῶν ἄλλων [c] πολιτῶν, δέ-
χεσθαι μισθὸν τῆς [d] φυλακῆς τοσοῦτον, ὅσον [e] μήτε περιεῖναι
αὐτοῖς εἰς τὸν ἐνιαυτὸν, μήτε ἐνδεῖν· φοιτῶντας δ' εἰς ξυσ-
σίτια, [f] ὥσπερ [g] ἐξεστρατοπεδευμένους, κοινῇ [h] ζῆν· χρυσίον δὲ
καὶ ἀργύριον εἰπεῖν αὐτοῖς, ὅτι θεῖον παρὰ θεῶν ἀεὶ ἐν τῇ
ψυχῇ ἔχουσι, καὶ οὐδὲν προσδέονται τοῦ ἀνθρωπείου, οὐδὲ
ὅσια τὴν ἐκείνου κτῆσιν τῇ τοῦ [i] θνητοῦ χρυσοῦ κτήσει ξυμ-
μιγνύντας μιαίνειν· διότι πολλὰ καὶ ἀνόσια περὶ τὸ τῶν
πολλῶν νόμισμα γέγονε, τὸ παρ' ἐκείνοις δὲ ἀκήρατον, ἀλλὰ
μόνοις αὐτοῖς τῶν ἐν τῇ πόλει μεταχειρίζεσθαι, καὶ ἅπτε- 275
σθαι χρυσοῦ καὶ ἀργύρου οὐ θέμις, οὐδὲ ὑπὸ τὸν αὐτὸν ὄρο-
φον ἰέναι, οὐδὲ περιάψασθαι, οὐδὲ [k] πίνειν ἐξ ἀργύρου ἢ χρυ-
σοῦ, καὶ οὕτω μὲν σώζοιντό τε ἂν, καὶ σώζοιεν τὴν πόλιν·
ὁπότε δὲ [l] αὐτοὶ γῆν τε ἰδίαν καὶ οἰκίας καὶ νομίσματα
κτήσονται, οἰκονόμοι μὲν καὶ γεωργοὶ ἀντὶ φυλάκων ἔσονται,
δεσπόται δὲ καὶ ἐχθροὶ ἀντὶ ξυμμάχων τῶν ἄλλων πολι-
τῶν γενήσονται· μισοῦντες δὲ καὶ μισούμενοι, καὶ ἐπιβου-

[a] ζεῖν A.
[b] κεκτημένον] κεκτημένων A. B. Trinc. Mox μηδὲ pro οὐδὲ A.
[c] πολιτῶν om. A.
[d] φυλακικῆς] φυλακῆς A. Trinc.
[e] μήτε περιεῖναι] μὴ περιεῖναι A.
[f] ὥσπερ] ὡς A.
[g] ἐξεστρατοπεδευομένους] Al. deest ἐξ syllaba. Gesner.
[h] ζῆν] ζεῖν A.
[i] θνητοῦ om. B.
[k] πίνειν] πείλειν B. πίλειν τῷ ἀργύρου Trinc.
[l] αὐτοὶ γῆν τε ἰδίαν] αὐτοῦ τήν τε ἰδέαν A. Trinc.

λεύοντες καὶ ἐπιβουλευόμενοι, διάζουσι πάντα τὸν βίον, πολὺ πλεῖον καὶ μᾶλλον [m] δεδιότες τοὺς ἔνδον, ἢ τοὺς ἔξωθεν πολεμίους, θέοντες ἤδη τότε ἐγγύτατα ὀλέθρου, αὐτοί τε καὶ ἡ ἄλλη πόλις.

155 [a] Πλάτωνος Πολιτείας δ̄.

Νευρορράφοι γὰρ φαῦλοι γενόμενοι καὶ διαφθαρέντες, καὶ [b] προσποιησάμενοι εἶναι, μὴ ὄντες, [c] πόλει οὐδὲν δεινόν· φύλακες [d] δὲ νόμων τε καὶ πόλεως μὴ ὄντες, ἀλλὰ δοκοῦντες, ὁρᾷς [e] δὴ ὅτι πᾶσαν ἄρδην πόλιν ἀπολλύασι.—Τοὺς ἄλλους αὖ δημιουργοὺς σκόπει εἰ τάδε διαφθείρει, [f] ὥστε καὶ κακοὺς γίγνεσθαι. Τὰ ποῖα δὴ ταῦτα; Πλοῦτος, ἦν δ' ἐγὼ, καὶ πενία. Πῶς δή; Ὧδε· πλουτήσας χυτρεὺς, δοκεῖ σοι ἔτι θελήσειν ἐπιμελεῖσθαι τῆς τέχνης; Οὐδαμῶς, ἔφη. Ἀργὸς [g] δὲ καὶ ἀμελὴς γενήσεται [h] μᾶλλον αὐτὸς αὑτοῦ; Πολύ γε. Οὐκ οὖν κακίων χυτρεὺς γίνεται; Καὶ τοῦτο, ἔφη, πολύ. Καὶ μὴν καὶ [i] ὄργανά γε μὴ ἔχων παρέχεσθαι ὑπὸ πενίας, ἤ τι ἄλλο τῶν εἰς τὴν τέχνην, τά τε ἔργα πονηρότερα ἐργάσεται, καὶ τοὺς υἱεῖς, ἢ ἄλλους, οὓς ἂν [k] διδάσκῃ, χείρους δημιουργοὺς διδάξεται; Πῶς δ' οὔ; Ὑπ' ἀμφοτέρων δὴ, πενίας τε καὶ πλούτου, χείρω μὲν τὰ τῶν τεχνῶν ἔργα, χείρους δὲ αὐτοί. Φαίνονται. Ἕτερα δὴ, ὡς ἔοικε, τοῖς [l] φύλαξιν εὑρήκαμεν, [m] ἃ παντὶ τρόπῳ φυλακτέον, ὅπως μή ποτε αὐτοὺς λήσῃ εἰς τὴν πόλιν παραδύντα. Τὰ ποῖα ταῦτα; Πλοῦτος, ἦν δ' ἐγὼ, καὶ πενία, ὡς τοῦ

[m] δεδιότες] ὑποδεδιότες A. δεδειότὲς Trinc.

155.

[a] Sic A. Scil. p. 421.

[b] προσποιησάμενοι] προποιησάμενοι Trinc.

[c] πόλει—δοκοῦντες om. B.

[d] δὲ νόμων] δὲ om. A.

[e] γε] δὴ A. δὲ Trinc.

[f] ὥστε καὶ] καὶ om. Trinc. et mox ὅδε pro ὧδε.

[g] γὰρ] δὲ A.

[h] μᾶλλον om. B.

[i] ὄργανά γε] ὄργανά τε Trinc.

[k] διδάξῃ] διδάσκῃ A. διδάσκει Tr.

[l] φύλαξιν] φυλάξασιν A. εἰρήκαμεν Trinc.

[m] ἅπαντι] ἃ παντὶ A.

μὲν τρυφὴν [n] τε καὶ ἀργίαν καὶ νεωτερισμὸν ἐμποιοῦντος, τοῦ δὲ [o] ἀνελευθερίαν καὶ κακουργίαν πρὸς τῷ [p] νεωτερισμῷ. Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη.

156 [a] Ἐν ταυτῷ.

Οὗτοι, ἦν δ' ἐγὼ, ὦ ἀγαθὲ Ἀδείμαντε, ὡς [b] δόξειεν ἄν τις,
ταῦτα πολλὰ καὶ μεγάλα αὐτοῖς [c] προστάττομεν, ἀλλὰ
πάντα φαῦλα, ἐὰν τὸ λεγόμενον [d] ἓν μέγα φυλάττωσι,
[e] μᾶλλον δὲ ἀντὶ μεγάλου, ἱκανόν. Τί τοῦτο; ἔφη. Τὴν
παιδείαν, ἦν δ' ἐγὼ, καὶ τροφήν· ἐὰν γὰρ εὖ παιδευόμενοι
μέτριοι ἄνδρες γίγνωνται, πάντα ταῦτα ῥᾳδίως διόψονται,
καὶ ἄλλα γε ὅσα νῦν ἡμεῖς παραλείπομεν, τήν τε τῶν γυ-
ναικῶν κτῆσιν καὶ γάμων, καὶ παιδοποιίας· ὅτι δεῖ ταῦτα,
κατὰ τὴν παροιμίαν, πάντα ὅτι μάλιστα κοινὰ τὰ [f] τῶν φί-
λων ποιεῖσθαι. Ὀρθότατα γὰρ, ἔφη, γίγνοιτ' ἄν. Καὶ
μὴν, εἶπον, πολιτεία, ἐάν περ ἅπαξ ὁρμήσῃ, [g] εὖ ἔρχεται,
ὥσπερ κύκλος αὐξανομένη· τροφὴ γὰρ καὶ παίδευσις χρη-
στὴ σωζομένη, φύσεις ἀγαθὰς ἐμποιεῖ, καὶ αὖ φύσεις
[h] χρησταὶ, τοιαύτης παιδείας ἀντιλαμβανόμεναι, ἔτι βελ-
τίους [i] τῶν προτέρων φύονται εἴς τε τἄλλα καὶ εἰς τὸ γεν- 276
νᾶν, ὥσπερ καὶ ἐν τοῖς ἄλλοις ζώοις. Εἰκός γ', ἔφη. Ὡς
τοίνυν διὰ βραχέων εἰπεῖν, τούτου ἀνθεκτέον τοῖς ἐπιμεληταῖς
τῆς πόλεως, ὅπως ἂν αὐτοὺς μὴ λάθῃ διαφθαρὲν, ἀλλὰ
παρὰ πάντα αὐτὸ [k] φυλάττωσι, τὸ μὴ νεωτερίζειν περὶ γυμ-
ναστικήν τε καὶ μουσικὴν [l] παρὰ τὴν τάξιν, ἀλλ' ὡς οἷόν τε

[n] τε καὶ] τε om. Trinc.
[o] ἀνελευθερίαν] ἐλευθερίαν A.
[p] νεωτερισμῷ] νέω περισσῷ B.

156.

[a] Sic A. Scil. p. 423.
[b] δόξειεν] δείξειεν A. Trinc. Mox ἅπερ pro αὐτοῖς Trinc.
[c] προστάττομεν] προστάττωμεν A.
[d] ἓν] μὴ ἓν A. μὴ ἐν Trinc.
[e] μᾶλλον] καλὸν A.
[f] τῶν φίλων] τῶν om. A. Trinc.
[g] ἐξέρχεται] εὖ ἔρχεται A. Gesn. marg.
[h] χρησταὶ] χρηστὰς A.
[i] τῶν προτέρων] καὶ τ. π. A. et mox ἄλλα pro τἄλλα.
[k] φυλάττωσι] φυλάττουσι B. mox μὴ om. A. Trinc.
[l] παράταξιν] παρὰ τὴν τάξιν A. Gesn. marg.

μάλιστα φυλάττειν, φοβουμένους ὅτ' ἄν τις λέγῃ, ὡς

τὴν ἀοιδὴν μᾶλλον ἐπιφρονέουσ' ἄνθρωποι,
ἥ τις [m] ἀειδόντεσσι νεωτάτη ἀμφιπέληται.

μὴ πολλάκις τὸν ποιητήν τις [n] οἴηται λέγειν, οὐκ ᾄσματα νέα, ἀλλὰ τρόπον ᾠδῆς νέον, καὶ τοῦτ' [o] ἐπαινῇ· δεῖ δὲ οὔτ' ἐπαινεῖν τὸ τοιοῦτον, οὔτε ὑπολαμβάνειν· εἶδος γὰρ καινὸν μουσικῆς μεταβάλλειν εὐλαβητέον, ὡς ἐν ὅλῳ κινδυνεύοντα· οὐδαμοῦ γὰρ κινοῦνται μουσικῆς τρόποι ἄνευ πολιτικῶν νόμων τῶν μεγίστων, ὥς φησί τε Δάμων, κἀγὼ πείθομαι. Καὶ ἐμὲ τοίνυν, ἔφη ὁ Ἀδείμαντος, θὲς τῶν πεπεισμένων. Τὸ δὴ φυλακτήριον, ἦν δ' ἐγὼ, ὡς ἔοικεν, ἐνταῦθά που οἰκοδομητέον τοῖς φύλαξιν ἐν μουσικῇ. Ἡ γοῦν παρανομία, ἔφη, ῥᾳδίως αὕτη [p] λανθάνει [q] παραδυομένη. Ναὶ, [r] ἔφην, ὡς ἐν [s] παιδιᾶς γε μέρει, καὶ ὡς κακὸν οὐδὲν ἐργαζομένη. Οὐδὲ γὰρ ἐργάζεται, [t] ἔφη, ἄλλο γε, ἢ κατὰ [u] σμικρὸν εἰσοικησαμένη, ἠρέμα ὑπορρεῖ πρὸς τὰ ἤθη τε καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα· ἐκ δὲ [w] τούτων, εἰς τὰ πρὸς ἀλλήλους ξυμβόλαια μείζων ἐκβαίνει· ἐκ δὲ δὴ τῶν ξυμβολαίων, ἔρχεται ἐπὶ τοὺς νόμους καὶ πολιτείας [x] σὺν πολλῇ, ὦ Σώκρατες, ἀσελγείᾳ, [y] ἕως ἂν τελευτῶσα ἅπαντα [z] ἰδίᾳ καὶ δημοσίᾳ ἀνατρέψαι. Εἶεν, ἦν δ' ἐγὼ, οὕτω τοῦτ' ἔχει. Δοκεῖ μοι, ἔφη. Οὐκ οὖν ὃ ἐξ ἀρχῆς ἐλέγομεν, τοῖς ἡμετέροις παισὶν ἐννομωτέρου εὐθὺς παιδιᾶς μεθεκτέον, ὡς παρανόμου γιγνομένης αὐτῆς, καὶ παίδων τοιούτων ἐννόμους τε καὶ σπουδαίους ἐξ αὐτῶν ἄνδρας αὐξάνεσθαι ἀδύνατον ὄν. Πῶς δ' οὐχί; ἔφη.

[m] ἀειδόντεσσι] ἀδόντεσσι Trinc.
[n] οἴηται] οἴεται Trinc.
[o] ἐπαινῇ] ἐπαινεῖ Trinc.
[p] λανθάνει] λανθάνοι B. m. s.
[q] περιδυομένη] παραδομένη A. et Gesn. marg. Ib. Melius παραδυομένη. Gesn.
[r] ἔφην] ἔφη A. Trinc.
[s] παιδείας] παιδιᾶς Gesn. marg. et sic infra.
[t] ἔφη] ἔφην A. Trinc.
[u] σμικρὸν] μικρὸν B.
[w] τούτων] τούτου Trinc.
[x] σὺν om. A. Trinc.
[y] ἕως ἂν τελευτῶσα] ὡς ἀπαιδεύτως A. Trinc.
[z] ἰδίᾳ—δημοσίᾳ] ἴδια—δημόσια B.

ΠΕΡΙ ΝΟΜΩΝ ΚΑΙ ΕΘΩΝ. ΜΔ.

1 [a]Εὐριπίδου.

Ἄρχεσθαι χρεὼν
κακοὺς ὑπ' ἐσθλῶν, καὶ κλύειν τῶν [b]κρεσσόνων.

2 [a]Εὐριπίδου Δικτύος.

Μὴ νεῖκος, ὦ γεραιὲ, [b]κοιράνοις τίθου.
[c]σέβειν δὲ τοὺς κρατοῦντας, ἀρχαῖος νόμος.

3 [a]Μενάνδρου Ἀδελφοῖς.

[b]Οὐ παντελῶς δεῖ τοῖς πονηροῖς ἐπιτρέπειν,
ἀλλ' ἀντιτάττεσθ'· εἰ δὲ μὴ, τἄνω κάτω
ἡμῶν ὁ βίος λήσει [c]μεταστραφεὶς ὅλος.

4 [a]Εὐριπίδου Ἐρεχθεῖ.

Καὶ τοὺς πονηροὺς μή ποτ' αὔξειν ἐν πόλει.
κακοὶ γὰρ ἐμπλησθέντες, ἢ νομίσματος,
ἢ [b]πόλεος ἐμπεσόντες εἰς ἀρχήν τινα,
σκιρτῶσιν [c]ἀδόκητ' εὐτυχησάντων δόμων.

5 [a]Μενάνδρου Ἀνδρογύνῳ.

Τὸ γὰρ σύνηθες οὐδαμοῦ παροπτέον.

1.

[a] Sic Trinc. Fr. inc. 41. Deest lemma A.

[b] κρεσσόνων] κρεισσόνων Valcken. Diatr. p. 220.

2.

[a] Sic A. Fr. 5. Deest lemma Trinc.

[b] τυράννοις] Grotius edidit κοιράνοις ex Salmasii emendatione. Similis est varietas in Æschyl. Prom. 957. et alibi. Videatur Elmsleius ad Euripid. Med. 70.

[c] σέβειν δὲ] Male vulgo σέβειν καὶ. [In editione tantum omnium pessima Genevensi a. 1609.] Puto autem hunc versum ex eadem esse comœdia, ita ut sequentes alterius sint personæ ad hoc dictum excipientis. Grotius.

3.

[a] Sic A. Cleric. p. 6. Simpl. Μενάνδρου Trinc.

[b] Esse Philemonis apparet ex certamine. Grotius. not. mss.

[c] μεταστραφεὶς] μεταστραφθεὶς B.

4.

[a] Sic A. Fr. 2, 28. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] πόλεως] πόλεος Grotius.

[c] ἀδόκητ' εὐτυχησάντων δόμων] ἀδίκως εὐτυχήσαντες δόμῳ Gesn. marg. εὐτυχήσαντες δόμῳ Voss. Arsen. εὐδοκησάντων B.

5.

[a] Sic A. Cleric. p. 16. Deest locus Trinc.

6 [a] Εὐριπίδου Ἱκετίδων.

[b] Οὐκ ἔστιν οὐδὲν κρεῖσσον ἢ νόμοι πόλει
καλῶς [c] τεθέντες· ὅ τε γὰρ ἀσθενέστερος
ὁ πλούσιός τε τὴν δίκην [d] ἴσην ἔχει,
νικᾷ δ᾽ ὁ μείων τὸν μέγαν δίκαι᾽ ἔχων.

7 [a] Σοφοκλῆς Αἴαντι.

[b] Τοιγὰρ τὸ λοιπὸν, [c] εἰσόμεσθα μὲν θεοῖς 277
εἴκειν, μαθησόμεσθα δ᾽ Ἀτρείδας σέβειν.
ἄρχοντές εἰσιν, ὥσθ᾽ ὑπεικτέον· [d] τί μή;
καὶ γὰρ τὰ δεινὰ καὶ τὰ καρτερώτατα
τιμαῖς ὑπείκει· τοῦτο μὲν [e] νιφοστιβεῖς
χειμῶνες ἐκχωροῦσιν εὐκάρπῳ θέρει·
ἐξίσταται δὲ νυκτὸς [f] αἰανῆς κύκλος
τῇ λευκοπώλῳ φέγγος ἡμέρᾳ φλέγειν·
[g] δεινῶν τ᾽ ἄημα πνευμάτων ἐκοίμισε
στένοντα πόντον, ἐν δ᾽ ὁ παγκρατὴς ὕπνος
λύει πεδήσας, οὐδ᾽ ἀεὶ λαβὼν ἔχει.

8 [a] Μενάνδρου.

Καλὸν οἱ νόμοι σφόδρ᾽ εἰσίν· ὁ δ᾽ ὁρῶν τοὺς νόμους
λίαν ἀκριβῶς, συκοφάντης φαίνεται.

6.

[a] Sic A. Scil. v. 435. Deest lemma Trinc.

[b] Οὐκ ἔστιν] Apud Euripidem aliter hos versus legimus, in hunc modum: Γεγραμμένων δὲ τῶν νόμων ὅ τ᾽ ἀσθενὴς Ὁ πλούσιός τε τὴν δίκην ἴσην ἔχει. Ἔστιν δ᾽ ἐνισπεῖν τοῖσιν ἀσθενεστέροις Τὸν εὐτυχοῦντα ταὖθ᾽ ὅταν κλύῃ κακῶς. Νικᾷ δ᾽ ὁ μείων τὸν μέγαν δίκαι᾽ ἔχων. Id est: *Perscripta sed ubi sanctio legum valet, Ibi potens tenuisque tantundem ferunt: Et impetitus pauper opulenti probris Voces reponere audet acceptis pares, Vincitque fretus jure majorem minor.* Grotius.

[c] τεθέντες] τιθέντες B.

[d] ἴσην] ὅσην A.

7.

[a] Sic A. Sc. v. 666. Simpl. Σοφοκλέους Trinc.

[b] τοιγὰρ usque ad σέβειν om. A. τοι pro τὸ Trinc.

[c] εἰσόμεσθα] Male in Stobæo εἰσόμεθα, et mox μαθησόμεθα, et deinde τιμῇ pro τί μή, quæ apud Sophoclem recte exstant. Grotius.

[d] τιμῇ] τὶ μή A. B. Voss. τιμή; Trinc.

[e] νιφοστιβεῖς] νιφοστιβὴς A.

[f] αἰανῆς] ἐανῆς V. αἰωδῆς A. p. m.

[g] δεινῶν] δεινόν A. Voss.

8.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 56.

9 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου.

[b] Χθές που τῶν ὑπ' ἐμοῦ ῥηθέντων λόγων περὶ πολιτείας ἦν τὸ κεφάλαιον, οἵα τε καὶ ἐξ οἵων ἀνδρῶν ἀρίστη καταφαίνεται [c] ἄν μοι γενέσθαι. Καὶ μάλα γε ἡμῖν, ὦ Σώκρατες, ῥηθεῖσα κατὰ νοῦν ἅπασιν. Ἆρ' οὖν οὐ τὸ τῶν γεωργῶν, ὅσαι τε ἄλλαι τέχναι, πρῶτον ἐν αὐτῇ χωρὶς διειλόμεθα ἀπὸ τοῦ γένους τοῦ τῶν [d] προπολεμησόντων; Ναί. Καὶ κατὰ φύσιν δὴ δόντες τὸ καθ' αὑτὸν ἑκάστῳ πρόσφορον, ἓν μόνον ἐπιτήδευμα, [e] μίαν ἑκάστῳ τέχνην, τούτους οὓς πρὸ πάντων ἔδει πολεμεῖν, εἴπομεν, ὡς ἄρα αὐτοὺς δέοι φύλακας εἶναι μόνον τῆς πόλεως, εἴτε τις [f] ἔξωθεν, εἰ καὶ τῶν ἔνδοθεν ἴοι κακουργήσων, [g] δικάζοντας μὲν πρᾴως τοῖς ἀρχομένοις ὑπ' αὐτῶν [h] καὶ φύσει φίλοις οὖσι, χαλεποὺς δ' ἐν ταῖς μάχαις τοῖς ἐντυγχάνουσι τῶν ἐχθρῶν γιγνομένους. Παντάπασι μὲν οὖν. Φύσιν γάρ οἶμαί τινα τῶν φυλάκων τῆς ψυχῆς ἐλέγομεν ἅμα μὲν θυμοειδῆ ἅμα δὲ φιλόσοφον [i] δεῖν εἶναι διαφερόντως, ἵνα πρὸς ἑκατέρους δύναιντο [k] ὀρθῶς πρᾷοι καὶ χαλεποὶ γίγνεσθαι. Ναί. Τί [l] δὲ [m] τροφή; ἆρ' οὐ γυμναστικῇ καὶ μουσικῇ μαθήμασί τε, [n] ὅσα προσήκει, τούτοις ἐν ἅπασι [o] τεθράφθαι; Πάνυ μὲν οὖν. Τοὺς δέ γε οὕτω τραφέντας, ἐλέχθη που, μήτε χρυσὸν, μήτε ἄργυρον, μήτε μηδὲν ἄλλο ποτὲ κτῆμα ἑαυτῶν ἴδιον νομίζειν δεῖν, ἀλλ' ὡς ἐπικούρους μισθὸν λαμβάνοντας τῆς φυλακῆς παρὰ τῶν σωζομένων ὑπ' αὐτῶν, ὅσος σώφροσι μέ-

9.

[a] Sic A. Scil. p. 17. B. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] χθὲς usque ad ἑκάστῳ τέχνην om. A. που om. Trinc.

[c] ἄν μοι] Deest ἂν Trinc.

[d] προπολεμησόντων] προπολεμησάντων Trinc. et mox om. δή.

[e] ἑκάστῃ τέχνῃ] μίαν ἑκάστην τέχνην Trinc. μ. ἑκάστων τ. N. Dedi ἑκάστῳ.

[f] ἔξωθεν] τῶν ἔξωθεν A.

[g] δικάζοντας] διδάξαντας B.

[h] ἅτε] καὶ A. Trinc.

[i] δεῖν] δεῖ A.

[k] ὀρθῶς om. A.

[l] δαὶ] δὲ A. B.

[m] τροφὴν] τροφὴ A. τροφῇ Trinc.

[n] ὅσοις] ὅσ̈ A. ὅσα Trinc.

[o] τετράφθαι] τεθράφθαι A.

τριος, ἀναλίσκειν τε δὴ κοινῇ καὶ [p] ξυνδιαιτωμένους μετ' ἀλλήλων ζῆν, ἐπιμέλειαν ἔχοντας [q] ἀρετῆς διὰ παντὸς, τῶν ἄλλων ἐπιτηδευμάτων ἄγοντας σχολήν. Ἐλέχθη καὶ ταῦτα ταύτῃ. Καὶ μὲν δὴ καὶ περὶ γυναικῶν ἐπεμνήσθημεν, ὡς τὰς [r] φύσεις τοῖς ἀνδράσι παραπλησίας εἴη ξυναρμοστέον, καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα [s] πάντα κοινὰ κατά τε πόλεμον καὶ κατὰ τὴν ἄλλην δίαιταν δοτέον πάσαις. [t] Ταύτῃ καὶ ταῦτα ἐλέγετο. Τί δὲ δὴ τὸ [u] περὶ τῆς παιδοποιΐας; ἢ τοῦτο μὲν διὰ τὴν [w] ἀήθειαν τῶν λεχθέντων εὐμνημόνευτον, ὅτι κοινὰ τὰ τῶν γάμων καὶ τὰ τῶν παίδων πᾶσιν ἁπάντων ἐτίθεμεν, μηχανωμένους ὅπως μηδείς ποτε τὸ γεγενημένον αὐτῷ [x] ἰδίᾳ γνώσοιτο, νομιοῦσι δὲ πάντες πάντας αὑτοὺς ὁμογενεῖς, ἀδελφὰς μὲν καὶ ἀδελφοὺς, [y] ὅσοιπερ ἂν τῆς πρεπούσης ἐντὸς ἡλικίας [z] γίγνωνται, τοὺς δὲ ἔμπροσθεν καὶ ἄνωθεν, γο- 278
νέας τε καὶ γονέων προγόνους, τοὺς δὲ [a] εἰς τὸ κάτωθεν, ἐκγόνους [b] παῖδάς τε ἐκγόνων. Ναὶ καὶ ταῦτα εὐμνημόνευτα, ἣ λέγεις. Ὅπως δὲ δὴ κατὰ δύναμιν εὐθὺς [c] γίγνοινθ' ὡς ἄριστοι τὰς φύσεις, ἆρ' οὐ μεμνήμεθα, ὡς τοὺς ἄρχοντας ἔφαμεν καὶ τὰς ἀρχούσας δεῖν εἰς τὴν τῶν γάμων σύνερξιν λάθρα μηχανᾶσθαι κλήροις τισὶν, ὅπως οἱ κακοὶ χωρὶς οἵ τ' ἀγαθοὶ ταῖς ὁμοίαις ἑκάτεροι [d] συλλήξονται, καὶ μή τις αὐτοῖς ἔχθρα [e] διὰ ταῦτα γίγνηται, τύχην ἡγουμένοις αἰτίαν τῆς συλλήξεως. Μεμνήμεθα. Καὶ μὴν ὅτι γε τὰ

[p] ξυνδιαιτωμένους] ξυνδιαιτωμένου B.

[q] ἀρετῆς διαπαντὸς] διαπαντὸς ἀρετῆς A. ἀρετῆς om. Trinc.

[r] φύσει] φύσεις Trinc.

[s] πάντα om. A.

[t] ταῦτα καὶ ταύτῃ] ταύτῃ καὶ ταῦτα A. Mox τί δαὶ δὴ Trinc.

[u] περὶ] παρὰ Trinc.

[w] ἀήθειαν] ἀλήθειαν A. Trinc.

[x] ἰδίᾳ γνώσαιτο] διαγνώσοιτο A. αὐτὸ διαγνώσοιτο Trinc.

[y] ὅσοι περ ἂν τῆς] ὅσοι παρ' αὐτῆς Trinc.

[z] γίγνωνται] γίγνονται B.

[a] εἰς τὸ] τὸ om. B.

[b] τε καὶ παῖδας] παῖδας τε A. Trinc.

[c] γιγνόμεθα B. Mox ἀρίστω Trinc.

[d] συλλέξωνται] συλλέξονται A. B. συλλήξονται Trinc. et mox συλλήξεως.

[e] διὰ om. B.

μὲν τῶν ἀγαθῶν θρεπτέον ἔφαμεν εἶναι, τὰ δὲ τῶν κακῶν εἰς τὴν ἄλλην λάθρα διαδοτέον πόλιν· [f] ἐπαυξομένων δὲ, σκοποῦντας ἀεὶ τοὺς ἀξίους πάλιν ἀνάγειν δεῖν, τοὺς δὲ παρὰ σφίσιν ἀναξίους εἰς τὴν τῶν ἐπανιόντων χώραν μεταλλάττειν. Οὕτως. Ἆρα οὖν διεληλύθαμεν ἤδη, καθάπερ χθὲς, ὡς ἐν κεφαλαίοις πάλιν ἐπανελθεῖν, ἢ ποθοῦμέν τι τῶν ῥηθέντων; Οὐδαμῶς.

10 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Μινῶος.

Οὐκ οὖν καὶ ἐν τοῖς συγγράμμασι τοῖς περὶ τῶν δικαίων [b] καὶ ἀδίκων, καὶ ὅλως περὶ πόλεως διακοσμήσεως, [c] καὶ περὶ τοῦ ὡς χρὴ πόλιν διοικεῖν, τὸ μὲν ὀρθὸν νόμος ἐστὶ βασιλικός; τὸ δὲ μὴ ὀρθὸν, οὐ δοκεῖ νόμος εἶναι [d] βασιλικὸς τοῖς μὴ εἰδόσιν· ἔστι γὰρ ἄνομον. Ναί. Ὀρθῶς ἄρα ὡμολογήσαμεν νόμον εἶναι τοῦ ὄντος εὕρεσιν. Φαίνεται. Ἔτι δὲ καὶ τόδε ἐν αὐτῷ [e] θεασώμεθα· τίς ἐπιστήμων διανεῖμαι [f] ἐπὶ γῇ τὰ σπέρματα; Γεωργός. Οὗτος δὲ τὰ ἄξια σπέρματα ἑκάστῃ γῇ διανέμει; Ναί. Ὁ γεωργὸς ἄρα νομεὺς ἀγαθὸς τούτων, καὶ οἱ τούτου νόμοι, καὶ διανομαὶ ἐπὶ τὰ αὐτὰ ὀρθαί εἰσιν; Ναί.

11 [a] [b] Τίς δὲ τὴν τῶν προβάτων ἀγέλην κράτιστος νέμειν, τί ὄνομα αὐτῷ; Ποιμήν. Οἱ τοῦ ποιμένος ἄρα νόμοι ἄριστοι τοῖς προβάτοις; Ναί. Οἱ δὲ τοῦ βουκόλου τοῖς βουσί; Ναί. Οἱ δὲ τοῦ τινὸς νόμοι ἄριστοι ταῖς ψυχαῖς τῶν ἀνθρώπων; οὐχ οἱ τοῦ βασιλέως; [c] φάθι. Φημὶ δή.

[f] ἐπαυξομένων] ἐπαυξανομένων A. δὲ om. A. B. Trinc.

10.

[a] Sic A. Scil. p. 317. C. Deest lemma Trinc.

[b] καὶ ἀδίκων om. B.

[c] καὶ] τε καὶ A. Mox τὸν μὲν Trinc.

[d] βασιλικὸς om. A. Trinc.

[e] θεασόμεθα] θεασώμεθα A. Tr.

[f] ἐπὶ γῇ] ἐν τῇ γῇ A. τῇ γῇ Gesn. marg. γῆν B.

11.

[a] Cohærent hæc cum superioribus in A. Trinc. v. p. 318. A.

[b] τίς δὲ] τίς δαὶ Trinc.

[c] φάθι] φασι A.

12 [a]Στωϊκῶν.

Τόν τε νόμον σπουδαῖον [b]εἶναί φασι λόγον ὀρθὸν ὄντα, προστακτικὸν μὲν τῶν ποιητέον, ἀπαγορευτικὸν δὲ τῶν οὐ ποιητέον. [c]Τοῦ δὲ νόμου ἀστείου ὄντος, καὶ ὁ νόμιμος ἀστεῖος ἂν εἴη· νόμιμον μὲν [d]γὰρ εἶναι ἄνδρα καὶ ἀκολουθητικὸν τῷ νόμῳ, καὶ πρακτικὸν τῶν ὑπ' αὐτοῦ προσταττομένων· νομικὸν δὲ τὸν ἐξηγητικὸν τοῦ νόμου· μηδένα δὲ τῶν φαύλων μήτε νόμιμον εἶναι, μήτε νομικόν.

13 [a]Αἰσχίνου ἐκ τοῦ Κατὰ Τιμάρχου.

Οὐδ' ὡς ᾤετο δεῖν ὁ νομοθέτης τὸν ῥήτορα ἥκειν ἐπὶ τὸ βῆμα τῶν λόγων ἐπιμεληθέντα πρότερον, ἀλλὰ τοῦ βίου.

14 [a]Δημοκρίτου.

Κρέσσον ἄρχεσθαι τοῖσιν ἀνοήτοισιν, ἢ ἄρχειν.

15 Δίκη μέν ἐστιν, ἔρδειν τὰ [b]χρὴ ἐόντα· ἀδικίη δὲ, μὴ ἔρδειν τὰ χρὴ ἐόντα, ἀλλὰ παρατρέπεσθαι.

16 Κατὰ δὲ [b]ζώων ἔστιν ὧν [c]φόνου καὶ μὴ φόνου, ὧδε ἔχει· τὰ ἀδικέοντα καὶ θέλοντα ἀδικεῖν ἀθῷος ὁ κτείνων, καὶ πρὸς [d]εὐεστοῦν τοῦτο ἔρδειν μᾶλλον, ἢ μή.

17 Κτείνειν χρὴ τὰ πημαίνοντα παρὰ δίκην πάντα περὶ παν- 279
τός· καὶ ταῦτα [b]ὁ ποιῶν, ἐπιθυμίης, καὶ δίκης, καὶ [c]θάρ-

12.
[a] Sic A. Στοικῶν Trinc.
[b] εἶναι om. B.
[c] τοῦ δὲ νόμου ἀστείου ὄντος] τοῦτο δὲ νόμου ὄντως A.
[d] γὰρ εἶναι usque ad πρακτικὸν om. A.

13.
[a] Sic A. Scil. pag. 55. Deest lemma Trinc.

14.
[a] Sic A. Trinc. Ejusdem videntur esse nn. 15—19. Desunt lemmata Trinc.

15.
[b] χρὴ ἐόντα] χρηεόντα bis A. et B. ex em. ἑκόντα pro ἐόντα conj. Valckenærius, τὰ χρήζοντα Wakefieldius, dubitanter.

16.
[b] ζώων] ζώων ἔστιν ὧν A. Damasc. Trinc.
[c] φόνου — φόνου] φόνον — φόνον Valcken.
[d] εὖ ἔστ' οὖν] εὐεστοῦν Valcken. ad Herodot. I. 85.

17.
[b] ὁ ποιῶν] ὁποίων A.
[c] θάρσους] θάρσεος A. Damasc. θάρσεως B. Mox εὐθυμίης conj. Wakefieldius.

σεος, καὶ κτάσεως ἐν παντὶ κόσμῳ [d] μείζω μοῖραν μεθέξει.

18 [b] Ὅκωσπερ περὶ κιναδέων τε καὶ ἑρπετέων γέγραφαται τῶν πολεμίων, οὕτω καὶ κατὰ ἀνθρώπων δοκεῖ μοι χρεὼν εἶναι ποιεῖν· κατὰ νόμους τοὺς [c] πατρίους κτείνειν πολέμιον ἐν παντὶ κόσμῳ, ἐν ᾧ μὴ νόμος ἀπείργει· νόμος δὲ ἀπείργει, ἱερὰ ἑκάστοισιν ἐπιχώρια, καὶ σπονδαὶ, καὶ ὅρκοι.

19 [b] Κιξάλλην καὶ ληστὴν πάντα κτείνων τις ἀθῷος ἂν εἴη, καὶ [c] αὐτοχειρίῃ, καὶ κελεύων, καὶ ψήφῳ.

20 [a] Ζαλεύκου Προοίμιον νόμων.

Τοὺς κατοικοῦντας τὴν πόλιν καὶ τὴν χώραν πάντας πρῶτον πεπεῖσθαι χρὴ καὶ νομίζειν θεοὺς εἶναι, [b] καὶ ἀναβλέποντας ἐς οὐρανὸν καὶ τὸν κόσμον, καὶ τὴν ἐν αὐτοῖς [c] διακόσμησιν καὶ τάξιν· οὐ γὰρ τύχης, οὐδ' ἀνθρώπων εἶναι [d] δημιουργήματα· σέβεσθαι δὲ τούτους καὶ τιμᾶν, ὡς αἰτίους [e] ὄντας ἁπάντων ἡμῖν ἀγαθῶν, τῶν κατὰ λόγον γιγνομένων. Ἕκαστον οὖν ἔχειν καὶ παρασκευάζειν δεῖ τὴν [f] αὑτοῦ ψυχὴν πάντων τῶν κακῶν καθαράν· ὡς οὐ τιμᾶται θεὸς ὑπ'

[d] μείζω] μιζον D.

18.

[b] Ὄκως B.

[c] πατρίους] πατρῴους A. B.

19.

[b] Κιξάλλην] Deest h. v. Damasc. Perite illustrat Chishullus Antiq. Asiat. p. 100. Ceterum cohærent hæc cum superioribus in A.

[c] αὐτοχειρίῃ] αὐτοχειρίους Dam. ubi et ξίφει post κελεύων legitur.

20.

[a] Sic Trinc. et fere A. ubi προοίμια. De Zaleuco et legibus ejus post alios multa dedit Heynius Opusc. Acad. T. II.

[b] καὶ ἀναβλέποντας] Heynius: leg. ἀναβλέπειν aut del. καί.

[c] διακόσμησιν] διακόσμασιν Voss. ib. Heynius: Interpolata hæc: abest ap. Diodor. καὶ τὸν κόσμον. tum verbum deficit θεωρεῖν, ἐπισκοπεῖν, aut simile quid: forte fuit, καὶ ἀναβλέποντας εἰς οὐρανὸν τὴν διακόσμησιν καὶ τάξιν ἐπισκοπεῖν. cf. Diodori verba. XII. 20.

[d] δημιουργήματα] καὶ ταῖς διανοίαις ἐπισκοπεῖν τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν διακόσμησιν καὶ τάξιν, κρίνειν οὐ τύχης· οὐδ' ἀνθρώπων εἶναι ταῦτα τὰ κατασκευάσματα. ap. Diodor. At Stobæus post εἰς οὐρανὸν apponit καὶ κόσμον Pythagoricam vocem. Nisi tamen reliqua et ipsæ sententiæ Pythagoreum auctorem proderent, huic uni argumento, quod multis modis solvi potest, non tantum tribueremus, quantum Bentleius. Heyne.

[e] ὄντας] εἶναι B.

[f] αὐτοῦ] ἑαυτοῦ A.

ἀνθρώπου φαύλου, οὐδὲ θεραπεύεται δαπάναις οὐδὲ τραγῳδίαις τῶν [g] ἀλισκομένων, καθάπερ μοχθηρὸς ἄνθρωπος· ἀλλ' ἀρετῇ καὶ προαιρέσει τῶν καλῶν ἔργων καὶ δικαίων. Διὸ ἕκαστον [h] δεῖ εἰς δύναμιν ἀγαθὸν εἶναι, καὶ πράξει καὶ προαιρέσει, τὸν μέλλοντα ἔσεσθαι θεοφιλῆ· καὶ μὴ φοβεῖσθαι τὰς εἰς χρήματα ζημίας μᾶλλον [i] τῶν εἰς αἰσχύνην τεινόντων· καὶ πολίτην ἀμείνονα ὀνομάζειν τὸν τὴν οὐσίαν προϊέμενον μᾶλλον τοῦ καλοῦ καὶ δικαίου. Ὅσοις δὲ μὴ ῥᾴδιον πρὸς ταῦτα τὴν ὁρμὴν [k] πεπεῖσθαι, τὴν δὲ ψυχὴν ἔχουσιν εὐκίνητον πρὸς ἀδικίαν, ὧδ' ἡμῖν παρηγγέλθω· πᾶσι τοῖς τοιούτοις πολίταις, καὶ πολίτισι, καὶ [l] ξυνοίκοις, μεμνῆσθαι θεῶν ὡς ὄντων, καὶ δίκας ἐπιπεμπόντων τοῖς ἀδίκοις· καὶ τίθεσθαι πρὸ ὀμμάτων [m] τὸν καιρὸν τοῦτον, ἐν ᾧ γίνεται τὸ τέλος ἑκάστῳ τῆς ἀπαλλαγῆς τοῦ ζῆν. Πᾶσι γὰρ ἐμπίπτει μεταμέλεια τοῖς μέλλουσι τελευτᾶν, μεμνημένοις ὧν [n] ἠδικήκασι, καὶ ὁρμὴ τοῦ βούλεσθαι πάντα πεπρᾶχθαι δικαίως αὐτοῖς. Διὸ [o] δεῖ ἕκαστον παρ' ἑκάστην πρᾶξιν αἰεὶ συνοικειοῦν τὸν καιρὸν τοῦτον, ὡς δὴ παρόντα· οὕτω γὰρ [p] ἂν μάλιστα τοῦ [q] καλοῦ καὶ τοῦ δικαίου φροντιεῖν. Ἐὰν δέ τῳ παραστῇ δαίμων κακὸς τρέπων πρὸς ἀδικίαν, διατρίβειν πρὸς ναοῖς, καὶ βωμοῖς, καὶ τεμένεσι, φεύγοντα τὴν

[g] ἀλισκομένων] Diodorus habet, ὡς τῶν θεῶν οὐ χαιρόντων ταῖς τῶν πονηρῶν θυσίαις τε καὶ δαπάναις, ἀλλὰ ταῖς τῶν ἀγαθῶν ἀνδρῶν δικαίαις τε καὶ καλαῖς ἐπιτηδεύσεσι. Pro ἀλισκομένων Bentleius ἀλισγουμένων *impurorum* emendat. Nescio an alia sit auctoritas idonea vocis ἀλισγεῖν *contaminare* quam τῶν LXX. Certe lenior medela loci ad manum est, τῶν ἀναλισκομένων. Verba enim sunt, ὡς οὐ τιμᾶται θεὸς ὑπ' ἀνθρώπου φαύλου, οὐδὲ θεραπεύεται δαπάναις οὐδὲ τραγῳδίαις τῶν ἀναλισκομένων, *impensarum*, κ. μ. α. Heyne.

[h] δεῖ om. A. Voss. Trinc.

[i] τῶν εἰς usque ad μᾶλλον habet B. in marg. om. Trinc.

[k] πεπεῖσθαι] ποιῆσθε B. πεπιέσθαι conj. Heynius. πεπειῆσθαι A.

[l] ξυνοίκοις] συνοίκοις Voss.

[m] τὸν καιρὸν τοῦτον] τῶν καιρῶν τούτων altera lectione suprascripta Voss.

[n] ἠδικήκασι] ἠδίκησαν A.

[o] δεῖ] δὴ A.

[p] ἂν om. Voss.

[q] καλοῦ] κακοῦ (λ suprascr.) A.

ἀδικίαν, ὡς δέσποιναν ἀσεβεστάτην καὶ χαλεπωτάτην, ἱκετεύοντα τοὺς θεοὺς [r] συναποτρέπειν αὐτήν. Ἰέναι δὲ καὶ πρὸς ἄνδρας δόξαν ἔχοντας ἐπ᾽ ἀνδραγαθίᾳ, [s] ἀκουσόμενον περὶ εὐδαίμονος βίου, καὶ κακῶν ἀνδρῶν τιμωρίης, ἵνα ἀποτρέπηται τῶν ἀδίκων ἔργων.

21 [a] Ἐν ταυτῷ.

[b] Δεισιδαιμονῶν δαίμονας ἀλάστορας. Πάντας δὲ [c] τιμῶν τοῖς οἱ κατοικοῦντες τὴν πόλιν, καὶ τοῖς ἄλλοις νομίμοις τοῖς πατρίοις τοὺς θεούς· πάτρια δὲ εἶναι [d] τὰ κάλλιστα. Πεπεῖσθαι δὲ [e] τοῖς νόμοις ἅπαντας· καὶ τοὺς 280 ἄρχοντας αἰδεῖσθαι, καὶ ἐξίστασθαι, καὶ ποιεῖν τὸ παραγγελλόμενον· ὡς μετὰ [f] θεοὺς, καὶ δαίμονας, καὶ ἥρωας, γονεῖς τε καὶ νόμοι καὶ ἄρχοντες σύνεγγύς εἰσι ταῖς τιμαῖς παρ᾽ ἀνθρώποις νοῦν ἔχουσι, καὶ [g] σωθησομένοις. [h] Πόλιν δὲ φιλαιτέραν μηδεὶς [i] ἄλλην ποιείσθω τῆς [j] αὐτοῦ πατρίδος, ὡς θεῶν πατρῴων νεμεσώντων, ἀρχὴ γὰρ προδοσίας [k] φύεται τοῖς τοιαῦτα βουλομένοις. Ἔτι δὲ χαλεπώτερον, τῆς οἰκείας γῆς στερόμενον ζῆν ἐπ᾽ ἀλλοτρίας· οὐδὲν γάρ ἐστιν οἰκειότερον πατρίδος. Μηδὲ ἐχθρὸν ἀκατάλλακτον μηδεὶς

[r] συναποτρέπειν] ἀποτρέπειν A. et B. ex emend.

[s] ἀκουσομένους] ἀκουσόμενον Heynius. ἀκουσόμενος ed. Francof.

21.

[a] Sic Trinc.

[b] Δεισιδαιμονῶν] Locus est mutilus. Al. δεισιδαιμόνων et cohæret superioribus. Gesner. Sic A. Damasc.

[c] τιμῶν τοὺς οἱ] Sic Gesner. Nullam lacunam habent MSS. τοῖς καὶ A. m. sec. et B. pro τοὺς οἱ.

Ib. Locus mutilus, nec sine libris restituendus. Ad sensum ille sic forte potest constitui: πάντας δὲ τιμᾷν, οὓς τιμῶσιν ἱεροῖς οἱ κατοικοῦντες τὴν πόλιν, καὶ τοῖς ἄλλοις νομίμοις τοῖς πατρίοις, τοὺς θεούς· πάτρια δὲ ἡγεῖσθαι εἶναι τὰ κάλλιστα. Heyne.

[d] τὰ om. Dam.

[e] τοῖς νόμοις] τοὺς νόμους (οις) A.

[f] θεοὺς] τοὺς θεοὺς B.

[g] σωθησομένοις] συνθησομένοις (ω) A.

[h] πόλιν δὲ φιλαιτέραν] πάλιν A. Mox φιλικωτέραν A. B. uterque m. s.

[i] ἄλλην] ἄλλος (ην) A.

[j] αὐτοῦ] ἑαυτοῦ B.

[k] φύεται] φαίνεται A. in textu, φύεται in marg. φαίνεται B. m. s.

μηδένα νομιζέτω τῶν πολιτῶν, οἷς [l] ἐφήκασιν οἱ νόμοι μετέχειν τῆς πολιτείας· ὡς ὁ τοιοῦτος οὔτε ἄρξαι δύναιτ' ἂν, οὔτε δικάσαι καλῶς, τὸν θυμὸν ἔχων κυριώτερον τοῦ λογισμοῦ. Μηδεὶς δὲ λεγέτω κακῶς, μήτε κοινῇ τὴν πόλιν, μήτε ἰδίᾳ τὸν πολίτην· ἀλλ' οἱ τῶν νόμων φύλακες ἐπιμελείσθωσαν [m] τῶν πλημμελούντων, πρῶτον μὲν νουθετοῦντες, ἐὰν δὲ μὴ [n] πείθωνται, ζημιοῦντες. [o] Τῶν δὲ κειμένων νόμων ἐάν τις δοκῇ μὴ καλῶς κεῖσθαι, [p] μετατιθέμεν ἐπὶ τὸ βέλτιον· μενόντων δὲ, πάντας πειθαρχεῖν· [q] ὑπ' ἀνθρώπων μὲν ἡττᾶσθαι τοὺς κειμένους νόμους, οὐ καλὸν, οὐδὲ συμφέρον· ὑπὸ δὲ νόμου [r] βέλτιον ὡς ἡττώμενον κατακρατεῖσθαι, καὶ καλὸν καὶ συμφέρον. Τοὺς δὲ ταῦτα παραβαίνοντας [s] χρὴ καὶ κολάζειν, ὡς κατασκευάζοντας τῇ πόλει μεγίστων κακῶν ἀρχὴν, ἀναρχίαν. Ἄρχοντας δὲ μὴ εἶναι αὐθάδεις, μηδὲ πρὸς ἐπήρειαν κρίνειν, μηδὲ μεμνῆσθαι κρίνοντας φιλίας ἢ ἔχθρας, ἀλλὰ τοῦ δικαίου· οὕτω γὰρ ἀποδώσουσι τὰς κρίσεις δικαιοτάτας, καὶ τῆς ἀρχῆς ἔσονται ἄξιοι. Τοὺς μὲν οὖν δούλους προσήκει διὰ φόβον πράττειν τι τῶν δικαίων, τοὺς δ' ἐλευθέρους δι' αἰδῶ καὶ τὸ καλόν· διὸ χρὴ καὶ τοὺς ἄρχοντας εἶναι τοιούτους, ἵν' ἔχωσιν οἱ ἀρχόμενοι τοὺς ἀξίους αἰσχύνης. Ἐὰν δέ τις βούληται τῶν κειμένων νόμων κινεῖν, ἢ ἄλλον εἰσφέρειν νόμον, εἰς βρόχον εἴρας τὸν τράχηλον, λεγέτω τοῖς [t] πολίταις περὶ αὐτοῦ· καὶ ἐὰν μὲν διαψηφιζομένων δόξῃ λελύσθαι τὸν νόμον, ἢ ὑπάρχειν τὸν εἰσφερόμενον, καὶ αὐτὸν ἀθῷον εἶναι· ἐὰν δὲ ὁ προϋπάρχων μαλ-

[l] ἐφήκασιν] ἐφίκασιν A.
[m] τῶν πλημμελούντων] τῶν πλημμελημάτων ἢ τῶν πλημμελούντων A.
[n] πίθωνται] πείθωνται A. Dam.
[o] τῶν δὲ] τῶν τε A.
[p] μετατίθεμεν] μετατιθέμεν B. m. s. μετατιθέναι l. Heynius.
[q] ὑπ' ἀνθρώπων] Addo ὡς. Gesner. Hoc adoptat Heynius. F. addendum γὰρ post μέν.
[r] βέλτιον ὡς] Lego βελτίονος. Gesn. Hoc item adoptat Heynius.
[s] χρὴ κολάζειν] χρὴ καὶ κολάζειν A. Trinc.
[t] πολίταις] πολλοῖς A. sed πολίταις suprasc.

λον δοκῇ καλῶς ἔχειν, ἢ ὁ εἰσφερόμενος ᾖ ἄδικος, τεθνάναι τὸν κινοῦντα ἢ εἰσφέροντα νόμον, ἐπισπασθέντος τοῦ βρόχου.

22 [a] Ἐκ τῶν Θεοφράστου.

Οἱ μὲν οὖν ὑπὸ κήρυκος κελεύουσι πωλεῖν, καὶ προκηρύττειν ἐκ πλειόνων ἡμερῶν· οἱ δὲ παρ' ἀρχῇ τινι, καθάπερ καὶ Πιττακὸς παρὰ βασιλεῦσι καὶ πρυτάνει. Ἔνιοι δὲ προγράφειν παρὰ τῇ ἀρχῇ πρὸ ἡμερῶν μὴ [b] ἐλαττόνων ἢ ἑξήκοντα, καθάπερ Ἀθήνησι, καὶ τὸν πριάμενον ἑκατοστὴν τιθέναι τῆς τιμῆς, ὅπως διαμφισβητῆσαί τε [c] ἐξῇ καὶ διαμαρτύρεσθαι τῷ βουλομένῳ, καὶ ὁ δικαίως [d] ἐωνημένος φανερὸς ᾖ τῷ τέλει. Παρὰ δέ τισι προκηρύττειν κελεύουσι πρὸ τοῦ κατακυρωθῆναι πένθ' ἡμέρας συνεχῶς, εἴ τις ἐνίσταται, ἢ ἀντιποιεῖται τοῦ κτήματος ἢ τῆς οἰκίας· ὡσαύτως δὲ καὶ ἐπὶ τῶν ὑποθέσεων, ὥσπερ καὶ ἐν τοῖς [e] Κυζικηνῶν.

Οἱ δὲ Θουριακοὶ τὰ μὲν τοιαῦτα πάντα ἀφαιροῦσιν, 281
οὐδ' ἐν ἀγορᾷ [f] προστάττουσιν, ὥσπερ τἄλλα, διδόναι δὲ κελεύουσι κοινῇ τῶν γειτόνων [g] τῶν ἐγγυτάτω τρισὶ νόμισμά τι βραχὺ μνήμης ἕνεκα καὶ μαρτυρίας. [h] Ἀναγ-

21.

[a] Sic Tr. Dam. Deest locus A.

[b] ἐλαττόνων] ἔλαττον Damasc. ἐλάττων Trinc.

[c] ἐξῇ] ἐξῆς Damasc. ἐξῆναι B.

[d] ἐωνημένος] ἐωνυμένος B.

[e] κυβικηνῶν] κυζικηνῶν Damasc. Gesn. marg.

[f] προστάττουσιν] vel l. πράττουσιν vel supplendum πωλεῖν statuit Heynius Opusc. Ac. II. p. 152. qui et paullo ante Θούριοι malit pro Θουριακοί.

[g] τῶν ἐγγυτάτω] τοῖς ἐγγυτάτω Damasc.

[h] ἀναγκαῖον] *Ita necesse erat, ut vicini illi tenerentur ipsi, si res emta non esset tradita, aut jam tradita tanquam non tradita peteretur, aut ab eo, cui tradita esset, accepta esse negaretur.* Hunc quidem verborum apud Stobæum sensum esse arbitramur: ἀναγκαῖον δηλονότι, τοῖς μὲν (qui coram magistratu emptionem venditionem ex lege faciunt) τὰς ἀρχὰς ὑπευθύνους ποιεῖν, τοῖς δὲ τοὺς γείτονας (igitur non modo testes, sed quodammodo *prædes* habebantur hi vicini: qui aderant, ut fidejuberent, contractum fore ratum. Hinc ὑπεύθυνον esse puto, qui ex obligatione in subsidium tenetur) ἐὰν μὴ λάβωσιν, ἢ δὶς παρὰ τοῦ αὐ-

καῖον δηλονότι, τοῖς μὲν τὰς ἀρχὰς ὑπευθύνους ποιεῖν, τοῖς δὲ τοὺς γείτονας, ἐὰν μὴ λάβωσιν, ἢ δὶς [i] παρὰ τοῦ αὐτοῦ λάβωσιν, ἢ ἔχοντες μὴ λέγωσι [k] τῶν ὠναμένων. Οὐ χρὴ δ' ἀγνοεῖν, ὅτι αἱ προγραφαὶ καὶ αἱ προκηρύξεις, καὶ ὅλως ὅσα πρὸς τὰς ἀμφισβητήσεις ἐστὶ [l] πάντα, τὰ πλεῖστα δι' ἔλλειψιν ἑτέρου νόμου τίθεται· παρ' οἷς γὰρ ἀναγραφὴ τῶν κτημάτων ἐστὶ καὶ τῶν συμβολαίων, ἐξ ἐκείνων ἐστὶ [m] μαθεῖν εἰ ἐλεύθερα καὶ ἀνέπαφα, καὶ τὰ αὐτοῦ πωλεῖ δικαίως· εὐθὺς γὰρ καὶ [n] μετεγγράφει ἡ ἀρχὴ τὸν ἐωνημένον. Ἐπεὶ [o] δὲ καὶ [p] προστασίαι τινὲς ὠνοῦνται καὶ πωλοῦσιν, ἀπαλλοτριοῦν ἐθέλοντες, ὀρθῶς ἔχει καὶ πρὸς ταῦτα νομοθετεῖν, ὅπερ καὶ ποιοῦσιν, ἅμα ταῦτά τε βουλόμενοι κωλύειν, καὶ [q] τὴν ἐμφανῆ ποιεῖν, ὥσπερ ἐν τοῖς ἐνίων. Κελεύουσι γάρ, ἐὰν μέν τις οἰκίαν πρίηται, θύειν ἐπὶ τοῦ Ἀπόλλωνος τοῦ [r] Ἐπικωμαίου· ἐὰν δὲ [s] χωρίον, ἐπὶ τῆς κώμης [t] ᾗ αὐτὸς [v] οἰκεῖ, καὶ ὀμνύειν ἐναντίον τῆς ἀρχῆς ἐγγραφούσης καὶ κωμητῶν τριῶν, ἦ μὴν ὠνεῖσθαι δικαίως, [w] μηδὲν συγκακουργοῦντα, μήτε τέχνῃ, μήτε μηχανῇ μηδεμίᾳ· [x] τὸν αὐτὸν δὲ τρόπον, καὶ τὸν πωλοῦντα πωλεῖν [y] ἀδόλως· τὸν δὲ μὴ οἰκοῦντα ἐν ἄστει θύειν τὸν ὅρκον ἐπὶ τοῦ Διὸς τοῦ Ἀγοραίου, τὴν δὲ θυσίαν τῶν ἐλαττόνων εἶναι [z] θυλήμασιν,

τοῦ λάβωσιν, ἢ ἔχοντες μὴ λέγωσι (sc. ἔχειν τι) τῶν ὠναμένων (leg. τῶν ἐωνημένων) HEYNIUS.

[i] παρὰ τοῦ αὐτοῦ] παρ' αὐτοῦ Damasc.

[k] τῶν ὠναμένων] τῷ ὠναμένῳ Damasc.

[l] πάντη] πάντα Damasc.

[m] μαθεῖν in Damasc. post ἀνέπαφα.

[n] μετεγγράφει — τὸν ἐωνημένον] μετεγγράφη τῶν ἐωνημένων Damasc.

[o] δὲ καὶ] δὲ om. Damasc.

[p] προστασίας] προστασίαι Dam. Trinc.

[q] τὴν] An τὴν ὠνὴν, an τὴν οὐσίαν, an γῆν? Pro ἐνίων corr. Αἰνίων, sc. νόμοις. VALCKEN.

[r] ἐπικωμαίου] ἐπικωμένου Damasc.

[s] χωρίον] χωρις Dam. ἐὰν δὲ χωρίον om. B.

[t] ᾗ] ἢ Damasc.

[v] οἰκεῖ καὶ ὀμνύειν] οἰκῇ ἢ ὀμνύει Damasc. οἰκεῖ, καὶ ὀμνείει Trinc.

[w] ὡς μηδὲν] ὡς om. Damasc.

[x] τὸν] τὸν δ' B.

[y] ἀδόλως] εὐκόλως Damasc.

[z] θυλήμασιν] θελήμασιν Damasc.

ἄνευ δὲ τούτων μὴ ἐγγράφειν τὴν ἀρχήν· [a] ἅμα καὶ ἐν τῷ ὅρκῳ [b] προσορκίζειν αὐτὴν, ἐὰν μὴ [c] ὀμνύωσι, μηδὲ ἐγγράφειν τὴν ὠνήν. Οὗτοι μὲν δὴ πρὸς ἀμφότερα, μᾶλλον δὲ πρὸς πάντα βούλονται πεφυλάχθαι, καθάπερ ἴσως καὶ [d] δεῖ. Κυρία δὲ ἡ ὠνὴ καὶ ἡ πρᾶσις εἰς μὲν κτῆσιν, ὅτ' ἂν ἡ τιμὴ δοθῇ, καὶ τὰ ἐκ τῶν νόμων ποιήσωσιν, οἷον ἀναγραφὴν, ἢ [e] οἶκον, ἢ τοῖς γείτοσι τὸ γιγνόμενον· εἰς δὲ τὴν παράδοσιν, καὶ εἰς αὐτὸ τὸ [f] πωλεῖν, ὅτ' ἂν ἀρραβῶνα λάβῃ· σχεδὸν γὰρ οὕτως οἱ πολλοὶ νομοθετοῦσιν· ἀλλὰ τοῦτο προσδιοριστέον, ἐὰν μὴ παρὰ μεθύοντος, [g] μηδ' ἐξ ὀργῆς, μηδὲ φιλονεικίας, μηδὲ παρανομοῦντος, ἀλλὰ φρονοῦντος, καὶ τὸ ὅλον δικαίως, ὅπερ κἀκεῖ προσθετέον, ὅτ' ἂν ἀφορίζῃ παρ' ὧν δεῖ ὠνεῖσθαι. Τάττουσι δέ τινες καὶ τὸν ἀρραβῶνα πόσον δεῖ διδόναι, πρὸς τὸ πλῆθος τῆς τιμῆς μερίζοντες, ἄτοπον γὰρ ἐὰν δακτύλιον δῷ τῶν δέκα ταλάντων. ([h] Ἔοικε γὰρ ἐκ καιροῦ τὰ τοιαῦτα, καὶ πάθους γίγνεσθαι· δεῖ δ' ἐκ προαιρέσεως· οὕτω γὰρ ἔσται τὸ δίκαιον) Ἐὰν δὲ λαβὼν ἀρραβῶνα μὴ δέχηται τὴν τιμὴν, ἢ [i] δοὺς μὴ [k] καταβάλῃ ἐν τῷ ὡρισμένῳ χρόνῳ, (δεῖ γὰρ ὡρίσθαι καθάπερ ἐν τοῖς Θουρίων, τὸν μὲν ἀρραβῶνα παραχρῆμα, τὴν δὲ τιμὴν αὐθημερόν· οἱ δὲ καὶ πλείους ἡμέρας τίθενται τῆς τιμῆς· οἱ δ' ἁπλῶς, ὅσας ἂν ὁμολογήσωσι) [l] τὸ δ' ἐπιτίμιον ἑκατέρῳ, πότερον [m] τῷ μὲν στέρησις τοῦ

[a] ἅμα] ἀλλὰ Damasc.

[b] προσορμίζειν] προσορκίζειν Dam.

[c] ὀμνύωσι] ὀμνύῃς B.

[d] δεῖ] δὴ Damasc. Mox ἡ ante πράσις om. Dam. δὲ om. Trinc.

[e] οἶκον] Forte ὅρκον. GESNER.

[f] πωλεῖν] πονεῖν Damasc.

[g] μηδ' ἐξ usque ad φρονοῦντος om. B.

[h] (ἔοικε — δίκαιον)] Parenthesi inclusa malim legere paulo superius post hæc verba, παρ' ὧν δεῖ ὠνεῖσθαι. GESNER.

[i] δοὺς sc. τὸν ἀρραβῶνα, μὴ καταβάλῃ, sc. τὴν τιμήν. HEYNIUS.

[k] καταβάλῃ] καταλάβῃ B.

[l] Rei venditæ pretium si non dicto die sit solutum, τὸ δ' ἐπιτίμιον ἑκατέρῳ—ποτέρον ut p. 282, 7. τῷ μὲν στέρησις τ. ἀ.—τῷ δὲ μὴ δεχομένῳ ἔκτισις ὅσου ἂν ἀποδῶται. Sic ista legi debent. VALCKEN. Paullo supra αὖ Trinc. pro ἄν.

[m] τῷ μὲν στερήσεις] τὴν μὲν στέ-

ἀρραβῶνος· οὕτω γὰρ σχεδὸν οἵ τ' ἄλλοι κελεύουσι καὶ οἱ 282
Θουριακοί· τῷ δὲ μὴ δεχομένῳ, ἔκτισις [n]ὅσου ἂν ἀποδῶται, καὶ γὰρ τοῦτο ἐν τοῖς [o]Θουρίων, ἡ ἄνισος ζημία· πολλαπλασία γὰρ ἡ τιμὴ τοῦ ἀρραβῶνος· ἔτι δὲ καὶ [p]βλάπτοιτ' ἂν ὁ ἀποδόμενος ἀφεὶς [q]ἑκατέρους, [r]ἐπειδή τις ἐφ' ἡμέραν μίαν ὁρίσειεν, οὕτω γὰρ μάλιστ' [s]ἐνδέχεται παρ' ἐνίοις, δεδικάσθαι κελεύουσι τῷ μὴ δεχομένῳ τὴν τιμήν. Πότερον δὲ ἕως ἂν κομίσηται [t]κύριον εἶναι τοῦ κτήματος· οὕτω [v]γὰρ οἱ πολλοὶ νομοθετοῦσιν· ἢ ὥσπερ Χαρώνδας καὶ Πλάτων· οὗτοι γὰρ παραχρῆμα κελεύουσι διδόναι καὶ λαμβάνειν, ἐὰν δέ τις πιστεύσῃ, μὴ εἶναι δίκην, αὐτὸν γὰρ αἴτιον εἶναι τῆς ἀδικίας.

22 [a]Πλάτωνος ἐκ τῆς πρὸς τοὺς οἰκείους Δίωνος Ἐπιστολῆς.

[b]Δέξασθε, ὦ Συρακούσιοι, πάντων πρῶτον νόμους, οἵ τινες ἐὰν [c]ὑμῖν [d]φαίνωνται μὴ [e]πρὸς χρηματισμὸν καὶ πλοῦτον [f]τρέψοντες τὰς γνώμας ὑμῶν μετ' ἐπιθυμίας, ἀλλ' ὄντων τριῶν, ψυχῆς καὶ σώματος ἔτι δὲ χρημάτων, τὴν τῆς ψυχῆς ἀρετὴν [g]ἐντιμοτάτην ποιοῦντες· δευτέραν δὲ [h]τὴν τοῦ σώματος, ὑπὸ τῇ τῆς ψυχῆς κειμένην· τρίτην δὲ καὶ ὑστάτην τὴν τῶν χρημάτων τιμὴν, δουλεύουσαν τῷ σώματί τε καὶ [i]τῇ ψυχῇ. Καὶ ὁ μὲν ταῦτα ἀπεργαζόμενος θεσμὸς,

ρησιν Damasc. στέρησις Heynius, quomodo apud Bentleium legitur Diss. Phal. p. 366.

[n] ὅσον] ὅσου Damasc. et Bentleius l. c.

[o] Θουρίων] Θουρίοις καὶ N.

[p] βλάπτει τ'] βλάπτοι τ' Damasc. N. B. βλάπτεται pro βλάπτειτ' ἂν Heynius.

[q] ἑκατέρους. Sc. et pretium rei et arram. Heynius.

[r] ἐπειδὴ] ἐπεὶ δὲ Heynius.

[s] ἐνδέχεται] ἂν δ. B.

[t] κύριον εἶναι] κύριος ἔσται Damasc.

[v] γὰρ om. Damasc.

22.

[a] Sic A. Scil. p. 355. A.

[b] δέξασθε] δέξασθαι Trinc.

[c] ὑμῖν] ἡμῖν B.

[d] φαίνονται] φαίνωνται A. Dam.

[e] χρηματισμὸν] πρὸς χρηματισμὸν A.

[f] τρέψοντες] τέρψοντα A. τρέψαντες B.

[g] ἐντιμωτάτην] ἐντιμοτάτην A.

[h] τὴν τοῦ] τὴν om. A. Trinc. Mox ὑπὸ τὴν Trinc.

[i] τῇ ψυχῇ] τῇ om. A.

νόμος ἂν ὀρθῶς ὑμῖν εἴη κείμενος, [k]ὄντως εὐδαίμονας ἀποτελῶν τοὺς χρωμένους· ὁ δὲ τοὺς πλουσίους εὐδαίμονας ὀνομάζων [l]λόγος, αὐτός τε ἄθλιος, γυναικῶν καὶ παίδων ὢν λόγος ἄνους, [m]τοὺς πειθομένους τε ἀπεργάζεται τοιούτους. Ὅτι δ' ἀληθῆ ταῦτ' ἐγὼ παρακελεύομαι, ἐὰν γεύσησθε τῶν νῦν λεγομένων περὶ νόμων, ἔργῳ γνώσεσθε· ἡ δὲ βάσανος ἀληθεστάτη δοκεῖ γίνεσθαι τῶν πάντων πέρι.

23 [a]Ξενοφῶντος ἐκ τῆς Κύρου Παιδείας.

Φῦναι δὲ ὁ Κῦρος λέγεται καὶ ᾄδεται ἔτι καὶ νῦν ὑπὸ τῶν Βαρβάρων, εἶδος μὲν κάλλιστος, ψυχὴν δὲ φιλανθρωπότατος, καὶ φιλομαθέστατος, [b]καὶ φιλοτιμότατος, ὥστε πάντα μὲν πόνον ἀνατλῆναι, πάντα δὲ κίνδυνον ὑπομεῖναι, τοῦ ἐπαινεῖσθαι ἕνεκα. Φύσιν μὲν δὴ τῆς ψυχῆς καὶ τῆς μορφῆς τοιαύτην ἔχων [c]διαμνημονεύεται· ἐπαιδεύθη γε μὴν ἐν Περσῶν νόμοις. Οὗτοι δὲ δοκοῦσιν οἱ νόμοι ἄρχεσθαι, τοῦ κοινοῦ ἀγαθοῦ ἐπιμελούμενοι, [d]οὐκ ἔνθεν ὅθεν περ ἐν ταῖς πλείσταις πόλεσιν ἄρχονται. Αἱ μὲν γὰρ πλεῖσται πόλεις ἀφεῖσαι παιδεύειν [e]ὅπως τις ἐθέλει τοὺς ἑαυτοῦ παῖδας, καὶ αὐτοὺς τοὺς πρεσβυτέρους ὅπως [f]ἐθέλουσι διάγειν, ἔπειτα προστάττουσιν αὐτοῖς μὴ [g]κλέπτειν, μηδ' ἁρπάζειν, μὴ βίᾳ εἰς οἰκίαν παριέναι, μὴ παίειν ὃν μὴ δίκαιον, μὴ μοιχεύειν, μὴ ἀπειθεῖν [h]ἄρχοντι, καὶ τἄλλα τὰ τοιαῦτα ὡσαύτως· ἐὰν δέ τις τούτων [i]παραβαίνῃ τι, ζημίας αὐ-

[k] ὄντως] οὕτως Trinc.
[l] λόγος] λόγους A. Mox dedi ἄνους pro ἀνθρώπους (ἀνοῦς) ex Platone.
[m] τοὺς πειθομένους τε] τοὺς om. Damasc. τε om. B. Ὅτι δ'—πέρι accedunt e Damasc.

23.

[a] Sic A. Scil. I. 2. Simpl. Ξενοφῶντος Trinc.
[b] καὶ φιλοτιμότατος om. A. Tr.
[c] μνημονεύεται] διαμνημονεύεται A. Trinc.
[d] οὐκ ἔνθεν] οὐχ ὁμοίως γὰρ ταῖς Gesner. marg. e vulg. sc. exempl. Xenophontis.
[e] ὅπως usque ad πρεσβυτέρους om. B.
[f] ἐθέλουσι] ἐθέλωσι B.
[g] κλέπτειν] βλέπειν Trinc. et mox ὧν pro ὅν.
[h] ἄρχοντι] ἄρχουσιν A. m. sec.
[i] παραβαίνῃ τι ζημ.] παραβαίνῃ ζημ. A.

τοῖς ἐπανέθεσαν. Οἱ δὲ Περσικοὶ νόμοι προλαβόντες, [k]ἐπιμελοῦνται ὅπως τὴν ἀρχὴν [l]μὴ τοιοῦτοι ἔσονται οἱ πολῖται, οἷοι πονηροῦ τινος ἢ αἰσχροῦ ἔργου ἐφίεσθαι. Ἐπιμέλονται δὲ δὴ [m]ὧδε· ἔστιν αὐτοῖς ἐλευθέρα ἀγορὰ καλουμένη, ἔνθα τά τε βασίλεια, καὶ τὰ ἄλλα [n]ἀρχεῖα πεποίηται. Ἐντεῦθεν τὰ μὲν ὤνια, καὶ οἱ ἀγοραῖοι, καὶ αἱ τούτων φωναὶ καὶ [o]ἀπειροκαλίαι ἀπελήλανται εἰς [p]ἄλλον τόπον, ὡς μὴ [q]μιγνύηται ἡ τούτων τύρβη τῇ τῶν πεπαιδευμένων εὐκοσμίᾳ. Διήρηται δὲ αὕτη ἡ ἀγορὰ ἡ περὶ τὰ ἀρχεῖα εἰς τέσσαρα μέρη· τούτων δ' ἐστὶν ἓν μὲν παισὶν, ἓν δὲ ἐφήβοις, [r]ἄλλο δὲ τελείοις ἀνδράσιν, ἄλλο δὲ τοῖς ὑπὲρ τὰ στρατεύσιμα ἔτη [s]γεγονόσι. Νόμῳ δὲ εἰς τὰς ἑαυτῶν χώρας ἕκαστοι τούτων παριᾶσιν· οἱ μὲν παῖδες, ἅμα τῇ ἡμέρᾳ, καὶ οἱ τέ- 283
λειοι ἄνδρες· οἱ δὲ γεραίτεροι, ἡνίκα ἂν ἑκάστῳ προχωρῇ, πλὴν ἐν ταῖς τεταγμέναις ἡμέραις αἷς αὐτοὺς δεῖ παρεῖναι· οἱ δὲ ἔφηβοι καὶ κοιμῶνται περὶ τὰ ἀρχεῖα σὺν τοῖς [t]γυμνικοῖς ὅπλοις, πλὴν τῶν γεγαμηκότων· οὗτοι δὲ οὔτε ἐπιζητοῦνται, ἂν μὴ προρρηθῇ παρεῖναι, οὔτε πολλάκις ἀπεῖναι καλόν. Ἄρχοντες δὲ ἐφ' [v]ἑκάστοις τούτων τῶν [w]μερῶν εἰσι δώδεκα· δώδεκα γὰρ καὶ φυλαὶ Περσῶν διήρηνται· καὶ ἐπὶ μὲν τοῖς παισὶν, ἐκ τῶν γεραιτέρων ἡρημένοι εἰσὶν, οἳ ἂν δοκῶσι [x]τοὺς παῖδας βελτίστους ἀποδεικνύναι· ἐπὶ δὲ τοῖς ἐφήβοις, ἐκ τῶν τελείων ἀνδρῶν, οἳ ἂν [y]αὖ τοὺς ἐφήβους βελτίστους δοκῶσι παρέξειν· [z]ἐπὶ δὲ τοῖς τε-

[k] ἐπιμελοῦνται] ἐπιμελῶνται A.
[l] μὴ] μὴ καὶ B.
[m] ὧδε om. B.
[n] ἀρχεῖα] ἀρχαῖα B.
[o] ἀπειροκαλίαι] αἱ ἀπειροκαλίαι A.
[p] ἄλλον] ἄλλων Trinc.
[q] μιγνύηται om. B. Mox καὶ ἡ τούτων A.
[r] ἄλλο δὲ] ἄλλοτε δὲ Trinc. et sic mox.
[s] γεγονόσι] γεγόνασι A.
[t] γυμνικοῖς] γυμνητικοῖς A.
[v] ἑκάστοις] ἑκάστῳ Gesn. marg. e Xenophonte.
[w] μερῶν] ἡμερῶν B.
[x] τοὺς παῖδας] τούς τε καὶ παῖδας A.
[y] αὖ τοὺς] αὐτοὺς A.
[z] ἐπὶ δὲ—παρέχειν om. A. Trinc.

λείοις ἀνδράσιν, οἳ ἂν δοκῶσι παρέχειν αὐτοὺς μάλιστα τὰ τεταγμένα ποιοῦντας, καὶ τὰ παραγγελλόμενα ὑπὸ τῆς μεγίστης ἀρχῆς· εἰσὶ καὶ τῶν γεραιτέρων προστάται ᾑρημένοι, οἳ προστατεύουσιν, ὅπως καὶ [a] οὗτοι τὰ καθήκοντα [b] ἀποτελῶσιν. Ἃ δὲ ἑκάστῃ τῇ ἡλικίᾳ προστέτακται ποιεῖν, [c] διηγησόμεθα, ὡς μᾶλλον δῆλον γένηται, [d] ᾗ [e] ἐπιμέλονται ὡς ἂν βέλτιστοι εἶεν οἱ πολῖται. [f] Οἱ μὲν δὴ παῖδες οἱ εἰς τὰ [g] διδασκαλεῖα φοιτῶντες [h] διάγουσι μανθάνοντες δικαιοσύνην, καὶ λέγουσιν ὅτι ἐπὶ τούτῳ [i] ἔρχονται, ὥσπερ παρ' ἡμῖν [k] οἱ τὰ γράμματα μαθησόμενοι· οἱ δὲ ἄρχοντες αὐτῶν διατελοῦσι τὸ πλεῖστον τῆς ἡμέρας δικάζοντες αὐτοῖς· γίγνεται γὰρ [l] δὴ πρὸς ἀλλήλους καὶ παισὶν ὥσπερ ἀνδράσιν ἐγκλήματα, καὶ κλοπῆς, καὶ ἁρπαγῆς, καὶ βίας, καὶ [m] ἀπάτης, καὶ κακολογίας, καὶ ἄλλων οἵων εἰκός. Οὓς δ' ἂν γνῶσι τούτων τι ἀδικοῦντας, τιμωροῦνται· κολάζουσι δὲ καὶ οὓς ἂν ἀδίκως ἐγκαλοῦντας εὑρίσκωσι· δικάζουσι δὲ καὶ ἐγκλήματος, οὗ ἕνεκα ἄνθρωποι [n] μισοῦσι μὲν ἀλλήλους μάλιστα, δικάζονται δὲ [οὐχ] ἥκιστα, ἀχαριστίας· καὶ ὃν ἂν γνῶσι, δυνάμενον μὲν χάριν ἀποδοῦναι, μὴ ἀποδιδόντα δὲ, κολάζουσι τοῦτον ἰσχυρῶς. Οἴονται γὰρ τοὺς ἀχαρίστους, καὶ περὶ θεοὺς ἂν μάλιστα ἀμελῶς ἔχειν, καὶ περὶ γονέας, καὶ περὶ πατρίδα, καὶ περὶ φίλους. Ἕπεσθαι δὲ δοκεῖ μάλιστα τῇ ἀχαριστίᾳ [o] ἡ ἀναισχυντία· καὶ γὰρ αὕτη δοκεῖ εἶναι μεγίστη ἐπὶ πάντα

[a] οὗτοι] αὐτοὶ Gesn. marg. e Xenoph.
[b] ἀποτελῶσιν] ἀποτελέσωσιν A.
[c] διηγησόμεθα] διηγησώμεθα A.
[d] ᾗ] εἰ margo Gesn.
[e] ἐπιμέλλονται B.
[f] οἱ μὲν] οἱ μὲν δὴ A.
[g] διδασκαλεῖα] διδασκάλια A.
[h] μανθάνουσι διάγειν] διάγουσι μανθάνοντες A. Gesn. marg. et libri Xenophontis.
[i] ἔρχονται] ἄρχονται Trinc.
[k] οἱ τὰ] ὅτι A.
[l] δὴ om. A.
[m] ἀπάτης καὶ] ἀπάσης B.
[n] μισοῦσι μὲν ἀλλήλους] μὲν deest A. μισοῦμεν ἀλλήλους Gesn. marg. e Xenoph.
[o] ἡ ἀναισχυντία] Deest articulus A. Trinc.

τὰ αἰσχρὰ ἡγεμών. Διδάσκουσι δὲ τοὺς παῖδας καὶ σω-
φροσύνην· μέγα δὲ [p] συμβάλλεται καὶ εἰς τὸ μανθάνειν
σωφρονεῖν αὐτοὺς, ὅτι καὶ τοὺς πρεσβυτέρους ὁρῶσιν ἀνὰ πᾶ-
σαν ἡμέραν σωφρόνως διάγοντας. Διδάσκουσι δὲ καὶ πεί-
θεσθαι αὐτοὺς τοῖς ἄρχουσι· μέγα δὲ καὶ εἰς τοῦτο συμ-
βάλλεται, ὅτι ὁρῶσι καὶ τοὺς πρεσβυτέρους πειθομένους
ἰσχυρῶς τοῖς ἄρχουσι. Διδάσκουσι δὲ καὶ ἐγκρατεῖς εἶναι
καὶ γαστρὸς, καὶ ποτοῦ· μέγα δὲ καὶ εἰς τοῦτο συμβάλλε-
ται, ὅτι ὁρῶσι τοὺς πρεσβυτέρους οὐ πρόσθεν ἀπιόντας γα-
στρὸς ἕνεκα, πρὶν ἂν ἀφῶσιν οἱ ἄρχοντες· καὶ [q] ὅτι οὐ παρὰ
μητρὶ σιτοῦνται οἱ παῖδες, ἀλλὰ παρὰ τῷ διδασκάλῳ
ὅτ᾽ ἂν οἱ ἄρχοντες σημήνωσιν. Φέρονται δὲ οἴκοθεν, σῖτον μὲν
ἄρτους, ὄψον δὲ κάρδαμον· πιεῖν δ᾽ ἐάν τις διψῇ, κώθωνα
ὡς ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ [r] ἀρύσασθαι. Πρὸς δὲ τούτοις, μαν- 284
θάνουσι καὶ τοξεύειν, καὶ ἀκοντίζειν. Μέχρι μὲν [s] δὴ ἓξ ἢ
ἑπτακαίδεκα ἐτῶν ἀπὸ γενεᾶς οἱ παῖδες [t] ταῦτα πράττουσιν·
ἐκ τούτου δ᾽ εἰς τοὺς ἐφήβους [u] ἐξέρχονται. Οὗτοι δὲ αὖ οἱ
ἔφηβοι διάγουσιν ὧδε· δέκα ἔτη, ἀφ᾽ οὗ ἂν ἐκ παίδων ἐξέλ-
θωσι, κοιμῶνται μὲν περὶ τὰ ἀρχεῖα, ὥσπερ προείρηται, καὶ
φυλακῆς ἕνεκα τῆς πόλεως, καὶ σωφροσύνης· δοκεῖ γὰρ
[w] αὕτη ἡ ἡλικία ἐπιμελείας μάλιστα δεῖσθαι· παρέχουσι
δὲ καὶ τὴν ἡμέραν ἑαυτοὺς μάλιστα τοῖς ἄρχουσι χρῆσθαι,
ἄν τι δέωνται ὑπὲρ τοῦ κοινοῦ· καὶ ὅτ᾽ ἂν μὲν [x] δέῃ τι, πάν-
τες μένουσι περὶ τὰ ἀρχεῖα, ὅτ᾽ ἂν δὲ [y] ἐξάρῃ βασιλεὺς ἐπὶ
θήραν, τὰς [z] ἡμισείας φυλὰς καταλείπει· ποιεῖ δὲ τοῦτο

[p] συμβάλλεται] συλλαμβάνεται B.
[q] ὅτι οὐ] οὔτε A. Trinc.
[r] ἀρύσασθαι] ἀντλήσασθαι A. p. m. Paullo supra ποιεῖν Trinc.
[s] δὴ ἓξ ἢ] δὴ om. B. ἓξ ἢ om. A. Trinc.
[t] πράττουσιν] ταῦτα πράττουσιν A.
[u] ἐξέρχονται] ἐξάρχονται B.
[w] αὕτη ἡ] αὐτὴ τῇ A.
[x] δέῃ τι] δέηται A.
[y] ἐξάρῃ] ἐξίῃ Gesn. marg. e Xenoph.
[z] τ᾽ ἡμισείας φυλὰς] ἡμισείας φυλακὰς A. τὰς ἡμίσεως φυλὰς Trinc.

πολλάκις τοῦ μηνός. Ἔχειν δὲ δεῖ τοὺς ἐξιόντας [a] τόξα, καὶ παρὰ τὴν φαρέτραν ἐν κολεῷ κοπίδα, ἢ σάγαριν, [b] ἔτι δὲ γέρρον, καὶ παλτὰ δύο· ὥστε τὸ μὲν ἀφιέναι, τὸ δὲ ἐὰν δέῃ ἐκ χερὸς χρῆσθαι. Διὰ τοῦτο δὲ δημοσίᾳ τοῦ θηρᾶν ἐπιμέλονται, καὶ βασιλεὺς ὥσπερ καὶ ἐν πολέμῳ ἡγεμὼν αὐτοῖς ἐστὶ, καὶ αὐτός τε θηρᾷ, καὶ τῶν ἄλλων ἐπιμελεῖται, ὅπως ἂν [c] θηρῶσιν· ὅτι ἀληθεστάτη αὐτοῖς δοκεῖ αὕτη ἡ μελέτη τῶν πρὸς τὸν πόλεμον εἶναι. Καὶ γὰρ πρωῒ ἀνίστασθαι ἐθίζει, καὶ [d] ψύχη καὶ θάλπη ἀνέχεσθαι· γυμνάζει δὲ καὶ [e] ὁδοιπορίαις καὶ δρόμοις· ἀνάγκη δὲ καὶ τοξεῦσαι [f] θηρίον, καὶ ἀκοντίσαι, ὅπου [g] ἂν παραπίπτῃ· καὶ τὴν ψυχὴν δὲ πολλάκις ἀνάγκη θήγεσθαι ἐν τῇ θήρᾳ, ὅτ' ἄν τι τῶν ἀλκίμων θηρίων ἀντιστῆται· παίειν μὲν γὰρ δήπου δεῖ τὸ ὁμόσε γινόμενον, φυλάξασθαι δὲ τὸ ἐπιφερόμενον· ὥστε οὐ ῥᾴδιον εὑρεῖν τι ἐν τῇ θήρᾳ, ὃ ἄπεστι τῶν ἐν τῷ πολέμῳ παρόντων. Ἐξέρχονται δὲ ἐπὶ τὴν θήραν ἄριστον ἔχοντες, πλέον μὲν, ὡς καὶ εἰκότως, παίδων· τἄλλα δ' ὅμοιον. Καὶ θηρῶντες μὲν οὐκ ἂν ἀριστήσαιεν· ἢν δέ τι δεήσῃ θηρίου ἕνεκα ἐπικαταμεῖναι, ἢ ἄλλως [h] βουληθῶσι διατρίψαι [i] περὶ τὴν θήραν, τὸ ἄριστον τοῦτο δειπνήσαντες τῇ ὑστεραίᾳ [[k] αὖ] θηρῶσι μέχρι δείπνου, καὶ μίαν ἄμφω τούτω [l] τὼ ἡμέρα λογίζονται, ὅτι μιᾶς ἡμέρας σῖτον δαπανῶσι. Τοῦτο δὲ ποιοῦσι τοῦ ἐθίζεσθαι ἕνεκα, ἵνα καὶ ἄν τι ἐν πολέμῳ δεήσῃ, δύνωνται τοῦτο ποιεῖν. Καὶ ὄψον δὲ τοῦτο ἔχουσιν οἱ τηλικοῦτοι, ὅ τι ἂν θηράσωσιν· [m] εἰ δὲ μὴ, τὸ κάρδαμον. Εἰ δέ

[a] τόξα] τόξα παρὰ τὴν φαρέτραν καὶ ἐν κολεῷ etc. Gesn. marg. παρὰ τὴν φαρέτραν A. τὴν om. edd. Mox σάγαρον A. Trinc.
[b] ἔτι δὲ] δὲ om. A. Trinc.
[c] θηρῶσιν] θηρῷεν Gesn. marg.
[d] ψύχη — θάλπη] ψύχει — θάλπει A. Trinc.
[e] ὁδοιπορίαις] ὁδοιπορίῃ B.
[f] θηρίον] θηρίων A. Trinc.
[g] ἂν om. A. Trinc. Mox ἢν δέ τι om. B.
[h] βουληθῶσι] βουληθῆναι B.
[i] περὶ] ἐπὶ A.
[k] αὖ om. A. Trinc. θηροῦσι Tr.
[l] τὼ] τῇ A. Trinc.
[m] εἰ δὲ μὴ usque ad μόνον om. A. εἰ δέ τις—κάρδαμον om. B.

τις αὐτοὺς οἴεται ἢ ἐσθίειν ἀηδῶς, ὅτ' ἂν κάρδαμον μόνον ἐσθίωσιν ἐπὶ τῷ σίτῳ, ἢ πίνειν ἀηδῶς ὅτ' ἂν ὕδωρ πίνωσιν, ἀναμνησθήτω, πῶς μὲν ἡδὺ μάζα καὶ [n] ἄρτος πεινῶντι φαγεῖν, πῶς δὲ ἡδὺ ὕδωρ [o] πιεῖν διψῶντι. Αἱ δ' αὖ μένουσαι φυλαὶ, διατρίβουσι μελετῶσαι τά τε ἄλλα, ἃ παῖδες [p] ὄντες ἐμάνθανον, καὶ τοξεύειν καὶ ἀκοντίζειν· καὶ διαγωνιζόμενοι ταῦτα πρὸς ἀλλήλους διατελοῦσιν. Εἰσὶ δὲ καὶ δημόσιοι [q] τούτων ἀγῶνες, καὶ ἆθλα προτίθεται· ἐν ᾗ δ' ἂν φυλῇ πλεῖστοι ὦσιν [r] δαιμονέστατοι καὶ ἀνδρικώτατοι [s] καὶ εὐπιστότατοι, [t] ἐπαινοῦσιν οἱ πολῖται, καὶ τιμῶσιν οὐ μόνον τὸν νῦν ἄρχοντα αὐτῶν, ἀλλὰ καὶ ὅστις παῖδας ὄντας αὐτοὺς ἐπαίδευσε. Χρῶνται δὲ τοῖς μένουσι τῶν ἐφήβων αἱ ἀρχαὶ [u] πᾶσαι, ἤν τι ἢ φρουρῆσαι δέῃ, ἢ κακούργους ἐρευνῆ- 285
σαι, ἢ λῃστὰς ὑποδραμεῖν, ἢ καὶ ἄλλα ὅσα τάχους καὶ ἰσχύος ἔργα ἐστίν. Ταῦτα μὲν δὴ οἱ ἔφηβοι πράττουσιν· ἐπειδ' ἂν δὲ τὰ δέκα ἔτη διατελέσωσιν, ἐξέρχονται εἰς τοὺς τελείους ἄνδρας. Ἀφ' οὗ δ' ἂν ἐξέλθωσι χρόνου ἐκ τῶν ἐφήβων, οὗτοι αὖ πέντε καὶ εἴκοσιν ἔτη [w] ὧδε διάγουσι· πρῶτον μὲν ὥσπερ οἱ ἔφηβοι παρέχουσιν ἑαυτοὺς ταῖς ἀρχαῖς χρῆσθαι, ἐάν τι δέῃ περὶ τοῦ κοινοῦ, ὅσα φρονούντων τε ἤδη ἔργα ἐστὶ, [x] καὶ ἔτι δυναμένων· ἐὰν δέ που δέῃ [y] στρατεύεσθαι, τόξα μὲν οἱ οὕτω [z] παιδευόμενοι οὐκέτι ἔχοντες οὐδὲ παλτὰ στρατεύονται, τὰ δὲ [a] ἄγχιμα ὅπλα καλού-

[n] ἄρτως] ἄρτος A. Trinc.
[o] πιεῖν] ποιεῖν A.
[p] ὄντες] ἐόντες A.
[q] τούτοις] τούτων A. Gesn. marg.
[r] δαημονέστατοι] δαιμονέστατοι A. B. δαϊμονέστατοι Trinc. Vide Jacobsium ad fr. Archilochi IV.
[s] (καὶ εὐπιστότατοι) Parenthesi inclusa alias non leguntur. Gesn. Non sc. inveniuntur in Xenoph. exempl. vulg.
[t] ἐπαινοῦσιν] ἐπαινῶσιν A.
[u] πᾶσαι] πᾶσαι alias abest. Gesner. Deest sc. in exempl. Xenophontis.
[w] ὧδε om. A.
[x] καὶ] ἢ καὶ A.
[y] στρατεύεσθαι] συστρατεύεσθαι Gesn. marg.
[z] παιδευόμενοι] πεπαιδευμένοι Gesn. marg. e Xenoph.
[a] ἄγχιμα] ἀγχέμαχα A. ex em

μενα, θώρακά τε περὶ τοῖς στέρνοις, καὶ γέρρον ἐν τῇ ἀριστερᾷ, [[b] οἷόν περ γράφονται οἱ Πέρσαι ἔχοντες·] ἐν δὲ τῇ δεξιᾷ μάχαιραν ἢ κοπίδα. Καὶ αἱ ἀρχαὶ δὲ πᾶσαι ἐκ τούτων καθίστανται, πλὴν οἱ τῶν παίδων διδάσκαλοι. Ἐπειδ' ἂν δὲ τὰ πέντε καὶ εἴκοσιν ἔτη διατελέσωσιν, εἴησαν μὲν [c] ἂν οὗτοι πλέον ἢ πεντήκοντα ἔτη γεγονότες ἀπὸ γενεᾶς· ἐξέρχονται [d] δὲ τηνικαῦτα εἰς τοὺς γεραιτέρους ὄντας τε καὶ καλουμένους. Οἱ δ' αὖ γεραίτεροι οὗτοι στρατεύονται μὲν οὐκ ἔτι ἔξω τῆς αὐτῶν, οἴκοι δὲ μένοντες [e] δικάζουσι τά τε κοινὰ πάντα καὶ τὰ ἴδια, καὶ θανάτου δὲ [f] οὗτοι κρίνουσι· καὶ τὰς ἀρχὰς οὗτοι αἱροῦνται πάσας· καὶ ἐάν τις ἢ ἐν ἐφήβοις, ἢ ἐν τελείοις ἀνδράσιν, [g] ἐκλίπῃ τι τῶν νομίμων, φαίνουσι μὲν οἱ φύλαρχοι ἕκαστον, καὶ τῶν ἄλλων ὁ βουλόμενος· οἱ δὲ γεραίτεροι ἀκούσαντες ἐκκρίνουσιν· ὁ δὲ ἐκκριθεὶς ἄτιμον [h] τὸν βίον διατελεῖ. Ἵνα δὲ σαφέστερον δηλωθῇ πᾶσα ἡ Περσῶν πολιτεία, μικρὸν ἐπάνειμι· νῦν γὰρ ἐν βραχυτάτῳ ἂν δηλωθείη διὰ τὰ προειρημένα. Λέγονται [i] μὲν γὰρ Πέρσαι ἀμφὶ τὰς δώδεκα μυριάδας [k] εἶναι, τούτων δὲ οὐδεὶς ἀπελήλαται νόμῳ τιμῶν καὶ ἀρχῶν, ἀλλ' [l] ἔξεστι πᾶσι Πέρσαις πέμπειν τοὺς ἑαυτῶν παῖδας εἰς τὰ κοινὰ τῆς δικαιοσύνης διδασκαλεῖα. Ἀλλ' οἱ μὲν δυνάμενοι τρέφειν τοὺς ἑαυτῶν παῖδας ἀργοῦντας πέμπουσιν, οἱ δὲ μὴ δυνάμενοι οὐ πέμπουσιν [m] ἵνα παιδευθῶσι παρὰ τοῖς δημοσίοις διδασκάλοις· [n] ἔξεστι δὲ αὐτοῖς ἐν τοῖς ἐφη-

et Gesn. marg. ἔγχιμα A. p. m. ἄγχιστα B.

[b] οἷόν περ—ἔχοντες om. A. Trinc.

[c] ἂν om. A.

[d] δὲ om. A.

[e] δικαίως] δικάζουσι A. Gesn. marg. δικαίους B.

[f] οὗτοι] ἤδη A.

[g] ἐκλίπῃ] ἐκλείπῃ A.

[h] τὸν βίον] τὸν λοιπὸν βίον A. B.

[i] μὲν γὰρ π.] γὰρ om. Trinc.

[k] εἶναι] om. B.

[l] ἔξεστι] ἔστι B. τοῖς ante Πέρσαις addit A.

[m] ἵνα] οἳ δ' ἂν Gesn. marg. e Xenoph.

[n] ἔξεστι δὲ αὐτοῖς] ἔξεστιν αὐτοῖς Gesn. marg.

βοις [o] νεανισκεύεσθαι· τοῖς δὲ μὴ [p] διαπαιδευθεῖσιν οὕτως, οὐκ ἔξεστιν. Οἳ δ' ἂν αὖ ἐν τοῖς ἐφήβοις διατελέσωσι τὰ νόμιμα ποιοῦντες, ἔξεστι τούτοις εἰς τοὺς τελείους ἄνδρας [q] συναλίζεσθαι, καὶ ἀρχῶν καὶ τιμῶν μετέχειν· οἳ δ' ἂν αὖ ἐν τοῖς παισὶ μὴ διαγένωνται ἢ ἐν τοῖς ἐφήβοις, οὐκ ἔρχονται εἰς τοὺς τελείους· [r] οἳ δ' ἂν αὖ ἐν τοῖς τελείοις διαγένωνται [s] ἀνεπίπληκτοι, οὗτοι τῶν γεραιτέρων [t] γίγνονται. Οὕτω μὲν δὴ οἱ γεραίτεροι διὰ πάντων τῶν καλῶν διεληλυθότες καθίστανται.

24 [a] Ξενοφῶντος ἐκ τῆς Λακώνων Πολιτείας.

Ὁ δὲ Λυκοῦργος ἐσθῆτας μὲν καὶ δούλας [b] ἱκανὰς παρέχειν ἡγήσατο εἶναι· ταῖς δὲ ἐλευθέραις μέγιστον νομίσας εἶναι τὴν τεκνοποιίαν, πρῶτον μὲν [c] σωμασκεῖν ἔταξεν οὐδὲν ἧττον τὸ θῆλυ τοῦ ἄρρενος φύλου, ἔπειτα δὲ δρόμου καὶ ἰσχύος ὥσπερ τοῖς ἀνδράσιν οὕτω καὶ ταῖς θηλείαις ἀγῶνας πρὸς ἀλλήλας ἐποίησε, νομίζων [d] ὡς ἀμφοτέρων ἰσχυρῶν καὶ 286 ἔκγονα ἐρρωμενέστερα γίγνεσθαι. Ἐπεί γε μὴν [e] γυνὴ πρὸς ἄνδρα ἔλθοι, ὁρῶν τοὺς ἄλλους τὸν πρῶτον τοῦ χρόνου ἀμέτρως ταῖς γυναιξὶ συνόντας, καὶ τούτου τἀναντία ἔγνω· ἔθηκε γὰρ αἰδεῖσθαι μὲν εἰσιόντα ὀφθῆναι, αἰδεῖσθαι δὲ ἐξιόντα· οὕτω δὲ συνόντων, [f] ποθεινοτέρως μὲν ἀνάγκη σφῶν αὐτῶν [g] ἔχειν, ἐρρωμενέστερα δὲ γίγνεσθαι, εἴ τι [h] βλαστάνοιεν, οὕτω μᾶλλον, [i] ἢ εἰ διάκοροι ἀλλήλων εἶεν. Πρὸς δὲ τού-

[o] νεανισκεύεσθαι] νεανιεύεσθαι B.
[p] διαπαιδευθεῖσιν] διαπαίδευσιν B.
[q] συναυλιζεσθαι] συναλίζεσθαι A.
[r] οἳδ'] οἳδ' ἂν μὴ διαγένωνται ἐν τοῖς ἐφήβοις Gesn. marg.
[s] ἀνεπίπληκτοι] ἀνεπίληπτοι Tr.
[t] γίνονται] γίγνονται A.

24.

[a] Sic A. Trinc. Scil. I, 4.
[b] ἱκανὰς παρέχειν] παρέχειν ἱκανὰς A.
[c] σωμασκεῖν] σῶμα ἀσκεῖν A.
[d] ἐξ ἀμφοτέρων] ὡς ἀμφοτέρων A. Trinc.
[e] γύνη] om. A. Trinc. Mox ἄνδρας Trinc.
[f] ποθεινοτέρως] προθυμοτέρως A. πονηροτέρως B. πονεινοτέρως Trinc.
[g] ἔχων] ἔχειν A. Trinc.
[h] βλαστάνοιεν] βλάπτοιεν Gesn. marg. βλάστοιεν Schneider. ex ms.
[i] ἢ εἰ] εἰ om. A. Trinc.

τοις καὶ ἀποπαύσας [k]τοῦ ὁπότε βούλοιντο ἕκαστοι γυναῖκας ἄγεσθαι, ἔταξεν ἐν ἀκμαῖς τῶν σωμάτων τοὺς γάμους ποιεῖσθαι, καὶ τοῦτο συμφέρον τῇ [l]εὐγονίᾳ νομίζων. Εἴγε [m]μέντοι συμβαίη [n]γεραιῷ νέαν ἔχειν, ὁρῶν τοὺς τηλικούτους [o]φυλάττοντας μάλιστα τὰς γυναῖκας, τἀναντία καὶ [p]τούτου ἐνόμισε· τῷ γὰρ [q]πρεσβύτῃ ἐποίησεν, [r]ὁποίου ἀνδρὸς καὶ σῶμα καὶ ψυχὴν [s]ἀγασθείη, [t]τοῦτον ἐπαγομένῳ τεκνοποιήσασθαι. Εἰ δέ τις αὖ γυναικὶ [u]μὲν συνοικεῖν μὴ βούλοιτο, [w]τέκνων δὲ ἀξιολόγων [x]ἐπιθυμοίη, καὶ [y]τοῦτο νόμιμον ἐποίησεν, ἥν τινα [z]ἂν εὔτεκνον καὶ γενναίαν ὁρῴη, [a]πείσαντα τὸν ἔχοντα ἐκ ταύτης [b]τεκνοποιεῖσθαι. Καὶ πολλὰ μὲν τοιαῦτα συνεχώρει. Αἱ μὲν γὰρ γυναῖκες διττοὺς οἴκους βούλονται κατέχειν, οἱ δὲ ἄνδρες, ἀδελφοὺς τοῖς παισὶ [c]προσλαμβάνειν, οἳ [d]τοῦ μὲν γένους καὶ τῆς δυνάμεως κοινωνήσουσι, τῶν δὲ χρημάτων οὐκ ἀντιποιοῦνται. Περὶ μὲν [e]δὴ τεκνοποιΐας οὕτω τἀναντία γνοὺς τοῖς ἄλλοις, εἴ τι διαφέροντας καὶ μέγεθος καὶ ἰσχὺν ἄνδρας τῇ Σπάρτῃ ἀπετέλεσεν, ὁ βουλόμενος σκοπείτω. Βούλομαι δὲ καὶ τὴν παιδείαν σαφηνίσαι.

25 [a] Ὁ γὰρ Λυκοῦργος ἀντὶ μὲν τοῦ ἰδίᾳ ἑκάστοις παιδαγωγοὺς δούλους ἐφιστάναι, [b]ἄνδρα ἐπέστησε κρατεῖν αὐτῶν, ἐξ ὧνπερ αἱ μέγισται ἀρχαὶ καθίστανται, [c]ὃς δὴ καὶ παι-

[k] τοῦ ὁπότε] τοὺς πότε A. Trinc.
[l] εὐγονίᾳ] εὐγενείᾳ A. Trinc.
[m] μέντοι] μή τι A.
[n] γεραιῷ νέαν] γερᾶον ἐὰν A. B. γε ῥάων ἐὰν Trinc.
[o] φυλάττοντας μάλιστα] μάλιστα φυλάττοντας A.
[p] τούτου] τούτοις A.
[q] πρεσβύτῃ] πρεσβυτάτῳ Gesn. marg.
[r] ὁποίου] ὁποῖα A.
[s] ἀγασθείη] ἀγαθείη A.
[t] τοῦτον ἐπαγομένῳ] τούτου ἀπαγαγομένου A. ἀπαγομένῳ B. τούτου ἀπαγαγομένῳ Trinc.
[u] μὲν om. A.
[w] τέκνων δὲ] τέκνων τε Trinc.
[x] ἐπιθυμοίη] ἐπιθυμείη B.
[y] τοῦτο νόμιμον] τούτῳ νόμον Gesn. marg.
[z] ἂν om. A. Trinc.
[a] πείσαντα] πέρσαντα A.
[b] τεκνοποιεῖσθαι] ποιεῖσθαι A. Tr.
[c] προσλαμβάνειν] λαμβάνειν A. Trinc.
[d] τοῦ μὲν] τοῦ om. A. Trinc.
[e] δὴ om. A.

25.

[a] Cohæret cum præcedentibus A. Trinc.
[b] ἄνδρα] ἄνδρας A. Trinc.
[c] ὃς δὴ] ὃ δὴ A. Trinc.

δονόμος καλεῖται. Τοῦτον δὲ κύριον ἐποίησε καὶ [d] καθίζειν τοὺς παῖδας, καὶ ἐπισκοποῦντα, εἴ τις ῥᾳδιουργοίη, [[e] ἰσχυρῶς] κολάζειν· ἔδωκε δ' αὐτῷ καὶ τῶν ἡβώντων μαστιγοφόρους, ὅπως τιμωροῖεν ὅτε δέοι, ὡς πολλὴν μὲν αἰδῶ πολλὴν δὲ πειθὼ ἐκεῖ συμπαρεῖναι. Ἀντί γε μὴν τοῦ ἀπαλύνειν τοὺς πόδας [f] ὑποδήμασιν, ἔταξεν [g] ἀνυποδησίᾳ κρατύνειν· νομίζων [h] εἰ τοῦτο ἀσκήσαιεν, πολὺ μὲν ῥᾷον [i] ἂν ὄρθια ἐκβαίνειν, ἀσφαλέστερον [k] δὲ πρανῆ καταβαίνειν, καὶ πηδῆσαι δὲ καὶ ἀναθορεῖν καὶ δραμεῖν θᾶττον [[l] ἀνυπόδητον, εἰ ἠσκηκὼς εἴη τοὺς πόδας, ἢ ὑποδεδεμένον·] [m] ἀντὶ δὲ τοῦ ἱματίοις διαθρύπτεσθαι, ἐνόμισε [n] δερματίῳ δι' ἔτους προσεθίζεσθαι, [[o] νομίζων οὕτω καὶ πρὸς ψύχη καὶ πρὸς θάλπη ἄμεινον ἂν παρασκευάσασθαι.] Σῖτόν γε μὴν τοσοῦτον ἔχειν συνεβούλευεν, ὡς ὑπὸ πλησμονῆς μὲν [p] μήποτε βαρύνεσθαι, τοῦ δὲ ἐνδεεστέρως διάγειν μὴ ἀπείρως ἔχειν· [q] νομίζων τοὺς οὕτω παιδευομένους μᾶλλον μὲν [r] ἂν δύνασθαι, εἰ δεήσειεν, ἀσιτήσαντας ἐπιπονῆσαι, μᾶλλον δ' ἄν, εἰ παραγγελθείη, ἀπὸ τοῦ 287
αὐτοῦ σίτου πλείω χρόνον ἐπιταθῆναι, ἧττον δ' ἂν ὄψου δεῖσθαι, εὐχερέστερον δὲ πρὸς πᾶν ἔχειν βρῶμα, καὶ ὑγιεινοτέρως δ' ἂν διάγειν, καὶ εἰς μῆκος δ' ἂν αὐξάνεσθαι τὴν ῥαδινὰ [s] τὰ σώματα ποιοῦσαν τροφὴν μᾶλλον συλλαμβάνειν [t] ἡγήσατο, ἢ τὴν [u] διαπλατύνουσαν τῷ σίτῳ. Ὡς δὲ μὴ

[d] καθίζειν] ἀθροίζειν Gesn. marg.
[e] ἰσχυρῶς] om. A. Trinc.
[f] ὑποδήμασιν] ὑποδείμασιν Trinc.
[g] ἀνυποδησίᾳ] ἀνυποδεσίᾳ Trinc.
[h] εἰ τοῦτο] εἰς τοῦτο A.
[i] ἂν ὄρθιά γε βαίνειν] ἀνορθία ἐκβαίνειν A. ubi desunt ἀσφαλέστερον δὲ πρανῆ καταβαίνειν et sic fere Trinc. qui habet ἀνορθίᾳ ἐκβ.
[k] δὲ om. B.
[l] ἀνυπόδητον usque ad ὑποδεδεμένον om. A. Trinc.
[m] ἄντι δὲ] ἄντι δὲ τοῦ A. Trinc.
[n] δερματίῳ] ἐνὶ ἱματίῳ Gesn. marg.
[o] νομίζων usque ad παρασκευάσασθαι om. A. Trinc.
[p] μήποτε] οὔποτε A.
[q] νομίζων usque ad ἔχειν βρῶμα καὶ om. Trinc.
[r] ἂν om. A.
[s] τὰ om. B,
[t] ἡγήσατο] ἡγησάμενος A. Trinc.
[u] διαπλατύνουσαν] διαπλάττουσαν A. διαπράττουσαν Trinc.

ὑπὸ λιμοῦ ἄγαν αὖ [w]πιέζοιντο, ἀπραγμόνως μὲν οὐκ ἐδώκεν αὐτοῖς λαμβάνειν, ὧν προσδέονται· κλέπτειν δὲ ἐφῆκεν [[x]ἔστιν ἃ τῷ λιμῷ ἐπικουροῦντας. Καὶ ὡς μὲν οὐκ ἀπορῶν ὅ τι δοίη ἐφῆκεν αὐτοῖς γε μηχανᾶσθαι τὴν τροφὴν, οὐδένα οἶμαι τοῦτο ἀγνοεῖν·] δῆλον δ' ὅτι τὸν μέλλοντα κλοπεύειν καὶ νυκτὸς ἀγρυπνεῖν δεῖ, καὶ μεθ' ἡμέραν ἀπατᾶν καὶ ἐνεδρεύειν, καὶ κατασκόπους [y]δὲ ἑτοιμάζειν τὸν μέλλοντά τι λήψεσθαι. Ταῦτα οὖν δηλονότι πάντα μηχανικωτέρους τῶν ἐπιτηδείων βουλόμενος τοὺς παῖδας ποιεῖν, καὶ πολεμικωτέρους, οὕτως [z]ἐπαίδευεν. [[a]Εἴποι δ' ἂν οὖν τις, τί δῆτα, εἴπερ τὸ κλέπτειν ἀγαθὸν ἐνόμιζε,] [b]πολλὰς δὲ πληγὰς ἐπέβαλε τῷ ἁλισκομένῳ; Ὅτι, φημὶ ἐγὼ, καὶ τἄλλα ὅσα ἄνθρωποι διδάσκουσι, κολάζουσι τὸν μὴ καλῶς ὑπηρετοῦντα.

26 [a] Ὅπως δὲ μὴ ἐὰν ὁ παιδονόμος ἀπέλθοι ἔρημοί ποτε [b]οἱ παῖδες εἶεν ἄρχοντος, ἐποίησε τὸν ἀεὶ παρόντα τῶν πολιτῶν κύριον εἶναι, καὶ ἐπιτάττειν τοῖς παισὶν, εἴ τι ἀγαθὸν [c]δοκοίη εἶναι, καὶ κολάζειν, εἴ τι ἁμαρτάνοιεν.

27 [a] Πρὸς δὲ τούτοις τό τε αἰδεῖσθαι ἰσχυρῶς ἐμφῦσαι βουλόμενος αὐτοῖς, καὶ ἐν ταῖς ὁδοῖς [b]ἐπέδειξεν ἐντὸς μὲν τοῦ ἱματίου τὼ χεῖρε ἔχειν, σιγῇ δὲ πορεύεσθαι, [c]περιόπτειν δὲ [d]μηδαμῶς, ἀλλ' [e]αὐτὰ τὰ πρὸ ποδῶν ὁρᾶν. Ἔνθα δὴ καὶ δῆλον γεγένηται, ὅτι τὸ ἄρρεν φῦλον καὶ εἰς τὸ [f]σῶφρον ἰσχυρότερόν ἐστι τῆς τῶν θηλειῶν φύσεως. Ὡς ἐκείνων γοῦν ἡτ-

[w] πιέζοιντο] πιέζοντος B.

[x] ἔστιν ἃ usque ad ἀγνοεῖν om. A. Trinc.

[y] δὲ om. A.

[z] ἐπαίδευεν] ἐπαίδευσεν B.

[a] εἴποι usque ad ἐνόμιζε om. A. Trinc.

[b] πολλὰς] πολλὰς δὲ A. Trinc.

26.

[a] Cohærent hæc cum præcedentibus Trinc.

[b] ὁ παῖδες] οἱ παῖδες A. Trinc.

[c] δοκοίη] δοκείη Trinc.

27.

[a] Cohærent cum præcedentibus Trinc. et sic usque ad n. 38.

[b] ἐπέταξεν] ἐπέδειξεν A. Trinc.

[c] περιόπτειν] περιβλέπειν Gesn. marg.

[d] μηδαμῶς] οὐδαμῶς A.

[e] αὐτὰ] αὐτὰ τὰ A. Trinc. πρὸς ποδῶν Trinc.

[f] σῶφρον] σωφρονεῖν Gesn. marg.

τον μὲν ἂν φωνὴν ἧν ἀκοῦσαι ἢ τῶν λιθίνων, ἧττον δὲ [g]ὄμματα [h]στρεψάντων ἢ τῶν χαλκῶν, αἰδημονεστέρους δ' ἂν αὐτοὺς ἡγήσαιο καὶ αὐτῶν τῶν ἐν τοῖς [i]ὀφθαλμοῖς παρθένων, καὶ ἐπειδ' ἂν εἰς τὸ φιλίτιον [k]ἀφίκωνται, ἀγαπητὸν αὐτῶν καὶ τὸ ἐρωτηθὲν ἀκοῦσαι. [[l]Καὶ τῶν μὲν αὖ παιδικῶν οὕτως ἐπεμελήθη·] περί γε μὴν τῶν ἤδη [m]ἡβώντων πολὺ μάλιστα ἐσπούδασεν.

28 Ὡς οὖν [a]τούτους αὖ συνέβαλλεν, ἐξηγήσομαι. Αἱροῦνται τοίνυν οἱ ἔφοροι αὐτῶν ἐκ τῶν ἀκμαζόντων τρεῖς ἄνδρας· οὗτοι δὲ [b]ἱππαγρέται καλοῦνται· τούτων δὲ ἕκαστος [c]ἄνδρα ἕκαστον καταλέγει διασαφηνίζων, [d]ὅτου ἕνεκα τοὺς μὲν προτιμᾷ, τοὺς δ' ἀποδοκιμάζει. Οἱ οὖν μὴ τυγχάνοντες τῶν [e]καλῶν πολεμοῦσι [f]τοῖς τε ἀποστείλασιν αὐτοὺς καὶ τοῖς αἱρεθεῖσιν ἀντ' αὐτῶν.

29 Διαλύειν μέντοι τοὺς μαχομένους πᾶς ὁ παραγιγνόμενος κύριος.

30 Τοῖς γε μὴν τὴν ἡβητικὴν ἡλικίαν πεπερακόσιν, ἐξ ὧν
ἤδη καὶ αἱ μέγισται ἀρχαὶ καθίστανται, ὁ Λυκοῦργος νό- 288
μιμον ἐποίησε κάλλιστον εἶναι τὸ θηρᾶν, εἰ [a]μή τι δημόσιον κωλύοι, ὅπως καὶ οὗτοι δύνωνται μηδὲν ἧττον τῶν ἡβώντων στρατιωτικοὺς πόνους ὑποφέρειν.

31 Ὡσαύτως ὁ Λυκοῦργος ἐποίησε παίδων ἕκαστον ὁμοίως τῶν ἑαυτοῦ [a]καὶ τῶν ἀλλοτρίων ἄρχειν. Ὅτ' ἂν δέ τις εἰδῇ

[g] ὄμματα] ὄμμα τε A.
[h] στρεψάντων] μεταστρέψαις Gesn. marg.
[i] θαλάμοις] ὀφθαλμοῖς A. Trinc.
[k] ἀφίκωνται] ἀφίκωντο B.
[l] καὶ τῶν—ἐπεμελήθη om. A. Tr.
[m] ἡβώντων] ἡκόντων Trinc.

28.

[a] τούτους] τούτους αὖ A. Trinc.
[b] ἱππαγρίται] ἱππαγρέται Gesn. marg.
[c] ἄνδρα ἕκαστον] ἄνδρας ἑκατὸν Gesn. marg.
[d] ὅτου] ὅθ' οὗ A.
[e] καλῶν] κακῶν Trinc.
[f] τοῖς τε ἀποστείλασιν] τοῖς μὴ ἀποστείλασιν Gesn. marg.

30.

[a] μή τοι — κωλύοι] μή τι — κωλύῃ A.

31.

[a] καὶ τῶν] καὶ τὸν A. Trinc.

ὅτι οὗτοι πατέρες εἰσὶ τῶν παίδων ὧν αὐτὸς ἄρχει, ἀνάγκη ἄρχειν οὕτως, ὥσπερ ἂν καὶ τῶν ἑαυτοῦ ἄρχεσθαι βούλοιτο.

32 Ἐν τῇ Σπάρτῃ ὁ Λυκοῦργος τοῖς ἐλευθέροις [a] τῶν μὲν ἀμφὶ χρηματισμὸν ἀπεῖπε μηδενὸς ἅπτεσθαι, ὅσα δὲ ἐλευθερίαν ἐν ταῖς πόλεσι παρασκευάζει, ταῦτα [b] μόνα ἔταξεν ἔργα ἑαυτῶν νομίζειν· οὐ γὰρ δή τι πλοῦτος ἐκεῖ γε ἐσπούδασται.

33 Ἄξιον δὲ [a] τοῦ Λυκούργου καὶ τόδε ἀγασθῆναι· τὸ [b] κατεργάζεσθαι ἐν τῇ πόλει αἱρετώτερον εἶναι τὸν καλὸν θάνατον ἀντὶ τοῦ αἰσχροῦ βίου.

34 Καλῶς δέ μοι δοκεῖ Λυκοῦργος νομοθετῆσαι, καὶ εἰ μέχρι γήρως ἀσκοῖτ' ἂν ἡ ἀρετή. Ἐπὶ γὰρ τῷ τέρματι τοῦ βίου τὴν κρίσιν τῆς γεροντίας προσθεὶς, ἐποίησε μηδ' ἐν τῷ γήρᾳ ἀμελεῖσθαι τὴν καλοκαγαθίαν. Ἀξιάγαστον δ' αὐτοῦ καὶ τὸ ἐπικουρῆσαι τῷ τῶν ἀγαθῶν γήρᾳ. Θεὶς γὰρ τοὺς γέροντας κυρίους τοῦ περὶ τῆς ψυχῆς ἀγῶνος, διέπραξεν ἐντιμότερον εἶναι τὸ γῆρας τῆς τῶν ἀκμαζόντων ῥώμης. Εἰκότως δέ τοι καὶ σπουδάζεται οὗτος ὁ ἀγὼν μάλιστα τῶν [a] ἀνθρώπων. Καλοὶ μὲν γὰρ [b] καὶ οἱ γυμνικοί· ἀλλ' οὗτοι μὲν σωμάτων [c] εἰσίν· ὁ δὲ περὶ τῆς γεροντίας ἀγὼν ψυχῶν ἀγαθῶν κρίσιν παρέχει. Ὅσῳ οὖν [d] κρεῖσσον ψυχὴ σώματος, τοσούτῳ καὶ οἱ ἀγῶνες οἱ τῶν ψυχῶν, [e] ἢ τῶν σωμάτων ἀξιοσπουδαστότεροι.

35 Εἴς γε μὴν τὸν ἐν ὅπλοις ἀγῶνα τοιάδε ἐμηχανήσατο· στολὴν μὲν ἔχειν φοινικίδα, καὶ χαλκῆν ἀσπίδα.

36 Ἐφῆκε δὲ καὶ κομᾶν τοῖς ὑπὲρ τὴν ἡβητικὴν ἡλικίαν, νο-

32.

[a] τὸν μὲν] τῶν μὲν A.
[b] μόνα ἔταξεν] ἔταξεν μόνα A.

33.

[a] Λυκούργου] τοῦ Λυκούργου A. B.
[b] κατεργάζεσθαι] κατεργάσασθαι Gesn. marg.

34.

[a] ἀνθρωπίνων] ἀνθρώπων A. Gesn. marg.
[b] καὶ οἱ] καὶ om. Trinc.
[c] εἰσὶν] om. A. Trinc.
[d] κρείττων] κρεῖσσον A.
[e] ἢ] ἢ οἱ A.

μίζων οὕτω καὶ μείζους ἂν καὶ ἐλευθεριωτέρους [[a] καὶ γοργοτέρους] φαίνεσθαι. Οὕτω γε μὴν κατεσκευασμένων, μοίρας [b] ἔδειξεν ἕξ, καὶ ἱππέων καὶ ὁπλιτῶν. Ἑκάστη δὲ τῶν [c] ὁπλιτικῶν ἔχει μοιρῶν πολέμαρχον ἕνα, λοχαγοὺς τέτταρας, [d] πεντηκοστῆρας ὀκτὼ, ἐνωμοτάρχας ις΄. Ἐκ δὲ τούτων τῶν μερῶν διὰ παρεγγυήσεως καθίστανται τοτὲ μὲν εἰς ἐνωμοτίας, [e] τοτὲ δὲ εἰς τρεῖς, τοτὲ δὲ εἰς ἕξ.

37 Ἐπεὶ δὲ ἔγνω τὸ πείθεσθαι μέγιστον ἀγαθὸν εἶναι καὶ ἐν πόλει καὶ ἐν στρατιᾷ καὶ ἐπ' οἴκῳ, τὴν τῆς ἐφορείας δύναμιν κατεσκεύασεν.

38 Ἔφοροι [a] οὖν δυνατοὶ μέν εἰσι ζημιοῦν ὃν ἂν βούλωνται, κύριοι δὲ [b] πράττειν παραχρῆμα, κύριοι δὲ καὶ ἄρχοντας μεταξὺ καταπαῦσαι, καὶ εἶρξαί τε καὶ περὶ [c] ψυχῆς εἰς ἀγῶνα καταστῆσαι.

39 Πολλῶν δὲ ὄντων καλῶν μηχανημάτων τῷ Λυκούργῳ εἰς τὸ πείθεσθαι τοῖς νόμοις ἐθέλειν τοὺς πολίτας, ἐν τοῖς καλλίστοις καὶ τοῦτό μοι δοκεῖ εἶναι, ὅτι οὐ πρότερον ἀπέδωκε 289
τῷ πλήθει τοὺς νόμους, πρὶν ἐλθὼν σὺν τοῖς κρατίστοις εἰς Δελφοὺς ἐπήρετο τὸν θεὸν, εἰ λῷον καὶ ἄμεινον εἴη τῇ Σπάρτῃ πειθομένῃ, οἷς αὐτὸς ἔθηκε νόμοις· ἐπεὶ δ' ἀνεῖλε τῷ παντὶ ἄμεινον εἶναι, τότε ἀπέδωκεν οὐ μόνον ἄνομον [a] δείξας, ἀλλὰ καὶ ἀνόσιον, τὸ πυθοχρήστοις νόμοις μὴ πείθεσθαι.

40 [a] Χαρώνδα Καταναίου Προοίμια νόμων.

Τὼς βουλομένως καὶ πράττοντάς τι ἀπὸ θεῶν ἄρχεσθαι

36.

[a] καὶ γοργοτέρους om. A. Trinc. Gesnerus: γοργοτέρους Philelphus vertit *feliciores*.

[b] ἔδειξεν ἕξ] διεῖλεν ἕξ Gesn. marg.

[c] ὁπλιτικῶν] ὁπλιτῶν A. πολιτικῶν Gesn. marg.

[d] πεντηκοστῆρας om. B.

[e] τότε δὲ om. B.

38.

[a] μὲν οὖν] μὲν om. A. Trinc.

[b] πράττειν] ἐκπράττειν Gesn. marg.

[c] ψυχῆς] τῆς ψυχῆς A.

39.

[a] δείξας] θεὶς Gesn. marg.

40.

[a] Sic A. et fere Trinc. ubi Χαρώνδου.

χρή· [b]τὸ γὰρ ἄριστον, ὥσπερ ἁ παροιμία φατὶ, τὸν θεὸν ἦμεν αἴτιον πάντων τούτων. Ἔτι δὲ φαύλων πράξεων ἀπέχεσθαι, καὶ μάλιστα διὰ τὰν πρὸς τὸν θεὸν ξυμβουλίαν· οὐδενὸς γὰρ ἀδίκου θεὸν κοινωνεῖν· βοηθεῖν δὲ ἕκαστον ἑαυτῷ, καὶ ποτικελεύεσθαι κατ' ἀξίαν τῶν δικαίων μεταλαμβάνεν καὶ [c]πράσσεν· τὸ γὰρ ὑπὲρ μικρῶν καὶ μεγάλων ὁμοίως διατείνεσθαι, ἄγαν μικροπρεπὲς δοκεῖ ἦμεν καὶ ἀνελεύθερον. [d]Διὸ δεῖ φροντίζεν, [e]τὸ μὴ [f]σφόδρα ἐς [g]τὰ μάκιστα καὶ τὰ μεγάλα ἐμπίπτειν· ἀλλὰ κατ' ἀξίαν τὰν ἑαυτῶ καὶ [h]δυναμίαν [i]μετρέοντα ἑκάστῳ [k]πρᾶγμα [l]ἐπιβάλλεν, ὅπως τίμιος ἦς καὶ σεμνός.

[m]Ἀδίκῳ ἀνδρὶ ἢ γυναικὶ, κεκριμένοις ὑπὸ πόλεως, ἐπαρωγὴν [n]μὴ ποιεῖσθαι, μηδὲ ὁμιλεῖν μηδένα, ἢ ὀνειδίζεσθαι, ὡς ὄντα ὅμοιον ᾧ ὁμιλεῖ. Τοὺς δὲ προκεκριμένους ἄνδρας ἀγαθοὺς ἀγαπᾶν, καὶ ἐντυγχάνειν αὐτοῖς, τελεῖσθαί τε τὴν μεγίστην καὶ τελειοτάτην [o]τελετὴν, ἀνδραγαθίαν [p]μιμουμένους ἐπ' ἀληθείᾳ καὶ κτωμένους τὴν ἀρετήν· οὐδεὶς γὰρ ἀνὴρ τέλειος ἄνευ ταύτης. Πολίτῃ δὲ ἀδικουμένῳ βοηθεῖν, καὶ οἴκοι καὶ ἐπὶ [q]ξένης· ξένον δὲ πάντα, τὸν ἐν τῇ ἑαυτοῦ πατρίδι σεβόμενον, καὶ κατὰ τοὺς οἰκείους νόμους,

[b] τὸ—ἄριστον] τὸν—ὅριστον Damasc. τὸν Trinc. τὸ B.
[c] πράσσεν] πεύσθεν Damasc.
[d] διὸ φροντίζειν] διὸ δεῖ φ. A. Damasc. Trinc. φροντίζεν Trinc. Heynius p. 78.
[e] τῷ] τὸ A. ex em.
[f] σφόδρα] Lego σφόδρα ὀλιγώρως. GESN.
[g] τὰ μάκιστα καὶ τὰ μεγάλα] τοὺς κακίστους καὶ τοὺς μεγάλους Damasc. τὰ sec. om. A.
[h] δυναμίαν] δύναμιν Damasc. ἀδυμίαν A. text. ἴσως ἀδυναμίαν ἢ δύναμιν in marg.
[i] μετρεοντα] μετρίοντα Damasc.
[k] πρᾶγμα] πράγματι B. m. s.
[l] ἐπιβάλλεν] ἐπέβαλεν Damasc. Totum locum sic constituit Heynius: διὸ φροντίζεν (δεῖ) τῷ μὴ σφόδρα ἐς τὰ ἄκιστα καὶ τὰ μεγάλα ἐμπίπτεν· ἀλλὰ κατ' ἀξίαν τὰν ἑαυτῶ καὶ δυναμίαν μετρέοντα, ἑκάστῳ πράγματι ἐπιβάλλεν.
[m] Ἀδικῷ] ἀδικῷ δὲ A. B.
[n] μὴ] μὲν Damasc. τιλετὴν
[o] τελετὴν] τελευτὴν Dam. ἀρετὴν A.
[p] μιμουμένους] Immo μεμυημένους, *initiatos*. HEYNE.
[q] ξένης] ξένης (οις) A. ξένους Damasc.

εὐφήμως καὶ οἰκείως προσδέχεσθαι καὶ ἀποστέλλειν, μεμνημένους Διὸς ξενίου ὡς παρὰ πᾶσιν ἱδρυμένου κοινοῦ θεοῦ, καὶ ὄντος ἐπισκόπου φιλοξενίας τε καὶ κακοξενίας.

Ἡγεῖσθαι δὲ καὶ παραγγέλλειν πρεσβυτέρους νεωτέροις [r] τὸ αἰδεῖσθαι, καὶ αἰσχύνεσθαι τὰ κακὰ, φανεροὺς ὄντας αὐτοὺς αἰσχυνομένους καὶ αἰδουμένους· ὡς ἐν αἷς πόλεσι πρεσβυτέρων ἀναισχυντίαι, φύονται παῖδες αὐτῶν καὶ παίδων παῖδες ἀναίσχυντοι. Ἀκολουθεῖ δὲ ἀναισχυντίᾳ καὶ ἀναιδείᾳ, ὕβρις καὶ ἀδικία· τούτοις δὲ ἕπεται ὄλεθρος. Μηδεὶς δ' ἔστω ἀναιδὴς, ἀλλὰ σωφρονείτω ἕκαστος, ὡς [s] οὕτω τευξόμενος [t] θεῶν ἵλεων καὶ σωτηρίας· οὐδεὶς γὰρ κακὸς θεοφιλής. Τιμάτω δὲ ἕκαστος τὸ καλὸν καὶ τὸ ἀληθὲς, καὶ μισείτω τὸ αἰσχρὸν καὶ τὸ ψεῦδος· ταῦτα γὰρ ἀρετῆς σημεῖα καὶ κακίας. Διὸ χρὴ συνεθίζειν ἐκ παίδων κολάζοντας μὲν τοὺς φιλοψευδεῖς, φιλοῦντας δὲ τοὺς φιλαλήθεις, ἵν' [v] ἐμφυσιῶται ἑκάστῳ τὸ κάλλιστον καὶ σπερματωδέστατον τῆς ἀρετῆς. Προσποιείσθω δὲ ἕκαστος τῶν 290
πολιτῶν σωφρονεῖν μᾶλλον, ἢ φρονεῖν· ὡς ἡ προσποίησις τοῦ φρονεῖν μέγα σημεῖον ἀπειροκαλίας καὶ σμικρότητος. Ἔστω δὲ ἡ προσποίησις τοῦ σωφρονεῖν ἀληθής· μηδεὶς γὰρ

[r] τῷ αἰδεῖσθαι] τοῦ α. A. Trinc. τὸ α. Heyne.

[s] τούτῳ] οὕτω Damasc. Trinc.

[t] θεὸν ἵλεων] θεῶν ἵλεω Damasc. θεοῦ A. θεῶν Gesn. marg. B. m. s. Heyne.

[v] ἐμφυσιοῦται] ἐμφυσιῶται Heynius, qui de h. v. habet sequentia: "Super voce ἐμφυσιοῦν gravis "est censura Bentleii, p. 376. "qui adeo barbarum auctorem "prodi hoc ipso contendebat, "quod vocabulum, vulgari usu "pro ἐμφυσᾷν, *inflare*, adhiberi "solitum, usurpaverit tanquam a "φύσις ductum, ut sit *in naturam* "*et indolem convertere*. Iniquis-"sima vero strictura. Est enim "voc. Pythagoreis seu veris, seu "imitatoribus, hoc sensu frequen-"tatum: sic Hippodamus de "Rep. apud Stob. XLI. τὰ δὲ "ἔθη καὶ ἐπιτηδεύματα πλάσσει καὶ "κηροχυτεῖ τὰν ψυχὰν, φυσίωσιν ἐμ-"ποιεῦντα διὰ τῆς συνεχέος συνεργί-"ης: h. *habitu in naturam verso*. "Apud Porphyr. de Abstin. I. "29. ἡ κατὰ τὰ ὄντως ὄντα φυσίω-"σις καὶ ζωή. III. 11. φυσιοῦσθαι "*a natura vim habere*."

πλαττέσθω γλώσσῃ καλὰ ἔργα, πράξεως καὶ διανοίας στερόμενος ἀγαθῆς.

Χρὴ δὲ καὶ πρὸς τοὺς ἄρχοντας εὔνοιαν διαφυλάττειν, καθάπερ πατρικὴν, εὐπειθοῦντας καὶ σεβομένους· [w] ὡς ὁ μὴ διανοούμενος οὕτω τίσει δίκην κακῆς βουλῆς δαίμοσιν ἑστιούχοις. Ἄρχοντες γὰρ ἑστιουχοῦσι πόλεως, καὶ πολιτῶν σωτηρίας.

Χρὴ δὲ καὶ τοὺς ἄρχοντας δικαίως προεστάναι τῶν ἀρχομένων, καθάπερ τέκνων ἰδίων, ἔχθραν καὶ φιλίαν καὶ θυμὸν ἐν τῷ κρίνειν [x] κοιμίσαντας.

Ἐπαινείσθωσαν δὲ καὶ [y] εὐδοκιμείσθωσαν, ὅσοι ἂν ὄντες εὔποροι τοῖς ἐνδεεστέροις ἐπαρκῶσιν, ὡς τέκνα, καὶ ἀμύντορας σώζοντες τῆς ἑαυτῶν πατρίδος. Ἐπαρκείτωσαν δὲ τοῖς διὰ τύχην [z] πενομένοις, καὶ μὴ διὰ βίον ἀργὸν καὶ ἀκρατῆ. Ἡ μὲν γὰρ τύχη πᾶσι κοινόν· ὁ δὲ ἀργὸς καὶ ἀκρατὴς βίος κακοῖς ἀνδράσιν ἴδιος.

Καλὸν [a] δ' ἔστω καὶ μηνύειν ἐάν τίς τῳ συνίδῃ ἀδικοῦντι, ἵνα ἡ πολιτεία σώζηται, πολλοὺς ἔχουσα τῆς εὐκοσμίας φύλακας. Ὁ δὲ μηνύων εὐσεβὴς ἔστω, καὶ κατὰ τῶν οἰκειοτάτων ἐξαγγέλλων· οὐδὲν γάρ ἐστιν οἰκειότερον πατρίδος. Ἐμφανιζόντων δὲ μὴ τὰ δι' ἀκούσιον ἄγνοιαν γιγνόμενα, ἀλλ' ὅσον ἂν ἐκ προνοίας τι ἁμαρτάνωσιν. Ὁ δ' ἐμφανισθεὶς, ἂν [b] ἐθελεχθρῇ τῷ μηνύσαντι, μισείσθω ὑπὸ πάντων, δίκην διδοὺς [c] ἀχαριστίας, ἧς [d] ἀποστερεῖ τὸν ἰατρεύοντα μεγίστην νόσον ἰατρευόμενος ἀδικίαν.

Ἔστω δὲ μέγιστα ἀδικήματα, θεῶν καταφρόνησις, καὶ

[w] ὡς ὁ μὴ] ὡς μὴ Trinc.
[x] κοσμίσαντας] κοιμίσαντας A. B. Trinc.
[y] εὐδοκιμείσθωσαν] εὐδοκιμείτωσαν A. Damasc. B. m. s.
[z] πενομένης] πενομένοις A. Trinc.
[a] δ' ἔστω] δέ τῳ Damasc. et mox συνειδῇ pro συνίδῃ.
[b] ἐθελεχθρῇ] ἐθελεχθρήσει Dam.
[c] ἀχαριστίας] ἀχαριστείας A.
[d] ἀποστερῇ] ἀποστερεῖ Trinc.

γονέων κάκωσις ἑκούσιος, καὶ ἀρχόντων καὶ νόμων ὀλιγωρία, καὶ ἑκούσιος ἀτιμία δικαιοσύνης. Δικαιότατος δὲ ἔστω καὶ ὁσιώτατος πολίτης, ὁ ταῦτα τιμῶν, καὶ ἐμφανίζων πρὸς πολίτας καὶ ἄρχοντας κατὰ τῶν καταφρονούντων.

Ὑπὲρ πατρίδος ἀποθνήσκειν σεμνότερον ἔστω, ἢ γλιχόμενον τοῦ ζῆν ἐγκαταλιπεῖν αὐτὴν καὶ τὸ καλόν. Κρεῖττον γὰρ τεθνάναι καλῶς, ἢ ζῆν αἰσχρῶς καὶ ἐπονειδίστως.

Χρὴ δὲ καὶ τῶν τελευτώντων ἕκαστον τιμᾶν, μὴ δακρύοις, μηδὲ [f] οἴκτοις, ἀλλὰ μνήμῃ ἀγαθῇ, καὶ τῇ τῶν κατ᾽ ἔτος ὡραίων ἐπιφορᾷ· ὡς ἀχαριστίας οὔσης πρὸς δαίμονας χθονίους, λύπης ὑπὲρ τὸ μέτρον γιγνομένης.

Βλασφημείτω δὲ μηδεὶς ἐπ᾽ ἀδίκῳ βλάβῃ περὶ μηδενός· θειότερον γὰρ εὐφημία [g] κακηγορίας.

Νομιζέσθω δὲ πολίτης ἀμείνων ὁ τῆς ὀργῆς [h] κρείττων, μᾶλλον τοῦ διὰ ταύτην πλημμελοῦντος.

Ὁ ἱερὰ καὶ ἀρχεῖα ὑπεραίρων τῇ πολυτελείᾳ τῶν ἰδίων, 291
μὴ εὐδοξείτω, ἀλλ᾽ ὀνειδιζέσθω· μηδὲν γὰρ ἔστω ἰδιωτικὸν [i] μεγαλοπρεπέστερον καὶ σεμνότερον τῶν δημοσίων.

Ὁ πλούτῳ καὶ χρήμασι δουλεύων καταφρονείσθω, ὡς μικρόψυχος ὤν, καὶ ἀνελεύθερος, καὶ καταπληττόμενος ὑπὸ [k] κτημάτων πολυτελῶν, καὶ βίου [l] τραγῳδουμένου, καὶ εὐτελὴς εἶναι τὴν ψυχὴν ὑπολαμβανέσθω. Ὁ γὰρ μεγαλόψυχος προδιανοεῖται πάντα παρ᾽ ἑαυτῷ τὰ παρ᾽ ἀνθρώποις, καὶ δι᾽ οὐδενὸς θορυβεῖται [m] τοιούτου, ὅτ᾽ ἂν [n] παραπέσῃ.

[e] καὶ om. B.
[f] οἴκτοις] οἴκτροις Damasc.
[g] κακηγορίας] κατηγορίας Damasc.
[h] κρείττων] κρεῖττον A.
[i] μεγαλοπρεπέστερον] καλοπρεπέστερον Damasc.
[k] κτημάτων] χρημάτων A.
[l] τραγῳδουμένου] Adversus voc. τραγωδεῖσθαι, sane recentius Charondæ ætate, docte disputavit Bentleius p. 358. sq. refellitque saltem hoc, quod nemini in mentem veniat, nos ipsa legum verba habere. Heyne.
[m] τοιούτου] τοσούτου B. m. p.
[n] παραπέσῃ] παρελκύῃ Damasc.

Αἰσχρορρημονείτω δὲ μηδεὶς, ὅπως ἂν μὴ [o] παροικοίη τὴν διάνοιαν ἔργοις αἰσχροῖς, μηδὲ [p] ἀναπίμπλη τὴν ψυχὴν ἀναιδείας καὶ μιασμάτων. Τὰ μὲν γὰρ εὐσχήμονα καὶ φίλα τοῖς οἰκείοις ὀνόμασι καὶ κειμένοις ὑπὸ τοῦ νόμου προσαγορεύομεν, πρὸς ἃ δὲ ἐχθρῶς ἔχομεν, ἐξιστάμεθα καὶ τῆς προσηγορίας [q] διὰ τὸ αἰσχρόν. Ἔστω δὲ καὶ αἰσχρὸν εἰπεῖν τὸ αἰσχρόν.

Γυναῖκα δὲ τὴν κατὰ νόμους ἕκαστος στεργέτω, καὶ ἐκ ταύτης τεκνοποιείσθω, εἰς ἄλλο δὲ [r] μηδὲν προϊέσθω τέκνων τῶν αὑτοῦ σποράν· μηδὲ τὸ φύσει καὶ νόμῳ τίμιον ἀνόμως ἀναλισκέτω καὶ ὑβριζέτω. Ἡ γὰρ φύσις τεκνοποιΐας ἕνεκεν οὐκ ἀκολασίας ἐποίησε τὴν σποράν.

Γυναῖκα δὲ σωφρονεῖν χρὴ, καὶ μὴ προσδέχεσθαι συνουσίαν ἀσεβῆ παρ' ἄλλων ἀνδρῶν, ὡς ἀπαντώσης νεμέσεως παρὰ δαιμόνων [s] ἐξοικιστῶν καὶ ἐχθροποιῶν.

Ὁ μητρυιὰν ἐπιγαμῶν μὴ εὐδοξείτω, ἀλλ' ὀνειδιζέσθω, ὥσπερ αἴτιος ὢν οἰκείας διαστάσεως.

Χρὴ δὲ ἐμμένειν τοῖς εἰρημένοις, τὸν δὲ παραβαίνοντα ἔνοχον εἶναι τῇ πολιτικῇ ἀρᾷ.

Προστάσσει δὲ ὁ νόμος, ἐπίστασθαι τὰ προοίμια τοὺς πολίτας ἅπαντας, καὶ ἐν ταῖς ἑορταῖς μετὰ τοὺς παιᾶνας λέγειν, ᾧ ἂν [t] προστάσσῃ ὁ ἑστιάτωρ, ἵν' [v] ἐμφυσιῶται ἑκάστῳ τὰ παραγγέλματα.

41 [a] Ἐκ τῶν Νικολάου Περὶ ἐθῶν.

Παρὰ Ταρτησσίοις νεωτέρῳ πρεσβυτέρου καταμαρτυρεῖν οὐκ ἔξεστι.

[o] παροικοίη] l. παροικειοῖ, ut προσοικειοῦν. HEYNE. ποικοίη Trinc.

[p] ἀναπίμπλη τὴν] ἀναπιμπλητικὴν A. p. m.

ib. ἀναπίμπλη scribitur: saltem ἀναπιμπλῇ ex πιμπλάω, nisi ἀναπιμπλείη fuit. HEYNE.

[q] διὰ τὸ αἰσχρόν. Hæc verba ab alia manu inserta videntur Heynio.

[r] μηδὲν] μὴ A. m. p.

[s] καὶ ἐξοικιστῶν] καὶ om. A. B. m. s. et delendum videtur Heynio. ἐξοιχίστων Dam.

[t] προστάσσει] προστάσσῃ A.

[v] ἐμφυσιοῦται] ἐμφυσιῶται Dam.

41.

[a] Sic Trinc. et fere A. ubi τοῦ. Vid. Valesii Exc. p. 514.

Λευκανοὶ δικάζονται ἀλλήλοις, ὥσπερ ἄλλου τινος ἀδικήματος, οὕτω καὶ ἀσωτίας καὶ ἀργίας. Ἐὰν δέ τις ἀσώτῳ δανείσας χρέος ἐλεγχθῇ, στέρεται αὐτοῦ. Καὶ Ἀθήνῃσι δὲ τῆς ἀργίας εἰσὶ δίκαι.

[b] Παρὰ Σαυνίταις κατ' ἔτος οἵ τε ἤϊθεοι κρίνονται δημοσίᾳ, καὶ αἱ παρθένοι· ὁ δὲ κριθεὶς ἄριστος εἶναι λαμβάνει ἣν βούλεται, εἶθ' ὁ μετ' ἐκεῖνον δεύτερος, καὶ οὕτως ἐφεξῆς.

[c] Λιβύρνιοι κοινὰς τὰς γυναῖκας ἔχουσι, καὶ τὰ τέκνα ἐν κοινῷ τρέφουσι [d] μέχρι ἐτῶν πέντε· εἶτα τῷ ἕκτῳ [e] συνενέγκαντες ἅπαντα τὰ παιδία, τὰς ὁμοιότητας πρὸς τοὺς ἄνδρας εἰκάζουσι, καὶ ἑκάστῳ [f] τὸν ὅμοιον ἀποδιδόασι πατρί· ἀφ' ἧς δ' ἂν [g] ἀπολάβῃ τὸ παιδίον, ἕκαστος υἱὸν ὑπολαμβάνει.

Κελτοὶ σιδηροφοροῦντες τὰ κατὰ πόλιν πάντα πράττουσι, μείζω δ' ἐστὶν ἐπιτίμια κατὰ τοῦ [h] ξένον ἀνελόντος, ἢ 292 πολίτην. Ὑπὲρ [i] τοῦ μὲν γὰρ θάνατος ἡ ζημία· ὑπὲρ [k] τοῦ δὲ πολίτου, φυγή. [l] Τιμῶσι δὲ μάλιστα τοὺς χώραν τῷ κοινῷ προσκτωμένους· τὰς δὲ θύρας τῶν οἰκιῶν οὐδέποτε κλείουσι.

Σαυρομάται διὰ τριῶν ἡμερῶν [m] σιτοῦνται εἰς πλήρωσιν· ταῖς δὲ γυναιξὶ πάντα πείθονται ὡς δεσποίναις· παρθένον δὲ οὐ πρότερον συνοικίζουσι [n] πρὸς γάμον, πρὶν ἂν πολέμιον ἄνδρα κτείνῃ.

[b] παρὰ Σουνίταις] ἱερὰ σανείταις Damasc. Σαυνίταις legendum monuit Holstenius ad Steph. Byzant. p. 286.

[c] Λιμύρνιοι] Λιβύρνιοι A. m. s. Λιβυρνοὶ B. m. s. Λιμυρίνιοι B. m. p. Σμύρνιοι Damasc. Vide Holsten. Steph. Byz. p. 189.

[d] μέχρι] μέχρις A.

[e] συνενέγκαντες] συνενέγκοντες B. m. s.

[f] τὸν ὅμοιον] τὸ ὅμ. B. m. s.

[g] ὑπολάβῃ] ἀπολάβῃ A. B. m. s. et in fin. ὑπολαμβάνει A. B. m. s. pro ἀπολαμβάνει.

[h] ξένον—πολίτην] ξένου—πολίτου B. m. p. πολίτου Trinc.

[i] τοῦ] οὗ A. Damasc.

[k] τοῦ δὲ] δὲ τοῦ B. m. s.

[l] τιμῶσι—χώραν δὲ] τιμῶσι δὲ—χώραν A. Trinc.

[m] σιτοῦνται] An ὀπύονται? VALCK.

[n] πρὸς γάμον] εἰς γάμον Damasc. Vide Wess. ad Herodot. IV. 117.

[o] Κερκέται τοὺς ἀδικήσαντας ὁτιοῦν τῶν [p] ἱερῶν ἀπείργουσιν. Ἐὰν δέ τις κυβερνῶν σκάφος διαμάρτῃ, προσιόντες ἐφεξῆς ἕκαστοι ἐμπτύουσιν αὐτῷ.

Μόσυνοι τὸν ἑαυτῶν βασιλέα τρέφουσιν ἐν πύργῳ κατάκλειστον· ἐὰν δέ τις δόξῃ κακῶς ποτὲ βεβουλεῦσθαι, τῷ λιμῷ αὐτὸν ἀποκτείνουσι· τὸν δὲ τρεφόμενον σῖτον ἐξίσου διαιροῦσι, μέρος κοινῇ ἐξελόντες τοῖς ἀφικνουμένοις ξένοις.

Φρύγες ὅρκοις οὐ χρῶνται, οὔτ' ὀμνύντες, οὔτε ἄλλους ἐξορκοῦντες. Ἐὰν δέ τις παρ' αὐτοῖς γεωργικὸν βοῦν ἀποκτείνῃ, ἢ σκεῦος [q] τῶν περὶ γεωργίαν κλέψῃ, θανάτῳ ζημιοῦσι.

[r] Λύκιοι τὰς γυναῖκας μᾶλλον ἢ τοὺς ἄνδρας τιμῶσι, καὶ καλοῦνται μητρόθεν, τάς τε κληρονομίας ταῖς θυγατράσι λείπουσιν, οὐ τοῖς υἱοῖς. Ὃς δ' ἂν ἐλεύθερος ἁλῷ κλέπτων, δοῦλος γίνεται· τὰς δὲ μαρτυρίας ἐν ταῖς δίκαις οὐκ εὐθὺ παρέχονται, ἀλλὰ μετὰ μῆνα.

Πισίδαι δειπνοῦντες ἀπάρχονται τοῖς γονεῦσιν, ὡς ἡμεῖς τοῖς θεοῖς παρασπονδίοις. Ἡ δὲ μεγίστη κρίσις ἐστὶ [s] παρακαταθήκης· [t] τὸν δὲ ἀποστερήσαντα θανατοῦσιν. Ἐὰν δὲ μοιχὸς ἁλῷ, περιάγεται τὴν πόλιν ἐπὶ ὄνου μετὰ τῆς γυναικὸς ἐπὶ ἡμέρας τακτάς.

Αἰθίοπες τὰς ἀδελφὰς μάλιστα τιμῶσι, καὶ τὰς διαδοχὰς μάλιστα καταλείπουσιν οἱ βασιλεῖς οὐ τοῖς ἑαυτῶν, ἀλλὰ τοῖς τῶν ἀδελφῶν υἱοῖς. Ὅτ' ἂν δ' ὁ [v] διαδεξάμενος μὴ ᾖ, τὸν κάλλιστον ἐκ πάντων καὶ μαχιμώτατον αἱροῦνται βασιλέα. Ἀσκοῦσι δὲ εὐσέβειαν καὶ δικαι-

[o] Κάρκεται] Κέρκεται Trinc.
[p] ἱερέων] ἱερῶν A. Gesn. marg. B. m. s.
[q] τῶν περὶ] τὸ περὶ A.
[r] Λύκιοι] Κύκιοι Damasc. Videatur Valckenærius ad Herodot. I. 173.
[s] παρακαταθήκης] περὶ παρακαταθήκης B. m. s.
[t] τὸν δὲ usque ad ἐκ πάντων καὶ om. A.
[v] διαδεξάμενος] διαδεξόμενος B. m. s.

οσύνην. Ἄθυροι δ' αὐτῶν αἱ οἰκίαι, καὶ ἐν ταῖς ὁδοῖς κειμένων πολλῶν οὐδὲ εἷς κλέπτει.

[w] Ἐν Βυάοις Λίβυσιν ἀνὴρ μὲν ἀνδρῶν βασιλεύει, γυνὴ δὲ γυναικῶν.

[x] Βασουλιεῖς Λίβυες ὅτ' ἂν πολεμῶσι, τὰς μὲν νύκτας μάχονται, τὰς δ' ἡμέρας εἰρήνην ἄγουσι.

[y] Δαψολίβυες ὅτ' ἂν συναχθῶσι, πάντες ἅμα γαμοῦσιν ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ μετὰ δύσιν πλειάδος, καὶ μετὰ τὴν ἑστίασιν χωρὶς τῶν γυναικῶν κατακειμένων [z] κατασβέσαντες τὸν λύχνον εἰσέρχονται, καὶ ὁ τυχὼν ἣν ἂν [a] τύχῃ λαμβάνει.

[b] Ἰαλχλευεῖς Λίβυες, ὅτ' ἂν πολλοὶ [c] μνηστεύωνται γυναῖκα, παρὰ τῷ κηδεστῇ δειπνοῦσι, [d] παρούσης καὶ τῆς γυναικός· πολλὰ δὲ σκωπτόντων, ἐφ' ᾧ ἂν ἡ γυνὴ γελάσῃ, τούτῳ συνοικεῖ.

[e] Σορδολίβυες οὐδὲν κέκτηνται σκεῦος, [f] ἔξω [g] κύλικος 293 καὶ μαχαίρας.

[h] Ἀλιτέμνιοι Λίβυες τοὺς ταχυτάτους αὐτῶν αἱροῦνται βασιλεῖς· τῶν δ' ἄλλων τιμῶσι τὸν δικαιότατον.

Οἱ Νομάδες τῶν Λιβύων οὐ ταῖς ἡμέραις, ἀλλὰ ταῖς νυξὶν, αὐτῶν ἀριθμοῦσι τὸν χρόνον.

[i] Ἀφάραντες Λίβυες ὀνόματα οὐκ ἔχουσιν, ἡλίῳ δὲ ἀνί-

[w] ἐν Βυαίοις] ἐν Βύκοις Damasc. ἐν Ὑάλοις A. B. m. s.

[x] Βασουλιεῖς] Holsten. ad Steph. Byz. p. 200. b. corrigit Μασσυλιεῖς. Valesius Excerpt. p. 74. Μασουλιεῖς.

[y] Δαψολίβυες] Δαψιλόβιοι Dam.

[z] κατασβέσαντες] κατασκευάσαντές Damasc. κατασκεδάσαντες A. m. p.

[a] τύχῃ] τύχοι A. ἣν ἂν ὀπυίῃ legendum suspicatur Valckenærius.

[b] Ἰαλχλευεῖς] Μάκλυες ex Herodoto IV. 178. reponit Valckenærius, ubi tamen v. Wesseling.

[c] μνηστεύσωνται] μνηστεύωνται A.

[d] παρούσης τῆς] π. καὶ τῆς A.

[e] Σορδολύβιες] Σορδοὶ λίβυες A. p. m. Σαρδολίβυες A. m. s. B. m. s. Παρδοὶ Λίβυες Damasc.

[f] ἔξω] εἰ μὴ A. B. m. s.

[g] κύλικας B. m. s. κύλιδος Trinc.

[h] Ἀλιτέμνοι] Ἀλιτέμνιοι A. Damasc. Gesner. marg. Simile quid Trinc.

[i] Ἀφάραντες] Γαράμαντες A. B. uterque a m. sec. Ἀτάραντες corrigit Valckenær. Herodot. IV. 184. et sic Salmasius ad Solin. p. 292. C.

σχοντι λοιδοροῦνται, ὡς πολλὰ κακὰ φήναντι· τῶν δὲ θυγατέρων ἀρίστας κρίνουσι, τὰς πλεῖστον χρόνον μεμενηκυίας παρθένους.

Βοιωτῶν ἔνιοι τοὺς [k] τὸ χρέος οὐκ ἀποδιδόντας εἰς ἀγορὰν ἄγοντες [l] καθίσαι κελεύουσιν, εἶτα κόφινον ἐπιβάλλουσιν [m] αὐτοῖς· ὃς δ' ἂν κοφινωθῇ, ἄτιμος γίνεται. Δοκεῖ δὲ τοῦτο πεπονθέναι καὶ ὁ Εὐριπίδου πατὴρ, Βοιωτὸς ὢν τὸ γένος.

[n] Ἀσσύριοι τὰς παρθένους ἐν ἀγορᾷ πωλοῦσι τοῖς θέλουσι συνοικεῖν· πρώτας μὲν τὰς εὐγενεστάτας καὶ καλλίστας, εἶτα τὰς λοιπὰς ἐφεξῆς· ὅτ' ἂν δ' ἔλθωσιν ἐπὶ τὰς φαυλοτάτας, κηρύττουσι, πόσον τις θέλει προσλαβὼν [o] ταύταις συνοικεῖν, καὶ τὸ συναχθὲν ἐκ τῆς τῶν εὐπρεπῶν τιμῆς ταύταις [p] προστίθενται. Ἀσκοῦσι δὲ μάλιστα [q] βαθύτητα καὶ ἀοργησίαν.

[r] Πέρσαις ὃ μὴ ποιεῖν ἔξεστιν, οὐδὲ λέγουσιν. Ἐὰν δέ [s] τις πατέρα κτείνῃ, ὑποβλητὸν αὐτὸν οἴονται. Ἐὰν δέ τινα προστάξῃ [t] ὁ βασιλεὺς [v] μαστιγῶσαι, εὐχαριστεῖ, ὡς ἀγαθοῦ τυχὼν ὅτι αὐτοῦ ἐμνήσθη ὁ βασιλεύς. Ἆθλα δὲ λαμβάνουσι παρὰ [u] τοῦ βασιλέως πολυτεκνίας. Οἱ δὲ παῖδες παρ' αὐτοῖς ὥσπερ [w] μαθήματα τὸ ἀληθεύειν διδάσκονται.

Παρ' Ἰνδοῖς, ἐάν τις ἀποστερηθῇ δανείου ἢ παρακαταθήκης, οὐκ ἔστι κρίσις· ἀλλ' αὐτὸν αἰτιᾶται ὁ πιστεύσας. Ὁ δὲ τεχνίτου πηρώσας χεῖρα ἢ ὀφθαλμὸν θανάτῳ ζημιοῦ-

[k] χρέος] τὸ χρέος A. B. m. s.
[l] καθίσαι] καθῆσαι Arsen.
[m] αὐτῷ] αὐτῶν Damasc. αὐτοῖς Arsen.
[n] Ἀσσύριοι] Vide Herodot. I. 196.
[o] ταύτας] ταύταις Damasc. Tr.
[p] προστίθενται] προστιθέασι Arsen. ubi desunt reliqua.
[q] βαθύτητα] οὗτοι τὴν εὐθύτητα A. B. m. sec. Mox τὴν ἀοργησίαν A.
[r] Πέρσαις] Πέρσαι B.
[s] τις πατέρα] τις ἀπ' αὐτῶν πατέρα A. αὐτῶν B. m. s.
[t] βασιλεὺς] ὁ βασιλεὺς A. B. m. s. et sic infra.
[v] μαστιγῶσαι] τοῦ μαστιγῶσαι A.
[u] βασιλέως] τοῦ βασιλέως A. B. m. s.
[w] μαθήματα] τινα μαθήματα A. B m. s. μάθημα Damasc.

ται. Τὸν δὲ μέγιστα ἀδικήσαντα ὁ βασιλεὺς κελεύει κείρασθαι, ὡς [x] ἐσχάτης οὔσης [y] ταύτης ἀτιμίας.

Λακεδαιμονίοις τέχνας μανθάνειν ἄλλας, ἢ τὰς εἰς [z] πόλεμον, αἰσχρόν ἐστιν. Ἑστιῶνται δὲ πάντες ἐν κοινῷ. Τοὺς δὲ γέροντας αἰσχύνονται, [a] οὐδὲν ἧττον ἢ [b] πατέρας. Γυμνάσια δ' ὥσπερ ἀνδρῶν ἐστι, οὕτω καὶ [c] παρθένων. Ξένοις δ' ἐμβιοῦν οὐκ ἔξεστιν ἐν Σπάρτῃ, οὔτε Σπαρτιάταις [d] ξενιτεύειν. Ταῖς δὲ αὐτῶν γυναιξὶ παρακελεύονται ἐκ τῶν εὐειδεστάτων κύεσθαι, καὶ ἀστῶν καὶ ξένων. Χρηματίζεσθαι δ' αἰσχρὸν [e] Σπαρτιάταις. [f] Νομίσματι δὲ χρῶνται σκυτίνῳ· ἐὰν δὲ παρά τινι εὑρεθῇ χρυσὸς, ἢ ἄργυρος, θανάτῳ ζημιοῦται. Σεμνύνονται δὲ πάντες ἐπὶ τῷ ταπεινοὺς αὑτοὺς παρέχειν, καὶ κατηκόους ταῖς ἀρχαῖς. Μακαρίζονται δὲ μᾶλλον [g] παρ' αὐτοῖς οἱ γενναίως ἀποθνήσκοντες, ἢ οἱ εὐτυχῶς ζῶντες. Οἱ δὲ παῖδες νομίμως [h] περί τινα βωμὸν περιϊόντες μαστιγοῦνται, ἕως ἂν ὀλίγοι λειφθέντες στεφανωθῶσιν. Αἰσχρὸν δέ ἐστι [i] δειλῶν σύσκηνον, ἢ συγγυμναστὴν, [k] ἢ φίλον γενέσθαι. Κρίσις [l] δὲ ταῖς [m] γεροντίαις ἐπὶ τῷ τέρματι τοῦ βίου προστίθεται τοῖς τε εὖ ἢ κακῶς [n] ζήσασιν. Ὅτ' ἂν δὲ [o] στρατεύωνται ἔξω χώρας, πῦρ ἀπὸ τοῦ 294
βωμοῦ τοῦ Ἀγήτορος Διὸς ἐναυσάμενος πυρφόρος λεγόμενος,

[x] ἐσχάτης] λίαν ἐσχάτης A. B. m. s.

[y] ταύτης] τῆς τοιαύτης A.

[z] πόλεμον] Al. additur εὐθέτους. GESNER. Sic Damasc. A. B. m. s.

[a] οὐδὲν] κατ' οὐδὲν A.

[b] πατέρας] τοὺς ἰδίους πατέρας A. B. m. p.

[c] παρθένων] τῶν πατέρων A.

[d] ξενιτεύειν] ἔθος ξ. A. B. m. s.

[e] Σπαρτιάτῃ] Σπαρτιάταις Damasc. τοῖς Σπαρτιάταις A.

[f] νομίσματι—σκυτίνῳ] νομίσμασι—σκυτίνοις A. B. m. s.

[g] παρ' αὐτοῖς] ὑπ' ἀ. B. m. s. Trinc.

[h] περί τινα] περὶ τὸν A. m. p.

[i] δειλῶν] δόλων A. m. p.

[k] φίλων] Forte ἢ φίλον. GESNER. ἢ m. sec. φίλον (sic) A. ἢ φίλον B. m. s. φίλον Damasc. Facile excidere potuit ἢ ob similitudinem præcedentis ν.

[l] δὲ habet A. suprasc. a m. s.

[m] γεροντίαις] γεροντείαις A.

[n] ζήσωσιν] ζήσασιν A. Trinc.

[o] στρατεύονται] στρατεύωνται A. Trinc.

σύνεστι [p] τῷ βασιλεῖ ἄσβεστον αὐτὸ τηρῶν. Συνεκπέμπονται δὲ τῷ [q] βασιλεῖ μάντεις, καὶ ἰατροὶ, καὶ αὐληταὶ, οἷς ἐν ταῖς μάχαις ἀντὶ σαλπίγγων ἀεὶ χρῶνται, μάχονται δὲ [r] ἐστεφανωμένοι. Ὑπανίστανται δὲ [s] τῷ βασιλεῖ πάντες, πλὴν τῶν ἐφόρων. Ὀμνύει τε πρὸ τῆς ἀρχῆς ὁ βασιλεὺς κατὰ τοὺς τῆς πόλεως νόμους βασιλεύειν.

Κρῆτες πρῶτοι Ἑλλήνων νόμους ἔσχον [t] τοῦ Μίνωος θεμένου, [u] ὃς καὶ πρῶτος ἐθαλασσοκράτησεν. Προσεποιεῖτο δὲ ὁ Μίνως παρὰ τοῦ Διὸς αὐτοῦ μεμαθηκέναι, δι' ἐννέα ἐτῶν εἴς τι ὄρος φοιτῶν, ἐν ᾧ Διὸς ἄντρον ἐλέγετο, κἀκεῖθεν ἀεὶ τινὰς νόμους φέρων τοῖς [w] Κρησί. Μέμνηται δὲ [x] τούτου καὶ [y] Ὅμηρος, ἐν οἷς λέγει,

τοῖσι δ' ἐνὶ Κνωσσὸς μεγάλη πόλις, ἔνθα γε Μίνως
ἐννέωρος βασίλευε, Διὸς μεγάλου ὀαριστής.

Οἱ δὲ Κρητῶν παῖδες ἀγελάζονται κοινῇ μετ' ἀλλήλων σκληραγωγούμενοι, καὶ θήρας καὶ δρόμους τε ἀνάντεις [z] ἀνυπόδητοι [a] κατανύοντες, καὶ τὴν ἐνόπλιον Πυῤῥίχην ἐκπονοῦντες, ἥντινα πρῶτος εὗρε Πύῤῥιχος [b] Κυδωνιάτης Κρὴς τὸ γένος. [c] Συσσιτοῦσι δ' ἐν κοινῷ οἱ ἄνδρες, τὴν αὐτὴν δίαιταν ἔχοντες ἐξίσου πάντες. [d] Δῶρα δὲ αὐτοῖς ἐστιν ὅπλα [e] τιμιώτατα.

[p] τῷ βασιλεῖ] τῷ ἰδίῳ βασιλεῖ A. Mox αὐτῷ Trinc.

[q] βασιλεῖ] βασιλεῖ πάντες A. B.

[r] ἐστεφανώμενοι] οἱ Λακεδαιμόνιοι ἐστ. A. στεφανώμενοι Trinc.

[s] βασιλεῖ] τῷ βασιλεῖ A. B. m. s. et mox τῶν ἐφόρων.

[t] Μίνωος] τοῦ Μίνωος A. B. m. s. Mox ibid. ὁ Μίνως.

[u] ὃς suprasc. A.

[w] Κρησὶ] Κρητικοῖς (σὶ suprasc.) A. Mox vulgo Μίνως γε. et post, ὁ ἀριστεὺς Trinc.

[x] τούτου] τούτων A.

[y] Ὅμηρος] Od. τ. (178) ἐννέωρος ab aliis aliter exponitur. Gesn.

[z] ἀνυπόδυτοι] ἀνυπόδετοι A. ἀνυπόδητοι B.

[a] κατανύοντες] καταδύοντες A. p. m.

[b] Κυδωνιάτης] Κυδωνειάτης A.

[c] συσσιτοῦσι] δυσσιτοῦσι A.

[d] δῶρα] δώρων Gesn. marg. δῶρον Damasc.

[e] τιμιώτατα] τιμιωτατον Damasc.

41 Ἐκ τῶν [a] Σερήνου.

Οἱ Περσῶν βασιλεῖς, πρὸ μὲν τῶν θυσιῶν, [b] περὶ εὐσεβείας διαλέγονται· πρὸ δὲ τοῦ πίνειν, περὶ σωφροσύνης· πολεμεῖν δὲ μέλλοντες, περὶ [c] ἀνδρείας.

Πέρσαις νόμος ἦν, ὁπότε βασιλεὺς ἀποθάνοι, ἀνομίαν εἶναι πέντε ἡμερῶν, ἵν' αἴσθοιντο ὅσου ἄξιός ἐστιν ὁ βασιλεὺς καὶ ὁ νόμος.

42 [a] Ἐκ τῶν Πλουτάρχου Περὶ Ἴσιδος.

Οἱ δὲ βασιλεῖς ἀπεδείκνυντο μὲν ἐκ τῶν ἱερέων, [b] ἢ τῶν μαχίμων· τοῦ μὲν δι' [c] ἀνδρείαν τοῦ δὲ διὰ σοφίαν γένους ἀξίωμα καὶ τιμὴν ἔχοντος. Ὁ δ' ἐκ μαχίμων ἀποδεικνύμενος εὐθὺς ἐγίνετο τῶν ἱερέων, καὶ μετεῖχε τῆς φιλοσοφίας ἐπικρυπτομένης τὰ πολλὰ μύθοις καὶ λόγοις, ἀμυδρὰς ἐμφάσεις τῆς ἀληθείας [[d] καὶ διαφάσεις] ἔχουσιν· ὥσπερ ἀμέλει καὶ παραδηλοῦσιν αὐτοὶ πρὸ τῶν ἱερῶν τὰς σφίγγας ἐπιεικῶς ἱστάντες, ὡς αἰνιγματώδη σοφίαν τῆς θεολογίας αὐτῶν ἐχούσης. Τὸ δὲ ἐν [e] Σάϊ τῆς Ἀθηνᾶς, [f] ἣν [καὶ] Ἶσιν νομίζουσιν, ἕδος, ἐπιγραφὴν εἶχε τοιαύτην· ἐγώ εἰμι πᾶν τὸ γεγονὸς, καὶ ὂν, καὶ ἐσόμενον, καὶ τὸν ἐμὸν πέπλον οὐδείς πω θνητὸς ἀνεκάλυψεν.

43 [a] Ἡροδότου ἱστορίας τετάρτης.

Ἀγάθυρσοι ἁβρότατοι ἄνδρες εἰσὶ, καὶ χρυσοφόροι τὰ μάλιστα, ἐπίκοινον δὲ τῶν γυναικῶν τὴν μίξιν ποιεῦνται, ἵνα

41.

[a] Σερίνου A. Trinc.

[b] περὶ] ὑπὲρ (περὶ supra) A.

[c] ἀνδρείας] ἀνδρειας A.

42.

[a] Sic A. Scil. p. 354. B. Deest lemma Trinc.

[b] ἢ ὅτι] ἢ τῶν A. Damasc. Trinc.

[c] ἀνδρείαν] ἀνδρίαν A.

[d] καὶ διαφάσεις] om. A. Dam. Trinc.

[e] σάει] σάϊ A. Trinc.

[f] ἣν καὶ ἶσιν] καὶ om. A. Trinc. ἣν εἴσην Damasc.

43.

[a] Sic fere A. ubi τετάρ. Scil. c. 104. Deest lemma Trinc.

κασίγνητοί τε ἀλλήλων ἔωσι· καὶ [b] οἰκήϊοι ἐόντες πάντες, μήτε φθόνῳ μήτε [c] ἔχθει χρέωνται [d] ἐς ἀλλήλους.

44 [a] Πλάτωνος Νόμων β.

Ἆρ᾽ οὖν νομοθετήσομεν, πρῶτον μὲν τοὺς παῖδας μέχρις ἐτῶν ιη τὸ παράπαν οἴνου μὴ γεύεσθαι, διδάσκοντες, ὡς οὐ χρὴ πῦρ [b] ἐπὶ πῦρ ὀχετεύειν εἴς τε τὸ σῶμα καὶ τὴν ψυχὴν πρὶν ἐπὶ τοὺς πόνους ἐγχειρεῖν πορεύεσθαι, τὴν [c] ἐμμανῆ 295 [d] εὐλαβουμένους ἕξιν τῶν νέων· μετὰ [e] δὲ τοῦτο οἴνου μὲν [f] ἤδη γεύεσθαι τοῦ μετρίου, μέχρι [g] λ᾽ ἐτῶν· μέθης δὲ καὶ πολυοινίας [h] τὸ παράπαν ἀπέχεσθαι τὸν νέον· τετταράκοντα δὲ ἐπιβαίνοντα ἐτῶν, ἐν τοῖς ξυσσιτίοις εὐωχηθέντα καλεῖν τούς τε ἄλλους θεοὺς, καὶ δὴ καὶ Διόνυσον παρακαλεῖν εἰς τὴν τῶν [i] πρεσβυτέρων τελετὴν ἅμα καὶ [k] παιδείαν, ἣν τοῖς [l] [ἄλλοις] ἀνθρώποις ἐπίκουρον τῆς τοῦ γήρως αὐστηρότητος ἐδωρήσατο, τὸν οἶνον φάρμακον, ὥστε ἀνηβᾶν ἡμᾶς, καὶ δυσθυμίας λήθην γίγνεσθαι, μαλακώτερον ἐκ σκληροτέρου τὸ τῆς ψυχῆς ἦθος, καθάπερ εἰς πῦρ σίδηρον [m] ἐντεθέντα, γιγνόμενον, καὶ οὕτως εὐπλαστότερον εἶναι;

45 [a] Ἐν ταυτῷ.

Μηδέποτε μηδένα ἐπὶ στρατοπέδου γεύεσθαι τούτου τοῦ πόματος, ἀλλὰ ὑδροποσίᾳ συγγίγνεσθαι τοῦτον τὸν χρόνον ἅπαντα, [b] καὶ κατὰ πόλιν μήτε δοῦλον μήτε δούλην γεύε-

[b] οἰκήϊοι] οἰκεῖοι κήϊοι B.
[c] ἄχθει] ἔχθει A. B. Damasc. Gesn. marg.
[d] ἐς ἀλλήλους] ἐς om. A. ἐς ἀλλήλαις Trinc.

44.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 666. A.
[b] ἐπὶ πῦρ] ἐπὶ πυρὶ A.
[c] ἐμμανῆ] ἐκμανῆ Gesn. marg.
[d] εὐλαβουμένους] εὐλαβουμένοις A. εὐλαβούμενοι Gesn. marg.
[e] δὲ om. A. Trinc.
[f] ἤδη] δεῖ Gesn. marg. Voc. deest A.
[g] λ] τῶν λ A.
[h] τοπαράπαν] παράπαν A.
[i] πρεσβυτέρων τελευτὴν] πρεσβυτῶν τελετὴν Gesn. marg. τελετὴν A.
[k] παιδείαν] παιδιὰν Gesn. marg.
[l] ἄλλοις om. A. Trinc.
[m] ἐντεθέντα] ἐνθέντα A. ἐκθέντα Trinc.

45.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 674.
[b] καὶ κατὰ] καὶ om. A. Trinc.

σθαι μηδέποτε· [c] μηδὲ ἄρχοντας τοῦτον τὸν ἐνιαυτὸν, [d] ὃν ἂν ἄρχωσιν· μηδ' αὖ κυβερνήτας, μηδὲ δικαστὰς ἐνεργοὺς ὄντας, οἴνου γεύεσθαι τὸ παράπαν· μηδ' ὅστις [e] βουλευσόμενος εἰς βουλὴν [f] τινα ἀξίαν λόγου ξυνέρχεται, μηδέ γε μεθ' ἡμέραν μηδένα τὸ παράπαν, εἰ μὴ [g] σωμασκίας ἢ νόσων ἕνεκα· μηδὲ [h] αὖ νύκτωρ, ὅτ' ἂν ἐπινοῇ τις παῖδας ποιεῖσθαι ἀνὴρ, [i] ἢ καὶ γυνή· καὶ ἄλλα δὲ [k] πάμπολλα ἄν τις λέγοι, ἐν [l] οἷς τοῖς νοῦν τε καὶ νόμον ἔχουσιν ὀρθὸν οὐ ποτέος οἶνος. [m] Ὥστε κατὰ τὸν λόγον τοῦτον οὐδ' ἀμπέλων ἂν πολλῶν δέοι, οὐδ' ἡτινι πόλει· τακτὰ δὲ τὰ ἄλλα [n] ἂν εἴη γεωργήματα, καὶ πᾶσα ἡ δίαιτα· καὶ δὴ τά γε περὶ [o] οἶνον σχεδὸν ἁπάντων [p] ἐμμετρότατα καὶ ὀλίγιστα γίγνοιτ' ἄν. Οὗτος, ὦ ξένοι, ἡμῖν, εἰ ξυνδοκεῖ, κολοφὼν ἐπὶ τῷ περὶ οἴνου λόγῳ ῥηθέντι εἰρήσθω. [[q] Καλῶς, καὶ ξυνδοκεῖ.]

46 [a] Τοῦ αὐτοῦ Νόμων γ.

Ἄρχοντας δὲ δὴ καὶ ἀρχομένους ἀναγκαῖον [b] ἐν ταῖς πόλεσιν εἶναί που; Τί μήν; Εἶεν. Ἀξιώματα δὲ [c] δὴ τοῦ τε ἄρχειν, καὶ ἄρχεσθαι, ποῖά ἐστι καὶ πόσα, ἔν τε πόλεσι μεγάλαις, καὶ μικραῖς, καὶ οἰκίαις ὡσαύτως; ἆρ' οὐχὶ ἓν μὲν τό τε πατρὸς καὶ μητρὸς, καὶ ὅλως γονέας ἐκγόνων ἄρχειν, ἀξίωμα ὀρθὸν πανταχοῦ ἂν εἴη; Καὶ μάλα. Τούτῳ δέ [d] γε ἑπόμενον, γενναίους ἀγεννῶν ἄρχειν· καὶ τρίτον ἔτι τούτοις ξυνέπεται, τὸ πρεσβυτέρους μὲν ἄρχειν δεῖν, νεωτέ-

[c] μηδὲ om. B.
[d] ὃν ἂν ἄρχωσιν] ὃν ἄρχουσιν A. Trinc.
[e] βουλευσόμενος] βουλόμενος B.
[f] ἀξίαν τινα] τινα ἀξίαν A.
[g] σωμασκίας] σωματασκίας B.
[h] αὖ om. A. Trinc.
[i] ἢ καὶ] καὶ om. A. Trinc.
[k] πανὺ πολλὰ] πάμπολλα A.
[l] οἷς om. B.
[m] ὥστε] ὅστε B.
[n] ἂν εἴη] ᾖ A. εἴη sine ἂν Trinc.
[o] οἴνου] οἶνον A. Gesn. marg.
[p] ἐμπειρότατα] ἐμμετρότατα A. Gesn. marg.
[q] καλῶς καὶ ξυνδοκεῖ] om. A. Trinc.

46.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 689.
[b] ἐν ταῖς] deest ἐν A. Trinc.
[c] δὴ om. A.
[d] γε ἑπόμενον] σε ἑπόμενος A.

ρους δὲ ἄρχεσθαι. Τί μήν; Τέταρτον δ' αὖ, δούλους μὲν ἄρχεσθαι, δεσπότας δὲ ἄρχειν. Πῶς γὰρ οὔ; Καὶ πέμπτον γε οἶμαι, τὸν κρείττονα μὲν ἄρχειν, ἥττονα δὲ ἄρχεσθαι. Μάλα γε ἀναγκαίαν ἀρχὴν εἴρηκας. Καὶ πλείστην γε ἐν ξύμπασι τοῖς ζώοις οὖσαν καὶ κατὰ φύσιν, ὡς ὁ Θηβαῖος ἔφη ποτὲ Πίνδαρος. Τὸ δὲ μέγιστον, ὡς ἔοικεν, ἀξίωμα ἕκτον ἂν γίγνοιτο, [e] ἕπεσθαι μὲν τὸν ἀνεπιστήμονα [f] κελεύον, τὸν δὲ φρονοῦντα ἡγεῖσθαί τε καὶ ἄρχειν· [g] καίτοι τοῦτό γε, ὦ Πίνδαρε σοφώτατε, σχεδὸν οὐκ ἂν παρὰ φύσιν [h] ἔγωγε φαίην γίγνεσθαι, κατὰ φύσιν δὲ τὴν τοῦ νόμου [i] ἑκόντων ἀρχὴν, ἀλλ' οὐ βίαιον πεφυκυῖαν. Ὀρθότατα λέγεις. Θεοφιλῆ δέ γε καὶ εὐτυχῆ τινὰ λέγοντες, ἑβδόμην ἀρχὴν, εἰς 296
κλῆρόν τινα προάγομεν, καὶ λαχόντα μὲν ἄρχειν, δυσκληροῦντα δὲ ἀπιόντα ἄρχεσθαι, τὸ δικαιότατον [k] εἶναι φαμέν.

47 [a] Τοῦ αὐτοῦ Νόμων δ.

[b] Λέγεται δὲ τοῦδ' ἕνεκα ταῦθ' ἡμῖν, ὡς ἡμεῖς τῇ σῇ πόλει ἀρχὰς, οὔθ' ὅτι πλούσιός ἐστί τις, δώσομεν, οὔθ' ὅτι τῶν τοιούτων ἄλλο οὐδὲν κεκτημένος, ἰσχὺν, ἢ μέγεθος, ἤ τι γένος· ὃς δ' ἂν τοῖς τεθεῖσι νόμοις εὐπειθέστατος ᾖ, καὶ νικᾷ [c] ταύτην τὴν νίκην ἐν τῇ πόλει, τούτῳ φαμὲν καὶ τὴν τῶν θεῶν ὑπηρεσίαν δοτέον εἶναι, τὴν μεγίστην τῷ πρώτῳ, καὶ δευτέραν τῷ τὰ δεύτερα κρατοῦντι, καὶ κατὰ λόγον οὕτω τοῖς ἐφεξῆς τὰ μετὰ ταῦθ' ἕκαστα ἀποδοτέον εἶναι. Τοὺς δ' ἄρχοντας λεγομένους νῦν ὑπηρέτας τοῖς νόμοις [d] ἐκάλεσα, οὔ τι καινοτομίας ὀνομάτων ἕνεκα, ἀλλ' ἡγοῦμαι παντὸς μᾶλλον εἶναι παρὰ τοῦτο σωτηρίαν τε πόλει, καὶ τού-

[e] ἕπεσθαι] ἀπέχεσθαι B.
[f] κελεύον] ἐκέλευον A. Trinc.
[g] καί τοι] καί τοιγε A.
[h] ἔγωγε φαίην] φαίην ἔγωγε A.
[i] ἐχόντων] ἑκόντων Gesn. marg.
[k] εἶναι φάμεν om. A. Trinc.

47.
[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 715. B.
[b] Λέγεται usque ad ὀνομάτων ἕνεκα om. A.
[c] ταύτην] πάντων B.
[d] ἐκάλεσα] ἐκαλέσαμεν Trinc.

ναντίον. Ἐν [c] ᾗ μὲν γὰρ ἂν ἀρχόμενος ᾖ καὶ ἄκυρος νόμος, φθορὰν ὁρῶ τῇ τοιαύτῃ ἑτοίμην οὖσαν· ἐν ᾗ δὲ ἂν [f] δεσπότης τῶν ἀρχόντων, οἱ δὲ ἄρχοντες δοῦλοι τοῦ νόμου, σωτηρίαν καὶ πάντα [g] ἀγαθὰ, ὅσα οἱ θεοὶ πόλεσιν ἔδοσαν, γιγνόμενα καθορῶ. Ναὶ μὰ Δία, ὦ ξένε· καθ' ἡλικίαν γὰρ ὀξὺ βλέπεις· νέος μὲν γὰρ [h] ὢν πᾶς ἄνθρωπος τὰ τοιαῦτα ἀμβλύτατα αὐτὸς αὑτοῦ ὁρᾷ· ὁ γέρων δὲ, ὀξύτατα. Ἀληθέστατα.

48 [a] Ἐν ταυτῷ.

Φέρε δὴ, πρὸς θεῶν, τίνα [b] [ἄρα] πρῶτον νόμον θεῖτ' ἂν [c] ὁ νομοθέτης; ἆρ' οὐ κατὰ φύσιν, τὴν περὶ γενέσεως ἀρχὴν πρώτην πόλεων πέρι κατακοσμήσει ταῖς τάξεσι; Τί μήν; Ἀρχὴ δ' ἐστὶ τῶν γενέσεων πάσαις [d] πόλεσιν ἆρ' οὐχ ἡ τῶν γάμων σύμμιξις καὶ [e] κοινωνία; Πῶς γὰρ οὔ; Γαμικοὶ [f] δὲ νόμοι πρῶτοι κινδυνεύουσι τιθέμενοι καλῶς ἂν τίθεσθαι πρὸς ὀρθότητα πάσῃ πόλει. Παντάπασι μὲν οὖν. Λέγωμεν δὴ πρῶτον τὸν ἁπλοῦν, ἔχοι δ' ἄν πως ἴσως ὧδε· γαμεῖν δὲ, ἐπειδ' ἂν ἐτῶν ᾖ τις τριάκοντα μέχρι τῶν πέντε καὶ τριάκοντα, εἰ δὲ μὴ, ζημιοῦσθαι χρήμασί τε καὶ ἀτιμίᾳ· χρήμασι μὲν τόσοις καὶ τόσοις, [g] τῇδε καὶ τῇδε ἀτιμίᾳ. Ὁ μὲν [h] ἁπλοῦς ἔστω τις τοιοῦτος περὶ [i] γάμων, ὁ διπλοῦς δὲ, ὧδε. Γαμεῖν δὲ, ἐπεὶ ἐτῶν ᾖ τις τριάκοντα, [k] διανοηθέντα, ὡς ἔστιν ᾗ τὸ ἀνθρώπινον [l] γένος φύσει τινὶ [m] μετείληφεν

[c] ᾗ μὲν] ἡμῖν A. et mox om. ἂν. ἡμῖν Trinc.
[f] δεσπότης] δεσπότης ὢν A. Trinc.
[g] ἀγαθὰ in A. legitur post ἔδοσαν.
[h] ὢν] ὁρῶν A.

48.
[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 720.
[b] ἄρα] om. A. Trinc.
[c] ὁ νομοθέτης] deest articulus Tr.
[d] πόλεσιν] ταῖς πόλεσιν A.
[e] κοινωνία] ἡ κοινωνία A.
[f] νόμοι om. B. δὴ νόμοι Trinc.
[g] τῇδε] τῇ Gesn. marg.
[h] ἁπλῶς] ἁπλοῦς A.
[i] γάμων] τῶν γάμων A. ὁ μὲν ἁ.— διπλοῦς δὲ om. B.
[k] διανοηθέντα] μέχρι τῶν πέντε καὶ τριάκοντα A. Trinc.
[l] γένος] γε B.
[m] μετείληφεν] μετείληχεν B. μετείληκεν Trinc. absque ἀθανασίας.

ἀθανασίας, οὗ καὶ πέφυκεν ἐπιθυμίαν [n] ἴσχειν πᾶς πᾶσαν· τὸ γὰρ γενέσθαι κλεινὸν, καὶ [o] μὴ ἀνώνυμον κεῖσθαι τετελευτηκότα, [p] τοῦ τοιούτου ἐστὶν ἐπιθυμία. Γένος οὖν ἐστιν ἀνθρώπων τι ξυμφυὲς τοῦ παντὸς χρόνου, ὃ διὰ τέλους αὐτῷ ξυνέπεται, καὶ συνέψεται τούτῳ τῷ τρόπῳ ἀθάνατον ὂν, τῷ παῖδας παίδων [q] καταλειπόμενον, ταὐτὸν καὶ ἓν ὂν ἀεὶ γενέσει τῆς ἀθανασίας μετειληφέναι· τούτου δὴ ἀποστερεῖν ἑκόντα ἑαυτὸν οὐδέποτε ὅσιον· ἐκ προνοίας δὲ ἀποστερεῖ, ὃς ἂν παίδων καὶ γυναικὸς ἀμελῇ. Πειθόμενος μὲν οὖν τῷ νόμῳ ἀζήμιος ἀπαλλάττοιτο ἄν· μὴ πειθόμενος δὲ αὖ, μήτε γαμῶν ἔτη τριάκοντα γεγονὼς καὶ πέντε, ζημιούσθω μὲν κατ' ἐνιαυτὸν, τόσῳ καὶ τόσῳ, ἵνα μὴ δοκῇ τὴν μοναυλίαν [r] οἱ κέρδος καὶ [s] ῥᾳστώνην φέρειν· [t] μὴ μετέχοι δὲ τιμῶν, ὧν ἂν οἱ νεώτεροι ἐν τῇ πόλει τοὺς πρεσβυτέρους αὐτῶν τιμῶσιν 297
ἑκάστοτε.

49 [a] Νόμων ε̄.

[b] Καθάπερ οὖν δή τινα [c] ξυνυφὴν, ἢ καὶ πλέγμα ἄλλ' ὁτιοῦν, οὐκ ἐκ τῶν αὐτῶν οἷόν τέ ἐστι τήν τε ἐφυφὴν καὶ τὸν στήμονα ἀπεργάζεσθαι, διαφέρειν δὲ ἀναγκαῖον τὸ τῶν [d] στημόνων πρὸς ἀρετὴν γένος· ἰσχυρόν τε γὰρ καί τινα βεβαιότητα ἐν τοῖς τρόποις εἰληφὸς, τὸ δὲ μαλακώτερον καὶ ἐπιεικείᾳ τινὶ δικαίᾳ χρώμενον· ὅθεν δὴ τοὺς [e] τὰς μεγάλας ἀρχὰς ἐν ταῖς πόλεσιν ἄρξοντας δεῖ διακρίνεσθαί τινα τρόπον ταύτῃ, καὶ τοὺς σμικρᾷ παιδείᾳ βασανισθέντας ἑκά-

[n] ἴσχειν] ἔχειν B.
[o] μὴ om. A. Trinc.
[p] τοῦ τοιούτου] τοιοῦτον A. τοιούτου Trinc. ὧν τὸν A.
[q] καταλειπόμενον] καταλιπόμενον A.
[r] οἷον] οἱ A. Gesn. marg.
[s] ῥᾳθυμίαν] ῥαστώνην A. Gesn. marg.
[t] μὴ μετέχοι] μετέχω A.

49.
[a] Sic Trinc. Scil. p. 734.
[b] Καθάπερ usque ad προσαγώμεθα om. A.
[c] ξυμφυὴν] ξυνυφὴν N. Trinc. sine ἤ.
[d] στημονίων] στημόνων Gesn. marg.
[e] τὰς μεγάλας] τὰς om. N. Trinc.

στοτε, καὶ κατὰ λόγον. Ἔστον γὰρ δὴ δύο πολιτείας εἴδη, τὸ μὲν ἀρχῶν καταστάσεις ἑκάστοις, τὸ δὲ νόμοι ταῖς ἀρχαῖς ἀποδοθέντες. Τὸ δὲ πρὸ τούτων ἁπάντων δεῖ διανοεῖσθαι τὰ τοιάδε· πᾶσαν ἀγέλην ποιμὴν καὶ βουκόλος, τροφεύς τε ἵππων, καὶ ὅσα ἄλλα παραλαβὼν τοιαῦτα, οὐκ ἄλλως μή ποτε [f] ἐπιχειρήσῃ θεραπεύειν, ἢ πρῶτον μὲν τὸν ἑκάστῃ προσήκοντα καθαρμὸν καθάρῃ τῇ ξυνοικήσει· διαλέξας δὲ τά τε ὑγιῆ καὶ τὰ μή, [g] καὶ τὰ γενναῖα καὶ ἀγεννῆ, τὰ μὲν ἀποπέμψει πρὸς ἄλλας τινὰς ἀγέλας, τὰ δὲ θεραπεύσει, διανοούμενος ὡς μάταιος ἂν ὁ πόνος εἴη καὶ ἀνήνυτος περί τε σῶμα καὶ ψυχάς, ἃς φύσις καὶ πονηρὰ τροφὴ διεφθαρκυῖα προσαπόλλυσι τὸ τῶν [h] ὑγιῶν καὶ ἀκηράτων [i] ἠθῶν τε καὶ σωμάτων γένος ἐν ἑκάστοις [k] τῶν κτημάτων, ἄν τις τὰ ὑπάρχοντα μὴ [l] διακαθαίρηται. Τὰ μὲν δὴ τῶν ἄλλων [m] ζώων ἐλάττω τε σπουδῇ, καὶ παραδείγματος ἕνεκα μόνον ἄξια παραθέσθαι τῷ λόγῳ· τὰ δὲ τῶν ἀνθρώπων σπουδῆς [n] τῆς μεγίστης τῷ γε νομοθέτῃ διερευνᾶσθαι καὶ φράζειν τὸ προσῆκον ἑκάστοις καθαρμοῦ τε πέρι καὶ ξυμπασῶν τῶν ἄλλων πράξεων. Αὐτίκα γὰρ τὸ περὶ [o] καθαρμοὺς πόλεως ὧδ' [p] ἔχον ἂν εἴη· πολλῶν οὐσῶν τῶν διακαθάρσεων, αἱ μὲν [q] ῥᾴους εἰσὶν, αἱ δὲ χαλεπώτεραι, καὶ τὰς μὲν τύραννος μὲν ὢν καὶ νομοθέτης ὁ αὐτὸς, ὅσαι [r] χαλεπαί τέ εἰσι καὶ ἄρισται, δύναιτ' ἂν καθῆραι· νομοθέτης δὲ ἄνευ τυραννίδος καθιστὰς πολιτείαν καινὴν καὶ νόμους, εἰ καὶ τὸν πρᾳότατον τῶν [s] καθαρμῶν καθήρειεν, [t] ἀγαπώντως ἂν καὶ τὸ

[f] ἐπιχειρήσεις] ἐπιχειρήσῃ Trinc.
[g] καὶ τὰ γενναῖα καὶ ἀγεννῆ] καὶ τὰ ἀγεννῆ N. Trinc.
[h] ὑγιῶν] ὑγιεινῶν B.
[i] ἠθῶν] ἐθῶν B.
[k] τῶν κτημάτων] om. N. Trinc.
[l] διακαθαίρηται] διακαθήρηται Tr.
[m] ζώων om. B. N. Mox ἐλάττω τε σπουδῇ Trinc. ἐλάττων τε σπουδῇ Gesner.
[n] τῆς μεγίστης τῷ τε] μεγίστης τῷ γε Trinc.
[o] καθαρμοὺς] καθαρμοῦ Trinc.
[p] ἔχων] ἔχον Trinc.
[q] ῥάους] ῥαδίους N. ῥαδίως B.
[r] χαλεπαί τε] χαλεπαὶ Trinc.
[s] καθερμῶν] καθαρμῶν B. καθορμῶν Trinc.
[t] ἀγαπώντως] ἀγαπητὸς Gesn. marg.

τοιοῦτον δράσειεν. Ἔστι δ' ὁ μὲν ἄριστος, ἀλγεινὸς, καθάπερ ὅσα τῶν φαρμάκων τοιουτότροπα, ὁ τῇ δίκῃ μετὰ τιμωρίας εἰς τὸ κολάζειν ἄγων, θάνατον ἢ φυγὴν τῇ τιμωρίᾳ τὸ τέλος ἐπιτιθείς· τοὺς γὰρ μέγιστα ἐξημαρτηκότας, ἀνιάτους δὲ ὄντας, μεγίστην [u] δὲ βλάβην οὖσαν, πόλεως ἀπαλλάττειν εἴωθεν. Ὁ δὲ πρᾳότερός ἐστι τῶν καθαρμῶν ὁ τοιόσδε ἡμῖν· ὅσοι διὰ τὴν τῆς τροφῆς ἀπορίαν τοῖς ἡγεμόσιν ἐπὶ τὰ τῶν ἐχόντων μὴ ἔχοντες ἑτοίμους αὑτοὺς ἐνδείκνυνται παρεσκευακότες ἕπεσθαι, τούτοις ὡς νοσήματι πόλεως ἐμπεφυκότι δι' [w] εὐφημίας ἀπαλλαγὴν ὄνομα ἀποικίαν τιθέμενος, εὐμενῶς ὅτι μάλιστα ἐξεπέμψατο. [x] Παντὶ μὲν οὖν νομοθετοῦντι τοῦτο ἀμωσγέπως κατ' ἀρχὰς δραστέον· ἡμῖν μὴν ἔτι τούτων ἀτοπώτερα τὰ περὶ ταῦτ' [y] ἐστι ξυμβεβηκότα νῦν. Οὔτε γὰρ ἀποικίαν, οὔτ' ἐκλογήν τινα καθάρσεως δεῖ μηχανᾶσθαι πρὸς τὸ παρόν· οἷον δέ τινων ξυρρεόν- 298
των ἐκ πολλῶν, τὰ μὲν πηγῶν, τὰ δὲ χειμάρρων, εἰς μίαν λίμνην, ἀναγκαῖον προσέχοντας τὸν νοῦν φυλάττειν ὅπως ὅτι καθαρώτατον [y] ἔσται τὸ ξυρρέον ὕδωρ, [z] τὰ μὲν ἐξαντλοῦντας, τὰ δὲ ἀποχετεύοντας, καὶ παρατρέποντας· πόνος δ', ὡς ἔοικε, καὶ κίνδυνός ἐστιν ἐν πάσῃ πολιτικῇ κατασκευῇ. [a] Τὰ δ' ἐπειδήπερ λόγῳ γε ἐστὶ τὰ νῦν ἀλλ' οὐκ ἔργῳ πραττόμενα, πεπεράνθω τε ἡμῖν ἡ ξυλλογὴ, καὶ κατὰ νοῦν ἡ καθαρότης αὐτῆς ἔστω ξυμβεβηκυῖα. Τοὺς γὰρ κακοὺς τῶν ἐπιχειρούντων εἰς τὴν νῦν πόλιν ὡς πολιτευσομένους ξυνιέναι πειθοῖ πάσῃ καὶ ἱκανῷ χρόνῳ διαβασανίσαντες διακωλύσωμεν [b] ἀφικνεῖσθαι, τοὺς δ' ἀγαθοὺς εἰς δύναμιν εὐμενεῖς ἵλεώ τε προσαγώμεθα.

[u] δὲ βλάβην] δὲ om. Trinc.
[w] εὐφημίαν] εὐφημίας B. ἐφημίας Trinc. et mox ἀπαλλαγήν. Gesner. ἀπαλλαγῆς.
[x] παντὶ] ταύτι B. N.
[y] ἔσται] ἐστι Trinc.
[z] καὶ τὰ] καὶ om. N. Trinc.
[a] ἀλλ'] τὰ δ' N. Tr. mox Tr. τε.
[b] ἀφικνεῖσθαι] καὶ ἀφ. B.

50. [a]Τοῦ αὐτοῦ Νόμων ε̄.

Μηδὲ ἐξεῖναι χρυσὸν, μηδὲ ἄργυρον κεκτῆσθαι μηδένα μηδενὶ ἰδιώτῃ· νόμισμα δὲ ἕνεκα ἀλλαγῆς τῆς καθ' ἡμέραν, ἣν δημιουργοῖς τε ἀλλάττεσθαι σχεδὸν ἀναγκαῖον, καὶ πᾶσιν ὁπόσων χρεία τῶν τοιούτων, μισθοὺς μισθωτοῖς δούλοις καὶ ἐποίκοις [b]ἀποτίνειν· ὧν ἕνεκα φαμὲν τὸ νόμισμα κτητέον αὐτοῖς.

51. [a] Ἰδιώτῃ δὲ ἂν ἄρα ποτὲ ἀνάγκη τις γίγνηται [b]ἀποδημεῖν, [c]παρέμενος [d]μὲν τοὺς ἄρχοντας, ἀποδημείτω· νόμισμα δὲ ἄν [e]ποθεν ἔχων ξενικὸν οἴκαδε ἀφίκηται [f]περιγενόμενον, τῇ πόλει [g]αὐτὸ καταβαλλέτω, πρὸς λόγον ἀπολαμβάνων τὸ ἐπιχώριον. Ἰδιούμενος δὲ ἐάν [h]τις φαίνηται, δημόσιόν τε γιγνέσθω, καὶ ὁ ξυνειδὼς καὶ μὴ [i]φράζων ἀρᾷ καὶ ὀνείδει μετὰ τοῦ ἀγαγόντος ἔνοχος ἔστω, καὶ ζημίᾳ πρὸς τούτοις μὴ [k]ἐλάττονι τοῦ ξενικοῦ κομισθέντος νομίσματος. Γαμοῦντα δὲ καὶ [l]ἐκδιδόντα, μήτ' οὖν διδόναι μήτε δέχεσθαι προῖκα τὸ παράπαν μηδ' [m]ἡντινοῦν, μηδὲ νόμισμα παρακατατίθεσθαι, ὅτῳ μή τις πιστεύει· μηδὲ δανείζειν ἐπὶ [n]τόκῳ, ὡς ἐξὸν μὴ ἀποδιδόναι τὸ παράπαν τῷ δανεισαμένῳ μήτε τόκον, μήτε τὸ [o]κεφάλαιον.

52. [a]Τοῦ αὐτοῦ Νόμων ϛ̄.

Δοῦλοι γὰρ ἂν καὶ δεσπόται οὐκ ἄν ποτε γένοιντο φίλοι,

50.

[a] Sic A. ἐν ταυτῷ Trinc. Scil. p. 742.

[b] ἀποτίνειν] ἀποτείνειν B.

51.

[a] Cohærent hæc cum præcedentibus Trinc.

[b] ἀποδημεῖν] τοῦ ἀποδ. A.

[c] παραιτησάμενος] παρέμενος A. Trinc.

[d] μὲν] μὲν οὖν A.

[e] ποθεν] ποτε Gesn. marg.

[f] περιγενόμενον] περιγινόμενον A.

[g] αὐτὸ] αὐτῷ A.

[h] τις] τι Gesn. marg.

[i] φράζων ἀρᾷ καὶ] φωράζων τῇ ἀρᾷ καὶ τῷ A.

[k] ἐλάττονι] ἐλάττων A. ἔλαττον Tr.

[l] ἐκδιδόντα] ἐνδιδόντα B.

[m] ἡντινοῦν] ὀντινοῦν A.

[n] τόκῳ] τόγε Trinc.

[o] κεφάλαιον om. B.

52.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 757.

οὐδ' ἐν ἴσαις τιμαῖς [b]διαγόμενοι φαῦλοι καὶ σπουδαῖοι· τοῖς γὰρ [c]ἀνίσοις τὰ ἴσα ἄνισα γίγνοιτ' ἂν, εἰ μὴ [d]τυγχάνοι τοῦ μέτρου· διὰ γὰρ ἀμφότερα ταῦτα [e]στάσεων αἱ πολιτεῖαι πληροῦνται. Παλαιὸς γὰρ [f]ὁ λόγος, ἀληθὴς ὢν, ὡς ἰσότης φιλότητα ἀπεργάζεται, μάλα μὲν ὀρθῶς εἴρηται καὶ ἐμμελῶς· [g]ἥτις δ' ἐστί ποτε ἰσότης, [h]ἡ τοῦτο αὐτὸ δυναμένη, διὰ τὸ μὴ σφόδρα σαφὴς εἶναι, σφόδρα ἡμᾶς διαταράττει· δυοῖν γὰρ ἰσοτήτοιν οὔσαιν ὁμωνύμοιν μὲν, ἔργῳ δὲ [i][εἰς] πολλὰ σχεδὸν ἐναντίαιν, τὴν μὲν ἑτέραν εἰς τὰς τιμὰς πᾶσα πόλις ἱκανὴ παραγαγεῖν, καὶ πᾶς [k]νομοθέτης, τὴν [l]μέτρῳ ἴσην καὶ σταθμῷ καὶ ἀριθμῷ, [m]κλήρῳ ἀπευθύνων εἰς τὰς διανομὰς αὐτήν· τὴν δὲ ἀληθεστάτην καὶ ἀρίστην ἰσότητα οὐκέτι ῥᾴδιον παντὶ ἰδεῖν· Διὸς γὰρ δὴ κρίσις ἐστὶ, καὶ τοῖς ἀνθρώποις ἀεὶ [n]σμικρὰ μὲν ἐπαρκεῖ· [o]πᾶν δὲ ὅσον ἂν [p]ἐπαρκέσῃ πόλεσιν, ἢ καὶ ἰδιώταις, πάντα ἀγαθὰ ἀπεργάζεται, τῷ μὲν γὰρ μείζονι [q]πλείω, τῷ δὲ ἐλάττονι σμικρότερα νέμει, μέτρια διδοῦσα πρὸς τὴν αὐτῶν φύσιν ἑκατέρῳ· καὶ δὴ καὶ [r]τιμὰς μείζοσι μὲν πρὸς ἀρετὴν ἀεὶ μείζους, 299
τοῖς δὲ τοὐναντίον ἔχουσιν ἀρετῆς τε καὶ παιδείας, τὸ πρέπον ἑκατέροις ἀπονέμει κατὰ λόγον. Ἔστι γὰρ δήπου καὶ τὸ πολιτικὸν ἡμῖν ἀεὶ τοῦτ' αὐτὸ τὸ δίκαιον, οὗ καὶ νῦν ἡμᾶς ὀρεγομένους δεῖ, καὶ πρὸς ταύτην ἰσότητα, ὦ Κλεινία, ἀποβλέποντας, τὴν νῦν φυομένην κατοικίζειν πόλιν, ἄλλην [s]τε ἄν ποτέ τις οἰκίζῃ πρὸς ταυτὸ τοῦτο σκοπούμενον χρεὼν νομοθετεῖν, ἀλλ' οὐ πρὸς ὀλίγους τυράννους, ἢ πρὸς ἕνα, ἢ

[b] διαγορευόμενοι] διαγόμενοι A. Tr.
[c] ἀνίσοις] ἴσοις A. Trinc.
[d] τυγχάνῃ] τυγχάνοι A.
[e] στάσεων] θᾶσσον Trinc.
[f] λόγος] ὁ λόγος A. Trinc. Mox ὑπεργάζεται Trinc.
[g] ἥ τις δ'] δ' om. A. Trinc.
[h] ἡ—δυναμένη] τῆς—δυναμένης A.
[i] εἰς om. A. Trinc.
[k] νομοθέτης] ὁ νομοθέτης A.
[l] μέτρῳ] τῷ μέτρῳ A. et mox τῷ σταθμῷ.
[m] κλήρῳ] πλήρῳ B. καὶ κλήρῳ A.
[n] σμικρὰ] μὲν σμικρὰ A.
[o] πᾶν δὲ ὅσον ἂν] πᾶσαν δὲ ὅσον A. ἂν om. Trinc.
[p] ἐπαρκέσει] ἐπαρέσκει B.
[q] πλείω] πλείονα A.
[r] τιμὰς] ἐν τιμαῖς A. τιμαῖς Tr.
[s] δὲ Trinc.

καὶ κράτος δήμου τι, πρὸς δὲ τὸ δίκαιον ἀεί· τοῦτο δ' ἐστὶ, τὸ νῦν δὴ λεχθὲν, τὸ κατὰ φύσιν ἴσον ἀνίσοις ἑκάστοτε δοθέν. Ἀναγκαῖόν γε μὴν καὶ τούτοις παρωνυμίοισί ποτε προσχρήσασθαι πόλιν ἅπασαν, εἰ μέλλει στάσεων ἑαυτῇ μὴ προσκοινωνήσειν κατά τι μέρος· τὸ γὰρ ἐπιεικὲς καὶ ξύγγνωμον τοῦ τελέου καὶ ἀκριβοῦς παρὰ δίκην τὴν ὀρθὴν [s]ἐστὶ [t]παρατεθραυσμένον, ὅτ' ἂν γίγνηται· διὸ [u]τῷ τοῦ κλήρου ἴσῳ ἀνάγκη προσχρήσασθαι, δυσκολίας τῶν πολλῶν ἕνεκα, θεὸν καὶ ἀγαθὴν τύχην καὶ τότε ἐν εὐχαῖς ἐπικαλουμένους, [w]ἀπορθοῦν αὐτοὺς τὸν κλῆρον πρὸς τὸ δικαιότατον. Οὕτω δὴ χρηστέον ἀναγκαίως μὲν τοῖν [x]ἰσοτήτοιν ἀμφοῖν· ὡς δ' ὅτι μάλιστα ἐπ' ὀλιγίστοις τῇ ἑτέρᾳ τῇ τῆς τύχης δεομένῃ. Ταῦτα οὕτω διὰ ταῦτα, ὦ φίλοι, [y]ἀναγκαῖον τὴν μέλλουσαν σώζεσθαι δρᾶν πόλιν.

53. [a]Ἐν ταυτῷ.

Ἑλέσθαι δὲ δεῖ [b]τρία μὲν ἀρχόντων εἴδη· περὶ μὲν τὸ νῦν δὴ λεχθὲν, ἀστυνόμους ἐπονομάζοντα· τὸ δὲ περὶ ἀγορᾶς κόσμον, ἀγορανόμους· ἱερῶν δὲ, ἱερέας. Οἷς μέν εἰσι πάτριαι [c]ἱερωσύναι, καὶ αἷς, μὴ κινεῖν· [d]εἰ δὲ, οἷον τὸ πρῶτον κατοικιζομένοις εἰκὸς γίγνεσθαι περὶ τὰ τοιαῦτα, ἢ [e]μηδενὶ ἤ τισὶν ὀλίγοις, οἷς μὴ καθεστήκοι καταστατέον ἱερέας τε καὶ ἱερείας, νεωκόρους γίγνεσθαι τοῖς θεοῖς. Τούτων [f]δὴ πάντων τὰ μὲν αἱρετὰ χρὴ, τὰ δὲ κληρωτὰ ἐν ταῖς καταστάσεσι γίγνεσθαι· μιγνύντας πρὸς φιλίαν ἀλλήλοις [g]δῆμον καὶ μὴ δῆμον ἐν ἑκάστῃ χώρᾳ καὶ πόλει, ὅπως ἂν μάλιστα ὁμο-

[s] ἔστι] εἶναι Gesn. marg.
[t] παρατεθραυσμένον] παρατεθραμμένον B.
[u] τὸ] τῷ A. Trinc.
[w] ἀπορθοῦν] οὐκ ὀρθοῦν Gesn. marg.
[x] ἰσοτήτοιν] ἰσοτάτοιν B.
[y] ἀναγκαῖον] ἀναγκαίως Trinc.

53.
[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 759.

[b] τρία μὲν] deest μὲν A.
[c] ἱεροσύναι] ἱερωσύναι Trinc.
[d] εἰ δέοιντο π. κ.] εἰ δὲ οἷον τὸ πρῶτον κατοικιζομέν. Gesn. marg.
[e] μηδενὶ] μηδὲν A. Trinc.
[f] δὴ] δὲ B.
[g] δῆμον] δῆλον B. Mox καὶ μὴ δῆμον om. A. Trinc.

νοῶν [h] εἴη. Τὰ μὲν οὖν τῶν [i] ἱερέων τῷ θεῷ ἐπιτρέποντα αὐτῷ τὸ κεχαρισμένον γίγνεσθαι, κληροῦν οὕτω τῇ θείᾳ τύχῃ ἀποδιδόντα, δοκιμάζειν δὲ τὸν ἀεὶ λαγχάνοντα, πρῶτον μὲν ὁλόκληρον καὶ γνήσιον, ἔπειτα ὡς ὅτι μάλιστα [k] ἐκ καθαρευουσῶν οἰκήσεων, φόνου δὲ [l] ἁγνὸν καὶ πάντων τῶν περὶ τὰ τοιαῦτα εἰς τὰ θεῖα [m] ἁμαρτανομένων αὐτὸν [n] τε καὶ πατέρα καὶ μητέρα κατὰ ταυτὰ βεβιωκότας. Ἐκ Δελφῶν δὲ χρὴ νόμους περὶ τὰ θεῖα [o] πάντα κομισαμένους, καὶ καταστήσαντας ἐπ᾽ αὐτοῖς ἐξηγητὰς, τούτοις χρῆσθαι. Κατ᾽ ἐνιαυτὸν δὲ εἶναι καὶ μὴ μακρότερον τὴν [p] ἱερωσύνην [q] ἑκάστην. Ἔτη δὲ μὴ ἔλαττον ἑξήκοντα ἡμῖν εἴη γεγονὼς, ὁ μέλλων καθ᾽ ἱεροὺς νόμους περὶ τὰ θεῖα [r] ἱκανῶς ἁγιστεύειν. Ταῦτα δὲ καὶ περὶ τῶν [s] ἱερειῶν ἔστω τὰ νόμιμα. Τοὺς δ᾽ ἐξηγητὰς [t] τρεῖς φερέτωσαν μὲν αἱ τέτταρες φυλαὶ, τέτταρας ἕκα- 300
στον ἐξ αὐτῶν· τρεῖς δὲ, οἷς ἂν πλείστη γένηται ψῆφος, δοκιμάσαντας [u] [τοὺς] ἐννέα πέμπειν εἰς Δελφοὺς ἀνελεῖν ἐξ ἑκάστης τριάδος ἕνα, τὴν δὲ δοκιμασίαν αὐτῶν καὶ τοῦ χρόνου τὴν ἡλικίαν εἶναι καθάπερ τῶν ἱερέων.

54 [a] Τούτων δὲ οἱ νομοφύλακες [b] ἐν τούτῳ ἀκριβεῖς ἔστωσαν ἐπίσκοποι, ὅπως ἢ μὴ γίγνηται τὴν ἀρχὴν, ἢ γιγνόμενα τῆς ἀξίας δίκης [c] τυγχάνῃ. Δεῖ δὲ πάντα ἄνδρα διανοεῖσθαι περὶ πάντων ἀνθρώπων, ὡς ὁ μὴ δουλεύσας οὐδ᾽ ἂν δεσπότης γένοιτο ἄξιος ἐπαίνου, καὶ καλλωπίζεσθαι χρὴ τῷ κα-

[h] εἴη] εἶναι B. ὁμονόων εἴηαι Tr.
[i] ἱερέων] ἱερῶν Gesn. marg.
[k] ἐκκαθαρευουσῶν] ἐκκαθαρευσῶν B.
[l] ἁγνὸν] ἁγνῶν A.
[m] ἁμαρτανομένων] ἁμαρτανόντων Gesn. marg.
[n] τε καὶ] τε om. A. Trinc.
[o] πάντα] Alias abest. Gesner.
[p] ἱεροσύνην] ἱερωσύνην A. Trinc.
[q] ἑκάστην] ἑκάστῳ Gesn. marg.
[r] ἱκανῶς ἁγιστεύειν] ἱκανῶν ἀγχιστεύειν A.
[s] ἱερειῶν] ἱερῶν A.
[t] Marsilius Ficinus legit τρὶς τέτταρας, et paullo post ἑκάστῃ. Gesner.
[u] τοὺς ἐννέα] τοὺς om. A. Trinc.

54.

[a] Cohærent hæc cum præcedentibus A. Trinc. Scil. p. 762.
[b] ἐν τούτῳ.] Al. non legitur ἐν τούτῳ. Gesner.
[c] τυγχάνῃ] τύχης τυγχάνει B. τυγχάνει Trinc.

λῶς δουλεῦσαι μᾶλλον ἢ καλῶς [d] ἄρξαι, πρῶτον μὲν τοῖς νόμοις, ὡς ταύτην τοῖς θεοῖς οὖσαν δουλείαν, ἔπειτα [e] τοῖς πρεσβυτέροις τε καὶ ἐντίμως βεβιωκόσι τοὺς νέους.

55 [a] Ἐν ταυτῷ.

Λοιπὸς δὲ ἄρχων περὶ τὰ προειρημένα ἡμῖν, ὁ τῆς παιδείας ἐπιμελητὴς πάσης θηλειῶν τε καὶ ἀρρένων. Εἷς μὲν δὴ καὶ ὁ τούτων ἄρξων [b] ἔστω κατὰ νόμους, ἐτῶν μὲν γεγονὼς μὴ ἔλαττον ἢ πεντήκοντα, παίδων δὲ γνησίων πατὴρ, μάλιστα μὲν υἱέων καὶ θυγατέρων, εἰ δὲ μὴ, θάτερα. Διανοηθήτω δὲ αὐτός τε ὁ [c] προκριθεὶς, καὶ ὁ προκρίνων, ὡς οὖσαν ταύτην τὴν ἀρχὴν τῶν ἐν τῇ πόλει ἀκροτάτων ἀρχῶν πολὺ μεγίστην. Παντὸς γὰρ [d] δὴ φυτοῦ ἡ πρώτη βλάστη καλῶς ὁρμηθεῖσα πρὸς ἀρετὴν τῆς αὐτοῦ φύσεως κυριωτάτη τέλος ἐπιθεῖναι τὸ πρόσφορον, τῶν τε ἄλλων φυτῶν, καὶ τῶν ζώων [e] ἡμέρων τε καὶ ἀγρίων, καὶ ἀνθρώπων· ἄνθρωπος δὲ, ὡς φαμὲν, ἥμερον· ὅμως μὲν παιδείας τῆς ὀρθῆς [f] τυχὼν καὶ φύσεως εὐτυχοῦς, θειότατον ἡμερώτατόν τε ζῶον γίγνεσθαι φιλεῖ· μὴ ἱκανῶς δὲ ἢ μὴ καλῶς τραφὲν, ἀγριώτατον ὁπόσα φύει γῆ. Ὧν ἕνεκα [g] οὐ δεύτερον οὐδὲ πάρεργον δεῖ τὴν παίδων τροφὴν τὸν νομοθέτην ἐᾶν γίγνεσθαι. Πρῶτον δὲ ἄρξασθαι χρεὼν τὸν μέλλοντα [h] αὐτῶν [i] ἐπιμελήσεσθαι καλῶς, αἱρεθῆναι τῶν ἐν τῇ πόλει, ὃς ἂν ἄριστος εἰς πάντα ᾖ, [k] τοῦτον κατὰ δύναμιν ὅτι μάλιστα αὐτοῖς [l] καταστάντα προστάττειν ἐπιμελητήν. Αἱ πᾶσαι τοίνυν ἀρχαὶ [m] πλὴν βουλῆς καὶ πρυτάνεων εἰς τὸ τοῦ Ἀπόλλωνος ἱερὸν ἐλθοῦσαι, φερόντων ψῆφον κρύβδην

[d] ἄρξαι] ἄρχεσθαι B.
[e] τοῖς] ἀεὶ τοῖς A. Trinc.

55.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 765.
[b] ἔστω] ἔσται A.
[c] προκριθεὶς] προκληθεὶς Trinc.
[d] δὴ φυτοῦ] δὴ om. A. Trinc.
[e] ἡμέρων] τῶν ἡμέρων A.
[f] τυχὼν] τυχεῖν A.
[g] οὐ δεύτερον] οὐδέτερον B.
[h] αὐτὸν] αὐτῶν A.
[i] ἐπιμελήσεσθαι] ἐπιμελεῖσθαι Gesn. marg.
[k] τοῦτο] τοῦτον A. Trinc.
[l] καταστάντα προστάτην] ἐπιστάντα προστάττειν A. κ. προστάττειν Trinc.
[m] πλὴν] πρὶν A.

τῶν νομοφυλάκων, ὅντιν' ἂν ἕκαστος ἡγῆται κάλλιστα ἂν τῶν περὶ παιδείαν ἄρξαι [n]γενομένων· ᾧ δ' ἂν πλεῖσται ψῆφοι ξυμβῶσι, [o]δοκιμασθεὶς ὑπὸ τῶν ἄλλων ἀρχόντων τῶν ἑλομένων, πλὴν νομοφυλάκων, ἀρχέτω ἐπὶ πέντε ἔτη· ἕκτῳ δὲ κατὰ ταυτὰ ἄλλον ἐπὶ ταύτην [p]τὴν ἀρχὴν αἱρεῖσθαι.

56 [a]Τοῦ αὐτοῦ Νόμων ζ.

Μετά γε μὴν ταῦτα ὕμνοι θεῶν καὶ ἐγκώμια κεκοινωνημένα εὐχαῖς ᾄδοιντ' ἂν ὀρθότατα· καὶ μετὰ θεοὺς, ὡσαύτως [b]περὶ δαίμονάς τε καὶ ἥρωας μετ' ἐγκωμίων εὐχαὶ [c]γίγνοιτ' ἂν τούτοις πᾶσι πρέπουσαι. [d]Πῶς γὰρ οὔ; Μετά γε μὴν [e]ταῦτ' ἤδη νόμος ἄνευ φθόνων [f]εὐθὺς γίγνοιτ' ἂν ὅδε. Τῶν πολιτῶν ὁπόσοι τέλος ἔχοιεν τοῦ βίου, κατὰ [g]σώματα ἢ κατὰ ψυχὰς [h]ἔργα ἐξειργασμένοι καλὰ καὶ [i]ἐπίπονα, καὶ τοῖς νόμοις εὐπειθεῖς [k]γεγονότες, ἐγκωμίων αὐτοὺς τυγ- 301
χάνειν πρέπον ἂν εἴη. Πῶς δ' οὔ; Τούς γε μὴν ἔτι ζῶντας ἐγκωμίοις τε καὶ ὕμνοις τιμᾶν οὐκ ἀσφαλὲς, πρὶν ἂν [l]πάντα τις τὸν βίον διαδραμὼν τέλος ἐπιστήσηται καλόν· ταῦτα δὲ πάντα ἡμῖν ἔστω κοινὰ ἀνδράσι τε καὶ γυναιξὶν, ἀγαθοῖς καὶ ἀγαθαῖς διαφανῶς [m]γενόμενα.

57 [a]Τοῦ αὐτοῦ Νόμων θ.

Πατρὸς ὀνείδη καὶ τιμωρίας παίδων μηδενὶ ξυνέπεσθαι, πλὴν ἐάν τινι πατὴρ καὶ πάππος καὶ πάππου πατὴρ ἐφεξῆς ὄφλωσι θανάτου δίκην.

[n] γενομένων] γιγνομένων B.
[o] δοκιμασθεὶς ὑπὸ τῶν ἄλλων] ὑπὸ τῶν ἄλλων δοκιμασθεὶς A.
[p] τὴν ἀρχὴν] ἄρχειν A. Trinc.

56.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 801.
[b] περὶ] μετὰ A.
[c] γίγνοιτ'] γένοιντ' A. et mox ἅπασι.
[d] πῶς] εἶπε πῶς A.
[e] ταῦτ' ἤδη νόμος] ταύτην δεῖ νόμους A. ταύτῃ δὴ νόμος Trinc.
[f] εὐθὺς] ἐκτὸς A. N. Trinc.
[g] σώματα—ψυχὰς—] τὰ σώματα—τὰς ψυχάς A.
[h] ἔργα ἐξειργασμένοι] ἐξειργασμένοι ἔργα A.
[i] ἐπίπονα] ἐπίποθα B.
[k] γεγονότες ἐγκώμιον] τε γεγονότες ἐγκωμίων A. ἐγκωμίων Trinc.
[l] πάντα] ἅπαντα Trinc.
[m] γενόμενα] γινομένοις Gesn. marg.

57.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 856. C.

58 [a] Ἐν ταυτῷ.

Δοῦλος δ' ἐάν τις ἐλεύθερον ὀργῇ τρώσῃ, παραδότω τὸν δοῦλον ὁ κεκτημένος τῷ τρωθέντι χρῆσθαι ὅ τι ἂν [b] θέλῃ. Ὃς [c] δ' ἂν ἄκων ἄλλον [d] τρώσῃ, τὸ βλάβος ἁπλοῦν [e] ἀποτινέτω· τύχης γὰρ νομοθέτης οὐδεὶς ἱκανὸς ἄρχειν.

59 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ὧδε οὖν χρὴ περὶ τῶν τοιούτων πάντ' ἄνδρα καὶ παῖδα καὶ γυναῖκα ἀεὶ διανοεῖσθαι, [b] τὸ πρεσβύτερον ὡς οὐ σμικρῷ τοῦ νεωτέρου ἐστὶ πρεσβευόμενον, [c] ἔν τε θεοῖσι καὶ ἐν ἀνθρώποισι τοῖς μέλλουσι σώζεσθαι καὶ εὐδαιμονεῖν. Αἰκίαν οὖν περὶ πρεσβύτερον ἐν πόλει γενομένην ὑπὸ νεωτέρου ἰδεῖν αἰσχρὸν καὶ θεομισές· ἔοικε δὲ νέῳ παντὶ ὑπὸ γέροντος πληγέντι ῥαθύμως ὀργὴν ὑποφέρειν, αὐτῷ τιθεμένῳ τιμὴν ταύτην εἰς γῆρας. Ὧδ' οὖν ἔστω· πᾶς ἡμῖν αἰδείσθω τὸν ἑαυτοῦ πρεσβύτερον ἔργῳ τε καὶ ἔπει· τὸν δὲ προέχοντα εἴκοσιν ἡλικίας ἔτεσιν, ἄρρενα ἢ θῆλυν, νομίζων ὡς πατέρα ἢ μητέρα, διευλαβείσθω, καὶ πάσης τῆς δυνατῆς ἡλικίας [d] αὑτὸν φυτεῦσαι καὶ τεκεῖν ἀπέχοιτ' ἀεὶ, θεῶν γενεθλίων χάριν.

60 [a] Ἐν ταυτῷ.

Νόμοι δὲ, ὡς ἔοικεν, οἱ μὲν τῶν χρηστῶν ἀνθρώπων ἕνεκα γίγνονται, διδαχῆς χάριν, τοῦ τίνα τρόπον ὁμιλοῦντες ἀλλήλοις [b] ἂν φιλοφρόνως οἰκοῖεν· οἱ δὲ τῶν τὴν παιδείαν διαφυγόντων, ἀτεράμονι χρωμένων τινὶ φύσει, καὶ μηδὲν [c] τεγχθέντων, ὥστε μὴ [d] οὐκ ἐπὶ πᾶσαν ἰέναι κάκην. Οὗτοι τοὺς μέλλοντας ῥηθήσεσθαι λόγους πεποιηκότες ἂν εἶεν,

58.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 879. A.
[b] θέλῃ] ἐθέλῃ B.
[c] δ' ἂν] δὲ A.
[d] τρώσῃ] τρώσει A.
[e] ἀποτινέτω] ἀποτιννύτω A. ἀποτισέτω B.

59.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 879.
[b] τὸ πρεσ.] τὸν πρεσ. Trinc.
[c] ἔν τε] οὔτε B.
[d] αὑτὸν] αὐτὸν B.

60.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 880.
[b] ἂν om. A.
[c] ταχθέντων] τεχθέντων A. B.
[d] οὐκ om. A.

[c][οἷς δὴ τοὺς νόμους ἐξ ἀνάγκης ὁ νομοθέτης ἂν νομοθετῇ, βουλόμενος αὐτῶν μηδέποτε χρείαν γίγνεσθαι.] Πατρὸς γὰρ ἢ μητρὸς, ἢ τούτων ἔτι προγόνων, ὅστις τολμήσειεν ἅψασθαί ποτε βιαζόμενος αἰκίᾳ τινι, μήτε τῶν ἄνω θεῶν δείσας μῆνιν, μήτε τῶν [f]ὑπὸ γῆς τιμωριῶν λεγομένων, ἀλλ' ὡς εἰδὼς ἃ μηδαμῶς οἶδε, καταφρονῶν τῶν παλαιῶν καὶ ὑπὸ πάντων εἰρημένων παρανομεῖ, τούτῳ [g]δεῖ τινος ἀποτροπῆς ἐσχάτης. Θάνατος μὲν οὖν οὐκ ἔστιν ἔσχατον· [h]οἱ δ' ἐν ᾅδου τούτοισι λεγόμενοι πόνοι, ἔτι τε τούτων μᾶλλόν εἰσιν ἐν ἐσχάτοις, [i]καὶ ἀληθέστατα λέγοντες, [k]οὐδὲν ἀνύτουσι ταῖς τοιαύταις ψυχαῖς ἀποτροπῆς· [l][οὐ γὰρ ἂν ἐγίγνοντό ποτε μητραλοῖαί τε, καὶ τῶν ἄλλων γεννητόρων ἀνόσιοι πληγῶν τόλμαι.] Δεῖ δὴ τὰς ἐνθάδε κολάσεις περὶ τὰ τοιαῦτα τούτοισι τὰς ἐν τῷ ζῆν μηδὲν τῶν ἐν ᾅδου λείπεσθαι κατὰ δύναμιν.

61 [a]Τοῦ αὐτοῦ Νόμων ια.

Παίδων δὲ ἱκανότης ἀκριβὴς ἄρρην καὶ θήλεια ἔστω τῷ νόμῳ.

ΠΕΡΙ ΤΩΝ ΕΝ ΤΑΙΣ ΠΟΛΕΣΙ ΔΥΝΑΤΩΝ. ΜΕ. 302

1 [a]Εὐριπίδου Θησεῖ Αἰγεῖ.

Ἀνὴρ γὰρ ὅστις χρημάτων μὲν ἐνδεὴς,
[b]δρᾶσαι τε χειρὶ δυνατὸς, οὐκ ἀνέξεται,
τὰ τῶν δ' ἐχόντων χρήμαθ' ἁρπάζειν φιλεῖ.

[c] οἷς δὴ usque ad γίγνεσθαι om. A. Trinc.
[f] ὑπὸ γῆς] ἐπὶ γῆς A.
[g] δεῖ] δὴ A.
[h] οὐδ' A.
[i] καὶ om. A. Trinc.
[k] οὐδὲν ἀνύττουσι] οὐδένα νύττουσι Trinc.
[l] οὐ γὰρ usque ad τόλμαι om. A. Trinc.

61.
[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 930. C.

1.
[a] Sic A. Gesner: *Euripidis in Theseo, alias Ægeo.* Simpl. Εὐριπίδου Trinc. Thesei fr. 9. Musgrav.
[b] δρᾶσαι δὲ] δράσεται A. B. m. p. Trinc. δρᾶσαι τι B. m. s. in v. ult. δ' delet Valckenærius.

2 [a] Εὐριπίδου Πενθεῖ.

[b] Θρασύς τε δυνατὸς καὶ λέγειν οἷός τ' ἀνὴρ
κακὸς πολίτης γίγνεται, νοῦν οὐκ ἔχων.

3 [a] Τοῦ αὐτοῦ Γλαύκῳ.

Ὅτ' ἂν κακός τις ἐν πόλει πράσσῃ καλῶς,
νοσεῖν τίθησι τῶν ἀμεινόνων φρένας
παράδειγμ' ἔχοντας τῶν κακῶν ἐξουσίαν.

4 [a] Ἐν ταυτῷ.

Οἱ τὰς πόλεις ἔχοντες ἀξίωμά τε
τοῖς [b] ἀνθαμίλλοις εἰσὶ πολεμιώτατοι.

5 [a] Εὐριπίδου Ὀρέστῃ.

Ὅτ' ἂν γὰρ ἡδὺς τοῖς λόγοις φρονῶν κακῶς
[b] πείθῃ τὸ πλῆθος, τῇ πόλει κακὸν μέγα·
ὅσοι δὲ σὺν νῷ χρηστὰ [c] βουλεύουσ' ἀεὶ,
κἂν μὴ παραυτίκ', αὖθις εἰσὶ χρήσιμοι.

6 [a] Εὐριπίδου Ἑκάβης.

Τό δ' ἀξίωμα, κἂν κακῶς λέγῃ, τὸ σὸν
πείσει. Λόγος γὰρ ἔκ τ' ἀδοξούντων ἰὼν
[b] κἀκ τῶν δοκούντων αὐτὸς, οὐ ταυτὸν σθένει.

7 [a] [b] Τῶν γὰρ δυναστῶν πλεῖστος ἐν πόλει λόγος.

2.

[a] Sic A. Voss. *Bacchis* Gesn. Grot. v. 270. Deest lemma Trinc.

[b] φρασὺς δὲ] θρασύς τε A. Voss. Trinc.

3.

[a] Sic A. Scil fr. 2. Deest lemma Trinc.

4.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Ex Ione 617.

[b] ἀνταμίλλοις Trinc.

5.

[a] Sic. A. Scil. v. 907.

[b] πείθῃ] πείθει Voss. πίθῃ Trinc.

[c] βουλεύουσ'] βουλεύωσ' A. βουλεύσωσ' B.

6.

[a] Sic A. Scil. v. 293.

[b] κἀκ] καὶ Voss.

7.

[a] Deest lemma Trinc. Tanquam partem præcedentis loci exhibuit Gesnerus. Deest versus A.

[b] τῶν γὰρ δυναστῶν] Sententia est separata ab illo nobili Euripidis loco qui præcessit. GROTIUS.

8 [a] Μενάνδρου.

Δεῖ τὸν πολιτῶν προστατεῖν αἱρούμενον
τὴν τοῦ λόγου μὲν δύναμιν οὐκ ἐπίφθονον,
ἤθει δὲ χρηστῷ συγκεκραμένην ἔχειν.

9 [a] Εὐριπίδου Ἀλκμήνης.

[b] Ἴστω δ' ἄφρων ὤν, ὅστις ἄνθρωπος γεγὼς
δῆμον κολούει χρήμασιν γαυρούμενος.

10 [a] Χρὴ δὲ ξένον μὲν κάρτα προσχωρεῖν πόλει.
οὐδ' ἀστὸν ᾔνεσ', ὅστις αὐθάδης γεγὼς,
πικρὸς πολίταις ἐστὶν ἀμαθίας ὕπο.

11 [a] Σοφοκλέους.

Πολλῶν [b] καλῶν δεῖ τῷ καλῶς τιμωμένῳ·
μικροῦ δ' ἀγῶνος οὐ μέγ' ἔρχεται κλέος.

12 [a] Εὐριπίδου Ἀλκμήνη.

Τὸν εὐτυχοῦντα χρὴ σοφὸν πεφυκέναι.

13 [a] Εὐριπίδου Αἰόλῳ.

Λαμπροὶ δ' ἐν αἰχμαῖς Ἄρεος, ἔν τε συλλόγοις,
μή μοι τὰ κομψὰ [b] ποικίλοι γενοίατο·
ἀλλ' ὧν πόλει δεῖ [c] μεγάλα βουλεύοντες εὖ.

14 [a] Αἰσχύλου.

Κακοὶ γὰρ εὖ πράσσοντες οὐκ ἀνασχετοί.

8.

[a] Sic A. Trinc. inter Philemonis fr. inseruit Clericus p. 316.

9.

[a] Sic A. Scil. fr. 4. Deest locus Trinc.

[b] ἴστω δ'] ἴστω τ' A.

10.

[a] Med. 226. Deest lemma Tr. locus A.

11.

[a] Sic A. Trinc. Fr. inc. 20.

[b] καλῶν] κακῶν Arsen.

12.

[a] Sic A. Scil. Fr. 14. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

13.

[a] Sic A. Scil. Fr. 7. Deest lemma Trinc. Τοῦ αὐτοῦ Αἰόλῳ Voss. ubi præcedit locus Sophoclis.

[b] ποικίλοι] ποικίλα A.

[c] μεγάλα—εὖ] μέγα—ἀεί A. μεγάλα—ἐᾶ Trinc. Hinc forte legendum, μεγάλα βουλεύοιντ' ἀεί.

14.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Fr. 21.

15 [a] Σοφοκλέους.

Ἀμήχανον δὲ παντὸς ἀνδρὸς ἐκμαθεῖν
ψυχήν τε καὶ φρόνημα καὶ γνώμην, πρὶν ἂν
ἀρχαῖς τε καὶ νόμοισιν ἐντριβὴς φανῇ.
ἐμοὶ γὰρ ὅστις πᾶσαν εὐθύνων πόλιν
μὴ τῶν ἀρίστων ἅπτεται βουλευμάτων,
ἀλλ' ἐκ φόβου του γλῶσσαν ἐγκλείσας ἔχει,
κάκιστος εἶναι νῦν τε καὶ πάλαι δοκεῖ.
καὶ μείζον' εἴ τις ἀντὶ τῆς [b] αὐτοῦ πάτρας
φίλον νομίζει, τοῦτον οὐδαμοῦ λέγω.
ἐγὼ γὰρ, ἴστω Ζεὺς ὁ πάνθ' ὁρῶν ἀεὶ,
οὔτ' ἂν σιωπήσαιμι τὴν ἄτην ὁρῶν
στείχουσαν ἀστοῖς ἀντὶ τῆς σωτηρίας.

16 [a] Ξενοφῶντος ἐν τετάρτῳ Ἀπομνημονευμάτων.

Ἀνθρώποις δὲ ἄρα ἔστιν ὃν ἄν τις τρόπον βούληται χρῆσθαι; Οὔκ· ἀλλὰ καὶ περὶ [b] τούτους ὁ εἰδὼς ἅ ἐστι νόμιμα, 303 [c] καθὰ δεῖ πρὸς ἀλλήλους χρῆσθαι, νόμιμος ἂν εἴη. Οὐκ οὖν οἱ κατὰ ταῦτα χρώμενοι ἀλλήλοις ὡς δεῖ χρῶνται; Πῶς γὰρ οὔ; Οὐκ οὖν οἵ γε ὡς δεῖ χρώμενοι, καλῶς χρῶνται; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Οὐκ οὖν οἵ γε τοῖς ἀνθρώποις καλῶς χρώμενοι, καλῶς πράττουσι τἀνθρώπεια πράγματα; Εἰκὸς, ἔφη. Οὐκ οὖν οἱ τοῖς νόμοις πειθόμενοι, δίκαια οὗτοι ποιοῦσι; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Δίκαια δὲ οἶσθα, ἔφη, ὁποῖα καλεῖται; Ἃ οἱ νόμοι κελεύουσιν, ἔφη. Οἱ ἄρα ποιοῦντες ἃ οἱ νόμοι κελεύουσι, δίκαιά τε ποιοῦσι [d] καὶ ἃ δεῖ; Πῶς γὰρ οὔ; Οὐκ οὖν οἵ γε τὰ δίκαια ποιοῦντες,

15.
[a] Sic A. Trinc. Scil. Antig. 175.
[b] αὐτοῦ] ἀπὸ B.

16.
[a] Sic Trinc. Scil. 6, 5. Deest locus A.
[b] τούτοις] τούτους Trinc.
[c] καθὰ] καθὸ B. νόμιμος—χρῶνται om. N. νόμιμος ἂν εἴη om. Tr. οὐκοῦν—χρῶνται om. B. Mox τοὺς ἀνθρώπους Trinc.
[d] καὶ ἃ—δίκαιοί εἰσιν om. B. δίκαιοί εἰσιν om. N.

δίκαιοί εἰσι; Οἶμ' ἔγωγ', ἔφη. Οἴει οὖν τινας πείθεσθαι τοῖς νόμοις, μὴ εἰδότας ἃ οἱ νόμοι κελεύουσιν; Οὐκ ἔγωγ', ἔφη. Εἰδότας [c] δὲ καὶ ἃ δεῖ ποιεῖν, οἴει τινὰς οἴεσθαι δεῖν μὴ ταῦτα ποιεῖν; Οὐκ οἴομαι, ἔφη. Οἶδας δέ τινας ἄλλα [f] ποιεῖν, εἰ οἴονται ποιεῖν ἐθέλοντας δεῖν; Οὐκ ἔγωγε, ἔφη. Οἱ ἄρα τὰ περὶ ἀνθρώπους νόμιμα εἰδότες, οὗτοι τὰ δίκαια [g] ποιοῦσι; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Οὐκ οὖν οἵ γε τὰ δίκαια ποιοῦντες, δίκαιοί εἰσι; Τίνες γὰρ ἄλλοι; ἔφη. Ὀρθῶς ἄν ποτε ἄρα ὁριζοίμεθα, [ὁριζόμενοι] δικαίους εἶναι τοὺς εἰδότας τὰ περὶ ἀνθρώπους νόμιμα; Ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη.

17 [a] Θουκυδίδου ἱστοριῶν ε̄.

Ἐπισταμένους πρὸς εἰδότας, ὅτι δίκαια μὲν ἐν τῷ ἀνθρωπίνῳ λόγῳ ἀπὸ τῆς ἴσης ἀνάγκης κρίνεται· δυνατὰ δὲ οἱ προύχοντες πράσσουσι, καὶ οἱ ἀσθενεῖς ξυγχωροῦσι.

18 [a] Ἀριστοτέλους.

Δεῖ τοὺς νοῦν ἔχοντας τῶν δυναστευόντων μὴ διὰ τὰς ἀρχὰς, ἀλλὰ διὰ [b] τὰς ἀρετὰς θαυμάζεσθαι· ἵνα τῆς τύχης μεταπεσούσης τῶν αὐτῶν ἐγκωμίων ἀξιῶνται.

19 [a] Ἐπικτήτου.

Ὥσπερ [b] οἱ ἐπὶ τῶν λιμένων πυρσοὶ, δι' ὀλίγων φρυγάνων πολλὴν ἀνάψαντες φλόγα, ταῖς ἀλωμέναις ἀνὰ τὸ πέλαγος ναυσὶν ἱκανὴν ἐργάζονται βοήθειαν· οὕτω καὶ ἀνὴρ λαμπρὸς ἐν πόλει χειμαζομένῃ, αὐτὸς ὀλίγοις ἀρκούμενος, μεγάλα [c] τοὺς πολίτας εὐεργετεῖ.

[c] δὲ ἃ] δὲ καὶ ἃ N. Trinc.
[f] ποιεῖν, εἰ οἴονται ποιεῖν] εἰ om. B. ποιοῦντας, ἃ οἴονται δεῖν Gesn. marg.
[g] ποιοῦσι—δίκαια om. B. N. supra ἔφη om. Tr. ὁριζόμενοι om. Tr.

17.
[a] Sic A. Simpl. Θουκυδίδου Tr. Scil. V. 89.

18.
[a] Sic A. Trinc.
[b] τὰς ἀρετὰς] τὰς om. A. m. p.

19.
[a] Sic A. Trinc. Sc. Fr. 78.
[b] οἱ om. B.
[c] τοὺς πολίτας] τοῖς πολίταις A.

20 [a] Ἐκ τοῦ Πλουτάρχου Εἰ πολιτευτέον πρεσβυτέρῳ.

Τῶν μέντοι πολιτικῶν ἀνδρῶν καλὸν ἐντάφιον ἡ πολιτεία [b][τὴν ἀπὸ τοῦ βίου δόξαν τῷ θανάτῳ προστίθησι·] “[c] τοῦτο “ γὰρ ἔσχατον δύεται κατὰ [d] γᾶν,” ὥς φησι Σιμωνίδης, ὁ τῶν καλῶν ζῆλος. Οὐ γὰρ τὸ φιλότιμον κατὰ Θουκυδίδην ἀγήρων μόνον, ἀλλὰ μᾶλλον τὸ κοινωνικὸν, καὶ πολιτικὸν, [e] ὃ καὶ μύρμηξιν ἄχρι τέλους παραμένει, καὶ μελίτταις. Οὐδεὶς [f] δὲ πώποτε κηφῆνα εἶδεν ἐκ μελίττης γιγνόμενον, ὥσπερ ἀξιοῦσι τοὺς πολιτικοὺς, ὅτ᾽ ἂν παρακμάσωσιν, οἴκοι καθημένους σιτεῖσθαι.

21 [a] Ἐκ τῶν κοινῶν Ἀριστοτέλους διατριβῶν.

Αἱ πλεῖσται στάσεις διὰ φιλοτιμίαν [b] ἐν ταῖς πόλεσι γίγνονται· περὶ τιμῆς γὰρ οὐχ οἱ τυχόντες, ἀλλ᾽ οἱ δυνατώτατοι διαμφισβητοῦσι.

22 [a] Δημοσθένους.

Δημοσθένης εἶπε, Πάντων ἐστὶ [b] δυσχερέστατον τὸ πολλοῖς ἀρέσκειν.

23 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Δημοσθένης δυοῖν ἔφησεν [b] οὔσαιν ὁδοῖν, τῆς μὲν ἐπὶ τὸ βῆμα, [c] τῆς δὲ εἰς ᾅδου, μᾶλλον ἂν ἑλέσθαι [d] τὴν εἰς ᾅδου τὸν εὖ φρονοῦντα.

24 [a] Πλάτωνος ἐκ τῆς πρὸς Ἀρχύταν ἐπιστολῆς.

Τὰ δὲ παρὰ σοῦ δίηλθον ἡμῖν, λέγοντες ὑποδυσφορεῖν σε 304

20.

[a] Sic A. Scil. p. 783. D. Simpl. Πλουτάρχου Trinc.
[b] τὴν ἀπὸ — προστίθησι om. A. Trinc.
[c] τοῦτο] τοῦτον Trinc.
[d] γᾶν] γῆν B.
[e] ὃ καὶ] οὗ καὶ A. Trinc.
[f] δὲ] γὰρ A.

21.

[a] Sic A. Trinc.
[b] ἐν ταῖς] ἐν om. Arsen.

22.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] δυσχερέστατον] δυστυχέστερον A. Videatur Wyttenbachius ad Plutarch. p. 6. B. Πολλῶν pro πολλοῖς Trinc.

23.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] οὔσαιν] εἶναι A.
[c] τῆς τε] τῆς δὲ A.
[d] τὴν εἰς ᾅδου] εἰς om. B.

24.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 357. E.

ὅτι οὐ δύνασαι τῆς περὶ τὰ κοινὰ ἀσχολίας ἀπολυθῆναι. Ὅτι μὲν οὖν [b] ἥδιστόν ἐστιν ἐν τῷ βίῳ τὸ τὰ αὑτοῦ πράττειν, ἄλλως τε καὶ εἴ τις [c] ἔχοι τοιαῦτα πράττειν οἷα καὶ σὺ, σχεδὸν παντὶ δῆλον· ἀλλὰ κἀκεῖνο [d] δεῖ σε ἐνθυμεῖσθαι, ὅτι ἕκαστος ἡμῶν οὐχ αὑτῷ μόνον γέγονεν, ἀλλὰ τῆς γενέσεως ἡμῶν τὸ μέν τι ἡ πατρὶς μερίζεται, τὸ δέ τι οἱ γεννήσαντες, τὸ δὲ οἱ λοιποὶ φίλοι· πολλὰ δὲ καὶ τοῖς καιροῖς δίδοται τοῖς τὸν βίον ἡμῶν καταλαμβάνουσι. Καλούσης δὲ τῆς πατρίδος αὐτῆς πρὸς τὰ κοινὰ, ἄτοπον ἴσως τὸ μὴ ὑπακούειν· ἅμα γὰρ συμβαίνει καὶ χώραν καταλιμπάνειν [e] φαύλοις ἀνθρώποις, οἳ [f] οὐκ ἀπὸ τοῦ βελτίστου πρὸς τὰ κοινὰ προσέρχονται.

25 [a] Ζαλεύκου.

Ζάλευκος ὁ τῶν Λοκρῶν νομοθέτης [b] τοὺς νόμους ἔφησε τοῖς ἀραχνίοις ὁμοίους εἶναι· [c] ὥσπερ γὰρ εἰς ἐκεῖνα ἐὰν μὲν ἐμπέσῃ μυῖα ἢ κώνωψ, κατέχεται· ἐὰν δὲ [d] σφὴξ ἢ μέλιττα, [e] διαρρήξασα ἀφίπταται· [f] οὕτω καὶ εἰς τοὺς νόμους ἐὰν μὲν ἐμπέσῃ πένης, συνέχεται· ἐὰν δὲ πλούσιος ἢ δυνατὸς [g] λέγειν, διαρρήξας ἀποτρέχει.

26 [a] Μητροδώρου.

Ἐν πόλει μήτε ὡς λέων [b] ἀνατρέφου, μήτε ὡς κώνωψ· τὸ μὲν γὰρ [c] ἐκπατεῖται, τὸ δὲ καιροφυλακεῖται.

[b] ἥδιστον] ἥδιστον γὰρ Trinc. et mox om. τὸ.
[c] ἕλοιτο] ἔχει A. ἔχοι Trinc.
[d] δεῖ σε] σε om. A. Trinc.
[e] φαύλοις] φαύλων Trinc.
[f] οὐκ] δὲ A.

25.

[a] Sic A. Deest lemma Tr. Alii Soloni, alii Anacharsidi tribuunt. Vid. Diog. Laert. I. 58. et Menag.
[b] τοὺς νόμους] Plato Comicus apud Photium et Suidam v. φάλαγξ: ἐοίκασιν ἡμῖν οἱ νόμοι τούτοισι τοῖσι λεπτοῖς Ἀραχνίοις, ἃ τοῖσι τοίχοις ἡ φάλαγξ ὑφαίνει.
[c] ὥσπερ γὰρ εἰς ἐκεῖνα habet B. m. s. om. Trinc.
[d] σφὴξ] σφὶγξ A. p. m.
[e] διαρρήξασα] διαρρήψασα B. m. p. διαρρήψαται Trinc.
[f] οὕτω usque ad finem om. B. m. p. ἐὰν μὲν ἐμπέσῃ usque ad fin. om. Trinc. ubi ἐπὶ pro εἰς.
[g] λέγειν om. A. B.

26.

[a] Sic A. Trinc.
[b] ἀνατρέφου] ἀναστρέφου Arsen. B. m. s.
[c] ἐκπατεῖται] F. λακπατεῖται ut Soph. VALCKEN.

27 [a] Δημοκρίτου.

Χαλεπὸν ἄρχεσθαι ὑπὸ χείρονος.

28 [a] Ἀντισθένους.

Ἀντισθένης ἐρωτηθεὶς, πῶς ἄν τις προσέλθοι πολιτείᾳ, εἶπε, Καθάπερ πυρὶ, μήτε λίαν ἐγγὺς, ἵνα μὴ καῇς· μήτε πόρρω, ἵνα μὴ ῥιγώσῃς.

29 [a] Χρυσίππου.

Χρύσιππος ἐρωτηθεὶς διὰ τί οὐ πολιτεύεται, εἶπε· Διότι εἰ μὲν πονηρά [b][τις] πολιτεύεται, τοῖς θεοῖς [c]ἀπαρέσει· εἰ δὲ χρηστὰ, τοῖς πολίταις.

30 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Λάχητος.

Ὡς ὅ γε ἔλεγεν [b]ὁ Λυσίμαχος ἄρτι περὶ τοῦ πατρὸς τοῦ αὐτοῦ καὶ τοῦ Μελησίου, πάνυ μοι δοκεῖ εὖ εἰρῆσθαι καὶ εἰς ἐκείνους καὶ εἰς ἡμᾶς καὶ εἰς ἅπαντας, ὅσοι τὰ τῶν πόλεων πράττουσιν, ὅτι αὐτοῖς σχεδόν τι ταυτὰ συμβαίνει, ἃ οὗτος λέγει, καὶ περὶ παῖδας καὶ περὶ τἄλλα [c]τὰ ἴδια ὀλιγωρεῖσθαί τε καὶ ἀμελῶς διατίθεσθαι.

31 [a] Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Γοργίου.

Λέγω τοίνυν σοι, ὅτι δύο ταῦτά ἐστι τὰ ἐρωτήματα, καὶ ἀποκρινοῦμαί γέ σοι πρὸς ἀμφότερα. Φημὶ γὰρ, ὦ Πῶλε, ἐγὼ, καὶ τοὺς ῥήτορας καὶ τοὺς τυράννους δύνασθαι μὲν ἐν ταῖς πόλεσι σμικρότατον, ὥσπερ [b]νῦν δὴ ἔλεγον· οὐδὲν γὰρ ποιεῖν [c]ὧν βούλονται, ὡς ἔπος εἰπεῖν· ποιεῖν μέντοι, ὅ τι ἂν αὐτοῖς δόξῃ [d]βέλτιστον εἶναι. Οὐκ οὖν τοῦτ' ἐστὶν τὸ [e]μέγα

27.

[a] Sic A. Trinc.

28.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

29.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Vide Aristot. Rhet. II. 23, 15.

[b] τις om. A. Voss. Trinc.

[c] ἀπαρέσει] ἀπαρέσκει Voss.

30.

[a] Sic A. Scil. pag. 180. B. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] ὁ om. A. Trinc. Mox παρὰ Trinc.

[c] τὰ ἴδια] τὰ om. B.

31.

[a] Sic Trinc. Πλάτωνος ἐκ τῶν Γοργίου A. Scil. p. 466.

[b] νῦν δὴ om. A. ἔλεγεν Trinc.

[c] ὧν ἂν βούλωνται] ὧν βούλονται A.

[d] βέλτιον] βέλτιστον A. B.

[e] μεγάλα] μέγα A.

δύνασθαι; Οὐχ, ὥς γέ φησιν ὁ [f] Πῶλος. Ἐγὼ οὔ φημι; φημὶ μὲν οὖν ἔγωγε. Μὰ τὸν [g] κύνα οὐ σύ γε, [h] ἐπεὶ τὸ μέγα δύνασθαι ἔφης ἀγαθὸν εἶναι τῷ δυναμένῳ. Φημὶ γὰρ οὖν. Ἀγαθὸν οὖν οἴει εἶναι, ἐάν τις ποιῇ ταῦτα, ἃ ἂν δοκῇ αὐτῷ βέλτιστα εἶναι νοῦν μὴ ἔχων, καὶ τοῦτο καλεῖς σὺ μέγα δύνασθαι; Οὐκ ἔγωγε. Οὐκ οὖν ἀποδείξεις τοὺς ῥήτορας νοῦν ἔχοντας, καὶ τέχνην τὴν ῥητορικὴν, ἀλλὰ μὴ [i] κολακείαν, ἐμὲ ἐξελέγξας; Εἰ δέ με [k] ἐάσεις ἀνέλεγκτον, οἱ ῥήτορες οἱ ποιοῦντες ἐν ταῖς πόλεσιν ἃ δοκεῖ αὐτοῖς, καὶ οἱ τύραννοι, οὐδὲν ἀγαθὸν τοῦτο κεκτήσονται· εἰ 305 δὲ δύναμίς ἐστιν, ὡς σὺ φὴς, ἀγαθὸν, τὸ δὲ ποιεῖν ἄνευ νοῦ ἃ δοκεῖ, καὶ σὺ ὁμολογεῖς κακὸν εἶναι· ἢ οὔ; Ἔγωγε. Πῶς ἂν οὖν οἱ ῥήτορες μέγα δύναιντο ἢ οἱ τύραννοι ἐν ταῖς πόλεσιν, ἐὰν μὴ Σωκράτης ἐξελεγχθῇ ὑπὸ Πώλου, ὅτι ποιοῦσιν ἃ βούλονται; Οὗτος ἀνήρ· οὔ φημι ποιεῖν αὐτοὺς ἃ βούλονται· ἀλλά με [l] ἔλεγχε. Οὐκ ἄρτι ὡμολόγεις ποιεῖν ἃ δοκεῖ αὐτοῖς βέλτιστα εἶναι τούτου πρόσθεν; Καὶ γὰρ νῦν ὁμολογῶ. Οὐκ οὖν ποιοῦσιν ἃ βούλονται; Οὔ φημί. [m] Ποιοῦντες ἃ δοκεῖ αὐτοῖς; Φημί. Σχέτλιά γε λέγεις καὶ ὑπερφυῆ, ὦ Σώκρατες. Μὴ κατηγόρει, ὦ [n] λῷστε Πῶλε, [o] ἵνα προσείπω σε κατὰ σέ· ἀλλ᾽ εἰ μὲν ἔχεις ἐμὲ ἐρωτᾶν, ἐπίδειξον ὅτι ψεύδομαι· εἰ δὲ μὴ, αὐτὸς ἀποκρίνου. Ἀλλ᾽ ἐθέλω [p] ἀποκρίνεσθαι, ἵνα [q] καὶ εἰδῶ ὅ τι λέγεις. Πότερον οὖν σοι δοκοῦσιν οἱ ἄνθρωποι τοῦτο βούλεσθαι, ὃ ἂν πράττωσιν ἑκάστοτε, ἢ ἐκεῖνο, οὗ ἕνεκα πράττουσι τοῦθ᾽ [r] ὃ πράττουσιν; οἷον οἱ τὰ φάρμακα πίνοντες παρὰ

[f] πῶλος] ποσῶλος A.
[g] κύνα] Δί᾽ Gesn. marg.
[h] ἐπεὶ τὸ] ἔπειτα ὃς A.
[i] κολακίαν] κολακείαν A.
[k] ἐάσῃς] ἐάσεις A.
[l] ἔλεγχε] ἔλεγχες Trinc.
[m] ποιοῦσι δὲ] δὲ om. A. B. ἃ βούλονται δοκεῖ B. ποιοῦντες ἃ δ. Tr.
[n] λῷστε] λώϊστε A.
[o] ἵνα] ἵνα μὴ B.
[p] ἀποκρίνεσθαι] ἀποκρίνασθαι A. Trinc.
[q] καὶ om. A.
[r] ὃ] ὅπερ A.

τῶν ἰατρῶν, πότερόν [s] σοι δοκοῦσι [t] τοῦτο βούλεσθαι ὅπερ ποιοῦσι, πίνειν τὸ φάρμακον καὶ ἀλγεῖν, ἢ ἐκεῖνο [v] τὸ ὑγιαίνειν, οὗ ἕνεκα πίνουσι; Δηλονότι τὸ ὑγιαίνειν [οὗ ἕνεκα πίνουσιν.] Οὐκ οὖν καὶ οἱ πλέοντες, καὶ τὸν ἄλλον χρηματισμὸν χρηματιζόμενοι, οὐ τοῦτ᾽ ἐστὶν ὃ βούλονται, ὃ ποιοῦσιν ἑκάστοτε; τίς γὰρ βούλεται πλεῖν, καὶ κινδυνεύειν, καὶ πράγματα ἔχειν; ἀλλ᾽ ἐκεῖνο [w] οἶμαι οὗ ἕνεκα πλέουσι, πλουτεῖν· [x] πλούτου γὰρ ἕνεκα πλέουσι. Πάνυ γε. [y] Ἀλλό τι οὖν οὕτω καὶ περὶ ἁπάντων, ἐάν τις [z] πράττῃ ἕνεκά του, οὐ τοῦτο βούλεται ὃ πράττει, ἀλλ᾽ ἐκεῖνο οὗ ἕνεκα πράττει. Ναί. Ἆρ᾽ οὖν ἔστι τι τῶν ὄντων, [a] ὃ οὐχὶ ἤτοι ἀγαθόν γέ ἐστιν, ἢ κακὸν, ἢ μεταξὺ τούτων, οὔτε ἀγαθὸν, οὔτε κακόν; Πολλὴ ἀνάγκη, ὦ Σώκρατες. Οὐκ οὖν λέγεις ἀγαθὰ μὲν σοφίαν καὶ ὑγείαν, καὶ πλοῦτον, καὶ τἄλλα τὰ τοιαῦτα· κακὰ δὲ τὰ ἐναντία τούτων; Ἔγωγε. Τὰ δὲ μήτε ἀγαθὰ, μήτε κακὰ, ἆρα τοιάδε λέγεις, ἃ ἐνίοτε μὲν μετέχει τοῦ ἀγαθοῦ, ἐνίοτε δὲ [b] τοῦ κακοῦ, ἐνίοτε δὲ οὐδετέρου, οἷον [c] καθῆσθαι, καὶ βαδίζειν, καὶ τρέχειν, καὶ πλεῖν· καὶ οἷον αὖ λίθους, [d] καὶ ξύλα, καὶ τ᾽ ἄλλα τὰ τοιαῦτα; οὐ ταῦτα λέγεις, ἢ ἄλλ᾽ ἅττα καλεῖς τὰ μήτε ἀγαθὰ, μήτε κακά; Οὐκ, ἀλλὰ ταῦτα. Πότερον οὖν τὰ μεταξὺ ταῦτα ἕνεκεν τῶν ἀγαθῶν πράττουσιν, ὅτ᾽ ἂν πράττωσιν, ἢ τἀγαθὰ τῶν μεταξύ; Τὰ μεταξὺ δήπου τῶν ἀγαθῶν. Τὸ ἀγαθὸν ἄρα διώκοντες καὶ βαδίζομεν, ὅτ᾽ ἂν βαδίζωμεν, οἰόμενοι [e] βέλ-

[s] σοι om. A.

[t] τοῦτο βούλεσθαι ὅπερ ποιοῦσι πίνειν τὸ φάρμακον] ὅπερ ποιοῦσιν τοῦτο βούλεσθαι τὸ πίνειν τὰ φάρμακα A.

[v] τὸ ὑγιαίνειν] τοῦ ὑγιαίνειν A. ubi desunt infra, οὗ ἕνεκα πίνουσι. quæ desunt item Trinc. Mox τε καὶ A.

[w] οἶμαι οὗ] οὗ οἶμαι A.

[x] πλούτου] τούτου B.

[y] ἄλλό τι οὖν] ἀλλ᾽ ὅτι οὖν B.

[z] πράττῃ om. B.

[a] ὃ] ἢ A.

[b] κακοῦ] τοῦ κακοῦ A. Trinc.

[c] καθῆσθαι βαδίζειν] βαδίζειν κ. καθῆσθαι B.

[d] καὶ] τε καὶ A.

[e] βέλτιόν] βελτίονες A.

τιον εἶναι· καὶ τὸ ἐναντίον ἕσταμεν, ὅτ᾽ ἂν ἑστῶμεν, τοῦ αὐτοῦ ἕνεκα τοῦ ἀγαθοῦ, ἢ οὔ; Ναί. Οὐκ οὖν καὶ [f] ἀποκτείννυμεν, εἴ τινα [g] ἀποκτείννυμεν, καὶ ἐκβάλλομεν, καὶ ἀφαιρούμεθα [h] χρήματα, οἰόμενοι ἄμεινον εἶναι ἡμῖν ταῦτα ποιεῖν, ἢ μή; Πάνυ γε. Ἕνεκα ἄρα τοῦ ἀγαθοῦ [i] ἅπαντα ταῦτα ποιοῦσιν οἱ ποιοῦντες. Φημί. Οὐκ οὖν [k] ὡμολογήσαμεν, ἃ ἕνεκά του ποιοῦμεν, [l] μὴ 'κεῖνα βούλεσθαι, [m] ἀλλ᾽ ἐκεῖνο οὗ ἕνεκα ταῦτα ποιοῦμεν; Μάλιστα. Οὐκ ἄρα 306
σφάττειν βουλόμεθα, οὐδ᾽ ἐκβάλλειν ἐκ τῶν πόλεων, οὐδὲ χρήματα ἀφαιρεῖσθαι ἁπλῶς οὕτως, ἀλλ᾽ ἐὰν μὲν ὠφέλιμα ᾖ ταῦτα, βουλόμεθα πράττειν [n] αὐτά, βλαβερὰ δ᾽ ὄντα, οὐ βουλόμεθα· τὰ γὰρ ἀγαθὰ βουλόμεθα, ὡς φῂς σύ, τὰ δὲ μήτε κακὰ μήτε ἀγαθὰ οὐ βουλόμεθα, οὐδὲ τὰ κακά· ἦ γὰρ ἀληθῆ σοι δοκῶ λέγειν, ὦ Πῶλε, ἢ οὔ; τί οὐκ ἀποκρίνῃ; Ἀληθῆ. Οὐκ οὖν εἴπερ ταῦτα ὁμολογοῦμεν, εἴ τις [o] ἀποκτείνει τινά, ἢ ἐκβάλλει ἐκ πόλεως, ἢ ἀφαιρεῖται χρήματα, εἴτε τύραννος ὢν εἴτε ῥήτωρ, οἰόμενος ἄμεινον εἶναι αὐτῷ, τυγχάνει δὲ ὂν κάκιον, οὗτος δήπου ποιεῖ, ἃ δοκεῖ αὐτῷ; ἦ γάρ; Ναί. Ἆρ᾽ οὖν καὶ ἃ βούλεται, εἴπερ τυγχάνει [p] ταῦτα κακὰ ὄντα; τί οὐκ ἀποκρίνῃ; Ἀλλ᾽ οὔ μοι δοκεῖ ποιεῖν ἃ βούλεται. Ἔστιν οὖν ὅπως ὁ τοιοῦτος μέγα δύναται ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, εἴπερ ἐστὶ τὸ μέγα δύνασθαι ἀγαθόν τι κατὰ τὴν σὴν ὁμολογίαν; Οὐκ ἔστιν. Ἀληθῆ ἄρα [q] ἐγὼ ἔλεγον, λέγων ὅτι ἔστιν ἄνθρωπον ποιοῦντα ἐν πόλει, ἃ δοκεῖ αὐτῷ, [r] μὴ μέγα δύνασθαι, μηδὲ ποιεῖν ἃ βούλεται. Ὡς [s] δὴ σύ, ὦ Σώκρατες, οὐκ ἂν δέξαιο ἐξεῖ-

[f] ἀποκτείννυμεν] ἀποκτείνοιμεν A.
[g] ἀποκτείννυμεν] καὶ ἀποκτείνομεν A.
[h] χρήματα] κτήματα A.
[i] ἅπαντα ταῦτα] ταῦτα πάντα A.
[k] ὡμολογήσαμεν] ὡμολογήκαμεν B.
[l] μὴ 'κεῖνα usque ad ποιοῦμεν om. B.
[m] ἀλλ᾽ om. B.
[n] αὐτὰ om. Trinc.
[o] ἀποκτείνει] ἀποκτείνῃ A.
[p] ταῦτα κακὰ] ταῦτα om. Trinc.
[q] ἔλεγον] ἐγὼ ἔλεγον A. Trinc.
[r] μὴ—μηδὲ] μήτε—μήτε B.
[s] δὴ] δὲ B.

ναί σοι ποιεῖν ὅ τι δοκεῖ σοι ἐν τῇ πόλει μᾶλλον, ἢ μή· οὐδὲ ζηλοῖς, ὅτ' ἂν ἴδῃς τινα ἢ ἀποκτείναντα, ὃν ἔδοξεν αὐτῷ, ἢ ἀφελόμενον χρήματα, ἢ δήσαντα; Δικαίως λέγεις, ἢ ἀδίκως; Ὁπότερ' ἂν ποιῇ, οὐκ ἀμφοτέρως ζηλωτόν ἐστιν; Εὐφήμει, ὦ Πῶλε. Τί δή; Ὅτι οὐ χρὴ οὔτε τοὺς ἀζηλώτους ζηλοῦν, οὔτε τοὺς ἀθλίους, ἀλλ' ἐλεεῖν. Τί δέ; οὕτω σοι δοκεῖ ἔχειν περὶ ὧν ἐγὼ λέγω τῶν ἀνθρώπων; Πῶς γὰρ οὔ; Ὅστις [t] οὖν ἀποκτείννυσιν, ὃν ἂν δόξῃ αὐτῷ, δικαίως ἀποκτειννὺς, ἄθλιος δοκεῖ σοι εἶναι καὶ ἐλεεινός; Οὐκ ἔμοι γε· [v] οὐδὲ μέντοι ζηλωτός. Οὐκ ἄρτι ἄθλιον ἔφησθα εἶναι; Τὸν ἀδίκως γε, ὦ ἑταῖρε, [w] ἀποκτείναντα, καὶ [x] ἐλεεινόν γε πρός· [y] τὸν δὲ δικαίως, ἀζήλωτον. Ἦ που ὅ γε ἀποθνήσκων ἀδίκως, ἐλεεινός τε καὶ ἄθλιός ἐστιν; Ἧττον ἢ ὁ ἀποκτειννὺς, ὦ Πῶλε, καὶ ἧττον ἢ ὁ δικαίως ἀποθνήσκων. Πῶς [z] δῆτα, ὦ Σώκρατες; Οὕτως ὡς μέγιστον τῶν κακῶν τυγχάνει ὂν τὸ ἀδικεῖν. Ἦ γὰρ τοῦτο μέγιστον; οὐ τὸ ἀδικεῖσθαι μεῖζον; Ἥκιστά γε. Σὺ ἄρα βούλοι' ἂν ἀδικεῖσθαι μᾶλλον, ἢ ἀδικεῖν; Βουλοίμην [a] μὲν ἄν ἔγωγε οὐδέτερα· εἰ δὲ ἀναγκαῖον εἴη ἀδικεῖν ἢ ἀδικεῖσθαι, ἑλοίμην ἂν μᾶλλον ἀδικεῖσθαι ἢ ἀδικεῖν.

ΠΕΡΙ ΑΡΧΗΣ ΚΑΙ ΤΟΥ ΟΠΟΙΟΝ ΧΡΗ ΕΙΝΑΙ ΤΟΝ ΑΡΧΟΝΤΑ. ΜϚ.

1 [a] Εὐριπίδου ἐκ Συλέως.

Τοῖς μὲν δικαίοις, ἔνδικος· τοῖς δ' αὖ κακοῖς,
πάντων μέγιστος πολέμιος κατὰ χθόνα.

[t] οὖν om. A. Trinc.
[v] οὐδὲν] οὐδὲ A. Trinc.
[w] ἀποκτείναντα] ἀποκτείνοντα Tr. et mox τόν γε δ. Cæterum hæc sic leguntur in A. φῆσθα πρὸς τόν γε δικαίως ἀζήλωτον· ἦ ποῦ ὅ γε ἀποθνήσκων πῶς δὴ ὦ σώκρατες εἶναι τὸν ἀδίκως γε ὦ ἑταῖρε ἀποκταίνοντα καὶ ἐλεεινόν γε πρὸς τόν γε δικαίως ἀζήλωτον ἢ που.
[x] ἐλεεινόν γε] γε om. B.
[y] τὸν δὲ] τόν γε B. Trinc.
[z] δῆτα] δὴ A. Tr. Mox οὗτος Tr.
[a] μὲν] om. A.

1.

[a] Sic B. Fr. 1. *Euripidis in*

2 [a] Εὐριπίδου Ἡρακλειδῶν.

Τίς ἂν δίκην κρίνειεν, ἢ δοίη [b] λόγον,
πρὶν ἂν παρ' ἀμφοῖν μῦθον [c] ἐκμάθῃ σαφῶς;

3 [a] Εὐριπίδου.

[b] Ἐγὼ γάρ, ὅστις μὴ δίκαιος ὢν ἀνὴρ 307
βωμὸν [c] προσίζει, τὸν νόμον χαίρειν ἐῶν
πρὸς τὴν δίκην ἄγοιμ' ἂν οὐ τρέσας θεούς.
κακὸν γὰρ ἄνδρα χρὴ κακῶς πάσχειν ἀεί.

4 [a] Εὐριπίδου Ἱκετίδων.

Φίλων δὲ χρυσὸν πολλάκις δωρουμένων,
οὐκ εἰσεδέξατ' οἶκον, οὐδὲ τοὺς τρόπους
δούλους παρέσχε χρημάτων πεισθεὶς ὕπο.
τοὺς δ' ἐξαμαρτάνοντας, οὐχὶ τὴν [b] τύχην,
ἤχθαιρ'. [c] ἐπεί τοι κοὐδὲν αἰτία πέλει
κακῶς ἀκούειν διὰ κυβερνήτην κακόν.

5 [a] Τοῦ αὐτοῦ Ὀρέστῃ.

Ὅτ' ἂν γὰρ ὀργῇ δῆμος εἰς θυμὸν πέσῃ,
ὅμοιον ὥσπερ πῦρ κατασβέσαι λάβρον.
εἰ δ' ἡσύχως τις αὐτὸν ἐντείνοντι μὲν

Syleo Gesner. *Euripides Oileo* Grotius. Sed idem in notis mss. "Fuit Syleo, quod verum. Citat "et Philo." Simpl. Εὐριπίδου A. Trinc.

2.

[a] Sic A. Scil. v. 180. Deest lemma Trinc.

[b] λόγον] δίκην Voss. in marg.

[c] ἐκμάθῃ] ἐκμάθοι Voss.

3.

[a] Sic A. Scil. Fr. inc. 42. Deest lemma Trinc.

[b] Hæc male ad Heraclidas retulit Barnesius. Sunt ex perdito dramate. VALCKEN. Diatr. pag. 227.

[c] προσίζει] προσίζοι Voss.

4.

[a] Sic A. Scil. v. 877. Deest lemma Trinc. Τοῦ αὐτοῦ σκίρωνι Voss. Arsen.

[b] πόλιν] Vulgo male τύχην, et versu sequente æque male ἤχθαιρεν ἐπεὶ κατ' οὐδὲν αἰτία πέλει. GROTIUS.

[c] ἐπεὶ κατ' οὐδὲν] ἐπεί τοι κοὐδὲν A. N. Voss. Arsen. ἐπί τοι κοὐδὲν Trinc.

5.

[a] Sic A. Scil. v. 697. Deest lemma Trinc.

χαλῶν ἕποιτο καιρὸν εὐλαβούμενος,
ἴσως ἂν ἐκπνεύσει· ὅτ' ἂν δ' ἀνῇ πνοάς,
[b] τύχοις ἂν αὐτοῦ ῥᾳδίως, ὅσον θέλεις.

6 [a] Σοφοκλέους Τυροῖ.

Ἄκων δ' ἁμαρτὼν οὔ τις ἀνθρώπων κακός.

7 [a] Μενάνδρου.

[b] Ὁ προκαταγιγνώσκων δὲ πρὶν ἀκοῦσαι σαφῶς,
αὐτὸς πονηρός ἐστι, πιστεύσας κακῶς.

8 [a] Χαιρήμονος.

Σοφῶν γὰρ ἀνδρῶν τὰς ἁμαρτίας καλῶς
κρίνειν, τὸ δ' εἰκῇ [b] καὶ μετὰ σπουδῆς κακόν.

9 [a] Εὐριπίδου ἐξ Αὔγης.

Οὐ τῶν κακούργων οἶκτος, ἀλλὰ τῆς δίκης.

10 [a] Τοῦ αὐτοῦ Σκίρωνι.

Ἔστι τοι καλὸν [b] τοὺς κακοὺς κολάζειν.

11 [a] Μενάνδρου.

Ἡ νῦν [b] ὑπό τινων χρηστότης καλουμένη,
μεθῆκε τὸν ὅλον εἰς [c] † ἀπορίαν βίον·
οὐδεὶς γὰρ ἀδικῶν τυγχάνει τιμωρίας.

[b] τύχοις] τύχοι B.

6.

[a] Sic A. Scil. Fr. 10. Simpl. Σοφοκλέους Trinc.

7.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 222.

[b] ὁ deest Voss.

8.

[a] Sic A. Trinc.

[b] καὶ μετὰ σπουδῆς] Ita MS. A. quod prætuli vulgato κοὐ μετὰ σπουδῆς, quanquam et huic suus constare sensus poterat. Grotius. Cum A. concordat Voss. Sic etiam Trinc.

9.

[a] Sic A. Scil. Fr. 2. Habet hunc versum Trinc. post n. 5. sine lemmate. Utrobique retinent Gesnerus et Grotius. Ego msti ordinem secutus sum.

10.

[a] Sic A. Scil. Fr. 4. Deest locus Trinc.

[b] τοὺς κακοὺς] κακοὺς Grotius.

11.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 222.

[b] ὑπό τινων] Ita nos pro ὑπό τινος. Grotius. Ita sane A. Voss.

[c] ἀπορίαν] Malim πονηρίαν. Gesner. Hoc edidit Grotius, non monito lectore.

12 [a] Πινδάρου.

[b] Ἐπεὶ ῥέζοντά τι καὶ παθεῖν ἔοικε.

13 [a] Σοφοκλέους Ἰνάχῳ.

Ἐπῄνεσ᾽· ἴσθι δ᾽, ὥσπερ ἡ παροιμία,
ἐκ κάρτα βαιῶν [b] γνωτὸς ἂν γένοιτ᾽ ἀνήρ.

14 [a] Μοσχίωνος.

Μόνον σὺ θυμοῦ χωρὶς ἔνδεξαι λόγους,
οὓς σοι κομίζω· τὸν κλύοντα γὰρ λαβὼν
ὁ μῦθος εὔνουν οὐ μάτην λεχθήσεται.

15 [a] Ἀπολλοδώρου.

[b] Δεῖ τὸν ἀκροατὴν, καὶ συνετὸν [c] ὄντως κριτὴν,
πρὸ τοῦ λεγομένου τὸν βίον διασκοπεῖν,
ποῖός τις ὁ λέγων, καὶ πόθεν, καὶ τὴν ἀκμὴν
ἐκ παιδὸς αὐτοῦ [d] πρός τι· κᾆτα θέμενος ὡς
αὑτοῦ προδότης, κακός τε τῆς ὥρας φύλαξ·
μάλισθ᾽ ὁ τοιοῦτος ἀνατρέπει πᾶσαν πόλιν.
οὐδὲν γὰρ αἰσχρόν ἐστιν [e] αὐτὸν ἀποτυχεῖν.
πράττουσι πάντα· τὴν γὰρ αἰσχύνην πάλαι
πᾶσαν ἀπολωλέκασι καθ᾽ ἑτέρας θύρας.
ὅθεν ἐπιχειρεῖ πάντ᾽ ἀπερυθριακότως
ἕκαστος αὐτῶν, πρὸς δὲ πάντ᾽ ἐστὶν θρασύς;

12.

[a] Sic Trinc. Scil. Nem. IV. 51. Deest locus A.

[b] ἐπηρεάζοντα] Reposui e Pindaro ἐπεὶ ῥέζοντα. Librarius solenni errore elementa η ει confudit. Similiter peccatum in Schol. Sophocl. Electr. 1032. ed. Johnson. ubi ἐπεὶ ῥεάζοντα vero proximum habet ed. Rom. Mirum vulgatam Stobæi lectionem non suspectam esse Wassio ad Thucyd. I. 26.

13.

[a] Sic Voss. B. Fr. 1. Simpl. Σοφοκλέους Trinc. Deest locus A.

[b] γνωτὸς] γνωστὸς Grotius.

14.

[a] Sic Trinc. Deest locus A.

15.

[a] Sic A. B. Deest lemma Tr.

[b] δεῖ.] Vide Æschinem adv. Timarchum. Grotius in mss.

[c] ὄντως] ὄντος A.

[d] πρός τι καταθέμενος Αὐτοῦ] πρὸς τι κᾆτα θέμενος ὡς ὡὐτοῦ B. m. sec. πρὸς τὶ ἦν καταθέμενος Grotius. Gesnerus: "Deest ultimus pes, addo "ὁ γάρ."

[e] αὐτὸν] Leg. αὐτοῖς. Gesner.

ψεύδετ', ἐπιορκεῖ, μαρτυρεῖ, δικορραφεῖ,
κλέπτει, τελωνεῖ, ῥᾳδιουργεῖ· τὸ δὲ [f] πέρας,
[g] οὐ πόλιν ὅλην, φυλὴν δὲ [h] μαλακὸς ἀνατρέπει.
[i] ἐπεὶ κατὰ μέρος τὰς πόλεις, ὦ φίλε, θεῶ, 308
ὑπὸ [k] λεπριδίων εἰσὶν γὰρ ἀνατετραμμέναι.
σκόπει· [l] νεῶν δὲ κατάλογον δόξεις μ' [m] ἐρεῖν.

16 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Γοργίου.

Οὐκ οὖν τὸ δίκην διδόναι μεγίστου κακοῦ ἀπαλλαγὴ ἦν, πονηρίας; Ἦν γάρ. Σωφρονίζει γάρ που καὶ δικαιοτέρους ποιεῖ, καὶ ἰατρικὴ γίνεται πονηρίας ἡ δίκη.

17 [a] Λυσίου.

Τὴν αὐτὴν γνώμην ἔχειν δικάζοντας ἄξιον, ἥνπερ νομοθετοῦντας.

[f] πέρας] πέρας αὐτοῦ A. πέρας οὖν B. m. sec.

[g] οὐ πόλιν] Malim εἰ μὴ πόλιν, φυλὴν Gesner.

[h] μαλακῶς] μάλακος A.

[i] ἐπὶ] Tres ultimi versus obscuri sunt. Gesner.

[k] λεπριδίων] λεσπριδίων A. m. p.

[l] νέων δὲ κατάλογον] νέων καταλόγων B.m.p. νεῶν καταλόγον B.m. sec.

[m] ἐρεῖν] αἱρεῖν A. Versus quatuor postremos sic edidit Grotius; φυλὴν ὅλην πόλιν τε μαλακὸς ἀνατρέπει. Ἐπεὶ κατὰ μέρος τὰς πόλεις, ὦ φίλε Θέων, ὑπὸ λαισποδίων ὅσαι εἰσὶν ἀνατετραμμέναι, Σκόπει· νεῶν δὲ κατάλογον δόξεις μ' ἐρεῖν: primum versum scil. et ultimum e sua, medios duos e Salmasii emendatione. Minore cum mutatione scribendum censet Jacobsius ad Athenæum p. 25. Ὅλην πόλιν φύρδην ὁ μαλακὸς ἀνατρέπει. citans Æschyl. Pers. 709. βωμοὶ δ' ἄϊστοι, δαιμόνων θ' ἱδρύματα Πρόρριζα φύρδην ἐξανέστραπται βάθρων. Idem in seqq. Salmasii vestigia sequutus legerit: "ἐπεὶ κατὰ μέρος τὰς πόλεις, ὦ φίλε, θεῶ, Ὑπὸ λαισποδίων γὰρ εἰσὶν ἀνατετραμμέναι· Σκόπει· νεῶν δὲ κατάλογον δόξεις μ' ἐρεῖν. *Nam, o bone, contemplare* (θεῶ a θεάομαι scripsi pro θεῷ) *urbes singulatim: omnes enim a cinædis eversæ sunt. Vide modo. Existimabis me navium* (submersarum aut fractarum) *facere catalogum.* Ingeniose hæc proculdubio: sed verbis νεῶν κατάλογον subesse videtur allusio ad Homeri Il. B. Ita multæ numero sunt, inquit, civitates ab improbis hominibus eversæ, ut si illas narrando prosequar, sermone opus sit Homeri navium catalogo vix breviore. Versum quartum a fine ita refingas propius ad vestigia veteris scripturæ: Οὐ πόλιν ὅλην φύρδην ὁ μαλακὸς ἀνατρέπει; cum interrogatione scilicet. Salmasianas correctiones laudat Brunckius ad Aristoph. Av. 1569.

16.

[a] Sic A. Simpl. Πλάτωνος Tr. p. 478. D.

17.

[a] Sic A. Trinc. Fr. p. 36.

18 [a] Αἰσχίνου.

Χρὴ τὸ αὐτὸ φθέγγεσθαι τὸν ῥήτορα, καὶ τὸν νόμον. Ὅτ' ἂν δὲ ἑτέραν μὲν φωνὴν [b] ἀφίῃ ὁ νόμος, ἑτέραν δὲ ὁ ῥήτωρ, τῷ τοῦ νόμου δικαίῳ διδόναι χρὴ τὴν ψῆφον, μὴ τῇ τοῦ λέγοντος ἀναισχυντίᾳ.

19 [a] Ἀντιφῶντος.

Εἰ δέοι τι ἁμαρτεῖν, τὸ ἀδίκως ἀπολῦσαι ὁσιώτερον [b] τοῦ ἀδίκως ἀπολέσαι. Τὸ μὲν γὰρ ἁμάρτημά ἐστι· τὸ δὲ ἀδίκως ἀποκτεῖναι, ἀσέβημα.

20 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Εὐθύφρονος.

Ἐπεὶ ἐκεῖνό γε δήπου, ὦ θαυμάσιε, οὐδεὶς οὔτε θεῶν οὔτ' ἀνθρώπων τολμᾷ λέγειν, [b] ὡς οὐ τῷ γε ἀδικοῦντι οὐ δοτέον δίκην.

21 [a] Ἐκ τοῦ Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον.

Εἰς ἀρχὴν κατασταθεὶς, μηδενὶ χρῶ πονηρῷ πρὸς τὰς διοικήσεις· ὧν γὰρ ἂν ἐκεῖνος ἁμάρτῃ, σοὶ τὰς αἰτίας ἀναθήσουσιν.

22 [a] Σόλωνος.

Ἄρχε πρῶτον μαθὼν ἄρχεσθαι· ἄρχεσθαι γὰρ μαθὼν, ἄρχειν ἐπιστήσῃ.

23 [a] Βίωνος.

Βίων ἔφη, δεῖν τὸν ἀγαθὸν ἄρχοντα παυόμενον τῆς ἀρχῆς μὴ πλουσιώτερον, ἀλλ' ἐνδοξότερον γεγονέναι.

18.
[a] Sic A. Trinc. Sc. Ctes. p. 404.
[b] ἀφίησιν ὁ νόμος] ἀφίῃ νόμος A.

19.
[a] Sic A. Trinc.
[b] ἢ τὸ ἀδίκως] τοῦ ἀδικῶς A. B. m. rec.

20.
[a] Sic A. Scil. p. 8. D. Deest locus Trinc.
[b] ὡς οὐ τῷ γε ἀδικοῦντι οὐ δ. δ.] ὡς οὔτε γε ἀδικοῦντι δ. δ. A.

21.
[a] Sic A. Simpl. Ἰσοκράτους Tr.

22.
[a] Sic A. Trinc. v. Diogen. Laërt. I. 60.

23.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

24 [a]Ἀγάθωνος.

Ἀγάθων ἔφη, τὸν ἄρχοντα τριῶν δεῖ μεμνῆσθαι· πρῶτον μὲν, ὅτι ἀνθρώπων ἄρχει· δεύτερον, ὅτι κατὰ νόμους ἄρχει· τρίτον, ὅτι οὐκ ἀεὶ ἄρχει.

25 [a]Ἰσαίου.

Ὅσοι τοὺς ἀδικοῦντας κολάζουσιν, οὗτοι τοὺς ἄλλους ἀδικεῖσθαι κωλύουσιν.

26 [a]Πλουτάρχου ἐκ τοῦ Περὶ Ἴσιδος.

Ἐν δὲ Θήβαις εἰκόνες εἰσὶν ἀνακείμεναι δικαστῶν ἄχειρες· ἡ δὲ τοῦ ἀρχιδικαστοῦ [b]καταμύουσα τοῖς ὄμμασιν, ὡς ἄδωρον ἅμα τὴν δικαιοσύνην καὶ ἀνέντευκτον οὖσαν.

27 [a]Θεμιστίου ἐκ τοῦ Μετριοπαθοῦς ἢ Φιλοτέκνου.

Ὅτι μοι δοκεῖ ὁ ἄρχων ἐκεῖνος ἐπαληθεύειν τοὔνομα τῆς ἀρχῆς, ὅστις δυσάλωτος μὲν ὑπὸ χρυσίου, εὐάλωτος δὲ ὑπὸ [b]λόγου, ἐλευθερίας δὲ ἐργάτης, μεγαλοφροσύνην δὲ ἐπαινῶν φυλάττεται ἐγγὺς οὖσαν τὴν αὐθάδειαν.

28 [a]Εὐσεβίου.

Τὸν τοῖς ἄλλοις ἐπιστατεύοντα καὶ ἐπιτάσσοντα χρὴ οὐ τῇ ἐξουσίῃ μούνῃ τοῦ [b]ἐπιστατεύειν τε καὶ ἐπιτάσσειν, ἀλλὰ ἀξίᾳ καὶ γνώμῃ προέχειν τῶν ἐπιτασσομένων.

29 [a]Τοῦ αὐτοῦ.

Πρὸς τοὺς παρὰ δίκην [b]ζώοντας, ἔπειτα ἀξιεῦντας ἄλλων ἡγέεσθαι, ἀπειθέες ἄνθρωποι. [c]Εὐπειθηίην δὲ εὐπετέα ἐπὶ

24.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

25.

[a] Sic A. Trinc.

26.

[a] Sic A. Scil. p. 355. A. Simpl. Πλουτάρχου. Trinc.

[b] μύουσα] καταμύουσα A.

27.

[a] Sic A. Θεμιστίου ἐκ τῆς μετριοπαθίας Voss. Simpl. Θεμιστίου Tr.

[b] λόγου] τοῦ λόγου A.

28.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ἐπιστατέειν] ἐπιστατεύειν A.

29.

[a] Sic A. usque ad n. 41. Desunt lemmata Trinc.

[b] ζῶντας] ζώοντας A.

[c] εὐπειθίην] εὐπειθείην A. εὐπειθήην Trinc. Verum videtur εὐπειθηίην.

τὰ παραγγελλόμενα ἑωυτῷ καὶ ἄλλῳ παρὰ τῶν ἀρχομένων παρασκευάζει ἅπας, ὅ γε παρ᾽ ἑωυτοῦ τὰ δέοντα σπουδῇ ποιέειν ἐπιστάμενος, καὶ [d] παράδειγμα τῶν περ χρὴ πρήσσειν τοῖς ὑποτεταγμένοις [e] ἑωυτὸν παρεχόμενος.

30 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἄρχοντος ἀγαθοῦ κέρδος μοῦνον τοῦτο οἰκήϊον, καὶ μυρίων κερδέων ἄλλων ἀντάξιον, πάντα μιν πρήσσειν, ὥστε καὶ παρὰ [b] τὸν καιρὸν τῆς ἀρχῆς καὶ [c] παυσάμενον πάντα χρηστὰ καὶ δικαιοσύνην παρὰ τῶν [d] ἀρχθέντων μαρτυρέεσθαι.

31 Τοῦ αὐτοῦ.

[b] Ἀνὴρ ἄρχων, καὶ ἰδιώτης δὲ ἅπας ἴστω ἀπὸ τῆς φύσιος 309 τῶν πραγμάτων, [c] ὁκοῖα ἂν αὐτὰ παρέχηται, τοιαύτης καὶ [d] τῆς ἐπ᾽ αὐτοῖς μνήμης, ἤτοι ἀγαθῆς ἢ πονηρῆς, τευξόμενος· καὶ τοῦτο ἐπιφρασθεὶς, οὕτω κυρεέτω [e] ἐπ᾽ ὁκοτέραν τῶν ὁδῶν, καὶ τὴν ἐπ᾽ ὁκοτέραν τῶν μνημέων ἄγουσαν [f] τρέπηται, καὶ κοινὴν αὐτέων τῶν μνημέων αὐτῷ ἄμεινον προτιμῆσθαι.

32 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀρχὴν ἔχων, μὴ ἀπομνησικάκεε πρὸς τοὺς ἐν διχοστασίῃ σοι πρότερον γεγενημένους· οὐ γὰρ [b] ὅκως [c] ἀμύνεαι ἐχθροὺς

[d] παράδειγμα] παραδείγματα A.
[e] ἑωυτὸν] ἑωυτῷ A.

30.

[b] τὸν καιρὸν] τὸν om. B. m. sec. Trinc.
[c] παυσάμενον] παυσαμένῳ A. ex em. παυσαμένῳ οἱ B. m. sec.
[d] ἀρχθέντων] ἀχθέντων Trinc.

31.

[b] ἀνὴρ] ἀνὴρ δὲ A. B. m. sec.
[c] ὁκοῖα] οὐχ οἷα A. a m. p.
[d] τῆς om. A. ἀπ᾽ αὐτοῖς Trinc. B. m. s.
[e] ἐφ᾽ ὁκοτέραν] ἐπ᾽ ὁκοτέραν Trinc. et inf.
[f] τρέπηται] τρέψηται A. B. In extr. pro προτιμῆται A. habet προτιμῆσαι. προτιμῆσθαι Trinc. "Certam emendationem," inquit Koenius ad Gregor. Dial. Ion. XXVIII. "κοινὴν αὐτῷ ἄμεινον προτιμῆσθαι occupavit Eldikius Spec. Susp. p. 14." Vulgo κοινήν.

32.

[b] ὅπως] ὅκως A. B. ὅτως Trinc.
[c] ἀμύνῃς ἐχρῆν] ἀμύνεαι ἐχθροὺς A. B. uterque ex emend. ἐχθρὴν conjicit Gesnerus.

ἐπὶ [d] τὴν ἀρχὴν [e] ἀρηρημένος, ἀλλ' [f] ὅκως καὶ τῆς παρ' [g] ἄλλων ἐπιβουλῆς ἀσφαλέας καὶ ἀνεπιβουλεύτους φυλάξῃς τοὺς ὑπὸ σοὶ τεταγμένους· καὶ ὅκως τοῦ ὀρθοῦ φύλαξ εἴης, καὶ θεοῦ μεγάλης δικαιοσύνης ὑπηρέτης τε καὶ ἐξηγητής. Ὥστε παρὰ τὰ αὐτῇ δοκέοντα ποιέων καὶ αὐτῆς καταψευδόμενος, ὡς ἐς θεὸν μεγίστην ἁμαρτάνων, καὶ παρ' αὐτῆς καὶ τῶν περὶ αὐτὴν τεταγμένων [h] δαιμόνων ἐφόρων τε καὶ τιμωρῶν [i] τὴν τῶν ποιουμένων μῆνιν [k] προσδέχεο.

33 Τοῦ αὐτοῦ.

Μεταξὺ ἐχθρῶν δικάζων, τοῦ δικαίου [b] γίγνου ἐξεταστὴς, καὶ πρὸς τοῦτο ῥέπε τῇ κρίσει· δικαιοσύνη γὰρ καὶ δαίμων ὁ [c] τούτων ἔφορος τοῦ ἔχθρῃ χαρίζεσθαι [d] προτετιμῆσθαι δικαιότεροι.

34 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἐν ἀρχῇ ἐὼν, ἔπειτα ἔχθρης [b] μεμνημένος, τῇ χείρονι μοίρᾳ [c] σεωυτὸν [d] νεμέεις, καὶ τῆς ἀπαιτεομένης ἐν τῷ ἄρχοντι σεμνότητος ἑωυτὸν ἀποστερήσεαι παρὰ τῶν ξυνεπισταμένων, ὅτι ἔχθρῃ [e] διδοῖς σαυτὸν, ἀντὶ τῶν σεμνοτάτων οὐνομάτων, δικαστοῦ καὶ ἄρχοντος, τὸ [f] εὐδιαβλητότατον οὔνομα ἀντιλαβὼν τῶν δικαζομένων ἐχθρὸς κεκλῆσθαι.

[d] μὲν] τὴν A. Trinc.

[e] παρηρημένους] παρηρημένος A. suprascripto εἰ ἠρημένος. Similiter B. m. sec. Ionicum ἀρηρημένος reddendum docet Koënius ad Gregor. Dial. Att. XL. Tamen deesse videtur verbum substantivum. Etiam scr. ἀραιρημένος.

[f] ὅπως] ὅκως B. ὅμως Trinc.

[g] ἄλλων] ἄλλης B. m. p. Trinc.

[h] δαιμόνων abest B. m. p. Trinc.

[i] εἶναι] τὴν A. B. uterque a m. sec.

[k] προσδέχεο] προσδέχετο Trinc.

33.

[b] γίνου] γίγνου A.

[c] τούτων] Malim ταύτης. Gesn.

[d] προτετιμῆσθαι] προτετιμᾶσθαι A.

34.

[b] μεμνημένος] μεμυημένος B. m. p. Trinc.

[c] σεαυτὸν] σεωυτῷ Trinc.

[d] νεμέεις—ἑωυτὸν om. B. m. p. νέμεις—σεωυτὸν m. sec.

[e] διδοῖς] διδοῖς σαυτὸν A. m. sec. διδοῖς αὐτῷ τῶν Trinc. B. m. p. δ. σαυτὸν m. sec. omisso ἀντὶ. In seqq. habet quidem ἀντὶ A. sed cum linea subducta a m. sec.

Ibid. Eusebii loco ἀντὶ τῶν σεμνοτάτων ὀνομάτων ἀντὶ δικαστοῦ καὶ ἄρχοντος hæc ad ista explicanda adscripta sunt. Valcken.

[f] ἐν διαβλητότατον] εὐδιαβλητότα-

35 Τοῦ αὐτοῦ.

Τοῦ ἐπιτιμᾶν τινι θανάτου ζημίην τὴν ἐξουσίην εἶναι ἡγέομαι οὐκ ἐν τῷ κύριόν τινα εἶναι [b] τούτου, τοῦ καταψηφίσασθαι, ἀλλ' ἐν τῷ οἷόν τε εἶναι τὸν ἔχοντα τὴν ἐξουσίην ἑωυτοῦ κρατέειν ἐν οὕτω ἀσφαλεστάτῃ ὀφειλεύσῃ εἶναι κρίσει, καὶ ἐς ὁμογενέας, εἴ τι [c] ἁμαρτηθείη, καὶ τὴν οὐχ οἷόν τέ ἐστιν ἔτι ἀνακαλέσασθαι γιγνομένης [d] τῆς ἁμαρτάδος.

36 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἃ τοῖς ἄλλοισιν ὡς φαῦλα ἐπιτιμᾶς, ταῦτα [b] πρότερος αὐτὸς ποιέειν φυλάσσεο.

37 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἄνθρωποι ἀνθρώπων ἐπὶ κατηγορίας ἀφικνέονται· οἱ μὲν ἐκ συγκειμένων ψευδῶν ἐγκλημάτων, οἱ δὲ ἀληθέα καταγορέοντες· οἱ δ' αὖ ἐπαινέουσιν, οἱ μὲν τὰ ἐόντα μαρτυρέοντες, οἱ δὲ παρὰ τὸ ἀληθὲς χαριζόμενοι. Ἄριστον οὖν ἐν τοῖς τοιούτοις καὶ ἰδιώτῃ καὶ ἄρχοντι μήτε αὐτὸν πιστεύειν αὐτόθεν, μήτε [b] ἀπιστέειν παντελῶς· ἐκ δὲ τῶν [c] πρηγμάτων ἐξεταζομένων, ὅκως χρὴ περὶ [d] αὐτῶν διανοέεσθαι, καὶ τὸ ἀτρεκὲς αὐτῶν μανθάνειν.

38 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀρχὴν ἔχων, κόσμεε· αὐτὸς δὲ μὴ μεταβάλλεο. [b] Οὐ γὰρ προσλελάβηκάς τι οὐκ [c] ὂν, οὐδὲ παυόμενος ἔλασσόν

τον A. Gesn. marg. In fine pro κεκλῆσθαι Koenius ad Gregor. Dial. Ion. XXV. corrigit κεκλήσεαι.

35.

[b] τούτου τὸ καταψηφίσασθαι] Lego τοῦ καταψ. Gesner. et sic A. τὸ deest B. m. s. Cæterum bene monet Valckenærius ad τούτου adscriptum esse τοῦ καταψηφίσασθαι, explicationis gratia.

[c] ἁμαρτηθείη οὐχ οἷόν τε] ἁμαρτηθείη καὶ τὴν οὐχ οἷά τε A. in οἷά latere videtur οἷός.— ἁμαρτηθείη, καὶ τὴν οἰκείαν τέ Trinc. ἁ. τὴν οἰκίαν τε B. m. p. ut A. m. sec. οἰκεῖον N.

[d] τῆς ἁμαρτάδος] εἴτι τῆς ἁμ. Trinc. εἴτι τῆς om. B.

36.

[b] πρότερον] πρότερος A.

37.

[b] ἀπιστέειν] ἀπιστεύειν B.

[c] πραγμάτων] πρηγμάτων B.

[d] αὐτῶν] αὐτὸ A.

38.

[b] οὐδὲ] οὐ A. Hinc usque ad finem fragmenti om. Trinc. N.

[c] ὧν] ὂν A. οὕτω γὰρ οὐδὲ πρ. τι οὐκ ἐὸν Valckenærius, qui et mox πε-

τι τῶν πρὶν καὶ λαβεῖν εἶχες, εἰ πενόμενος τὴν ἀρχὴν καταθήσεαι.

39 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀρχὴν λαβὼν, μὴ ἐπαίρεο, [b] ὠυτὸς δὲ [c] διατέλεε· [d] οὕτω γὰρ καὶ ἀποθέμενος οὐκ ἀφῃρῆσθαι τοῦ [e] σεμνύνοντός σε νομισθήσεαι.

40 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀνὴρ ἀγαθὸς ἔθνεός τευ ἢ πόλιος ἀρχὴν εἰληφὼς, οὐκ 310
ἕνεκά [b] γε τῶν δημοσίων [c] χρημάτων, καὶ τοῦ δωροδοκέεσθαι, καὶ τοῦ παρὰ τῶν πλουσίων χρηματίζεσθαι, ἔοικε τῷ ἀνδρὶ παρακαταθήκην εἰληφότι μεγάλων χρημάτων· ὥσπερ γὰρ καὶ ἐκεῖνος οὐκ ἐπὶ [d] τὸ κατασχεῖν λαμβάνει, οὐδὲ κτῆμα ἴδιον ποιήσασθαι τὰ δοθέντα, [e] ἀλλ' ὥστε φυλάξαι καὶ ἀποδοῦναι σῶα [f] τῷ παραθεμένῳ, [g] ἐπεὰν ἀπαιτέηται· οὕτω δὲ καὶ αὐτὸν χρὴ οὐκ ἐπὶ κέρδεσιν οἰκείοις ἀλλ' ἐπὶ σωτηρίῃ καὶ φυλακῇ πάντα πρήσσειν τῶν ἀρχομένων, ὥστε αὐτοὺς τὸ εἰς [h] ἑωυτὸν ἧκον ἀσινέοντας καὶ εὐθηνέοντας ἀποδοῦναι τῷ καταπεπιστευκότι.

41 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀνὴρ ἀνυποίστους καὶ ἀγρίας καὶ ἀμέτρους ζητέων τὰς τιμωρίας, καὶ ταῖς κατὰ νόμον οὐκ ἀρκεόμενος, θυμῷ ἀλόγῳ ξυγχωρέων, καὶ γυναικείως ἐμπικραινόμενος, οὐκ αἰ-

νόμενος loco γενόμενος substituit. Vide ad Herodot. III. 42. ἢ εἰ pro καὶ A.

39.

[b] ὠυτὸς] αὐτὸς B.

[c] διατέλεε] διατέλευε B.

[d] οὕτω] οὔπω B. καὶ om. Trinc.

[e] σεμνύνοντος] σεμνύναντος B.

40.

[b] γε om. A.

[c] χρημάτων] χρὴ πραγμάτων A.m.p.

[d] τὸ κατασχεῖν] τῷ καταυχεῖν A.

[e] ἀλλ' ὥστε] ὥστε δὲ A.

[f] παραθεμένῳ] τῷ παραθεμένῳ A. τῷ αὐτῷ παραθεμένῳ Gesn. marg. τῷ αὐτὰ παραθεμένῳ Koenius ad Gregor. Dial. Ion. LV.

[g] ἐπεὰν] ἐπεὶ ἐὰν A.

[h] ἑωυτὸν] ἑωυτοὺς Trinc.

[i] εὐθυνέοντας] εὐθηνέοντας B. Tr. Ibid. Scribendum εὐθηνέοντας. An et ἀσινέας ὄντας? nam illud est inauditum. Paullo ante σῶα recte legitur. VALCKEN. Similiter locum correxit Schæferus Melet. p. 69.

σθάνεται ἔξω τῆς δίκης ἐς τὸ ὁμογενὲς ἐξυβρίζων, ἀγνοεῖ δὲ τὸ μέγιστον, (καίτοι περ χρὴ εἰδέναι πάντα τὸν μέλλοντα [b] ἀνθρώπου καταδίκαν) ὅτι καὶ ὁ θάνατος αὐτὸς παρὰ τῶν πρώτως [c] δικαιωσάντων οὐκ ὥς τι κακὸν ἐπετιμήθη, [d] ἀλλ' ὡς ἔσχατον καὶ ἐν φαρμάκου λόγῳ κατὰ τῶν οὐ δυναμένων τῆς κακίης ἐλευθερωθῆναι· ὅκως, ἐπειδὴ οὐχ οἷά τε ἦν ἄλλως, τούτῳ γε οὖν τῷ τρόπῳ ἀπολυθέντες [e] τοῦ ἐνταῦθα δεσμοῦ [f] αὐτοῖς πορίσωνται φυγήν.

42 [a] Πυθαγόρου.

Ποίει ἃ κρίνεις εἶναι καλὰ, κἂν ποιῶν μέλλῃς ἀδοξεῖν. Φαῦλος κὰρ κριτὴς παντὸς καλοῦ πράγματος ὄχλος. Διόπερ [b] ὧν ἂν τῶν ἐπαίνων καταφρονῇς, καὶ τῶν ψόγων καταφρόνει.

43 [a] Δημοκρίτου.

[b] Ἀδικουμένοισι τιμωρεῖν κατὰ δύναμιν χρὴ, καὶ μὴ παριέναι. Τὸ μὲν γὰρ [c] τοιοῦτον δίκαιον καὶ ἀγαθόν· τὸ δὲ μὴ τοιοῦτον, ἄδικον καὶ κακόν.

44 [a] Δημοκρίτου.

Καὶ οἳ φυγῆς ἄξια ἔρδουσιν, ἢ δεσμῶν, ἢ [b] θοίνης ἄξιοι, καταψηφισματέον, καὶ μὴ ἀπολύειν· ὃς δ' ἂν παρὰ νοῦν ἀπολύει κέρδει ὁρίζων ἢ [c] ἡδονῇ, ἀδικεῖ· καί οἱ τοῦτο ἐγκάρδιον ἀνάγκη εἶναι.

41.

[b] ἀνθρώπου καταδίκαν] ἄνθρωπον κατὰ δίκαν Trinc. Lego καταδικάζειν. GESNER. καταδικᾶν Jacobs.

[c] δικαιωσάντων] δικαιωθέντων A. ubi mox ἐπιτιμήθη. Paullo supra παρὰ τῷ Trinc.

[d] ἄλλως—γε οὖν] ἀλλὰ ὡς—γοῦν A.

[e] ἐνταῦθα] τοῦ ἐνταῦθα A. Gesn. marg.

[f] αὐτῆς. πορίσωνται] αὐτοῖς πορίσονται A.

42.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ὧν] οὗ B.

43.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

[b] Ἀδικούμενοι ἀδικουμένοισι] Ἀδικούμενοι om. A.

[c] τοιοῦτο] τοιοῦτον A.

44.

[a] Sic B. Deest lemma Trinc. locus A.

[b] θοίνης] Malim ποινῆς. GESN. στηλῆς Jacobs. qui mox νόμον pro νοῦν.

[c] ἡδονῇ] ἡδονῆς B.

45 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Δίκης καὶ ἀρετῆς μεγίστην μετέχει μοῖραν ὁ [b] τιμὰς ἀξίας τάμνων.

46 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Μηδέν τι μᾶλλον τοὺς ἀνθρώπους αἰδεῖσθαι ἑωυτοῦ· μηδέ τι μᾶλλον ἐξεργάζεσθαι κακὸν, εἰ [b] μέλλει μηδεὶς εἰδήσειν, [c] ἢ εἰ οἱ πάντες ἄνθρωποι· ἀλλ' ἑωυτὸν μάλιστα αἰδεῖσθαι, καὶ τοῦτον νόμον τῇ ψυχῇ καθεστάναι, ὥστε μηδὲν ποιεῖν ἀνεπιτήδειον.

47 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Τῶν ἡμαρτημένων ἄνθρωποι [b] μεμνέαται μᾶλλον, ἢ τῶν εὖ 50 πεποιημένων. Καὶ γὰρ δίκαιον οὕτως, ὥσπερ τὰς παρακαταθήκας ἀποδιδόντα οὐ χρὴ ἐπαινεῖσθαι, τὸν δὲ μὴ ἀποδιδόντα κακῶς ἀκούειν καὶ πάσχειν· οὕτω καὶ τὸν ἄρχοντα. Οὐ γὰρ ἐπὶ τούτῳ ἡρέθη ὡς κακῶς ποιήσων, ἀλλ' ὡς εὖ.

48 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Οὐδεμία μηχανὴ τῷ νῦν καθεστῶτι ῥυθμῷ μὴ οὐκ ἀδικέειν τοὺς ἄρχοντας, ἢν καὶ πάνυ ἀγαθοὶ ἔωσιν. Οὐδενὶ γὰρ ἄλλῳ ἔοικεν ἢ ἑωυτῷ [b] τὸν αὐτὸν ἐφ' ἑτέροισι [c] γίγνεσθαι· δεῖ δέ 311 κως οὕτω καὶ ταῦτα κοσμηθῆναι, ὅκως ὁ μηδὲν ἀδικέων, ἢν καὶ πάνυ ἐτάζῃ τοὺς ἀδικέοντας, μὴ ὑπ' ἐκείνους γενέσθαι, ἀλλά τις ἢ θεσμὸς, ἤ [d] τι ἄλλο ἀμυνεῖ τῷ τὰ δίκαια ποιεῦντι.

45.

[a] Sic A. Scil. Democriti. Deest lemma Trinc.

[b] τιμᾶς ἀξίας] τιμὰς ἀξίας τὰς μεγίστας Gesn. marg. A.

46.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] μέλλοι] μέλλει A.

[c] ἢ οἱ] ἢ εἰ οἱ A.

47.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] μεμνέαται] μέμνηνται A.

48.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] τὸν αὐτὸν] τῶν αὐτῶν A. Gesn. marg.

[c] γίγνεσθαι] οὐ γίγνεσθαι A.

[d] τι ἄλλο ἀμυνεῖ] ἄλλό τι ἀμύνει A. Suspicabar locum ita corrigendum esse: ἀλλὰ τὶς ἢ θεσμὸς ἢ τι ἄλλο ἀμύνειν τ. τ. δ. π.

49 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας ᾱ, δημηγορίας Κορινθίων β.

Οὐ γὰρ ὁ [b] δουλωσάμενος, ἀλλ᾽ ὁ δυνάμενος μὲν παῦσαι περιορῶν δὲ, ἀληθέστερον αὐτὸ δρᾷ.

50 [a] Στωϊκῶν.

Φασὶ μηδὲ συγγνώμην ἔχειν μηδενὶ τὸν νοῦν ἔχοντα. [b] Τοῦ γὰρ αὐτοῦ συγγνώμην ἔχειν καὶ νομίζειν τὸν ἡμαρτηκότα μὴ παρ᾽ [c] αὐτὸν ἡμαρτηκέναι, πάντων ἁμαρτανόντων παρὰ τὴν ἰδίαν κακίαν· διὸ καὶ δεόντως λέγεσθαι τὸ μηδὲ συγγνώμην ἔχειν τοῖς ἁμαρτάνουσιν. Οὐκ ἐπιεικῆ δέ φασιν εἶναι τὸν ἀγαθὸν ἄνδρα· τὸν γὰρ ἐπιεικῆ [d] παραιτητικὸν εἶναι τῆς κατ᾽ ἀξίαν κολάσεως, καὶ τοῦ αὐτοῦ εἶναι, ἐπιεικῆ τε εἶναι καὶ ὑπολαμβάνειν τὰς ἐκ τοῦ νόμου τεταγμένας κολάσεις τοῖς ἀδικοῦσι [e] σκληροτέρας εἶναι, καὶ τὸ ἡγεῖσθαι παρὰ τὴν ἀξίαν ἀπονέμειν τὰς κολάσεις τὸν νομοθέτην.

51 [a] Ἐκ τῆς Σωπάτρου ἐπιστολῆς πρὸς Ἡμέριον τὸν ἀδελφὸν, τὸ Πῶς δεῖ πράττειν τὴν ἐγκεχειρισμένην αὐτῷ ἡγεμονίαν.

Τίς οὖν οὕτω κατὰ τὸν Σιμωνίδου λόγον τετράγωνος, ὃς κατὰ πᾶσαν τύχην καὶ πραγμάτων μετάστασιν ἀσφαλῶς ἐστήξεται, συναρμόζων μὲν ἑαυτὸν τοῖς τε ἄρχουσι καὶ [b] τοῖς ἀρχομένοις, καὶ πρὸς ἑαυτὸν ἁρμόζων ἅπαντας· πᾶσαν [c] δὲ καὶ πάντων διαφορὰν πρὸς ἕνα τὸν τοῦ καλοῦ

49.

[a] Sic A. Scil. I. 69. Simpl. Θουκυδίδου Trinc.

[b] δουλωσάμενος] δουλωσόμενος A. Trinc. et mox αὐτὸ pro αὐτῷ.

50.

[a] Sic A. Trinc.

[b] τοῦ γὰρ] τὸ γὰρ A.

[c] αὐτὸν] αὐτῶν A.

[d] παραιτητικὸν] παραιτικὸν A. Tr.

[e] σκληροτέρας] σμικροτέρας Trinc. et mox καὶ τῷ.

51.

[a] Sic fere A. ubi Σωσιπάτρου. Trinc. habet tantum Ἐκ τῆς Σωπάτρου ἐπιστολῆς. Gesnerus: *Ex Sopatri epist. ad Hemeterium fratrem, quomodo administrandus sit commissus ei magistratus.* Pro Ἡμέριον scribendum fortasse Ἱμέριον. Eidem Sopatro tribuunt A. Trinc. § 53—60.

[b] ἀρχομένοις] τοῖς ἀρχομένοις A.

[c] δὲ πάντων] δὲ καὶ πάντων A.

συνυφαίνων λόγον; [d] Τίς δὲ ἀνδρῶν καὶ πραγμάτων πολυειδεῖ δουλεύων φύσει τὸ τῆς ψυχῆς ἀδούλωτον διαφυλάξει φρόνημα; Τῷ μέν γε τὸν λόγον διατιθεμένῳ χαλεπὸν οὐδὲν ἐκ τῶν ἄκρων παραγγελμάτων τὸν ὄρθιον τῆς ἀρετῆς ᾄδειν νόμον· τῷ δ' εἰς πράξεις [e] ἀληθινὰς τοὺς λόγους [f] ἐντείνειν μέλλοντι, τὸν ἐκ τῶν δοθέντων ἄριστον, ἀντὶ τοῦ πρώτου τὴν φύσιν δοκιμάζειν, ὁ τῆς ὑποθέσεως προστάττει λόγος.

52 Ἐν ταυτῷ.

Τιμῆς μὲν [b] ὁπόσης ἐν γράμμασί τε καὶ προσηγορίαις καὶ πάσῃ τῇ φαινομένῃ ταύτῃ τοῦ βίου δραματουργίᾳ οἱ μείζους τῶν ἀρχόντων μεταποιοῦνται, [c] μὴ ὅπως ἐλλείπων τὸ μέτρον, [d] ἀλλ' εἰ δυνατὸν [e] καὶ πρὸς πλεονάζων [f] φαίνου. Γελοῖον γὰρ περὶ ὀνομάτων διαφερόμενον τῶν πραγμάτων, ἐφ' οἷς τὰ ὀνόματα κεῖται, μηδεμίαν ἔχειν φροντίδα· καὶ [g] τῆς ψευδωνύμου τιμῆς ἐφιέμενον ὀλίγου μὲν ἄγαν ἑαυτὸν ἀξιοῦντα φαίνεσθαι, τοῖς [h] δὲ ἀρχομένοις πολλὴν ἐνίοτε βλάβην προξενεῖν.

Τῶν δ' ἔργων ἃ μὲν οὐκ ἔστι προσταττόντων ἀρνήσασθαι, τῷ τρόπῳ, καὶ χρόνῳ τῆς πράξεως, πειθοῖ τε ἐμμελεῖ τὸ φαινόμενον ἐπαχθὲς παραμυθητέον. Ἔνια δ' οὐκ ἔστιν ἀναγκασθῆναί φησιν Ἀριστοτέλης, οὐδ' εἰ, [i] τὸ λεγόμενον, Ταντάλου λίθον ἐπηρτημένον τις ἔχοι, ἀλλ' [k] ὑπομενετέον πάντα ἑτοίμως [l] τὸ δρᾶν [m] κακῶς πρὸ τοῦ παθεῖν κακῶς εὐλα-

[d] τίς δὲ—τὸν λόγον om. A.
[e] ἀληθινὰς] τὰς ἀληθινὰς A.
[f] ἐντύνειν] ἐντείνειν A. B. ἐντίνειν Trinc.

52.
[b] ὁπόσης] ὁπόσος B.
[c] μὴ ὅπως] μή πως A.
[d] ἀλλ'] ἃ δ' B.
[e] καὶ] καὶ πρὸς A.
[f] φαίνου] φαίην B.
[g] ψευδωνύμου] τῆς ψευδωνύμου A.
[h] ἀρχομένοις δὲ] δὲ ἀρχομένοις A. B. δὲ deest Trinc.
[i] τὸ λεγόμενον] τὸν λεγόμενον A.
[k] ὑπομενετέον] ὑπομονητέον A.
[l] τῷ δρᾶν] τὸ δρᾶν A. B. Trinc.
[m] κακῶς] μὴ κακῶς B.

βουμένῳ. [n]Ἅ τινα δ' οὐκ ἔχει μὲν ἀπαραίτητον τὴν ἀποπλήρωσιν, λαθεῖν δὲ ἢ ἀγνοῆσαι τοὺς ἐπιτάξαντας συνέβη, διδασκαλίαν ἐμμελῆ [o]προσάγων γνώσεσθαι παρασκευάζων, μὴ [p]φανῆς ἐπισκήπτων· βαρὺ γὰρ ἔλεγχος ἐμφανὴς τοῖς ἐν 312 ἐξουσίᾳ· ἀλλ' [q]ὥσπερ εἰδότας ὑπομιμνήσκων, ἢ προβάλλων εἰς κρίσιν, [r]ἢ καὶ πυνθανόμενος, [s]ἅ τινα γιγνώσκων οὐδὲν ἧττον αὐτὸς τυγχάνεις, [t]καὶ τούτους φιλοτίμους μὲν ὄντας τιμῇ καὶ θεραπείᾳ [u]προσάγου· τῶν δὲ ἀρχομένων [w]ἐπιστρεφομένους, τῆς προαιρέσεως [x]ὑπομίμνησκε.

53 Ἐν ταυτῷ.

Ἔστω [a]δέ ποτε καὶ παρρησίας ἐλευθερίου καιρὸς, ἥτις μὴ βλάβην [b]παρασκευάζειν τοῖς ἀρχομένοις μέλλει. [c]Τὸ μὲν γὰρ αὐτόν τινα, ἤν τι καὶ δέῃ, παθεῖν αἱρετώτερον τῆς λεγομένης [d]ἐστιν εὐπραξίας πολλάκις· τὸ δ' ἐφ' οἷς ἂν αὐτὸς νεανιεύεσθαι δόξῃ λαθεῖν τοσούτους προδόντα, κενοδοξίας ἐσχάτης ὑπεύθυνον [e]ἀποφαίνει.

54 Ἐν ταυτῷ.

Αἰδοῦ πρὸς [a]τὰς διημαρτημένας τῶν πολλῶν ἀποβλέπειν δόξας, τὸν δ' ἀπὸ τῆς ἀληθείας λόγον πάντων [b]ἐπίπροσθεν ἄγειν· καὶ οὔτε φαινομένην εὐπρέπειαν μετὰ βλάβης τῶν ἀρχομένων αἱρεῖσθαι, οὔτε δοκοῦσαν ἀδοξίαν ἐπ' ὠφελείᾳ τῶν ὑπηκόων φεύγειν, εἰ μὴ τῆς τυχούσης φαντασίας, ἀλλὰ τῆς

[n] ἃ] ἅτινα A.
[o] προσαγωνίζεσθαι] προσάγων γνώσεσθαι A.
[p] φανῇς] φανῶς A. Trinc.
[q] ὡς εἰδότας] ὥσπερ εἰδότας A.
[r] ἢ πυνθ.] ἢ καὶ πυνθ. A.
[s] ἃ] ἅ τινα A.
[t] καὶ φιλοτίμους] καὶ τούτους φιλοτίμους A.
[u] προσάγου] προσάγων B.
[w] ἐπιστρεφομένους] ἐπιστρεφόμενος A.
[x] ὑπομίμνησκε] ὑπομιμνήσκει A.

53.
[a] δέ ποτε] δὲ δήποτε B.
[b] παρασκευάζειν τοῖς ἀρχομένοις] τοῖς ἀρχομένοις παρασκευάζειν A.
[c] τὸ μὲν] τὸν μὲν A.
[d] εὐπραξίας] ἐστιν εὐπραξίας A.
[e] ἀποφαίνει] ἀποφαίνοι A. ἀποφαίνειν Trinc.

54.
[a] τὰς διημαρτημένας] τοὺς διημαρτημένους A. ubi τῶν πολλῶν — ἀληθείας om.
[b] ἐπίπροσθεν ἄγε] ἐπιπρο(θ)άγειν A.

ἀρίστης ζωῆς μεταποιεῖσθαι μέλλοιμεν. Τὴν μὲν πολιτικὴν τιμὴν ἡ τῆς πολιτείας ἀπονέμει τάξις τοῖς μείζοσι [c] παρὰ τῶν ἐλαττόνων· τὴν δὲ ἄλλην θεραπείαν, ἢ τυχεῖν [d] αὐτῆς ἀξιώσουσιν, ἢ δι' ὠφέλειαν τῶν ἀρχομένων ἐν εἴδει φαρμάκου προσάγομεν. Ἐπεὶ κολακείας μὲν τὰ φαῦλα ἐπαινεῖν αὐτῆς, ἕνεκα μόνης τῆς ἀρεσκείας· πολιτικῆς δὲ φρονήσεως τοῖς ἐν δυνάμει καθομιλεῖν πρὸς ὠφέλειαν ἀνθρώπων. Ὁ μὲν γὰρ κόλαξ τὴν πονηρὰν ἀποδέχεται πρᾶξιν, οὐδένα ὠφελῆσαι μέλλων· ὁ δ', ἵνα τῆς πονηρᾶς ἀπαγάγῃ προθέσεως, φιλότιμον ὄντα [e] ἐπαινέσει. Ὥσθ' ὁ μὲν δι' ὧν ἐπαινεῖ βλάπτει τὸν ἐπαινούμενον, καὐτὸς καθ' ἑαυτοῦ πονηρίας ἐσχάτης ἐκφέρει δεῖγμα· ὁ δ' εἰς τὸ πράττειν ἄξια ἐπαίνου τῷ τρόπῳ τῆς θεραπείας ἐπάγεται.

55 Ἐν ταυτῷ.

Καὶ γίγνου μὲν ἄξιος [a] τοῦ ἄρχειν, οὐ θέσει πολιτείας, ἀλλ' ἀρετῆς καὶ προαιρέσεως τῇ πρὸς τοὺς ἀρχομένους ὑπεροχῇ· πλέον δ' ἔχειν ἑκάστου τῶν ὑπηκόων ταῖς κοιναῖς ὑπὲρ ἁπάντων ἐπιμελείαις καὶ τῇ μεμεριμνημένῃ τῶν ὅλων ἐπιστασίᾳ γίγνωσκε.

Οὓς δὲ ἠγνόεις πρότερον, καὶ σαυτῷ προσήκειν οὐδὲν ὑπελάμβανες, πλὴν ὅσον ὡς ἄνθρωπος τὴν κοινὴν φύσιν ἀνθρώπων, αἰδούμενος τούτους ὡς ἤδη γνωρίμους, καὶ φίλους ἅπαντας θεώμενος [b] εἶναι. Ὁμήρῳ γοῦν οὐκ ἀπέχρησε πατέρα ἁπλῶς τῶν [c] ἀρχομένων τὸν ἄρχοντα προσειπεῖν, καίτοι τί ποτ' ἂν εὑρεθείη τούτου πρᾳότερον ἀνθρώποις ὄνομα; ἀλλὰ καὶ τὸν ἤπιον φέρων ἐπέθηκε τῷ πατρὶ, ὁμοῦ μὲν γο-

[c] παρ' ἐλαττόνων] παρὰ τῶν ἐλαττόνων A.
[d] αὐτοῖς] αὐτῆς A. An leg. ἢ τυχεῖν αὐτῆς?
[e] ἐπαινέσει] ἐπαινέσῃ Trinc.

55.
[a] τοῦ ἄρχειν] τῆς ἀρχῆς A. qui γίνου habet, non γίγνου.
[b] εἶναι †] deest aliquid. Gesner.
[c] ἀρχομένων] ἀρχόντων B.

νεῦσιν, ὁμοῦ δὲ ἄρχουσιν ἀγαθοῖς, ταύτην πρέπειν τὴν προσηγορίαν ἡγούμενος.

Τὴν μὲν οὖν ὡς ἀρχομένων πρόνοιαν κοινὴν ἀπονέμειν πᾶσι, τοῖς δ' ἐκ πείρας φαινομένοις χρηστοῖς δευτέραν τὴν ἐκ τῶν 313
τρόπων οἰκειότητα προστιθέναι προαιροῦ. Καὶ ὑπεροψίαν μὲν καὶ τὰς συνερίθους ταύτῃ κακίας, ἀλαζονείαν καὶ αὐθάδειαν, ὡς μικροπρεπεῖς [d]τῆς ψυχῆς διαθέσεις ἀποδιδράσκωμεν· τὸ γὰρ ἑαυτῶν ἐπιλανθάνεσθαι διὰ τὴν ἐφήμερον τῆς ἀρχῆς φαντασίαν πολλὴν διανοίας ἀπελέγχει σμικρότητα. Οὐ μὴν τὰς ἐπονειδίστους ταύτας τῆς κακίας ὑπερβολὰς ἀποδιδράσκοντες πρὸς θάτερον τῆς πονηρίας ἄκρον αἰσχρῶς ἂν μεταπίπτοιμεν, εὐτέλειαν καὶ ταπεινότητα ἤθους, φαῦλα ἀντὶ φαύλων τῶν πρόσθεν ἠθῶν ἀνταλλαττόμενοι· ἀλλ' ἥμερον χρὴ καὶ σεμνὸν τοῖς ὑπηκόοις δοκεῖν τε καὶ εἶναι τὸν ἀληθῶς ἄρχοντα.

56 Ἐν ταυτῷ.

Δεῖ δὲ μήτε ὀργῇ προσομιλεῖν τοῖς ἀρχομένοις, μήτε ἀνεπίπληκτον τοῖς ἁμαρτάνουσι τὴν προαίρεσιν καταλείπειν. Τὸ μὲν γὰρ οὐδὲν τῶν μαινομένων διαφέρειν τὸν ἄρχοντα δείκνυσι, τὸ δ' εὐχέρειαν ἁμαρτημάτων τοῖς ὑπηκόοις ἐντίκτει.

Ἀνεξίκακον δὲ ὁμοῦ καὶ μισοπόνηρον σεαυτὸν ἐπιδείκνυε· [a]τῷ μὲν ἠρέμα κολάζειν τὴν ἀνεξικακίαν, τῷ δ' ἀπεχθάνεσθαι τοῖς κακοῖς τὴν μισοπονηρίαν ἐλέγχων· ἵνα τὸ μὲν φεύγειν τὰ φαῦλα, τὸ δὲ μὴ λίαν ἀπαραμύθητον εἶναι τοῖς ἐπταικόσι τὴν [b]τύχην ἀποδεικνύῃ.

Ἀφεκτέον δὲ καὶ σκωμμάτων τοῖς ὡς ἀληθῶς ἄρχουσιν, ἢ καθαιρήσει τις τὸ σεμνὸν τῆς ἀρχῆς γελωτοποιεῖν πειρώμενος.

[d] ψυχῆς] τῆς ψυχῆς A.

56.

[a] τῷ μὲν] τῷ μὲν γὰρ A. Trinc.

[b] τύχην] ψυχὴν corrigit Valckenaerius.

Καὶ λοιδοριῶν καθαρευτέον· [c]ἰδιωτικῆς γὰρ ἀκροχολίας τοῦτο σύμβολον.

Νουθετήσεις δὲ καὶ παραινέσεων τὸ διττὸν εἶδος, πῇ μὲν σφοδρῶς καθαπτόμενον πῇ δὲ προσηνῶς θεραπεῦον, γνωρίσματα ἐμοὶ [d]δοκεῖν ἐπιεικοῦς ἄρχοντος.

57 Ἐν ταυτῷ.

Συνάρμοζε δὲ τοῖς ἤθεσιν ἑκάστων τὸν πρόσφορον τῆς ἐπιστασίας τρόπον, τοῖς μὲν ἐπιεικέσιν ἐμμελῶς, τοῖς δ' ὑπτίοις συντόνως, αὐστηρῶς δὲ τοῖς θρασέσι, πρᾴως δὲ τοῖς εὐλαβεστέροις προσιών.

58 Ἐν ταυτῷ.

Δεῖ δὲ ἀπείργειν μὲν τῶν ἁμαρτημάτων ἀνάγκῃ πειθὼ συναρμόσαντα, σφαλεῖσι δὲ σύμμετρον τῆς δίκης ἐπάγειν τὴν ἐπανόρθωσιν, ὅσα μὲν μικρὰ καὶ συνήθη τῶν ἁμαρτημάτων ἀγνοεῖν δοκοῦντα· οὔτε γὰρ ἐπὶ πᾶσιν ἁπλῶς καὶ τοῖς τυχοῦσιν ἐπεξιέναι, οὔτε γιγνώσκοντα παρορᾶν ὠφέλιμον· τὰ δὲ ἤδη [a]τοῖς ἀρχομένοις ἐπαχθῆ ταῖς ἐκ τῶν νόμων θεραπείαις ἰώμενον.

59 Ἐν ταυτῷ.

Καὶ βούλου μὲν ἁμαρτημάτων τὴν ψυχήν, ὡς δυνατόν, καθαρεύειν· ἐννόει δὲ ὡς σύμφυτον τὸ ἁμαρτάνειν ἀνθρώποις· ὥσθ' ἕως ἄν τις ὡς ἀναμαρτήτους [a]κολάζῃ, τὸ μέτρον ὑπερβαίνει τῆς κατὰ φύσιν ἐπανορθώσεως. Ἀπόδειξον δὲ σαυτὸν τῆς ἀρχῆς πρέποντα κόσμον, ἀλλὰ μὴ ταῖς ἔξωθεν καὶ ἐφημέροις [b]σκιαγραφίαις καλλωπίζου.

60 Ἐν ταυτῷ.

Χάριτας μὲν τὸ δίκαιον ὑπερβαινούσας οὐδ' ὀνομαστέον

[c] ἰδιωτικῆς] ἰδιωτικκοῖς Trinc.
[d] δοκεῖ] δοκεῖν A. Trinc.

57. 58.

[a] τοῖς ἀρχομένοις] τῶν ἀρχομένων Trinc.

59.

[a] κολάζῃ] κολάζει A. Mox τρέποντα Trinc.
[b] σκιαγραφίαις] συγγραφίαις ἢ σ. A.

ἐμοὶ δοκεῖν χάριτας· [a]τὰς δὲ τῆς δικαιοσύνης φίλας οὐδεὶς ἂν, ὃς οὐκ ἀπὸ δρυός ἐστιν ἢ πέτρας, ἑκὼν ἀρνησάμενος τύ- 314
χοι. Ἐπεὶ γὰρ πολλάκις ὁ νόμος πικροτέρας τῶν ἁμαρτημάτων ὁρίζει τὰς τιμωρίας, τὸ λεγόμενον ἐπιεικὲς δίκαιον, τὴν αὐστηρὰν τῶν νόμων φωνὴν παραμυθούμενον, ἀμεμφὴς ἐμοὶ δοκεῖ χαρίτων ἀληθινῶν καὶ ἐλευθέρων πρόφασις. Τὸ μὲν οὖν περὶ τὰ συναλλάγματα τῆς δίκης [b]ἐπανορθωτικὸν ἐκφεύγει παντελῶς [c]τὸ τῶν χαρίτων γένος· τὸ δ' ἐπὶ τοῖς ἐγκλήμασι κείμενον οὐκ ἀναίνεται τὸ πρᾷον καὶ φιλάνθρωπον τῶν χαρίτων πρόσωπον.

61 [a]Ἀρχύτα Πυθαγορείου ἐκ τοῦ Περὶ νόμου καὶ δικαιοσύνης.

Δεῖ δὲ τὸν ἀλαθινὸν ἄρχοντα μὴ μόνον [b]ἐπιστάμονά τε καὶ δυνατὸν ἦμεν περὶ τὸ καλῶς ἄρχεν, ἀλλὰ καὶ φιλανθρώπως· ἄτοπον γὰρ ἦμεν ποιμένα μισοπρόβατον, καὶ τοιοῦτον, οἷον καὶ δυσμενῶς ἔχειν τοῖς αὑτοῦ θρεμμάτεσι. Δεῖ δ' αὐτὸν [c]καὶ νόμιμον ἦμεν· οὕτω [d]γὰρ ἐσεῖται τὰν τῶ ἄρχοντος ἐπίστασιν ἔχων. Διὰ μὲν γὰρ τὰς [e]ἐπιστάμας κρίνεν ὀρθῶς δυνασεῖται· διὰ δὲ τᾶς δυνάμιος, κολάζεν· διὰ δὲ τᾶς [f]χρηστότατος, τὸ εὐεργετεῖν· διὰ δὲ τῶν νόμων, τὸ ποτὶ τὸν λόγον πάντα [g]ταῦτα ποιεῖν. Ἄριστος δέ [h]κ' εἴη ἄρχων ὁ [i]ἀγχοτάτω τῷ νόμῳ· οὗτος δέ κ' εἴη, ὁ μηθὲν αὑτῶ ἕνεκα ποιέων ἀλλὰ τῶν [k]ὑπ' αὐτὸν, ἐπειδήπερ οὐδὲ νόμος αὑτῶ ἕνεκα, ἀλλὰ τῶν ὑπ' αὐτόν.

60.

[a] τὰς] ταῖς A.

[b] ἐπανωρθωτικὸν] ἐπανορθωτικὸν A. Trinc.

[c] καὶ τὸ] καὶ om. A. B. Gesn. marg.

61.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ἐπιστήμονα — εἶναι — ἄρχειν et alia quædam ejusdem generis B.

[c] καὶ νόμιμον] καὶ om. A. B.

[d] γὰρ om. A. B.

[e] ἐπιστήμας] ἐπιστάμας A. B. τᾶς om. Trinc.

[f] χρηστότητος] χρηστότατος A. B.

[g] ποιεῖν] ταῦτα ποιεῖν A. Trinc.

[h] κ' εἴη] κεν εἴη A. B.

[i] ἀρχοτάτῳ] ἀγχοτάτω A. Trinc. θειοτάτῳ vel δικαιοτάτῳ conj. Gesnerus. τῷ νόμῳ A. B.

[k] ὑπ' αὐτὸν] ὑπ' αὐτῶν B. Sequentia om. Trinc.

62 [a] Ἰαμβλίχου.

Πᾶν γὰρ τὸ τιμώμενον αὔξεται, ἐλαττοῦται δὲ τὸ ἀτιμαζόμενον· καὶ τοῦτό ἐστι [b] τὸ διαφανέστατον σημεῖον ἀρχῆς [c] τῆς εὖ διοικουμένης. Προτρέπει τε γὰρ τοὺς ἀρχομένους ἐπὶ τὰ καλὰ ἐπιτηδεύματα, καὶ τὴν ἐπιβάλλουσαν [d] ἀξίαν ἑκάστοις διανέμει, καὶ πληροῖ τὰς πόλεις τῶν ἀρίστων ἐπιτηδευμάτων.

63 [a] Ὑπερίδου.

Ἀρχομένων δεῖ τῶν ἀδικημάτων [b] ἐμφράσσειν τὰς ὁδούς· ὅτ' ἂν δ' ἅπαξ ῥιζωθῇ κακία καὶ παλαιὰ γένηται, καθάπερ σύντροφος ἀρρωστία, χαλεπὸν αὐτὴν κατασβέσαι.

64 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Δημοδόκου.

Πῶς γὰρ ἄν τις ἢ δίκην καλῶς δικάσαι, ἢ ἀνθρώπους κατὰ τρόπον κρίναι δύναιτο, μὴ ἀμφοτέρων τῶν ἀντιδίκων ἀκούσας; Τοὺς γὰρ λόγους παραβαλλομένους, ὥσπερ τὴν πορφύραν καὶ τὸ χρυσίον, ἄμεινον κρίνεσθαι· ἢ τίνος ἕνεκεν ἢ χρόνον ἀμφοτέροις δίδοσθαι τοῖς ἀντιδίκοις, ἢ ὀμνύειν τοὺς δικαστὰς ἀκροάσασθαι ὁμοίως ἀμφοτέρων, εἰ μὴ ὑπελάμβανεν ὁ νομοθέτης τὰς δίκας δικαιότερον ἂν καὶ βέλτιον κρίνεσθαι ὑπὸ τῶν δικαστῶν; Σὺ δέ μοι δοκεῖς οὐδὲ [b] τοῦτο ὑπὸ τῶν πολλῶν λεγόμενον ἀκηκοέναι. Τὸ [c] ποῖον; ἔφη.

Μηδὲ δίκην δικάσῃς, πρὶν ἀμφοῖν μῦθον ἀκούσῃς.

καίτοι οὐκ ἂν οὕτω τοῦτο περιεφέρετο, εἰ μὴ καλῶς ἐλέγετο, καὶ ὡς προσήκει. Ξυμβουλεύω οὖν σοι, ἔφη, τοῦ λοι-

62.

[a] Sic A. Trinc.
[b] διαφανέστατον] τὸ διαφ. A. B.
[c] εὖ] τῆς εὖ A.
[d] ἀξίαν ἑκάστοις] ἑκάστοις ἀξίαν Voss.

63.

[a] Sic A. Trinc.
[b] ἐμφράσσειν] συμφράσσειν A. B. ἐμφράσειν Trinc.

64.

[a] Sic A. Scil. p. 383. A. Simpl. Πλάτωνος Trinc.
[b] τοῦτο] τὸ B.
[c] ποῖον] ὁποῖον A.

πού μὴ προπετῶς οὕτω τοὺς ἀνθρώπους μήτε μέμφεσθαι μήτε ἐπαινεῖν.

65 [a] Ἀντιφῶντος.

Οὐ δίκαιον οὔτε ἔργῳ ἁμαρτόντα ῥήματι σωθῆναι, οὔτε ἔργῳ ὀρθῶς πράξαντα διὰ ῥῆμα ἀπολέσθαι· τὸ μὲν γὰρ ῥῆμα τῆς γλώσσης ἁμάρτημά ἐστι, τὸ δὲ ἔργον τῆς γνώμης.

66 [a] Δημοσθένους.

Δίκαιόν ἐστιν ἐλεεῖν οὐ τοὺς ἀδίκους τῶν ἀνθρώπων, ἀλλὰ τοὺς παρὰ λόγον δυστυχοῦντας.

67 [a] Βίαντος.

Βίας θανάτῳ μέλλων καταδικάζειν, ἐδάκρυσεν. Εἰπόντος δέ τινος, τί παθὼν αὐτὸς καταδικάζεις καὶ κλαίεις; εἶπεν· 315
Ὅτι ἀναγκαῖόν ἐστι τῇ μὲν φύσει τὸ συμπαθὲς ἀποδοῦναι, τῷ δὲ νόμῳ τὴν ψῆφον.

68 [a] Ἐκ τῆς ἐπιστολῆς Περὶ φιλίας.

Μάρτυς δ' ἄριστος ὁ μηθὲν μὲν εὖ παθὼν, [b] ἀπὸ δὲ τῆς εἰς ἄλλους εὐνοίας κρίνων.

69 [a] Ὀβρίμου Πρωτογόνου κρινομένου φαρμάκων.

Ἀεὶ δὲ ἐν πάσαις μὲν ταῖς δίκαις ἐξετάζειν χρὴ τὰ βεβιωμένα, μάλιστα δ' ἐν τοῖς τοιούτοις τῶν ἀγώνων ἐν οἷς ὁ βίος ἐστὶ τὸ ἔγκλημα.

70 [a] Ἰαμβλίχου ἐκ τῶν Προτρεπτικῶν πρὸς φιλοσοφίαν λόγων.

Καθάπερ τῷ ὑποπύῳ βέλτιον τὸ κάεσθαι τοῦ διαμένειν, οὕτω καὶ τῷ μοχθηρῷ τὸ τεθνάναι τοῦ ζῆν.

65.

[a] Sic A. Trinc. ἁμαρτάνοντα pro ἁμαρτόντα Trinc.

66.

[a] Sic A. Trinc. Sc. c. Aphob. p. 835, 6.

67.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

68.

[a] Sic A. Gesner: *Ex Epistola de amicitia Plutarchi.* Deest lemma Trinc. Vide Plutarchum ed. Wyttenb. T. V. 551.=830.

[b] ἀπὸ] Malim ἄνευ. GESNER. Improbat Wyttenbachius.

69.

[a] Sic A. Trinc. Gesner: *Obrimi pro primigenito veneficii accusato.*

70.

[a] Sic A. Sc. c. 2. Simpl. Ἰαμβλίχου Trinc.

71 [a] Διονυσίου ὑπὲρ τῶν παίδων.

Ἀξιοπιστότερός ἐστιν ἀντιδίκων καταψευδομένων ἀληθεύων πατήρ.

72 [a] Δημοσθένους.

Μᾶλλον ἄξιον ὀργίλως ἔχειν τοῖς μετ' εὐπορίας πονηροῖς, ἢ τοῖς μετ' ἐνδείας. Τοῖς μὲν γὰρ ἡ τῆς ἀνάγκης χρεία φέρει [b] τινὰ συγγνώμην παρὰ [c] τοῖς ἀνθρωπίνως λογιζομένοις· οἱ δ' ἐκ περιουσίας πονηροὶ οὐδεμίαν δικαίαν πρόφασιν ἔχουσι. Πολλὰ δ' οὖν κακὰ πράγματα τοὺς ἐλευθέρους ἡ πενία βιάζεται ποιεῖν, ἐφ' οἷς ἂν ἐλεοῖντο δικαιότερον ἢ προσαπολλύοιντο.

73 [a] Ἰαμβλίχου.

Ἡ κακὴ κρίσις παντὸς κακοῦ αἰτία.

74 [a] Ἰαμβλίχου ἐκ τῆς Ἐπιστολῆς τῆς πρὸς Δυσκόλιον.

Προηγεῖται δ' ὡς ἀληθῶς [b] ἄρχων μειζόνως αὐτῶν, καὶ ἔτι βέλτιον, [c] ὡς τὴν μεγαλοπρεπῆ δόσιν τῶν ἀγαθῶν παρέχει, χορηγίαν τε ἄπλετον τοῦ βίου, καὶ σωτηρίαν πλείστην, καὶ [d] ζωῆς ῥαστώνην ἐντίθησιν. Καὶ γὰρ δὴ καὶ τοῦτό ἐστι τέλος ἄρχοντος σπουδαίου τοὺς ἀρχομένους ποιεῖν εὐδαίμονας· καὶ τότε δὴ διαφερόντως [e] εὐσθενεῖ ὁ προεστηκὼς τῶν ὑφ' ἑαυτοῦ διοικουμένων, ὅτ' ἂν οἱ ἐπιτρέψαντες αὐτῷ γε αὐτοὺς μακαρίως διάγωσιν. Οὐ γὰρ δὴ κεχώρισται τὸ κοινὸν συμφέρον τοῦ ἰδίου· πολὺ δὲ μᾶλλον ἐν τῷ ὅλῳ καὶ τὸ καθ' ἕκαστα λυσιτελοῦν περιέχεται, καὶ σώζεται ἐν τῷ παντὶ τὸ κατὰ μέρος ἐπί τε τῶν ζώων καὶ τῶν πόλεων καὶ τῶν ἄλλων φύσεων.

71.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

72.

[a] Sic A. Trinc. Sc. c. Steph. p. 1121, 27.

[b] τινὰ συγγνώμην] συγγνώμην τινα A.

[c] τοῖς — λογιζομένοις] τῶν — λογιζομένων Trinc.

73.

[a] Sic Trinc. Τοῦ αὐτοῦ A. in quo legitur post n. 70.

74.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἄρχων] ἄρχειν Trinc.

[c] ὡς] ὥστε A. B.

[d] ζοῆς] ζωῆς A. Trinc.

[e] εὐσθενεῖ] εὐσθενεῖ τε Trinc.

75 [a] Ἐν τῷ αὐτῷ.

Ἄγαμαι δ᾽ ἔγωγε καὶ τὴν μεγαλοφροσύνην καὶ τὴν μεγαλοπρέπειαν ἐν ἅπασι τοῖς τῆς ἀρχῆς ἔργοις, καὶ διαφερόντως [b] ἐν ταῖς τῶν ἀνθρώπων εὐεργεσίαις, ὅτ᾽ ἂν μήτε ἀκριβολογῶνται, μήτε [c] φείδωνταί τινος ἐν ταῖς δόσεσι, μήτε ὥσπερ ἐν πλάστιγγι ζυγοῦ ἴσα ἀντὶ ἴσων ἀντικαταλλάττωνται, εὐγενῶς τε τὰς χάριτας ὀρέγωσι, μὴ μόνον ἐκ πίθου αὐτὰς προχέοντες, ὡς οἱ ποιηταὶ λέγουσιν, [d] μηδ᾽ ἄλλοις τισὶν ὀργάνοις τοιούτοις εἴσω κατεχομένας, [e] γυμνὰς δὲ καὶ ἀπαρακαλύπτους καὶ χωρὶς τῶν ἔξωθεν παραπετασμάτων συνεχεῖς ἐχομένας ἀλλήλων προτείνωσι χρηστῶς καὶ εὐμενῶς, οἷα [f] δὴ καὶ χαρίεντα. Τῶν χαρίτων γὰρ δὴ τοιοῦτον κόσμον στέφανον ἂν εἰκότως εἴποιμι τῆς ἀρχῆς.

76 [a] Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τῆς Ἐπιστολῆς τῆς πρὸς Ἀγρίππαν.

Ἐπίφθονος εἶναι δοκεῖ τοῖς πολλοῖς ἡ ὑπεροχὴ τῆς ἀρχῆς, καὶ τὸ ὑπέρογκον μισητὸν αὐτοῖς καθίσταται· ἀλλ᾽ ὅτ᾽ ἂν χρηστότητι καὶ φιλανθρωπίᾳ [b] κραθῇ τὸ σεμνὸν καὶ αὐστηρὸν τῆς ἐπικρατείας, ἐμμελὲς καὶ πρᾶον καὶ προσηνὲς καὶ [c] εὐπρόσιτον [d] καθίσταται. Καὶ τοῦτο μάλιστα τὸ εἶδος ἡγεμονίας φιλεῖται ὑπὸ τῶν ἀρχομένων.

77 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Λέγεται μὲν εἶναι πάντων βασιλεὺς ὁ νόμος· ὁ δὲ αὐτὸς
δοκεῖ καὶ προστάττειν τἀγαθὰ καὶ τἀναντία ἀπαγορεύειν.
Τί δὴ οὖν οἰόμεθα τὴν παρισουμένην [a] πρὸς αὐτὸν εὐνομίαν, 316
οἵῳ δὴ κάλλει τινὶ [b] προέχειν, μεγέθει τε ἡλίκῳ [c] καὶ δικαι-

75.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ἐν ταῖς τῶν — ἀκριβολογοῦνται om. Trinc.

[c] φείδωνται] φείδονται Trinc.

[d] μηδ᾽] ἀλλὰ μηδ᾽ A. B.

[e] γυμνὰς] γυμνοὺς A.

[f] δὴ] Malim δεῖ. Gesner.

76.

[a] Sic A. τοῦ αὐτοῦ ἐξ ἐπιστολῆς Trinc.

[b] κραθῇ] κραθῇ τὸ σεμνὸν A. Supra ἀρετῆς pro ἀρχῆς Trinc. necnon αὐτῆς pro αὐτοῦ.

[c] εὐπρόσιτον] ἀπρόσιτον Trinc.

[d] καθίστανται] καθίσταται A. Tr.

77.

[a] πρὸς] om. A. παρισουμένην αὐτῷ B.

[b] προέχειν] προέχει B. προσέχει Tr.

[c] καὶ om. A. B.

σύνη [d] ὑπερβάλλειν πάντα πράγματα; Ὅσα γὰρ δήπου καὶ οἷα γένη καὶ εἴδη τῶν ἀρετῶν ἐστι, κατὰ τοσαῦτα καὶ τοιαῦτα διήκει κάλλιστα τῶν νόμων ἐπιτάγματα, καὶ δὴ καθ᾽ ὅλας τὰς διοικήσεις τῶν πόλεων, καὶ τοὺς ὅλους τῶν ἀνθρώπων βίους διατείνει τὸ [e] ἀπ᾽ αὐτῶν ὄφελος. Ἔστι μὲν οὖν κοινὸν ἀγαθὸν ὁ νόμος, καὶ ἄνευ τούτου οὐδὲν ἄν ποτε γένοιτο τῶν ἀγαθῶν· δεῖ γε μὴν τὸν προϊστάμενον τῶν νόμων ἄρχοντα εἰλικρινῶς ἀποκεκαθαρμένον εἶναι [f] πρὸς αὐτὴν τὴν ἄκραν τῶν νόμων ὀρθότητα, καὶ μήτε παραγωγαῖς ἢ φενακισμοῖς ἐξαπατᾶσθαι δι᾽ ἄγνοιαν, μήτε βιαζομένοις τισὶ συγχωρεῖν, μήτε ἀδίκῳ [g] προφάσει μηδεμιᾷ δελεάζεσθαι. Τὸν γὰρ σωτῆρα καὶ φύλακα τῶν νόμων ἀδιάφθορον εἶναι δεῖ εἰς δύναμιν ἀνθρωπίνην.

78 [a] Κάτωνος πρεσβυτέρου.

Κάκιστον ἔλεγε τὸν ἄρχοντα εἶναι, τὸν ἄρχειν ἑαυτοῦ μὴ δυνάμενον.

79 [a] Ἐπικτήτου.

Ὥσπερ εἰ ναῦν κυβερνᾶν [b] ἐπεχείρεις, πάντως ἂν τὴν κυβερνητικὴν ἐξεμάνθανες τέχνην· ἐξέσται γάρ [c] σοι ὥσπερ ἐκεῖσε πᾶσαν [τὴν ναῦν,] οὕτω κἀνθάδε [d] πᾶσαν κυβερνᾶν πόλιν.

80 Τοῦ αὐτοῦ.

Εἰ [a] πρόκειταί σοι τὴν πόλιν ἀναθήμασι κοσμεῖν, σεαυτῷ πρῶτον ἀνάθες τὸ κάλλιστον ἡμερότητος καὶ δικαιοσύνης καὶ εὐποιΐας ἀνάθημα.

81 Τοῦ αὐτοῦ.

Εὐποιήσεις σὺ τὰ μέγιστα τὴν πόλιν, εἰ μὴ τοὺς ὀρόφους

[d] ὑπερβάλλει] ὑπερβάλλειν Trinc.
[e] ἀπ᾽ αὐτῶν] ἀπὸ τῶν αὐτῶν A. B.
[f] πρὸς αὐτὴν] παρ᾽ αὐτὴν Trinc.
[g] προσφάσει μηδεμίᾳ] προφάσει μήτε μιᾷ A. Trinc.

78.
[a] Sic A. Trinc.

79.
[a] Sic A. Trinc. Ejusdem sunt nn. 80—88. Scil. fr. 79—88.
[b] ἐπεχείρεις] ἐπιχείρεις B.
[c] σοι] σε Voss. Mox τὴν ναῦν om. A. Voss. Trinc.
[d] πᾶσαν κυβερνᾶν] κυβερνᾶν πᾶσαν μέλλων A. B.

81.
[a] πρόσκειται A.

[b] ὑψώσεις, ἀλλὰ τὰς ψυχὰς [c] αὐξήσεις. Ἄμεινον γὰρ ἐν μικροῖς οἰκήμασι μεγάλας οἰκεῖν ψυχὰς, ἢ ἐν μεγάλαις οἰκίαις ταπεινὰ φωλεύειν ἀνδράποδα.

82 Τοῦ αὐτοῦ.

Μὴ [b] τοῖς ἐξ Εὐβοίας καὶ Σπάρτης λίθοις τοὺς τοίχους τῇ κατασκευῇ ποίκιλλε, ἀλλὰ γὰρ τῇ ἐκ τῆς Ἑλλάδος παιδείᾳ τὰ στέρνα τῶν πολιτῶν καὶ τῶν πολιτευομένων διακόσμει. [c] Γνώμαις γὰρ ἀνδρῶν εὖ οἰκοῦνται πόλεις, ἀλλ' οὐ λίθοις καὶ ξύλοις.

83 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὥσπερ εἰ [b] λέοντας ἐβούλου τρέφειν, οὐκ ἄν σοι τῆς [c] πολυτελείας τῶν [d] ζωγρίων ἔμελεν, ἀλλὰ τῆς πράξεως τῶν ζώων· οὕτως εἰ πολιτῶν πειρᾷ [e] προΐστασθαι, μὴ τοσοῦτον τῆς πολυτελείας τῶν ἀναστημάτων φρόντιζε, ὁπόσον τῆς [f] ἀνδρείας τῶν ἐνδιατριβόντων ἐπιμελοῦ.

84 Τοῦ αὐτοῦ.

Καθάπερ ἀγαθὸς πωλοδάμνης οὐ τῶν πώλων τοὺς μὲν ἀγαθοὺς τρέφει, τοὺς δὲ δυσηνίους λιμώττειν ἐᾷ, ἀλλὰ τρέφει μὲν ἐπίσης ἄμφω, κολάζει δὲ μᾶλλον θάτερον, ἐξισοῦν θατέρῳ [b] βιαζόμενος μέρει· οὕτω [c] καὶ κηδεμονικὸς ἀνὴρ καὶ πολιτικῆς ἐπιστήμων δυνάμεως τῶν πολιτῶν, τοὺς μὲν εὐγνώμονας ποιεῖν ἐπιχειρεῖ, τοὺς δὲ ἔμπαλιν οὐ καθάπαξ διαφθείρεσθαι· ἀλλὰ τροφῆς μὲν ἀμφοῖν ἥκιστα [d] φθονεῖ, παιδεύει δέ· καὶ σφοδρότερον ἐπισπέρχει τὸν ἀντιβαίνοντα τῷ λόγῳ καὶ τῷ νόμῳ.

[b] ὑψώσης] ὑψώσεις A. Voss. ψώσης Trinc.
[c] αὐξήσης] αὐξήσεις A. B. Trinc.

82.

[b] τοῖς τῆς] τῆς om. A. Trinc.
[c] γνώμαις. Vide infra LIV. 5.

83.

[b] λέοντας] λέοντα Trinc.
[c] πολυτελείας] πολιτελείας A.
[d] ζωγρίων] ζωγριῶν B.
[e] προΐστασθαι] μὴ πρ. B.
[f] ἀνδρείας] ἀνδρίας A.

84.

[b] βιαζόμενος] βιαζόμενον Trinc.
[c] καὶ om. B.
[d] φθονεῖ] φρονεῖ Trinc. et mox ἐπεισπέρχει.

85 Τοῦ αὐτοῦ.

Καθάπερ οὔτε κλαγγῇ χὴν, οὔτε βληχῇ καταπλήσσεται πρόβατον, [b] οὕτως μηδὲ πλήθους ἀνοήτου σε δεδιττέσθω φωνή.

86 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὥσπερ πλῆθος [b] ἀκρίτως αἰτοῦν τί σε τῶν ἰδίων οὐ δυσωπεῖ, οὕτω μηδὲ ὄχλον ἀδίκως σε δυσωποῦντα διατραπῇς.

87 Τοῦ αὐτοῦ.

[b] Ὅπερ ἐπιβάλλει τῇ πόλει, τοῦτο εἴσφερε φθάνων, καὶ 317 οὐδέποτε αἰτηθήσῃ τὰ μὴ ἐπιβάλλοντα.

88 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὥσπερ ὁ ἥλιος οὐ περιμένει λιτὰς καὶ γοητείας ἵνα ἀνατείλῃ, ἀλλ' εὐθὺς λάμπει, καὶ πρὸς [b] ἁπάντων ἀσπάζεται· οὕτω μηδὲ σὺ περίμενε κρότους καὶ ψόφους καὶ ἐπαίνους, ἵν' εὖ ποιήσῃς, ἀλλ' ἑκοντὴς εὐεργέτει, καὶ [c] ἴσα τῷ ἡλίῳ φιληθήσῃ.

89 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Λάχητος.

Ἐπιστήμῃ γὰρ [b] οἶμαι δεῖ κρίνεσθαι ἀλλ' οὐ πλήθει τὸ μέλλον καλῶς κριθήσεσθαι.

90 [a] Ἐν ταυτῷ.

Πρέπει μέν που, ὦ μακάριε, τῷ [b] τῶν μεγίστων προστατοῦντι μεγίστης φρονήσεως μετέχειν.

91 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Πρωταγόρου.

Ἐγὼ γὰρ δὴ οἶμαι, καὶ ἐμὲ καὶ σὲ καὶ τοὺς ἄλλους ἀν-

85.

[b] οὕτως οὐδὲ] οὕτω μὴ δὲ A.

86.

[b] ἀκρίτως] ἀκρίτ(ων)ῶς A.

87.

[b] ὅσπερ] ὅπερ A. Trinc.

88.

[b] ἁπάντων] ἑταίρων (ἁπάντων) A. παρὰ πάντων B.

[c] ἴσα] ἴσ(ον)ῶς A.

89.

[a] Sic A. Scil. p. 184. F. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] οἶμαι Voss. deest.

90.

[a] Sic A. p. 197. D. Deest lemma Trinc.

[b] τῶν μεγίστων] τὴν μεγίστην Trinc.

91.

[a] Sic A. Perperam. Est Gorg. p. 474. B. Deest lemma Trinc.

θρώπους τὸ ἀδικεῖν τοῦ ἀδικεῖσθαι κάκιον ἡγεῖσθαι, καὶ τὸ μὴ διδόναι δίκην, [b] τοῦ διδόναι.

92 [a] Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Πρωταγόρου.

Οὐδεὶς γὰρ κολάζει τοὺς ἀδικοῦντας, πρὸς τοῦτο τὸν νοῦν ἔχων, καὶ τούτου ἕνεκα, ὅτι [b] ἠδίκησεν, ὅστις [c] μὴ ὥσπερ [d] θηρίον ἀλογίστως τιμωρεῖται· ὁ δὲ μετὰ λόγου ἐπιχειρῶν κολάζειν, οὐ τοῦ παρεληλυθότος ἕνεκα ἀδικήματος τιμωρεῖται, οὐ γὰρ ἂν τό γε πραχθὲν ἀγένητον θείη, ἀλλὰ τοῦ μέλλοντος χάριν, ἵνα μὴ αὖθις ἀδικήσῃ, μήτε αὐτὸς οὗτος, μήτε [e] ἄλλος ὁ τοῦτον ἰδὼν κολασθέντα.

93 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ἐννοῶ γὰρ ὅτι τὸν μέλλοντα βασανιεῖν ἱκανῶς ψυχῆς [b] πέρι ὀρθῶς τε ζώσης καὶ μή, τρία ἄρα δεῖ ἔχειν, [c] ἃ σὺ πάντ᾽ ἔχεις, ἐπιστήμην τε καὶ δόξαν καὶ παρρησίαν.

94 [a] Τοῦ αὐτοῦ Νόμων ιβ.

Τὸν γὰρ κακὸν ἀεὶ δεῖ κολάζειν, ἵν᾽ ᾖ [b] ἀμείνων, οὐ τὸν δυστυχῆ.

95 [a] Πλάτωνος Πολιτείας ζ.

Ἀλλὰ μὴν καὶ ἀλήθειάν γε περὶ πολλοῦ ποιητέον· εἰ γὰρ ὀρθῶς ἐλέγομεν ἄρτι, καὶ τῷ ὄντι θεοῖσι μὲν ἄχρηστον ψεῦδος, ἀνθρώποις δὲ χρήσιμον ὡς ἐν φαρμάκου εἴδει, δηλονότι τό γε τοιοῦτον [b] ἰατροῖς δοτέον, ἰδιώταις δὲ οὐχ ἁπτέον. Δη-

[b] τοῦ διδόναι] τὸ διδόναι Trinc.

92.

[a] Sic A. Scil. p. 324. A. Deest lemma Trinc.
[b] ἠδίκησαν] ἠδίκησεν A. Trinc.
[c] μὴ] μὲν A. B.
[d] θηρίων] θηρίον A. Trinc.
[e] ἄλλως ὁ τοῦτον] ἄλλος ὁ τοῦτο Trinc.

93.

[a] Sic A. E Gorgia p. 486. E. Deest lemma Trinc.
[b] περὶ] τε περὶ A. Trinc.
[c] ἃ σὺ πάντ᾽] ἅ τινα σὺ πάντως A. B.

94.

[a] Sic A. Scil. p. 944. D.
[b] ἄμεινον] ἀμείνων Trinc.

95.

[a] Sic A. Lege γ pro ζ. Scil. p. 389. Deest lemma Trinc.
[b] ἰατροῖς] τοῖς ἰατροῖς A. B.

λον, ἔφη. Τοῖς ἄρχουσι δὴ [c] τῆς πόλεως, [d] εἴπερ τισὶν ἄλλοις, προσήκει ψεύδεσθαι, ἢ πολεμίων ἢ πολιτῶν ἕνεκα ἐπ' ὠφελείᾳ τῆς πόλεως· τοῖς δ' ἄλλοις πᾶσιν οὐχ ἁπτέον τοῦ τοιούτου· ἀλλὰ πρός γε δὴ τοὺς [[e] τοιούτους] ἄρχοντας [f] ἰδιώτῃ ψεύσασθαι ταὐτὸν καὶ μεῖζον ἁμάρτημα φήσομεν, ἢ κάμνοντι πρὸς [g] ἰατρὸν ἢ ἀσκοῦντι πρὸς παιδοτρίβην περὶ τῶν τοῦ αὑτοῦ σώματος παθημάτων [h] μὴ τἀληθῆ λέγειν, ἢ πρὸς κυβερνήτην περὶ τῆς νηός τε καὶ [i] ναυτῶν μὴ τὰ ὄντα λέγοντι, ὅπως ἢ αὐτὸς ἤ τις τῶν ξυνναυτῶν πράξεως ἔχει. Ἀληθέστατα, ἔφη. Ἂν ἄρ' ἄλλον τινὰ λαμβάνῃ ψευδόμενον ἐν τῇ πόλει

τῶν οἳ δημιουργοὶ ἔασι,
μάντιν, ἢ ἰητῆρα [k] κακῶν, ἢ τέκτονα [l] δούρων,

κολάσει ὡς ἐπιτήδευμα [m] εἰσάγοντα πόλεως, ὥσπερ νεώς, ἀνατρεπτικόν τε καὶ ὀλέθριον. Ἐάν περ, ἦ δ' ὅς, ἐπὶ λόγῳ ἔργα τελῆται.

96 [a] Ἐν τῷ αὐτῷ.

[b] Ἀλλὰ περὶ τοῦδε τί λέγεις, ὦ Σώκρατες; ἆρα οὐκ ἀγαθοὺς δεῖ ἐν τῇ πόλει κεκτῆσθαι ἰατρούς; [c] εἶεν δ' ἄν που μάλιστα τοιοῦτοι, ὅσοι πλείστους μὲν ὑγιεινούς, πλείστους δὲ νοσώδεις μετεχειρίσαντο, καὶ δικασταὶ αὖ ὡσαύτως οἱ παντοδαπαῖς φύσεσιν ὡμιληκότες. Καὶ μάλα, εἶπον, 318
ἀγαθοὺς λέγω. Ἀλλ' οἶσθα [d] οὓς ἡγοῦμαι τοιούτους; Ἐὰν

[c] τῆς πόλεως] τοῖς πόλεως A.
[d] εἴπερ] ὕπερ A.
[e] τοιούτους om. A. Trinc.
[f] ἰδιώτῃ] τῷ ἰδιώτῃ A.
[g] ἰατρὸν] τὸν ἰατρὸν A. B.
[h] μήτ'] μήτ' ἐς A. B.
[i] ναυτῶν μὴ τὰ ὄντα] ναῦ τὸν μὴ ὄντα A. ναύτην μὴ ὄντα B. λέγοντα pro λέγοντι A.
[k] κακῶν om. A. Trinc.
[l] δούρων] δοῦλον (ρων supra) A.
[m] εἰσάγοντα] εἰσάγοντι Trinc.

96.
[a] Sic A. Scil. p. 408.
[b] om. A. B. usque ad ἃ σὺ ἐρωτᾷς.
[c] εἶεν] εἶναι Trinc.
[d] οὓς ἡγ.] ὡς ἡγ. Trinc.

εἴπῃς, ἔφη. [c] Ἀλλὰ πειράσομαι, ἦν δ' ἐγώ· σὺ μέντοι οὐχ ὅμοιον πρᾶγμα τῷ αὐτῷ λόγῳ ἤρου. Πῶς; ἔφη. Ἰατροὶ μὲν, εἶπον, δεινότατοι ἂν γένοιντο, οἳ ἐκ παίδων ἀρξάμενοι πρὸς τὸ μανθάνειν τὴν τέχνην ὡς πλείστοις τε καὶ πονηροτάτοις σώμασιν ὁμιλήσαιεν, καὶ αὐτοὶ πάσας νόσους κάμοιεν, καὶ [f] εἶεν μὴ πάνυ ὑγιεινοὶ φύσει· οὐ γὰρ, οἶμαι, σώματι σῶμα θεραπεύουσιν (οὐ γὰρ ἂν αὐτὰ εἶναι κακὰ ἐνεχώρει ποτὲ καὶ γενέσθαι) ἀλλὰ ψυχῇ σῶμα, ᾗ οὐκ ἐγχωρεῖ κακὴν γενομένην τε καὶ οὖσαν εὖ τι θεραπεύειν. Ὀρθῶς, ἔφη. Δικαστὴς δέ γε, ὦ φίλε, ψυχῇ ψυχῆς ἄρχει, ᾗ οὐκ [g] ἐγχωρεῖ ἐκ νέας ἐν πονηραῖς ψυχαῖς τεθράφθαι τε καὶ ὡμιληκέναι, καὶ πάντα ἀδικήματα αὐτὴν ἠδικηκυῖαν [h] διεξεληλυθέναι, ὥστε ὀξέως ἀφ' ἑαυτῆς τεκμαίρεσθαι τὰ τῶν ἄλλων ἀδικήματα, οἷον κατὰ σῶμα νόσους· ἀλλ' ἄπειρον αὐτὴν καὶ ἀκέραιον δεῖ κακῶν ἠθῶν νέαν οὖσαν γεγονέναι, εἰ μέλλει καλὴ κἀγαθὴ οὖσα κρίνειν ὑγιῶς τὰ δίκαια. Διὸ δὴ καὶ εὐήθεις νέοι ὄντες οἱ ἐπιεικεῖς φαίνονται, καὶ εὐεξαπάτητοι ὑπὸ τῶν ἀδίκων, ἅτε οὐκ ἔχοντες ἐν αὑτοῖς παραδείγματα [i] ὁμοιοπαθῆ τοῖς πονηροῖς. Καὶ μὲν δὴ, ἔφη, σφόδρα γε αὐτὸ πάσχουσι. [k] Τοιγάρτοι, ἦν δ' ἐγὼ, οὐ νέον ἀλλὰ γέροντα δεῖ τὸν ἀγαθὸν δικαστὴν εἶναι, ὀψιμαθῆ γεγονότα τῆς ἀδικίας, οἷόν ἐστιν, οὐκ [l] οἰκείαν ἐν τῇ αὑτοῦ ψυχῇ ἐνοῦσαν ᾐσθημένον, ἀλλ' ἀλλοτρίαν ἐν ἀλλοτρίαις [m] μεμελετηκότα ἐν πολλῷ χρόνῳ δεῖ αἰσθάνεσθαι, οἷον πέφυκε κακὸν, ἐπιστήμῃ, οὐκ ἐμπειρίᾳ οἰκείᾳ κεχρημένον. Γενναιότατος γοῦν, ἔφη, ἔοικεν εἶναι ὁ τοιοῦτος δικαστής. Καὶ ἀγαθὸς, ἦν δ' ἐγὼ, ὃ σὺ ἐρωτᾷς. Ὁ γὰρ ἔχων ψυχὴν ἀγαθὴν, ἀγαθός· ὁ δὲ δεινὸς ἐκεῖνος καὶ [n] κα-

[c] ἀλλὰ πειράσομαι—πῶς ἔφη om. Trinc. ubi mox om. οἱ.
[f] εἶεν] εἶναι Trinc.
[g] ἐγχώρει] ἐνχώρει Tr. et mox νέα.
[h] διεξεληλυθέναι om. N. Trinc.
[i] ὁμοιοπαθῆ] ὁμοπαθῆ Trinc.
[k] τοι γάρ τοι] τῷ τοι Trinc.
[l] οἰκείαν] οἰκίαν Trinc.
[m] μεμελετηκότα] μεμεληκότα Tr.
[n] κακύποπτος] ταχύποπτος A.

χύποπτος, [o] [ὁ] πόλλ᾽ αὐτὸς [p] ἠδικηκὼς, καὶ πανοῦργός τε καὶ σοφὸς οἰόμενος εἶναι, ὅτ᾽ ἂν μὲν [q] ὁμοίοις ὁμιλῇ, δεινὸς φαίνεται, ἐξευλαβούμενος, πρὸς τὰ ἐν αὐτῷ παραδείγματα ἀποσκοπῶν· ὅτ᾽ ἂν δὲ ἀγαθοῖς καὶ πρεσβυτέροις ἤδη πλησιάσῃ, ἀβέλτερος αὖ φαίνεται ἀπιστῶν παρὰ [r] καιρὸν, καὶ ἀγνοῶν ὑγιὲς ἦθος, ἅτε οὐκ ἔχων [s] παραδείγματα τοῦ τοιούτου· πλεονάκις [t] δὲ πονηροῖς ἢ [v] χρηστοῖς ἐντυγχάνων, σοφώτερος ἢ ἀμαθέστερος δοκεῖ εἶναι αὑτῷ τε καὶ ἄλλοις. [w] Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη, ἀληθῆ. Οὐ τοίνυν, ἦν δ᾽ ἐγὼ, τοιοῦτον χρὴ τὸν δικαστὴν ζητεῖν τὸν ἀγαθόν τε καὶ σοφὸν, ἀλλὰ τὸν πρότερον· πονηρία μὲν γὰρ ἀρετήν τε καὶ αὑτὴν οὔ ποτ᾽ ἂν γνοίη· ἀρετὴ δὲ φύσεως παιδευομένης χρόνῳ ἅμα αὑτῆς τε καὶ πονηρίας ἐπιστήμην λήψεται· σοφὸς οὖν οὗτος, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ, ἀλλ᾽ οὐχ ὁ κακὸς [x] γίγνεται. Καὶ ἐμοὶ, ἔφη, ξυνδοκεῖ. Οὐκ οὖν καὶ ἰατρικὴν, οἵαν εἴπομεν, μετὰ τῆς τοιαύτης δικαστικῆς κατὰ πόλιν νομοθετήσεις, αἳ τῶν πολιτῶν σοι τοὺς μὲν εὐφυεῖς τὰ σώματα καὶ τὰς ψυχὰς θεραπεύουσι, τοὺς δὲ μὴ, ὅσοι μὲν κατὰ τὸ σῶμα 319
[y] τοιοῦτοι, ἀποθνήσκειν ἐάσουσι, τοὺς δὲ κατὰ τὴν ψυχὴν κακοφυεῖς τε καὶ ἀνιάτους καὶ αὐτοὶ ἀποκτενοῦσι; Τὸ γοῦν ἄριστον, ἔφη, αὐτοῖς τε τοῖς πάσχουσι καὶ τῇ πόλει οὕτω πέφανται.

97 [a] Ὀβρίμου ὑπὲρ Σεβήρου.

[b] Πολλὰ γὰρ αὐτὰ μὲν καθ᾽ ἑαυτὰ λεγόμενα ἕτερα ἔδοξε, συγκριθέντα δὲ ταῖς αἰτίαις [c] ἀλλοιότερα ἐνομίσθη.

[o] ὁ πόλλ᾽] ὁ om. A. B. Trinc.
[p] ἀδικηκὼς] ἠδίκηκε B.
[q] ὁμοίοις] ἐν τοῖς ὁμοίοις A. B.
[r] καιρὸν] λῆρον A. B. Trinc.
[s] παραδείγματα τοῦ] παραδείγματος A. B. Trinc.
[t] δὲ] τε A. B. Trinc.
[v] χρηστοῖς] σοφοῖς Gesn. marg.
[w] παντάπασι usque ad fin. om. A. B.
[x] γίγνεται] τι γίγνεται Trinc. et mox om. τῆς. Supra ἀλλὰ pro ἅμα Trinc.
[y] τοιοῦτοι] τοιοῦτον Trinc.

97.

[a] Sic A. Trinc.
[b] πολλὰ γὰρ] πολλὰ μὲν A. B.
[c] ἀλλοιότερα] ἀλλοιώτερα A.

98 [a] Δημοσθένους Ὀλυνθιακῶν β.

Τηνικαῦτα δὲ ἀπ' αὐτῶν τῶν ἔργων κρίναντας, τοὺς μὲν ἀξίους ἐπαίνου τιμᾶν, τοὺς δὲ ἀδικοῦντας κολάζειν.

99 [a] Ἐκ τοῦ Πλουτάρχου Πρὸς ἡγεμόνα ἀπαίδευτον.

Ὁ δὲ ἐκ φιλοσοφίας τῷ ἄρχοντι πάρεδρος καὶ φύλαξ ἐγκατοικισθεὶς λόγος, ὥσπερ εὐεξίας, τῆς δυνάμεως τὸ ἐπισφαλὲς ἀφαιρῶν, ἀπολείπει τὸ ὑγιαῖνον. Ἀλλὰ νοῦν [b] οὐκ ἔχοντες οἱ πολλοὶ τῶν βασιλέων καὶ ἀρχόντων μιμοῦνται τοὺς ἀτέχνους ἀνδριαντοποιοὺς, οἳ νομίζουσι μεγάλους [c] φαίνεσθαι τοὺς κολοσσοὺς, ἂν διαβεβηκότας σφόδρα καὶ διατεταμένους καὶ [d] κεχηνότας πλάσωσι. Καὶ γὰρ οὗτοι βαρύτητι φωνῆς, καὶ βλέμματος [e] τραχύτητι, καὶ δυσκολίᾳ τρόπων, καὶ ἀμιξίᾳ διαίτης, ὄγκον οἰκονομίας καὶ σεμνότητα μιμεῖσθαι δοκοῦσι.

100 [a] Ἐν τῷ αὐτῷ.

Δεῖ δὲ ὥσπερ ὁ κανὼν αὐτὸς [b] ἀστραβὴς γενόμενος καὶ ἀδιάστροφος οὕτως [c] ἀπευθύνει τὰ λοιπὰ τῇ πρὸς αὐτὸν ἐφαρμογῇ καὶ παραθέσει συνεξομοιῶν, παραπλησίως τὸν ἄρχοντα πρῶτον ἀρχὴν κτησάμενον ἐν ἑαυτῷ, καὶ κατευθύναντα τὴν ψυχὴν, καὶ καταστησάμενον τὸ ἦθος, οὕτω συναρμόττειν τὸ ὑπήκοον· οὔτε γὰρ πίπτοντος τρέχειν, [d] ἢ τάττειν ἀτακτοῦντος, ἢ ἄρχειν μὴ ἀρχομένου.

101 [a] Ἐν τῷ αὐτῷ.

Ἀλλὰ τῶν τοιούτων καὶ τοσούτων, ἃ θεοὶ χαρίζονται, δώ-

98.
[a] Sic A. Scil. p. 26, 1. Simpl. Δημοσθένους Trinc.

99.
[a] Sic A. Scil. p. 779. F. Deest lemma Trinc.
[b] οὐκ ἔχοντες] deest οὐκ A. B.
[c] φαίνεσθαι] φανεῖσθαι A. ex em.
[d] κεχηνότας] διακεχηνότας B. Mox πλάσσωσι Trinc.
[e] τραχύτητι] ταχύτητι A.

100.
[a] Sic A. Scil. p. 780. B.
[b] ἀστραβὴς] ἀστραβὸς A. m. p.
[c] ἀπευθύνει] ἐπευθύνει A. m. p.
[d] ἢ τάττειν] οὔτε τάττειν A. ex em. B.

101.
[a] Sic A. Scil. p. 780. E.

ρων καὶ ἀγαθῶν οὐκ ἔστιν ἀπόλαυσις οὐδὲ χρῆσις ὀρθὴ, δίχα νόμου καὶ δίκης καὶ ἄρχοντος. Δίκη μὲν οὖν νόμου τέλος ἐστὶ, νόμος δὲ ἄρχοντος ἔργον, ἄρχων δὲ εἰκὼν θεοῦ τοῦ πάντα κοσμοῦντος.

102 [a] Ἐν τῷ αὐτῷ.

Ἐν μὲν τοῖς ταπεινοῖς καὶ ἀσθενέσι καὶ ἰδιώταις τῷ ἀδυνάτῳ δεδεμένον τὸ ἀνόητον, εἰς τὸ † ἁμαρτάνειν, ὥσπερ ἐν ὀνείρασι φαύλοις, τοῖς πάθεσι τὴν ψυχὴν διαταράττει συνεξαναστῆναι [b] ταῖς ἐπιθυμίαις μὴ [c] δυναμένην· ἡ δὲ ἐξουσία παραλαβοῦσα τὴν κακίαν νεῦρα τοῖς πάθεσι προστίθησι. Καὶ τὸ Διονυσίου ἀληθές ἐστιν· ἔφη γὰρ [d] ἀπολαύειν μάλιστα τῆς ἀρχῆς ὅτ' ἂν ταχέως, ὃ βούλεται, ποιῇ. Μέγας οὖν ὁ κίνδυνος βουλεύσασθαι [e] ἃ μὴ δεῖ τὸν ἃ βούλεται ποιεῖν δυνάμενον. [f] Ὀξὺν ἡ κακία τῆς ἐξουσίας δρόμον ἔχουσα πᾶν πάθος ἐξωθεῖ, ποιοῦσα τὴν ὀργὴν, [g] φθόνον· τὸν ἔρωτα, [h] μοιχείαν· τὴν πλεονεξίαν, [i] δήμευσιν· ἐὰν μὴ βάρος ἔχων ὁ λόγος [k] ἐπιθλίβῃ καὶ πιέζῃ τὴν ἐξουσίαν.

103 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Πολιτικοῦ.

Τὰ μὲν γὰρ σωφρόνων ἀρχόντων ἤθη σφόδρα μὲν εὐλαβῆ καὶ δίκαια καὶ σωτήρια, δριμύτητος δὲ καί τινος ἰταμότητος ὀξείας καὶ πρακτικῆς ἐνδεῖται. Δοκεῖ γοῦν δή.

104 [a] Πλάτωνος Νόμων δωδεκάτῳ.

Πρὸς ἃ πάντα χρὴ τὸν μέλλοντα δικαστὴν ἴσον ἔσεσθαι 320

102.

[a] Sic A. Scil. p. 782. B.

[b] τῆς ἐπιθυμίας] ταῖς ἐπιθυμίαις A. B. ταῖς Gesn. marg.

[c] δυναμένην] Alias cohæret sequentibus. Gesner. Sic A. δυναμένη Trinc.

[d] ἀπολαύειν] ἀπολαβεῖν A.

[e] ἃ μὴ δεῖ] ἃ δῆ Trinc.

[f] ὀξὺ ἡ] ὀξὺ δὲ ἡ B. A. m. sec. Dedi ὀξύν.

[g] φθόνον] Malim φόνον. Gesner.

[h] μοιχείαν] μοιχεία Trinc.

[i] δήμευσιν] δημεύσειν A.

[k] ἐπιθλίβῃ καὶ πιέζῃ] καὶ θλίψει πιέξῃ A. B.

103.

[a] Sic A. Scil. p. 311. A. Deest locus Trinc.

104.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 957.

[b] κατὰ δίκην βλέπειν τε καὶ κεκτημένον γράμματα αὐτῶν πέρι μανθάνειν· [c] πάντων γὰρ μαθημάτων [d] κυριώτατον μανθάνοντα βελτίω γίγνεσθαι [e] τὰ περὶ τοὺς νόμους κείμενα, [f] εἴπερ ὀρθῶς εἴη τεθέντα, γίγνοιτ' ἄν, ἢ μάτην τοὔνομα [g] νῷ προσῆκον κέκτητ' ἂν [h] ὁ θεῖος ἡμῖν καὶ θαυμαστὸς νόμος· καὶ δὴ καὶ τῶν ἄλλων λόγων, ὅσοι τε ἐν [i] ποιήμασιν ἔπαινοι καὶ ψόγοι περί τινων λέγονται, καὶ ὅσοι καταλογάδην, εἴτ' ἐν γράμμασιν εἴτε καθ' ἡμέραν ἐν ταῖς ἄλλαις πάσαις ξυνουσίαις διὰ φιλονεικίας τε ἀμφισβητοῦνται, καὶ διὰ ξυγχωρήσεων ἔστιν ὅτε καὶ μάλα ματαίων, τούτων πάντων ἂν βάσανος εἴη σαφὴς τὰ τοῦ νομοθέτου γράμματα· ἃ [k] δεῖ κεκτημένον ἐν αὑτῷ, καθάπερ ἀλεξιφάρμακα τῶν ἄλλων λόγων, τὸν ἀγαθὸν δικαστὴν, αὑτόν τε ὀρθοῦν [l] καὶ αὖ τὴν πόλιν, τοῖς μὲν ἀγαθοῖς [m] μονὰς τῶν δικαίων καὶ ἐπαύξησιν παρασκευάζοντα, τοῖς δὲ κακοῖς ἐξ ἀμαθίας καὶ ἀκολασίας καὶ δειλίας καὶ ξυλλήβδην πάσης ἀδικίας εἰς τὸ δυνατὸν [n] μεταβολὴν, ὅσοις [o] ἰάσιμοι [p] δόξαι τῶν κακῶν, [q] οἷσι δὲ ὄντως ἐπικεκλωσμέναι, θάνατον ἴαμα ταῖς οὕτω διατεθείσαις ψυχαῖς [r] διανέμοντες, (ὃ δικαίως [s] εἴη πολλάκις ἂν εἰρημένον) [t] ἄξιοι ἐπαίνου [v] γίγνοιντ' ἂν τῇ πάσῃ πόλει τοιοῦτοι δικασταὶ καὶ δικαστῶν ἡγεμόνες.

[b] καταδίκην] κατὰ δίκην B.
[c] πάντων γὰρ] πάντων μὲν γὰρ A. B.
[d] κυριότατα τοῦ τὸν] κυριω^τ^ A. κυριώτατον Trinc.
[e] περὶ] τὰ περὶ A.
[f] ἃ εἴπερ] ἃ om. A. Trinc.
[g] νῷ] ᾧ A. Trinc.
[h] ἡμῖν ὁ θεῖος] ὁ θεῖος ἡμῖν A.
[i] ποιήμασιν] ποιήσει καὶ ποιήμασιν B.
[k] δεῖ κεκτημένων] δὴ κεκτημένον A. B. κεκτημένον Trinc.
[l] καὶ τὴν] καὶ αὖ τὴν A. καὶ αὐτὴν Trinc.
[m] μόνοις] μονὰς A. Gesn. marg.
[n] μεταβολὴ] μεταβαλεῖν Gesn. marg. Dedi μεταβολὴν cum Platone.
[o] ἰάσιμοι] ἰάσιμον B. ἰάσιμα Tr.
[p] δόξαι] δόξει A. Trinc.
[q] οἷσι δὲ ὄντως ἐπικεκλωσμέναι] οἷς ἦν δεόντος (δεόντως B. Trinc.) ἐπικεκλωμένη A. B. ἐπικεκλώμεναι Tr.
[r] διανέμοντες] διανέμοντα B.
[s] ἂν εἴη πολλάκις] εἴη πολλάκις ἂν A. ἂν ἐ. π. ἂν Trinc.
[t] ἄξιοι] ἀξίου A. ἄξιον Trinc.
[v] γίγνοιντ'] γίγνοιτ' Trinc.

105 [a] Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τῆς πρὸς Δίωνα Ἐπιστολῆς.

Ἐνθυμοῦ δὲ καὶ ὅτι δοκεῖς τισιν ἐνδεεστέρως τοῦ προσήκοντος [b] θεραπευτικὸς εἶναι. [c] Μὴ οὖν λανθανέτω σε ὅτι [d] διὰ τοῦ ἀρέσκειν τοῖς ἀνθρώποις [e] καὶ τὸ πράττειν ἐστίν· ἡ δ' αὐθάδεια ἐρημίας ξύνοικος.

106 [a] Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ Οἰκονομικοῦ.

Ἐγὼ δὲ καὶ τοῦτο ἡγοῦμαι μέγα τεκμήριον [b] ἄρχοντος [c] ἀρετῆς εἶναι, ᾧ ἂν ἑκόντες ἕπωνται, καὶ ἐν τοῖς δεινοῖς παραμένειν ἐθέλωσιν.

107 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Πολιτικοῦ.

Ἴθι δὴ καὶ τὴν τῶν δικαστῶν [b] τῶν ὀρθῶς δικαζόντων θεασώμεθα δύναμιν. Πάνυ μὲν οὖν. Ἆρ' οὖν ἐπὶ πλέον τὶ δύναται τοῦ περὶ τὰ ξυμβόλαια πάνθ' ὅσα κεῖται νόμιμα παρὰ νομοθέτου βασιλέως [c] παραλαβοῦσα κρίνειν, εἰς ἐκεῖνα σκοποῦσα τά τε δίκαια ταχθέντ' εἶναι καὶ ἄδικα, τὴν αὐτῆς ἰδίαν ἀρετὴν παρεχομένη, τοῦ [d] μήθ' ὑπό τινων δώρων, μήθ' ὑπὸ φόβων, μήτ' οἴκτων, μήθ' ὑπό τινος ἄλλης ἔχθρας [e] μήτε φιλίας ἡττηθεῖσα παρὰ τὴν τοῦ νομοθέτου τάξιν ἐθέλειν [f] ἂν τὰ ἀλλήλων ἐγκλήματα διαιρεῖν; Οὐκ· ἀλλὰ σχεδὸν ὅσον εἴρηκας, ταύτης ἐστὶ τῆς δυνάμεως ἔργον.

108 [a] Ξενοφῶντος ἐν τῷ ὀγδόῳ τῆς Κύρου παιδείας.

[b] Πολλάκις μὲν δή, [c] ὦ ἄνδρες, καὶ ἄλλοτε [d] κατενόησα,

105.

[a] Sic A. Scil. p. 321. B. Deest lemma Trinc.

[b] θεραπευτικὸς] θεραπευτικῶς (οι supra) A.

[c] μὴ] καὶ μὴ A. B.

[d] διὰ τοῦ] διὰ τὸ A. B.

[e] καὶ] μὴ καὶ A.

106.

[a] Sic A. Scil. IV. 19. Simpl. Ξενοφῶντος Tr.

[b] ἄρχοντος] ἄρχεται (οντος supra) A.

[c] ἀρετῆς] ἀρετήν Trinc.

107.

[a] Sic A. Scil. p. 305. B. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] τῶν] τὴν τῶν B.

[c] παραλαβοῦσα] παραλαμβοῦσα Trinc.

[d] μήτ'—μήθ'] μηθὲς bis A.

[e] μήτε] μηδὲ A. B.

[f] ἂν τὰ] ἀντὶ A. ἀντ' Trinc.

108.

[a] Sic A. Scil. VIII. 1, 1. Simpl. Ξενοφῶντος Trinc.

[b] Πολλάκις] πολλοὺς A. B.

[c] ὦ ἀνδρὲς] ὧδε Trinc.

[d] κατενόησα] κατενόησαν B.

ὅτι ἄρχων ἀγαθὸς οὐδὲν διαφέρει πατρὸς ἀγαθοῦ. Οἵ τε γὰρ πατέρες προνοοῦσι τῶν παίδων, ὅπως μήποτε αὐτοὺς τἀγαθὰ ἐπιλείψῃ· [c] Κῦρός τε μοι δοκεῖ νῦν συμβουλεύειν ἡμῖν ἀφ᾽ ὧν ἂν μάλιστα εὐδαιμονοῦντες διατελοίημεν.

109 [a] Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ Ἱέρωνος.

Ἐπιμέλειαί γε [b] μέντοι μοι δοκοῦσιν αἱ μὲν πάνυ πρὸς
ἔχθραν ἄγειν, αἱ δὲ πάνυ διὰ χαρίτων εἶναι. Τὸ μὲν γὰρ
διδάσκειν τε ἅ ἐστι βέλτιστα, καὶ τὸν κάλλιστα ταῦτα
[c] ἐξεργαζόμενον ἐπαινεῖν καὶ τιμᾶν, αὕτη μὲν ἡ ἐπιμέλεια
διὰ χαρίτων γίγνεται· τὸ δὲ [d] τὸν ἐνδεῶς τι ποιοῦντα
λοιδορεῖν τε καὶ ἀναγκάζειν καὶ ζημιοῦν καὶ κολάζειν, 321
ταῦτα δ᾽ ἀνάγκη δι᾽ ἀπεχθείας μᾶλλον γίγνεσθαι. [e] Ἐγὼ
οὖν φημι ἀνδρὶ ἄρχοντι τὸ μὲν ἀνάγκης δεόμενον ἄλλοις
[f] προστακτέον εἶναι κολάζειν, τὸ δὲ τὰ ἆθλα ἀποδιδόναι δι᾽
ἑαυτοῦ ποιητέον. Ὡς δὲ ταῦτα καλῶς ἔχει μαρτυρεῖ τὰ γιγνόμενα. Καὶ γὰρ ὅτ᾽ ἂν χοροὺς βουλώμεθα ἡμῖν ἀγωνίζεσθαι, ἆθλα μὲν ὁ ἄρχων [g] προτίθησιν, ἀθροίζειν δὲ αὐτοὺς [h] προστέτακται χορηγοῖς, καὶ ἄλλοις διδάσκειν, καὶ ἀνάγκην προστιθέναι τοῖς ἐνδεῶς τι ποιοῦσιν. Οὐκ οὖν εὐθὺς ἐν τούτοις [i] τὰ μὲν [k] ἐπιχάριτα διὰ τοῦ ἄρχοντος ἐγένετο, τὰ δὲ ἀντίτυπα δι᾽ [l] ἄλλων; Τί οὖν κωλύει καὶ τἄλλα τὰ πολιτικὰ οὕτω περαίνεσθαι; [[m] Διῄρηνται μὲν γὰρ ἅπασαι αἱ

[c] κῦρος] κύριος Trinc.

109.

[a] Sic A. Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τῶν Ἱέρωνος. Trinc. Scil. c. 9.

[b] μέν] μέντοι A. B.

[c] ἐξεργαζόμενον] ἐργαζόμενον A. B. Mox καὶ om. Trinc.

[d] τὸν — ποιοῦντα] τῶν — ποιούντων A. B.

[e] ἐγὼ οὖν] ἔγωγε οὖν A. B.

[f] προστακτέον] προστατέον Trinc. Mox τὰ om. Trinc.

[g] προτίθησιν] προστίθησιν A.

[h] προστέτακται] προτέτακται A. Trinc.

[i] τὰ μὲν ἐπιχάριτα] τὸ μὲν ἐπίχαρι A. m. s. Gesn. marg. B.

[k] τὰ m. sec. A.

[l] ἄλλων] ἄλλου A. Sequentia usque ad fin. om. A. B.

[m] διῄρηνται usque ad χοροῖς om. Trinc.

πόλεις, αἱ μὲν κατὰ φυλὰς, αἱ δὲ κατὰ μοίρας, αἱ δὲ κατὰ λόχους, καὶ ἄρχοντες ἐφ᾽ ἑκάστῳ μέρει ἐφεστήκασι· οὐκ οὖν εἴ τις καὶ τούτοις ὥσπερ τοῖς χοροῖς] καὶ ἆθλα προτεθείη εὐταξίας, εὐοπλίας, ἱππικῆς, καὶ ἀλκῆς ἐν τῷ πολέμῳ, καὶ δικαιοσύνης ἐν τοῖς [n] συμβόλοις, εἰκὸς καὶ ταῦτα πάντα διὰ φιλονεικίας [o] εὐτόνως ἀσκεῖσθαι; [p] Καὶ νὴ Δία, ὁρμῷντό γ᾽ ἂν θᾶσσον ὅπου δέοι τιμῆς ὀρεγόμενοι, καὶ χρήματα θᾶσσον ἂν εἰσφέροιντο, ὁπότε τούτου καιρὸς εἴη, καὶ τὸ [q] πάντων γε χρησιμώτατον, ἥκιστα δὲ εἰθισμένον διὰ φιλονεικίας πράσσεσθαι, ἡ γεωργία καὶ αὕτη ἂν πολὺ ἐπιδοίη, εἴ τις ἆθλα [r] προτιθείη [[s] κατ᾽ ἀγροὺς ἢ κατὰ κώμας] τοῖς [t] μάλιστα τὴν γῆν ἐξεργαζομένοις, καὶ τοῖς εἰς τοῦτο τῶν πολιτῶν ἐρρωμένως τρεπομένοις πολλὰ ἂν ἀγαθὰ περαίνοιτο· καὶ γὰρ πρόσοδοι αὔξαιντ᾽ ἂν, καὶ ἡ σωφροσύνη πολὺ μᾶλλον σὺν τῇ ἀσχολίᾳ συμπαρομαρτοῖ, καὶ μὴν κακουργίαι γε ἧσσον τοῖς ἐνεργοῖς ἐμφύονται. [[v] Εἰ δὲ καὶ ἐμπορία ὠφελεῖ τι πόλιν, τιμώμενος ἂν ὁ πλεῖστα τοῦτο ποιῶν καὶ ἐμπόρους ἂν πλείους ἀγείροι· εἰ δὲ φανερὸν γένοιτο, ὅτι καὶ ὁ πρόσοδόν τινα ἄλυπον ἐξευρίσκων τῇ πόλει τιμήσεται, οὐδ᾽ αὕτη ἂν ἡ σκέψις ἀργοῖτο.] [w] Ὡς δὲ συνελόντι εἰπεῖν, εἰ καὶ κατὰ πάντων ἐμφανὲς εἴη, ὅτι ἀγαθόν τις εἰσηγούμενος οὐκ ἀτίμητος ἔσται, πολλοὺς ἂν καὶ τοῦτο ἐξορμήσειεν ἔργον ποιεῖσθαι τὸ σκοπεῖσθαι τὶ ἀγαθόν. Καὶ ὅτ᾽ ἂν πολλοῖς περὶ τῶν ὠφελίμων [x] μέλῃ, ἀνάγκη εὑρίσκεσθαι μᾶλλον καὶ [y] ἐπιτελεῖσθαι.

[n] συμβόλοις] συμβολαίοις Gesn. marg.
[o] εὐτόνως] ἐντόνως Trinc.
[p] καὶ νὴ δία] καὶ ναὶ μὰ δία Gesn. marg.
[q] πάντων] πάντων γε Trinc.
[r] προτιθείη] προστιθείη N.
[s] κατ᾽ ἀγροὺς ἢ κατὰ κώμας om. N. Trinc.
[t] μάλιστα] κάλλιστα Gesn. marg.
[v] εἰ δὲ καὶ—ἀργοῖτο om. N. Tr.
[w] ὡς καὶ σ.] ὡς δὲ σ. Trinc.
[x] μέλῃ] μέλλῃ N. Trinc.
[y] ἐπιτελεῖσθαι] ἐπιμελεῖσθαι Gesn. marg.

110 [a] Λυσίου.

Εἰ μὲν οἷόντ' ἦν ἐκ τῶν προτέρων λόγων τὰ δίκαια [b] γιγνώσκειν, οὐδὲν ἂν ἔδει τοὺς φεύγοντας ἀπολογεῖσθαι, ἀλλ' [c] ἀκριτὶ ἀποθνήσκειν· ἐπεὶ δὲ τὰ ψευδῆ λέγειν δυνατόν ἐστι τοῖς κατηγοροῦσι, δίκαιον ἀμφοτέρων τῶν ἀντιδίκων ἀκούσαντας, τηνικαῦτα τὴν περὶ τοῦ δικαίου ψῆφον φέρειν.

111 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Προσήκει δ' ἡμῖν περὶ φυγῆς δικάζουσι μὴ παρανομεῖν, ἀλλ' εὐσεβεῖν· μηδὲ θορύβῳ τὰ πράγματα κρίνειν, ἀλλὰ σιωπῇ τὰ δίκαια [b] γιγνώσκειν.

112 [a] Πυθαγόρου.

Οἱ μὴ κολάζοντες τοὺς κακοὺς βούλονται ἀδικεῖσθαι τοὺς ἀγαθούς.

ΟΤΙ ΚΑΛΛΙΣΤΟΝ Η ΜΟΝΑΡΧΙΑ. ΜΖ. 322

1 [a] Ὁμήρου.

Οὐκ ἀγαθὸν πολυκοιρανίη, εἷς κοίρανος ἔστω,
εἷς βασιλεύς.

2 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

[b] Θυμὸς δὲ μέγας ἐστὶ διοτρεφέων βασιλήων·
τιμὴ δ' ἐκ Διός ἐστι, φιλεῖ δέ ἑ μητιέτα Ζεύς.

3 [a] Εὐριπίδου Φοινίσσαις.

Ἐγὼ γὰρ οὐδὲν, μῆτερ, ἀποκρύψας ἐρῶ,
ἄστρων ἂν ἔλθοιμ' αἰθέρος πρὸς ἀντολὰς,

110.
[a] Sic A. Trinc. Fr. p. 37.
[b] γινώσκειν] γιγνώσκειν A.
[c] ἀκριτὶ] ἀκρατὶ A.

111.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] γινώσκειν] γιγνώσκειν A.

112.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

1.
[a] Sic A. Trinc. Scil. Il. B. 204.

2.
[a] Sic A. Scil. Il. B. 196. Deest lemma Trinc.
[b] Θυμὸς γὰρ] Θυμὸς δὲ A. B. Deest particula Trinc.

3.
[a] Sic A. Scil. v. 506. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

καὶ γῆς ἔνερθε, δυνατὸς ὢν δρᾶσαι τάδε,
τὴν θεῶν μεγίστην ὥστ' ἔχειν τυραννίδα.

4 [a] Τοῦ αὐτοῦ Φοινίσσαις.

Εἴπερ γὰρ ἀδικεῖν χρὴ, τυραννίδος πέρι
κάλλιστον ἀδικεῖν, τἄλλα δ' εὐσεβεῖν χρεών.

5 [a] Τοῦ αὐτοῦ Ἀρχελάῳ.

[b] Τυραννίδ', ἡ θεῶν δευτέρα νομίζεται·
τὸ μὴ θανεῖν γὰρ οὐκ ἔχει, [c] τὰ δ' ἄλλ' ἔχει.

6 [a] Τοῦ αὐτοῦ Αἰγεῖ.

Ἀνδρὸς δ' ὑπ' ἐσθλοῦ καὶ τυραννεῖσθαι [b] καλόν.

7 [a] Ἡσίοδος ἐν Θεογονίᾳ.

Ἐκ δὲ Διὸς βασιλῆες· ὁ δ' ὄλβιος, ὅντινα μοῦσαι
[b] φιλῶνται· γλυκερή οἱ ἀπὸ στόματος ῥέει αὐδή.

8 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Κλειτοφῶντος.

[b] [Ὅστις τῇ ψυχῇ μὴ ἐπίσταται χρῆσθαι, τῷ τοιούτῳ ἄμεινον δούλῳ ἢ ἐλευθέρῳ διάγειν τὸν βίον.] Ἔστιν ἄρα καθάπερ πλοίου παραδόντι τὰ πηδάλια τῆς διανοίας ἄλλῳ τῷ μαθόντι τὴν [c] τῶν ἀνθρώπων κυβερνητικὴν, ἣν δὴ σὺ [d] πολιτικὴν, ὦ Σώκρατες, ἐπονομάζεις πολλάκις, τὴν αὐτὴν δὲ ταύτην δικαστικήν τε καὶ δικαιοσύνην, ὡς ἔστι, λέγων.

4.

[a] Sic A. Scil. v. 527. Deest lemma Trinc.

5.

[a] Sic A. Scil. fr. 9. Deest locus Trinc.

[b] τυραννὶς εἶναι θεῶν βίος] τυραννίδα ἡ θεῶν β. Sic A. Videatur annotatio nostra in Schol. Hesiod. Theogon. 126. Deest fragmentum Trinc.

[c] τἄλλα δ' ἔχει] τὰ δ' ἄλλ' ἔχει emendavit Grotius.

6.

[a] Sic A. Scil. fr. 6. Deest lemma Trinc. ῶς

[b] καλὸν] καλὸν A. δ' om. Tr. A.

7.

[a] Sic A. Scil. v. 96. Simpl. Ἡσιόδου Trinc.

[b] φιλῶνται] φιλεῦνται B.

8.

[a] Sic A. Scil. p. 408. A. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] ὅστις usque ad βίον om. A. B. Trinc.

[c] τῶν ἀνθρώπων] om. A. Trinc.

[d] πολιτικὴν ὦ σώκρατες] ὦ σώκρατες πολιτικὴν B.

9 [a] Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι.

Αἱ μὲν τοίνυν ὀλιγαρχίαι καὶ δημοκρατίαι τὰς ἰσότητας τοῖς μετέχουσι τῶν πολιτειῶν ζητοῦσι, καὶ τοῦτο εὐδοκιμεῖ [b] παρ' αὐταῖς, ἐὰν ἕτερος ἑτέρου μηδὲν δύνηται πλέον ἔχειν, ὃ τοῖς πονηροῖς συμφέρον ἐστίν. Αἱ δὲ μοναρχίαι πλεῖστον μὲν νέμουσι τῷ βελτίστῳ, [c] δευτέρον δὲ [d] τῷ μετ' ἐκεῖνον, τρίτον δὲ καὶ τετάρτον καὶ τοῖς ἄλλοις κατὰ τὸν αὐτὸν λόγον. Καὶ ταῦτ' εἰ μὴ πανταχοῦ καθέστηκεν, ἀλλὰ τό γε βούλημα τῆς πολιτείας τοιοῦτόν ἐστι.

10 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Καὶ μὴν εἰ δεῖ διορᾶν καὶ τὰς φύσεις τῶν ἀνθρώπων καὶ τὰς πράξεις, ἅπαντες ἂν τὰς τυραννίδας μᾶλλον ὁμολογήσαιεν. Καίτοι τίς οὐκ ἂν εὔξαιτο τῶν εὖ φρονούντων τοιαύτης πολιτείας μετέχειν, ἐν ᾗ μὴ διαλήσει χρηστὸς ὤν, μᾶλλον ἢ φέρεσθαι [b] μετὰ τοῦ πλήθους μὴ γιγνωσκόμενος ὁποῖός τις ἐστίν;

11 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀλλὰ μὴν καὶ πρᾳοτέραν τοσούτῳ [b] δικαίως ἂν [c] αὐτὴν [d] εἶναι κρίναιμεν, ὅσῳ περ ῥᾷόν ἐστιν ἑνὸς ἀνδρὸς γνώμῃ προσέχειν τὸν νοῦν μᾶλλον, ἢ πολλαῖς καὶ παντοδαπαῖς διανοίαις ζητεῖν ἀρέσκειν.

12 Τοῦ αὐτοῦ.

Οἱ μὲν τοίνυν κατ' ἐνιαυτὸν εἰς τὰς ἀρχὰς εἰσιόντες πρότερον ἰδιῶται γίγνονται πρὶν αἰσθέσθαι τι τῶν τῆς πόλεως,

9.

[a] Sic A. Scil. p. 29. Simpl. Ἰσοκράτους Trinc.

[b] παρ' αὐταῖς, ἐὰν μηδὲν ἕτερος ἑτέρου] παρὰ ταῖς ἐὰν ἕτερος ἑτέρου μηδὲν A.

[c] δευτέρῳ—τρίτῳ—τετάρτῳ] δεύτερον—τρίτον—τέταρτον—B. Gesn. marg.

[d] τὸ] τῷ A. B. Mox ἐκεῖνον Trinc.

10.

[a] Sic A. Hoc lemma repetitur ibid. ante nn. 11—18.

[b] μετὰ τοῦ] κατὰ τοῦ Trinc.

11.

[b] δικαίως] Al. additur καὶ δικαιοτέραν. Gesn. marg. et sic B.

[c] αὐτὴν] αὐτῷ (ην) A.

[d] εἶναι κρίναιμεν] κρίνοιμεν B.

καὶ λαβεῖν ἐμπειρίαν αὐτῶν· οἱ δ' ἀεὶ τοῖς αὐτοῖς ἐπιστατοῦντες, ἣν καὶ τὴν φύσιν καταδεεστέραν ἔχωσιν, [b]ἀλλὰ ταῖς ἐμπειρίαις πολὺ τῶν ἄλλων προέχουσιν.

13 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἔπειθ' οἱ μὲν πολλῶν καταμελοῦσιν εἰς ἀλλήλους ἀποβλέποντες, οἱ δ' οὐδενὸς ὀλιγωροῦσιν εἰδότες ὅτι πάντα δεῖ δι' αὐτῶν γίγνεσθαι.

14 Τοῦ αὐτοῦ.

Πρὸς δὲ τούτοις, οἱ μὲν ἐν ταῖς ὀλιγαρχίαις καὶ ταῖς δη- 323
μοκρατίαις διὰ τὰς πρὸς σφᾶς αὐτοὺς [b]φιλονεικίας λυμαίνονται τοῖς κοινοῖς· οἱ δ' ἐν ταῖς μοναρχίαις ὄντες, οὐκ ἔχοντες ὅτῳ φθονήσουσιν, [c]περὶ ἁπάντων, ὡς οἷόν τε ἐστι, τὰ βέλτιστα πράττουσιν.

15 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἔπειθ' οἱ μὲν ὑστεροῦσι τῶν πραγμάτων· τὸν μὲν γὰρ πλεῖστον χρόνον ἐπὶ τοῖς ἰδίοις διατρίβουσιν, ἐπειδ' ἂν δὲ εἰς τὰ συνέδρια συνέλθωσι, πλεονάκις ἄν τις αὐτοὺς εὕροι διαφερομένους ἢ κοινῇ βουλευομένους· οἱ δ' οὔτε συνεδρίων οὔτε χρόνων αὐτοῖς ἀποδεδειγμένων, ἀλλὰ καὶ τὰς ἡμέρας καὶ τὰς νύκτας ἐπὶ ταῖς πράξεσιν ὄντες, οὐκ ἀπολείπονται τῶν καιρῶν, ἀλλ' ἕκαστον ἐν τῷ δέοντι πράττουσιν.

Ἔτι δὲ οἱ μὲν [b][πρὸς ἀλλήλους] δυσμενῶς ἔχουσι, καὶ βούλοιντ' ἂν καὶ [c]τοὺς πρὸ αὐτῶν ἄρχοντας, καὶ τὸν ἐφ' [d]αὐτοῖς ὡς κάκιστα διοικῆσαι τὴν πόλιν, ἵν' ὡς μεγίστην δόξαν αὐτοὶ λαμβάνωσιν· οἱ δὲ διὰ παντὸς τοῦ βίου κύριοι τῶν πραγμάτων ὄντες εἰς [e]ἅπαντα τὸν χρόνον καὶ τὰς εὐνοίας [f]ἔχουσι.

12.
[b] ἀλλὰ ταῖς] ἀλλ' οὖν ταῖς γε B.

14.
[b] φιλονεικίας] φιλοτιμίας Gesn. marg. Supra ἐν om. Trinc.
[c] περὶ] ἢ περὶ A. Trinc.

15.
[b] πρὸς ἀλλήλους om. A. Trinc.
[c] τὴν] τοὺς A. B. Gesn. marg.
[d] αὐτοῖς] ἑαυτοῖς A. B.
[e] ἅπαντα] πάντα B.
[f] ἔχουσι] ὁμοίως ἔχουσι B.

16 Τοῦ αὐτοῦ.

[b] Τὸ δὲ μέγιστον· τοῖς γὰρ κοινοῖς οἱ μὲν ὡς ἰδίοις, οἱ δὲ ὡς ἀλλοτρίοις προσέχουσι τὸν νοῦν, καὶ συμβούλοις χρῶνται περὶ αὐτῶν οἱ μὲν τῶν ἀστῶν τοῖς τολμηροτάτοις, οἱ δὲ ἐξ ἁπάντων ἐκλεξάμενοι τοὺς φρονιμωτάτους· καὶ τιμῶσιν οἱ μὲν τοὺς ἐν τοῖς ὄχλοις εἰπεῖν δυναμένους, [c] [οἱ δὲ τοὺς χρῆσθαι τοῖς πράγμασιν ἐπισταμένους.]

17 Τοῦ αὐτοῦ.

Οὐ μόνον δὲ ἐν τοῖς ἐγκυκλίοις καὶ τοῖς [b] κατὰ τὴν ἡμέραν ἑκάστην γιγνομένοις αἱ μοναρχίαι διαφέρουσιν, ἀλλὰ καὶ τὰς ἐν τῷ πολέμῳ πλεονεξίας ἁπάσας περιειλήφασι. Καὶ γὰρ παρασκευάσασθαι [c] δυνάμεις, καὶ χρήσασθαι ταύταις, ὥστε καὶ λαθεῖν καὶ ὀφθῆναι· καὶ τοὺς μὲν πεῖσαι, τοὺς δὲ βιάσασθαι, [[d] παρὰ δὲ τῶν ἐκπρίασθαι,] τοὺς δὲ ταῖς ἄλλαις θεραπείαις προσαγαγέσθαι, μᾶλλον αἱ τυραννίδες τῶν ἄλλων πολιτειῶν οἷαί τέ εἰσι· καὶ ταῦτα ἐκ τῶν ἔργων ἄν τις οὐχ ἧττον ἢ [e] τῶν λόγων πιστεύσειεν.

18 Τοῦ αὐτοῦ.

Μὴ μόνον δὲ τὰς φύσεις αὐτὰς νομίζετε τοῦ [b] χαλεποὺς ἢ πρᾴους εἶναι τοὺς τυράννους, ἀλλὰ καὶ τὸν τρόπον τὸν τῶν πολιτῶν. Πολλοὶ γὰρ ἤδη διὰ τὴν κακίαν τὴν τῶν ἀρχομένων τραχύτερον ἢ κατὰ τὴν αὑτῶν γνώμην ἄρχειν [c] ἠναγκάσθησαν.

19 [a] Δημοκρίτου.

Φύσει τὸ ἄρχειν οἰκήϊον τῷ κρέσσονι.

16.

[b] μέγιστον] μέγιστον πάντων B.

[c] οἱ δὲ — ἐπισταμένους om. A. Trinc.

17.

[b] καθ' ἡμέραν] κατὰ τὴν ἡμέραν A. Trinc.

[c] δύναμις] δυνάμεις B.

[d] παρὰ δὲ τῶν ἐκπρίασθαι om. A.

[e] τῷ λόγῳ] τῶν λόγων A. B.

18.

ῶς

[b] χαλεποὺς] χαλεπους A.

[c] ἠναγκάσθησαν] ἄρχειν ἠναγκάσθησαν A. B.

19.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

20 [a] Ἐκ τῶν Σερήνου ἀπομνημονευμάτων.

Ὅτε Κροῖσος ἦρχε Λυδῶν, τὸν ἀδελφὸν μεθ' [b] αὑτοῦ κατέ-
στησεν ἄρχοντα· προσελθὼν δέ τις τῶν Λυδῶν, [c] Ὦ βασιλεῦ,
εἶπε, πάντων ἐπὶ γῆς καλῶν ὁ ἥλιος τοῖς ἀνθρώποις αἴτιός
ἐστι, καὶ οὐδὲν ἂν εἴη [d] τῶν ἐπὶ γῆς μὴ τοῦ ἡλίου ἐπιλάμπον-
τος· ἀλλ' εἰ θέλουσι δύο ἥλιοι γενέσθαι, κίνδυνος πάντα
συμφλεχθέντα διαφθαρῆναι. Οὕτως ἕνα μὲν [e] βασιλεύοντα
δέχονται Λυδοὶ, καὶ σωτῆρα πιστεύουσιν εἶναι· δύο δὲ ἅμα 50
οὐκ ἂν ἀνάσχοιντο.

21 [a] Κρισπίνου κατὰ Διονυσίου.

[b] Ὅτι βασιλέως μὲν καὶ τὸ βλέμμα ἀρκεῖ μόνον· κἂν
ἴδῃ μόνον, τὸ ἀληθὲς βεβασάνισται.

22 [a] Ἐκφάντου ἐκ τοῦ Περὶ βασιλείας.

Ἐπὶ δὲ γᾶς ἄνθρωποι ἀπῳκισμένον χρῆμα, καὶ πολὺ τᾶς
[b] καθαρωτέρας φύσιος ἐλαττούμενον, καὶ πολλᾷ τᾷ γᾷ
βαρυνόμενον, ὡς ἀπὸ τᾶς ματρὸς [c] αὐτὸ μόγις [d] ἐπάρθαι,
αἰ μὴ [e] θεομοίρῃ τις ἐμπνοίησις [f] ἐλέῳ ζώῳ συνάψεν αὐτῷ
τῷ [g] κρείσσονι μέρει, δεικνῦσα τὰν ἱερὰν τῷ γεννάτορος πότο-
ψιν, ὡς ἀδύνατον ἐκείναν θεάσασθαι. Ἐν δὲ τᾷ γᾷ καὶ 324
[h] παρ' ἁμῖν, ἀριστοφυέστατον μὲν ἄνθρωπος, [i] θειότερον δὲ ὁ
βασιλεὺς ἐν τᾷ κοινᾷ φύσει πλεονεκτῶν τῷ κρέσσονι· τὸ μὲν

20.

[a] Sic fere A. ubi Σερίνου. Simpl. Ἐκ τῶν Σερίνου Trinc.

[b] αὑτοῦ] ἑαυτοῦ A.

[c] ὦ βασιλεῦ om. A.

[d] τῶν om. A. B.

[e] βασιλέα ὄντα] βασιλεύοντα A. B. Gesn. marg.

21.

[a] Sic A. Simpl. Κρισπίνου Tr.

[b] Habet A. h. l. in marg.

22.

[a] Sic A. Simpl. Ἐκφάντου Trinc.

[b] καθαρωτέρας] καθαρωτάτας B.

[c] αὐτὸ] αὐτῷ Trinc.

[d] ἐπάρθαι] ἐπαρθ,αι A. ἐπάρθια B.

[e] θεομοίρῃ] θεομοίρης A. B. Trinc.

[f] ἐλέῳ] ἐλαίῳ A. B. Subest aliquid corruptelæ. Mox malim αὐτό.

[g] κρείσσονι] κλείσσονι Trinc.

[h] παραμεῖναι] παρὰ μείν A. παρὰ μεῖνα B. παρ' ἁμῶν ut infra Gesn. marg. v. XLVIII. 64.

[i] θειότερος] θειότερον A. B. θειότατος Gesn. marg. θειότατον infra l. l.

σκᾶνος τοῖς λοιποῖς ὅμοιος, οἷα γεγονὼς ἐκ [k] τᾶς αὐτᾶς ὕλας, ὑπὸ τεχνίτα δ' εἰργασμένος λώστω, ὃς [l] ἐτεχνίτευσεν αὐτὸν ἀρχετύπῳ χρώμενος ἑαυτῷ· ὡς εἴθε ἦν τᾶς ἀνθρωπίνας φύσιος δυνατὸν [m] ἀφέλεν, τὸ καὶ πειθοῦς τινος δέεσθαι· τόδε γὰρ τᾶς ἐπιγείω φαυλότατος λείψανον, καθ' ἂν [n] ἐπίκαρον ὂν τὸ ζῶον αὐτᾶς οὐκ ἀμοιρεῖ, [o] αἱ δέ που τις καὶ ἐν αὐτῷ θειότερος, ἢ κατ' ἄλλα συσταίη, ποτ' οὐδὲν ἂν τᾶς πειθοῦς δέοιτο.

23 [a] Πλάτωνος ἐκ τῆς πρὸς τοὺς οἰκείους Δίωνος Ἐπιστολῆς.

Λέγω γὰρ δὴ διαιτητοῦ τινα τρόπον διαλεγόμενος, ὡς δυοῖν τυραννεύσαντί τε καὶ τυραννευθέντι, ὡς ἑνὶ ἑκατέρῳ παλαιὰν ἐμὴν ξυμβουλήν. Καὶ νῦν δὲ ὅ γ' ἐμὸς λόγος ἂν εἴη ξύμβουλος τυράννῳ παντὶ, φεύγειν μὲν τοὔνομά τε καὶ τοὖργον τοῦτο, εἰς βασιλείαν δὲ, εἰ δυνατὸν εἴη, [b] μεταλαβεῖν. Δυνατὸν δὲ, ὡς ἔδειξεν ἔργῳ σοφὸς ἀνὴρ καὶ ἀγαθὸς Λυκοῦργος, ὃς ἰδὼν τὸ τῶν οἰκείων γένος ἐν Ἄργει καὶ Μεσσήνῃ ἐκ βασιλέων εἰς τυράννων δύναμιν ἀφικομένους, καὶ διαφθείραντας [c] ἑαυτούς τε καὶ τὴν πόλιν ἑκατέρους ἑκατέραν, δείσας περὶ τῆς αὑτοῦ πόλεως ἅμα καὶ γένους, φάρμακον ἐπήνεγκε τὴν τῶν γερόντων ἀρχὴν, καὶ τὸν τῶν ἐφόρων [d] δεσμὸν, τῆς βασιλικῆς ἀρχῆς σωτήριον· ὥστε γενεὰς τοσαύτας ἤδη μετ' εὐκλείας σώζεσθαι, νόμος ἐπειδὴ κύριος ἐγένετο [[e] καὶ] βασιλεὺς τῶν ἀνθρώπων, ἀλλ' οὐκ ἄνθρωποι τύραννοι νόμων.

[k] τᾶς αὐτᾶς] τῆς αὐτῆς B. αὐτᾶς om. Trinc.
[l] ἐτεχνίτευσεν αὐτὸν] ἐτεχνήτευσεν ἑαυτὸν A.
[m] ἀφέμεν] ἀφέλεν Gesn. marg. ἀφελεῖν A. B.
[n] ἐπίκηρον] ἐπίκαρον A. B.
[o] αἱ δὲ] αἴ δεί A. αἱ δέ Trinc.

23.
[a] Sic A. Scil. p. 354. A. Simpl. Πλάτωνος Trinc. Mox τε om. Trinc.
[b] μεταλαβεῖν] μεταβαλεῖν B.
[c] ἑαυτοὺς] αὐτοὺς A.
[d] δεσμὸν] δασμὸν Gesn. marg.
[e] καὶ] om. A. Trinc.

[a] Ἡροδότου Ἱστορίας τρίτης Δαρείου δημηγορίας.

Ὀτάνης μὲν ἐκέλευεν [b] ἐς μέσον Πέρσῃσι καταθεῖναι τὰ πρήγματα. Ἐμοὶ δὲ τὰ μὲν εἶπε Μεγάβυζος ἐς τὸ πλῆθος ἔχοντα δοκέει ὀρθῶς λέξαι· τὰ δὲ ἐς ὀλιγαρχίην, οὐκ ὀρθῶς. Τριῶν γὰρ προκειμένων καὶ πάντων [c] τῶν λέγω ἀρίστων ἐόντων, δήμου τε ἀρίστου, καὶ ὀλιγαρχίης, καὶ [d] μονάρχου, πολλῷ τοῦτο προέχειν λέγω· ἀνδρὸς γὰρ ἑνὸς τοῦ ἀρίστου οὐδὲν ἄμεινον ἂν φανείη· γνώμῃ γὰρ τοιαύτῃ χρώμενος [e] ἐπιτροπεύοι ἂν ἀμωμήτως τοῦ πλήθεος, σιγῷτό τε ἂν βουλεύματα ἐπὶ δυσμενέας ἄνδρας οὕτω μάλιστα· ἐν δὲ ὀλιγαρχίῃ, πολλοῖσιν [f] ἀρετὴν ἐπασκέουσιν ἐς τὸ κοινὸν, ἔχθεα ἴδια ἰσχυρὰ φιλέει ἐγγίνεσθαι· [g] αὐτὸς γὰρ ἕκαστος βουλόμενος κορυφαῖος εἶναι γνώμῃσί τε νικᾷν, ἐς ἔχθεα μεγάλα ἀλλήλοισιν ἀπικνέονται, ἐξ ὧν στάσεις ἐγγίνονται· ἐκ δὲ τῶν [h] στάσεων, φόνος· ἐκ δὲ τοῦ φόνου, ἀπέβη εἰς μουναρχίην· καὶ ἐν τούτῳ [i] διέδεξεν, ὅσῳ ἐστὶ τοῦτο ἄριστον. Δήμου τε αὖ ἄρχοντος, ἀδύνατον μὴ οὐ κακότητα ἐγγίνεσθαι· κακότητος τοίνυν ἐγγινομένης ἐς τὰ κοινὰ, ἔχθεα μὲν οὐκ ἐγγίνεται τοῖσι [k] κακοῖσι, φιλίαι δὲ ἰσχυραί· οἱ γὰρ κακοῦντες τὰ κοινὰ [l] συγκύψαντες ποιέουσι· τοῦτο δὲ τοιοῦτο γίνεται, ἐς ὃ ἂν [m] προστάς τις τοῦ δήμου τοὺς τοιούτους παύσῃ· ἐκ δὲ αὐτῶν [n] θαυμάζεται. Οὗτος δὴ ὑπὸ [o] τοῦ δήμου θωυμαζόμενος ἐφάνη ἐὼν μούναρχος· καὶ ἐν τούτῳ δηλοῖ

24.

[a] Sic A. Scil. III. 82. Deest lemma Trinc.

[b] ἐς μέσον] ἐς om. B. Mox δοκέειν Trinc.

[c] τῶν λέγω] τῷ λόγῳ A. B.

[d] μονάρχου] μουνάρχου B.

[e] ἐπιτροπεύοι] ἐπιτροπεύει (οι) A.

[f] ἀρετὴν] ἀρετῆς A.

[g] αὐτὸς] αὐτῶν Gesn. marg.

[h] στασέων] στασίων B.

[i] διέδειξεν] διέδοξεν A. B. διέδεξε Gesn. marg.

[k] κακοῖσι] Al. non legitur κακοῖσι Gesn.

[l] συγκρύψαντες] συγκύψαντες A. Trinc.

[m] προστάτις] προστάς τις A. Gesn. marg.

[n] θαυμάζεται] θωυμάζεται B.

[o] τοῦ δήμου] Articulus om. A.

καὶ οὗτος, ὡς ἡ μοναρχίη κράτιστον. [p] Ἐνὶ δ' ἔπει πάντα 325
συλλαβόντα εἰπεῖν, κόθεν ἡμῖν ἡ ἐλευθερίη ἐγένετο, καὶ τεῦ δόντος; κότερα παρὰ δήμου ἢ ὀλιγαρχίης ἢ μουνάρχου; ἔχω τοίνυν γνώμην ἡμέας ἐλευθερωθέντας διὰ ἕνα ἄνδρα τὸ τοιοῦτο περιστέλλειν· [[q] χωρίς τε τούτου πατρίους νόμους μὴ λύειν ἔχοντας εὖ· οὐ γὰρ ἄμεινον.]

25 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Πολιτικοῦ.

Ἐπιμέλεια δέ γε ἀνθρωπίνης ξυμπάσης κοινωνίας οὐδεμία ἂν [b] ἐθελήσειεν ἑτέρα μᾶλλον καὶ [c] πρότερα τῆς βασιλικῆς φάναι, καὶ κατὰ πάντων ἀνθρώπων ἀρχῆς εἶναι τέχνη. Λέγεις ὀρθῶς. Μετὰ ταῦτα [d] δέ γε, ὦ Σώκρατες, ἆρα ἐννοοῦμεν ὅτι πρὸς αὐτῷ δὴ τῷ τέλει συχνὸν [e] αὖ διημαρτάνετο; Τὸ ποῖον; Τόδε· ὡς ἄρα εἰ καὶ διενοήθημεν ὅτι μάλιστα [f] τῆς δίποδος ἀγέλης εἶναί τινα θρεπτικὴν τέχνην, οὐδέν τι μᾶλλον ἡμᾶς ἔδει βασιλικὴν αὐτὴν εὐθὺς καὶ πολιτικὴν ὡς ἀποτετελεσμένην προσαγορεύειν. Τί μήν; Πρῶτον μὲν ὃ [g] λέγομεν τοὔνομα μετασκευωρήσασθαι πρὸς τὴν ἐπιμέλειαν μᾶλλον προσαγαγόντας, ἢ τὴν τροφήν· ἔπειτα ταύτην τέμνειν· οὐ γὰρ σμικρὰς [h] ἂν ἔχοι τμήσεις ἔτι. Ποίας; Ἧι τε [i] τὸν θεῖον ἂν [k] που [l] διελοίμεθα νομέα χωρὶς, καὶ τὸν ἀνθρώπινον ἐπιμελητήν. Ὀρθῶς. Αὖθις δέ γε τὴν ἀπονεμηθεῖσαν ἐπιμελητικὴν δίχα τέμνειν ἀναγκαῖον ἦν. Τίνι; Τῷ βιαίῳ τε καὶ ἑκουσίῳ. Τί δή; Καὶ ταύτῃ που τὸ πρότερον ἁμαρ-

[p] ἔνι δ' ὑπὸ] ἐνὶ δ' ἐπεὶ Gesn. marg. ἐπὶ pro ὑπὸ A. B.

[q] χωρὶς usque ad ἄμεινον om. A. Trinc.

25.

[a] Sic A. Scil. p. 276. B. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] θελήσειεν] ἐθελήσειεν A. B.

[c] πραοτέρα] πρότερα A. προτέρα Trinc. Mutavi accentum v. ἑτέρα cum ms. Clark. e quo in seq. l. τέχνην.

[d] δέ γε] γε om. A.

[e] αὖ] αὖθις A. B.

[f] τῆς δίποδος] τοῦ δίποδος Trinc.

[g] ἐλέγομεν] λέγομεν A. Trinc.

[h] ἂν ἔχοι] ἀνέχει Trinc.

[i] τὸ θ.] τὸν θ. A. B.

[k] που] πού τε B.

[l] διειλόμεθα] διελοίμεθα A. Tr. Mox τῶν ἀνθρωπίνων Trinc.

τάνοντες, εὐηθέστερα τοῦ δέοντος εἰς [m] ταυτὸν βασιλέα καὶ τύραννον ξυνέθεμεν, ἀνομοιοτάτους ὄντας, αὐτούς τε καὶ τὸν τῆς ἀρχῆς ἑκατέρου τρόπον. Ἀληθῆ.

ΥΠΟΘΗΚΑΙ ΠΕΡΙ ΒΑΣΙΛΕΙΑΣ. ΜΗ.

1 [a] Εὐριπίδου Πλεισθένει.

Δήμῳ δὲ μήτε πᾶν ἀναρτήσῃς κράτος,
μήτ' αὖ κακώσῃς πλοῦτον ἔντιμον τιθείς,
μὴ δ' ἄνδρα δήμῳ πιστὸν ἐκβάλῃς ποτέ,
μὴ δ' αὖξε καιροῦ μεῖζον, οὐ γὰρ ἀσφαλές,
μή σοι τύραννος λαμπρὸς ἐξ αὐτοῦ φανῇ.
[b] κώλυε δ' ἄνδρα παρὰ δίκην τιμώμενον·
πόλει γὰρ εὐτυχοῦντες οἱ κακοὶ νόσος.

2 [a] Εὐριπίδου.

Ἀλλ' οὐ πρέπει τύραννον, ὡς ἐγὼ φρονῶ,
οὐδ' ἄνδρα χρηστὸν νεῖκος αἱρεσθαι κακοῖς·
τιμὴ γὰρ αὕτη τοῖσιν ἀσθενεστέροις.

3 [a] Εὐριπίδου Ἀντιόπης.

Ὁ δ' ἥσυχος φίλοισί τ' ἀσφαλὴς φίλος,
πόλει τ' ἄριστος· μὴ τὰ κινδυνεύματα
αἰνεῖτ'· ἐγὼ γὰρ οὔτε [b] ναυτίλον φιλῶ
τολμῶντα λίαν, οὔτε προστάτην χθονός.

4 [a] Εὐριπίδου Ἀντιγόνης.

Δεῖ τοῖσι πολλοῖς τὸν τύραννον ἁνδάνειν.

[m] ταυτὸν] τὸν αὐτὸν A. B.

1.

[a] Sic A. Scil. fr. 1. Simpl. Εὐριπίδης Trinc.

[b] κώλυε] κόλουε non male conjecit Wakefieldus. Vide supra XLV. 8.

2.

[a] Sic A. fr. inc. 43. Deest lemma Trinc.

3.

[a] Sic A. Scil. fr. 11. Deest lemma Trinc. φίλοισιν A.

[b] ναυτίλον] ναυτίλων Trinc.

4.

[a] Sic A. Scil. fr. 3. Deest lemma Trinc.

5 [a] Εὐριπίδου.

Σοφοὶ τύραννοι τῶν σοφῶν συνουσίᾳ.

6 [a] Σοφοκλῆς Οἰδιπόδι.

Ὡς εἴπερ ἄρξεις τῆσδε γῆς, ὥσπερ κρατεῖς,
σὺν ἀνδράσιν κάλλιον, ἢ κενῆς κρατεῖν.
ὡς οὐδέν ἐστιν οὔτε πύργος οὔτε ναῦς
ἔρημος ἀνδρῶν μὴ ξυνοικούντων [b] πόλιν.

7 [a] Μενάνδρου.

Καλόν γε βασιλεὺς τῇ μὲν [b] ἀνδρείᾳ κρατῶν,
τὰ δὲ τοῦ βίου δίκαια διατηρῶν κρίσει. 326

8 [a] Ὁμήρου.

Οὐ χρὴ παννύχιον εὕδειν βουληφόρον ἄνδρα,
ᾧ λαοί τ' ἐπιτετράφαται, καὶ τόσσα μέμηλε.

9 [a] Ὁμήρου.

Βουλὴν μὲν πρῶτον μεγαθύμων ἷζε γερόντων.
λαῶν, οἷσιν ἄνασσεν, πατὴρ δ' ὡς ἤπιος ἦεν.
οὔτε τινὰ ῥέξας † κακὸν ἔξετον, οὔτε τι εἰπὼν
ἐν δήμῳ, [b] ἦτ' ἔστι δίκη θείων βασιλήων.

10 [a] Ἡσιόδου.

Τοὔνεκα γὰρ βασιλῆες ἐχέφρονες, [b] οὕνεκα λαοῖς
βλαπτομένοις ἀγορῆφι μετάτροπα ἔργα [c] τελεῦσι,
ῥηϊδίως μαλακοῖσι [d] παραιφάμενοι ἐπέεσσι.

5.

[a] Sic A. fr. inc. 44. Deest lemma Trinc.

6.

[a] Sic A. Scil. Tyr. 54. Simpl. Σοφοκλ. Trinc.

[b] πόλιν] ἔσω A. ex em. ἔσω πόλιν B.

7.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 222.

[b] ἀνδρείᾳ] ἀνδρίᾳ A.

8.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Il. B. 24.

9.

[a] Sic A. Scil. Il. B. 53. Deest lemma Trinc. Seqq. sunt Od. B. 234. Δ. 690.

[b] ἦτ'] εἴτ' A.

10.

[a] Sic B. Scil. Theog. 88. Cohærent hæc cum præcedentibus A. Trinc.

[b] οὕνεκεν ἄλλοις] οὕνεκ' ἄλλοις A. Trinc. οὕνεκα λαοῖς B.

[c] τελεῦσι] τελεύσει A.

[d] παραιφάμενοι] παραιφάμενος A.

11 [a] Θεοκρίτου.

Τὰ [b] δ' ἄλλα δ' ἀνήρ τις ἐλευθέρῳ [c] οἷος ἄριστος,
εὐγνώμων, φιλόμουσος, ἐρωτικὸς, εἰς ἄκρον ἁδὺς,
εἰδὼς τὸν φιλέοντα, τὸν οὐ φιλέοντ' ἔτι μᾶλλον,
πολλοῖς πολλὰ διδοὺς, αἰτεύμενος οὐκ ἀνανεύων,
[d] οἷον χρὴ [e] βασιλῆ· αἰτεῖν δὲ χρὴ οὐκ ἐπὶ παντί.

12 [a] Ἡσιόδου Θεογονίας.

Καλλιόπη τ' εἴδει προφερεστάτη ἐστὶν ἁπασέων·
[b] ἡ μὲν γὰρ βασιλεῦσιν ἅμ' αἰδοίοισιν ὀπηδεῖ.
ὅντινα τιμήσουσι Διὸς κοῦραι μεγάλοιο,
[c] γινόμενόν τε ἴδωσι διοτρεφέων βασιλήων,
τῷ μὲν ἐπὶ γλώσσῃ γλυκερὴν [d] προχέουσιν ἀοιδὴν,
τοῦ δ' [e] ἔπη ἐκ στόματος ῥεῖ μείλιχα· οἱ δέ νυ λαοὶ
πάντες ἐς αὐτὸν ὁρῶσι διακρίνοντα θέμιστας
ἰθείῃσι δίκῃσιν· ὁ δ' ἀσφαλέως ἀγορεύων,
αἶψά τε καὶ μέγα νεῖκος ἐπισταμένως κατέπαυσε.

13 [a] Δημοκρίτου.

Φόβος [b] κολακηΐην μὲν ἐργάζεται, εὔνοιαν δὲ οὐκ ἔχει.

14 [a] Μουσωνίου.

Οὐ πολὺν διάγουσι χρόνον οἱ πρὸς τοὺς ὑπηκόους ὑπὲρ ὧν ἂν πράττωσι μὴ τὸ "καθήκει μοι" λέγειν μεμελετηκότες, ἀλλὰ τὸ "ἔξεστί μοι."

11.

[a] Sic A. Tr. Scil. v. XIV. 60.

[b] ἄλλα δ'] ἀλλ' Voss. τἄλλα δ' ἀνὴρ ποῖός τις; B.

[c] οἷος] ὅστις B. m. sec.

[d] οἷον] οἷα B.

[e] βασιλῆα] βασιλέα Voss. Tr.

12.

[a] Sic A. Ἡσιόδου Θεογόνου Trinc. Scil. v. 79. Sub εἴδει latere videtur ἢ δὴ, quæ lectio est Macrobii Somn. Scip. II. 3.

[b] ἡ μὲν γὰρ] ἣ γὰρ A. Trinc. ἡ γὰρ καὶ B.

[c] γινόμενόν τε ἴδωσι] γεινόμενόν τ' ἐσίδωσι B.

[d] προέχουσιν] χέουσιν primo deinde χείουσιν A. χείουσιν B.

[e] ἔπη] ἔπε' B.

13.

[a] Sic A. Trinc.

[b] κολακίην] κολακείην A. Voss. Leviter mutavi.

14.

[a] Sic A. Trinc.

15 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Μὴ θέλε ἐπιτάσσειν τὰ καθήκοντα τοῖς συγγιγνώσκουσί σοι τὰ μὴ καθήκοντα πράττοντι.

16 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Πειρατέον καταπληκτικὸν μᾶλλον τοῖς ὑπηκόοις, ἢ φοβερὸν θεωρεῖσθαι· τῷ μὲν γὰρ σεμνότης, τῷ δὲ ἀπήνεια παρακολουθεῖ.

17 [a] Ἀναξιλάου.

Ἀναξίλαος ὁ [b] Ῥηγίου τύραννος ἐρωτηθεὶς, τί τῆς τυραννίδος [c] μακαριώτερον, ἔφη, Τὸ μηδέποτε εὐεργετοῦντα νικηθῆναι.

18 [a] Ξενοφῶντος.

Ξενοφῶν ὁ Σωκρατικὸς φιλόσοφος ἔφη, Τῷ βασιλεῖ κάλλιον εἶναι τὸ τῶν χαρίτων ἀπολιπεῖν, ἢ τροπαίων πλῆθος.

19 [a] Ἡροδότου ἱστορίας γ̄.

Ἔνθα γὰρ σοφίης [b] δέει βίης ἔργον οὐδέν.

20 [a] Πυθαγόρου.

Θέλε μᾶλλον τοὺς συνόντας σοι αἰδεῖσθαί σε, ἢ φοβεῖσθαι· αἰδοῖ μὲν γὰρ πρόσεστι σέβας, φόβῳ δὲ μῖσος.

21 [a] Φιλίππου.

Φίλιππος ὁ βασιλεὺς ἔλεγε, δεῖν τὸν βασιλέα μνημονεύειν ὅτι ἄνθρωπος ὢν ἐξουσίαν εἴληφεν ἰσόθεον· ἵνα προαιρῆται καλὰ μὲν καὶ θεῖα, [b] φωνῇ δὲ ἀνθρωπίνῃ χρῆται.

15.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

16.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

17.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] Ῥηγίου om. A. Voss. Tr. Ultima sic habent A. (loco altero post n. 45.) B. Τί μακαριστότερον τῆς τυραννίδος, ἔφη, Τὸ εὖ πάσχοντα δύνασθαι ὑπερβάλλεσθαι. (ὑπερβαλέσθαι B.)

[c] μακαριώτατον Trinc.

18.

Sic A. Deest lemma Trinc.

19.

[a] Sic A. Scil. III. 127. Deest locus Trinc.

[b] δέῃ] δέοι A. B.

20.

[a] Sic A. Trinc.

21.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] φωνῇ] Bona fide reddidit Gesnerus, *sermone autem humano utatur*: atqui γνώμῃ legendum erat. Wyttenbach. Plutarch. II. p. 105. A.

22 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Πολιτικοῦ.

Τόδε δὴ κατανοητέον ἰδόντι [b] ξυναπάσας τὰς εἰρημένας ἐπι- 327
στήμας, ὅτι πολιτική [c] γε αὐτῶν οὐδεμία [d] ἀνεφάνη· τὴν γὰρ ὄντως [[e] οὖσαν] βασιλικὴν οὐκ αὐτὴν δεῖ πράττειν, ἀλλὰ ἄρχειν τῶν δυναμένων πράττειν, γιγνώσκουσαν τὴν ἀρχήν τε καὶ ὁρμὴν τῶν μεγίστων ἐν ταῖς πόλεσιν, εὐκαιρίας τε πέρι καὶ ἀκαιρίας· τὰς δ' ἄλλας τὰ προσταχθέντα δρᾶν. Ὀρθῶς.

23 [a] Θεοβούλου.

Φεῦγε μὲν τὸν φθόνον τῶν πολλῶν, φυλάσσου δὲ τὰς ἐπιβουλὰς τῶν μισούντων.

24 [a] Χείλωνος.

Μετὰ τῆς ἰσχύος τὴν πρᾳότητα σῶζε· ἵνα μὴ φοβερὸς, ἀλλ' αἰδοῦς ἄξιος φαίνῃ τοῖς ἐντυγχάνουσιν.

25 [a] Ἰσαίου.

Χρὴ τοὺς νόμους μὲν τίθεσθαι σφοδρῶς, [b] πρᾳοτέρως δὲ κολάζειν ἢ ὡς ἐκεῖνοι κελεύουσι.

26 [a] Σωκράτης.

Σωκράτης ἔλεγεν ἀμείνονα βασιλέα εἶναι τὸν ἑαυτοῦ [b] παθῶν ἄρχειν δυνάμενον.

27 [a] Δημητρίου.

Δημήτριος ὁ Φαληρεὺς Πτολεμαίῳ τῷ βασιλεῖ παρῄνει τὰ περὶ βασιλείας καὶ ἡγεμονίας βιβλία [b] κτᾶσθαι καὶ ανα-

22.
[a] Sic A. Scil. p. 305. C. Deest locus Trinc.
[b] ξυμπάσας] ξυναπάσας B. εἰρημένας om. A. B.
[c] τις] γε A. B.
[d] ἐφάνη] ἀνεφάνη A. B.
[e] οὖσαν om. A. B.

23.
[a] Sic A. Trinc.

24.
[a] Sic A. Φίλωνος Trinc. Gesn.

25.
[a] Sic A. Trinc.
[b] πρᾳοτέρους] πρᾳοτέρως A. Trinc.

26.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] παθῶν ἄρχειν δυνάμενον] δυνάμενοι ἄρχειν τῶν παθῶν A.

27.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] κτᾶσθαι] κτῆσθαι Trinc.

γιγνώσκειν· ἃ γὰρ οἱ φίλοι τοῖς βασιλεῦσιν οὐ θαρροῦσι παραινεῖν, ταῦτα ἐν τοῖς βιβλίοις γέγραπται.

28 [a] Ἰσοκράτους.

Φίλους κτῶ μὴ πάντας τοὺς βουλομένους, ἀλλὰ τοὺς τῆς σῆς φύσεως ἀξίους ὄντας, μηδὲ μεθ᾽ ὧν ἥδιστα συνδιατρίψεις, ἀλλὰ μεθ᾽ ὧν ἄριστα τὴν πόλιν διοικήσεις.

29 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Τοιούτους ἐφίστη τοῖς πράγμασι τοῖς μὴ διὰ σοῦ γιγνομένοις, ὡς αὐτὸς τὰς αἰτίας ἕξων ὧν ἂν [b] ἐκεῖνοι πράξωσι.

30 Τοῦ αὐτοῦ.

Πιστοὺς ἡγοῦ μὴ τοὺς ἅπαν ὅ τι ἂν ποιῇς ἢ λέγῃς ἐπαινοῦντας, ἀλλὰ τοὺς τοῖς ἁμαρτανομένοις ἐπιτιμῶντας.

31 Τοῦ αὐτοῦ.

Δίδου παρρησίαν τοῖς εὖ φρονοῦσιν, ἵνα περὶ ὧν ἂν ἀμφιγνοῇς ἔχῃς τοὺς [a] ἐπιδοκιμάζοντας.

32 Τοῦ αὐτοῦ.

Διόρα καὶ τοὺς τέχνῃ κολακεύοντας, καὶ τοὺς μετ᾽ εὐνοίας θεραπεύοντας, ἵνα μὴ πλεῖον οἱ πονηροὶ τῶν χρηστῶν ἔχωσιν.

33 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἄκουε τοὺς λόγους τοὺς περὶ ἀλλήλων, καὶ πειρῶ γνωρίζειν ἅμα τούς τε λέγοντας [a] ὁποῖοί τινές εἰσι, καὶ περὶ ὧν ἂν λέγωσι.

34 Τοῦ αὐτοῦ.

Ταῖς αὐταῖς κόλαζε ζημίαις τοὺς [a] ψευδῶς διαβάλλοντας, αἷς περ τοὺς ἐξαμαρτάνοντας.

28.
[a] Sic A. Trinc.

29.
[a] Sic A. et usque ad n. 41.
[b] ἐκείνοις] ἐκεῖνοι A. Trinc.

31.
[a] ἐπιδοκιμάζοντας] συνδοκιμάσοντας Gesn. marg.

33.
[a] ὁποῖοί τινες] ὁποῖοι καὶ τίνες Gesn. marg. B.

34.
[a] ψευδῶς om. A. Tr. sed habet B.

35 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἄρχε [b]σαυτοῦ μηδὲν ἧττον ἢ καὶ τῶν ἄλλων· καὶ τοῦτο ἡγοῦ βασιλικώτατον, ἐάν [c]περ μηδεμιᾷ [d]δουλεύῃς τῶν ἡδονῶν, ἀλλὰ [e]κρατῇς τῶν ἐπιθυμιῶν μᾶλλον ἢ τῶν πολιτῶν.

36 Τοῦ αὐτοῦ.

Νόμιζε τῶν τιμῶν ἀληθεστάτας εἶναι, μὴ τὰς ἐν τῷ φανερῷ μετὰ δέους γιγνομένας, ἀλλ' ὅτ' ἂν αὐτοὶ παρ' αὐτοῖς ὄντες μᾶλλόν σου τὴν γνώμην, ἢ τὴν τύχην [b]θαυμάζωσι.

37 Τοῦ αὐτοῦ.

Μὴ τοὺς μὲν ἄλλους ἀξίου κοσμίως ζῆν, τοὺς δὲ βασιλέας ἀτάκτως· ἀλλὰ τὴν σεαυτοῦ σωφροσύνην παράδειγμα τοῖς ἄλλοις καθίστη, γιγνώσκων ὅτι τὸ τῆς πόλεως [b]ὅλης ἦθος ὁμοιοῦται τοῖς ἄρχουσι.

38 Τοῦ αὐτοῦ.

Περὶ πλείονος ποιοῦ δόξαν καλὴν ἢ πλοῦτον μέγαν τοῖς 328
παισὶ καταλιπεῖν· ὁ μὲν γὰρ θνητὸς, ἡ δ' ἀθάνατος· καὶ [b]δόξης μὲν χρήματα κτητὰ, δόξα δὲ χρημάτων οὐκ ὠνητή· καὶ τὰ μὲν καὶ τοῖς φαύλοις παραγίγνεται, τὴν δὲ οὐχ οἷόν τε ἀλλ' ἢ τοὺς διενεγκόντας κτήσασθαι.

39 Τοῦ αὐτοῦ.

Κράτιστον μὲν τῆς ἀκμῆς τῶν καιρῶν τυγχάνειν· ἐπειδὴ δὲ δυσκαταμαθήτως ἔχουσιν, ἐλλείπειν αἱροῦ μᾶλλον ἢ πλεονάζειν· αἱ γὰρ μετριότητες μᾶλλον ἐν ταῖς ἐνδείαις ἢ ταῖς [b]ὑπεροχαῖς ἰσχύουσιν.

35.

[b] σαυτοῦ] σεαυτοῦ Voss.
[c] περ om. Voss.
[d] δουλεύῃς] δουλεύσῃς Voss.
[e] κρατῇς] κρατεῖς Voss.

36.

[b] θαυμάζουσι] θαυμάζωσι B.

37.

[b] ὅλης om. A: Trinc. Habet B. post ἦθος.

38.

[b] δόξης] δόξῃ B.

39.

[b] ὑπεροχαῖς] ὑπερβολαῖς Gesn. marg.

40 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὅ τι ἂν [b] ἀκριβῶσαι βουληθῇς, ὧν ἐπίστασθαι προσήκει τοὺς βασιλέας, ἐμπειρίᾳ μέτιθι καὶ φιλοσοφίᾳ· τὸ μὲν γὰρ φιλοσοφεῖν τὰς ὁδούς [c] σοι δείξει, τὸ δ' ἐπ' αὐτῶν τῶν ἔργων γυμνάζεσθαι [d] ἄμεινόν σε χρῆσθαι τοῖς πράγμασι ποιήσει.

41 Τοῦ αὐτοῦ.

Θεώρει τὰ γιγνόμενα καὶ τὰ συμπίπτοντα καὶ τοῖς ἰδιώταις καὶ τοῖς τυράννοις· ἐὰν γὰρ τὰ παρεληλυθότα [b] μνημονεύῃς, ἄμεινον καὶ περὶ τῶν μελλόντων βουλεύσῃ.

42 [a] Πλουτάρχου ἐκ τῆς Περὶ Φιλίας.

Ἡμερότητι τοίνυν καὶ εὐεργεσίᾳ μᾶλλον ἢ φόβῳ πρὸς εὔνοιαν ὑπακτέον.

43 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ἠπίους οὖν εἶναι δεῖ μετὰ τοῦ [b] ἔμφρονος εἰς τὸ κοινῇ [c] λυσιτελές.

44 [a] Ἀγριππίνου.

[b] Ὁ Ἀγριππῖνος ἡγεμονεύων ἐπειρᾶτο τοὺς καταδικαζομένους ὑπ' αὐτοῦ πείθειν, ὅτι προσήκει αὐτοῖς καταδικασθῆναι. Οὐ γὰρ ὡς πολέμιος αὐτοῖς, ἔφη, οὐδ' ὡς λῃστὴς καταφέρω τὴν ψῆφον αὐτῶν, ἀλλ' ὡς ἐπιμελητὴς καὶ κηδεμών, ὥσπερ καὶ [c] ὁ ἰατρὸς τὸν τεμνόμενον παραμυθεῖται, καὶ πείθει παρέχειν [d] ἑαυτόν.

40.

[b] ἀκριβῶσαι] ἀκριβῶς εἰδέναι Gesn. marg. εἰδέναι habet B.

[c] σοι] σου B.

[d] ἄμεινον] δύνασθαι Gesn. marg. B. marg.

41.

[b] μνημονεύῃς] μνημονεύσῃς A. et mox ib. om. καὶ.

42.

[a] Sic A. v. ed. Wyttenb. T. V. p. 552 = 830. Simpl. Πλουτάρχου Trinc.

43.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ἔμφρονος] εὔφρονος A. B.

[c] λυσιτελές] λυσιτελῶς A. B.

44.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Est fortasse Epicteti. cf. VII. 17. Plutarcho assignat Wyttenbach.

[b] Ὁ deest B.

[c] ὁ ἰατρὸς] ὁ om. A. B.

[d] ἑαυτὸν] ἑαυτῷ A.

45 [a] Κότυς.

Κότυς ὁ τῶν Θρᾳκῶν βασιλεὺς πικρὸς ἦν τῶν ὑπηκόων κολαστής. Τῶν οὖν φίλων τις πρὸς αὐτὸν εἶπε, Μανία τοῦτό ἐστι, καὶ οὐ βασιλεία· ὁ δὲ, Ἀλλ' ἡ ἐμὴ, ἔφη, αὕτη μάνια τοὺς ἀρχομένους σώφρονας ποιεῖ.

46 [a] Δημοσθένους Ὀλυνθιακῶν δευτέρου.

Πολὺ γὰρ ῥᾷον ἔχοντας φυλάττειν ἢ κτήσασθαι πάντα πέφυκεν.

47 [a] Ἐκ τῶν ἑπτὰ σοφῶν.

Ἐμοὶ μὲν, ἔφη ὁ Σόλων, δοκεῖ μάλιστ' ἂν ἔνδοξος γενέσθαι καὶ βασιλεὺς καὶ τύραννος, εἰ δημοκρατίαν ἐκ μοναρχίας [b] κατασκευάσειε [c] τοῖς πολίταις.

Δεύτερος δὲ Βίας εἶπεν, εἰ [d] τρόποις χρῷτο τοῖς νόμοις τῆς πατρίδος.

Ἐπὶ [e] τούτῳ δὲ Θαλῆς [f] ἔφη, εὐδαιμονίαν ἄρχοντος νομίζειν, εἰ [g] τελευτήσειε γηράσας κατὰ φύσιν.

Τέταρτος Ἀνάχαρσις, εἰ μὴ μόνος εἴη φρόνιμος.

Πέμπτος δὲ [h] Κλεόβουλος, εἰ μηδενὶ, ἔφη, πιστεύοι τῶν συνόντων.

Ἕκτος δ' ὁ Πιττακὸς, εἰ τοὺς ὑπηκόους ὁ ἄρχων [i] παρασκευάσειε φοβεῖσθαι μὴ αὐτὸν, [k] ἀλλ' ὑπὲρ αὐτοῦ.

45.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Plutarcho tribuit Wyttenbach.

46.

[a] Sic A. Scil. p. 25, 23. Simpl. Δημοσθ. Trinc.

47.

[a] Sic A. Trinc. v. Wyttenbach. ad Plutarchi Sept. Sap. Conviv. p. 445. = 913. ipsum Plut. p. 152. A.

[b] κατασκευάσειε] κατασκευάσει Trinc.

[c] τοῖς] ἐν τοῖς B.

[d] τρόποις] πρῶτος τρόποις A. B. Gesn. marg.

[e] τούτων] τοῦτο A. Trinc.

[f] ἔφη] ἔφησε A. B.

[g] τελευτήσειε γηράσας] τελευτήσει ἐγγηράσας Trinc.

[h] Κλεόβουλος] πέμπτος δὲ Κλ. A. et mox om. ἔφη A. B. μηδὲν pro μηδενὶ Trinc.

[i] παρασκευάσειε] παρασκευάσει Trinc.

[k] ἀλλ'] ἀλλὰ τοὺς A. ἀλλὰ τὰ B.

Ὕστατος δ' ὁ [l] Χείλων εἶπε, κάλλιστον εἶναι βασιλέα τὸν μὴ μόνου τοῦ φοβερὸν εἶναι [m] φροντίζοντα.

48 [a] Ἰσοκράτους Εὐαγόρου.

Ἀλλ' οὕτω θεοφιλῶς καὶ φιλανθρώπως διῴκει τὴν πόλιν, ὥστε τοὺς ἀφικνουμένους μὴ μᾶλλον Εὐαγόραν τῆς ἀρχῆς ζηλοῦν, ἢ τοὺς ἀρχομένους τῆς [b] ἐκείνου βασιλείας. Ἅπαντα γὰρ τὸν χρόνον διετέλεσεν οὐδένα μὲν ἀδικῶν, τοὺς 329 δὲ χρηστοὺς τιμῶν· καὶ σφόδρα μὲν ἁπάντων ἄρχων, νομίμως δὲ τοὺς ἐξαμαρτάνοντας κολάζων.

49 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Οὐδὲν μὲν συμβούλων δεόμενος, ὅμως δὲ τοῖς φίλοις συμβουλευόμενος.

50 [a] Πολλὰ μὲν [[b] τῶν ὁμιλούντων ἑταίρων] χρωμένων ἡττώμενος, ἁπάντων δὲ τῶν ἐχθρῶν περιγιγνόμενος.

51 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Σεμνὸς ὢν οὐ ταῖς τοῦ προσώπου συναγωγαῖς, ἀλλὰ ταῖς τοῦ βίου κατασκευαῖς· οὐδὲ πρὸς ἓν ἀτάκτως οὐδὲ ἀνωμάλως διακείμενος, ἀλλ' ὁμοίως τὰς ἐν τοῖς λόγοις ὁμολογίας, ὥσπερ [b] τὰ ἐν τοῖς ἱεροῖς διαφυλάττων.

52 Τοῦ αὐτοῦ.

Τοὺς μὲν φίλους ταῖς εὐεργεσίαις ὑφ' [b] αὐτὸν ποιούμενος, τοὺς δὲ ἄλλους τῇ μεγαλοψυχίᾳ [c] καταδουλούμενος.

53 Τοῦ αὐτοῦ.

Φοβερὸς ὢν οὐ τῷ [b] πολὺ χαλεπαίνειν, ἀλλὰ τῷ πολὺ τῶν ἄλλων ὑπερβάλλειν.

[l] Χίλων] Χείλων A.
[m] φροντίζοντος] φροντίζοντα B.

48.

[a] Sic A. Trinc. ubi Εὐαγόρα.
[b] ὑπ' ἐκεῖνον] ἐκείνου A. Trinc.

49.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

50.

[a] Deest lemma Trinc. locus A.
[b] τῶν ὁμιλούντων ἑταίρων om. Tr.

51.

[a] Sic A.
[b] τὰ ἐν τοῖς ἱεροῖς] τὰς ἐν τοῖς ὅρκοις Gesn. marg.

52.

[b] αὐτὸν] αὐτῷ Gesn. marg.
[c] δουλούμενος] καταδουλούμενος A. B. Gesn. marg.

53.

[b] πολὺ] πολὺς A. πολλοῖς Gesn. marg.

54 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Μέγα φρονῶν οὐκ ἐπὶ τοῖς διὰ τύχην, ἀλλὰ ἐπὶ τοῖς δι' αὐτὸν γιγνομένοις.

55 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἡγούμενος τῶν ἡδονῶν, [[b] ἀλλ'] οὐκ ἀγόμενος ὑπ' αὐτῶν.

56 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὀλίγοις πόνοις πολλὰς ῥαστώνας κτώμενος, ἀλλ' οὐ διὰ [b] μακρᾶς ῥαθυμίας μεγάλους πόνους ὑπολειπόμενος.

57 Τοῦ αὐτοῦ.

[b] Ὅλως δὲ οὐδὲν παραλείπων ὧν προσεῖναι τοῖς βασιλεῦσι πρέπει, ἀλλ' ἐξ ἑκάστης πολιτείας ἐκλεγόμενος τὸ βέλτιστον· καὶ δημοτικὸς μὲν ὢν τῇ τοῦ πλήθους θεραπείᾳ, πολιτικὸς δὲ τῇ τῆς πόλεως διοικήσει, [c] στρατηγικὸς δὲ τῇ πρὸς τοὺς κινδύνους εὐβουλίᾳ, τυραννικὸς δὲ [d] τῷ πᾶσι τούτοις διαφέρειν.

58 [a] Ἰσοκράτης Νικοκλεῖ.

Ποίει μὲν μηδὲν μετ' ὀργῆς, δόκει δὲ τοῖς ἄλλοις, ὅτ' ἂν σοι καιρὸς ᾖ. [b] Καὶ δεινὸς μὲν φαίνου τῷ μηδέν σε λανθάνειν τῶν γιγνομένων, πρᾶος δὲ τῷ τὰς τιμωρίας ἐλάττους ποιεῖσθαι τῶν ἁμαρτανομένων.

59 [a] Πλάτωνος ἐκ τῆς πρὸς τοὺς Δίωνος οἰκείους Ἐπιστολῆς.

Δουλεία γὰρ καὶ ἐλευθερία ὑπερβάλλουσα μὲν ἑκατέρα πάγκακον· ἔμμετρος δὲ [b] οὖσα, πανάγαθον· μετρία δὲ ἡ [c] θεῷ δουλεία· ἄμετρος δέ, ἡ τοῖς ἀνθρώποις. Θεὸς δὲ ἀνθρώποις σώφροσι νόμος· ἄφροσι δέ, ἡδονή.

54.

[a] Deest locus Trinc.

55.

[b] ἀλλ' οὐκ] ἀλλ' om. A. B. Tr.

56.

[b] μικρᾶς] μακρᾶς A. Gesn. marg.

57.

[b] ὅλως δὲ] δὲ om. A. Trinc.

[c] στρατηγὸς] στρατηγικὸς A. Tr.

[d] οἷον] τῷ A. Trinc.

58.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] καὶ] ἢ Trinc. et mox τὸ μηδὲν.

59.

[a] Sic A. Scil. p. 354. E. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] οὖσα] οὖσα ὄντως A. B.

[c] θεῷ δουλεία] θεοδουλεία A. B.

60 [a] Ξενοφῶντος ἐν τῷ ὀγδόῳ τῆς Κύρου Παιδείας.

Καὶ λόγος δὲ αὐτοῦ ἀπομνημονεύεται, [b] ὡς λέγοι παραπλήσια ἔργα εἶναι νομέως ἀγαθοῦ, καὶ βασιλέως ἀγαθοῦ. Τόν τε γὰρ νομέα χρῆναι ἄρα, ἔφη, εὐδαίμονα ποιοῦντα τὰ κτήνη χρῆσθαι αὐτοῖς, [c] ἡ δὴ προβάτων εὐδαιμονία· τόν τε βασιλέα ὡσαύτως εὐδαίμονας πόλεις καὶ ἀνθρώπους ποιοῦντα χρῆσθαι αὐτοῖς.

61 [a] Διωτογενέος Πυθαγορείου ἐκ τοῦ Περὶ βασιλείας.

Βασιλεὺς κ' εἴη ὁ δικαιότατος, δικαιότατος δὲ ὁ νομιμώτατος. Ἄνευ μὲν γὰρ δικαιοσύνας οὐδεὶς ἂν εἴη βασιλεύς· ἄνευ δὲ [b] νόμω, δικαιοσύνα. Τὸ μὲν γὰρ δίκαιον [c] ἐν τῷ νόμῳ ἐντὶ, ὁ δέ [d] γε νόμος αἴτιος τῶ δικαίω· ὁ δὲ βασιλεὺς ἤτοι νόμος ἔμψυχος ἐντὶ, ἢ νόμιμος ἄρχων· διὰ ταῦτ' οὖν δικαιότατος καὶ νομιμώτατος. Ἔργα δὲ βασιλέως τρία, τό τε [e] στραταγὲν, καὶ δικασπολὲν, καὶ θεραπεύεν θεώς· [f] στραταγὲν μὲν ὦν καλῶς δυνασεῖται, πολεμὲν καλῶς ἐπισταθείς· δικασπολὲν [g] δὲ καὶ διακούεν πάντων τῶν ὑπ' αὐτὸν, φύσιν δικαίω [h] καὶ νόμω καλῶς ἐκμαθών· [i] θεραπεύεν δὲ τὼς θεὼς εὐσεβῶς καὶ ὁσίως, φύσιν θεῶ καὶ ἀρετὰν ἐκλογισάμενος. 330
Ὥστε ἀνάγκα τὸν τέλειον βασιλέα [k] στραταγόν τε ἀγαθὸν ἦμεν, καὶ δικαστὴν, καὶ ἱερέα· ταῦτα γὰρ καὶ ἀκόλουθα καὶ πρέποντα ἐντὶ βασιλέως ὑπεροχᾷ τε καὶ ἀρετᾷ. Κυβερνάτα μὲν γὰρ ἔργον ἐντὶ τὰν ναῦν σώζεν· [l] ἀνιόχω δὲ τὸ

60.
[a] Sic A. Scil. VIII. 2, 41. Simpl. Ξενοφῶντος Trinc.
[b] ὃς] ὡς A. B. λέγει Trinc. Gesn.
[c] εἰ δὴ] ἤδη A. Trinc.

61.
[a] Sic A. Διοτογενέως πυθαγορίου Trinc. Diogenes, non Diotogenes, scribi debet auctore Gatakero ad Marc. Anton. V. 21.
[b] νόμω] νόμων B.
[c] νόμῳ] ἐν τῷ νόμῳ A. B.
[d] γενόμενος] γε νόμος B.
[e] στρατηγεῖν] στραταγὲν A. στραταγεῖν B.
[f] στρατηγεῖν] στραταγεῖν B. στραεγεῖν Trinc.
[g] δὲ om. A. B.
[h] καὶ νόμῳ] καὶ om. Trinc.
[i] θεραπεύειν] θεραπεύεν A.
[k] στραταγὸν] στραταγέον A. τε om. Trinc.
[l] ἀνιόχω] καὶ ἀνιόχω A. B.

ἅρμα· ἰατρῶ δὲ τὼς [l] νοσέοντας· βασιλέως δὲ καὶ τῶ [m] στραταγῶ τὼς ἐν πολέμῳ κινδυνεύοντας. Ὧ γὰρ ἕκαστος ἀγεμὼν ἐντὶ συστάματος, τούτω καὶ ἐπιστάτας καὶ [n] δαμιουργός. Καὶ μὰν τό τε δικασπολὲν καὶ διανέμεν τὸ δίκαιον, [o] ξυνᾶ μὲν καθόλου, ἰδίᾳ δὲ καθ' ἕκαστον οἰκήϊον βασιλέως, ὥσπερ [p] θεῶ ἐν τῷ κόσμῳ, ἀγεμών τε καὶ προστάτας ἐντί. Ξυνᾶ μὲν τὸ ποτὶ μίαν ἀρχάν τε καὶ ἀγεμονίαν τὸ ὅλον ξυναρμόσθαι· καθ' ἕκαστον δὲ τὸ καὶ τὰ κατὰ μέρος τὰν αὐτὰν [q] ἁρμονίαν τε καὶ ἀγεμονίαν συναρμόζεσθαι. Ἔτι δ' ἐν τῷ ποιὲν εὖ καὶ [r] εὐεργετὲν τὼς ὑποτεταγμένως ὁ βασιλεύς ἐντι· ταῦτα δ' οὐκ ἄνευ δικαιοσύνας καὶ νόμω. Τό γε μὰν τρίτον, λέγω δὲ τὸ [s] θεραπεύεν τὼς θεὼς, βασιλέως ἀντάξιον. Δεῖ γὰρ τὸ [t] ἄριστον ὑπὸ τῶ ἀρίστω τιμᾶσθαι, καὶ τὸ ἀγεμονοῦν ὑπὸ τοῦ ἀγεμονεύοντος. Τῶν μὲν οὖν φύσει τιμιωτάτων ἄριστον [u] ὁ θεός· τῶν δὲ περὶ γᾶν καὶ τὼς ἀνθρώπως, ὁ βασιλεύς. Ἔχει δὲ καὶ ὡς θεὸς ποτὶ κόσμον, βασιλεὺς ποτὶ πόλιν· καὶ ὡς πόλις ποτὶ κόσμον, βασιλεὺς ποτὶ θεόν. Ἁ μὲν γὰρ πόλις ἐκ πολλῶν καὶ διαφερόντων συναρμοσθεῖσα [w] κόσμω σύνταξιν καὶ ἁρμονίαν μεμίμαται· ὁ δὲ βασιλεὺς ἀρχὰν ἔχων ἀνυπεύθυνον, καὶ αὐτὸς ὢν νόμος ἔμψυχος, θεὸς ἐν ἀνθρώποις παρεσχαμάτισται.

[a] Ἐν τῷ αὐτῷ.

62 Ὅθεν δεῖ τὸν βασιλέα μὴ νενικῆσθαι ὑφ' ἀδονᾶς, ἀλλ' αὐ-

[l] νοσίοντας Trinc.

[m] τῶ στρατηγῶ] στραταγῶ A.

[n] δημιουργός] δαμιουργὸς A.

[o] ξυνᾶ] ξοινᾶ A. Mox δὲ om. Tr. locum sic de conjectura refinxit Gesner. in ed. tert. ξ. μ. κ. ἰδία δὲ ἐντὶ ἔργον οἰκ. β. οὗτος γὰρ, ὥσπερ θεὸς ἐ. τ. κ. Nescio an leg. τῷ τε δικασπολέν.

[p] θεῷ ἐν τῷ κόσμῳ] θεῶ ἐν τῷ κόσμῳ ὦ Jacobsius in Antholog. XII. p. 197. Athen. p. 21. qui paullo post καὶ τὰ delet, utpote ex κατὰ ortas.

[q] ἁρμονίαν—ἀγεμονίαν] ἀγεμονίαν — ἁρμονίαν A. Forte leg. ποττὰν αὐτὰν ἁρμ.

[r] εὐεργετεῖν] εὐεργετὲν A.

[s] θεραπεύειν] θεραπεύεν A.

[t] ἄριστον] ἄριστος A. B.

[u] θεὸς] ὁ θεὸς A. B.

[w] κόσμω] κόσμου B.

62.

[a] Sic A. ἐν ταυτῷ Trinc.

τὸν [b] νικῆν ταύταν· μὴ δ' ὅμοιον ἦμεν τοῖς πολλοῖς, ἀλλὰ ἐπὶ πολλὸν διαφέροντα [c] τούτων· μὴ δ' ἔργον [d] ἀγεῖσθαι τὰν ἁδονὰν, ἀλλὰ μᾶλλον τὰν ἀνδραγαθίαν· ἅμα δὲ καὶ πρέπεν τὸν [e] ἑτέρων ἄρχεν χρῄζοντα τῶν [f] αὐταύτω παθέων πρᾶτον δύνασθαι ἄρχεν. Περί γε μὰν τᾶς [g] πλεονεκτίας ὅδε λόγος. Δεῖ γὰρ ἐς τοῦτο πεπᾶσθαι τὰ χρήματα, ὥστε [h] φίλως εὐεργετὲν, καὶ δεομένως ὑπολαμβάνεν, καὶ ἐχθρὼς δὲ μετὰ δίκας ἀμύνασθαι. Ἁδίστα γὰρ ἁ μετ' ἀρετᾶς ἀπόλαυσις τᾶς εὐτυχίας. Ὁ δ' αὐτὸς τρόπος καὶ περὶ τᾶς ὑπεροχᾶς· [i] δεῖ γὰρ καθυπερέχεν τὼς ἄλλως ἀρετᾷ, καὶ κατ' αὐτὰν ἄξιον κρίνεσθαι τῷ ἄρχεν, ἀλλὰ μὴ καττὸν πλοῦτον, ἢ τὰν δύναμιν, ἢ τὰν ῥώμαν τὰν τῶν ὅπλων· ὃ μὲν γάρ τι κοινὸν ἐντὶ καὶ τῶν τυχόντων, ὃ δὲ κοινὸν καὶ τῶν τυράννων, ὃ δὲ μόνον ἴδιον τῶν ἀγαθῶν ἀνθρώπων. Ὥστε ὅστις βασιλεὺς σώφρων μὲν ἐντὶ περὶ τὰς ἡδονὰς, [k] κοινωνατικὸς δὲ περὶ τὰ χρήματα, φρόνιμος δὲ καὶ δεινὸς [l] περὶ τὰν ἀρχὰν, οὗτος κ' εἴη καττὰν [m] ἀλάθηαν βασιλεύς. Ἔχει δὲ καὶ ὁ δᾶμος τῶν μερέων τᾶς τοῦ ἀνθρώπου ψυχᾶς [n] τὰν ἀναλογίαν ταύταν τῶν ἀγαθῶν καὶ τῶν κακῶν· ἁ μὲν γὰρ πλεονεκτία γίγνεται περὶ τὸ ἀγούμενον μέρος τᾶς ψυχᾶς· λογικὰ γὰρ ἁ ἐπιθυμία· ἁ δὲ φιλοτιμία καὶ θηριότας, περὶ

[b] νικᾶν] νικῆν A.

[c] τούτων] τοῦτον Trinc.

[d] ἀγεῖσθαι] Addo αὐτοῦ. GESNER.

[e] ἑτέρων ἄρχεν] ἑτέραν ἄρχειν A.

[f] ἐν ἑαυτῷ] αὐτοῦ A. B. αὗτ' αὐτῷ Trinc. Doricam formam reposui. Vide supra I. 74.

[g] πλεονεκτικᾶς] πλεονεξίας A. m. sec. in marg. πλεονεκτίας Gesn. marg.

[h] φίλους] φίλως A. Trinc.

[i] ἀεὶ γὰρ καθυπερέχων—τὸ ἄρχεν] Emendavit Valckenærius ad Euripid. Hippol. 1364. δεῖ γὰρ καθυπερέχεν—τῷ ἄρχεν. Mox κατт' αὐτὰν Trinc. Forte κατταύταν.

[k] κοινωνικῶς] κοινωνητικὸς A. B. κοινωνακὸς Trinc. κοινωνατικῶς Gesn. marg. forte typothetæ errore pro κοινωνατικός.

[l] περὶ τὰν ἀρχὰν] Ex præcedentibus περὶ τὰν ἀρετὰν scribendum suadet Jacobsius ad Athen. pag. 184.

[m] ἀλάθηαν] ἀλήθειαν A.

[n] τὰν ἀναλογίαν—ψυχᾶς om. A. B. ἀλογίαν Trinc. pro ἀναλογίαν.

τὸ θυμοειδές· τοῦτο γὰρ [o] τὸ ζέον καὶ δυναμικὸν μέρος τᾶς ψυχᾶς· ἁ δὲ [p] φιλαδονία, περὶ τὸ ἐπιθυματικόν· τοῦτο γὰρ θῆλυ καὶ ὑγρὸν μέρος τᾶς ψυχᾶς· ἁ δέ γε ἀδικία [q] τελε- 331 ωτάτη κακία, καὶ σύνθετος [r] ἐοῦσα περὶ ὅλαν γίγνεται τὰν ψυχάν. Ὅθεν εἰς λύραν καὶ πόλιν [s] εὐνομουμέναν δεῖ συναρμόσασθαι βασιλέα ὅρον δικαιότατον καὶ νόμω τάξιν ἐν αὐτῷ πρᾶτον καταστησόμενον, εἰδότα διότι τῶ [t] πλάθεος, ᾧ δέδωκεν ὁ θεὸς αὐτῷ τὰν ἀγεμονίαν, ἁ συναρμογὰ ποτ' αὐτὸν ὀφείλει συναρμοσθῆμεν. Ποτὶ δὲ τοῖς ἀγορευομένοις, δεῖ καὶ θέσιας καὶ ἕξιας [v] ἐπιπρεπέας ἐπιτάσσεν τὸν ἀγαθὸν βασιλέα, πολιτικῶς αὐτὸν [w] πλάσσοντα καὶ πραγματιωδέως, ὅπως μήτε τραχὺς φαίνηται τοῖς πλάθεσι μήτ' εὐκαταφρόνατος, ἀλλὰ καὶ ἁδὺς καὶ ἀμφιστραφής. Τεύξεται δὲ τούτων, αἴκα πρᾶτον μὲν σεμνὸς ᾖ καὶ ἐκ τῶ [x] ἰδὲν, καὶ ἐκ τῶ ἀκοῦσαι, καὶ ἐκ τῶ ἄξιος ἐπιφαίνεσθαι τᾶς ἀρχᾶς· δεύτερον δὲ χρηστὸς καὶ ἐκ τᾶς ἐντεύξιος, καὶ ἐκ τᾶς ποτιβλέψιος, καὶ ἐκ τᾶς εὐεργεσίας· τρίτον δὲ δεινὸς καὶ ἐκ τᾶς μισοποναρίας, καὶ ἐκ τᾶς [y] ἀκολασίας, καὶ ἐκ τᾶς ἐπιταχύσιος, καὶ ὅλως ἐκ τᾶς ἐμπειρίας καὶ τριβᾶς τᾶς περὶ τὸ βασιλεύεν. Ἁ μὲν γὰρ σεμνότας θεόμιμον ὑπάρχουσα πρᾶγμα [z] δύναται θαυμαζόμενον καὶ τιμώμενον αὐτὸν παρέχεσθαι τοῖς πλάθεσιν· ἁ δὲ χρηστότας, φιλεύμενον καὶ ἀγαπαζόμενον· ἁ δὲ δεινότας, φοβερὸν μὲν καὶ ἀνίκατον ποτὶ πολεμίως, μεγαλόψυχον δὲ καὶ θαρσα-

[o] ζέον] τὸ ζέον A. Trinc.

[p] φιληδονία] φιλαδονία A. B. φιλοδονία Trinc.

[q] τελεωτάτη] τελειοτάτα A.

[r] ἐᾶσα] ἐοῦσα B.

[s] εὐνομουμένην] εὐνομουμέναν A. ὅθεν ὡς λύραν—νόμω τάξιν Jacobsius Athen. p. 22. Antholog. XI. p. 165. Qui in proximis item monet ποτὶ τοῖς ἀγορευομένοις verti debere, *præter ea quæ diximus*, non *in concionibus*.

[t] πλάθεως] πλάθεος A. Trinc.

[v] ἐπιπρεπέας ἐπιτάσσεν] ἐπιτρεπεας ἐπιτασσεύεν A.

[w] πλάσσοντα] πράσσοντα A.

[x] ἰδὲν] εἰδέναι A. B.

[y] κολασίας] ἀκολασίας A. Trinc. κολάσιος Gesnerus marg. ed. 1. et mox ἐπικρατήσιος pro ἐπιταχύσιος.

[z] δύναται] δύνασθαι A. Trinc.

λέον ποτὶ φίλως. Δεῖ δὲ [a] τὰν σεμνότατα καθεστᾶσθαι περὶ αὐτὸν [b] μηδὲν ταπεινὸν ἐπιταδεύοντα, [c] μηδὲ τῶν πολλῶν ἀντάξιον, ἀλλὰ τῶν θαυμαινομένων καὶ τῶν ἁγεμονίᾳ καὶ σκαπτουχίᾳ ποτιφυῶν, ἀμιλλώμενον ἀεὶ [d] μηδὲ τοῖς μηόνεσι, μηδὲ τοῖς ἴσοις, ἀλλὰ τοῖς μεζόνεσι· καὶ καττὸ μέγεθος τᾶς ἁγεμονίας ἁδονὰς ὑπολαμβάνοντα μεγίστας ἦμεν [e] τὰς ἐπὶ τοῖς καλοῖς ἔργοις καὶ μεγάλοις, ἀλλὰ μὴ τὰς ἐπὶ τοῖς ἀπολαύστοις· χωρίζοντα μὲν ἑαυτὸν ἀπὸ τῶν ἀνθρωπίνων παθέων, συνεγγίζοντα δὲ τοῖς θεοῖς· [f] οὐδὲ δι' [g] ὑπεραφανίαν, ἀλλὰ διὰ μεγαλοφροσύναν καὶ μέγεθος ἀρετᾶς ἀνυπέρβλατον τοιαύτην αὐτῷ [h] ἐπιπρέπηαν καὶ προστασίαν ἀμφιβαλλόμενον, καὶ καττὰν ὄψιν, καὶ καττὼς λογισμὼς, καὶ καττὰ [i] ἐνθυμάματα καὶ [k] καττὸ ἆθος τᾶς ψυχᾶς, καὶ καττὰς πράξιας, καὶ καττὰν [l] κίνασιν καὶ καττὰν θέσιν τῶ σώματος· ὥστε [m] τὼς ποταυγασμένως αὐτὸν [n] κατακοσμαθῆμεν [o] καταπεπλαγμένως αἰδοῖ, καὶ σωφροσύνᾳ [p] τε [καὶ] [q] διαθέσει τε περὶ τὰν [r] ἐπιπρέπηαν. Οὐ γὰρ [s] μῆον αὐλῶ καὶ ἁρμονίας [t] ἃ τῶ ἀγαθῶ βασιλέως ποταύγασις ὀφείλει [v] τρέπεν τὰς ψυχὰς τῶν [w] ποτ' αὐτάς. Καὶ περὶ μὲν σεμνότατος ἅλις εἰρήσθω· περὶ δὲ [x] χρηστό-

[a] τὰ σεμνότατα] τὴν σεμνότητα B.
[b] μηδὲν] οὐδὲν A.
[c] μηδὲ] μηδὲν B.
[d] μὴ τοῖς μείονεσι] μηδὲ τοῖς μηόνεσσιν A.
[e] τὰς] τὰς om. A. ἦμεν τὰς om. B.
[f] οὐ δι'] οὐδὲ δι' A.
[g] ὑπεραφανίαν] ὑπερηφανίαν B.
[h] ἐπιτρέπειαν] ἐπιπρέπειαν B: ἐπιτρεπῆαν Trinc.
[i] ἐνθυμάματα] τὰ ἐνθ. A.
[k] καττὸ ἆθος τῆς ψυχῆς] κατὰ ἦθος τᾶς ψυχᾶς A. καττὸ ἦθος B. καττὰ pro καττὸ Trinc.
[l] νίκασιν] κίνασιν A. Trinc.
[m] τὼς ποτ' αὐτὰς μὲν ὡς] τὼς ποταυγασμένως Koënius ad Gregor. Dial. Dor. §. IX.
[n] κατακοσμηθῆμεν] κατακοσμαθῆμεν A.
[o] καταπεπλαγμένως] καταπεπλεγμένως A. B. καταπεπλασμένως Tr.
[p] τε καὶ] καὶ om. A. Trinc.
[q] διαθέσει τε περὶ] διαθέσει τᾷ περὶ Koënius.
[r] ἐπιτρέπειαν] ἐπιτρέπηαν A. B.
[s] μεῖον] μῆον A.
[t] τῶ ἀγαθῶ] ἃ τῶ ἀγαθῶ A.
[v] τρέπειν] τρέπεν A. πρέπεν Tr.
[w] τῶν ποτ' αὐτᾶς] τῶν ποταυγασμένων αὐτόν Koënius.
[x] χρηστότητος] χρηστότατος A.

τατος νῦν ὑποθέσθαι πειρασοῦμαι. Χραστὸς γὰρ [y] ἐσεῖται
πᾶς βασιλεὺς, τὸ μὲν [z] καθόλω, δίκαιός τε ὢν καὶ ἐπιει-
κὴς καὶ εὐγνώμων. Ἔντι γὰρ ἁ δικαιότας [a] κοινωνίας συν-
εκτικὰ καὶ συνακτικὰ, καὶ μόνα γε ὦν πρὸς [b] τὼς πλα-
τίον ἁ τοιαύτα διάθεσις [c] ἅρμοσται τᾶς ψυχᾶς. Ὃν λόγον
παρέχει ῥυθμὸς ποτὶ κίνασιν, καὶ ἁρμονία ποτὶ φωνὰν, τοῦ-
τον ἔχει τὸν λόγον δικαιότας ποτὶ κοινωνίαν· κοινὸν γὰρ
ἀγαθὸν ἐντὶ [d] καὶ ἀρχόντων καὶ ἀρχομένων, εἴγε δὴ συναρ-
μοστικά ἐντι κοινωνίας πολιτικᾶς. Ἁ δὲ ἐπιείκηα καὶ
εὐγνωμοσύνα πάρεδροί τινες ἐντὶ τᾶς δικαιοσύνας· [e] ἁ μὲν 332
τὸ ἀπότομον τᾶς βλάβας μαλθαίνοισα, ἁ δὲ τοῖς ἐπὶ πο-
σὸν [f] ἀμπλακίσκουσι συγγνώμας ἀπομερίζουσα. Δεῖ δὲ
τὸν ἀγαθὸν βασιλέα [g] μαθηματικόν τε ἦμεν τῶν δεομένων,
καὶ εὐχάριστον δέ· βοήθηαν δὲ μὴ καθ' ἕνα ποιήσασθαι
τρόπον, ἀλλ' ὅπως ἂν δυνατὸν ᾖ· [h] εὐχάριστον δ' ἦμεν δεῖ,
μὴ ποττὸ μέγεθος ἀποβλέποντα τᾶς τιμᾶς, ἀλλὰ ποττὸν
τρόπον καὶ τὰν προαίρεσιν τῶ [i] τιμῶντος· ἀβαρέα [k] δὲ δεῖ
ἦμεν ποτὶ πάντας ἀνθρώπως, μάλιστα δὲ ποττὼς μήονας
καὶ καταδεεστέρως ταῖς [l] τύχαις· οὗτοι γὰρ, ὥσπερ τοὶ
[m] νοσέοντες τοῖς σώμασιν, οὐδὲν ὑπομένεν δύνανται τῶν βα-
ρέων. Ἔχοντι γὰρ τὰς διαθέσιας τοιαύτας καὶ οἱ θεοὶ, καὶ
μάλιστα ὁ κρατέων πάντων Ζεύς· καὶ γὰρ οὗτος [n] σεμνὸς

[y] ἐσεῖται] ἐσσεῖται A.
[z] καθόλω] καθόλου B.
[a] κοινωνία] κοινωνίας A. κοινωνίαν συνεκτικὴν καὶ συνακτικὰ κ. μ. γ. ὦ B. κοινωνία συνακτικὰ Trinc.
[b] τοὺς πλατίον] τὼς πλ. A.
[c] ἅρμοσται] ἁρμοστὰ B.
[d] καὶ ἀρχόντων—ἐντὶ om. A. B.
[e] ἁ μὲν (τὸ ἐπιεικὲς, ἁ δὲ) τὸ] Inclusa parenthesi nihil ad sensum conferunt. Gesner. Ego delevi, utpote e glossemate nata.
[f] ἀμπλακίσκουσι] ἀμπλακίσκουσα A.
[g] μαθηματικὸν] Malim, βοηθατικόν. Gesner.
[h] εὐχάριστον] εὐχάριτον A.
[i] τιμῶντος] τιμέον A. τῶν τιμέων B. τιμέοντος Trinc.
[k] δὲ δεῖ] δὲ om. A. Trinc.
[l] τύχαις] τέχναις Trinc.
[m] νοσέοντες] νοσίοντες A. Trinc.
[n] σεμνὸς] σεμνός τε B. Trinc. absque μέν.

μέν ἐντι καὶ τίμιος διά τε τὰν ὑπεροχὰν, καὶ τὸ μέγεθος τᾶς ἀρετᾶς· χραστὸς δὲ διὰ τὸ εὐεργετικός τε ἦμεν καὶ ἀγαθοδότας, [o] ὅκως δὴ καὶ λέγεται ὑπὸ τῶ Ἰωνικῶ ποιητᾶ, ὥς κ' εἴη

πατὴρ ἀνδρῶν τε θεῶν τε·

δεινὸς δὲ διὰ τὸ κολάζεν τὼς ἀδικέοντας, καὶ κρατὲν καὶ κυριεύεν πάντων· ἔχει δὲ καὶ τὸν κεραυνὸν μετὰ χεῖρα, σύμβολον τᾶς δεινότατος. Ἐπὶ πᾶσι δὲ τούτοις μναμονεύειν δεῖ, ὅτι θεόμιμόν ἐντι πρᾶγμα βασιλεία.

63 [a] Σθενίδα Λοκροῦ Πυθαγορείου Περὶ βασιλείας.

Χρὴ τὸν βασιλέα σοφὸν ἦμεν· οὕτω γὰρ ἐσεῖται [b] ἀντίμιμος καὶ ζαλωτὰς τῶ πράτω θεῶ. Οὗτος γὰρ καὶ φύσει ἐντὶ καὶ πρᾶτος βασιλεύς τε καὶ δυνάστας· ὁ δὲ γενέσει καὶ μιμάσει. Καὶ ὁ μὲν ἐν τῷ παντὶ καὶ ὅλῳ· ὁ δὲ ἐπὶ γᾶς. Καὶ ὁ [c] μὲν ἀεὶ τὰ πάντα διοικεῖ τε καὶ ζώει αὐτὸς ἐν αὐτῷ κεκταμένος τὰν σοφίαν· ὁ δ' ἐν χρόνῳ, [d] ἐπιστάμαν. Ἄριστα [e] δέ κα μιμέοιτο τοῦτον, εἰ μεγαλόφρονά τε καὶ [f] ἁβρὸν καὶ ὀλιγοδεέα [g] παρασκευάζοι αὐτὸν, πατρικὰν διάθεσιν ἐνδεικνύμενος τοῖς ὑφ' αὐτῷ· διὰ τοῦτο [h] γάρ που μάλιστα καὶ [i] νενομίχθαι τὸν θεὸν πατέρα μὲν θεῶν πρα-

[o] ὅκως—πατὴρ om. Trinc.

63.

[a] Sic A. Σθενίδα Λοκροῦ πυθαγορίου Trinc.

[b] ἀντίτιμος] ἀντίμιμος A. B. Vide Valckenærii Ep. ad Rover. p. lxiv.

[c] τὴν ἀεὶ] μὲν ἀεὶ A. B. Arsen. Trinc.

[d] ἐπιστάμαν] ἐπιστάμων B.

[e] δὲ καὶ] δέ κα Koënius ad Gregor. Dial. Ion. xi.

[f] ἁβρὸν] Perspecto in ἁβρὸν vitio, σοφὸν conjecit Gesnerus, ἁδρὸν nuper Eldikius Spec. Susp. p. 13. His addo tertium ἀβαρέα. In re eadem Diotogenes Pythagoricus ap. Stob. p. 332, 9. quo usus est cl. Wesseling. Diatr. de Judæorum Archont. p. 15. ἀβαρέα δὲ δεῖ ἦμεν ποτὶ πάντας ἀνθρώπους. Koen. Eldikii emendatio probatur Schæfero ad Dionys. Halic. de Comp. p. 64.

[g] παρασκευάζοι] παρασκευάζει A.

[h] γάρ που] γάρ τε που A. B.

[i] νενομίχθαι] Malim νενόμισται. Gesn. Corrigendum putat Valckenærius, δοκεῖ νενομίχθαι τὸν πρᾶτον θεὸν πατέρα μὲν θεῶν πατέρα δὲ καὶ ἀνθρώπων ἦμεν. *Propterea vel maxime Deus summus habitus videtur pater Deorum hominumque.*

τον, πατέρα δὲ ἀνθρώπων ἦμεν, ὅτι ἤπιος πρὸς πάντα τὰ ὑπ' αὐτῷ γενόμενα ἐντὶ, καὶ [k] ἀμελούμενος τᾶς προστασίας [l] οὐδέποκα παύεται, οὐδὲ [m] ἤρκεσται τῷ ποιητὰς [n] μόνον πάντων γεγονέναι, ἀλλὰ καὶ τροφεὺς διδάσκαλός τε τῶν καλῶν [o] πάντων καὶ νομοθέτας πέφυκε πᾶσιν ἐπίσας. Τοιοῦτον [p] ἐπιστῆμεν καὶ τὸν ἐπὶ γᾶς καὶ παρ' ἀνθρώποις ἀγεμονὲν μέλλοντα βασιλέα· οὐδὲν δὲ ἀβασίλευτον καλὸν, οὐδὲ ἄναρχον· ἄνευ δὲ σοφίας καὶ ἐπιστάμας οὔτε μὰν βασιλέα, οὔτε ἄρχοντα οἷόν τε ἦμεν. Μιματὰς ἄρα καὶ [q] ὑπαρέτας [r] ἐσεῖται νόμιμος τῷ θεῷ ὁ σοφός τε καὶ βασιλεύς.

64 [a] Ἐκφάντου τοῦ Πυθαγορείου ἐκ τοῦ Περὶ Βασιλείας.

Ὅτι μὲν ἅπαντος [b] ζώω φύσις ποτί τε τὸν κόσμον [c] ἅρμοκται καὶ τὰ ἐν τῷ κόσμῳ, πολλοῖς μοι δοκεῖ τεκμαρίοις φανερὸν ἦμεν. Συμπνείουσα γὰρ οὕτω καὶ συνδεδεμένα, τὰν ἀρίσταν τε ἅμα καὶ ἀναγκαίαν ἀκολουθίαν [d] ὀπαδεῖ, ῥύμᾳ τῷ παντὸς [e] περιαγεομένα ποτί τε τὰν κοινὰν εὐκοσμίαν καὶ ποττὰν ἴδιον [f] ἑκάστω διαμονάν· παρὸ καὶ τόδε κόσμος ποταγορεύεται καὶ ἔντι τῶν ὄντων ζώων τελῃότατον. Ἐν δὲ τοῖς μέρεσιν αὐτῶ, πολλοῖς τε [g] ὄντεσι καὶ διαφόροις τὰν φύσιν, ἐξάρχει τὶ ζῶον καὶ [h] οἰκῃότατον ἐν γενοῖν, καὶ διὰ τὸ μετέχειν πλέον τῶ θείω. Καὶ ἐν μὲν τᾷ

[k] μελούμενος] ἀμελούμενος A. Arsen. Trinc.

[l] οὐδέποκα παύεται] οὐδέπω καπαύεται A. καταπαύεται B.

[m] ἤρκεσται] ἤρκεσε A. B.

[n] μόνον πάντων] πάντων om. Tr.

[o] πᾶσαν] πάντων A. B. πᾶσιν Trinc.

[p] ἐπιστῆμεν] ἐπίσταμαι A. ἐπίσταμεν B. χρὴ ἦμεν conjicit Gesnerus. Valckenærius, τοιοῦτον θέμις ἦμεν.

[q] ὑπηρέτας] ὑπαρετὴς A.

[r] ἐσεῖται] ἐσσεῖται A.

64.

[a] Sic A. Ἐκφάντου πυθαγορίου Tr.

[b] ζώω] ζώου B.

[c] ἅρμοκται] ἁρμό.τ A. ἁρμόζηται B.

[d] ὀπηδεῖ] ὀπαδεῖ A.

[e] περὶ αὖ γενομένα] περιαυγενομένα A. περιαγομένα Koënius ad Gregor. Dial. Dor. §. XLIV. Melius Schæferus περιαγεομένα. περιγενομένα B.

[f] ἑκάστῳ] ἑκάστου B.

[g] ὄντεσι] ὄντεσσι A.

[h] καὶ τελῃότατον ἐντὶ ὁ οὐρανὸς Jacobs.

[h] τῷ θεῷ [i] ὄντος ἀεὶ φύσει, τὰ τὰν πράταν καὶ μεγίσταν ἀκολουθίαν ἔχοντα ἀσπάζεται· [k] καὶ τοὶ πλανᾶτες ἀστέρες· ἐν δὲ τᾷ χώρᾳ τᾶς σελάνας ἔνερθεν, τὰ δι' εὐθείας ἰόντα σώ- 333
ματα, [l] ἁ τῶ δαίμονος φύσις ἔχει τὰν διεξαγωγάν· [m] ἐν δὲ τᾷ γᾷ καὶ παρ' ἁμῶν, ἀριστοφυέστατον μὲν ἄνθρωπος, θειότατον δ' ὁ βασιλεὺς, ἔν τε κοινᾷ φύσει πλεονεκτῶν τῶ κρέσσονος, τὸ μὲν σκᾶνος τοῖς λοιποῖς ὅμοιος, οἷα γεγονὼς ἐκ τᾶς αὐτᾶς ὕλας, ὑπὸ τεχνίτα δ' εἰργασμένος λῷστω, ὃς [n] ἐτεχνίτευσεν αὐτὸν ἀρχετύπῳ χρώμενος ἑαυτῷ· κατασκεύασμα [o] δὴ ὦν ὁ βασιλεὺς ἓν καὶ μόνον [p] ἐν οἷς τινος [q] τῶ ἀνωτέρω βασιλέως, τῷ μὲν πεποιηκότι γνώριμον ἀεὶ, τοῖς δ' ἀρχομένοις ὡς ἐν φωτὶ [r] τᾷ βασιλείᾳ βλεπόμενον. Τάδε γὰρ κρίνεταί τε καὶ δοκιμάζεται, ὡς τὸ κράτιστον ἐν πτανοῖς [s] ζῶον ἀετὸς ἀντωπὸν ἁλίῳ γενόμενον· χ' ὡπὶ τᾶς βασιλείας δὲ λόγος ὡϋτὸς, θείας τε [t] ἐοίσας καὶ δι' ὑπερβολὰν λαμπρότατος δυσοράτω, [v] αἱ μὴ τοῖς γνασίοις· μαρμαρυγαί τε γὰρ πολλαὶ καὶ σκοτοδινιάσεις ὡς ἐφ' ὕψος ὀθνεῖον ἐπιβάντας τὼς νόθως ἀπήλεγξαν· τοῖς δὲ [w] προσηκόντως κατ' [x] οἰκειότατα πρὸς αὐτὰν ἐπὶ τούτῳ ἀφιγμένοις, οἰκήσιμος κεχρῆσθαι δυναμέναν. Αὐτὰ μὲν ὦν βασιλεία χρῆμα εἰλικρινές τε καὶ ἀδιάφθορον ἐντὶ, καὶ δι' ὑπερβολὰν [y] θει-

[h] τῶ θεῶ—ἄστερες ἐν δὲ omisit Gesnerus in edd. 2. et 3. Sed habet Francofurtensis.

[i] ὄντος] ὄντως A. B.

[k] οἱ πλανᾶτες] καὶ τοὶ πλανᾶτες A. B.

[l] ἁ τῶ] αὐτῶ A. B.

[m] ἐν δὲ τᾷ] Eadem supra in sermone de Monarchia. GESNER. Scil. XLVII. 22. Mox l. παρ' ἁμῖν.

[n] ἐτεχνίτευσεν] τεχνίτευσεν A.

[o] δι' ὅν] Lego δὴ ὦν. GESNER. Probavit Barthius ad Statii Theb. I. 345.

[p] ἐν οἷς τίνος] καὶ ὡς τύπος Barthius l. l.

[q] τῶ ἀνωτέρω] τῶν ἀ. A. B.

[r] τᾷ βασιλείᾳ] τὰ βασιλεία Barthius. τὰ βασίλεια Trinc. Mox leg. τᾷδε γάρ.

[s] ζῶον] ζώων A. cf. Barth. ad Claudian. p. 468.

[t] ἐάσας] ἐώσας B. leg. ἐοίσας hic et infra §. 65. init.

[v] ἀμὴ] ἃ μὴ A. B. αἰ μὴ τοῖς γνησίοις Gesn. marg. pro ἀμὴ τοῖς γυμνασίοις. Recte.

[w] προσηκόντως] προσήκοντος Tr. Mox οἰκησίμως—δυναμένας Wakefield.

[x] οἰκειότατα] οἰκειοτάταν A.

[y] θειότατον] θειότατος A. Trinc.

ότατος δυσέφικτον ἀνθρώπῳ. Δεῖ δὲ καὶ τὸν ἐς αὐτὰν καταστάντα καθαρώτατόν τε ἦμεν καὶ διαυγέστατον τὰν φύσιν, ὡς μὴ τὸ λαμπρότατον ἀφανίζῃ ἐν σπίλοις τοῖς ὑφ' αὐτῷ· καθὸ καὶ τὼς ἁγιωτάτως τόπως ἐκαλίδωσάν τινες, καὶ τῶν [z] ἀντιασάντων ἔνιοι μιαροὶ τὼς ἀντιάξαντας αὐτοῖς. Βασιλῆα δὲ τὸν ὁμιλήσαντα φύσιός τε [a] ἀχράντω δεῖ μετέχειν, [b] ἐπιστάμεν τε ἑαυτὸν ὅσῳ τῶν ἄλλων ἐντὶ θειότερος, [c] ὅσῳ τε ἅτεροι αὐτῶ, οἷς δὴ κατὰ λόγον ἀπεικάζων ἑαυτὸν, ἄριστ' ἂν ἑαυτῷ τε [d] χρῶτο καὶ τοῖς ὑποτεταγμένοις. Καὶ τοῖς μὲν ἄλλοις ἀνθρώποις, αἴκα ἁμαρτάνοντι, ὁσιωτάτα κάθαρσις ἐξομοιωθῆμεν τοῖς [e] ἀρχόντεσιν, αἴτε νόμος, αἴτε βασιλεὺς διέποι τὰ κατ' αὐτώς· οἱ δ' [f] εἴ τι τῶ κρέσσονος [g] δέοντος διὰ τὴν φύσιν ἀμπλακόντες οὐ μακρὰν οὐδ' ἀπῳκισμένως [h] οἱ, χρὴ θεῷ μὲν [i] εὐθὺ τᾶς ὠφελείας τυγχάνεν. Οὔτε γὰρ τὸν κόσμον δίζοιτο ἄν τις ἐν αὐτῷ τε [k] ὧν καὶ μέρος ἐκείνω, οὔτ' ἂν ἀνόητος εἴη τῶ διέποντος αὐτὸν ὁ ἑτέρων αὐτὸς ἄρχων· ἁ δ' εὐκοσμία πολλὰ, καὶ τὸ μηδὲν ἄναρχον εὑρὲν δύνασθαι, καὶ τῷ τρόπῳ τᾶς ἀρχᾶς διδάσκαλον. Ἐκλάμπει γὰρ αὐτᾶς εὐθὺ τὸ καλὸν, ἂν ὁ μιμασόμενος δι' ἀρετὰν αὐτῷ τε φίλος, ὃν μεμίμαται, καὶ πολὺ πλέον τοῖς ὑπ' αὐτὸν τεταγμένοις. Οὐ γὰρ ἄν τις θεοφιλὴς ὢν [l] μισέοιτο ὑπ' ἀνθρώπων, ἐπεὶ οὐδὲ τὰ ἄστρα, οὐδ' ὁ σύμπας κόσμος ἐχθαίρει τὸν θεόν· αἱ δὲ [m] κα ἐμίσει τὸν ἁγεμονεύοντα, οὐκ [n] ἀεί ποτε ἂν πειθόμενος αὐτῷ·

[z] ἀντιασάντων] αἰτιασάντων B.

[a] ἀχράντω] ἀχθράντω Trinc.

[b] ἐπιστᾶμεν] ἐπιστάμεν A. Trinc. Et sic Schæferus ad Bosium de Ellips. v. Διάνοια, qui præterea citat ἑαυτὸν pro αὐτόν.

[c] ὅσα τε ἅτερα] ὅσῳ τε ἅτεροι Koënius ad Gregor. Dial. Att. LXII. qui paullo ante ἑωῦτὸν, non αὐτὸν, habet.

[d] χρῶτο] χρᾶτο Trinc. Mox l. ἁμαρτάνωντι.

[e] ἀρχόντεσιν] ἀρχόντεσσιν A.

[f] εἴ τι] ὥς τι Gesn. marg. ἅτε Wakefield.

[g] δέοντος] δέοντο B. δὴ ὄντος Wakefield.

[h] οἱ] εἰ B. ἰέναι θεῷ μ.΄ε. *ire recta ad deum* Wakefield.

[i] εὐθὺ] ὡς εὐθύτας A. ὡς εἰθὺς B.

[k] ὃν] ὧν A. B. Trinc.

[l] μισοῖτο] μισείοιτο A. μισέοιτο B.

[m] καὶ] κἂν A. κ'αἶ B. κα Trinc.

[n] ἀεὶ] Malim εἴη. GESNER.

τὸ δ' ἐκεῖνον ἄρχεν εὖ αἴτιον τῶ καὶ τῶσδε ἄρχεσθαι καλῶς. Ἐγὼ μὲν ὦν ὑπολαμβάνω καὶ τὸν ἐπὶ τᾶς γᾶς βασιλέα δύνασθαι μηδεμιᾷ τῶν ἀρετῶν ἐλαττοῦσθαι τῶ κατ' [o] ὠρανὸν βασιλέως· ἀλλ' ὥσπερ αὐτὸς ἀπόδαμόν τι ἐντὶ χρῆμα καὶ ξένον ἐκεῖθεν ἀφιγμένον πρὸς ἀνθρώπως, καὶ 334 τὰς ἀρετὰς ἄν τις αὐτῶ ἔργα ὑπολάβοι τῶ θεῶ, καὶ δι' ἐκεῖνον αὐτῶ. [p] Σκοπέοντι δ' ἀρχᾶθεν, ἀλάθεια λόγος· κοινωνία τε γὰρ [q] πράτα τε πάντων καὶ ἀναγκαιοτάτα [r] τῷ τῶν ἀνθρώπων [s] γένει, ἇς μετέχει μὲν ὁ παρ' ἁμῖν βασιλεὺς, μετέχει δὲ καὶ ὁ ἐν τῷ παντὶ πάντα διέπων· συνεστάναι γὰρ χωρὶς φιλίας καὶ κοινωνίας, ἀμάχανον· σκοποίη δ' ἄν τις ταῦτα καὶ ἐπὶ [t] τῶν συμπολιτευομένων, ἐξελὼν τῶ λόγω τὰν κατὰ συνάθηαν κοινωνίαν, [v] ἐλάττων γὰρ αὕτα τᾶς τε θείας φύσιος καὶ τᾶς βασιλικᾶς· οὐ γὰρ δέονται τὰν τοιαύταν δέησιν· [w] ἀλλ' ἄλλων καθανοῦν ἐκπορεῦντες τῶν [x] ὑστέρων, ἀναπλαροῦντι κοινὰν τὰν [y] βοήθειαν· τέλειοι γὰρ κατ' ἀρετάν. Ἁ δ' [z] ἐν τᾷ πόλει φιλία κοινῶ τινος τέλεος ἐχομένα, τὰν τοῦ παντὸς ὁμόνοιαν μιμᾶται· ἄνευ δὲ τᾶς περὶ τὰς ἀρχὰς διατάξιος οὐδεμία ἂν πόλις οἰκοῖτο· εἰς δὲ ταύταν νόμων τε [a] δεῖται καὶ τίνος προστασίας πολιτικᾶς τό τε ἄρχον καὶ τὸ ἀρχόμενον, [b] εἴπερ σώζοιτο δι' αὐτό. Ἐκ τούτων κοινὸν ἀγαθὸν εὐαρμοστία τις, καὶ τῶν πολλῶν ὁμοφωνία μετὰ πειθοῦς [c] συναδοισας. Ὁ κατ' ἀρετὰν ἐξάρχων [d] καλέεταί τε βασιλεὺς, καὶ ἐντὶ, ταύταν

[o] οὐρανὸν] ὠρανὸν A.
[p] σκοπέοντι] σκοπτέοντι Trinc.
[q] πράτῳ] πράτα A. Trinc.
[r] τὰς τῶν] τὰ τῶν A. Gesn. marg.
[s] γενειὰς] γένειας A. τῷ τ. ἀ. γένει· αἷς B.
[t] τῶν] τὰν A. τᾶν Trinc.
[v] ἐλάττων] ἐλάττω A.
[w] ἀλλ' ἄλλων καθανοῦν] ἀλλάλων κατθανοῦν A. κατθανοῦν B. Pro καθανοῦν Gesnerus conjicit κατὰ νοῦν.
[x] ὑστέρων] ὑστερούντων A. B. Gesn. marg.
[y] βοήθειαν] ἀβοήθειαν A. B.
[z] ἐν πόλει] ἐν τᾷ πόλει A. Trinc.
[a] δεῖ] δεῖται A. B.
[b] εἴπερ σώζοιτο δι'] ἀποσώζοι δὲ A. B. ἀποσώζοι τι Gesn. marg.
[c] συνωδούσας] συνωδοίσας A. συνωδήσας B. leg. συναδοίσας.
[d] καλέεται] καλέεταί τε A. B.

ἔχων φιλίαν τε καὶ κοινωνίαν ποτὶ τὼς [c] ὑπὸ αὐτὸν, [f] ἅνπερ ὁ θεὸς ἔχει ποτί τε τὸν κόσμον καὶ τὰ ἐν αὐτῷ. Ὅλαν δὲ τὰν εὔνοιαν χρὴ παρασκευάζεσθαι πρῶτα μὲν παρὰ τῶ βασιλέως ἐς τὼς βασιλευομένως, δεύτερον δὲ παρὰ τῶνδε [g] ἐς τὸν βασιλέα, ὁποῖα γεννάτορος ποτὶ υἱέα, καὶ ποτὶ ποίμναν νομέως, καὶ νόμω ποτὶ [h] χρώμενον αὐτῷ.

65 [i] Ἐν ταυτῷ.

Μία γὰρ ἀρετὰ πρὸς τὸ ἄρχεν ἀνθρώπων, καὶ πρὸς τὸν αὐτῶ βίον. Χρήσεται [k] δ' οὐδενὸς δι' ἔνδειαν ποτιλαμβάνων εἰς ὑπηρεσίαν τὰν αὐτὸς αὐτῶ, ἀλλ' ὡς κατὰ φύσιν συνεργῶν· κοινωνίας γὰρ ἐοίσας, οὐδὲν ἔλαττον [l] ἕκαστος αὐτάρκως βιώσει καθ' αὑτόν. Δοκεῖ μὲν γὰρ ὁ αὐτάρκης μηδενὸς ἂν ἄλλω [m] πρός γε τὰν αὐτῶ διεξαγωγὰν ποτιδεήσεσθαι· αἰ δ' ἄρα δεῖ βίον ἐνεργέα ζώεν, δᾶλον ὡς καὶ ἕτερα ἂν προσλάβοι, οὐδέν τι ἔλαττον αὐτὸν αὐταρκέα ποιήσει· φίλως τε γὰρ ἕξει διὰ τὰν αὐτῶ ἀρετάν· καὶ τοῖσδε χρώμενος, οὐ κατ' ἄλλαν ἀρετὰν χρήσεται, ἢ [n] ἅπερ καὶ ποττὸν αὐτῶ βίον. Ἀνάγκα δὲ ἀκολουθεῖν καὶ τᾳ τοιᾳδε οὐχ [o] ἀτέρως τινὸς ἐξαιρέτω ποττ' αὐτὰ παρεσκευασμένως. Χ' ὡ μὲν θεὸς οὔτε διακόνως ἔχων, οὔτε ὑπηρέτας, οὔτ' αὖ προστάξει τινὶ χρώμενος, οὐδὲ στεφανῶν ἢ ἀναγορεύων τὼς πειθομένως, ἢ ἀτιμάζων τὼς ἀπειθέοντας, οὗτος αὐτὸς ἄρχει ποτὶ τοσόνδε μέγεθος ἀρχᾶς, ἀλλ' οἶμαι παρέχων ἀξιομίματον ὡυτὸν, ζᾶλον ἐντίθησι πᾶσι τᾶς αὐτῶ φύσιος. Ἔντι δὲ αὐτὸς μὲν ἀγαθὸς, καὶ τόδε μόνον τε καὶ ῥᾴδιον ἔργον αὐτῶ· [p] οἱ δὲ μιμεύμενοι τῶν αὐτῶν, κρέσσον τῶδε πάντα

[c] ὑπὸ αὐτὸν] ὑπό τ' αὐτὸν Trinc.

[f] ἅνπερ] ἅπερ A. Trinc.

[g] πρὸς τὸν A.

[h] ποτὶ χρώμενον] ποτιχρώμενος A. Tr. f. l. ποτὶ χρωμένως.

[i] Sic Trinc. Μία γὰρ usque ad διὰ κακίαν ὑστερούντων desunt A. B.

[k] δ' οὐδενὸς] δ' om. Trinc. Mox vulg. ἄλλως et ἐάσας.

[l] ἕκαστος] ἕκαστον N. Trinc.

[m] πρός γε] πρός τε Trinc.

[n] ἅπερ] forte ᾇπερ. Gesn. Mox τὰ τοιᾶδε Trinc. Leg. τὰ τοιάδε.

[o] ἀτέρως τ. ἐ. ποττ' αὐτὰ παρεσκευασμένως] forte ἀτέρω τ. ε. ποτ' αὐτὰν παρεσκευασμένω. Gesner.

[p] οἱ δὲ] Videtur corruptum exemplar Græcum. Gesn. οἱ δὲ μ. τὸ αὐτῶν κρέσσον, τᾷδε Wakefield. qui paullo ante ἀΐδιον pro ῥᾴδιον,

ἐργάζονται· ἁ δὲ ὁμοίωσις καὶ ἑκάστῳ τῶδε αὔταρκές ἐντι. Οὐ γὰρ ἄλλα μὲν ἀρετὰ ποιεῖ τὰ ἀρεστὰ τῷ θεῷ, 335
μιμέεται δ' αὐτὸν ἑτέρα. Ὁ δ' ἐπίγειος ἁμῖν βασιλεὺς, πῶς οὐχ ὁμοίως αὐτάρκης; ἀπεικάζων τε γὰρ αὐτὸν ἐνὶ ἂν ἀπεικάσειε τῷ κρατίστῳ, καὶ πᾶς ἑωυτῷ πειρώμενος ὁμοιοῦν [q] αἴθ' ὃς ἕσεται· τὰ δ' ὅσα βίας καὶ ἀνάγκας τὰς τῶν ὑποτεταγμένων, ἐνίοτε ἑκάστῳ τὰν περὶ τὰν μίμασιν [r] προθυμία ἀφαιρέεται· χωρὶς εὐνοίας γὰρ ἀμάχανον ἐξομοιωθῆναι, ἃ μάλιστα πάντων ἀφανίζει τὸ φοβερόν. Ὡς εἴθε ἦν τᾶς ἀνθρωπίνας φύσεως δυνατὸν ἀφέλεν, καὶ τὸ πειθοῦς τινος [s] δέχεσθαι. Τόδε γὰρ τᾶς ἐπιγείου φαυλότατος τὸ λείψανον, καθ' ἂν ἐπίκαρον ὂν τὸ ζῶον ταύτας οὐκ ἀμοιρεῖ· ἐπειδὴ πειθὼ ἔργον τι ἐντὶ παροικέον ἀνάγκᾳ· πράτα γὰρ ἀφ' αὐτᾶς αὐτὰ κατεργάζεται τὰ παρ' ἐκείναν διέφυγεν. Ὅσα δ' αὐτοφυῶς τῷ καλῷ χρῆται, τούτοις οὐδεμία πειθοῦς αἰδώς· ἐπειδήπερ οὐδὲ φόβος ἀνάγκας. Ἐνεργάσαιτο δ' ἂν μόνος ὁ βασιλεὺς ἀνθρώπῳ φύσει καὶ τόδε τὸ ἀγαθὸν, ὡς διὰ μίμασιν αὐτῶ τῶ κρέσσονος ποτὶ τὸ δέον ἕπεσθαι. Τὼς δὲ ὥσπερ ὑπὸ μέθας διεφθαρμένως καὶ διὰ κακὰν τροφὰν ἐς λάθαν ἐμπεσόντας [t] αὐτῶ, παραλαφθεὶς ὁ λόγος ἐπέρρωσέν τε καὶ κάμνοντας ἰάσατο, καὶ [v] τὰν ἐκ τᾶς κακίας ἐνοικεῦσαν αὐτοῖς λάθαν ἐκβαλὼν, τὰν μνάμαν ἐσῴκισεν, ἐξ ἇς ἀπετέχθη ἁ καλεομένα πειθώ. Καὶ τὰν ἀρχὰν ἐκ φαύλων σπερμάτων λαβοῦσα αὔτα, τὶ σπουδαῖον ἐκφύῃ τὰν ἐπίγηον [w] οἰκεῦσαι χώραν, ἐν ᾇ δι' ἀσθένειαν τᾶς ἁμῶν φύσιος ὁ λόγος ἀνθρώποις ὁμιλέων, ἀναπλαροῖ τε τῶν διὰ κακίαν [x] ὑστερούντων.

et mox ἑκάστῳ τῶνδε.

[q] αἴθ' ὃς] Locus corruptus. GESNER. ἆθος conj. Wakefield.

[r] προθυμία] Lego προθυμίαν. GESN.

[s] δέχεσθαι] δέεσθαι lego, ut supra in sermone de Monarch. GESNER. Scil. XLVII. 22. Dedi ἀφέλεν pro ἀφέμεν, necnon ἐπίκαρον pro ἐπίκαιρον.

[t] αὐτῶ] Scil. τῶ κρέσσονος. GESN.

[v] τὰν—ἐκβαλὼν om. N.

[w] οἰκεῦσαι] Leg. οἰκεῦσι. GESN.

[x] ὑστερούντων] videtur aliquid deesse. GESNER.

66 [a] Ἐν τῷ αὐτῷ.

Ἅπερ ἱερὰν καὶ θείαν ἔχων ἔννοιαν, τῷ ὄντι βασιλεὺς εἴη. Τᾷδε γὰρ πεπεισμένος, ἀγαθῶν μὲν πάντων αἴτιος [b] ἐσεῖται, κακῶν δὲ οὐδενός. Οὐ μὰν [c] ἀλλ', ὅτι γε δίκαιος ἐσεῖται κοινωνικὸς ὤν, παντί [d] τῳ δᾶλον· [e] ἰσότατι γὰρ ἁ κοινωνία, καὶ ἐν τᾷ ταύτας ἀποδιανομᾷ ἐξάρχει μὲν ἁ δικαιοσύνα, μετέχει δ' ἁ κοινωνία· οὐ γὰρ δυνατὸν ἄδικον μὲν ἦμεν, μεταδιδόμεν δὲ ἰσότατος· [f] ἢ μεταδιδόμεν ἰσότατος, μὴ κοινωνικὸν δὲ ἦμεν. [g] Ἐγκρατέα δὲ πῶς οὐκ ἂν ὑπολάβῃ τις τὸν αὐτάρκη; ἁ γὰρ [h] πολυτέληα μάτηρ τᾶς ἀκρασίας· αὕτα δὲ τᾶς [i] ὕβριος, ἐξ ἇς τῶν ἐν [k] ἀνθρώποις κακῶν τὰ πολλά. Ἁ δ' αὐτάρκεια [l] οὐδ' ἂν τέκοι πολυτέλειαν, οὔτε τὰ ἀπ' αὐτᾶς· ἀλλὰ αὐτά τις οὖσα ἀρχὰ πάντα μὲν [m] ἁγοῖ, ἁγοῖτο δ' ἂν ὑπ' οὐδενός. Ὅπερ ἐντι μὲν τῷ θεῷ, ἔντι [n] καὶ τῷ βασιλεῖ, αὐτῶ μὲν ἄρχεν (ἀφ' [o] ὧπερ καὶ ὁ αὐτάρκης καλέεται) ἄρχεσθαι δ' ὑπ' οὐδενός· ταῦτα δ' ὅτι μὲν φρονάσιος χωρὶς οὐκ ἂν γένοιτο, δᾶλον. Ὅτι δ' ἁ [p] τῷ κόσμῳ φρόνασις ὁ θεός ἐντι, φανερόν· συνέχεται γὰρ εὐκοσμίᾳ τε καὶ τάξει [q] τᾷ δεούσᾳ· νόῳ δὲ χωρὶς οὐκ ἂν αὐτὰ γενοίατο. Οὐδ' ὁ βασιλεὺς δὴ χωρὶς φρονάσιος ταύτας ἂν ἔχοι [r] τὰς ἀρετάς· [s] δικαιοσύναν φαμὶ καὶ ἐγκράτηαν καὶ κοινωνίαν, καὶ ὅσα τούτων ἀδελφά.

66.

[a] Sic A. Ἐν ταυτῷ Trinc.

[b] ἐσεῖται] ἐσσεῖται A.

[c] ἀλλ' ὅτι] ἄλλο τί γε A.

[d] τῳ] τὸ A. Trinc.

[e] ἐν ἰσότατι] ἐν om. A. Trinc.

[f] ἢ μετ. ἰσ. om. B. Mox κοινωνὸν Trinc.

[g] ἐγκρατέα] ἐσκρατέα Trinc.

[h] πολυτέλεια] πολυτέληα A.

[i] ὕβριος] ὕβρεως A. et mox αὐτάρκηα.

[k] ἀνθρωπίνοις] ἀνθρώποις A. B.

[l] οὐδάν τε καὶ] οὐδ' ἄντε. καὶ A. B. Trinc. Bene Jacobsius οὐδ' ἂν τέκοι. Supra dicitur πολυτέληα μάτηρ τᾶς ἀκρασίας.

[m] ἁγοῖ—ἁγοῖτο] ἄγοι—ἄγοιτο B.

[n] δὲ καὶ] δὲ om. A. Trinc.

[o] οὗπερ] ὧπερ A. B. ὅπερ Trinc.

[p] τῷ κόσμῳ] τοῦ κόσμου B.

[q] τᾷ δεούσα] τὰ δέοντα B. τὰ δέουσα Trinc.

[r] τὰς ἀρετὰς] τᾶς ἀρετᾶς A.

[s] δικαιοσύναν] δικαιοσύνας Trinc.

67 [a] Μουσωνίου ἐκ τοῦ Ὅτι φιλοσοφητέον καὶ τοῖς βασι- 336
λεῦσιν.

Εἰσελθόντος δέ ποτε ὡς [b] αὐτὸν τῶν βασιλέων τινὸς τῶν ἀπὸ τῆς Συρίας, ἦσαν γὰρ ἔτι τότε ἐν Συρίᾳ βασιλεῖς Ῥωμαίων ὑπήκοοι, ἄλλα τε πολλὰ εἶπε πρὸς τὸν ἄνδρα, καὶ δὴ καὶ ταῦτα. Μὴ οἴου, ἔφη, ἄλλῳ τινὶ μᾶλλον προσήκειν φιλοσοφεῖν, ἢ σοί· μὴ δ' ἄλλου του χάριν μᾶλλον, ἢ ὅτι βασιλεὺς τυγχάνεις ὤν. Δεῖ μὲν γὰρ δήπου δύνασθαι τὸν βασιλέα σώζειν ἀνθρώπους καὶ εὐεργετεῖν· τὸν δέ γε σώσοντα καὶ εὐεργετήσοντα χρὴ ἐπίστασθαι, [c] τί μὲν ἀγαθὸν ἀνθρώπῳ, τί δὲ κακόν· καὶ τί μὲν ὠφέλιμον, τί δὲ βλαβερόν· καὶ συμφέρον γε καὶ ἀσύμφορον· εἴ γε ἀπόλλυνται μὲν οἱ περιπίπτοντες τοῖς κακοῖς, σώζονται δὲ οἱ τυγχάνοντες τῶν ἀγαθῶν· καὶ εὐεργετοῦνται μὲν οἱ ἀξιούμενοι τῶν ὠφελίμων καὶ συμφερόντων, κακοποιοῦνται δὲ οἱ ἐμβαλλόμενοι τοῖς ἀσυμφόροις καὶ βλαβεροῖς. Ἀγαθὸν μέντοι ἢ κακὸν, ἢ συμφέρον ἢ ἀσύμφορον, [d] ἢ ὠφέλιμον [e] ἢ βλαβερὸν, οὐκ ἄλλου του διαγινώσκειν ἢ τοῦ φιλοσόφου ἐστίν· ὃς αὐτὸ τοῦτο διατελεῖ πραγματευόμενος, ὅπως μηδὲ ἓν τούτων ἀγνοήσῃ, καὶ τέχνην πεποίηται ταύτην εἰδέναι τί φέρει πρὸς ἀνθρώπου εὐδαιμονίαν [f] ἢ κακοδαιμονίαν. Διὸ φαίνεται δεῖν τὸν βασιλέα φιλοσοφεῖν. Καὶ μὴν [g] προσήκει μὲν τῷ βασιλεῖ, μᾶλλον δ' ἀνάγκη ἐστὶν αὐτῷ, τὰ δίκαια βραβεύειν τοῖς ὑπηκόοις, ὡς μήτε πλέον ἔχειν μήτε ἐλαττοῦσθαι μηδένα παρὰ τὴν ἀξίαν, ἀλλὰ καὶ τιμῆς καὶ τιμωρίας τυγχάνειν τοὺς ἀξίους. Ταῦτα δε πῶς ποτε δυνηθείη ἄν τις δίκαιος οὐκ ὤν; δίκαιος δὲ πῶς ἂν εἴη τὶς μὴ ἐπιστάμενος δικαιοσύνην, ὁποῖόν τι ἐστί; Πάλιν οὖν καὶ

67.

[a] Sic A. Simpl. Μουσωνίου Tr.

[b] αὐτὸν] αὐτῶν Trinc.

[c] μὲν ἀγαθὸν] μὲν γὰρ ἀγαθὸν A. B.

[d] ἢ ὠφέλιμον om. B. sed cum lacuna.

[e] ἢ βλ.] καὶ βλ. A.

[f] ἢ κακοδαιμονίαν om. Trinc.

[g] προσήκει] προσῆκε Trinc.

ταύτῃ φιλοσοφητέον τῷ βασιλεῖ, ὅτι δικαιοσύνην καὶ τὸ δίκαιον οὐκ ἂν ἄλλως φαίνοιτο γνοὺς, εἰ μὴ φιλοσοφήσειεν. Οὐ γὰρ οὐθ' ὡς [h] οὐχὶ ὁ μαθὼν μᾶλλον [i] εἰδήσει τὰ δίκαια τοῦ [k] μανθάνοντός ἐστιν εἰπεῖν, οὔθ' ὡς οὐκ ἀμαθεῖς εἰσι τῶν τοιούτων πάντες οἱ μὴ φιλοσοφήσαντες. Στασιάζουσι γοῦν καὶ πολεμοῦσι περὶ τῶν δικαίων πρὸς ἀλλήλους, οἱ μὲν ταῦτα φάσκοντες, οἱ δὲ ἐκεῖνα δικαιότερα εἶναι. [l] Καίτοι περί γε ὧν ἐπίστανται ἄνθρωποι, περὶ τούτων οὐ διαφέρονται· οὔτε περὶ λευκῶν ἢ [m] μελάνων, ἢ θερμῶν ἢ ψυχρῶν, οὔτε περὶ μαλακῶν ἢ σκληρῶν· ἀλλὰ κατὰ τὰ αὐτὰ περὶ τούτων ἅπαντες φρονοῦσί τε καὶ λέγουσιν· ὥστε καὶ περὶ τῶν δικαίων ὁμονόουν ἂν παραπλησίως, εἴπερ ᾔδεσαν ἅ τινά ἐστιν· ἐν ᾧ δ' οὐχ ὁμονοοῦσιν, [n] ἀγνοοῦντες φαίνονται. Καὶ οὐδὲ σὺ ταύτης ἐκτὸς [o] εἶ τῆς ἀγνοίας, ὡς ἐγὼ δοκῶ· ὅθεν ἐπιμελητέον σοι τῆς γνώσεως μᾶλλον ἢ ἄλλῳ [p] ὁτῳοῦν, καὶ τοσούτῳ γε μᾶλλον [q] ὅσῳ περ αἴσχιον ἀνδρὶ βασιλεῖ ἢ ἰδιώτῃ εἶναι ἐν ἀγνοίᾳ δικαιοσύνης.

Ἔτι τοίνυν δεῖ τὸν βασιλέα μὲν σωφρονεῖν αὐτὸν, δεῖ δὲ τοὺς ὑπηκόους σωφρονίζειν· ἵν' ὁ μὲν ἄρχῃ σωφρόνως, οἱ δ' ἄρχωνται κοσμίως, μηδέτεροι δὲ τρυφῶσι· λυμαντικὸν γὰρ ἄρχοντός τε καὶ ἰδιώτου παντὸς ἡ τρυφή. Πῶς δ' ἂν ἢ αὐτὸς σωφρονήσειέ τις, μὴ μελετήσας [r] κρατεῖν τῶν ἐπιθυμιῶν, ἢ ἀκόλαστος ὢν ἄλλους ποιήσειε σώφρονας; Τίς μέντοι ἐπιστήμη πρὸς σωφροσύνην ἄγει 337
[s] πλὴν φιλοσοφίας, οὐκ ἔστιν εἰπεῖν· αὕτη γὰρ διδάσκει μὲν ἐπάνω ἡδονῆς εἶναι, [t] διδάσκει δ' ἐπάνω πλεονεξίας,

[h] οὐχ ὁ μαθὼν] οὐχὶ ὁ μ. a p. m. οὐκ ἢ μ. m. s. A. οὐχ ὁ μὴ μ. B.
[i] εἰδήσει] ἠδήσει Trinc.
[k] μανθάνοντος] μαθόντος A. m. s.
[l] καί τοι] τοι om. A. B.
[m] μελάνων] μελανῶν B.
[n] ἀγνοοῦσιν] ἀγνοοῦντες A. Tr.
[o] εἶ] ἦς A. m. p.
[p] ὁτῳοῦν] ὁτοιοῦν Trinc.
[q] ὅσῳ] om. Trinc. A. m. p. ὅσῳ περ A. m. sec. B.
[r] κρατεῖν] κρατῆσαι A. B.
[s] πλὴν] πρὸς A. πρὸ πλὴν B.
[t] διδάσκει—πλεονεξίας om. B.

διδάσκει δὲ ἀγαπᾶν εὐτέλειαν, [u] διδάσκει δὲ φεύγειν πολυτέλειαν, ἐθίζει δ' αἰδῶ ἔχειν, ἐθίζει δὲ γλώττης κρατεῖν, τάξιν [w] τε καὶ κόσμον καὶ εὐσχημοσύνην περιποιεῖ, καὶ ὅλως τὸ ἐν κινήσει καὶ σχέσει πρέπον. Ταῦτα δὲ ἀνθρώπῳ προσόντα παρέχεται [x] [καὶ] σεμνὸν καὶ σώφρονα αὐτόν. Καὶ δὴ καὶ βασιλεὺς, ὅτῳ ὑπάρχει ταῦτα, μάλιστα ἂν εἴη θεοπρεπής τε καὶ αἰδοῦς ἄξιος. Τό γε μὴν ἄφοβον καὶ [y] ἀνέκπληκτον καὶ [z] θαρραλέον ἔστι μὲν [a] ἀνδρείας ἔργον· [b] πῶς δ' ἂν ἄλλως μᾶλλον [c] ἀνθρώπῳ ὑπάρξειεν, ἢ εἴ [d] τις περὶ θανάτου καὶ πόνου λάβοι πίστιν ἰσχυρὰν, ὡς οὐ κακοῖν ὄντοιν αὐτοῖν; ταῦτα γὰρ δὴ τὰ ἐξιστάντα καὶ φοβοῦντα τοὺς ἀνθρώπους ἐστὶν, ὅ τε θάνατος καὶ ὁ πόνος, [e] ὅτ' ἂν ὡς περὶ κακῶν πεπεισμένοι ὦσιν αὐτῶν· μὴ κακὰ [f] δ' εἶναι ταῦτα φιλοσοφία διδάσκει μόνη. Ὥστ' εἴπερ [g] ἀνδρείαν γε κτητέον τοῖς βασιλεῦσι, κτητέον δὲ, παντὸς [h] ὁτουοῦν ἑτέρου μᾶλλον ἐπιμελητέον τοῦ φιλοσοφεῖν αὐτοῖς, ὡς οὐκ ἂν ἑτέρως ἀνδρείοις γενομένοις. Καὶ δὴ βασιλικὸν μὲν, εἴ τι ἄλλο, καὶ τὸ ἀήττητον ἐν λόγῳ εἶναι, καὶ δύνασθαι κρατεῖν ὥσπερ ὅπλοις τῶν μαχομένων, οὕτω [i] λόγοις τῶν διαλεγομένων· ὡς [k] ἄν γε ταύτῃ ἀσθενήσωσιν οἱ βασιλεῖς, ἀνάγκη πολλάκις περιάγεσθαι αὐτοὺς, καὶ βιάζεσθαι τὰ ψευδῆ ὡς ἀληθῆ προσίεσθαι, [l] ὅπερ ἀφροσύνης ἔργον καὶ ἀμαθίας τῆς ἐσχάτης. Φιλοσοφία δ' οὐκ οἶδα εἴ τι μαλ-

[u] διδάσκει—πολυτέλειαν om. Tr.
[w] δὲ] τε A. B.
[x] καὶ σεμνὸν] καὶ om. A. Trinc.
[y] ἀνέπλητον] ἀνέμπληκτον A. ἀνέκπλητον B. Trinc.
[z] θαρραλέον] θαρσαλέον A. B.
[a] ἀνδρείας] ἀνδρίας A.
[b] πῶς—ἄλλως] πᾶς (ω superscr.)—ἄλλως (ο superscr.) A. ἄλλος B.
[c] ἀνθρώπῳ] ἀνῷου A. ἀνθρώπου B.
[d] τις] τοι A.
[e] ὅταν ὡς] ὅπως A. Ὅπως usque ad μόνη punctis subjectis delet m. s. A. et om. B.
[f] δ' εἶναι] δέον εἰδέναι A.
[g] ἀνδρείαν] ἀνδρίαν A. τε (γ superscr.) κτητέον A. γε κ. B.
[h] οὖν] οὖν (ὅτι superscr.) et in marg. ὁτιοῦν A. ὁτουοῦν B.
[i] τοῖς λόγοις διαλεγομένων] λόγοις τῶν δ. A. Sed τῶν m. s. Deest articulus Trinc.
[k] ἄν τε] ἄν γε A.
[l] ὅσπερ] ὅπερ A. Trinc.

λον ἢ τοῦτο παρέχειν τοῖς μετιοῦσιν αὐτὴν πέφυκεν, ὥστε περιεῖναι λόγῳ τῶν πλησίον, καὶ τὰ ψευδῆ διακρίνειν ἀπὸ τῶν ἀληθῶν, καὶ τὰ μὲν ἐλέγχειν, τὰ δὲ βεβαιοῦν. Οἱ γοῦν ῥήτορες, ὁπότ᾽ ἂν ἔλθωσιν εἰς ταυτὸ τοῖς φιλοσόφοις, καὶ διδῶσι καὶ λαμβάνωσι λόγον, ἔστιν ὁρᾷν αὐτοὺς συγκρουομένους, ἀπορουμένους, ἐναντία λέγειν αὐτοῖς ἀναγκαζομένους· καίτοι ὁπότ᾽ ἂν οἱ ῥήτορες, οἱ τοῦτο πεποιημένοι ἔργον λόγους μελετᾷν, ἀσθενέστεροι περὶ λόγους ἁλίσκωνται τῶν φιλοσόφων ὄντες, τί χρὴ τοὺς ἄλλους ἀνθρώπους ὑπολαμβάνειν; Ὅθεν εἴ τινι ὄντι βασιλεῖ ἔστιν ἐπιθυμία τοῦ ἐν [m] λόγοις κράτους, φιλοσοφητέον αὐτῷ, ἵνα μὴ [n] δεδίῃ μηδὲ ταύτῃ μηδένα [o] ὡς περιγενησόμενον αὐτοῦ, [p] δέον ἁπανταχοῦ ἀδεῆ εἶναι τὸν βασιλέα καὶ θαρραλέον καὶ ἀήττητον.

Καθόλου δὲ τὸν [q] μὲν βασιλέα τὸν ἀγαθὸν ἀνάγκη πᾶσα καὶ λόγῳ καὶ ἔργῳ [r] εἶναι ἀναμάρτητον, καὶ τέλειον· εἴ περ [s] δεῖ αὐτὸν, ὥσπερ ἐδόκει τοῖς παλαιοῖς, [t] νόμον ἔμψυχον εἶναι, εὐνομίαν μὲν καὶ ὁμόνοιαν μηχανώμενον, ἀνομίαν δὲ καὶ στάσιν [u] ἀπείργοντα, ζηλωτὴν δὲ τοῦ Διὸς [w] ὄντα, καὶ πατέρα τῶν ἀρχομένων, ὥσπερ ἐκεῖνον. Τοιοῦτος δὲ πῶς ἂν εἴη τις μὴ φύσει τε διαφερούσῃ κεχρημένος, παιδείαν [x] δὲ τὴν ἀρίστην πεπαιδευμένος, ἀρετάς τε ἁπάσας ἔχων, [y] ὅσαι περ ἀνθρώπῳ προσήκουσιν; Εἰ μὲν οὖν καὶ ἑτέρα [z] ἐπιστήμη ἐστὶν, ἡ ποδηγοῦσα πρὸς ἀρετὴν ἀνθρώπου φύσιν, καὶ ἀσκεῖν καὶ μετιέναι τὰ καλὰ διδάσκουσα, παραβλητέον ἂν εἴη καὶ συγκριτέον, εἴτε ἐκείνη εἴτε φιλοσοφία 338

[m] λόγοις] λόγῳ A. B.
[n] δεδίῃ] δεδείῃ A. m. p.
[o] ὥσπερ γενησόμενος] ὡς περιγενησόμενον A.
[p] ἧττων temere infercit Gesn.
[q] μὲν om. B.
[r] εἶναι] καὶ εἶναι Trinc.
[s] δεῖ] δι' Trinc.
[t] Diotogenes ap. Stobæum XLVI. p. 329. Vide Valcken. et Wessel. ad Herodot. III. 38.
[u] ἀπείργοντα] ἀπείργονται Trinc.
[w] ὄντα] εἶναι A.
[x] δὲ] τε B.
[y] ὅσαι] ὅσαις A.
[z] ἐπιστήμη bis Trinc.

κρείττων, καὶ ἀποχρῶσα μᾶλλον ἀγαθὸν ἀποδεῖξαι βασιλέα· καὶ [a] τῇ κρείττονι χρῶτ᾽ ἂν εἰκότως ὁ βασιλεὺς [b] βουλόμενός γε [c] δὴ εἶναι ἀγαθός. Εἰ δ᾽ ἄλλη [d] μὲν οὖν οὐδ᾽ ὑπισχνεῖται τέχνη οὐδεμία παράδοσιν καὶ διδασκαλίαν ἀρετῆς, ([e] αἱ μὲν [f] περὶ τὸ σῶμα τὸ ἀνθρώπινον καὶ τὰ [g] τούτῳ χρήσιμα [h] πραγματευόμεναι μόνον, ὅσαι δὲ τῆς ψυχῆς ἐφάπτονται, [i] πάντα [k] σκοπούμεναι μᾶλλον, ἢ ὅθεν αὐτὴ σωφρονήσει·) μόνη δὲ φιλοσοφία τοῦτο σκοπεῖ, καὶ τοῦτο μηχανᾶται, [l] πῶς ὁ ἄνθρωπος κακίαν μὲν ἐκφύγοι, κτήσαιτο δὲ ἀρετήν· εἰ ταῦτα ταύτῃ ἔχει, τί ἂν ἄλλο εἴη βασιλεῖ τῷ γε ἀγαθῷ εἶναι βουλομένῳ [m] προυργιαίτερον τοῦ φιλοσοφεῖν; Μᾶλλον δὲ [n] πῶς καὶ τίνα τρόπον δύναιτο ἄν τις βασιλεῦσαι, ἢ βιῶναι καλῶς, εἰ μὴ φιλοσοφήσειεν; Ἐγὼ μὲν οἶμαι τὸν βασιλέα τὸν ἀγαθὸν, εὐθὺς καὶ φιλόσοφον ἐξ ἀνάγκης εἶναι, καὶ τόν γε φιλόσοφον εὐθὺς καὶ βασιλικὸν εἶναι.

Πρῶτον δὲ τὸ πρότερον θεασώμεθα. Ἆρ᾽ ἔσθ᾽ ὅπως βασιλεὺς ἀγαθὸς εἴη τις ἂν, μὴ ἄνθρωπος ἀγαθὸς ὤν; οὐκ ἔστιν εἰπεῖν. Ἀγαθὸς δέ τις [o] ἀνὴρ ὤν, οὐκ [p] ἀφιλόσοφος εἴη ἄν; νὴ Δία, εἴ γε τὸ φιλοσοφεῖν καλοκαγαθίας ἐπιτήδευσίς ἐστιν. Ὥσθ᾽ ὁ βασιλεὺς ὁ ἀγαθὸς ἐξ ἀνάγκης εὐθὺς καὶ φιλόσοφος εὑρίσκεται ὤν. Καὶ μὴν ὅ γε φιλόσοφος, ὅτι πάντως καὶ [q] βασιλικὸς, οὕτως ἂν μάθοις. Τοῦ γὰρ βασι-

[a] τῇ κρείττονι] τῇ φανείσῃ κρείττονι A. m. s. B.
[b] βουλόμενος] βουλευόμενος Trinc.
[c] δὴ] γε δὴ B. τε δὴ A. Trinc.
[d] μὲν οὐδ᾽] μὲν οὖν οὐδ᾽ A. m. p. Sed m. sec. delevit οὖν et οὐδ᾽ in οὐχ mutavit.
[e] ἀλλ᾽ αἱ] ἀλλ᾽ al. abest Gesn. Suprascriptum est in A.
[f] περὶ] τὰ περὶ A. m. s. B.
[g] τούτῳ] τούτου A.
[h] πραγματευόμεναι] πραγματεύονται A. m. s. παρασκευάζονται B.
[i] πάντα] πάντας A. m. p.
[k] σκοπούμεναι] σκοποῦνται. A. ex emend. δὲ σκοποῦσι B.
[l] πῶς ὁ] πῶς ὁ (ἂν suprascr.) A. πῶς ἂν B.
[m] προυργιαίτερον τοῦ φιλοσοφεῖν] τοῦ φιλοσοφεῖν προυργιαίτερον A.
[n] πῶς om. Trinc.
[o] ἀνὴρ] ἀνὴρ ὢν A. B.
[p] ἀφιλόσοφος] ἂν φιλόσοφος B.
[q] βασιλεὺς] βασιλικὸς A. B. Gesn. marg.

λικοῦ δήπου ἐστὶ τὸ δύνασθαι καλῶς ἐπιτροπεύειν ἔθνη καὶ πόλεις, καὶ εἶναι ἄξιον ἀνθρώπων ἄρχειν. Τίς δ' ἂν ἢ ἱκανώτερος εἴη πόλεως προστάτης, ἢ [r] ἀξιώτερος ἀνθρώπων ἄρχειν τοῦ φιλοσόφου; ᾧ γε προσήκει (ἄν περ ᾖ ἀληθῶς φιλόσοφος) εἶναι φρονίμῳ, σώφρονι, [s] μεγαλόφρονι, τῶν δικαίων κριτικῷ καὶ τῶν πρεπόντων, καταπρακτικῷ τῶν νοηθέντων, καρτερικῷ τῶν ἐπιπόνων· πρὸς δὲ τούτοις θαρραλέος, ἀδεὴς, ὑποστατικὸς τῶν δοκούντων δεινῶν εἴη ἄν· ἔτι δὲ εὐεργετικὸς, [t] φιλάνθρωπος, χρηστός. Τοῦ δὲ τοιούτου τίς ἂν εὑρεθείη ἄρχειν ἐπιτηδειότερος, ἢ δυνατώτερος; οὐδείς. Ἂν δὲ μὴ ἔχῃ πολλοὺς τοὺς ὑπακούοντας καὶ πειθομένους αὐτῷ, οὔπω διὰ τοῦτο τοῦ βασιλικὸς εἶναι ἐστέρηται· ἐξαρκεῖ γὰρ καὶ τὸ τῶν [u] φίλων ἄρχειν τῶν ὑπαρχόντων ἢ γυναικός τε καὶ παίδων, ἢ καὶ νὴ Δία αὐτὸν αὑτοῦ [w] μόνον. Καὶ γὰρ ἰατρὸς οὐδὲν ἧττον τοῦ θεραπεύοντος πολλοὺς ὁ θεραπεύων ὀλίγους, εἴ γε [x] ἔχει τὴν ἐμπειρίαν τὴν ἰατρικήν· καὶ μουσικὸς οὐδὲν ἧττον τοῦ διδάσκοντος πολλοὺς ὁ διδάσκων ὀλίγους, εἴ γε ἔχει τὴν μουσικήν· καὶ ἱππικὸς ὁμοίως τῷ χρωμένῳ πολλοῖς ἵπποις ὁ χρώμενος ἑνὶ ἢ [y] δυοῖν, ἄν γε ἐπιστήμων τῆς ἱππικῆς ᾖ· καὶ δὴ καὶ [z] βασιλικὸς παραπλησίως τῷ κεκτημένῳ πολλοὺς ὑπηκόους ὁ ἔχων ἕνα ἢ δύο τοὺς πειθομένους αὐτῷ· μόνον ἐχέτω τὴν τοῦ βασιλεύειν ἐμπειρίαν, ὥστε καὶ βασιλικὸς εἴη ἄν. Διὰ τοῦτό μοι δοκεῖ καὶ Σωκράτης τὴν φιλοσοφίαν πολιτικήν τε καὶ βασιλικὴν ἐπιστήμην ὀνομάζειν, ὅτι ὁ ταύτην ἀναλαβὼν εὐθὺς πολιτικός ἐστι. Τοιαῦτα τοῦ Μουσωνίου εἰπόντος, ἡσθεὶς ὁ βασιλεὺς τοῖς λόγοις χάριν τε ἔχειν [a] ὡμολόγει τῶν εἰρημένων

[r] ἀξιότερος] ἀξιώτερος A.
[s] μεγαλόφρονι om. Trinc.
[t] φιλάνθρωπος χρηστός] χρηστὸς φιλάνθρωπος A.
[u] φίλων] φιλοσόφων A. p. m.
[w] μόνου] μόνον A. B.
[x] ἔχοι] ἔχει A. et sic infra.
[y] δύσιν] δυοῖν A. B.
[z] βασιλικὸς παραπλησίως] βασιλικῶς[οι] παραπλησίως[ο] A. παραπλήσιος B.
[a] ὡμολόγει] ὡμολόγησε B.

αὐτῷ, καὶ ἀντὶ τούτων, ἔφη, αἴτησον ὅ τι βούλει με, οὐ γὰρ 339
ἂν ἀντείποιμί σοι περὶ οὐδενός. Ὁ οὖν Μουσώνιος, αἰτῶ σε, ἔφη, τούτοις στοιχεῖν καὶ ἕπεσθαι τοῖς λόγοις, οὓς ἐπαινεῖς· καὶ γὰρ ἐμοὶ οὕτω [b] χαριεῖ μάλιστα, καὶ ὠφελήσῃ αὐτὸς, οὐχ [c] ἑτέρως μᾶλλον.

68 [a] Ξενοφῶντος ἐν τῇ Κύρου παιδείᾳ ᾱ.

Καὶ μὲν δὴ, ἔφη, ὦ πάτερ, ὁ Κῦρος, ὅπως ἂν ἵλεω θεοὶ ὄντες ἡμῖν συμβουλεύειν ἐθέλωσιν, ὅσον δύναμαι κατὰ τὸν σὸν λόγον διατελέσω ἐπιμελούμενος. Μέμνημαι γὰρ ἀκούσας ποτέ σου, ὅτι εἰκότως ἂν καὶ παρὰ τῶν θεῶν πρακτικώτερος εἴη, ὥσπερ καὶ παρ' ἀνθρώπων, [b] ὅστις μὴ ὁπότε ἐν ἀπόροις εἴη, τότε [c] κολακεύοι, ἀλλ' ὅτε ἄριστα πράττοι, τότε μάλιστα τῶν θεῶν μέμνηται· καὶ τῶν φίλων δ' ἔφησθα χρῆναι ὡσαύτως οὕτως ἐπιμελεῖσθαι. Οὐκ οὖν [d] νῦν, ἔφη, ὦ παῖ, δι' [e] ἐκείνας τὰς ἐπιμελείας ἥδιον [[f] μὲν] ἔρχῃ πρὸς τοὺς θεοὺς [g] δεησόμενος, ἐλπίζεις δὲ μᾶλλον τεύξεσθαι ὧν ἂν δέῃ, ὅτι ξυνειδέναι [h] ἑαυτῷ δοκεῖς οὐ πώποτε ἀμελήσας αὐτῶν; Πάνυ μὲν οὖν, [i] ἔφη, ὦ πάτερ, ὡς προσφιλεῖς μοι τοὺς θεοὺς ὄντας, οὕτω διάκειμαι. Τί γὰρ, ἔφη, ὦ παῖ, ἐκεῖνα [k] μέμνησαι, ἅ ποτε ἐδόκει ἡμῖν; ὁπόσα γὰρ δήπου δεδώκασιν [l] ἡμῖν οἱ θεοὶ, μαθόντας ἀνθρώπους [m] βέλτιον πράσσειν ἢ ἀνεπιστήμονας αὐτῶν ὄντας, καὶ ἐργαζομένους μᾶλλον ἀνύειν ἢ ἀργοῦντας, καὶ ἐπιμελομένους [n] ἀσφαλέ-

[b] χαριεῖ] χαριῇ A. B.
[c] ἑτέρως] ἑτέρους B.

67.

[a] Sic A. Scil. I. 6, 3. Simpl. Ξενοφῶντος. Trinc.
[b] ὅστις μὴ] ὃς τιμῇ Trinc.
[c] κολακεύοι] κολακεύειν (οι) A.
[d] νῦν om. A. Trinc.
[e] ἐκείνας] ἐκείνων A. Trinc.
[f] μὲν ἔρχῃ] μὲν om. A. Trinc.
[g] δεησόμενος] ὄντας οὕτω διακείμενος Gesn. marg.
[h] σαυτῷ] ἑαυτῷ A. Trinc.
[i] ἔφη om. A. Trinc.
[k] μέμνησαι] μέμνηται A. B.
[l] ἡμῖν] Al. abest. Gesner.
[m] (βέλτιον—ὄντας)] Parenthesi inclusa alias non leguntur. Gesner.
[n] ἀσφαλέστερον] ἀφελέστερον A.

στερον ἂν διάγειν ἢ ἀφυλακτοῦντας, [o] καὶ παρέχοντας ἑαυτοὺς οἵους δεῖ· οὕτως ἡμῖν ἐδόκει δεῖν καὶ αἰτεῖσθαι τἀγαθὰ παρὰ τῶν θεῶν. Ναὶ μὰ Δί', ἔφη ὁ Κῦρος, [p][μέμνημαι μέντοι ταῦτα ἀκούσας σου·] καὶ γὰρ ἀνάγκη ἦν πείθεσθαι τῷ λόγῳ τούτῳ· [q]καὶ οἶδα [r] προστιθέντα αὐτῷ, ὡς οὐδὲ θέμις εἴη αἰτεῖσθαι παρὰ τῶν θεῶν, οὔτε ἱππεύειν μὴ μαθόντας, ἱππομαχοῦντας νικᾶν· οὔτε μὴ ἐπισταμένους τοξεύειν, τοξεύοντας κρατεῖν τῶν ἐπισταμένων τοξεύειν· [s] οὔτε μὴ ἐπισταμένους κυβερνᾶν, σώζειν εὔχεσθαι ναῦν κυβερνῶντας· οὔτε μὴ σπείραντάς γε σῖτον, εὔχεσθαι καλὸν αὐτοῖς σῖτον φύεσθαι· οὐδὲ [t] μὴ φυλασσομένους γε ἐν πολέμῳ, σωτηρίαν [u] αἰτεῖσθαι· παρὰ γὰρ τοὺς τῶν θεῶν θεσμοὺς ταῦτα καὶ τὰ τοιαῦτα πάντα εἶναι· τοὺς δὲ ἀθέμιστα εὐχομένους ὁμοίως ἔφησθα εἰκὸς εἶναι παρὰ θεῶν ἀτυχεῖν, ὥσπερ καὶ παρ' ἀνθρώπων ἀπρακτεῖν [w] τοὺς παράνομα δεομένους.

69 Ἐν ταυτῷ.

Καὶ τοῦτό σου λέγοντος, [b] συνεδόκει καὶ ἐμοὶ ὑπερμέγεθες ἔργον εἶναι τὸ καλῶς ἄρχειν, καὶ νῦν, ἔφη, ταῦτά μοι δοκεῖ, ὅτ' ἂν πρὸς αὐτὸ τὸ ἄρχειν σκοπῶν λογίζωμαι· ὅτ' ἂν μέντοι πρὸς ἄλλους ἀνθρώπους ἰδὼν κατανοήσω, ἀρξάμενος ἀπὸ τῶν ἡμετέρων φίλων τούτων, ἡγουμένους δεῖν τὸν ἄρχοντα τῶν ἀρχομένων διαφέρειν τῷ πολυτελέστερον δειπνεῖν, καὶ πλεῖον ἔχειν ἔνδον [c] χρυσίον, καὶ πλείονα χρόνον καθεύδειν, καὶ πάντα ἀπονώτερον τῶν ἀρχομένων διάγειν. Ἐγὼ δ' οἴομαι, ἔφη, τὸν ἄρχοντα οὐ τῷ ῥᾳδιουργεῖν χρῆναι διαφέρειν τῶν ἀρχομένων, ἀλλὰ τῷ προνοεῖν καὶ φιλοπονεῖν.

[o] καὶ] τούτων Gesn. marg.
[p] μέμνημαι—σου] om. A. Trinc.
[q] καὶ om. B.
[r] προστιθέντα] προτιθέντα B. σε ἐπιτιθέντα Gesn. marg.
[s] οὔτε—κυβερνῶντας om. A. B. Mox σπείροντας A. B.
[t] μὴ] om. A.
[u] αἰδεῖσθαι] αἰτεῖσθαι A. Trinc.
[w] τοὺς παράνομα] τοῦ παρανόμου A. τοῖς τοῦ παρανόμου B.

69.
Sic A. Scil. ib. 8.
[b] συνεδόκει] συνευδόκει B.
[c] χρυσίον] χρυσίων Trinc.

70 Ἐν ταυτῷ.

Ἐρωτᾷς, ἔφη, τοῦτο, ὦ παῖ, εἴ τις ἀπὸ σοῦ πόρος προσ- 340
γένοιτο. Ἀπὸ τίνος δὲ μᾶλλον εἰκὸς πόρον γενέσθαι ἢ [b]ἀπὸ τοῦ
δύναμιν ἔχοντος;

71 Ἐν ταυτῷ.

Τόδε [b]δὲ πάντων μάλιστά μοι μέμνησο· μηδέποτ' ἀναμένειν [c][τὸ] πορίζεσθαι τὰ ἐπιτήδεια, ἐς τ' ἂν ἡ [d]χρεία σε ἀναγκάσῃ· ἀλλ' ὅτ' ἂν μάλιστα εὐπορῇς, τότε πρὸ τῆς ἀπορίας μᾶλλον μηχανῶ. Καὶ γὰρ [e]τεύξει μᾶλλον παρ' ὧν ἂν δέῃ μὴ ἀπορεῖν δοκῶν, καὶ [f][ἔτι] ἀναίτιος ἔσῃ παρὰ τοῖς σαυτοῦ στρατιώταις· ἐκ τούτου δὲ [g]μάλιστα καὶ ὑπὸ τῶν ἄλλων αἰδοῦς τεύξῃ, καὶ ἐάν [h]τινα βούλῃ τῇ δυνάμει ἢ εὖ ποιῆσαι ἢ κακῶς, μᾶλλον ὑπηρετήσουσιν οἱ στρατιῶται ἔχοντες τὰ δέοντα· καὶ πιστικωτάτους δὲ λόγους σάφ' ἴσθι τότε δυνήσῃ λέγειν, ὅτ' ἂν περ καὶ ἐνδείκνυσθαι μάλιστα δύνῃ ποιεῖν ἱκανὸς ὢν καὶ εὖ καὶ κακῶς.

72 Ἐν ταυτῷ.

Τὸ τέλος δή [b]με ἐπήρου, τί ποτε διδάσκων στρατηγίαν φαίη με διδάσκειν. Κἀγὼ δὴ ἐνταῦθα ἀπεκρινάμην, ὅτι τὰ τακτικά. Καὶ σὺ γελάσας διῆλθές μοι, παρατιθεὶς ἕκαστον, [c]τί εἴη ὄφελος στρατηγίᾳ τακτικῶν ἄνευ τῶν ἐπιτηδείων; τί δὲ ἄνευ τοῦ ὑγιαίνειν; τί δὲ ἄνευ τοῦ ἐπίστασθαι τὰς [d]εὑρημένας εἰς πόλεμον τέχνας; τί δὲ ἄνευ τοῦ πείθεσθαι; Ὡς δὲ καταφανὲς ἐποίησας, ὅτι μικρόν τι

70.
[b] ἐπὶ] ἀπὸ A. B. v. ibid. 10.

71.
[b] δὲ] δὴ A. ibid. 14.
[c] τὸ πορίζεσθαι] τὸ om. A. Tr.
[d] χρεία σε] χρεία γε Trinc.
[e] τεύξει] τεύξῃ A.
[f] ἔτι om. A. Trinc.
[g] μάλιστα] μᾶλλον Gesn. marg. καὶ om. A. B.
[h] τινας] τινα A. Trinc.

72.
[b] μοι] με A. ibid. 14.
[c] ὅτι οὐδὲν] τι A. Trinc.
[d] εὑρημένας] εἰρημένας B.

μέρος εἴη στρατηγίας τὰ τακτικά, ἐπηρόμην, [c] εἴ τι τούτων σύ με διδάξαι ἱκανὸς εἴης· [[f] ἀπιόντα με ἐκέλευσας τοῖς στρατηγικοῖς ἀνδράσι νομιζομένοις διαλέγεσθαι.]

73 [a] Ἐν ταυτῷ.

Δεῖ γὰρ δήπου στρατιάν, εἰ μέλλει πράξειν τὰ δέοντα, μήποτε [b] παύεσθαι ἢ τοῖς πολεμίοις κακὰ πορσύνουσαν, ἢ αὑτοῖς ἀγαθά. Ὡς χαλεπὸν μὲν καὶ ἕνα ἄνθρωπον ἀργὸν τρέφεσθαι, πολὺ δ' ἔτι, ὦ παῖ, χαλεπώτερον οἶκον ὅλον, πάντων δὲ χαλεπώτατον στρατιὰν ἀργὴν τρέφειν. Πλεῖστά [c] τε γὰρ [d] ἐσθίει στρατιά, καὶ ἀπ' ἐλαχίστων ὁρμώμενα, καὶ οἷς ἂν λάβῃ δαψιλέστατα [e] χρωμένη· ὥστε οὐδέποτε προσήκει στρατιὰν ἀργεῖν. Λέγεις σύ, ἔφη, [f] πάτερ, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ, ὥσπερ οὐδὲ γεωργοῦ ἀργοῦ οὐδὲν ὄφελος, οὕτως οὐδὲ στρατηγοῦ ἀργοῦ οὐδὲν ὄφελος εἶναι. Τὸν δέ γε ἐργάτην στρατηγὸν [[g] ἐγώ,] ἔφη, ἀναδέχομαι, ἤν μή τις θεὸς βλάπτῃ, ἅμα καὶ τὰ ἐπιτήδεια [h] μάλιστ' ἔχοντας τοὺς στρατιώτας ἀποδείξειν, καὶ τὰ σώματα ἄριστα ἔχοντας παρασκευάσειν. Ἀλλὰ μέντοι τό γε, [i] ἔφη, μελετᾶσθαι ἕκαστα τῶν πολεμίων ἔργων, ἀγῶνας [k] ἄν τις μοι δοκεῖ, ὦ πάτερ, [l] προειπὼν ἑκάστοις, καὶ ἆθλα προτιθεὶς, μάλιστα ποιεῖν [[m] εὖ] ἀσκεῖσθαι ἕκαστα, ὥστε ὁπότε δέοιτο ἔχειν ἂν παρεσκευασμένοις χρῆσθαι. Κάλλιστα λέγεις, ὦ παῖ, ἔφη· τοῦτο γὰρ ποιήσας, σαφ' ἴσθι, ὥσπερ χοροὺς τὰς

[c] εἴ] εἰ A. B.
[f] ἀπιόντα—διαλέγεσθαι om. A. Trinc.

73.

[a] Ibid. 17.
[b] ἢ om. A. παύουσαν pro παύεσθαι ἢ Trinc.
[c] γὰρ] τε γὰρ A. B.
[d] ἐσθίει] τὰ ἐσθίοντα ἐν στρατιᾷ Gesn. marg.
[e] χρωμένα] χρωμένη Trinc.
[f] πάτερ] ὦ πάτερ A. B.
[g] ἐγὼ om. A. Trinc. Mox μή τι Trinc.
[h] ἔχοντας μάλιστα] μάλιστ' ἔχοντας A.
[i] ἔφη μελετᾶσθαι] μελετᾶσθαι ἔφη A.
[k] ἄν τις μοι] ἄν τινάς μοι Gesn. marg.
[l] προειπὼν] προσειπὼν Trinc.
[m] εὖ] om. A. Trinc.

τάξεις ἀεὶ τὰ προσήκοντα μελετώσας θεάσῃ. Ἀλλὰ μὴν, ἔφη ὁ Κῦρος, [n]τό γ' εὐθυμίαν ἐμβαλεῖν τοῖς στρατιώταις οὐδέν μοι δοκεῖ ἱκανώτερον εἶναι, ἢ τὸ δύνασθαι ἐλπίδας ἀγαθὰς ἐμποιεῖν ἀνθρώποις. Ἀλλὰ μὴν, ἔφη, ὦ παῖ, τοῦτό γε 341
τοιοῦτόν ἐστιν, οἷον περ εἴ τις κύνας ἐν θήρᾳ ἀνακαλοῖτο ἀεὶ τῇ κλήσει, οἵαπερ ὅτ' ἂν [o]τὸ θηρίον [p]ὁρᾷ. Τὸ μὲν γὰρ πρῶτον προθύμως [q]οἶδ' ὅτι ἔχει [r]ὑπακουούσας, ἂν δὲ πολλάκις ψεύδηται [s]αὐτὰς, τελευτῶσαι, οὐδ' ὁπότ' ἂν ἀληθῶς ὁρῶν καλῇ, [t]πείθονται αὐτῷ. Οὕτω καὶ τὸ περὶ τῶν ἐλπίδων ἔχει, ἢν πολλάκις προσδοκίας ἀγαθῶν ἐμβάλλων ψεύδηταί τις, τελευτῶν, οὐδ' [u]ὁπότ' ἂν ἀληθεῖς ἐλπίδας [w]λέγῃ, ὁ τοιοῦτος πείθειν δύναται. Ἀλλὰ τοῦ μὲν αὐτὸν λέγειν, [x]ἐὰν μὴ σαφῶς εἰδείη, φείδεσθαι δεῖ, ὦ παῖ· [[y]ἄλλοι δὲ ἐνίοτε λέγοντες ταυτὸ διαπράττοιεν ἄν·] τὴν δὲ αὐτοῦ παρόρμησιν εἰς τοὺς μεγίστους κινδύνους δεῖ [z]ὡς μάλιστα ἐν πίστει διασώζειν.

74 Ἐν ταυτῷ.

Νόμοι δὲ δοκοῦσί μοι οἱ πολλοὶ [b]δύο ταῦτα μάλιστα διδάσκειν, ἄρχειν τε καὶ ἄρχεσθαι. Καὶ τοίνυν κατανοῶν περὶ τούτων ἐν πᾶσιν ὁρᾶν μοι δοκῶ τὸ [c]προτερεῖον πείθεσθαι μάλιστα [d]ὂν, τῷ τὸν μὲν πειθόμενον ἐπαινεῖν τε καὶ τιμᾶν, τὸν δὲ [e]ἀπειθοῦντα ἀτιμάζειν τε καὶ κολάζειν. Καὶ ἐπὶ μέν γε τὸ ἀνάγκῃ πείθεσθαι, ἔφη, αὕτη ἡ ὁδὸς, ὦ παῖ, ἐστίν· ἐπὶ δὲ τὸ πολὺ κρεῖσσον τούτου, [f]τὸ ἑκόντα πείθεσθαι,

[n] τόγ'] τὸ A. εἴς τε τὸ προθυμίαν Gesn. marg.
[o] τὸ] om. A. Trinc.
[p] ὁρᾷ] ὁρῶσι Gesn. marg.
[q] οἶδ'] εἶδ' A.
[r] ὑπακούσας] ὑπακουούσας A. B.
[s] αὐταῖς] αὐτὰς B.
[t] πείθονται] πείθωνται A.
[u] ὁπόταν] ὅποτε A.
[w] λέγῃ] λέγει A.
[x] ἐὰν] ἃ Gesn. marg.
[y] ἄλλοι—ἂν om. A. Trinc.
[z] ὡς μάλιστα] ὡς om. Trinc.

74.

[b] δύο ταῦτα] ταῦτα δύο A.
[c] προτερεῖον] πρωτερεῖον A. προτρέπον Gesn. marg. ex Xenoph.
[d] ὂν] ἐν A. B.
[e] ἀπειθοῦντα] ἀπιθοῦντα A.
[f] τὸ] τὰ A.

ἄλλη ἐστὶ συντομωτέρα [[g] ὁδός.] Ὃν γὰρ ἂν ἡγήσωνται περὶ τὰ συμφέροντα ἑαυτοῖς φρονιμώτερον [h] εἶναι ἑαυτῶν, τούτῳ οἱ ἄνθρωποι ὑπερηδέως πείθονται. Γνοίης δ' ἂν ὅτι τοῦθ' οὕτως ἔχει ἐν ἄλλοις τε πολλοῖς, καὶ δὴ καὶ ἐν τοῖς κάμνουσιν, ὡς προθύμως τοὺς ἐπιτάξοντας ὅ τι χρὴ ποιεῖν καλοῦσι· [i] καὶ ἐν θαλάσσῃ ὡς προθύμως τοῖς κυβερνήταις οἱ συμπλέοντες πείθονται.

75 Ἐν ταυτῷ.

Φρόνιμος δὲ περὶ τοῦ συνοίσειν μέλλοντος πῶς ἄν τις τῷ ὄντι γένοιτο; Δῆλον ὅτι, ἔφη, ὦ παῖ, ὅσα μὲν ἐστὶ μαθόντα εἰδέναι, μαθὼν ἂν ὥσπερ τὰ τακτικὰ ἔμαθες· ὅσα δὲ ἀνθρώποις οὔτε μαθητὰ, οὔτε [b] προορατὰ ἀνθρωπίνῃ [c] προνοίᾳ, διὰ μαντικῆς ἂν παρὰ θεῶν πυνθανόμενος, φρονιμώτερος ἄλλων ἂν εἴης· ὅ τι δὲ γνοίης βέλτιον ἂν πραχθῆναι, ἐπιμελόμενος ἂν τούτου, ὡς πραχθείη. Καὶ γὰρ τὸ ἐπιμελεῖσθαι [d] τούτου, οὗ ἂν δέῃ, φρονιμωτέρου ἀνδρὸς, ἢ τὸ ἀμελεῖν. Ἀλλὰ μέντοι ἐπί γε τὸ φιλεῖσθαι ὑπὸ [e] τῶν ἀρχομένων, ὅπερ ἐμοὶ ἐν τοῖς μεγίστοις δοκεῖ εἶναι, δῆλον ὅτι ἡ αὐτὴ ὁδὸς, ἥπερ εἴ τις ὑπὸ τῶν φίλων στέργεσθαι ἐπιθυμοίη. Εὖ γὰρ, οἶμαι, [f] δεῖ ποιοῦντα φανερὸν εἶναι. Ἀλλὰ τοῦτο μὲν, ἔφη, ὦ παῖ, χαλεπὸν, τὸ ἀεὶ δύνασθαι εὖ ποιεῖν, οὓς ἄν τις θέλῃ· τὸ δὲ [g] συνηδόμενόν τε φαίνεσθαι, ἤν τι ἀγαθὸν αὐτοῖς συμβαίνῃ, καὶ συναχθόμενον, [h] ἤν τι κακὸν, καὶ συνεπικουρεῖν [i] πρόθυμον ταῖς ἀπορίαις αὐτῶν, καὶ προφοβούμενον, μή τι σφαλῶσι, καὶ προνοεῖν πειρώμενον, ὡς μὴ σφάλλωνται,

[g] ὁδὸς om. A. Trinc.
[h] εἶναι ἑαυτῶν] ἑαυτῶν εἶναι A.
[i] καὶ ἐν—πείθονται om. B.

75.

[b] προορατὰ] προαιρετὰ A. B.
[c] προνοίᾳ] διανοίᾳ A. B.
[d] τούτου—φιλεῖσθαι om. A. B.
[e] τῶν ἀρχομένων] Deest articulus Trinc. Supra vulg. τῷ pro τὸ.
[f] δεῖν] δεῖ A. Trinc.
[g] συνηδόμενον] συναδόμενον A. B.
[h] ἤν τι] ὅτι A.
[i] πρόθυμον] προθυμούμενον Gesn. marg.

[[k]ἐπὶ] ταῦτα πῶς δεῖ [l]παρομαρτεῖν. Καὶ [m]τὸ τῶν πράξεών
γε, ἢν μὲν ἐν θέρει ὦσι, τὸν ἄρχοντα δεῖ τοῦ ἡλίου πλεονεκ-
τοῦντα [[n]φανερὸν] εἶναι· ἢν [o]δὲ χειμὼν, τοῦ ψύχους· ἢν δὲ
δεῖ μοχθεῖν, τῶν πόνων· πάντα γὰρ ταῦτα εἰς τὸ φιλεῖσθαι
ὑπὸ τῶν ἀρχομένων συλλαμβάνει. Λέγεις [p]εὖ, ἔφη, ὦ πάτερ, 342
ὡς καὶ καρτερὸν δεῖ πρὸς πάντα τὸν ἄρχοντα τῶν ἀρχομένων
μᾶλλον εἶναι. [q]Ἐγὼ γὰρ οὖν, ἔφη. Θάρρει μέντοι, [r]ἔφη,
ὦ παῖ· εὖ γὰρ ἴσθι τοῦτο, ὅτι τῶν ὁμοίων σωμάτων οἱ αὐτοὶ
[s]πόνοι οὐχ ὁμοίως [t]ἅπτονται, ἄρχοντός τε ἀνδρὸς καὶ ἰδιώ-
του· ἀλλὰ [u]ἐπικουφίζει τι ἡ τιμὴ τοὺς πόνους τῷ ἄρχοντι,
καὶ τὸ αὐτὸν εἰδέναι, ὅτι οὐ λανθάνει ὅ τι ἂν ποτε ποιῇ. Ὁ-
πότε δὲ, ὦ πάτερ, ἤδη ἔχοιεν μὲν τὰ ἐπιτήδεια οἱ στρατιῶ-
ται, ὑγιαίνοιεν δὲ, πονεῖν δὲ δύναιντο, τὰς δὲ πολεμικὰς
τέχνας ἠσκηκότες εἶεν, φιλοτίμως δὲ ἔχοιεν πρὸς τὸ ἀγαθοὶ
φαίνεσθαι, τὸ δὲ πείθεσθαι αὐτοῖς ἥδιον εἴη τοῦ [w]ἀπειθεῖν,
οὐκ ἂν ἤδη τηνικαῦτα σωφρονεῖν ἄν τις σοι δοκοίη διαγωνί-
ζεσθαι βουλόμενος πρὸς τοὺς πολεμίους ὡς τάχιστα; Ναὶ
μὰ Δί', ἔφη, εἰ μέλλει γε πλέον ἕξειν· εἰ δὲ μὴ, ἔγωγ' ἂν
ὅσῳ [x]οἰοίμην καὶ αὐτὸς βελτίων εἶναι καὶ τοὺς ἑπομένους
βελτίονας ἔχειν, τόσῳδ' ἂν μᾶλλον φυλαττοίμην, ὥσπερ
καὶ τὰ ἄλλα, [[y]ἃ] ἂν οἰώμεθα πλείστου ἄξια ἡμῖν εἶναι,
ταῦτα πειρώμεθα ὡς ἐν ἐχυρωτάτῳ ποιεῖσθαι. Πλέον δ'
ἔχειν, ὦ πάτερ, πολεμίων, πῶς ἄν τις δύναιτο [[z]μάλιστα;
Οὐ μὰ Δία, ἔφη,] [a]οὐκέτι τοῦτο, ὦ παῖ, φαῦλον οὐδὲ ἁπ-

[k] ἐπὶ om. A. Trinc.
[l] παρομαρτεῖν] μᾶλλον συμπαρομαρτεῖν Gesn. marg.
[m] ἐπὶ τῶν πράξεων δὲ] τὸ τῶν πράξεών γε A. Trinc.
[n] φανερὸν om. A. Trinc.
[o] δὲ om. A.
[p] εὖ] ἔφη εὖ A. εὖ ἔφη Trinc. σὺ Gesn. marg.
[q] ἐγὼ] λέγω Gesn. marg.
[r] ἔφη om. Trinc.
[s] πόνοι om. A. B.
[t] ἅπτωνται] ἅπτονται A. Trinc.
[u] ἐπικουφίζει] κουφίζει A. B. φίζει (sic) Trinc.
[w] ἀπειθεῖν] ἀπιθεῖν A.
[x] οἰοίμην] οἰόμην Trinc.
[y] ἃ om. A. Trinc.
[z] μάλιστα; οὐ μὰ διά om. A. Tr.
[a] οὐκέτι] οὐκ ἔστι A. B.

λοῦν ἔργον ἐρωτᾷς· ἀλλ' εὖ ἴσθι ὅτι δεῖ τὸν μέλλοντα τοῦτο ποιήσειν καὶ ἐπίβουλον εἶναι, καὶ κρυψίνουν, [[b] καὶ δολερὸν,] καὶ ἀπατεῶνα, καὶ κλέπτην, καὶ ἅρπαγα, καὶ ἐν παντὶ πλεονέκτην τῶν πολεμίων. Καὶ ὁ Κῦρος ἐπιγελάσας εἶπεν· Ὦ Ἡράκλεις, οἷον [c] αὖ λέγεις, ὦ πάτερ, δεῖν ἄνδρα με γενέσθαι; Οἷος ἂν, ἔφη, ὦ παῖ, δικαιότατός τε καὶ ἐννομώτατος ἀνὴρ [d] εἴη. Πῶς μὴν, ἔφη, παῖδας ὄντας ἡμᾶς [[e] καὶ ἐφήβους] ἐναντία τούτων ἐδιδάσκετε; Ναὶ μὰ Δί', ἔφη, καὶ νῦν γε πρὸς τοὺς [f] φίλους τε καὶ τοὺς πολίτας.

76 [a] Ξενοφῶντος ἐν γ' Ἀπομνημονευμάτων.

Βασιλεῖς δὲ καὶ ἄρχοντας, οὐ τοὺς τὰ σκῆπτρα ἔχοντας, ἔφη, [b] εἶναι, οὐδὲ τοὺς ὑπὸ τῶν τυχόντων αἱρεθέντας, οὐδὲ τοὺς κλήρῳ λαχόντας, οὐδὲ τοὺς βιασαμένους, οὐδὲ τοὺς ἐξαπατήσαντας, ἀλλὰ τοὺς ἐπισταμένους ἄρχειν. Ὁπότε γάρ τις ὁμολογήσειε τοῦ μὲν ἄρχοντος εἶναι τὸ προστάττειν ὅ τι χρὴ ποιεῖν, τοῦ δὲ ἀρχομένου τὸ πείθεσθαι, ἐπεδείκνυεν ἔν τε νηῒ [c] τὸν μὲν ἐπιστάμενον ἄρχοντα, τὸν δὲ ναύκληρον καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς ἐν τῇ νηῒ πάντας, πειθομένους τῷ ἐπισταμένῳ· καὶ ἐν γεωργίᾳ τοὺς κεκτημένους ἀγροὺς, καὶ ἐν νόσῳ τοὺς νοσοῦντας, καὶ [d] ἐν σωμασκίᾳ τοὺς σωμασκοῦντας, καὶ τοὺς ἄλλους πάντας, οἷς ὑπάρχει τι ἐπιμελείας δεόμενον, ἂν μὲν αὐτοὶ [e] ἡγῶνται ἐπίστασθαι, ἐπιμελεῖσθαι· εἰ δὲ μὴ, τοῖς ἐπισταμένοις οὐ μόνον παροῦσι πειθομένους, ἀλλὰ καὶ ἀπόντας μεταπεμπομένους, ὅπως ἐκείνοις πειθόμενοι [f] τὰ δέοντα πράττωσιν· ἐν δὲ ταλασίᾳ καὶ τὰς γυναῖκας ἐπεδείκ-

[b] καὶ δολερὸν om. A. Tr. Mox ἀπαταιῶνα Trinc.
[c] αὖ] σὺ Gesn. marg.
[d] εἴης] εἴη A. Trinc.
[e] καὶ ἐφήβους om. A. Trinc.
[f] φίλους καὶ] φίλους τε καὶ A. B. sed τε in A. suprasc.

76.

[a] Sic A. Trinc. Scil. III. 9, 10.
[b] εἶναι om. A. et add. Σωκράτης post ἔφη a m. sec. εἶναι om. Trinc.
[c] τὸν μὲν—τῇ νηῒ om. A. B.
[d] ἐν σωμασκίᾳ] ἐν om. Trinc.
[e] ἡγῶνται] ἡγοῦνται A. p. m. ἡττῶνται Gesn. marg.
[f] τὰ om. A. B.

νυεν ἀρχούσας τῶν ἀνδρῶν διὰ τὸ τὰς μὲν εἰδέναι ὅπως χρὴ ταλασιουργεῖν, τοὺς δὲ μὴ εἰδέναι. Εἰ δέ τις πρὸς ταῦτα λέγοι, ὅτι τῷ τυράννῳ ἔξεστι μὴ πείθεσθαι τοῖς ὀρθῶς [g] λέγουσι, Καὶ πῶς ἄν, ἔφη, ἐξείη μὴ πείθεσθαι, ἐπικειμένης [h] δὲ ζημίας, ἐάν τις τῷ εὖ λέγοντι [i] μὴ [k] πίθηται; Ἐν ᾧ 343
γὰρ ἄν τις πράγματι μὴ πίθηται τῷ εὖ λέγοντι ἁμαρτήσεται δήπου, ἁμαρτάνων δὲ ζημιωθήσεται. Εἰ δὲ φαίη τις τῷ τυράννῳ ἐξεῖναι καὶ ἀποκτεῖναι τὸν εὖ φρονοῦντα· Τὸν δὲ ἀποκτείναντα, ἔφη, τοὺς κρατίστους τῶν συμμάχων οἴει ἀζήμιον γίγνεσθαι, ἢ ὡς ἔτυχε ζημιοῦσθαι; πότερα γὰρ ἂν μᾶλλον οἴει σώζεσθαι τὸν τοῦτο ποιοῦντα, ἢ οὕτως καὶ τάχιστ᾽ ἂν ἀπολεῖσθαι;

* ΨΟΓΟΣ ΤΥΡΑΝΝΙΔΟΣ. ΜΘ.

1 [a] Εὐριπίδου Ἱκετίσιν.

Οὐδὲν τυράννου δυσμενέστερον [b] πόλει,
ὅπου τὸ μὲν πρώτιστον οὐκ εἰσὶν νόμοι
κοινοί· κρατεῖ δ᾽ εἷς τὸν νόμον κεκτημένος.

2 [a] Εὐριπίδου Ἴωνι.

Τυραννίδος δὲ τῆς [b] πάλαι θρυλλουμένης
τὸ μὲν πρόσωπον ἡδύ, τἀν δόμοισι δὲ
λυπηρά. Τίς γὰρ μακάριος, τίς εὐτυχής,
ὅστις δεδοικὼς καὶ [c] περιβλέπων βίον

[g] ἔχουσι] λέγουσι A. B. Gesn. marg.

[h] δὲ] τε Gesn. marg. l. γε cum Xenoph.

[i] (μὴ πιθηται—λέγοντι)] Al. absunt inclusa parenthesi. Gesner.

[k] πίθηται] πείθηται A. et infra.

1.

* ΠΕΡΙ ΨΟΓΟΥ] ΨΟΓΟΣ A.

[a] Sic fere A. ubi ἱκετίοιν. Scil. v. 429. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] πόλει om. A. Tr. sed habet B.

2.

[a] Sic A. Scil. v. 621. Deest lemma Trinc.

[b] πάλαι θρυλλουμένης] μάτην αἰνουμένης Gesn. marg. ex ipso, ut videtur, Euripide. Hoc edidit Grotius.

[c] περιβλέπων] παραβλέπων Gesn. marg.

Ib. Minus recte παραβλέπων in

αἰῶνα τείνει; δημότης ἂν εὐτυχὴς
ζῆν ἂν θέλοιμι μᾶλλον, ἢ τύραννος ὤν,
[d] οἷς τοὺς πονηροὺς ἡδονὴ φίλους ἔχειν,
ἐσθλοὺς δὲ [c] μισεῖν, κατθανεῖν φοβουμένους.

3 [a] Εὐριπίδου Αὐγῇ.

Κακῶς δ᾽ [b] ὄλοιντο πάντες, οἳ τυραννίδι
χαίρουσιν, [c] ὀλίγῃ τ᾽ ἐν πόλει μοναρχίᾳ.
τοὐλεύθερον γὰρ [d] ὄνομα παντὸς ἄξιον.
κἂν μίκρ᾽ ἔχῃ τις, μεγάλ᾽ ἔχειν νομίζεται.

4 [a] Εὐριπίδου Ἠλέκτρα.

Ἡ γὰρ τυραννὶς πάντοθεν τοξεύεται
δεινοῖς ἐρῶσιν, [b] ἧς φυλακτέον πέρι.

5 [a] Εὐριπίδου Ἀντιγόνης.

Οὔτ᾽ εἰκὸς ἄρχειν, οὔτ᾽ ἐχρῆν εἶναι νόμον,
τύραννον [b] εἶναι μωρία δὲ καὶ θέλειν,
ὃς τῶν ὁμοίων βούλεται κρατεῖν μόνος.

6 [a] Εὐριπίδου Ἀλκμαίωνος.

Φεῦ, φεῦ, τὰ μεγάλα, μεγάλα καὶ πάσχει κακά.

Euripidis libris. At βίον mendose apud Stobæum. Grotius. Qui βίαν edidit. Mox ἄνευ τύχης Tr.

[d] ᾧ] οἷς A. Trinc.

[e] μισεῖ] μισεῖν A. Trinc. et mox φοβουμένους. In B. φοβουμένοις.

3.

[a] Sic A. Scil. fr. 7. Deest lemma Trinc.

[b] ὄλοιντο] ὄλλυντο Trinc.

[c] ὀλίγων τ᾽] Vulgo ὀλίγῃ τ᾽ nullo sensu. Est autem κατάχρησις in isto ὀλίγων μοναρχία, ut *equitare in arundine longa*, et *equum divina Palladis arce Ædificant*. Grotius.

[d] ὄνομα] οὔνομα Voss. οὐνώμα A. m. sec.

4.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Vide Fragm. falso cit. 2. p. 479.

[b] ἧς] οἷς A. quomodo edidit Grotius. Neutram lectionem Græcam esse censet Valckenærius, qui reponit δεινῶς ἐρῶσιν οὓς φυλακτέον, πάτερ. ad Herodot. III. 53. Diatr. Eurip. p. 226.

5.

[a] Sic A. Scil. fr. 5. Deest lemma Trinc.

[b] εἶναι μωρία] θεῖναι μυρία A. θεῖναι B.

6.

[a] Sic A. Scil. fr. 3. Deest lemma Trinc.

7 [a] Εὐριπίδου Πελιάδων.

Τὸ δ' ἔσχατον δὴ τοῦτο θαυμαστὸν βροτοῖς
τυραννὶς, οὐχ εὕροις ἂν ἀθλιώτερον.
φίλους τε πορθεῖν, καὶ κατακτανεῖν, χρεὼν,
πλεῖστος φόβος πρόσεστι μὴ [b] δράσωσί τι.

8 [a] Μενάνδρου Ἀσπίδος.

[b] Ὦ τρισάθλιοι, τί πλέον ἔχουσι τῶν ἄλλων; [c] βίον
ὡς [d] οἰκτρὸν ἐξαντλοῦσιν οἱ τὰ φρούρια
τηροῦντες, οἱ τὰς ἀκροπόλεις κεκτημένοι.
εἰ πάντας ὑπονοοῦσιν [e] οὕτω ῥᾳδίως
ἐγχειρίδιον ἔχοντας αὐτοῖς προσιέναι,
οἵαν δίκην διδόασιν;

9 [a] Διονυσίου τυράννου.

Ἡ γὰρ τυραννὶς ἀδικίας μήτηρ ἔφυ.

10 [a] Σοφοκλέους Οἰδίποδι.

Ὦ πλοῦτε καὶ [b] τυραννὶ, καὶ τέχνη τέχνης

7.

[a] Sic A. Scil. fr. 5. Deest lemma Trinc.

[b] δράσωσι] δράσοντι N.

8.

[a] Sic A. ubi ἀσπὶ Simpl. Μενάνδρου Trinc. Cleric. p. 24.

[b] ὦ τρισαθλίοι Βασιλεῖς] Quod præcedit ὦ τρισάθλιοι finem feci versus antecedentis, et vocem βασιλεῖς addidi, ut versui sua ratio constaret. Grotius. Utinam et sententiæ consuluisset Vir summus, neque pro *Tyrannos*, ut Stobæi titulus monstrat, *Reges* hic *infelices* induxerat. Facilius autem, et, opinor, melius sic versus sustentabitur, ὦ τρισάθλιοι, Τί πλέον ἔχουσι δημοτῶν ἄλλων; βίον Ὡς οἰκτρὸν ἐξαντλοῦσιν. *O ter infelices, quid amplius habent, quam alii plebeii.* Nempe de Tyrannis verba fecerat Menander in prioribus versibus, quos omisit Stobæus. Recte autem δημοτῶν, ut Euripides ibidem, δημότης ἂν εὐτυχὴς Ζῆν ἂν θέλοιμι μᾶλλον ἢ τύραννος ὤν. Quin et sic poteris versum supplere, Τί δῆτα πλέον ἔχουσι τῶν ἄλλων; βίον Bentleius.

[c] βίον] βίων Trinc.

[d] οἰκτρὸν] οἰκτρὸν οἱ A.

[e] οὕτω] οὗτοι Porsonus ad Aristoph. Vesp. 632.

9.

[a] Sic A. Trinc. Gesner: *Dionysii tyranni alias Euripidis.* v. fr. inc. 45. Euripidi tribuit N.

10.

[a] Sic A. Scil. Tyr. 580. Simpl. Σοφοκλ. Trinc.

[b] τυραννὶς] Ita edd. MSS. Grotius dedit τυραννὶ e Sophocle.

ὑπερφέρουσα τῷ πολυζήλῳ βίῳ,
ὅσος παρ' [c]ὑμῖν ὁ φθόνος φυλάσσεται.

11 [a]Ἐν ταυτῷ.

Ὕβρις φυτεύει τύραννον, ὕβρις, [b]εἰ
πολλῶν [c]ὑπερπλησθῇ μάταν.

12 [a]Σοφοκλέους Αἴαντι.

Τόν τοι τύραννον εὐσεβεῖν οὐ ῥᾴδιον. 344

13 [a]Τοῦ αὐτοῦ Πολυξένῃ.

Οὐ γάρ τις ἂν δύναιτο [b]πρωρατὴς στρατοῦ
τοῖς πᾶσι δεῖξαι καὶ προσαρκέσαι χάριν.
[c]ἐπεὶ οὐδ' ὁ κρείσσων Ζεὺς ἐμοῦ τυραννίδι,
οὔτ' [d]ἐξεπομβρῶν οὔτ' ἐπαυχμήσας φίλος
βροτοῖς ἀνελθὼν ἐς δίκην λόγων ὄφλαι.
πῶς δῆτ' ἐγὼ θνητός [e]γ' ἂν ἐκ θνητῆς τε φὺς
Διὸς γενοίμην εὖ φρονεῖν σοφώτερος;

14 [a]Φαβωρίνου.

Ὥσπερ γὰρ τὰ θηρία τὴν σαγήνην ὑποχωροῦντα εἰς ἐλάττω τόπον συνάγεται, οὕτω [b]δὴ καὶ τοὺς τυράννους ἔστιν ἰδεῖν

[c] ἡμῖν] ὑμῖν A.

11.

[a] Sic A. Scil. v. 873. Deest lemma Trinc.

[b] εἰ] ἡ A. ἢ Trinc.

[c] ὑπερπλησθῇ μάτην] ὑπερεπλήσθη μάτων Trinc.

12.

[a] Sic A. Scil. v. 1350. Deest lemma Trinc.

13.

[a] Sic A. Scil. fr. 3. Deest lemma Trinc.

[b] πρωρατῆς] πρῴρ τῇ A. πρωρατῆς Trinc.

[c] ἐπεὶ] Ita legit Valckenærius ad Theocrit. IV. 43. Ἐπεί γ' ὁ κρείσσων Ζεὺς ἐμοῦ τυραννίδι, Οὔτ' ἐξ ἐπομβρῶν, οὔτ' ἐπαυχμήσας, φίλος Βροτοῖς ἂν ἔλθοι. Dederat Grotius ἐπεὶ οὐδ'—οὔτ' ἐξεπομβρῶν—ἂν ἔλθοι, εἰ.

[d] ἐξ ὄμβρων] ἐξ ἐπ' ὄμβρων Voss. ἐξ ἐπὸμβρῶν (sic) A. ἐξ ἐπομβρῶν B. In v. seq. λόγους pro λόγων habet B. ὄφλοι Brunckius pro ὄφλαι. Dobræus in addendis ad Aristoph. Eq. 803. corrigit, βροτοῖς ἂν ἐλθὼν εἰς λόγον, δίκην ὄφλοι.

[e] γ' ἂν] γ' ὧν A. γέ τ' Grotius, τ' ἂν Brunckius.

14.

[a] Sic A. ex emend. Φαβουρίνου p. m. Trinc.

[b] δὴ] δὲ Voss. Trinc.

ἐπαναχωροῦντας ἐκ μὲν τῆς Ἑλλάδος εἰς [c] τὴν πόλιν, ἐκ δὲ τῆς πόλεως ἐς τὴν ἀκρόπολιν, εἶτ' εἰς τὴν οἰκίαν, [d] εἶτ' εἰς τὸ δωμάτιον. [e] Εἶτα δύναται καταφυγεῖν ἄνθρωπος θεὸν φεύγων; ὅπου γὰρ ἂν καταφύγῃ, ἡ δίκη αὐτὸν εὑρήσει.

15 [a] Δημοσθένους ἐκ τῶν Φιλιππικῶν Α.

Καὶ ὅλως ἄπιστον οἶμαι ταῖς πολιτείαις ἡ τυραννίς.

16 [a] Ἐκ τῆς Φαλάριδος πρὸς Δημοτέλη ἐπιστολῆς.

Συγγνώμην ἔχω σοι τῶν παραινέσεων· τύραννος γὰρ οὐ γεγονὼς, τυράννῳ [b] συμβουλεύεις καταθέσθαι τὴν τυραννίδα, οὐκ εἰδὼς ὅτι τοῦ κτήσασθαι τὴν ἀρχὴν ἐπισφαλέστερόν ἐστι τὸ καταθέσθαι.

17 [c] Ἀναξιμένους.

Ἀναξιμένης [b] ὁ Λαμψακηνὸς ῥήτωρ ἐρωτηθεὶς ὑπὸ τοῦ βασιλέως Φαίδρου, τί ἀκοινώνητόν ἐστιν, εἶπε, Τυραννίς.

18 [a] Ἀριστίππου.

Ἀρίστιππος ὁ Κυρηναῖος φιλόσοφος ἔφη, [b] τοσούτῳ [c] βασιλείαν διαφέρειν τυραννίδος, ὅσον νόμος ἀνομίας, καὶ ἐλευθερία δουλείας.

19 [a] Φιλιππίδου.

Λυσίμαχος ὁ τύραννος πρὸς Φιλιππίδην τὸν [b] κωμῳδιοποιὸν φίλον ὄντα καὶ συνήθη, Τίνος σοι, εἶπε, μεταδῶ; κἀκεῖνος, Οὗ βούλει, πλὴν τῶν ἀπορρήτων.

[c] τὴν πόλιν] deest articulus Voss.
[d] εἶτ' εἰς τὸ] ἔπειτ' εἰς τὸ Voss. B.
[e] εἶτα δύναται] Pro εἶτα, quod aliquoties præcessit, malim οὔτοι. Wyttenbach. Plutarch. S. N. V. p. 51.

15.
[a] Sic A. Scil. p. 10, 20. Simpl. Δημοσθ. Trinc.

16.
[a] Sic A. Simpl. ἐκ τῆς φαλάριδος Trinc.
[b] συμβουλεύεις] συμβουλεύειν A.
[c] τὸ καταθέσθαι] τοῦ κ. A. a p. m.

17.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] ὁ Λαμψακηνὸς — Φαίδρου om. Trinc. Mox τί οὐ κοιν. A.

18.
[a] Sic A. Deest locus Trinc.
[b] τοσούτῳ] τοσοῦτον B.
[c] βασιλείαν διαφέρειν] διαφέρειν βασίλειαν A. B.

19.
[a] Sic A. Deest locus Tr. vide Plutarch. I. 894. D. II. 183. E. 508. B. 517. B.
[b] κωμῳδοποιὸν] κωμῳδιοποιὸν A.

20 [a] Ἀντιγόνου.

Ἀντίγονος πρός τινα μακαρίζουσαν [b] αὐτὸν γραῦν, Εἰ ᾔδεις, ἔφη, ὦ μῆτερ, ὅσων κακῶν [c] μεστόν ἐστι τουτὶ τὸ ῥάκος, δείξας τὸ διάδημα, οὐκ ἂν ἐπὶ κοπρίας [d] αὐτὸ κείμενον ἐβάστασας.

21 [c] Πτολεμαίου.

Πτολεμαῖος ὁ ἐπικληθεὶς Φιλάδελφος, ἔλεγε τὴν τυραννίδα ἄλλα τε πολλὰ δύσκολα ἔχειν, καὶ τὸ μέγιστον, τὸ ἀναγκάζεσθαι τοὺς μηθὲν ἀδικοῦντας κτείνειν τοῦ συμφέροντος εἵνεκα.

22 [a] Ἀριστίππου.

Τοῦ Διονυσίου λέγοντος πρὸς Ἀρίστιππον, Οὐδὲν ὠφέλημαι ὑπὸ σοῦ· Ἀληθῆ λέγεις, εἶπεν· εἰ γὰρ ὠφέλησο, [b] ἐπέπαυσο ἂν τῆς τυραννίδος, ὥσπερ ἱερᾶς νόσου.

23 [a] Δημοσθένους Φιλιππικῶν.

Βασιλεὺς γὰρ καὶ τύραννος ἅπας [b] ἐχθρὸν ἐλευθερίᾳ καὶ νόμοις ἐναντίον.

24 [a] Αἰλιανοῦ.

Φρύγιος οὗτος [b] ὁ λόγος· ἔστι γὰρ Αἰσώπου τοῦ Φρυγός. Ὁ δὲ λόγος φησὶ τὴν ὗν, ἐὰν αὐτῆς τις ἅψηται, βοᾶν· καὶ μάλα γε εἰκότως· οὔτε γὰρ ἔρια ἔχει ὗς, οὔτε γάλα, οὔτε ἄλλό τι πλὴν τῶν κρεῶν. Παραχρῆμα οὖν ὀνειροπολεῖν τὸν θάνατον, εἰδυῖαν εἰς ὅ τι [c] τοῖς χρησομένοις αὐτὴ πέφυκε

20.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Vid. Plutarch. II. p. 790. A.

[b] αὐτὸν] αὐτῷ Trinc.

[c] μεστόν ἐστι] ἐστι μεστὸν B. μέγιστόν ἐστι Trinc.

[d] κείμενον αὐτὸ] αὐτὸ κείμενον A.

21.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

22.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἐπέπαυσο] πέπαυσο A.

23.

[a] Sic A. Scil. p. 72, 2. Simpl. Δημοσθ. Trinc.

[b] ἐχθρὸν] ἐχθρῶν A.

24.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Var. Hist. X. 5.

[b] λόγος] ὁ λόγος B.

[c] τῶν χρησίμων] τοῖς χρησομένοις A. B. Gesn. marg. et Ælianus.

λυσιτελὴς εἶναι. Ἐοίκασι δὲ τῇ ὑῒ τῇ Αἰσώπου οἱ τύραννοι, ὑποπτεύοντες καὶ δεδοικότες πάντα· ἴσασι γὰρ ὅτι, [d] ὥσπερ οὖν αἱ ὗς, ὀφείλουσι καὶ ἐκεῖνοι τὴν ψυχὴν πᾶσι.

25 [a] Ἰσοκράτης Νικοκλεῖ.

Τοὺς μὲν ἰδιώτας ἔστι πολλὰ τὰ παιδεύοντα· καὶ μά- 345 λιστα μὲν, τὸ μὴ τρυφᾶν, ἀλλ' ἀναγκάζεσθαι περὶ τοῦ βίου καθ' ἑκάστην [b] βουλεύεσθαι τὴν ἡμέραν· ἔπειθ' οἱ νόμοι καθ' οὓς ἕκαστοι πολιτευόμενοι τυγχάνουσιν· ἔτι δὲ ἡ [c] παρρησία, καὶ τὸ μὴ φανερῶς ἐξεῖναι [d] τοῖς φίλοις ἐπιπλῆξαι, καὶ τοῖς ἐχθροῖς ἐπιθέσθαι ταῖς ἀλλήλων ἁμαρτίαις· πρὸς δὲ τούτοις, καὶ τῶν ποιητῶν [e] τινες τῶν προγεγενημένων ὑποθήκας ὡς χρὴ ζῆν [f] καταλελοίπασιν, ὥστ' ἐξ ἁπάντων τούτων εἰκὸς αὐτοὺς βελτίους γίγνεσθαι. Τοῖς δὲ τυράννοις οὐδὲν ὑπάρχει τοιοῦτον· [g] ἀλλ' οὓς μᾶλλον ἔδει τῶν ἄλλων παιδεύεσθαι, ἐπειδ' ἂν [h] εἰς τὴν ἀρχὴν κατασταθῶσιν, ἀνουθέτητοι διατελοῦσιν. Οἱ μὲν [i] γὰρ πλεῖστοι τῶν ἀνθρώπων αὐτοῖς οὐ [k] πλησιάζουσιν, οἱ δὲ συνόντες πρὸς χάριν ὁμιλοῦσιν.

26 [a] Φαλάριδος ἐκ τῆς πρὸς Παυρόλαν τὸν υἱὸν ἐπιστολῆς.

Ὁ γὰρ ἀμφοτέρων πεπειραμένος, τυραννηθῆναι μᾶλλον

[d] ὥσπερ] ὥσπερ οὖν A. cum Æliano.

25.

[a] Sic A. Simpl. Ἰσοκράτους Tr.

[b] βουλεύεσθαι] ἀγωνίζεσθαι Gesn. marg. περὶ τοῦ βίου κάλλιστα βούλεσθαι τὴν ὥραν. Trinc.

[c] παρρησία] Post h. v. sequitur in Trinc. N. Φαλάριδος. Ὁ γὰρ ἀμφοτέρων — σώζεται. quibus subjectum sine distinctione, καὶ τὸ μὴ φανερῶς—ὑπάρχει τοιοῦτον. Post παρρησία habet A. Φαλάριδος ἐκ τῆς πρὸς Παυρόλαν τὸν υἱὸν ἐπιστολῆς. Εἴ γε σοι (σὺ B.) μὴ τοὔθ' ὁ κατηγοροῦσί τινες ὥρμηκας (ὥρμηκεν B.) ἐπὶ τὸ ζητούμενον μιμεῖσθαι τὸν ἐν τυραννίσι βίον ὅπερ ἂν εὖ φρονῶν τυγχάνῃς παρὰ τοῦ μεταμελομένου εἰς γνώμην λάβε. Ὁ γάρ. et sic B. Deinde post σώζεται seq. καὶ τὸ μὴ φανερῶς et reliqua.

[d] τοὺς φίλους] τοῖς φίλοις A. τοῖς τε φίλοις B.

[e] τινες] τινας Trinc.

[f] καταλελοίπασιν] καταλελοιπότας Trinc.

[g] ἀλλ'] om. A. qui mox habet παιδεύεσθαι μᾶλλον τῶν ἄλλων. Sequentia om. Trinc.

[h] εἰς τὴν ἀρχὴν] δ' εἰς ἀρχὴν A.

[i] γὰρ] γε A.

[k] πλησιάζουσιν] πλησιάζουσιν αὐτοῖς A.

26.

[a] Sic A. B. Simpl. Φαλάριδος Tr.

εὐξαίμην ἂν ἢ [b] τυραννῆσαι. Ὁ μὲν γὰρ ἕνα φοβεῖται τῶν ἄλλων χαλεπῶν ἀπηλλαγμένος τὸν τύραννον· ὁ τύραννος δὲ τοὺς ἔξωθεν ἐπιβουλεύοντας, καὶ δι' οὓς σώζεται.

27 [a] Ἐκ τῶν Διογένους Διατριβῶν.

Δοκεῖ δὲ τοῖς [b] μὲν εὖ πράττουσι τῶν ἀνθρώπων ὁ μὲν βίος ἀμείνων, ὁ δὲ θάνατος διὰ τοῦτο λυπηρότερος· οἱ δ' αὖ κακῶς ζῶντες τὸν μὲν βίον δυσχερέστερον φέρουσι, τὸν δὲ θάνατον ἥδιον προσδέχονται. Τοῖς δὲ τυράννοις ἀμφότερα ταῦτα χαλεπώτερα ἢ τοῖς ἄλλοις· ζῶσι μὲν γὰρ πολὺ [c] ἀηδέστερον τῶν πάνυ ἐπιθυμούντων τεθνάναι, τὸν δὲ θάνατον οὕτω δεδοίκασιν, ὡς ἥδιστα διάγοντες ἐν τῷ βίῳ.

28 [[a] Ἡροδότου.

Τυραννὶς χρῆμα σφαλερὸν, πολλοὶ δὲ αὐτῆς ἐρασταί εἰσιν.]

29 [a] Ἡροδότου ἱστορίας τρίτης δημηγορίας Ὀτάνου.

Πῶς δ' ἂν εἴη χρῆμα [b] κατηρτημένον μουναρχίη, τῇ ἔξεστιν [c] ἀνευθύνῳ [d] ποιεῖν τὰ βούλεται; καὶ γὰρ ἂν τὸν ἄριστον ἀνδρῶν πάντων [e] στάντα ἐς ταύτην τὴν ἀρχὴν, ἐκτὸς τῶν ἐωθότων νοημάτων στήσειεν. Ἐγγίνεται μὲν γάρ οἱ ὕβρις ὑπὸ τῶν [f] παρόντων ἀγαθῶν· φθόνος δὲ ἀρχῆθεν ἐμφύεται ἀνθρώπῳ. Δύο δ' ἔχων ταῦτα, ἔχει πᾶσαν κακότητα. Τὰ μὲν γὰρ ὕβρει κεκορημένος ἔρδει πολλὰ καὶ ἀτάσθαλα, τὰ δὲ φθόνῳ. Καίτοι ἄνδρα γε τύραννον ἄφθονον ἔδει εἶναι, ἔχοντά γε πάντα τὰ ἀγαθά· τὸ δὲ ὑπε-

[b] τυραννῆσαι] τυραννεῖσθαι A. τυραννεῖσθαι B.

27.

[a] Sic A. Trinc.
[b] μὲν] om. A.
[c] ἀηδέστερον] ἀκηδέστερον Arsen. ἀδεέστερον Trinc.

28.

[a] Deest hic locus A. Trinc.

29.

[a] Sic A. Scil. III. 80. Simpl. Ἡροδότου Trinc.
[b] Valla videtur καθηρημένον legisse. Malim κατωρθωμένον. Id est, egregia et laudabilis res, quamquam et κατηρτημένον, vel κατηρτισμένον, id est, perfecta et absoluta, et in qua nihil desideres, legi possit, a verbis καταρτάω et καταρτίζω. Gesner.
[c] ἀνευθύνῳ] ἀνευθύνως B. Gesn. marg.
[d] ποιεῖν] ποιοῦν A. ποίεειν B.
[e] στάντα] ἐς ἂν τὰ Trinc.
[f] παρόντων] παρεόντων B.

ναντίον [g] τούτου ἐς τοὺς πολιήτας πέφυκε. Φθονέει γὰρ τοῖσιν ἀρίστοισι περιεοῦσί τε καὶ ζώουσι, χαίρει δὲ τοῖσι κακίστοισι τῶν ἀστῶν· διαβολὰς δὲ ἄριστον [h] ἐνδέχεσθαι, ἀναρμόστατον πάντων· ἤν τε γὰρ αὐτὸν μετρίως θαυμάζῃς, [i] ἄχθεται ὅτι οὐ κάρτα θεραπεύεται· ἤν τε θεραπεύῃ τις κάρτα, ἄχθεται ἅτε [k] θωπί. Τὰ δὲ δὴ μέγιστα ἔρχομαι ἐρέων, [l] νόμαιά τε κινέει πάτρια, καὶ βιᾶται γυναῖκας, κτείνει τε [m] ἀκρίτους. Πλῆθος δὲ [n] ἄρχον, πρῶτα μὲν ὄνομα πάντων κάλλιστον ἔχει, [o] ἰσονομίην· δεύτερα δὲ τούτων τῶν ὁ μούναρχος ποιέει οὐδέν· πάλῳ [p] μὲν [γὰρ] ἀρχὰς ἄρχει, ὑπεύθυνον δὲ ἀρχὴν ἔχει, βουλεύματα δὲ πάντα ἐς τὸ κοινὸν ἀναφέρει. Τίθεμαι [q] οὖν γνώμην, μεθέντας ἡμέας μουναρχίην τὸ πλῆθος ἀέξειν· ἐν γὰρ τῷ πολλῷ ἔνι τὰ πάντα.

30 [a] Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ Ἱέρωνος.

Σιμωνίδης ὁ ποιητὴς ἀφίκετό ποτε πρὸς Ἱέρωνα τὸν τύ- 346
ραννον, σχολῆς δὲ γενομένης ἀμφοῖν, εἶπεν ὁ Σιμωνίδης· Ἆρ' ἂν μοι ἐθελήσαις, ὦ Ἱέρων, διηγήσασθαι, ἃ εἰκὸς εἰδέναι σε βέλτιον ἐμοῦ; Καὶ ποῖα ταῦτ' ἐστὶν, ἔφη ὁ Ἱέρων, ὁποῖα [b] ἂν ἐγὼ βέλτιον εἰδείην σου, οὕτως ὄντος σοφοῦ ἀνδρός; Οἶδά σε, ἔφη, ἐγὼ καὶ ἰδιώτην γεγενημένον, καὶ νῦν τύραννον ὄντα· [c] εἰκὸς οὖν ἀμφοτέρων πεπειραμένον, καὶ εἰδέναι σε μᾶλλον ἐμοῦ, πῇ διαφέρει ὁ τυραννικός [d] τε καὶ ἰδιωτικὸς βίος εἰς εὐφροσύνας τε καὶ λύπας [e] ἀνθρώπων. Τί οὖν,

[g] τούτου] τοῦτο A.
[h] ἐνδέχεσθαι] ἐνδέκεσθαι B. Gesn. marg. ubi etiam δὲ post ἀναρμόστατον.
[i] ἄχθεται] ἀπέχθεται Gesn. marg.
[k] θωπείαν ἡγούμενος] θωπὶ A. Tr. Vulg. habet B.
[l] νόμαια] νόμεα A. Trinc.
[m] ἀκρίτους] ἀκρίτως B.
[n] ἄρχον] ἄρχων A. Trinc.
[o] ἰσοτιμίην] ἰσονομίην A. Gesn. marg.
[p] μὲν γὰρ] γὰρ om. A. Trinc.
[q] οὖν—μεθέντας] ὦν—μετέντας B.

30.

[a] Sic A.
[b] ἂν ἐγὼ βέλτιον] δὴ ἐ. β. ἂν B.
[c] εἰκὸς] καὶ εἰκὸς Trinc. Mox ib. πεπειραμένων et om. σε post εἰδέναι.
[d] τε καὶ] τε om. A.
[e] ἀνθρώπων] ἀνθρώποις A. B.

ἔφη ὁ Ἱέρων, οὐχὶ [[f]καὶ] σύ, ἐπεὶ νῦν ἔτι ἰδιώτης εἶ, [g]ὑπομνήσειάς με τὰ ἐν τῷ ἰδιωτικῷ βίῳ; οὕτω γὰρ ἄν σοι [h]οἶμαι μάλιστα ἐγὼ δύνασθαι δηλοῦν τὰ διαφέροντα ἐν ἑκατέρῳ. Οὕτω δὴ ὁ Σιμωνίδης εἶπε· Τοὺς μὲν δὴ ἰδιώτας ἔγωγε, [i]ὦ Ἱέρων, δοκῶ μοι καταμεμαθηκέναι, διὰ μὲν τῶν ὀφθαλμῶν ὁράμασιν ἡδομένους τε καὶ ἀχθομένους, διὰ δὲ τῶν ὤτων ἀκούσμασι, διὰ δὲ τῶν ῥινῶν ὀσμαῖς, διὰ δὲ τοῦ στόματος σίτοις καὶ ποτοῖς, τὰ δὲ ἀφροδίσια δι' ὧν δὴ πάντες ἐπιστάμεθα, τὰ δὲ ψύχη, καὶ θάλπη, καὶ σκληρὰ [k]καὶ στρυφνὰ, καὶ [l]μαλθακὰ, καὶ βαρέα, καὶ κοῦφα, ὅλῳ τῷ σώματί μοι δοκοῦμεν, ἔφη, κρίνοντες, καὶ [m]ἥδεσθαι καὶ λυπεῖσθαι ἐπ' αὐτοῖς ἀγαθοῖς [n]τε καὶ κακοῖς. Ἔστι μὲν [o]ὅτε δι' αὐτῆς τῆς ψυχῆς μοι δοκοῦμεν ἥδεσθαί τε καὶ λυπεῖσθαι· ἔστι δὲ ὅτε κοινῇ διὰ τῆς ψυχῆς καὶ τοῦ σώματος. Τῷ δὲ ὕπνῳ ὅτι μὲν ἡδόμεθα δοκῶ αἰσθάνεσθαι, ὅπως δὲ, καὶ ᾧτινι, καὶ ὁπότε, ταῦτα μᾶλλον πῶς, ἔφη, δοκῶ μοι ἀγνοεῖν. Καὶ οὐδὲν δὴ ἴσως τοῦτο θαυμαστὸν, εἰ τὰ ἐν τῷ ἐγρηγορέναι σαφεστέρας ἡμῖν τὰς αἰσθήσεις παρέχεται, ἢ [q]τὰ ἐν τῷ ὕπνῳ. Πρὸς ταῦτα δὴ ὁ Ἱέρων ἀπεκρίνατο· Ἐγὼ μὲν τοίνυν, ἔφη, [r]ὦ Σιμωνίδη, ἔξω τούτων [s]ὧν εἴρηκας [t]σὺ, οὐδ' ὅπως ἂν αἴσθοιτό τινος [[v]ἄλλου] ὁ τύραννος, ἔχοιμ' ἂν εἰπεῖν· ὥστε μέχρι γε τούτων [w]οὐκ οἶδα ὅ τι διαφέρει ὁ τυραννικὸς τοῦ ἰδιωτικοῦ βίου. Καὶ ὁ Σιμωνίδης εἶπεν· Ἀλλὰ ἐν μὲν τοῖσδε

[f] καὶ om. A. Trinc. mox νῦν γε B.
[g] ὑπεμνήσειας] ὑπέμνησας B. Gesner. marg.
[h] οἶμαι μάλιστα] μάλιστα οἶμαι A.
[i] ὦ Ἱέρων] ὦ om. A. Trinc. Mox μοι om. Trinc.
[k] καὶ στρυφνὰ] καὶ στρυφνὰ non leg. alias. GESNER. et om. B. στριφνὰ Trinc.
[l] μαλθακὰ] μαλακὰ B.
[m] ἥδεσθαι] ἥδεσθαι τε B.
[n] τε καὶ] δὲ καὶ B.
[o] ὅτε] ὅτι A.
[p] καὶ om. A.
[q] τὰ om. A.
[r] ὦ om. A.
[s] ὧν] ὡς A.
[t] σὺ] σύ γε B. ubi mox om. ἄν.
[v] ἄλλου om. A. Trinc.
[w] οὐκ οἶδα εἴ τινι B.

διαφέροι ἂν, [x] εἰ πολλαπλάσια [y] μὲν δι᾽ ἑκάστου τούτων εὐφραίνεται, πολὺ δὲ μείω τὰ λυπηρὰ [z] ἔχει. Καὶ ὁ Ἱέρων εἶπεν, Οὐχ οὕτως ἔχει ταῦτα· ἀλλ᾽ εὖ ἴσθι, ὅτι πολὺ μείω εὐφραίνονται οἱ τύραννοι τῶν μετρίως διαγόντων [a] ὑπηρετῶν, πολὺ δὲ πλείω καὶ [b] μείζω λυποῦνται. Ἄπιστα, ἔφη, λέγεις, [c] ὁ Σιμωνίδης. Εἰ γὰρ οὕτω ταῦτα εἶχε, πῶς ἂν πολλοὶ μὲν ἐπεθύμουν τυραννεῖν, καὶ ταῦτα τῶν δοκούντων ἱκανωτάτων ἀνδρῶν εἶναι; πῶς δὲ πάντες [d] ἐζήλουν ἂν τοὺς τυράννους; Ὅτι ναὶ μὰ Δί᾽, ἔφη ὁ Ἱέρων, [e] ἄπειροι ὄντες ἀμφοτέρων τῶν ἔργων, σκοποῦνται περὶ αὐτοῦ. Ἐγὼ δὲ πειράσομαί σε διδάσκειν, ὡς ἀληθῆ [f] λέγω.

31 Πρῶτον μὲν γὰρ ἐν τοῖς διὰ [b] τῆς ὄψεως θεάμασιν εὑ- 347
ρίσκω λογιζόμενος μειονεκτοῦντας τοὺς τυράννους. Ἄλλα μέν γε ἐν ἄλλῃ χώρᾳ ἐστὶν ἀξιοθέατα· ἐπὶ δὲ τούτων ἕκαστα οἱ μὲν ἰδιῶται ἔρχονται καὶ εἰς πόλεις ἃς ἂν βούλωνται, θεαμάτων ἕνεκα, καὶ ἐς τὰς κοινὰς [c] πανηγύρεις. Οἱ δὲ τύραννοι [d] οὐ μάλα ἀμφὶ θεωρίας ἔχουσιν· οὔτε γὰρ ἰέναι [e] αὐτοῖς ἀσφαλές.

32 Ἀλλ᾽ ἄρα ἔρχεται αὐτοῖς τὰ τοιαῦτα, καὶ οἴκοι μένουσιν. [[b] Ναὶ, μὰ Δία, ὦ Σιμωνίδη,] ὀλίγα [c] γε τῶν πολ-

[x] εἰ] εἰ non legitur alias. Gesner.
[y] μὲν δι᾽ om. A. δι᾽ om. Trinc.
[z] ἔχει] ἔχει ὦ Σιμωνίδη A. B.
[a] ὑπηρετῶν] ἰδιωτῶν B. Gesn. marg.
[b] μείζω] μείω Trinc.
[c] ὦ Σ.] ὁ Σ. Trinc.
[d] ἐζήλουν] ἐζήτουν A.
[e] ἄπειροι] ὅτι ἄπειροι A.
[f] λέγω] Subjungit B. ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς ὄψεως, ἐντεῦθεν γὰρ δοκῶ καί σε μεμνῆσθαι ἀρξάμενον λέγειν B.

31.

[b] τῆς ὄψεως] τοῖς ὄ. A.
[c] πανηγύρεις] ἔνθα τὰ ἀξιοθεατώτατα δοκεῖ εἶναι ἀνθρώποις συναγείρεσθαι B.
[d] οὐ μάλα ἀμφὶ] μάλα ἀμφοῖν A.
[e] αὐτοὺς] αὐτοῖς A. B. Mox post ἀσφαλὲς inserit B. ὅπου μὴ κρείσσονες τῶν παρόντων μέλλουσιν ἔσεσθαι· οὔτε τὰ οἴκοι κέκτηνται ἐχυρὰ, ὥστε ἄλλοις παρακαταθεμένοις ἀποδημεῖν. φοβερὸν γὰρ μὴ ἅμα στερηθῶσι τῆς ἀρχῆς καὶ ἀδύνατοι γένωνται τιμωρήσασθαι τοὺς ἀδικήσαντας. εἴποις οὖν ἂν ἴσως σὺ, ἀλλ᾽ ἄρα κ. τ. λ.

32.

[b] ναὶ μὰ δία ὦ Σιμωνίδη] om. A. Trinc.
[c] τε] γε A. B. Trinc.

λῶν· [d] καὶ ταῦτα τοιαῦτα ὄντα, οὕτω τίμια πωλεῖται τοῖς [e] τυράννοις. Καὶ ὁ Σιμωνίδης εἶπεν· Ἀλλὰ εἰ ἐν τοῖς θεάμασι μειονεκτεῖτε, ἐν ταῖς ἀκοαῖς πλεονεκτεῖτε· ἐπειδὴ τοῦ μὲν ἡδίστου ἀκροάματος, ἐπαίνου, [f] οὔ ποτε σπανίζετε· πάντες γὰρ οἱ παρόντες [g] πάντα, καὶ ὅσα ἂν λέγητε, καὶ ὅσα ἂν ποιῆτε, ἐπαινοῦσι· τοῦ δ' αὖ χαλεπωτάτου ἀκροάματος, λοιδορίας, ἀνήκοοι ἐστέ· οὐδεὶς γὰρ ἐθέλει τυράννου κατ' ὀφθαλμοὺς κατηγορεῖν. Καὶ ὁ Ἱέρων εἶπε· Καὶ τί οἴει, [h] ἔφη, τοὺς μὴ λέγοντας [i] κακῶς [k] εὐφραίνειν; ὅτ' ἂν [l] εἰδῇ τις σαφῶς, ὅτι [m] οἱ σιωπῶντες οὗτοι [n] πάντα κακὰ νοοῦσι [o] τῷ τυράννῳ. Ἢ τοὺς [p] ἐπαινοῦντάς τι [q] δοκεῖς εὐφραίνειν, ὅτ' ἂν ὕποπτοι ὦσιν ἕνεκα τοῦ κολακεύειν τοὺς ἐπαίνους ποιούμενοι; Καὶ ὁ Σιμωνίδης [r] εἶπε· Συγχωρῶ τοὺς ἐπαίνους παρὰ τῶν ἐλευθεριωτάτων ἡδίστους εἶναι. Ἀλλ' ὁρᾷς; [s] ἐκεῖνο οὐκ ἂν ἔτι πείσαις οὐδένα [t] ἀνθρώπων, ὡς οὐχὶ δι' ὧν τρεφόμεθα οἱ ἄνθρωποι, πολὺ πλείω ὑμεῖς ἐν αὐτοῖς [v] εὐφραίνοισθε. Καὶ οἶδά γε, ἔφη, [w] ὦ Σιμωνίδη, ὅτι τοῦτο κρίνουσιν οἱ πλεῖστοι ἥδιον [x] ἡμᾶς καὶ ἐσθίειν καὶ πίνειν τῶν [y] ἰδιωτῶν.

[d] καὶ ταῦτα τοιαῦτα ὄντα οὕτω τίμια] καὶ ταῦτα τρῖ μετ̃ πω A. καὶ ταῦτά τι. μεῖ α πωλεῖται Tr.

[e] τοῖς τυράννοις] Addit B. ὥστε οἱ ἐπιδεικνύμενοι καὶ ὁτιοῦν ἀξιοῦσι πολλαπλάσια λαβόντες ἐν ὀλίγῳ χρόνῳ, ἀπιέναι παρὰ τοῦ τυράννου, ἢ ὅσα ἐν παντὶ τῷ βίῳ παρὰ πάντων τῶν ἄλλων ἀνθρώπων κτῶνται. καὶ ὁ Σιμ. _

[f] οὔ ποτε] οὔτε Trinc.

[g] πάντα] ὑμῖν πάντα B. πάντα om. Trinc.

[h] ἔφη om. B.

[i] κακῶς] καλῶς A.

[k] εὐφραίνειν] εὐφρανεῖν A. εὐφθανεῖν Trinc.

[l] ἴδῃ] εἰδῇ A. B.

[m] οὐ] οἱ A. Trinc.

[n] πάντα] πάντες Gesn. marg.

[o] τῷ τυράννῳ] τῶν τυράννων Tr.

[p] ἐπαινοῦντας] ἐπαινόντας A.

[q] δοκεῖς] δοκεῖν A.

[r] εἶπε συγχωρῶ] εἶπε. τοῦτο μὲν δὴ, ναὶ μὰ τὸν Δία, ἔγωγέ σοι, Ἱέρων, πάνυ συγχωρῶ B. Mox τὸ τοὺς ἐπαινοῦντας A.

[s] ἔκεινο] ἐκεῖνό γε B.

[t] ἀνθρώπων] τῶν ἀνθρώπων A.

[v] εὐφραίνεσθε] εὐφραίνοισθε A. Trinc.

[w] ὦ Σιμωνίδη] ὁ Σιμωνίδης A. Tr.

[x] ἡμᾶς] ὑμᾶς Trinc.

[y] ἰδιωτῶν.] Addit B. ὅτι δοκοῦσι καὶ αὐτοὶ ἥδιον ἂν δειπνῆσαι τὸ ἡμῖν παρατιθέμενον δεῖπνον, ἢ τὸ ἑαυτῶν. τὸ γὰρ τὰ εἰωθ.

33 Τὸ γὰρ εἰωθότα [a] ὑπερβάλλον, τοῦτο παρέχει τὰς ἡδονάς. Διὸ καὶ πάντες ἄνθρωποι τὰς [b] ἑορτὰς ἡδέως προσδέχονται, πλὴν οἱ τύραννοι· ἔκπλεω γὰρ αὐτοῖς ἀεὶ παρεσκευασμέναι, οὐδεμίαν ἐν ταῖς ἑορταῖς ἔχουσιν αἱ τράπεζαι αὐτῶν ἐπίδοσιν· ὥστε ταύτῃ πρῶτον τῇ εὐφροσύνῃ τῆς ἐλπίδος [c] μειονεκτοῦσιν. Ἔπειτα δὲ, ἔφη, ἐκείνου εὖ οἶδ' ὅτι καὶ σὺ ἔμπειρος εἶ, ὅτι [d] ὅσῳ ἂν πλείω [e] παραθῆτε τὰ περισσὰ τῶν ἱκανῶν, τοσούτῳ καὶ θᾶσσον κόρος ἐμπίπτει τῆς ἐδωδῆς· ὥστε [f] καὶ τῷ χρόνῳ τῆς ἐδωδῆς μειονεκτεῖ ὁ πολλὰ παρατιθέμενος τῶν [g] μετρίως διαιτωμένων. Ἀλλὰ ναὶ μὰ Δί', ἔφη ὁ Σιμωνίδης, ὅσον ἂν χρόνον ἡ ψυχὴ προσίηται, τοῦτον πολὺ μᾶλλον ἥδονται οἱ [h] ταῖς πολυτελεστέραις παρασκευαῖς [i] τρεφόμενοι. Οὐκ οὖν, ἔφη ὁ Ἱέρων, [k] [ὦ Σιμωνίδη, τὸν ἑκάστῳ ἡδόμενον, μάλιστα τοῦτον οἴει καὶ ἐρωτικώτατα ἔχειν τοῦ ἔργου τούτου; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Ἦ οὖν] ὁρᾷς τι [l] [καὶ] τοὺς τυράννους ἥδιον ἐπὶ τὴν αὐτῶν παρασκευὴν ἰόντας, ἢ τοὺς ἰδιώτας; Οὐ μὰ τὸν Δί', ἔφη, [m] οὐ μὲν δή.

34 Ἀλλὰ τί οὖν, ἔφη ὁ Ἱέρων, οἴει ταῦτα [b] ζητήματα εἶναι, 348
[c] ἢ ἅμα κακῆς καὶ ἀσθενοῦς τῆς ψυχῆς [[d] τροφῆς] ἐπιθυμή-

33.

[a] ὑπερβάλον Trinc.

[b] ἑορτὰς] ἑορτὰς τὰς Trinc.

[c] μειονεκτοῦσιν] μ. τῶν ἰδιωτῶν B.

[d] ὅσα] ὅσῳ A. B.

[e] τις παραθῆται] παραθῆτε A. Trinc.

[f] καὶ om. B.

[g] μετρίως] μετρίων Trinc.

[h] ταῖς] τοῖς A.

[i] τρεφόμενοι] τρ. τῶν τὰ εὐτελέστερα παρατιθεμένων B.

[k] ὦ Σιμ. usque ad ἦ οὖν om. A. Trinc. sed habet B. ubi τί οὖν ὁρᾷς.

[l] καὶ om. A. B. Trinc.

[m] οὐ μὲν δὴ] οὐμενοῦν, ἀλλὰ καὶ ἀγλυκέστερον ὡς πολλοῖς ἂν δόξειε. τί γὰρ, ἔφη ὁ Ἱέρων, τὰ πολλὰ ταῦτα μηχανήματα κατανενόηκας, ἃ παρατίθεται τοῖς τυράννοις, ὀξέα καὶ δριμέα καὶ στρυφνὰ, καὶ τὰ τούτων ἀδελφά; πάνυ μὲν οὖν, ἔφη ὁ Σιμωνίδης· καὶ πάνυ γέ μοι δοκοῦντα παρὰ φύσιν εἶναι ταῦτα ἀνθρώποις. ἄλλο τι οὖν οἴει ἔφη ὁ Ἱέρων, ταῦτα τὰ ἐδέσματα εἶναι ἢ μαλακῆς καὶ ἀσθενούσης ψυχῆς ἐπιθυμήματα. ἐπεὶ κ.τ.λ. B.

34.

[b] ζητήματα] ἐδέσματα Gesn. marg.

[c] ἢ ἅμα] μαλακῆς καὶ ἀσθενούσης τρυφῆς Gesn. marg.

[d] τροφῆς om. A.

ματα; ἐπεὶ εὖ οἶδ' ἔγωγε, ὅτι οἱ ἡδέως ἐσθίοντες, καὶ σύ που οἶσθα, ὅτι οὐδὲν προσδέονται τούτων τῶν σοφισμάτων. Ἀλλὰ μέντοι, ἔφη ὁ Σιμωνίδης, τῶν γε πολυτελῶν τούτων ὀσμῶν αἷς χρίεσθε τοὺς πλησιάζοντας μᾶλλον [e] οἶμαι ἀπολαύειν, ἢ αὐτοὺς [f] ὑμᾶς· ὥσπερ γε καὶ τῶν [g] ἀχαρίστων ὀσμῶν οὐκ αὐτὸς ὁ [h] βεβρωκὼς αἰσθάνεται, ἀλλὰ μᾶλλον οἱ πλησιάζοντες. Οὕτω μέν [i] τοι, ἔφη ὁ Ἱέρων, καὶ τῶν σίτων ὁ μὲν ἔχων παντοδαπὰ ἀεὶ, οὐδὲν μετὰ πόθου αὐτῶν λαμβάνει· ὁ δὲ σπανίσας τινὸς, οὗτός ἐστιν ὁ [k] καὶ χαρμονῆς ἐμπιπλάμενος, ὅτ' ἂν αὐτῷ [l] προσεπιφανῇ τι. Κινδυνεύουσιν, ἔφη ὁ Σιμωνίδης, αἱ τῶν ἀφροδισίων [m] μόνον ὑμῖν ἀπολαύσεις τοῦ τυραννεῖν τὰς ἐπιθυμίας παρέχειν· [n] ἐν γὰρ τούτῳ ἔξεστιν ὑμῖν, ὅ τι ἂν κάλλιστον ἴδητε, τούτῳ συνεῖναι. Νῦν γε, ἔφη ὁ Ἱέρων, εἴρηκας ἐν ᾧ [o] δὴ πλεῖστον μειονεκτοῦμεν.

35 Ὅτι μὲν γὰρ τὰ μετ' ἔρωτος ἀφροδίσια [b] πολὺ διαφερόντως εὐφραίνει, πάντες δήπου ἐπιστάμεθα· ὁ δὲ ἔρως πολὺ ἥκιστα [c] ἐθέλει τυράννῳ [d] ἐμφύεσθαι. Οὐ γὰρ τῶν ἑτοίμων [e] ἥδεται [f] ὁ ἔρως [g] ἐφιέμενος, ἀλλὰ τῶν ἐλπιζομένων. Ὥσπερ οὖν εἴ τις ἄπειρος ὢν δίψης [h] τοῦ πιεῖν [i] ἀπολαύοι, οὕτω καὶ ὁ ἄπειρος [k] ὢν ἔρωτος, ἄπειρός ἐστι τῶν ἡδίστων ἀφροδισίων.

[e] οἴομαι] οἶμαι A. qui habet μᾶλλον post ἀπολαύειν.
[f] ἡμᾶς] ὑμᾶς Trinc.
[g] ἀχαρίτων] ἀχαρίστων A.
[h] βεβρωκὼς] βεβρωκὸς A.
[i] τοι om. A.
[k] μετὰ] καὶ A. Trinc. μετὰ χαρᾶς πιπλάμενος B.
[l] προσεπιφανῇ] προφανῇ B. Gesn. marg.
[m] μόνον] μόνων A.
[n] ἐν γὰρ τούτῳ] ἓν γὰρ τούτων A.
[o] δὴ πλ. μ.] δὴ σαφ' ἴσθι π. μ. τῶν ἰδιωτῶν B.

35.
[b] πολὺ] πολὺ αὖ B.
[c] θέλει] ἐθέλει A.
[d] ἐμφύεσθαι] ἐγγίγνεσθαι B.
[e] ἥδεται] εἶδεν A.
[f] ὁ ἔρως] deest ὁ B.
[g] ἐφιέμενος] ἐμφιέμενος A.
[h] τοῦ πιεῖν] ποιεῖν Trinc.
[i] ἀπολαύοι] ἀπολάβοι A.
[k] ὢν ἔρωτος ἄπειρος om. A. Trinc. Mox τῶν ἀφροδισίων τῶν ἡδίστων A.

36 Ἀλλ' [b] ἐν ἐκείνοις γε, ἔφη ὁ Σιμωνίδης, πολὺ διαφέρετε τῶν ἰδιωτῶν, ὅτι μεγάλα μὲν ἐπινοεῖτε, ταχὺ [c] δὲ ταῦτα κατεργάζεσθε, πλεῖστα δὲ [d] περισσὰ ἔχετε, κέκτησθε δὲ διαφέροντας [e] ἀρετῇ ἵππους, [f] διαφέροντα ὅπλα κάλλει, ὑπερέχοντα κόσμον γυναιξὶ, [g] μεγαλοπρεπεστέρας [h] οἰκίας· ἔτι δὲ πλήθει τε καὶ [i] ἐπιστήμῃ θεράποντας [k] ἀρίστους· ἱκανώτατοι δέ ἐστε ὀνῆσαι [l] φίλους, κακῶσαι δὲ ἐχθρούς. Πρὸς ταῦτα δὴ ὁ Ἱέρων εἶπεν·

37 Ἡ τυραννὶς τὰ μὲν δοκοῦντα [b] πολλοῦ ἄξια [c] κτήματα εἶναι ἀνεπτυγμένα [d] θεάσασθαι [e] φανερῶς πᾶσι παρέχεται· τὰ δὲ χαλεπὰ ἐν ταῖς ψυχαῖς τῶν τυράννων [[f] κέκτηται] ἀποκεκρυμμένα, [g] ἐν αἷσπερ καὶ τὸ [h] εὔδαιμον καὶ τὸ κακόδαιμον τοῖς ἀνθρώποις [i] ἀπόκειται.

38 Αὐτίκα γὰρ, εἰρήνη δοκεῖ μέγα ἀγαθὸν [b] ἀνθρώποις εἶναι, ταύτης ἐλάχιστον [c] μέρος μέτεστι τοῖς τυράννοις· [d] ὁ δὲ πόλεμος μέγα κακὸν, τούτου πλεῖστον [e] μετέχομεν οἱ τύραννοι.

39 Ἔπειτα δὲ τοῖς μὲν ἰδιώταις καὶ διὰ σπονδῶν καὶ δι' εἰρήνης γίνεται πολέμου ἀνάπαυσις· τοῖς δὲ τυράννοις, οὐδὲ

36.

[b] ἐν om. A.
[c] δὲ] δὴ Trinc.
[d] περισσὰ] τὰ περισσὰ B.
[e] ἀρετῇ] μὲν ἀρετῇ B.
[f] διαφέροντα ὅπλα κάλλει] διαφέροντα δὲ κάλλει ὅπλα, ὑπερέχοντα δὲ B.
[g] μεγαλοπρεπεστέρας] μεγαλοπρεπεστάτας B.
[h] οἰκίας] δ' οἰκίας καὶ ταύτας κατεσκευασμένας τοῖς πλείστου ἀξίοις B.
[i] ἐπιστήμῃ] ἐπιστήμαις B.
[k] ἀρίστους] ἀρίστους κεκτῆσθαι B.
[l] φίλους] μὲν φίλους B.

37.

[b] ἄξια πολλοῦ] πολλοῦ ἄξια A. B.
[c] κτήματα] χρήματα A. m. p.
[d] θεάσασθαι] θεᾶσθαι B.
[e] φανερῶς] φανερὰ B.
[f] κέκτηται om. A. Trinc.
[g] ἐν αἷσπερ] ἔνθα περ B.
[h] εὔδαιμον κ. τ. κακόδαιμον om. A. εὐδαιμονεῖν — κακοδαιμονεῖν habet B. καὶ τὸ κακόδαιμον om. Trinc.
[i] ἀπόκειται] Addit B. Ἐγὼ δὲ πεπειραμένος σαφῶς οἶδα, ὦ Σιμωνίδη, καὶ λέγω σοι, ὅτι οἱ τύραννοι τῶν μεγίστων ἀγαθῶν ἐλάχιστα μετέχουσι, τῶν δὲ μεγίστων κακῶν πλεῖστα κέκτηνται. αὐτίκα κ. τ. λ.

38.

[b] ἀνθρώποις] τοῖς ἀνθ. B.
[c] μέρος om. B.
[d] εἰ δὲ] ὁ δὲ A. οὐ δὲ Trinc.
[e] μετέχομεν] μέρος μετέχουσιν B.

εἰρήνη ποτὲ πρὸς τοὺς [b] τυραννευομένους γίνεται, οὔτε σπονδαῖς ἄν ποτε πιστεύσας ὁ τύραννος θαρρήσειε.

40 Τοσοῦτον δέ τι ἀγαθὸν κρίνω ἔγωγε τὸ φιλεῖσθαι εἶναι, 349
[b] ὡς νομίζω τῷ ὄντι [c] ὡς αὐτόματα τἀγαθὰ τῷ φιλουμένῳ γίνεσθαι καὶ παρὰ θεῶν καὶ παρὰ [d] ἀνθρώπων.

41 Βεβαιόταται [b] μὲν δήπου δοκοῦσι φιλίαι γονεῦσι πρὸς παῖδας, καὶ παισὶν πρὸς γονέας, καὶ ἀδελφοῖς πρὸς ἀδελφοὺς, καὶ γυναιξὶ πρὸς ἄνδρας, καὶ ἑταίροις πρὸς ἑταίρους. Εἰ τοίνυν [c] ἐθέλεις κατανοεῖν, εὑρήσεις τοὺς μὲν ἰδιώτας ὑπὸ τούτων πάντων μάλιστα φιλουμένους, τοὺς δὲ τυράννους πολλοὺς μὲν παῖδας ἑαυτῶν ἀπεκτονότας, πολλοὺς δὲ ὑπὸ παίδων αὐτοὺς ἀπολωλότας, πολλοὺς δὲ ἀδελφοὺς ἐν τυραννίσιν ἀλληλοφόνους [d] γιγνομένους, πολλοὺς δὲ καὶ ὑπὸ γυναικῶν τῶν ἑαυτῶν τυράννους διεφθαρμένους, καὶ ὑπὸ [e] ἑταίρων γε μάλιστα δοκούντων φίλων εἶναι. Οἵτινες οὖν ὑπὸ τῶν φύσει πεφυκότων μάλιστα [f] φιλεῖσθαι [καὶ νόμῳ συνηναγκασμένων] οὕτω μισοῦνται, πῶς ὑπό [g] γε ἄλλου τινος οἴεσθαι χρῆν αὐτοὺς φιλεῖσθαι; Ἀλλὰ [h] μὴν καὶ πίστεως ὅστις ἐλάχιστον μετέχει, πῶς οὐχὶ μεγάλου ἀγαθοῦ μειονεκτεῖ;

39.

[b] τυραννευομένους] στρατευομένους A.

40.

[b] ὥστε] ὡς A. Trinc. ut vulgo B.

[c] αὐτόματα] ὡς αὐτόματα A. Tr. ut vulgo B.

[d] ἀνθρώπων. Addit B. καὶ τούτου τοίνυν τοῦ κτήματος τοιούτου ὄντος μειονεκτοῦσιν οἱ τύραννοι πάντων μάλιστα. εἰ δὲ βούλει, ὦ Σιμωνίδη, εἰδέναι ὅτι ἀληθῆ λέγω, ὧδε ἐπίσκεψαι. βεβαιόταται κ. τ. λ.

41.

[b] μὲν] μὲν γὰρ B. et mox εἶναι post φιλίαι.

[c] ἐθέλοις] θέλεις A.

[d] γιγνομένους] γεγενημένους B. Gesn. marg.

[e] ἑτέρων] ἑταίρων A. Mox γε τῶν μάλιστα B.

[f] φιλεῖσθαι] φιλεῖν B. καὶ νόμῳ συνηναγκασμένων om. A. Trinc.

[g] γε om. A. Mox χρὴ Trinc.

[h] μὴν om. A. Post μειονεκτεῖ sequentia habet B. ποία μὲν γὰρ ξυνουσία ἡδεῖα ἄνευ πίστεως τῆς πρὸς ἀλλήλους; ποία δὲ ἀνδρὶ καὶ γυναικὶ τερπνὴ ἄνευ πίστεως ὁμιλία; ποῖος δὲ θεράπων ἡδὺς ἀπιστούμενος; καὶ τούτου τοίνυν κ. τ. λ.

42 Καὶ τούτου τοίνυν, τοῦ πιστῶς πρός τινας ἔχειν, ἐλάχιστον μέρος τυράννῳ μέτεστιν· [b] ὁπότε γε οὐδὲ σίτοις [c] οὐδὲ ποτοῖς [d] πιστεύων διάγει· ἀλλὰ καὶ τούτων [[e] πρὶν ἀπάρχεσθαι τοῖς θεοῖς], τοὺς διακόνους πρῶτον κελεύουσιν [f] ἀπογεύεσθαι.

43 [b] [Οἱ δὲ πολῖται δορυφοροῦσιν ἀλλήλους ὑπὲρ] τοῦ δὲ μηδένα τῶν πολιτῶν βιαίῳ θανάτῳ ἀποθνήσκειν, οὕτω [c] [δὲ] πόρρω [d] προεληλύθασι φυλακῆς, ὥστε πεποίηνται πολλοὶ [e] νόμοι τῷ μιαιφόνῳ μηδὲ τὸν [f] συνόντα καθαρεύειν· ὅθεν διὰ τὰς πατρίδας ἀσφαλῶς ἕκαστος βιοτεύει τῶν πολιτῶν. Τοῖς δὲ τυράννοις καὶ [g] τοῦτο ἔμπαλιν ἀνέστραπται. Ἀντὶ γὰρ τοῦ τιμωρεῖν αἱ πόλεις αὐτοῖς μεγάλως τιμῶσι τὸν [h] κατακτείναντα τὸν τύραννον· καὶ ἀντί γε τοῦ εἴργειν ἐκ τῶν ἱερῶν, [[i] ὥσπερ τοὺς τῶν ἰδιωτῶν φονέας,] ἀντὶ τούτου καὶ εἰκόνας ἐν τοῖς ἱεροῖς ἱστᾶσιν αἱ πόλεις [τῶν τοιοῦτο ποιησάντων.]

44 Οὐδέ γε θᾶσσόν τι γίνεται τῷ τυράννῳ, ἢ τῷ ἰδιώτῃ, ὧν ἐπιθυμεῖ. [b] Ὁ μὲν γὰρ ἰδιώτης [c] οἰκίας, ἢ ἀγροῦ, ἢ οἰκέτου ἐπιθυμεῖ· ὁ δὲ τύραννος, ἢ πόλεως, ἢ χώρας πολλῆς, [d] ἢ λιμένων, ἢ ἀκροπόλεων ἰσχυρῶν, ἃ πολύ ἐστι χαλεπώ-

42.

[b] ὁπότε] πότε Trinc.

[c] οὐδὲ σίτοις οὐδὲ ποτοῖς] οὔτε σιτίοις οὔτε ποτοῖς ἀκρατίστοις B.

[d] διάγει πιστεύων] πιστεύων διάγει A.

[e] πρὶν ἀπάρχεσθαι τοῖς θεοῖς om. A. Trinc. Mox πρῶτον om. Trinc.

[f] ἀπογεύεσθαι] ἀπογεύσασθαι B. qui addit hæc: διὰ τὸ ἀπιστεῖν, μὴ καὶ ἐν τούτοις κακόν τι φάγωσιν ἢ πίωσιν. ἀλλὰ μὴν καὶ αἱ πατρίδες τοῖς μὲν ἄλλοις ἀνθρώποις πλείστου ἄξιαι. πολῖται δορυφοροῦσι μὲν ἀλλήλους ἄνευ μισθοῦ ἐπὶ τοὺς δούλους. δορυφοροῦσι δὲ ἐπὶ τοὺς κακούργους, ὑπὲρ τοῦ μηδένα τῶν πολιτῶν βιαίῳ θανάτῳ κ. τ. λ.

43.

[b] οἱ δὲ—τοῦ μηδένα] τοῦ δὲ μηδένα A. Trinc.

[c] δὲ om. A. Trinc.

[d] προεληλύθασι] προσεληλύθασι A.

[e] νόμοι] νόμῳ A. νόμον B.

[f] συνόντων] συνόντα A. B. Gesn. marg.

[g] τοῦτο] τοῦτον A.

[h] κατακτείναντα] ἀποκτείναντα B.

[i] ὥσπερ τοὺς τῶν ἰδιωτῶν φονέας om. A. Trinc. et infra τῶν τοιοῦτο ποιησάντων.

44.

[b] ὁ μὲν γὰρ—ἐπιθυμεῖ om. A.

[c] οἰκίας] om. Trinc.

[d] ἢ λιμένων] ἐνειλημμένων A. Tr.

τερα καὶ ἐπικινδυνότερα [c] κατεργάζεσθαι τῶν ἰδιωτικῶν ἐπιθυμημάτων. Ἀλλὰ μὴν καὶ [f] πένητας ὄψει [g] ὀλίγους τῶν ἰδιωτῶν, [h] πολλοὺς δὲ τῶν τυράννων. Οὐ γὰρ τῷ ἀριθμῷ οὔτε τὰ πολλὰ κρίνεται οὔτε τὰ ἱκανά, ἀλλὰ πρὸς τὰς χρήσεις· ὥστε [i] τὰ μὲν ὑπερβάλλοντα τὰ ἱκανὰ, πολλά ἐστι· τὰ δὲ τῶν ἱκανῶν ἐλλείποντα, ὀλίγα. Τῷ [k] οὖν τυράννῳ τὰ πολλαπλάσια [l] ἧττον ἱκανά ἐστιν, [m] ἢ τἀναγκαῖα δαπανήματα τῷ ἰδιώτῃ. Καὶ γὰρ τοῖς μὲν ἰδιώταις ἔξεστι τὰς δαπάνας συντέμνειν [n] εἰς τὰ καθ' ἡμέραν, [[o] ὅπῃ βούλονται·] τοῖς δὲ τυράννοις [p] μέγισται μέν εἰσι δαπάναι εἰς τὰς τῆς ψυχῆς φυλακάς· τὸ δὲ τούτων τὶ συντέμνειν, [q] ὄλεθρος δοκεῖ εἶναι. Ἔπειτα δὲ ὅσοι μὲν δύνανται ἀπὸ 350
τοῦ δικαίου ἔχειν [r] ὧν δέονται, τί ἂν τούτους [s] οἰκτείροις ὡς πένητας; ὅσοι δὲ ἀναγκάζονται δι' ἔνδειαν κακόν τι καὶ αἰσχρὸν μηχανώμενοι ζῆν, πῶς οὐ τούτους ἀθλίους ἄν τις δικαίως καὶ πένητας [t] νομίζοι; Οἱ τύραννοι τοίνυν [v] πάντα ἀναγκάζονται συλᾶν [w] ἀδίκως, διὰ τὸ εἰς τὰς ἀναγκαίας δαπάνας ἀεὶ προσδεῖσθαι χρημάτων.

45 Γιγνώσκουσι δὲ οὐδὲν ἧττον τῶν ἰδιωτῶν [b] καὶ τοὺς ἀλκί-

[c] κατεργάζεσθαι] κατεργάσασθαι B.
[f] πένητας] πλουσίους B.
[g] ὀλίγους] οὐχ οὕτως ὀλίγους B. Gesn. marg.
[h] πολλοὺς δὲ] ὡς πένητας πολλοὺς B.
[i] τὰ μὲν] τὰ om. A.
[k] οὖν] γοῦν A.
[l] ἧττον] ἧσσον A.
[m] ἢ τἀναγκαῖα δ. τῷ ἰδ.] εἰς τἀναγκαῖα δ. ἢ τῷ ἰδ. B. Gesn. marg.
[n] εἰς om. A.
[o] ὅπῃ βούλονται om. A. Trinc.
[p] μέγισται μὲν εἰσι δαπάναι εἰς τὰς τῆς ψυχῆς φυλακὰς] οὐκ ἐνδέχεται· αἱ γὰρ μέγισται αὐτοῖς δαπάναι καὶ ἀναγκαιόταται εἰς τὰς τῆς ψυχῆς κ. τ. λ. mox εἰσὶ post φυλακὰς B.
[q] ὄλεθρος] ὄλεθρον A.
[r] ὧν] ὅσων B.
[s] οἰκτείροις] οἰκτείρει τις B.
[t] νομίζοι] καλοῖ B. marg.
[v] ἀναγκάζονται πλεῖστα] πάντα ἀναγκάζονται A. Trinc.
[w] ἀδίκως, διὰ] ἀδίκως καὶ ἱερὰ καὶ ἀνθρώπινα B. qui post χρημάτων addit, ὥσπερ γὰρ πολέμου ὄντος, ἀεὶ ἀναγκάζονται στράτευμα τρέφειν, ἢ ἀπολωλέναι. χαλεπὸν δ' ἐρῶ σοι καὶ ἄλλο πάθημα, ὦ Σιμωνίδη, τῶν τυράννων· γιγνώσκουσι μὲν γὰρ οὐδὲν κ. τ. λ.

45.
[b] καὶ τοὺς ἀλκίμους] καὶ om. A. B. ἀλκίμους γε B. τοὺς κοσμίους γε Gesn. marg.

μους, καὶ τοὺς σοφοὺς, καὶ τοὺς δικαίους· τούτους δὲ ἀντὶ τοῦ ἄγασθαι φοβοῦνται· τοὺς μὲν ἀνδρείους, [c] μή [τι] τολμήσωσι [d] τῆς ἐλευθερίας ἕνεκα· τοὺς δὲ σοφοὺς, μή τι μηχανήσωνται· τοὺς δὲ δικαίους, μὴ ἐπιθυμήσῃ τὸ πλῆθος ὑπ' αὐτῶν προστατεῖσθαι.

46 Τὸ δὲ φοβεῖσθαι μὲν ὄχλον, φοβεῖσθαι δὲ ἐρημίαν, φοβεῖσθαι δὲ ἀφυλαξίαν, φοβεῖσθαι δὲ καὶ αὐτοὺς τοὺς φύλακας, καὶ μήτε [b] ἀόπλους ἔχειν ἐθέλειν [[c] περὶ αὐτὸν,] μήτε ὡπλισμένους ἡδέως θεᾶσθαι, πῶς [d] οὐ χαλεπόν ἐστι πρᾶγμα; ἔτι δὲ ξένοις μᾶλλον ἢ πολίταις πιστεύειν, βαρβάροις [[e] τε] μᾶλλον ἢ Ἕλλησιν, ἐπιθυμεῖν δὲ τοὺς μὲν ἐλευθέρους δούλους ἔχειν, τοὺς δὲ δούλους ἐλευθέρους ἀναγκάζεσθαι ποιεῖν, οὐ πάντα ταῦτά σοι δοκεῖ ψυχῆς ὑπὸ φόβων παραπεπληγμένης τεκμήρια εἶναι; [f] ὁ δέ τοι φόβος οὐ μόνον αὐτὸς ἐνὼν ταῖς ψυχαῖς λυπηρός ἐστιν, ἀλλὰ καὶ πάντων τῶν ἡδέων [g] συμπαρομαρτῶν λυμαντήρ ἐστιν.

47 [a] Ἀντισθένους.

Ἀντισθένης ὁ φιλόσοφος τοὺς δημίους εὐσεβεστέρους ἔλεγεν εἶναι τῶν τυράννων· πυθομένου δέ τινος τὴν αἰτίαν, ἔφη, ὅτι ὑπὸ μὲν τῶν δημίων οἱ ἀδικοῦντες ἀναιροῦνται, ὑπὸ δὲ τῶν τυράννων οἱ μηδὲν ἁμαρτάνοντες.

48 [a] Φαβωρίνου.

Ἀλλ' ἐγὼ βούλομαι ἡδονήν τινα τῷ τυράννῳ μηνύσαι. Εἰ μὲν ἀνθρωπίνην θέλεις, ὦ Διονύσιε, πείνησον, ἵνα φάγῃς· δίψησον, ἵνα πίῃς· εἰ δὲ δεξιάν τινα, καὶ ὑπέρσπονδον, καὶ

[c] μή τι] μὴ et sic infra A. μὴ h. l. Trinc.
[d] τῆς] τοῖς A.

46.

[b] ἀνόπλους] ἀόπλους A. Trinc.
[c] περὶ αὐτὸν] om. A. Trinc. περὶ αὐτῶν B.
[d] οὐ χαλεπὸν] οὐκ ἀργαλέον B.
[e] τε μᾶλλον] τε om. A. Trinc.
[f] ὁ δὲ] οὐδὲ A.
[g] συμπαρομαρτῶν λυμαντήρ ἐστιν] συμπαρακολουθῶν λυμεὼν γίνεται B.

47.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

48.

[a] Sic Trinc. Φαβουρίνου A. Mox ὑπέρογκον pro ὑπέρσπονδον Jacobs.

τηλικαύτην ἡλίκην οὐδεὶς πρὸ σοῦ, [b] ἀπόθου τὴν τυραννίδα. [c] Τὸν γὰρ μυρίων καὶ πεντακισχιλίων χλαμύδων δεόμενον, οὐκ ἔστι μὴ πλειόνων δεῖσθαι· οἷς γὰρ ἔχω προσδεόμενος, ἀφελὼν ὧν ἔχω, ἀρκοῦμαι οἷς ἔχω.

49 [a] Δωροθέου ἐν α Σικελικῶν.

Φάλαρις Ἀκραγαντίνων τύραννος, ἀπότομος καὶ ἀπαθὴς ὑπάρχων, ξέναις καὶ παρευρημέναις βασάνοις ἔτρυχε καὶ ἐστρέβλου τοὺς ὁμοφύλους. [b] Πέριλλος δὲ τῇ τέχνῃ χαλκοῦργος κατασκευάσας δάμαλιν, ἔδωκε τῷ βασιλεῖ δῶρον, ἵνα τοὺς ξένους εἰς αὐτὴν βάλλων κατακαίῃ ζῶντας· μυκηθμὸν δ' ἡ δάμαλις ἀνεδίδου τῷ φυσικῷ παρόμοιον. Φάλαρις δὲ τότε μόνον γενόμενος δίκαιος, αὐτὸν τὸν τεχνίτην πρῶτον ἐνέβαλεν.

50 [a] Πλάτωνος Πολιτείας θ.

Ἆρ' οὖν οὐκ ἐν [b] τοιούτῳ δεσμωτηρίῳ δέδεται ὁ τύραννος, φύσει [c] ὢν οἷον διεληλύθαμεν, πολλῶν καὶ παντοδαπῶν φόβων [d] καὶ ἐρώτων μεστός; λίχνῳ δὲ ὄντι αὐτῷ τὴν ψυχὴν [e] μόνῳ [f] τῶν ἐν τῇ πόλει, οὔτε ἀποδημῆσαι ἔξεστιν οὐδαμόσε, 351
οὔτε θεωρῆσαι, [g] ὅσων δὴ καὶ οἱ ἄλλοι ἐλεύθεροι ἐπιθυμηταί εἰσι· καταδεδυκὼς δὲ ἐν τῇ οἰκίᾳ, τὰ πολλὰ ὥσπερ γυνὴ ζῇ, φθονῶν καὶ τοῖς ἄλλοις πολίταις ἐάν τις ἔξω ἀποδημῇ, καί τι ἀγαθὸν ὁρᾷ. Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη. Οὐκ οὖν τοῖς τοιούτοις κακοῖς πλείω καρποῦται ἀνὴρ, ὃς ἂν κακῶς ἐν ἑαυτῷ πολιτευόμενος, ὃν νῦν δὴ σὺ ἀθλιώτατον ἔκρινας τὸν τυραννικὸν, μὴ ὡς ἰδιώτης καταβιῷ, ἀλλ' ἀναγκασθῇ ὑπὸ

[b] ἀπόθου] ἀπώθου A.
[c] τῶν] τὸν A. Gesn. marg.

49.

[a] Sic A. Trinc.
[b] Πέριλλος] Περίλαος Trinc.

50.

[a] Sic A. Scil. p. 579. Simpl. Πλάτωνος Trinc.
[b] τοσούτῳ] τοιούτῳ A. Gesn. marg.
[c] ὢν οἷον] ὧν A. Trinc.
[d] καὶ ἐρώτων suprasc. A.
[e] μόνῳ] μόνη Trinc.
[f] τῶν] τὴν A. Trinc.
[g] ὅσων] ὅσω A. Trinc.

τινος· τύχης τυραννεῦσαι, καὶ ἑαυτοῦ ὢν ἀκράτωρ ἄλλων [h] ἐπιχειρήσῃ ἄρχειν, ὥσπερ εἴ τις κάμνοντι σώματι καὶ ἀκράτορι ἑαυτοῦ, μὴ ἰδιωτεύων, ἀλλ' ἀγωνιζόμενος πρὸς ἄλλα σώματα καὶ μαχόμενος ἀναγκάζοιτο διάγειν τὸν βίον; Παντάπασιν, ἔφη, ὁμοιότατά τε καὶ ἀληθέστατα λέγεις, ὦ Σώκρατες. Οὐκ οὖν, ἦν δ' ἐγὼ, ὦ φίλε Γλαύκων, παντελῶς τὸ πάθος [i] ἄθλιον, καὶ τοῦ ὑπὸ σοῦ κριθέντος χαλεπώτατα ζῆν χαλεπώτερον ἔτι ζῇ ὁ τυραννῶν; Κομιδῇ γε, ἔφη. Ἔστιν ἄρα τῇ ἀληθείᾳ, κἂν εἰ μή [k] τῳ δοκῇ, ὁ τῷ ὄντι τύραννος τῷ ὄντι δοῦλος τὰς μεγίστας θωπείας καὶ δουλείας, καὶ κόλαξ τῶν πονηροτάτων, καὶ τὰς ἐπιθυμίας οὐδ' ὁπωστιοῦν ἀποπιμπλὰς, ἀλλὰ [l] πλείστων ἐπιδεέστατος καὶ πένης τῇ ἀληθείᾳ φαίνεται, [m] ἐὰν δέ τις ὅλην ψυχὴν [n] ἐπίστηται θεάσασθαι, καὶ φόβου γέμων διὰ παντὸς τοῦ βίου, σφαδασμῶν τε καὶ ὀδυνῶν πλήρης, εἴπερ τῇ τῆς πόλεως [o] διαθέσει, ἧς ἄρχει, ἔοικεν· [p] ἔοικε δὲ, ἦ γάρ; Καὶ μάλα, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ πρὸς τούτοις ἔτι ἀποδώσομεν τῷ ἀνδρὶ καὶ ἃ τὸ πρότερον εἴπομεν, ὅτι ἀνάγκη καὶ εἶναι καὶ ἔτι μᾶλλον γίγνεσθαι αὐτῷ, ἢ πρότερον διὰ τὴν ἀρχὴν, φθονερῷ, ἀπίστῳ, ἀδίκῳ, ἀφίλῳ, ἀνοσίῳ, [q] καὶ πάσης κακίας πανδοκεῖ τε καὶ τροφεῖ, καὶ ἐξ ἁπάντων τούτων μάλιστα μὲν αὐτῷ δυστυχεῖ εἶναι, ἔπειτα δὲ καὶ τοὺς πλησίον αὐτῷ τοιούτους ἀπεργάζεσθαι. Οὐδείς σοι, ἔφη, τῶν νοῦν ἐχόντων ἀντερεῖ.

[h] ἐπιχειρήσῃ] ἐπιχειρήσει A. Tr.
[i] ἄθλιον] ἄθλιος A.
[k] τῳ] πω B.
[l] πλείστων] πλεῖστον A.
[m] ἐάν τις] ἐὰν δέ τις A. Trinc.
[n] ἐπίστηται] ἐπίσταται B.
[o] διαθέσεις] διαθέσει A. Trinc.
[p] ἔοικε δὲ ἦ] om. A. B. δὲ ἦ om. Trinc.
[q] καὶ πάσης] καὶ om. Trinc.

ΠΕΡΙ ΠΟΛΕΜΟΥ. Ν.

1 [a] Εὐριπίδου Τημενίδων.

Φιλεῖ [b] τοι πόλεμος οὐ πάντ' εὐτυχεῖν.
ἐσθλῶν δὲ χαίρει πτώμασιν [c] νεανίων,
κακοὺς δὲ μισεῖ. Τῇ πόλει μὲν οὖν νόσος
τόδ' ἐστὶ, [d] τοῖς δὲ κατθανοῦσιν εὐκλεές.

2 [a] Ἀράτου Φαινομένων.

Χαλκείη γενεὴ, προτέρων ὀλοώτεροι ἄνδρες,
οἳ πρῶτοι [b] κακόεργον ἐχαλκεύσαντο μάχαιραν,
εἰνοδίην· πρῶτοι δὲ βοῶν ἐπάσαντ' ἀροτήρων.

3 [a] Πινδάρου Ὑπορχημάτων.

Γλυκὺ δὲ πόλεμος ἀπεί-
ροισιν· ἐμπείρων δέ τις
ταρβεῖ προσιόντα νιν
καρδίᾳ περισσῶς.

4 [a] Ὅμηρος Ἰλιάδος ι.

Ἀφρήτωρ, ἀθέμιστος, ἀνέστιος ἔστιν ἐκεῖνος,
ὃς πολέμου ἔραται ἐπιδημίου [b] ὀκρυόεντος.

5 [a] Ἄνδρας μὲν κτείνουσι, πόλιν δέ τε πῦρ [b] ἀμαθύνει,
τέκνα δέ τ' ἄλλοι ἄγουσι, βαθυζώνους τε γυναῖκας. 352

1.

[a] Sic A. Scil. Fr. 6.

[b] τοι] τι Trinc.

[c] νεανίσκων] νεανίων A. B. Arsen. Gesn. marg. νεανιῶν Voss. quomodo edidit Grotius.

[d] τοῖς] τοῖσι Trinc.

2.

[a] Sic A. Ἀράτου Φαινόμενα Tr. Scil. v. 130.

[b] κακόεργον] Ita recte in Arato. Apud Stobæum prave πρῶτοι·χαλκόεργον. Versionem autem Latinam a Cicerone heic sumsimus. Grotius. κακόεργον Arsen. Voss. ex emend. et Gesn. marg.

3.

[a] Sic A. Scil. Fr. 2. Deest locus Trinc.

4.

[a] Sic A. Scil. v. 63. Simpl. Ὁμήρου Trinc.

[b] ὀκρυόεντος] ὀκριόεντος A. ὀκρώεντος B.

5.

[a] Ibid. v. 589.

[b] ἀμαθύνει] ἀμαλθύνει Trinc.

6 [a] Εὐριπίδου Αἰόλου.

Τὰ πόλλ' ἀνάγκη [b] διαφέρει τολμήματα.

7 [a] Τυρταίου.

Ἀλλ' Ἡρακλῆος γὰρ [b] ἀνικήτου γένος ἐστέ·
θαρσεῖτ', οὔπω Ζεὺς αὐχένα λοξὸν ἔχει.
μηδ' ἀνδρῶν πληθὺν δειμαίνετε, μηδὲ φοβεῖσθε,
ἰθὺς δ' εἰς προμάχους ἀσπίδ' ἀνὴρ ἐχέτω,
ἐχθρὰν μὲν ψυχὴν θέμενος, θανάτου δὲ μελαίνας
[c] κῆρας αὐγαῖσιν ἠελίοιο φίλας.
ἴστε γὰρ ὡς [d] Ἄρεως [e] πολυδακρύου ἔργ' [f] ἀρίδηλα,
εὖ δ' ὀργὴν ἐδάητ' ἀργαλέου πολέμου.
καὶ [g] μετὰ φευγόντων τε διωκόντων τ' [h] ἐγένεσθε,
ὦ νέοι, ἀμφοτέρων δ' εἰς κόρον ἠλάσατε.
οἱ μὲν γὰρ τολμῶσι παρ' ἀλλήλοισι μένοντες
ἔς τ' αὐτοσχεδίην καὶ προμάχους ἰέναι,
παυρότεροι θνήσκουσι, σάουσι δὲ λαὸν ὀπίσσω.
τρεσσάντων δ' ἀνδρῶν [i] πᾶσ' ἀπόλωλ' ἀρετή.
οὐδεὶς ἄν ποτε ταῦτα λέγων ἀνύσειεν ἕκαστα,
ὅσσ' ἂν αἰσχρὰ πάθῃ γίνεται ἀνδρὶ [k] κακά.
ἀργαλέον γὰρ ὄπισθε μετάφρενόν ἐστι δαΐζειν
ἀνδρὸς φεύγοντος δηΐῳ ἐν πολέμῳ,
[l] αἰσχρὸς δ' ἐστι νέκυς [m] κατακείμενος ἐν κονίῃσι

6.

[a] Sic A. Scil. Fr. 7. Deest locus Trinc.

[b] διαφέρει] παραφέρει Grotius e conjectura.

7.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ἀνικήτου] ἀνίκητον Gesn. marg.

[c] κῆρας αὐγαῖσιν] κῆρας αὐγαῖς A. Voss. κ. ἐπ' αὐγαῖσιν ἠ. φίλαις B. Nescio quis apud Gesnerum in marg. αὐγαῖσιν κῆρας. κῆρας ὁμῶς αὐγαῖς correxit Grotius.

[d] ἄρεως] ἄρεος Voss.

[e] πολυδακρύου] πολυδακρύτου nescio quis apud Gesnerum in marg. et B.

[f] ἀρίδηλα] ἀΐδηλα Arsen. Gesn. marg.

[g] μετὰ] παρὰ Voss. πρὸς B. Mox τε om. Trinc.

[h] ἐγγένεσθε] ἔγευσθε Voss. ἄγεσθε A. ἐγένεσθε Trinc.

[i] πᾶσ' ἀπόλωλ'] πᾶσ ἀ πώλετο A.

[k] κακὰ] κακῷ suprasc. B. Valckenærius corrigit: ὅσσ' ἢν (vel ἐὰν) αἰσχροπαθῇ γίγνεται ἀνδρὶ κακά. Vel potius, Ὅσσα περ αἰσχρὰ παθεῖν γίγνεται ἀνδρὶ κακῷ.

[l] αἰσχρὸς] αἰσχρὸν Gesn. marg. Tr.

[m] κατακείμενος] κακκείμενος A.

νῶτον ὄπισθ' αἰχμῇ δουρὸς ἐληλαμένος.
ἀλλά τις εὖ διαβὰς μενέτω, ποσὶν ἀμφοτέροισι
στηριχθεὶς ἐπὶ γῆς, χεῖλος ὀδοῦσι δακὼν,
μηρούς τε, κνήμας τε κάτω, καὶ στέρνα, καὶ ὤμους,
ἀσπίδος εὐρείης [n] γαστρὶ καλυψάμενος·
δεξιτερῇ δ' ἐν χειρὶ τινασσέτω [o] ὄβριμον ἔγχος,
κινείτω δὲ λόφον δεινὸν ὑπὲρ κεφαλῆς·
ἔρδων δ' [p] ὄβριμα ἔργα διδασκέσθω [q] πολεμίζειν,
μηδ' ἐκτὸς βελέων [r] ἑστάτω ἀσπίδ' ἔχων,
ἀλλά τις ἐγγὺς ἰὼν αὐτοσχεδὸν ἔγχεϊ μακρῷ,
ἢ ξίφει οὐτάζων δήϊον ἄνδρ' ἑλέτω·
καὶ πόδα παρ' ποδὶ θεὶς, καὶ ἐπ' ἀσπίδος ἀσπίδ' ἐρείσας,
ἐν δὲ λόφον τε λόφῳ, καὶ κυνέην κυνέῃ,
καὶ στέρνον στέρνῳ πεπαλημένος ἀνδρὶ μαχέσθω,
ἢ ξίφεος κώπην ἢ δόρυ μακρὸν ἑλών.
ὑμεῖς δ', ὦ γυμνῆτες, ὑπ' ἀσπίδος ἄλλοθεν ἄλλος
πτώσσοντες, μεγάλοις βάλλετε χερμαδίοις,
δούρασί τε ξεστοῖσιν ἀκοντίζοντες ἐς αὐτοὺς,
τοῖσι [s] πανοπλίοις [t] πλησίον ἱστάμενοι.

8 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας ᾱ δημηγορίας Ἀθηναίων.

Τοῦ πολέμου τὸ παράλογον ὅσον ἐστὶ, πρὶν ἐν αὐτῷ γενέσθαι προδιάγνωτε· μηκυνόμενος γὰρ φιλεῖ εἰς τύχας τὰ πολλὰ περιΐστασθαι.

9 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας ᾱ δημηγορίας Κορινθίων.

Ἄλλα τε, ὅσα οὐκ ἄν τις νῦν προΐδοι· ἥκιστα γὰρ πόλεμος [b] ἐπὶ ῥητοῖς χωρεῖ, αὐτὸς δ' [c] ἀφ' αὐτοῦ τὰ πολλὰ

[n] γαστρὶ] δουρὶ Voss. Arsen.
[o] ὄβριμον] ὄμβριμον Arsen.
[p] ὄβριμα] ὄμβριμα Voss. Arsen.
[q] πολεμίζειν] πολεμίζ~ Voss. πολεμίζων Arsen.
[r] ἑστάτω] ἑστάτ' A.
[s] πανοπλίοις] πανοπλίοισι A. Voss. Trinc. πανοπλίταις B. Gesn. marg.
[t] πλησίον] ἔγγυθεν B.

8.
[a] Sic A. Scil. I. 78.

9.
[a] Sic A. Scil. I. 122. Deest lemma Trinc.
[b] ἐπὶ ῥήτοις] ἐπιρρητοῖς A.
[c] ἐφ' αὐτοῦ] ἀφ' αὐτοῦ B. Gesn. marg.

τεχνᾶται πρὸς τὸ [d] παρατυγχάνον· ἐν ᾧ ὁ μὲν εὐοργήτως αὐτῷ προσομιλήσας βεβαιότερος, ὁ δὲ ὀργισθεὶς περὶ αὐτὸν οὐκ ἐλάσσω πταίει.

10 [a] Δημοσθένους.

Πόλεμος ἔνδοξος εἰρήνης αἰσχρᾶς αἱρετώτερος. 353

11 [a] Ἀντισθένους.

Ἀντισθένης ὁ Σωκρατικὸς, εἰπόντος τινὸς, ὅτι ὁ πόλεμος ἀπολεῖ τοὺς πένητας, Πολλοὺς μὲν οὖν ποιήσει, [b] ἔφη.

12 [a] Ἀρχιδάμου.

Ἀρχίδαμος ὁ Ἀγησιλάου ἰδὼν βέλος τότε πρῶτον ἐκ Σικελίας κομισθὲν, ἀνεβόησεν, Ὦ Ἡράκλεις, ἀπόλωλεν ἀνδρὸς ἀρετά.

13 [a] Θουκυδίδου δημηγορίας Κορινθίων.

Ἀνδρῶν γὰρ σωφρόνων μέν ἐστιν, εἰ μὴ ἀδικοῖντο, ἡσυχάζειν, ἀγαθῶν δὲ, ἀδικουμένους ἐκ μὲν εἰρήνης πολεμεῖν, εὖ δὲ παρασχὸν ἐκ πολέμου πάλιν ξυμβῆναι, καὶ μήτε τῇ κατὰ πόλεμον εὐτυχίᾳ ἐπαίρεσθαι, μήτε τῷ ἡσύχῳ τῆς εἰρήνης ἡδόμενον ἀδικεῖσθαι. Ὅ τε γὰρ διὰ τὴν ἡδονὴν ὀκνῶν τάχιστ' ἂν ἀφαιρεθείη τῆς ῥαστώνης τὸ τερπνὸν, δι' ὅπερ ὀκνεῖ, [b] εἰ ἡσυχάζοι· ὅ τε ἐν πολέμῳ εὐτυχίᾳ πλεονάζων οὐκ ἐντεθύμηται θράσει [c] ἀπίστῳ ἐπαιρόμενος. Πολλὰ γὰρ κακῶς γνωσθέντα, ἀβουλοτέρων τῶν ἐναντίων τυχόντα, [d] κατώρθωκε, καὶ ἔτι [e] πλέω [f] τὰ καλῶς δοκοῦντα βουλευθῆναι, ἐς τοὐναντίον αἰσχρῶς περιέστη. Ἐνθυμεῖται γὰρ οὐδεὶς ὅμοια τῇ πίστει καὶ ἔργῳ ἐπεξέρχεται, ἀλλὰ μετ' ἀσφα-

[d] παρατυγχάνον] τυγχάνον A. Tr. V. Plutarch. II. p. 191. D. 219. A.

10.

[a] Sic A. Trinc.

11.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἔφη om. Trinc. Dedi supra ἀπολεῖ pro ἀπόλλει.

12.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

13.

[a] Sic A. Scil. I. 120. Simpl. Θουκυδίδου Trinc.

[b] εἰ] ἢ A. ἢ ἡσυχάζει Trinc.

[c] ἀπίστῳ] ἀπλείστῳ A. ἀπλήστῳ B. cum ἀπίστῳ in marg.

[d] κατωρθώθη] κατώρθωκε A. Tr.

[e] πλείω] πλέω A. Trinc.

[f] τὰ] ἃ B.

λείας μὲν δοξάζομεν, μετὰ δέους δ᾽ ἐν τῷ ἔργῳ ἐλλείπομεν.

14 [a] Πλάτωνος Νόμων ᾱ.

Ἣν γὰρ καλοῦσι [b] τῶν ἀνθρώπων οἱ πλεῖστοι εἰρήνην, τοῦτ᾽ εἶναι μόνον ὄνομα, τῷ δὲ ἔργῳ πάσαις πρὸς πάσας [c] ἀεὶ τὰς πόλεις πόλεμον ἀκήρυκτον κατὰ φύσιν εἶναι. Καὶ σχεδὸν ἀνευρήσεις οὕτω σκοπῶν τὸν [d] Κρητῶν νομοθέτην, ὡς εἰς τὸν πόλεμον ἅπαντα δημοσίᾳ καὶ ἰδίᾳ τὰ νόμιμα ἡμῖν ἀποβλέπων ξυνετάξατο, καὶ κατὰ ταῦτα οὕτω φυλάττειν παρέδωκε τοὺς νόμους, ὡς τῶν ἄλλων οὐδενὸς οὐδὲν ὄφελος ὄν, οὔτε κτημάτων, οὔτε ἐπιτηδευμάτων, [e] ἂν μὴ τῷ πολέμῳ ἄρα κρατῇ τις, πάντα δὲ τὰ τῶν νικωμένων ἀγαθὰ τῶν νικώντων γίγνεσθαι.

15 [a] Ξενοφῶντος ἐν γ̄ τῆς Κύρου Ἀναβάσεως.

Ἐπίστασθε γὰρ δὴ ὅτι οὔτε πλῆθός ἐστιν οὔτε ἰσχὺς ἡ ἐν τῷ πολέμῳ τὰς νίκας ποιοῦσα· ἀλλ᾽ ὁπότεροι ἂν σὺν τοῖς θεοῖς ταῖς ψυχαῖς ἐρρωμενέστεροι ἴωσιν ἐπὶ τοὺς πολεμίους, τούτους ὡς ἐπιπολὺ οἱ ἐναντίοι οὐ δέχονται.

16 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Μενεξένου ἢ Ἐπιταφίου.

Καὶ μήν, ὦ Μενέξενε, [b] πολλαχῇ κινδυνεύει καλὸν εἶναι τὸ ἐν πολέμῳ ἀποθνήσκειν. Καὶ γὰρ ταφῆς [c] καλῆς τε καὶ μεγαλοπρεποῦς τυγχάνει, καὶ ἐὰν πένης τις ὢν τελευτήσῃ, καὶ ἐπαίνου [d] αὖ ἔτυχε, καὶ ἐὰν φαῦλος ᾖ, ὑπ᾽ ἀνδρῶν

14.

[a] Sic A. Scil. p. 626. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] τῶν ἀνθρώπων οἱ πλεῖστοι] οἱ πλεῖστοι τῶν ἀνθρώπων A.

[c] ἀεὶ τὰς πόλεις] τὰς πόλεις ἀεὶ A.

[d] Κρητῶν] δὲ κρητῶν A. B.

[e] ἂν] ἐὰν A.

15.

[a] Sic A. Scil. III. 1, 42. Simpl. Ξενοφῶντος Trinc.

[b] Ἐπίστασθε γὰρ δὴ] ἐπίστασθαι γὰρ δεῖ B. ἐπίστασθαι A.

16.

[a] Sic A. Scil. p. 234. C. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] πολλαχοῦ] πολλαχῇ A. Trinc.

[c] καλῆς τε] τε καλῆς A. B.

[d] αὖ ἔτυχε] ἂν ἔτυχε ἐὰν καὶ A. B.

σοφῶν τε καὶ οὐκ [c] εἰκῇ ἐπαινούντων, ἀλλ' ἐκ πολλοῦ χρόνου λόγους παρεσκευασμένων.

* ΠΕΡΙ ΤΟΛΜΗΣ. ΝΑ.

1 [a] Τυρταίου.

Οὔτ' ἂν μνησαίμην, οὔτ' [b] ἐν λόγῳ ἄνδρα τιθείην,
οὔτε ποδῶν ἀρετῆς, οὔτε [c] παλαισμοσύνης·
οὐδ' εἰ Κυκλώπων μὲν [d] ἔχοι μέγεθός τε βίην τε,
νικῴη δὲ [e] θέων Θρηΐκιον Βορέην· 354
οὐδ' εἰ Τιθωνοῖο φυὴν [f] χαριέστερος εἴη,
πλουτοίη δὲ Μίδεω καὶ [g] † Κινυρέοιο μᾶλλον·
οὐδ' εἰ Ταντάλίδεω Πέλοπος βασιλεύτερος εἴη,
γλῶσσαν δ' Ἀδρήστου μειλιχόγηρυν ἔχοι,
οὐδ' εἰ πᾶσαν [h] ἔχοι δόξαν, [i] πλὴν θούριδος ἀλκῆς.
οὐ γὰρ ἀνὴρ ἀγαθὸς γίγνεται ἐν πολέμῳ,
εἰ [k] μὴ τετλαίη μὲν ὁρῶν φόνον αἱματόεντα,
καὶ δηΐων ὀρέγοιτ' ἐγγύθεν ἱστάμενος.
ἡ δ' ἀρετή, [l] τόδ' ἄεθλον ἐν ἀνθρώποισιν ἄριστον,
κάλλιστόν τε φέρειν γίγνεται ἀνδρὶ νέῳ.

2 [a] Εὐριπίδου Τημενίδων.

[b] Οὐκ ἔστι κρεῖττον ἄλλο, πλὴν κρατεῖν δορί.

[e] εἰκῇ] εἰκεῖν Trinc.

1.

* ΕΠΑΙΝΟΣ ΤΟΛΜΗΣ.] ΠΕΡΙ ΤΟΛΜΗΣ potius. Grotius in mss. Sic Photius.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ἐν λόγῳ] ἂν λόγῳ A. Trinc. Pro τιθείην Valckenærius ad Herodot. II. 141. rescribit τιθείμην e Platone.

[c] παλαισμοσύνης] παλαιμοσύνης A. Trinc.

[d] ἔχοι] ἔχει A. Voss.

[e] θέων] θεῶν B.

[f] χαριέστερος] χαριέστατος Trinc.

[g] κινυρέοιο μᾶλλον] κινύραο πλέον B. κινύρεω βάθιον Camerarius in margine Gesneri.

[h] ἔχοι] ἔχει A.

[i] πλὴν om. B.

[k] μὴ τετλαίη] μήτε τλαίη Trinc. Mox πόνον A. m. p.

[l] τόδ' ἄεθλον—ἄριστον] τόγ' ἄριστον—ἄεθλον B.

2.

[a] Sic A. Scil. Fr. 7. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] Desunt hinc usque ad εὐδοξίαν n. 4. B.

3 [a] Εὐριπίδου Τημένῳ.

Τολμᾶν δὲ χρεών. Ὁ γὰρ ἐν καιρῷ
μόχθος πολλὴν εὐδαιμονίαν
τίκτει θνητοῖσι τελευτῶν.

4 [a] Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.

Νεανίαν γὰρ ἄνδρα χρὴ τολμᾶν ἀεί.
οὐδεὶς γὰρ ὢν ῥᾴθυμος εὐκλεὴς ἀνήρ·
ἀλλ' οἱ πόνοι τίκτουσι τὴν [b] εὐδοξίαν.

5 [a] Τυρταίου.

Ξυνὸν δ' ἐσθλὸν τοῦτο πόληΐ τε παντί τε δήμῳ,
[b] ὅστις ἀνὴρ διαβὰς ἐν προμάχουσι μένῃ
νωλεμέως, [c] αἰσχρᾶς δὲ φυγῆς ἐπὶ πάγχυ λάθηται,
ψυχὴν καὶ θυμὸν τλήμονα παρθέμενος,
[d] θαρσύνῃ δὲ πεσεῖν τὸν πλησίον ἄνδρα παρεστώς·
[e] οὗτος ἀνὴρ ἀγαθὸς γίγνεται ἐν πολέμῳ,
αἶψα δὲ δυσμενέων ἀνδρῶν ἔτρεψε φάλαγγας
τρηχείας, σπουδῇ [f] δ' ἔσχεθε κῦμα μάχης.
αὐτὸς δ' ἐν προμάχοισι πεσὼν φίλον ὤλεσε θυμὸν,
ἄστυ τε καὶ λαοὺς καὶ πατέρ' εὐκλεΐσας,
[g] πολλὰ διὰ στέρνοιο καὶ ἀσπίδος ὀμφαλοέσσης
καὶ διὰ θώρηκος πρόσθεν ἐληλαμένος.
τὸν δ' ὀλοφύρονται μὲν ὁμῶς νέοι ἠδὲ γέροντες,
ἀργαλέῳ δὲ πόθῳ πᾶσα κέκηδε πόλις.
καὶ τύμβος, καὶ παῖδες ἐν ἀνθρώποις ἀρίσημοι,

3.

[a] Sic A. v. Fr. Temenid. 8. Deest lemma Trinc.

4.

[a] Sic A. Scil. Fr. 7. Deest lemma Trinc.

[b] εὐδοξίαν] εὐανδρίαν Voss. in textu.

5.

[a] Sic Trinc. Deest lemma A. Ἡρωελεγεῖα Voss.

[b] ὅστις ἀνὴρ] ὅστις ἂν εὖ conjicit Uptonus *Critical Observations on Shakspeare* p. 236. probante Toupio.

[c] αἰσχρᾶς] αἰσχρ A. (οι)

[d] θαρσύνῃ] θαρσύνει Grotius. δὲ om. Voss.

[e] οὗτος] οὕτως Trinc.

[f] τ' ἔσχεθε] δ' ἔχεσκε A.

[g] πολλὰ] πολλὰ δὲ A.

καὶ παίδων παῖδες, καὶ γένος ἐξοπίσω.
οὐδέποτε κλέος ἐσθλὸν ἀπόλλυται, οὐδ' ὄνομ' αὐτοῦ,
ἀλλ' ὑπὸ γῆς περ ἐὼν γίγνεται ἀθάνατος,
ὅντιν' ἀριστεύοντα, μένοντά τε, μαρνάμενόν τε
γῆς πέρι καὶ παίδων θοῦρος Ἄρης ὀλέσῃ.
εἰ δὲ φύγῃ μὲν κῆρα τανηλεγέος θανάτοιο,
νικήσας δ' αἰχμῆς ἀγλαὸν εὖχος [h] ἕλῃ,
πάντες [i] μιν τιμῶσιν ὁμῶς νέοι, ἠδὲ παλαιοὶ,
πολλὰ δὲ [k] τερπνὰ παθὼν ἔρχεται εἰς ἀΐδην,
γηράσκων δ' ἀστοῖσι [l] μεταπρέπει, οὐδέ τις αὐτὸν
βλάπτειν, οὔτ' αἰδοῦς, οὔτε δίκης ἐθέλει.
πάντες δ' ἐν θώκοισιν ὁμῶς νέοι, οἵ τε κατ' αὐτὸν,
εἴκουσ' ἐκ χώρης, οἵ τε παλαιότεροι.
ταύτης νῦν τις ἀνὴρ ἀρετῆς εἰς ἄκρον ἱκέσθαι
πειράσθω [m] θυμῷ, μὴ [n] μεθιεὶς [o] πόλεμον. 355

6 [a] Εὐριπίδου.

Σὺν τοῖσι δεινοῖς αὔξεται κλέος βροτοῖς.

7 [a] Τοῦ αὐτοῦ Ἀρχελάῳ.

Ἐμὲ δ' ἄρ' οὐ
μοχθεῖν δίκαιον; τίς δ' [b] ἄμοχθος εὐκλεής;
τίς τῶν μεγίστων δειλὸς ὢν ὠρέξατο;

8 [a] Εὐριπίδου ἐκ Τηλέφου.

[b] Τόλμ' ἀεὶ, κἄν τι τρηχὺ νέμωσι θεοί.

[h] ἕλῃ] ἔχῃ B. Paullo ante ἢν δὲ φύγῃ dedit Brunckius. Nescio an potius scripserit Tyrtæus, εἰ δὲ φύγοι—ἕλοι. ut Stephanus habet, et Ursinus.

[i] μιν om. A.

[k] θερπνὰ] τερπνὰ A.

[l] μετατρέπει] μεταπρέπει Trinc.

[m] θυμῶν] θυμὸν Voss. Trinc. θυμῷ A. B.

[n] μεθιεὶς] μεθεὶς B.

[o] πόλεμον] Quidam legit πολέμου. Gesner. Sic Ursinus.

6.

[a] Sic A. Trinc. Scil. fr. inc. 46.

7.

[a] Sic A. Scil. fr. 13. Deest lemma Trinc.

[b] ἀμόχθητος] Grotius dedit ἄμοχθος.

8.

[a] Sic A. Scil. fr. 21. Deest lemma Trinc.

[b] τόλμ'] τόλμ A. τόλμης B.

9 [a] Τοῦ αὐτοῦ Ἀρχελάῳ.

Ὀλίγοι γὰρ ἐσθλοὶ κρείσσονες πολλῶν κακῶν

10 [a] Εὐριπίδου Ἱππολύτῳ.

Οὐ γὰρ κατ' εὐσέβειαν αἱ θνητῶν τύχαι·
τολμήμασιν δὲ καὶ [b] χερῶν ὑπερβολαῖς
ἁλίσκεταί τε πάντα καὶ θηρεύεται.

11 [a] Τοῦ αὐτοῦ Ἰξίονι.

Τά τοι μέγιστα πάντ' [b] ἀπεργάζεται βροτοῖς
τόλμ' ὥστε νικᾶν. Οὔτε γὰρ τυραννίδες
χωρὶς πόνου γένοιντ' ἄν, οὔτ' οἶκος μέγας.

12 [a] Εὐριπίδου Ἐρεχθεῖ.

Ὀλίγους ἐπαινῶ μᾶλλον ἢ πολλοὺς κακούς.

13 [a] Τοῦ αὐτοῦ Ἀνδρομάχης.

Πολλῶν νέων γὰρ κἂν γέρων εὔψυχος ᾖ
κρείσσων· τί γὰρ [b] δεῖ δειλὸν ὄντ' εὐσωματεῖν;

[c] Κρεῖττον τ' ἀμύνειν. Κατθανεῖν γὰρ εὐκλεῶς,
ἢ ζῆν θέλοιμ' ἂν [d] δυσκλεῶς γε κατθανών.

14 [a] Εὐριπίδου.

Νεανίας γὰρ ὅστις [b] ὢν Ἄρη [c] στυγεῖ,
κόμη μόνον, καὶ σάρκες, ἔργα δ' οὐδαμοῦ.

9.

[a] Sic A. Scil. fr. 13. Deest lemma Trinc.

10.

[a] Sic A. Scil. fr. 4. Deest lemma Trinc.

[b] χερῶν] χειρῶν B.

11.

[a] Sic fere A. ubi ἰξίωνι. Scil. fr. 3. Deest lemma Trinc.

[b] ἀπεργάζεται] Grotius dedit ἀπειργάσθη. Musgravius malit ἀπείργασται, et v. seq. τόλμαις τὸ νικᾶν.

12.

[a] Sic A. Scil. fr. 3. Deest locus Trinc.

13.

[a] Sic A. Scil. v. 765. Deest lemma Trinc.

[b] δεῖ] δὴ A.

[c] κρεῖττον] Hic et sequens versiculus non exstant in Euripidis exemplaribus. A præcedentibus sejunxi.

[d] δυσκλεῶς γε] δυσκλεῶς γε κατθανὼν A. B. N. Trinc. δυσκλεῶς γε θανούμενος dedit Grotius.

14.

[a] Sic A. Scil. fr. inc. 51. Deest lemma Trinc.

[b] ὢν om. A. B.

[c] στυγεῖ] στυγῇ Voss. Trinc.

ὁρᾷς τὸν [d] εὐτράπεζον ὡς ἡδὺς βίος,
ὅ τ' ὄλβος [e] ἔξωθεν τίς ἐστι πραγμάτων·
ἀλλ' οὐκ ἔνεστι στέφανος, οὐδ' εὐανδρία,
εἰ μή τι καὶ τολμῶσι κινδύνου μέτα·
οἱ γὰρ πόνοι τίκτουσι τὴν [f] εὐανδρίαν.
ἡ δ' εὐλάβεια σκότον ἔχει [g] καθ' Ἑλλάδα,
τὸ διαβιῶναι μόνον ἀεὶ θηρωμένη.

15 [a] Ὁμήρου.

Τοῦ μὲν γάρ τε κακοῦ τρέπεται χρὼς ἄλλυδις ἄλλη,
οὐδέ οἱ ἀτρέμας [b] ἧσθαι ἐρητύετ' ἐν φρεσὶ θυμός·
[c] [ἀλλὰ μετοκλάζει, καὶ ἐπ' ἀμφοτέρους πόδας ἵζει.]
ἐν δέ τέ οἱ κραδίη μεγάλα στέρνοισι πατάσσει,
κῆρας ὀϊομένῳ, πάταγος δέ [d] τε γίνετ' ὀδόντων.
τοῦ δ' ἀγαθοῦ, οὔτ' ἂρ τρέπεται χρὼς, οὔτε [e] τι λίην
ταρβεῖ.

16 [a] Δημοκρίτου.

Τόλμα πρήξιος ἀρχὴ, τύχη δὲ τέλεος κυρίη.

17 [a] Εὐήνου.

Πρὸς [b] σοφίᾳ μὲν ἔχειν τόλμαν μάλα σύμφορόν ἐστι·
χωρὶς δὲ βλαβερὴ, καὶ κακότητα φέρει.

18 [a] Ἀντιφάνους.

Ἐπεὶ γὰρ ἀποθνήσκειν ἀνάγκη γίγνεται,
τὸ προῖκ' ἀποθανεῖν ἐστι φανερὰ ζημία.

[d] εὐτράπεζον] εὐτράπελον Trinc.
[e] ἔξωθεν τις] ἔξωθ' εἴ τις Valckenærius Diatr. Eurip. p. 227.
[f] εὐανδρίαν] εὐδοξίαν supra n. 4. quod et hic reponendum suadet Jacobsius Anthol. VIII. p. 131.
[g] ἀν' Ἑλλάδα] καθ' Ἑλλάδα A. Arsen. Voss. Gesn. marg. B. item habet τ' ἔχει et v. seq. τ' ἀεὶ.

15.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Il. N. 279.
[b] ἧσθαι om. A. Voss. Trinc. Mox ἐνὶ Trinc.
[c] ἀλλὰ—ἵζει om. A. Trinc.
[d] τε γίνετ'] γε κατ' Voss. δέ γε γ. Trinc.
[e] τι λίην] om. A. Trinc.

16.

[a] Sic A. Trinc.

17.

[a] Sic A. Trinc.
[b] σοφίᾳ] σοφίαν A. Trinc. Deest distichon B.

18.

[a] Sic A. Trinc.

19 [a] Καλλίνου.

[b] Μέχρις τεῦ κατάκεισθε; κότ' ἄλκιμον ἕξετε θυμὸν,
ὦ νέοι; οὐδ' [c] αἰδεῖσθ' ἀμφιπερικτιόνας, 50
ὧδε λίην μεθιέντες; ἐν εἰρήνῃ δὲ δοκεῖτε
ἧσθαι, ἀτὰρ πόλεμος γαῖαν ἅπασαν ἔχει.
[[d] εὖ νύ τις ἀσπίδα θέσθω ἐναντιβίως πολεμίζων·]
καί τις ἀποθνήσκων ὕστατ' ἀκοντισάτω.
τιμῆέν τε γάρ ἐστι καὶ ἀγλαὸν ἀνδρὶ μάχεσθαι
γῆς πέρι καὶ παίδων κουριδίης τ' ἀλόχου
δυσμενέσιν· θάνατος δέ [e] ποτ' ἔσσεται, ὁππότε κεν δὴ 356
μοῖραι ἐπικλώσωσ'· ἀλλά τις ἰθὺς ἴτω
ἔγχος ἀνασχόμενος, καὶ ὑπ' ἀσπίδος ἄλκιμον ἦτορ
ἕλσας, τὸ πρῶτον μιγνυμένου πολέμου.
οὐ γάρ [f] κως θάνατόν γε φυγεῖν εἱμαρμένον ἐστὶν
ἄνδρ', οὐδ' εἰ προγόνων ᾖ γένος ἀθανάτων.
πολλάκι δηϊοτῆτα φυγὼν καὶ δοῦπον ἀκόντων
ἔρχεται, ἐν δ' οἴκῳ [g] μοῖρα κίχεν θανάτου. 10
ἀλλ' ὁ μὲν οὐκ ἔμπας δήμῳ φίλος, οὐδὲ ποθεινός·
τὸν δ' [h] ὀλίγος στενάχει καὶ μέγας, ἤν τι πάθῃ.
λαῷ γὰρ σύμπαντι πόθος κρατερόφρονος ἀνδρὸς
θνήσκοντος, ζώων δ' ἄξιος ἡμιθέων.
ὥσπερ γάρ μιν πύργον ἐν ὀφθαλμοῖσιν ὁρῶσιν,
ἔρδει γὰρ πολλῶν ἄξια μοῦνος ἐών.

20 [a] Μενάνδρου.

Οὐκ ἔστι τόλμης ἐφόδιον μεῖζον [b] βίου.

19.

[a] Sic A. Trinc.

[b] Ioac. Camerarius Latinis versibus reddidit in oratione sua de bello Turcico, et Callimachi esse conjicit. Gesner.

[c] αἰδεῖσθ'] αἰδεῖ δ' A.

[d] εὖ νύ τις] Deest hexameter. Camerarius de suo supplevit. Gesn.

[e] ποτ' ἔσσεται] τοτ' ἔσσεται B. Mox ὁππότερον δὴ Grotius.

[f] κως] πως A. Mox τε pro γε Tr.

[g] μοῖρα] μοῖραν A.

[h] ὀλίγος] ὀλίγυς Voss. ὀλίγον Arsen.

20.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 222.

[b] βίου] βίῳ Salmasius apud Grotium.

21 [a] Μοσχίωνος ἐκ Θεμιστοκλέους.
Καὶ γὰρ ἐν νάπαις βραχεῖ
πολὺς σιδήρῳ κείρεται πεύκης κλάδος·
καὶ βαιὸς ὄχλος μυρίας λόγχης κρατεῖ.

22 [a] Πινδάρου Ὀλυμπιονίκων.
Ὁ μέγας δὲ κίνδυ-
νος ἄναλκιν οὐ φῶ-
τα λαμβάνει.

23 [a] Σωσιθέου ἐξ Ἀθλίου.
Εἷς [b] μυρίους ὄρνιθας ἀετὸς σοβεῖ,
λαῶν τε δειλῶν πλῆθος εὖ τραφεὶς ἀνήρ.

24 [a] Σοφοκλῆς Σκυρίοις.
Φιλεῖ γὰρ ἄνδρας πόλεμος ἀγρεύειν νέους.

25 [a] Μενάνδρου.
Οὐκ ἔστι τόλμης ἐπιφανεστέρα [b] θεός.

26 [a] Αἰσχύλου Καρῶν.
Ἀλλ' Ἄρης φιλεῖ
ἀεὶ τὰ λῷστα πάντα [b] τ' ἀνθρώπων στρατοῦ.

27 [a] Μενάνδρου Ἐπαγγελλόμενος.
Τὰ γὰρ τολμηρὰ τῶν ὄχλων ἔχει

21.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

22.
[a] Sic A. Scil. I. 129. Simpl. Πινδάρου Trinc.

23.
[a] Sic A. Simpl. Σωσιθέου Trinc.
[b] μυρίος—αἰετὸς] μυρίους—αετὸς Trinc.

24.
[a] Sic A. Scil. fr. 3. Simpl. Σοφοκλ. Trinc.

25.
[a] Sic A. Cleric. p. 222. Deest locus Trinc.
[b] θεός] θεά dedit Grotius.

26.
[a] Sic A. Scil. fr. 1. Simpl. Αἰσχύλου Trinc.
[b] τἀνθρώπων] Redeat vox ἀνθρώπων in suum compendium ανων. Alicubi μῶν in Euripidis versu mutatum fuit in νῷν. hic ανων mutetur in ἀμῶν, *metens*: de Marte homicida, qui *demetet* ense suo *præstantissimos quosque*, dici certe potuit, χαίρει γ' ἀεὶ τὰ λῷστα πάντ' ἀμῶν στρατοῦ. Sed φιλεῖ requirit ἀμᾶν· hoc itaque restituamus, et suum Æschylo versum trochaicum: Ἀλλ' Ἄρης φιλεῖ γ' ἀεὶ τὰ λῷστα πάντ' ἀμᾶν στρατοῦ. *Sed amat metere semper Mars optimos quosque ex exercitu.* Valckenaer. Diatr. Eurip. p. 225.

27.
[a] Sic fere A. ubi ἐπαγγελλομέ-

ἐν τοῖς λογισμοῖς τὰς [b] ἐπιδείξεις δυσκόλους·
ἐν τῷ δὲ πράττειν, [c] ἂν λάβῃ τὸν καιρὸν εὖ,
[d] ἀπροσδόκητον τὴν τέχνην [e] ἐξηύρατο.

28 [a] Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον.

Μᾶλλον εὐλαβοῦ ψόγον, ἢ κίνδυνον· δεῖ γὰρ εἶναι τοῖς μὲν φαύλοις φοβερὰν τὴν τοῦ βίου τελευτὴν, τοῖς δὲ σπουδαίοις τὴν ἐν τῷ [b] βίῳ ἀδοξίαν. [[c] Μάλιστα μὲν πειρῶ ζῆν κατὰ τὴν ἀσφάλειαν·] ἐὰν δέ ποτέ σοι συμβῇ κινδυνεύειν, ζήτει τὴν [d] ἐκ τοῦ πολέμου σωτηρίαν μετὰ καλῆς δόξης, ἀλλὰ μὴ μετ' αἰσχρᾶς φήμης. Τὸ μὲν γὰρ τελευτῆσαι [e] πάντων ἡ πεπρωμένη κατέκρινεν, τὸ δὲ καλῶς ἀποθανεῖν ἴδιον [f] τοῖς σπουδαίοις ἡ φύσις ἀπένειμεν.

29 [a] Ἰσοκράτους Εὐαγόρα.

Εὑρήσομεν γὰρ τοὺς φιλοτίμους καὶ μεγαλοψύχους τῶν ἀνδρῶν οὐ μόνον ἀντὶ τῶν τοιούτων ἐπαινεῖσθαι βουλομένους, ἀλλ' ἀντὶ τοῦ ζῆν ἀποθνήσκειν εὐκλεῶς [b] αἱρουμένους, καὶ μᾶλλον περὶ τῆς δόξης ἢ τοῦ βίου σπουδάζοντας, καὶ πάντα ποιοῦντας, ὅπως ἀθάνατον τὴν περὶ αὐτῶν μνήμην καταλείψωσιν.

30 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Μενεξένου ἢ Ἐπιταφίου.

Ἐν δὲ τῷ παρόντι δίκαιός εἰμι εἰπεῖν, ἃ οἱ πατέρες ἡμῖν ἐπέσκηπτον [b] ἀπαγγέλλειν τοῖς ἀεὶ λειπομένοις εἴ τι πάσχοιεν, ἡνίκα κινδυνεύσειν ἔμελλον. [[c] Φράσω δὲ ὑμῖν ἅ τε

νοις. Cleric. p. 62. Simpl. Μενάνδρου Trinc.

[b] ἐπιδείξεις μὲν] μὲν τὰς ἐπιδείξεις A. Trinc.

[c] ἂν λάβῃ] ἀναλάβῃ Trinc.

[d] ἀπροσδόκητον] τἀπροσδόκητον B.

[e] ἐξεύρατο] ἐξηύρατο A.

28.

[a] Sic A. Simpl. Ἰσοκράτους Trinc.

[b] βίῳ] ζῆν Gesn. marg.

[c] μάλιστα — ἀσφάλειαν om. A. Trinc.

[d] ἐκ τοῦ] ἐκ om. A.

[e] πάντως] πάντων A. B.

[f] τῶν σπουδαίων] τοῖς σπουδαίοις A. B. Gesn. marg.

29.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] αἱρουμένους] αἱρομένους A.

30.

[a] Sic A. Scil. pag. 246. C. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] ἐπαγγέλλειν] παραγγέλλειν A. ἀπαγγέλλειν Trinc.

[c] φράσω—ἔλεγον om. A. Trinc.

αὐτῶν ἤκουσα ἐκείνων, καὶ οἷα νῦν ἡδέως ἂν εἴποιεν ἡμῖν λαβόντες δύναμιν, τεκμαιρόμενος ἐξ ὧν τότε ἔλεγον·] ἀλλὰ νομίζειν [d] χρὴ αὐτῶν ἀκούειν ἐκείνων, ἃ ἂν ἀπαγγέλλω· ἔλεγον δὲ τάδε· Ὦ παῖδες, ὅτι μὲν ἐστὲ πατέρων ἀγα- 357
θῶν, αὐτὸ μηνύει τὸ νῦν παρὸν ἡμῖν· [e] ἐξὸν ζῆν μὴ καλῶς, καλῶς αἱρούμεθα μᾶλλον τελευτᾶν, πρὶν ὑμᾶς τε καὶ τοὺς ἔπειτα εἰς ὀνείδη καταστῆσαι, καὶ πρὶν τοὺς ἡμετέρους πατέρας καὶ πᾶν τὸ πρόσθεν γένος αἰσχῦναι· ἡγούμενοι τῷ τοὺς [f] αὑτοῦ αἰσχύνοντι ἀβίωτον εἶναι, καὶ τῷ τοιούτῳ οὔτε τινὰ ἀνθρώπων οὔτε θεῶν φίλον εἶναι, οὔτ' [g] ἐπὶ γῆς, οὔθ' ὑπὸ γῆς τελευτήσαντι. Χρὴ οὖν μεμνημένους τῶν ἡμετέρων λόγων, ἐάν τι καὶ [h] ἄλλο ἀσκῆτε, ἀσκεῖν μετ' ἀρετῆς, εἰδότας ὅτι τούτου λειπόμενα πάντα, καὶ κτήματα καὶ ἐπιτηδεύματα, [i] αἰσχρὰ καὶ κακά. Οὔτε γὰρ πλοῦτος κάλλος φέρει τῷ κεκτημένῳ μετὰ ἀνανδρίας· ἄλλῳ γὰρ ὁ τοιοῦτος πλουτεῖ, καὶ οὐχ ἑαυτῷ· οὔτε κάλλος σώματος καὶ ἰσχὺς δειλῷ καὶ κακῷ ξυνοικοῦντα, πρέποντα φαίνεται, ἀλλ' ἀπρεπῆ, καὶ ἐπιφανέστερον ποιεῖ τὸν ἔχοντα, καὶ ἐκφαίνει τὴν δειλίαν· [k] πᾶσά τε ἐπιστήμη χωριζομένη δικαιοσύνης καὶ τῆς ἄλλης ἀρετῆς, πανουργία, οὐ σοφία φαίνεται. Ὧν ἕνεκα καὶ πρῶτον, καὶ [l] ὕστερον, καὶ διὰ παντὸς πᾶσαν [m] πάντως προθυμίαν πειρᾶσθε ἔχειν, ὅπως μάλιστα μὲν ὑπερβαλῆσθε καὶ ἡμᾶς καὶ τοὺς πρόσθεν εὐκλείᾳ· εἰ δὲ μή, [n] ἴστε ὡς ἡμῖν, ἐὰν [o] μὲν νικῶμεν ὑμᾶς ἀρετῇ, ἡ νίκη αἰσχύνην φέρει, ἡ δὲ ἧττα, ἐὰν ἡττώμεθα, εὐδαιμονίαν. Μάλιστα δ' ἂν νικῴμεθα, καὶ ὑμεῖς

[d] χρὴ om. A.

[e] δὲ ἐξὸν] δὲ om. A. Trinc. qui plene post ἡμῖν non post παρὸν interpungunt. ἐξὸν γὰρ. B.

[f] αὐτοῦ] αὐτοὺς A.

[g] ἐπὶ γῆς οὔθ' ὑπὸ] ἐπίσης, οὔτ' ἐπὶ Trinc.

[h] ἄλλο] ἄλλος A.

[i] αἰσχρὰ] καὶ αἰσχρὰ Trinc.

[k] πᾶσά τε] Quæ sequuntur omnia, etiam in sermone de Justitia citantur. Gesner.

[l] ὕστατον] ὕστερον A. Trinc.

[m] πάντως] πάντων A. B.

[n] ἴστε] ἴστε ὡς A. B. Trinc.

[o] μὲν] μὴ B.

[p]νικῶτε, εἰ [q]παρασκευάσεσθε τῇ τῶν προγόνων δόξῃ [r]μὴ καταχρησάμενοι μηδ᾽ ἀναλώσαντες αὐτὴν, γνόντες ὅτι ἀνδρὶ οἰομένῳ τὶ [s]εἶναι οὐκ ἔστιν αἴσχιόν [[t]τι, ἢ] παρέχειν ἑαυτὸν τιμώμενον μὴ δι᾽ ἑαυτὸν, ἀλλὰ διὰ δόξαν προγόνων. Εἶναι μὲν γὰρ τιμὰς γονέων ἐκγόνοις καλὸς θησαυρὸς καὶ μεγαλοπρεπής· [v]χρῆσθαι δὲ καὶ χρημάτων καὶ τιμῶν θησαυρῷ, καὶ μὴ τοῖς ἐκγόνοις παραδιδόναι, αἰσχρὸν καὶ ἄνανδρον, ἀπορίᾳ ἰδίων αὐτοῦ κτημάτων τε καὶ εὐδοξιῶν. Καὶ ἐὰν μὲν ταῦτα ἐπιτηδεύσητε, φίλοι παρὰ φίλους ἡμᾶς [w]ἀφίξεσθε, ὅτ᾽ ἂν [x]δὴ ὑμᾶς ἡ προσήκουσα μοῖρα κομίσῃ· ἀμελήσαντας δὲ [y]ὑμᾶς καὶ κακισθέντας οὐδεὶς εὐμενῶς δέξεται.

* ΠΕΡΙ ΝΕΟΤΗΤΟΣ. ΝΒ.

1 [a]Εὐριπίδου Ἀνδρομάχης.

Κακόν γε θνητοῖς τὸ νέον, ἐν δὲ τῷ νέῳ
τὸ μὴ δίκαιον ὅστις ἀνθρώπων ἔχει.

2 [a]Εὐριπίδου Ἀνδρομέδας.

Νεότης μ᾽ ἐπῆρε, καὶ σθένος τοῦ νοῦ πλέον.

3 [a]Εὐριπίδου Μελανίππῃ.

Παπαὶ, νέος καὶ σκαιὸς οἷος ἔστ᾽ ἀνήρ.

p νικῶντες] νικᾶτε A. νικῶτε Tr. B.
q παρασκευάσεσθε] παρασκευάζεζεσθε Trinc.
r μὴ] om. A. B.
s εἶναι om. B.
t τι, ἢ om. A. Trinc.
v χρῆσθαι] χρῆσθε Trinc.
w ἀφίξεσθε] ἀφίξεσθαι B. ἀφέξεσθε Trinc.
x δὴ ἡμᾶς] ὑμᾶς A. B. δὴ om. Trinc.
y ὑμᾶς] ἡμᾶς A. B.

1.

* Περὶ νεότητος] Ita emendandum hunc titulum conjeceram; mox idem in MS. A. reperi. Sed enim desiderari hoc loco titulum qui inscriptus fuerit ψόγος τόλμης (quod hoc loco in vulgatis exstat) et illum *de juventute* postrema Stobæi parte huc transiisse non negaverim. Grotius. Eundem titulum in suo codice reperit Photius.

a Sic A. Scil. v. 184. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

2.

a Sic A. Scil. Fr. 11. Deest lemma Trinc.

3.

a Sic A. Scil. Fr. 5. Deest lemma Trinc.

4 [a] Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.
Νεανίας τε καὶ πένης σοφός [b] θ' ἅμα,
ταῦτ' εἰς ἓν ἐλθόντ' ἄξι' [c] ἐνθυμήσεως.

5 [a] Τοῦ αὐτοῦ Δικτύϊ.
Νέος, πόνοις δέ γ' οὐκ ἀγύμναστος φρένας.

6 [a] Ἀγάθωνος.
Νέων γὰρ ἀνδρῶν πολλὰ κάμπτονται φρένες.

7 [a] Μητροδώρου.
Νέος φιλοδοξῶν πρώϊμος πονηρία.

8 [a] Τὸ νέον ἅπαν ὑψηλόν ἐστι [b] καὶ θρασύ.

9 [a] Μενάνδρου.
Μὴ τοῦτο βλέψῃς, εἰ νεώτερος λέγω, 358
ἀλλ' εἰ φρονοῦντος τοὺς λόγους ἀνδρὸς [b] ἐρῶ.

10 [a] Μενάνδρου.
Οὐχ αἱ τρίχες ποιοῦσιν αἱ λευκαὶ φρονεῖν,
ἀλλ' ὁ τρόπος ἐνίων ἐστὶ τῇ φύσει γέρων.

11 [a] Κρατῖνος ἐν Εὐνίδαις.
Ἥβης ἐκείνης, νοῦ δὲ τοῦδε καὶ [b] φρενῶν † κατάλληλος.

12 [a] Θεόγνιδος.
Ἥβη καὶ νεότης ἐπικουφίζει νόον ἀνδρός·

4.
[a] Sic A. Scil. Fr. 14. Deest lemma Trinc.
[b] θ' ἅμα] θ' om. A.
[c] ἐνθυμήσεως] ἐνθυμήσεων A.

5.
[a] Sic A. Scil. Fr. 16. Deest locus Trinc.

6.
[a] Sic A. Trinc.

7.
[a] Sic A. Trinc.

8.
[a] Deest lemma A. Trinc.
[b] καὶ] τε καὶ Arsen. ὑψηλήν τε καὶ θρασῦ Trinc.

9.
[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 222.
[b] ἐρῶ] σ' ἐρῶ Grotius, φέρω Bentleius.

10.
[a] Sic A. Cleric. p. 224. Deest lemma Trinc.

11.
[a] Sic A. Κρατίλου Trinc.
[b] φρενῶν κατάλληλος] Quod heic in vulgatis additur κατάλληλος ut glossema ejeci. Grotius. Julianus Misop. p. 339. D. ἀναμιμνήσκεσθε νῦν Ἥβης ἐκείνης, νοῦ τε ἐκείνου καὶ φρενῶν.

12.
[a] Sic A. Trinc. Scil. v. 629.

πολλῶν δ' ἐξαίρει θυμὸν ἐς ἀμπλακίην.

13 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Θεαιτήτου.

Τῷ γὰρ ὄντι ἡ νεότης εἰς πᾶν ἐπίδοσιν ἔχει.

14 [a] Πλάτωνος Νόμων β.

Τὸ δὲ τοσόνδε οἶδα, ὅτι πᾶν [b] ζῶον ὅσον αὐτῷ προσήκει νοῦν ἔχειν τελεωθέντι, [c] τοῦτον καὶ τοσοῦτον οὐδὲν ἔχον ποτὲ φύεται· ἐν τούτῳ δὴ τῷ χρόνῳ ἐν ᾧ μή πω [d] κέκτηται τὴν [e] οἰκείαν φρόνησιν, πᾶν μαίνεταί τε [f] καὶ βοᾷ ἀτάκτως· καὶ ὅτ' ἂν [g] ἀκταινώσῃ ἑαυτὸ τάχιστα, ἀτάκτως αὖ πηδᾷ.

15 [a] Θεοφράστου.

Χαλεπὸν καταμαντεύεσθαι περὶ τῶν νέων· ἀστόχαστος γὰρ ἡλικία, καὶ πολλὰς ἔχουσα μεταβολὰς, ἄλλοτε ἐπ' ἄλλο φερομένη.

16 [a] Πλάτωνος Νόμων ια.

Τὰ γὰρ τῶν νέων ἤθη πολλὰς μεταβολὰς ἐν τῷ βίῳ μεταβάλλειν ἑκάστοτε πέφυκε.

17 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Συμποσίου.

Χρῆν δὲ καὶ [b] νόμον εἶναι μὴ ἐρᾶν παίδων, ἵνα μὴ εἰς ἄδηλον πολλὴ σπουδὴ ἀνηλίσκετο. Τὸ γὰρ τῶν παίδων τέλος ἄδηλον οἷ τελευτᾷ κακίας [c] ἢ ἀρετῆς, ψυχῆς τε πέρι καὶ σώματος.

18 [a] Ὁμήρου.

Αἰεὶ δ' ὁπλοτέρων ἀνδρῶν φρένες ἠερέθονται.

13.

[a] Θεομιμήτου A. Simpl. Πλάτωνος Trinc. v. Theætet. p. 146. B.

14.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 672.

[b] ζῶον] Al. non legitur. GESNER.

[c] τοιοῦτον] τοῦτον A. Trinc.

[d] κέκτηται] κέκτησαι Trinc.

[e] οἰκείαν] οἰκίαν A.

[f] καὶ usque ad ἀτάκτως habet A. in marg. sed a manu prima.

[g] ἀποκτείνῃ αὐτὸ] ἀκταινώσῃ ἑαυτὸ Damasc. et sic fere Trinc. ubi ὅτ' ἀνακταινώσῃ. ἀκταινῶσι ἑαυτὸ A. ἀκταινῶσι B. τάχιστα om. Damasc.

15.

[a] Sic A. Θεοφάνους Trinc.

16.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 929.

17.

[a] Sic A. Scil. p. 181. Deest lemma Trinc.

[b] νόμον] νόμων Trinc.

[c] ἢ ἀρετῆς] καὶ ἀρετῆς A.

18.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Il. γ. 108.

*ΨΟΓΟΣ ΤΟΛΜΗΣ ΣΤΡΑΤΕΙΑΣ ΚΑΙ ΙΣΧΥΟΣ. ΝΓ.

1 [a] Μενάνδρου.

Οἴκοι μένειν χρὴ, καὶ μένειν [b] ἐλεύθερον.

2 [a] Μενάνδρου Παρακαταθήκη.

[b] Στρατεία δ' οὐ φέρει περιουσίαν οὐδεμίαν,
ἐφήμερον δὲ καὶ προπετῆ βίον,
οὗ πεῖραν [c] ἔχομεν, ὄντος οὐ σωτηρίου.

3 [a] Μενάνδρου Σικυωνίῳ.

[b] Εὐλοιδόρητον, ὡς ἔοικε, φαίνεται
τὸ τοῦ στρατιώτου σχῆμα, καὶ τὸ τοῦ ξένου.

4 [a] Ἀπολλοδώρου ἐξ Ἀφανιζομένου.

[b] Στρατιώτην ἔργον ἄχρι γήρως λαβεῖν
ἔστιν διευτυχηκότ', ἂν μὴ δειλὸς ᾖ.

5 [a] Μενάνδρου Ἀσπίδος.

Στρατιώτην, [b] Σμικρίνη, σωτηρίας
ἔστ' ἔργον εὑρεῖν πρόφασιν, ὀλέθρου δ' εὔπορον.

1.

* Περὶ στρατείας καὶ ἰσχύος] ψόγος τόλμης στρατείας κ. ἰ. A. ψόγος θράσους καὶ ἰσχύος Grotius.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 54.

[b] ἐλεύθερον, Ἢ μηκέτ' εἶναι τὸν καλῶς εὐδαίμονα] Addidimus hunc versum, quem cohæsisse apparet ex eo quem supra habuimus titulo *de Patria*. Grotius. Vide supra XXXIX. 11.

2.

[a] Sic A. Cleric. p. 144. Deest lemma Trinc.

[b] στρατεία] στρατία A. B. Edidit Grotius, στρατεία δ' οὐδεμίαν περιουσίαν φέρει, ἐφ. Bentleius, στρατεία δ' οὐ φέρει περιουσίαν Οὐδέμι'—

[c] ἔχομεν ὄντος οὐ] ἐχόμ, τοῦ σρίου (ον) A. B. i. e. ἐχόμενον τοῦ σωτηρίου.

3.

[a] A. compendiose Σικυώ. Deest lemma Trinc. *Sicyonia* Gesnerus et Grotius. Cleric. p. 164.

[b] εὖ λοιδόρητον ed. Grotius, sed correxit in ms.

4.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

[b] στρατιώτην ἔργον ἄχρι τοῦ γήρως λαβεῖν] τοῦ addidimus, et quod sequebatur ἔστι rejecimus in versum sequentem. Salmasius rectius versum habiturum judicabat, si legamus ἔργον στρατιώτην. Grotius. Nihil mutandum recte statuit Jacobsius in Athen. p. 102. qui in proximo fragmento tractando mire erravit.

5.

[a] Sic A. Cleric. p. 26. Deest locus Trinc.

[b] σμικρὸν ᾖ] σμικρὴν ᾗ A. Unde

6 [a] Μενάνδρου.

Κομψὸς στρατιώτης, οὐδ' [b] ἂν εἰ πλάττοι θεὸς,
οὐθεὶς γένοιτ' ἄν.

7 [a] Ἀπολλοδώρου Παιδίων.

Ταχύ [b] γε στρατιώτης γέγονας ἀντ' ἐλευθέρου.

8 [a] Φιλήμονος.

Στρατιῶτα, κοὐκ ἄνθρωπε, καὶ σιτούμενε
[b] ὥσπερ ἱερεῖον, ἵν', ὅτ' ἂν ᾖ καιρὸς, τυθῇς.

9 [a] Ἀντιφάνους.

Τίς δ' οὐχὶ θανάτου [b] μισθοφόρων, ὦ φιλτάτη,
ὃς ἕνεκα τοῦ ζῆν ἔρχετ' ἀποθανούμενος;

10 [a] Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον.

Ῥώμη δὲ μετὰ μὲν φρονήσεως ὠφέλησεν, ἄνευ δὲ ταύτης πλείω τοὺς ἔχοντας ἔβλαψε· καὶ [b] τὰ μὲν σώματα τῶν ἀσκούντων ἐκόσμησε, ταῖς δὲ τῆς ψυχῆς ἐπιμελείαις ἐπεσκότησεν.

11 [a] Ἐκ τῆς ἐπιστολῆς τῆς περὶ Φιλίας.

Ἔτι [b] δὲ κολάσεως ἀπαραίτητος φόβος αἴτιός ἐστιν ἀπονοί- 359
ας· ὁ γὰρ ὄλεθρον αὐτοῦ προλαβὼν ὁμόσε χωρεῖ κινδύνοις.

12 [a] Ἀρχιδάμου.

Ἀρχίδαμος ὁ τῶν Λακεδαιμονίων βασιλεὺς θεασάμενος

patet verissime a Bentleio repositum Σμικρίνῃ.

6.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 224.
[b] ἂν εἰ πλάττοι] ἂν πλάττῃ A. B. i. e. οὐδ' ἐὰν πλάττῃ.

7.

[a] Sic A. *in Pædio* Gesner. *Puero* Grotius. et corrig. videtur Παιδίῳ. Simpl. Ἀπολλοδώρου Trinc.
[b] γε] δὲ A. B.

8.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 346.
[b] ὡς τὰ ἱερεῖα] ὥσπερ ἱερεῖον Porsonus.

9.

[a] Sic A. Trinc.
[b] μισθοφόρος] μισθοφόρων A. Voss. Trinc.

10.

[a] Sic A. Simpl. Ἰσοκράτους Tr.
[b] τὰ μὲν] μὲν om. Trinc.

11.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. v. Plutarchum Wyttenbachii T. V. p. 552=831.
[b] δὲ om. A.

12.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Vid. Wyttenbach. ad Plutarch. II. p. 218. E.

τὸν ἴδιον [b] παῖδα ἄγαν προπετῶς μαχόμενον τοῖς Ἀθηναίοις, εἶπεν· Ἢ τῇ δυνάμει πρόσθες, ἢ τοῦ θράσους ἄφελε.

13 [a] Κλειτάρχου.

Κλείταρχος ὁ ἱστοριογράφος εἶπε, Πᾶσα τόλμη καὶ τὰ τῆς δυνάμεως ὑπερβαίνει μέτρα.

14 [a] Πλουτάρχου ἐκ τοῦ Κατ' Ἰσχύος.

Τί δέ σοι τοιοῦτον ἀγαθὸν εὐτυχεῖται μᾶλλον, ὡς ἕνεκα τούτου μητρυιὰν μὲν τῶν ἀνθρώπων, μητέρα δὲ τῶν ἀλόγων ζώων γεγενῆσθαι τὴν φύσιν, μεγέθους καὶ ὀξύτητος καὶ ὀξυωπίας χάριν; Ἡ δὲ ἀνθρώπων ἴδιος ἰσχὺς ὁ ψυχῆς ἐστὶ λογισμὸς, [b] ὃ καὶ ἐλέφαντας ὑπὸ δρυμὸν εἷλε [c] ποδάγραις, καὶ [d] ἵππους ἐχαλίνωσε, καὶ βόας ἀρότροις ὑπέζευξε, καὶ τὰ ἐναέρια κατέσπασε καλάμοις, καὶ τὰ βύθια δεδυκότα δικτύοις ἀνήγαγε· τοῦτ' ἐστὶν ἰσχύς. Ἡ δ' ἔτι μείζων, ὅτ' ἂν γῆς περιόδους, καὶ οὐρανοῦ μεγέθη, καὶ ἀστέρων κύκλους διώκουσα μὴ κάμῃ· ταῦτ' ἦν Ἡρακλέους ἄξια. Τίς γὰρ οὐκ ἂν βούλοιτο μᾶλλον Ὀδυσσεὺς εἶναι ἢ Κύκλωψ;

15 [a] Ἀράτου.

Ἄρατος ὁ Σικυώνιος, ἐπαινοῦντός τινος ἄνθρωπον [b] ἀπονενοημένον καὶ θρασὺν, καὶ διὰ τοῦτο καὶ ἐν τοῖς πολέμοις ἐκπρεπῆ, Διαφέρειν, ἔφη, τὸ πολλοῦ τινα τὴν ἀρετὴν ἀξίαν εἶναι νομίζειν, καὶ τὸ ζῆν τοῦ μηδενός.

16 [a] Εὐσεβίου.

Ἄνθρωποι ἰσχὺν καὶ ῥώμην καὶ τάχος μοῦνα ἀσκέοντες,

[b] παῖδα Ἄγινα B.

13.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

14.

[a] Sic A. Simpl. Πλουτάρχου Tr. v. ed. Wyttenbach. T. V. pag. 564=847. In pr. δὲ pro δαὶ A.

[b] ᾧ καὶ] ὃ καὶ A. Tr. ὃς καὶ B.

[c] ποδάγραις] ποδάγραι A.

[d] ἵππους ad ὑπέζευξε leg. in A. ante ἐλέφαντας. Cæterum hic locus colorem duxisse videtur ex notissimo illo Sophoclis Antig. 332. sqq.

15.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἀπονενοημένον] ἀπονεωημένον B. ἀπονεονημένων Trinc.

16.

[a] Sic A. Trinc.

καὶ ὅκως ταῦτα ἔχοντες ἀπὸ [b] τούτων μούνων εὐδοκιμέωσιν ἐσπουδακότες, τοῦ δὲ τῆς ψυχῆς ἐπιμέλεσθαι, [c] οὗ ἕκατι γιγνόμενοι ἀγνοεῦσι· καὶ τούτων μὲν ὁκόσα κοινὰ πρὸς θηρία ἔχουσι, καὶ τῶν πολλῶν ἀσθενέστερον, τούτων μὲν [d] ἐπιμελούμενοι, τοῦ δὲ ἐν ἑωυτοῖσι θειοτάτου, καὶ [e] καθ' ὅτι αὐτοῖς ἐστιν εἰ οἷόν τε τοῖς θεοῖς [f] ἐξομοιεύεσθαι, ἀμελέοντες.

17 [a] Θάρσος τὸ πρὸς τὰ φοβερὰ σὺν λόγῳ, αἴνεε· ἀνδρηΐα γάρ· τὴν δὲ μετὰ ἀλογίης [b] ἐπ' αὐτὰ ὁρμὴν θράσος νόμιζε, καὶ [c] ἀπόστυγεε.

ΠΕΡΙ ΣΤΡΑΤΗΓΩΝ, ΚΑΙ ΠΕΡΙ ΤΩΝ ΚΑΤΑ ΠΟΛΕΜΟΝ ΧΡΕΙΩΝ ΥΠΟΘΗΚΑΙ. ΝΔ.

1 [a] Γνῶμαι γὰρ ἔργων τῶν ἐν ἀνθρώποις τροφοί.

2 [a] Βουλαὶ [b] τάδ' ἐξέπραξαν, οὐ χερῶν σθένος.

3 [a] Σοφοκλέους.

Γνῶμαι πλέον κρατοῦσιν, ἢ σθένος χερῶν.

4 [a] Ἀγάθωνος.

Γνώμη δὲ [b] κρείσσων ἐστὶν, ἢ ῥώμη χερῶν.

5 [a] Εὐριπίδου Ἀντιόπῃ.

Γνώμῃ γὰρ ἀνδρὸς εὖ μὲν οἰκοῦνται πόλεις,
εὖ δ' [b] οἶκος, εἴς τ' αὖ πόλεμον ἰσχύει μέγα.

[b] τούτων μούνων] μούνων τούτων A.
[c] οὗ] ὡς A.
[d] ἐπιμελόμενοι] ἐπιμελούμενοι A.
[e] καθ' ὅτι] κατότι A. B.
[f] ἐξομοιόεσθαι] ἐξομοιεύεσθαι A. Trinc.

17.

[b] ἐπ' αὐτὰ om. Trinc.
[c] ἀποστύγεε] ἀπόστυγε B.

1.

[a] Deest lemma A. Sophocli tribuunt Trincavellus et Gesnerus, Incerto Grotius. Idem de n. 2. dicendum.

2.

[b] τάγ'] τάδ' A. Gesn. marg.

3.

[a] Sic A. Fr. inc. 21. Deest lemma Trinc.

4.

[a] Sic Trinc. Ἀγάθων A.
[b] κρείσσων] κρεῖσσόν Trinc.

5.

[a] Sic A. Scil. Fr. 12. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.
[b] οἶκος] οἶκον Trinc.

σοφὸν γὰρ [b] ἓν βούλευμα τὰς πολλὰς [c] χέρας
νικᾷ· σὺν ὄχλῳ δ' ἀμαθία πλέον κακόν.

6 [a] Εὐριπίδου Αἰόλῳ.

Βραχύ τοι σθένος ἀνδρὸς, 360
ἀλλὰ [b] ποικιλίαι πραπίδων.

7 [a] Τοῦ αὐτοῦ Βελλεροφόντῃ.

Ἀεὶ γὰρ ἄνδρα σκαιὸν, ἰσχυρὸν φύσει,
ἧσσον [b] δέδοικα τἀσθενοῦς τε καὶ σοφοῦ.

8 [a] Εὐριπίδου Παλαμήδει.

Στρατηλάται [b] τἂν μυρίοι γενοίμεθα,
σοφὸς δ' ἂν εἷς τις ἢ δύ' ἐν μακρῷ χρόνῳ.

9 [a] Εὐριπίδου Ῥήσῳ.

Εἴθ' ἦσθ' ἀνὴρ [b] εὔβουλος ὡς δρᾶσαι χερί.
ἀλλ' οὐ γὰρ αὐτὸς πάντ' ἐπίστασθαι χερὶ
πέφυκεν· ἄλλῳ δ' ἄλλο πρόσκειται γέρας·
σὲ μὲν μάχεσθαι, τοὺς δὲ βουλεύειν καλῶς.

10 [a] Εὐριπίδης Ἀρχελάῳ.

Ὀλίγον ἄλκιμον δόρυ
κρεῖσσον [b] στρατηγοῦ μυρίου στρατεύματος.

γρ. ἓν
[c] εὐβούλευμα] εὐβούλευμα sic A. ἓν β. B.

[d] χέρας] χεῖρας A. Vide Valckenærii Diatr. Euripid. p. 78.

6.

[a] Sic A. Scil. Fr. 9. Deest lemma Trinc.

[b] ποικιλίαι] ποικιλίαις πραπίδων δαμᾷ φῦλα πόντου χθονίων τ' ἀερίων τε παιδεύματα. Grotius in ms. Videatur Valckenærii Diatr. Eurip. p. 146.

7.

[a] Sic A. Scil. Fr. 11. Deest lemma Trinc.

[b] δέδοικα τἀσθενοῦς] δέδοικα σθενοῦς A.

8.

[a] Sic A. Scil. Fr. 1. Deest lemma Trinc.

[b] δ' ἂν] τἂν A. Voss. τ' ἂν Tr.

9.

[a] Sic A. Scil. v. 105. Deest lemma Trinc.

[b] σύμβουλος] εὔβουλος A. B. Voss. Ars. Gesn. marg.

[c] ἐπίστασθαι ἀνὴρ] ἐπίστασθαι χερὶ A. Voss. N. Trinc. ἐπίστασθαι βροτῶν edd. Euripidis.

10.

[a] Sic A. Scil. Fr. 10. Deest lemma Trinc.

[a] στρατηγοῦ] στρατηγῷ Grotius.

11 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ἔχει δὲ καὶ τοῦτ' οὐχὶ μικρὸν εὐγενὴς
ἀνήρ, στρατηγῶν εὐκλεᾶ τ' ἔχων φάτιν.

12 [a] Εὐριπίδου Ἐρεχθεῖ.

Ὡς σὺν θεοῖσι τοὺς σοφοὺς κινεῖν δόρυ
στρατηλάτας χρή, τῶν θεῶν δὲ μὴ βίᾳ.

13 [a] Ἐν ταυτῷ.

Οὐδεὶς στρατεύσας [b] ἄδικα σῶς ἦλθεν πάλιν.

14 [a] Εὐριπίδου.

Μισῶ δ' [b] ὅτ' ἄν τις καὶ χθονὸς στρατηλάτης
μὴ πᾶσι [c] πάντων [d] προσφέρῃ μειλίγματα.
τοῖς πράγμασιν γὰρ οὐχὶ θυμοῦσθαι χρεών·
[e] μέλει [f] γὰρ αὐτοῖς οὐδέν· [g] ἀλλ' οὑντυγχάνων,
τὰ πράγματ' ὀρθῶς ἢν τιθῇ, [h] πράσσει καλῶς.

15 [a] Εὐριπίδου Τημένῳ.

Τὸ δὲ στρατηγεῖν [b] τοῦτ' ἐγὼ κρίνω καλῶς,
γνῶναι τὸν ἐχθρὸν [c] ᾗ μάλισθ' ἁλώσιμος.

11.

[a] Sic A. Scil. Fr. 11. Deest lemma Trinc.

12.

[a] Sic A. Scil. Fr. 5. Deest lemma Trinc.

13.

[a] Sic A. Scil. Fr. 4. Deest locus Trinc.

[b] ἄδικα, σῶς] ἀδίκα(ςν) A. ἀδικάστως B.

14.

[a] Sic A. Scil. Fr. Bellerophont. 24. Deest lemma Trinc.

[b] ὅταν καὶ] ὅταν τις καὶ A. Trinc. ib. Addidimus τις ob versum. Illud autem καὶ heic valet *præsertim*. Grotius.

[c] πάντων] πάντως Gesn. marg. πάντα dedit Grotius.

[d] προσφέρῃ] προφέρῃ A.

[e] μέλλει] μέλει Gesn. marg.

[f] οὐδὲν γὰρ] οὐδὲν om. A. Trinc.

[g] ἀλλ' οὖν τυγχάνον] ἄλλου τυγχάνων A. μέλει γὰρ αὐτοῖς οὐδὲν, ἀλλ' ὁ τυγχάνων Plutarch. II. p. 467. A. Videatur Stobæus infra CVIII. 20. ἀλλ' ἐπὶ τυγχάνον edidit Grotius. ἀλλ' οὑντυγχάνων Valckenærius ad Euripid. Phœn. 221.

[h] πράσσει] πράσσῃ Trinc.

15.

[a] Sic fere A. ubi Τιμένῳ. *Timeno* Gesner. *Temeno* Grotius. v. Fr. Temenid. 9.

[b] τοῦτ'] τοῦτο τ' Trinc.

[c] ᾗ] εἰ A. Voss. Trinc.

16 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ἄρξεις [b] ἄρ' [c] οὕτω· χρὴ δὲ τὸν στρατηλάτην
ὁμῶς δίκαιον ὄντα ποιμαίνειν στρατόν.

17 [a] Εὐριπίδου Τημενίσι.

Ῥώμη δέ τ' ἀμαθὴς πολλάκις τίκτει βλάβην.

18 [a] Εὐριπίδου Φοινίσσαις.

Ἀσφαλὴς [b] γὰρ ἔστ' ἀμείνων ἢ θρασὺς στρατηλάτης.

19 [a] Εὐριπίδου ἐκ Βελλεροφόντου.

[b] Νείκη γὰρ ἀνδρῶν φόνια καὶ μάχας χερῶν
δόλοισι [c] κλέπτειν· τῆς δ' ἀληθείας ὁδὸς
φαύλη τίς ἐστι· ψεύδεσιν δ' Ἄρης φίλος.

20 [a] Εὐριπίδου Ἑλένης.

[b] Εἴσει· τὸ τολμᾶν δ' ἀδύνατ' ἀνδρὸς οὐ σοφοῦ.

21 [a] Σοφοκλέους Ἀλεάδων.

Δοκῶ μὲν οὐδείς. ἀλλ' ὅρα μὴ κρεῖσσον ᾖ
καὶ δυσσεβοῦντα τῶν ἐναντίων κρατεῖν,
ἢ δοῦλον αὐτὸν ὄντα τῶν πέλας κλύειν.

22 [a] Εὐριπίδου Ἰνοῖ.

Τὴν δ' εὐσέβειαν εὐτυχοῦσι μὲν καλὸν
τιμᾶν· [b] ὅπου δὲ πολεμίους [c] δρᾶσαι κακῶς

16.

[a] Sic A. Scil. Fr. 10. Deest lemma Trinc.

[b] ἄρ'] γὰρ A. B.

[c] οὕτω] οὗτος Voss.

17.

[a] Sic A. Scil. Fr. 1. Deest lemma Trinc.

18.

[a] Sic A. Scil. v. 602. Deest lemma Trinc.

[b] γὰρ] om. A.

19.

[a] Sic A. Scil. Fr. 12. Deest lemma Trinc.

[b] νίκη] νείκη Musgravius. φόνια pro φονία Grotius.

[c] κλέπτει] κλέπτειν A. Trinc. Mox τοῖς δ' pro τῆσδ' Trinc.

20.

[a] Sic A. Scil. v. 817. Deest lemma Trinc.

[b] ἴσθι τὸ τολμᾶν ἀδύνατ'] ἴσθι τὸ τολμᾶν δ' ἀδύνατ' A. τολμᾶν δ' ἀδύνατον B. Reponendum εἴσει pro ἴσθι.

21.

[a] Sic fere A. ubi Ἀλαιάδων. v. fr. Aload. 8. Ἀλευάδων B. Deest locus Trinc.

22.

[a] Sic A. Οἴνοι Voss. Sed reponendum Ἴωνι cum Grotio, ubi cf. v. 1045.

[b] ὅπου] ὅταν Gesn. marg.

[c] δρᾶσαι] δράσας A.

[d] θέλῃ τις, οὐδεὶς ἐμποδὼν κεῖται νόμος.

23 [a] Μενάνδρου.

Ὅστις στρατηγεῖ μὴ στρατιώτης γενόμενος,
οὗτος ἑκατόμβην ἐξάγει τοῖς πολεμίοις.

24 [a] Θουκυδίδου Ἱστορίας ᾱ δημηγορίας Κορινθίων.

Ἐκ πολέμου μὲν γὰρ εἰρήνη [b] μᾶλλον βεβαιοῦται· ἀφ' ἡσυχίας δὲ μὴ πολεμῆσαι οὐχ ὁμοίως ἀκίνδυνον.

25 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας δ̄ δημηγορίας Δημοσθένους.

Ὅσα γὰρ ἐς ἀνάγκην ἀφῖκται ὥσπερ τόδε, [b] λογισμὸν ἥκιστα [c] ἐνδεχόμενα κινδύνου τοῦ ταχίστου προσδεῖται.

26 [a] Ξενοφῶντος ἐν β̄ τῆς Κύρου ἀναβάσεως.

Καὶ λέγειν αὐτὸν ἔφασαν, ὡς δέοι τὸν στρατιώτην φοβεῖσθαι μᾶλλον τὸν ἄρχοντα ἢ τοὺς πολεμίους, εἰ μέλλοι ἢ [b] φύλακας φυλάξειν, ἢ φίλων ἀφέξεσθαι, ἢ ἀπροφασίστως ἰέναι [c] εἰς τοὺς πολεμίους.

27 [a] Ξενοφῶντος ἐν γ̄ Ἀπομνημονευμάτων.

Ἀκούσας δέ ποτε [b] Διονυσόδωρον εἰς τὴν πόλιν ἥκειν ἐπαγ- 361
γελλόμενον στρατηγεῖν διδάξειν, ἔλεγε πρός τινα τῶν συνόντων, ὃν ᾔσθάνετο βουλόμενον τῆς τιμῆς ταύτης ἐν τῇ πόλει τυχεῖν, [c] ἵνα [d] κἂν ἡμῶν τις ἢ ταξιαρχῇ, ἢ [e] λοχαγήσοι, ἐπιστημονέστεροι τῶν πολεμικῶν ὦμεν, λέξον ἡμῖν πόθεν ἤρξατό σε διδάσκειν τὴν στρατηγίαν. Καὶ ὅς, Ἐκ τοῦ αὐτοῦ, ἔφη, εἰς ὅπερ καὶ ἐτελεύτα· τὰ γὰρ τακτικὰ ἐμέ γε,

[d] θέλῃ] θέλει A. Voss.

23.

[a] Sic A. Cleric. p. 224. Deest lemma Trinc.

24.

[a] Sic A. Scil. I. 124.
[b] μᾶλλον om. B.

25.

[a] Sic A. Scil. IV. 10.
[b] λογισμῶν] λογισμὸν A. B.
[c] ἐνδεχόμενα] ἐκδεχόμενα A. Mox αἰσχίστου Trinc. pro ταχίστου.

26.

[a] Sic A. Scil. II. 6, 10. Simpl. Ξενοφῶντος Trinc.
[b] φύλακας] φυλακὰς B.
[c] εἰς τοὺς] εἰς om. Trinc.

27.

[a] Sic A. Trinc. Scil. III. 1.
[b] διονυσόδωρον] διονυσίδωρον B.
[c] ἵνα] Interseruntur hic plura apud Xenophontem. GESNER.
[d] καὶ ἐὰν] κἂν A. Trinc.
[e] λοχαγήσοι] λοχαγήσῃ B.

καὶ ἄλλ' οὐδὲν ἐδίδαξεν. Ἀλλὰ μὴν, ἔφη ὁ Σωκράτης, τοῦτό γε πολλοστὸν μέρος ἐστὶ στρατηγίας· καὶ γὰρ παρασκευαστικὸν τῶν εἰς πόλεμον τὸν στρατηγὸν εἶναι χρὴ, καὶ ποριστικὸν τῶν ἐπιτηδείων τοῖς στρατιώταις, καὶ μηχανικὸν, καὶ ἐργαστικὸν, καὶ ἐπιμελῆ, καὶ καρτερικὸν, καὶ ἀγχίνουν, καὶ φιλόφρονά τε καὶ ὠμὸν, καὶ ἁπλοῦν καὶ ἐπίβουλον, καὶ φυλακτικόν τε καὶ κλέπτην, καὶ προετικὸν καὶ ἅρπαγα, καὶ φιλόδωρον καὶ πλεονέκτην, καὶ ἀσφαλῆ καὶ ἐπιθετικὸν, καὶ ἄλλα πολλὰ καὶ φύσει καὶ ἐπιστήμῃ [f]δεῖ τὸν εὖ στρατηγήσοντα ἔχειν. Καλὸν δὲ καὶ τὸ τακτικὸν εἶναι· πολὺ γὰρ διαφέρει στράτευμα τεταγμένον [g]ἀτάκτου· ὥσπερ λίθοι τε καὶ πλίνθοι καὶ ξύλα καὶ κέραμος, ἀτάκτως μὲν ἐρριμμένα οὐδὲν χρήσιμά ἐστιν· ἐπειδ' ἂν δὲ ταχθῇ [h]κάτω μὲν καὶ [i]ἐπιπολῆς τὰ μήτε σηπόμενα μήτε τηκόμενα, οἵ τε λίθοι καὶ ὁ κέραμος, ἐν μέσῳ δὲ αἵ τε πλίνθοι καὶ τὰ ξύλα, ὥσπερ ἐν οἰκοδομίᾳ συντίθεται, τότε γίγνεται πολλοῦ ἄξιον κτῆμα οἰκία. Ἀλλὰ πάνυ, ἔφη [k]ὁ νεανίσκος, ὦ Σώκρατες, ὅμοιον εἴρηκας· καὶ γὰρ ἐν τῷ πολέμῳ [l]τούς τε πρώτους ἀρίστους δεῖ τάττειν καὶ τοὺς τελευταίους, ἐν μέσῳ δὲ τοὺς χείρους, ἵνα ὑπὸ μὲν τῶν ἄγωνται, ὑπὸ δὲ τῶν [m]ὠθῶνται. Εἰ μὲν τοίνυν, ἔφη, καὶ διαγιγνώσκειν σε [n]τοὺς ἀγαθοὺς καὶ τοὺς κακοὺς ἐδίδαξεν· εἰ δὲ μὴ, τί σοι ὄφελος ὧν ἔμαθες; οὐδὲ γὰρ [o]εἴ σε ἀργύριον ἐκέλευσε, πρῶτον μὲν καὶ τελευταῖον τὸ κάλλιστον τάττειν, μέσον δὲ τὸ χείριστον, μὴ διδάξας διαγιγνώσκειν τό τε καλὸν καὶ τὸ κίβδηλον, οὐδὲν ἄν σοι ὄφελος ἦν. Ἀλλὰ μὰ Δί', ἔφη, οὐκ [p]ἐδίδαξεν, ὥστε αὐτοὺς ἂν ἡμᾶς

[f] ἃ δεῖ] ἃ om. A. Trinc.
[g] ἀτάκτου] τοῦ ἀτάκτου A.
[h] κάτω] καὶ τῶ Trinc.
[i] ἐπιπολῆς] ἐπιπολῇ A. Trinc. ἐπὶ πολλῆς B.
[k] ὁ νεανίσκος] νεανίσκε A. ubi ὥσπερ usque ad χείρους leg. in marg.
[l] τούς τε] τε om. Trinc.
[m] ὠθῶνται] ὤθωνται B.
[n] καὶ τοὺς] τοὺς ἀγαθοὺς καὶ τοὺς A. Trinc.
[o] εἴ σε] εἴ γε A. εἴ τε B.
[p] ἐδίδαξεν] ἐδίδαξας Trinc.

δέοι τούς τε ἀγαθοὺς καὶ τοὺς κακοὺς κρίνειν. Τί οὖν [q] σὺ σκοποῦμεν, ἔφη, πῶς ἂν [r] αὐτῶν μὴ [s] διαμάρτοιμεν; Βούλομαι, ἔφη ὁ νεανίσκος. Οὐκ οὖν, ἔφη, εἰ μὲν ἀργύριον δέοι ἁρπάζειν, τοὺς φιλαργυρωτάτους πρώτους καθιστάντες ὀρθῶς ἂν τάττοιμεν; Ἔμοιγε δοκεῖ. Τί [t] δαὶ τοὺς κινδυνεύειν μέλλοντας, ἆρα τοὺς φιλοτιμοτάτους προτακτέον; Οὗτοι γοῦν εἰσὶν, ἔφη, οἱ ἕνεκα ἐπαίνου κινδυνεύειν ἐθέλοντες· οὐ τοίνυν οὗτοί γε ἄδηλοι, ἀλλ' ἐπιφανεῖς πανταχοῦ ὄντες εὐαίρετοι ἂν εἶεν. [u] Αὐτὰρ, ἔφη, πότερά σε τάττειν μόνον [w] ἐδίδαξεν, ἢ καὶ ὅποι, καὶ ὅπως χρηστέον ἑκάστῳ τῶν [x] ταγμάτων; Οὐ πάνυ, ἔφη. Καὶ μὴν πολλά γ' ἐστὶ, πρὸς ἃ [y] οὔτε ἄγειν, οὔτε τάττειν [z] ὡσαύτως προσήκει. Μὰ Δί', ἔφη, οὐ διεσαφήνιζεν.

28 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ἐντυχὼν δέ ποτε στρατηγεῖν ᾑρημένῳ τῳ, Τοῦ [b] ἕνεκα, ἔφη, 362 Ὅμηρον οἴει τὸν Ἀγαμέμνονα προσαγορεῦσαι ποιμένα λαῶν; ἆρά γε ὅτι ὥσπερ τὸν ποιμένα δεῖ ἐπιμελεῖσθαι ὅπως σῶαί τε ἔσονται αἱ οἶες, καὶ τὰ ἐπιτήδεια ἕξουσι, καὶ οὗ [c] ἕνεκα τρέφονται, τοῦτο ἔσται· [d] οὕτω καὶ τὸν στρατηγὸν ἐπιμελεῖσθαι δεῖ ὅπως σῶοί τε οἱ στρατιῶται ἔσονται, καὶ τὰ ἐπιτήδεια ἕξουσι, καὶ οὗ ἕνεκα στρατεύονται, τοῦτο ἔσται; στρατεύονται δὲ, ἵνα κρατοῦντες τῶν πολεμίων εὐδαιμονέστεροι ὦσιν· ἢ τί δή ποτε οὕτως ἐπῄνεσε τὸν Ἀγαμέμνονα εἰπὼν,

ἀμφότερον βασιλεύς τ' ἀγαθὸς κρατερός τ' αἰχμητής;

[q] οὐ om. A. B.
[r] αὐτῶν] αὐτοὺς B.
[s] διαμάρτοιμεν] διαμάρτημεν A.
[t] δαὶ] γε A.
[u] αὐτὰρ] ἄταρ A.
[w] ἐδίδαξεν] ἐδίδαξαν Trinc.
[x] ταγμάτων] τακτέων Gesn. marg.
[y] οὔτε ἄγειν οὔτε τάττειν] οὔτε τάττειν οὔτε ἄγειν A.
[z] ὡσαύτως] προσαύτως A.

28.

[a] Sic A. Trinc. Scil. III. 2.
[b] ἕνεκεν ἔφη] ἕνεκα A. Trinc.
[c] ἕνεκεν στρατεύονται] ἕνεκα τρέφονται A. B. καὶ οὗ ἕ.— ἐπιτήδεια ἕξουσι om. Trinc.
[d] οὕτω] οὕτως B.

[e]ἆρα γε ὅτι αἰχμητής [f]τε [καὶ] κρατερὸς ἂν εἴη, [g]οὐκ εἰ μόνος αὐτὸς εὖ ἀγωνίζοιτο πρὸς τοὺς πολεμίους, ἀλλ' εἰ καὶ παντὶ τῷ στρατοπέδῳ τούτου αἴτιος εἴη; καὶ βασιλεὺς ἀγαθὸς, οὐκ εἰ μόνον τοῦ ἑαυτοῦ βίου καλῶς προεστήκοι, ἀλλ' εἰ καὶ ὧν [h]βασιλεύει, τούτοις εὐδαιμονίας αἴτιος εἴη; Καὶ γὰρ βασιλεὺς αἱρεῖται οὐχ ἵνα ἑαυτοῦ καλῶς ἐπιμελῆται, ἀλλ' ἵνα καὶ οἱ ἑλόμενοι διὰ τοῦτον εὖ πράττωσιν· καὶ στρατεύονται δὲ πάντες ἵνα ὁ βίος αὐτοῖς ὡς βέλτιστος [i]ᾖ, καὶ στρατηγοὺς αἱροῦνται τούτου ἕνεκα, ἵνα πρὸς τοῦτο αὐτοῖς ἡγεμόνες ὦσιν. Δεῖ οὖν τὸν στρατηγοῦντα τοῦτο παρασκευάζειν τοῖς ἑλομένοις αὐτὸν στρατηγόν· καὶ γὰρ οὔτε κάλλιον τούτου ἄλλο ῥᾴδιον εὑρεῖν, οὔτε αἴσχιον τοῦ ἐναντίου. Καὶ οὕτως ἐπισκοπῶν τίς εἴη ἀγαθοῦ ἡγεμόνος [k]ἀρετὴ, τὰ μὲν ἄλλα περιῄρει, [l]κατέλειπε δὲ τὸ εὐδαίμονας ποιεῖν ὧν ἂν ἡγῆται.

29 [a]Ἐν ταυτῷ.

Καὶ ἱππαρχεῖν δέ τινι ᾑρημένῳ οἶδά ποτε [b]αὐτὸν τοιάδε διαλεχθέντα. [c]Ἡ ἀρχή που, ἔφη, ἐφ' ἧς ᾕρησαι, [d]ἵππων τε καὶ ἀμβατῶν ἐστιν. Ἔστι γὰρ οὖν, ἔφη. Ἴθι δὴ λέξον ἡμῖν τοῦτο πρῶτον, ὅπως διανοῇ τοὺς ἵππους βελτίους ποιῆσαι; Καὶ ὃς, Ἀλλὰ τοῦτο μὲν, ἔφη, οὐκ ἐμὸν [e]εἶναι τὸ ἔργον οἶμαι, ἀλλὰ ἰδίᾳ ἕκαστον δεῖν τοῦ ἑαυτοῦ [f]ἵππου ἐπιμελεῖσθαι. Ἐὰν οὖν, ἔφη ὁ Σωκράτης, παρέχωνταί σοι τοὺς ἵππους οἱ μὲν οὕτω [g]κακόποδας ἢ κακοσκελεῖς ἢ ἀσθενεῖς, οἱ δὲ οὕτως ἀτρόφους ὥστε μὴ δύνασθαι ἀκολου-

[e] ἆρα ὅτι] ἆρα γε ὅτι A.
[f] τε καὶ] καὶ om. A. Trinc.
[g] οὐκ] ἀλλ' οὐκ A. B.
[h] βασιλεύοι] βασιλεύει A. Trinc.
[i] εἴη] ᾖ A. Mox τούτους Trinc.
[k] ἀρετὴ] ἀρετῇ B.
[l] κατέλιπε] κατέλειπε Trinc.

29.

[a] Sic A. Scil. III. 3.
[b] αὐτὸν] αὐτοῦ B.
[c] ἡ ἀρχὴ] In Græco Xenophonte hic 13 versus interponuntur. GESNER.
[d] ἱππέων] ἵππων A. Trinc.
[e] εἶναι τὸ ἔργον οἶμαι] οἶμαι τὸ ἔργον εἶναι A.
[f] ἵππου] ἔργου Gesn. marg.
[g] κακόποδας] κακόποδες Trinc.

θεῖν, οἱ δὲ οὕτως ἀναγώγους ὥστε μὴ μένειν ὅπου ἂν σὺ τάξῃς, οἱ δὲ οὕτω λακτιστὰς ὥστε μηδὲ τάξαι δυνατὸν εἶναι, τί σοι τοῦ ἱππικοῦ ὄφελος ἔσται; ἢ πῶς δυνήσῃ τοιούτων ἡγούμενος ἀγαθόν τι ποιῆσαι τὴν πόλιν; [[h]Καὶ ὅς,] Ἀλλὰ καλῶς [i]τε λέγεις, ἔφη, καὶ πειράσομαι [k]τῶν ἵππων εἰς τὸ δυνατὸν ἐπιμελεῖσθαι. Τί δὲ, τοὺς ἱππέας οὐκ ἐπιχειρήσεις, ἔφη, βελτίονας ποιῆσαι; Ἔγωγ', ἔφη. [l]Οὐκ οὖν πρῶτον μὲν [m]ἀναβατικωτέρους ἐπὶ τοὺς ἵππους ποιήσεις; Δεῖ γοῦν, ἔφη, καὶ γάρ εἴ τις αὐτῶν καταπέσοι, μᾶλλον ἂν οὕτω σώζοιτο. Τί γάρ; ἐάν που κινδυνεύειν δέῃ, πότερον [n]ἐπάγειν τοὺς πολεμίους ἐπὶ τὴν ἄμμον κελεύσεις, [o]ἔνθα περ εἰώθατε ἱππεύειν, ἢ πειράσῃ τὰς μελέτας ἐν [p]τοιούτοις ποιεῖσθαι χωρίοις, ἐν [q]οἵοις περ οἱ πόλεμοι γίγνονται; Βέλτιον [r]γοῦν, ἔφη, καὶ τοῦτο. [s]Τί δέ; τοῦ βάλλειν [t]ὡς πλείστους 363
ἀπὸ τῶν ἵππων ἐπιμέλειάν τινα [u]ποιήσει; Ἔφη, καὶ τοῦτο. Θήγειν δὲ τὰς ψυχὰς τῶν ἱππέων, καὶ ἐξοργίζειν πρὸς τοὺς πολεμίους, ἅπερ ἀλκιμωτέρους [w]ποιεῖ, διανενόησαι; [[x]Εἰ δὲ μὴ,] ἀλλὰ νῦν γε πειράσομαι, ἔφη. Ὅπως δέ σοι πείθονται οἱ ἱππεῖς, πεφρόντικάς [y]τι; ἄνευ γὰρ δὴ τούτου, οὔτε ἵππων οὔτε ἱππέων ἀγαθῶν καὶ ἀλκίμων οὐδὲν ὄφελος. Ἀληθῆ λέγεις, ἔφη. Ἀλλὰ πῶς ἄν τις μάλιστα, ἔφη, ὦ Σώκρατες, ἐπὶ τοῦτο αὐτοὺς προτρέψαιτο; Ἐκεῖνο μὲν δήπου οἶσθα, ὅτι ἐν παντὶ πράγματι οἱ ἄνθρωποι

[h] καὶ ὃς om. A. Trinc.
[i] γε] τε A.
[k] τῶν] καὶ τῶν A.
[l] (οὐκ οὖν—ἔφη)] Parenthesi inclusa non sunt in Halensi Xenophonte. GESNER.
[m] ἀναβατικωτέρους] ἐναβατικωτέρους A. ἀμβατικωτέρους B.
[n] ἐπάγειν] ἀπάγειν Trinc.
[o] ἔνθα] ἔνθα περ A. N.
[p] τοιούτοις] τούτοις N.
[q] οἵοισπερ] οἷσπερ A.
[r] οὖν] γοῦν Trinc.
[s] (τί δὲ—τοῦτο)] Inclusa parenthesi non sunt in Halensi. GESNER.
[t] τοὺς] ὡς A. B.
[u] ποιήσεις] ποιήσῃ A. ποιήσει Tr.
[w] ποιεῖν] ποιεῖ A. Trinc.
[x] εἰ δὲ μὴ om. A. Trinc. Mox γε om. Trinc.
[y] τι] τοι A.

τούτοις μάλιστα ἐθέλουσι πείθεσθαι, οὓς ἂν [z] ἡγῶνται βελτίστους εἶναι· καὶ γὰρ ἐν νόσῳ, ὃν ἂν ἡγῶνται ἰατρικώτατον εἶναι, τούτῳ μάλιστα πείθονται· καὶ ἐν πλοίῳ οἱ πλέοντες, ὃν ἂν κυβερνητικώτατον· καὶ ἐν γεωργίᾳ, ὃν ἂν γεωργικώτατον. Καὶ μάλα, ἔφη. Οὐκ οὖν [a] εἰκὸς, ἔφη, καὶ ἐν ἱππικῇ ὃς ἂν μάλιστα εἰδὼς φαίνηται ἃ δεῖ ποιεῖν, τούτῳ μάλιστα ἐθέλειν τοὺς ἄλλους πείθεσθαι; Ἐὰν οὖν, ἔφη, ἐγὼ, ὦ Σώκρατες, βέλτιστος ὢν [b] αὐτῶν δῆλος ὦ, ἀρκέσει μοι τοῦτο εἰς τὸ πείθεσθαι αὐτοὺς ἐμοί; Ἐάν γε πρὸς τοῦτο, ἔφη, διδάξῃς αὐτοὺς, ὡς τὸ πείθεσθαί σοι κάλλιόν τε καὶ σωτηριώτερον αὐτοῖς ἔσται. Πῶς οὖν, ἔφη, τοῦτο διδάξω; Πολὺ νὴ Δί', ἔφη, ῥᾷον, ἢ εἴ σε δέοι διδάσκειν, ὡς τὰ κακὰ τῶν ἀγαθῶν ἀμείνω καὶ λυσιτελέστερά ἐστι. Λέγεις, ἔφη, σὺ τὸν ἵππαρχον πρὸς τοῖς ἄλλοις ἐπιμελεῖσθαι δεῖν καὶ τοῦ δύνασθαι λέγειν; Σὺ δ' ᾤου, ἔφη, χρῆναι σιωπῇ ἱππαρχεῖν; ἢ οὐκ ἐντεθύμησαι, ὅτι ὅσα τε νόμῳ μεμαθήκαμεν κάλλιστα ὄντα, δι' ὧν γε ζῆν ἐπιστάμεθα, ταῦτα πάντα [c] διὰ λόγου ἐμάθομεν; καὶ εἴ τι ἄλλο [d] καλὸν μανθάνει τις μάθημα, διὰ λόγου μανθάνει· καὶ οἱ ἄριστα διδάσκοντες, μάλιστα λόγῳ χρῶνται· καὶ οἱ τὰ σπουδαιότατα [e] μάλιστα ἐπιστάμενοι, κάλλιστα [f] διαλέγονται.

30 [a] Ἐν ταυτῷ.

Καὶ ὁ Νικομαχίδης, Μὰ Δί', ἔφη, ὦ Σώκρατες, οὐκ ἄν ποτε ᾤμην ἐγώ σου ἀκοῦσαι, [b] ὡς οἱ ἀγαθοὶ οἰκονόμοι ἀγαθοὶ στρατηγοὶ ἂν εἶεν. Ἴθι δὴ, ἔφη, ἐξετάσωμεν τὰ ἔργα

[z] ἡγῶνται] ἡγήσωνται B.
[a] εἰκὸς] εἰκός τε A. Trinc.
[b] αὐτῶν] αὐτοῦ Trinc.
[c] διὰ λόγου] δι' ὀλίγου N. Trinc. et inf.
[d] καλὸν] κἂν B.
[e] μάλιστα] μάλα A.
[f] διαλέγονται] διδάσκονται Gesn. marg.

30.
[a] Sic A. Scil. III. 4, 7. Deest locus Trinc.
[b] ἀγαθοὶ οἰκονόμοι στρατηγοὶ] οἱ ἀγαθοὶ οἰκονόμοι ἀγαθοὶ στρατηγοὶ A. B.

ἑκατέρου αὐτῶν, ἵνα εἰδῶμεν, πότερον [c] τὰ αὐτά ἐστιν, ἢ διαφέρει τι. Πάνυ γε, ἔφη. [d] Οὐκ οὖν, ἔφη, τὸ μὲν τοὺς ἀρχομένους κατηκόους τε καὶ εὐπειθεῖς [e] ἑαυτοῖς κατασκευάζειν ἀμφοτέρων ἐστὶν ἔργον; Καὶ μάλα ἔφη. Τί δέ; τὸ [f] προστάττειν ἕκαστα τοῖς ἐπιτηδείοις πράττειν; Καὶ τοῦτο, ἔφη. Καὶ μὴν [[g] τὸ] τοὺς κακοὺς κολάζειν, καὶ τοὺς ἀγαθοὺς τιμᾶν, ἀμφοτέροις [h] οἶμαι [i] προσήκειν. Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Τὸ δὲ τοὺς ὑπηκόους εὐμενεῖς ποιεῖσθαι, πῶς [k] οὐκ ἀμφοτέροις; Καὶ τοῦτ', ἔφη. Συμμάχους δὲ καὶ βοηθοὺς προσάγεσθαι δοκεῖ [[l] σοι] συμφέρειν ἀμφοτέροις, ἢ οὔ; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Ἀλλὰ φυλακτικοὺς τῶν ὄντων οὐκ ἀμφοτέρους εἶναι προσήκει περὶ τὰ [m] αὐτῶν ἔργα; Ταῦτα μέν, ἔφη, πάντα ὁμοίως [n] ἀμφοτέρων ἐστίν· ἀλλὰ τὸ μάχεσθαι οὐκέτι ἀμφοτέρων. Ἀλλὰ ἐχθροί γέ τοι ἀμφοτέροις γίγνονται. Καὶ μάλα, ἔφη, τοῦτό γε. Οὐκ οὖν [[o] τὸ] περιγενέσθαι τούτων ἀμφοτέροις συμφέρει; Πάνυ [[p] γε,] ἔφη. Ἀλλ' ἐκεῖνο παριείς, ἂν δέῃ μάχεσθαι, τί ὠφελήσει ἡ οἰκονομική; Ἐνταῦθα δήπου καὶ πλεῖστον, ἔφη. Ὁ γὰρ ἀγαθὸς οἰκονόμος εἰδὼς ὅτι οὐδὲν οὕτω λυσιτελές τε καὶ κερδαλέον ἐστιν ὡς τὸ μαχόμενον τοὺς πολεμίους νικᾶν, οὐδὲ οὕτως ἀλυσιτελές τε καὶ ζημιῶδες ὡς τὸ ἡττᾶσθαι, προθύμως μὲν τὰ πρὸς τὸ νικᾶν συμφέροντα ζητήσει καὶ παρασκευάσεται, ἐπιμελῶς δὲ τὰ πρὸς τὸ ἡττᾶσθαι φέροντα σκέψεται καὶ διασκευάσεται, ἐνεργῶς δ', [q] ἂν τὴν παρασκευὴν ὁρᾷ νικητι-

[c] τὰ αὐτά] ταῦτά B.
[d] ἔφη] οὐκ οὖν ἔφη A. B.
[e] παρασκευάσαι] ἑαυτοῖς κατασκευάζειν A. B.
[f] προστατεῖν ἑκάστους] τὸ προστάπτεον ἕκαστα τοῖς A. προστάττειν ἕκαστα B.
[g] τὸ τοὺς] τὸ om. A. B.
[h] οἴομαι] οἶμαι A. B.
[i] προσήκειν] προσήκει B.
[k] οὐ καλὸν] οὐκ A. B. i. e. προσήκει.
[l] σοι] om. A. B.
[m] αὐτὰ] αὐτῶν A. B.
[n] ἀμφοτέρων] καὶ ἀμφοτέρων A. B.
[o] τὸ om. A. B.
[p] γε om. A. B. Reliqua post ἔφη accedunt ex A. B. ἐκείνῳ A.
[q] αὐτὴν A. B.

κὴν οὖσαν, μαχεῖται· οὐχ ἥκιστα δὲ τούτων, ἐὰν ἀπαράσκευος ᾖ, φυλάξεται συνάπτειν μάχην. Μὴ καταφρόνει [r] εὖ, ἔφη, ὦ Νικομαχίδη, τῶν οἰκονομικῶν ἀνδρῶν· ἡ γὰρ τῶν ἰδίων ἐπιμέλεια πλήθει μόνον διαφέρει τῆς τῶν κοινῶν, τὰ δὲ ἄλλα παραπλήσια ἔχει.

31 [a] Ἡροδότου ἱστορίας ζ.

Ὁ δὲ [b] Ἀρτάβανος ἀμείβετο λέγων· Ὦ βασιλεῦ, οὔτε 364
στρατὸν [c] τοῦτον, ὅστις γε σύνεσιν [d] ἔχει, μέμφοιτ' ἄν, οὔτε τῶν [e] νεῶν τὸ πλῆθος. [f] Ἤν τε πλεῦνας συλλέξῃς, τὰ δύο [g] τοι ταῦτα λέγω πολλῷ ἔτι πολεμιώτερα γίνονται· τὰ δὲ δύο ταῦτα ἔστι γῆ τε καὶ θάλασσα· οὔτε γὰρ τῆς θαλάσσης ἔστι λιμὴν τοσοῦτος [[h] οὐδαμόθι, ὡς ἐγὼ εἰκάζω,] ὅστις ἐγειρομένου χειμῶνος δεξάμενος σεῦ τοῦτο [i] τὸ ναυτικὸν, φερέγγυος ἔσται διασῶσαι τὰς [k] νέας· καίτοι [l] οὐκὶ ἕνα αὐτὸν δεῖ εἶναι τὸν λιμένα, ἀλλὰ παρὰ πᾶσαν τὴν ἤπειρον παρ' ἣν [m] δὴ κομίεαι· οὐκ ὧν δὴ ἐόντων τῶν λιμένων ὑποδεξίων, μάθε ὅτι αἱ συμφοραὶ [n] τῶν ἀνθρώπων ἄρχουσι, καὶ οὐκὶ ἄνθρωποι τῶν [o] συμφορέων· καὶ δὴ τῶν δύο τοι τοῦ ἑτέρου εἰρημένου, τὸ ἕτερον ἔρχομαι ἐρέων· γῆ δὲ πολεμίη τῇδέ τοι καθίσταται, εἰ [p] θέλει τοι μηδὲν [q] ἀντίξοον καταστῆναι, τοσούτῳ τοι γίνεται πολεμιωτέρη, ὅσῳ ἂν προβαίνῃς [r] ἑκατέρω, τὸ πρόσω αἰεὶ [s] κλεπτόμενος· [t] εὐπρηξίης δὲ οὐκ ἔστιν ἀνθρώ-

[r] οὖν B. Videtur l. σύ.

31.

[a] Sic A. Scil. VII. 49.

[b] ἀρτάβαζος] ἀρταβάζ i. e. ἀρταβάνης A ἀρτάβανος B.

[c] τοῦτον] τὸν Trinc.

[d] ἔχοι] ἔχει A.

[e] νέων] νεῶν B.

[f] ἢν δὲ] ἤν τε A. Trinc.

[g] ταῦτα] τοι ταῦτα A. B.

[h] οὐδαμόθι ὡς ἐγὼ εἰκάζω om. A. Trinc. οὐδαμόθεν ὡς ἐ. κ. B.

[i] τὸ om. A. τὸν Trinc. εὖ pro σεῦ A.

[k] νέας] νῆας A.

[l] οὐκὶ] οὐχὶ A.

[m] δὴ κομίεαι] διήκωμι A. ἤδη κομίζεαι B. κομίζεαι Gesn. marg.

[n] τῶν] τοι A. B.

[o] συμφορῶν] συμφορέων A.

[p] θέλει τοι] θέλοι τι A. τῇ om. Trinc.

[q] ἀντίζοον] ἀντίξοον A. B. Gesn. marg.

[r] ἑκατέρω] ἑκαστέρω B.

[s] βλεπόμενος] κλεπτόμενος A. B. Gesn. marg.

[t] εὐπραξίης γὰρ] εὐπρηξίης δὲ A.

ποις οὐδὲ μίη πληθώρη· καὶ δή τοι ὡς οὐδενὸς ἐναντιευμένου, λέγω τὴν χώραν πλεῦνα ἐν πλεῦνι χρόνῳ γιγνομένην, λιμὸν τέξεσθαι· ἀνὴρ δὲ οὕτως ἂν εἴη ἄριστος, εἰ βουλευόμενος μὲν [u] ἀρρωδέοι πᾶν ἐπιλεγόμενος πείσεσθαι χρῆμα, ἐν δὲ τῷ ἔργῳ θρασὺς εἴη.

32 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας δ̄ δημηγορίας Ἑρμοκράτους.

Πέφυκε γὰρ τὸ ἀνθρώπειον διὰ παντὸς ἄρχειν μὲν τοῦ εἴκοντος, φυλάσσεσθαι δὲ τὸ ἐπιόν.

33 [a] Δημοσθένους περὶ τῆς Ῥοδίων Ἐλευθερίας.

Οὐ γὰρ ὁμοίως οὐδεὶς [b] ὑπέρ τε τοῦ πλεονεκτεῖν πολεμήσειεν ἂν καὶ τῶν ἑαυτοῦ, ἀλλ᾽ ὑπὲρ μὲν ὧν ἂν ἐλαττῶνται μέχρι τοῦ δυνατοῦ πάντες πολεμοῦσιν, ὑπὲρ δὲ τοῦ πλεονεκτεῖν οὐχ οὕτως· ἀλλ᾽ ἐφίενται μὲν, ἐάν τις ἐᾷ, ἐὰν δὲ κωλυθῶσιν, οὐδὲν ἠδικηκέναι τοὺς ἐναντιωθέντας ἑαυτοὺς ἡγοῦνται.

34 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας δ̄ δημηγορίας Παγώνδου.

Εἰώθασί τε οἱ ἰσχύος [b] που θράσει τοῖς πέλας, ὥσπερ Ἀθηναῖοι νῦν, ἐπιόντες τὸν μὲν ἡσυχάζοντα καὶ ἐν τῇ [c] ἑαυτοῦ μόνον ἀμυνόμενον ἀδεέστερον ἐπιστρατεύειν, τὸν δὲ καὶ ἔξω ὅρων προαπαντῶντα, καὶ ἢν καιρὸς ᾖ πολέμου ἄρχοντα, ἧσσον ἑτοίμως κατέχειν.

35 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας ε̄ δημηγορίας Βρασίδου.

Καὶ νομίσατε τρία εἶναι τοῦ καλῶς πολεμεῖν· τὸ ἐθέλειν, [b] καὶ [τὸ] αἰσχύνεσθαι, καὶ τοῖς ἄρχουσι πείθεσθαι.

36 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας ε̄ δημηγορίας Ἀθηναίων.

Ἐλπὶς δὲ κινδύνου παραμύθιον οὖσα, τοὺς μὲν ἀπὸ περι-

[u] ὀρρωδέοι] αἰρῷ δέοι A. ἀρρωδέοι Tr. sine μέν. Mox θρασὺς εἴη om. Tr.

32.

[a] Sic A. Scil. IV. 61.

33.

[a] Sic A. Scil. p. 193, 8.

[b] ὑπὲρ τοῦ] ὑπὲρ δὲ τοῦ A. Trinc. Dedi τε cum Demosth.

34.

[a] Sic fere A. ubi Παγωνίδου. *Pagonidæ* Gesner. v. IV. 92.

[b] που] τοῦ Trinc.

[c] ἑαυτοῦ] αὑτῶν A. Trinc.

35.

[a] Sic A. Scil. V. 9.

[b] καὶ τὸ] τὸ om. A. Trinc. Mox καὶ τὸ τοῖς ἄρχ. A. B.

36.

[a] Sic A. Scil. V. 103. Deest lemma Trinc.

ουσίας χρωμένους αὐτῇ, κἂν βλάψῃ, οὐ καθεῖλε· τοῖς δὲ ἐς ἅπαν τὸ ὑπάρχον ἀναρριπτοῦσι, δάπανος γὰρ φύσει, ἅμα τε [b] γιγνώσκεται σφαλέντων, καὶ ἐν ὅτῳ ἔτι φυλάξεταί τις αὐτὴν γνωρισθεῖσαν, οὐκ ἐλλείπει.

37 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας ε̄ δημηγορίας Ἀθηναίων.

Ἀλλ' ἐπιστάμεθα τὰ τῶν πολεμίων ἔστιν ὅτε καινοτέρας τὰς [b] τύχας λαμβάνοντα ἢ κατὰ τὸ διαφέρον ἑκατέρων πλῆθος.

38 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας ε̄ δημηγορίας Βρασίδου.

Τὸ γὰρ ἐπιὸν ὕστερον δεινότερον τοῖς πολεμίοις τοῦ παρόντος καὶ μαχομένου.

39 [a] Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.

[b] Αὐταριάται τοὺς ἀδυνάτους τῶν στρατιωτῶν ἐν ταῖς ὁδοιπορίαις οὐδέποτε ζῶντας ἀπολείπουσι.

40 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

[b] Τριβαλλοὶ τέτταρας φάλαγγας ἐν ταῖς μάχαις ποιοῦν- 365
ται· τὴν [c] πρώτην τῶν ἀσθενῶν, τὴν ἐχομένην τῶν κρατίστων, τὴν τρίτην τῶν ἱππέων, τελευταίαν τὴν τῶν γυναικῶν, αἳ αὐτοὺς εἰς φυγὴν τρεπομένους κωλύουσι βλασφημοῦσαι.

41 [a] Ἀντισθένους.

Ἀντισθένης ἔλεγεν, ὅτι πάντα δεῖ τοῖς πολεμίοις εὔχεσθαι τἀγαθὰ παρεῖναι χωρὶς ἀνδρείας· γίγνεται [b] γὰρ οὕτως οὐ τῶν ἐχόντων, ἀλλὰ τῶν κρατούντων.

[b] γιγνώσκεται] γιγνώσκονται Tr.

37.

[a] Sic A. Scil. V. 102. Deest locus Trinc.

[b] τύχας] ψυχὰς A.

38.

[a] Sic A. Scil. V. 9. Deest lemma Trinc.

39.

[a] Sic A. Ἐκ τῶν ν. ἐθῶν Trinc.

[b] Αὐταρκιάται] Ἀνταριάται A. ἀταριάται Gesn. marg. Αὐταρχίαται Trinc.

40.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] Τριβαλλοὶ] Τριβαλοὶ A.

[c] πρώτην] μίαν Trinc.

41.

[a] Sic A. v. Plutarch. II. p. 336. A. Deest lemma Trinc. et mox om. πάντα.

[b] γὰρ om. Trinc.

42 [a] Δημοσθένους κατὰ Φιλίππου.

Αἰσχρόν ἐστι φενακίζειν ἑαυτοὺς, καὶ ἅπαντα ἀναβαλλομένους, ὅσα ἂν ᾖ δυσχερῆ, πάντων ὑστερεῖν τῶν ἔργων, καὶ μηδὲ τοῦτο δύνασθαι μαθεῖν, ὅτι δεῖ τοὺς ὀρθῶς πολέμῳ χρωμένους οὐκ ἀκολουθεῖν τοῖς πράγμασιν, ἀλλ' αὐτοὺς ἔμπροσθεν εἶναι τῶν πραγμάτων· καὶ τὸν αὐτὸν τρόπον, ὥσπερ τῶν στρατευμάτων ἀξιώσειέ τις ἂν τὸν στρατηγὸν ἡγεῖσθαι, [b] οὕτω καὶ τῶν πραγμάτων τοὺς [c] βουλευομένους ἡγεῖσθαι, [d] ἵν' ἃ ἂν ἐκείνοις δοκῇ, ταῦτα πράττηται, καὶ μὴ τὰ συμβάντα ἀναγκάζωνται διώκειν.

43 [a] Πλουτάρχου ἐκ τοῦ Εἰ πολιτευτέον πρεσβυτέρῳ.

Οἱ ῥήτορες Ἀθήνησιν Ἰφικράτει καὶ Τιμοθέῳ Χάρητα παρέφερον ἰσχυρὸν ὄντα, καὶ τοιοῦτον ἠξίουν εἶναι τὸν στρατηγόν. Ὁ δὲ Τιμόθεος, Οὐ μὰ τοὺς θεοὺς, εἶπεν, ἀλλὰ τοιοῦτον μὲν εἶναι τὸν μέλλοντα τῷ στρατηγῷ τὰ στρώματα κομίζειν, τὸν δὲ στρατηγὸν ἅμα [b] πρόσσω καὶ ὀπίσσω ὁρᾶν.

44 [a] Ἀντιγόνου.

Ἀντίγονος [b] ὑποχωρῶν ποτε τοῖς πολεμίοις ἐπερχομένοις, Οὐκ, ἔφη, φεύγειν, ἀλλὰ διώκειν τὸ συμφέρον ὀπίσω κείμενον.

45 [a] Λαμάχου.

Λάμαχος ἐπετίμα τινὶ τῶν λοχαγῶν ἁμαρτάνοντι· τοῦ δὲ φήσαντος μηκέτι τοῦτο ποιήσειν, Οὐκ ἔστιν, εἶπεν, ἐν πολέμῳ δὶς ἁμαρτάνειν.

42.
[a] Sic A. Scil. p. 51, 10. Simpl. Δημοσθένους Trinc.
[b] οὕτω—ἡγεῖσθαι om. Trinc.
[c] βουλευομένους] βουλομένους B.
[d] ἵν' ἃ ἂν] ἵν' ἂν Trinc.

43.
[a] Sic A. Scil. p. 788. D. Simpl. Πλουτάρχου Trinc.
[b] πρόσω καὶ ὀπίσω] πρόσσω καὶ ὀπίσσω A.

44.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc. v. Plutarch. II. p. 183. D.
[b] ὑποχωρῶν] ὑποχωρὸν Trinc.

45.
[a] Sic A. Deest lemma Trinc. v. Plutarch. II. p. 186. F.

46 [a] Ἀντιγόνου.

Ἀντίγονος ἐρωτηθεὶς, πῶς ἄν τις [b] ἐπιθεῖτο τοῖς πολεμίοις, εἶπεν·

ἢ δόλῳ, ἠὲ βίῃ, ἢ ἀμφαδὸν, ἠὲ κρυφηδόν.

47 [a] Δημάδης.

Δημάδης ὁ ῥήτωρ ληφθεὶς αἰχμάλωτος ἐν τῇ κατὰ Χαιρώνειαν μάχῃ ὑπὸ Φιλίππου καὶ συσταθεὶς αὐτῷ, ἐκείνου παρὰ πότον σεμνυνομένου, Ποῦ ἡ εὐγένεια καὶ ἡ ὑπεροχὴ τῆς Ἀθηναίων πόλεως; Ἔγνως ἂν, ἔφη, ὦ βασιλεῦ, [b] τὴν τῆς πόλεως δύναμιν, εἰ Ἀθηναίων μὲν Φίλιππος, Μακεδόνων δὲ Χάρης ἐστρατήγει.

48 [a] Ἀλεξάνδρου.

Ἀλέξανδρος ἐρωτηθεὶς ὑπό τινος πῶς ἐν ὀλίγῳ χρόνῳ τῆς οἰκουμένης ἐκυρίευσεν, εἶπε·

βουλῇ, καὶ μύθοισι, καὶ [b] ἠπεροπηῒδι τέχνῃ.

49 [a] Ἀγησιλάου.

Ἀγησίλαος ὁ τῶν Λακεδαιμονίων βασιλεὺς [b] ἐρωτηθεὶς, τίνα δεῖ τὸν στρατηγὸν ἔχειν, [c] εἶπε, ὅτι πρὸς μὲν τοὺς πολεμίους, τόλμαν· πρὸς δὲ τοὺς ὑποτεταγμένους, εὔνοιαν· πρὸς δὲ τοὺς καιροὺς, λογισμόν.

50 [a] Ἐπαμινώνδου.

Ἐπαμινώνδας ὁ Θηβαῖος ἰδὼν στρατόπεδον μέγα καὶ

46.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἐπιθῆτο] ἐπιθοῖτο A. p. m. ἐπίθειτο ex em. ἐπίθοιτο B.

47.

[a] Sic A. Vide spurium Plutarchi librum *de Nobilitate* c. 2. Deest lemma Trinc.

[b] τὴν τῆς πόλεως δύναμιν. Suprascripta sunt hæc in A.

[c] ἐστρατήγει] ἐπεστρατήγει A. στρατηγὸς B.

48.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

[b] εἰπεροπηδεῖ] εἴπερ ὀπηδεῖ A. B. ἠπεροπηῒδι conjecerat Tyrwhittus dudum ante Lobeckium ad Sophoclis Aj. p. 284. qui eam conjecturam prolato Polyæni proœm. p. 7. confirmavit. μύθοισι A. B. pro μύθοις.

49.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] ἐρωτηθεὶς] A. addit ὑπό τινος.

[c] εἶπε] εἶπε ὅτι A.

50.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

καλὸν στρατηγὸν οὐκ ἔχον· Ἡλίκον, ἔφη, θηρίον, καὶ κεφαλὴν οὐκ ἔχει.

51 [a] Ἰφικράτους.

Ἰφικράτης ἐν συμμάχων [b] χώρᾳ στρατοπεδεύων καὶ χάρακα βαλλόμενος καὶ τάφρον ὀρύττων, πρὸς τὸν εἰπόντα, Τί γὰρ φοβούμεθα, Χειρίστην, ἔφη, φωνὴν στρατηγοῦ εἶναι τὴν, Οὐκ ἂν προσεδόκησα.

52 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

[b] Ῥήτορος δέ τινος ἐρωτῶντος αὐτὸν ἐν ἐκκλησίᾳ, Τίς ὢν 366
μέγα φρονεῖς, πότερον ἱππεὺς, ἢ ὁπλίτης, ἢ τοξότης, ἢ πελταστής; Οὐδεὶς, ἔφη, τούτων, ἀλλὰ [c] τούτοις ἐπιτάττειν πᾶσιν ἐπιστάμενος.

53 [a] Χαβρίου.

Χαβρίας ἔλεγε [b] κάλλιστα στρατηγεῖν τοὺς μάλιστα γιγνώσκοντας τὰ τῶν πολεμίων.

54 [a] Θουκυδίδου ἱστορίας ε̄ δημηγορίας Κλέωνος.

Ὅστις γὰρ εὖ [b] βουλεύεται πρὸς τοὺς ἀντιπάλους κρείσσων ἐστὶν ἢ μετ' ἔργων ἰσχύος ἀνοίᾳ ἐπιών.

55 [a] Τοῦ αὐτοῦ ἱστορίας δ̄ δημηγορίας Βρασίδου.

Ἀπάτῃ γὰρ εὐπρεπεῖ αἴσχιόν τι τοῖς γε ἐν ἀξιώματι πλεονεκτῆσαι ἢ βίᾳ [b] ἐμφανεῖ· τὸ μὲν γὰρ ἰσχύος δικαιώσει, ἣν ἡ τύχη ἔδωκεν, ἐπέρχεται, τὸ δὲ γνώμης ἀδίκου ἐπιβουλῇ.

51.

[a] Sic A. Deest locus Trinc. v. Plutarch. II. p. 87. A.

[b] χώρᾳ] χώρας A.

52.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. v. Plutarch. II. p. 187. B.

[b] Ῥήτορος—ἐν ἐκκλ. τις ὢν] Ἰφικράτης ἐρωτηθεὶς, τὶς ὢν ἐν ἐκκλ. Tr.

[c] τούτοις] ὁ τούτοις A. m. sec.

53.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. v. Plutarch. II. p. 187. C.

[b] κάλλιστα] τοὺς κάλλιστα B.

54.

[a] Sic A. Sed leg. γ. et Διοδότου v. III. 48.

[b] βουλεύεται] βούλεται A.

55.

[a] Sic A. Scil. IV. 86.

[b] ἐμφανεῖ] ἐμφανῆ A.

56 [a] Θουκυδίδου δημηγορίας Ἀλκιβιάδου.

Βεβαιότατα δ' ἂν τις τοὺς πολεμίους οὕτω βλάπτοι, εἰ ἃ μάλιστα δεδιότας αὐτοὺς [b] αἰσθάνοιτο, ταῦτα σαφῶς πυνθανόμενος [c] ἐπιφέροι. Εἰκὸς γὰρ αὐτοὺς ἀκριβέστατα [d] ἑκάστους τὰ σφέτερα αὐτῶν δεινὰ ἐπισταμένους φοβεῖσθαι.

57 [a] Πύρρου.

Πύρρος ἐπιζητούντων τινῶν παρὰ πότον πότερος κρείσσων αὐλητὴς, Ἀντιγενίδας ἢ Σάτυρος· Ἐμοὶ μὲν, εἶπε, στρατηγὸς [b] Πολυσπέρχων· διδάσκων ὅτι ἀναγκαῖα δεῖ ζητεῖν, καὶ μὴ ἄχρηστα.

58 [a] Ἀννίβαλος.

[b] Ἀννίβαλ, ἀκούσας Στωϊκοῦ τινος ἐπιχειροῦντος, ὅτι ὁ σοφὸς μόνος [c] στρατηγικός ἐστιν, ἐγέλασε, νομίζων ἀδύνατον [d] εἶναι ἐκτὸς τῆς δι' ἔργων ἐμπειρίας τὴν ἐν τούτοις ἐπιστήμην [e] σχεῖν.

59 [a] Λυκούργου.

Λυκοῦργος ἐκέλευσε Λακεδαιμονίοις [b] μὴ πολλάκις τοῖς αὐτοῖς πολεμεῖν, ἵνα μὴ [c] ἄκοντας πολεμεῖν διδάξωσιν.

60 [a] Πύρρου.

Πύρρος πρὸς τὸν ὑπισχνούμενον τὰ τακτικὰ διδάξειν ἐν δὲ παρατάξει οὐδέποτε γεγονότα, Οὐκ, ἔφη, δεῖσθαι [b] ἀπερισαλπίγκτου στρατηγοῦ.

56.

[a] Sic A. Scil. VI. 91.
[b] αἰσθάνοιτο] ἀνδάνοιτο B.
[c] ἐπιφέροι] ἐπιφέρει A.
[d] ἑκάστους] ἑκάστου A. Trinc.

57.

[a] Sic A. vid. Wyttenbach. ad Plutarch. II. p. 184. C. Ταράσω Trinc.
[b] Πολυσπέρχων] πολλοὺς σπέρχων Trinc.

58.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Vide Ciceron. de Orat. II. 18.
[b] Ἀννίβαλ] Ἀννίβας B.
[c] στρατηγός] στρατηγικὸς A. B. Gesn. marg.
[d] εἶναι om. A.
[e] σχεῖν] ἔχειν B.

59.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.
[b] μὴ om. A. B.
[c] ἄκοντας] ἄκοντα B.

60.

[a] Sic A.
[b] ἀπερισαλπίκτου] ἀπερισαλπίγκτου A. m. s. Trinc. Reponenda hæc forma Synesio de Reg. p. 13. D.

61 [a] Φιλίππου.

Φίλιππος ἔλεγε, [b] κρεῖττον εἶναι στρατόπεδον ἐλάφων λέοντος στρατηγοῦντος, ἢ λεόντων, [c] ἐλάφου.

62 [a] Ἰφικράτους.

Ἰφικράτης τὸ στράτευμα οὕτως ἔφασκε δεῖν συντετάχθαι ὡς ἓν σῶμα· θώρακα μὲν [b] ἔχον τὴν φάλαγγα, χεῖρας δὲ τοὺς [c] ψιλοὺς, πόδας δὲ τοὺς ἱππέας, κεφαλὴν δὲ τὸν στρατηγόν.

63 [a] Φιλίππου.

Φίλιππος ἐρωτώμενος οὕς τινας μάλιστα φιλεῖ καὶ οὕς τινας μάλιστα μισεῖ, Τοὺς μέλλοντας, ἔφη, προδιδόναι μάλιστα φιλῶ, τοὺς δ' ἤδη προδεδωκότας μάλιστα μισῶ.

64 [a] Τιμοθέου.

Τιμόθεος πρὸς τὸν [b] ἐρωτώμενον, ᾧ διαφέρει στρατηγικὴ ῥητορικῆς, Ὧι πόλεμος, ἔφη, εἰρήνης.

65 [a] Εὐδαιμονίδου.

[b] Εὐδαμονίδας ἀκούσας φιλοσόφου διαλεχθέντος ὅτι μόνος ἀγαθὸς στρατηγὸς ὁ σοφός ἐστιν· Ὁ μὲν λόγος, ἔφη, θαυμαστὸς, ὁ δὲ [c] λέγων οὐ [d] περισεσάλπιγκται.

66 [a] Ξενοφῶντος ἐν τῷ ε Κύρου παιδείας.

Οὔτε γὰρ ἂν φίλους τις ποιήσειεν [b] ἄλλως πως πλείονα

61.

[a] Sic A. v. Wyttenbach. ad Plutarch. II. p. 187. D.

[b] κρεῖττον] κρεῖσσον A.

[c] ἐλάφου στρατηγοῦντος] Deest στρατηγοῦντος A. m. s. B.

62.

[a] Sic A.

[b] ἔχον] ἔχοντα A. m. p. ἐχόντων Trinc. sine τήν.

[c] ψιλοὺς] φίλους Trinc.

63.

[a] Sic A. Vid. Wyttenbach. ad Plutarch. II. p. 178. B.

64.

[a] Sic A.

[b] ἐρωτώμενον] ἐρώμενον A.

65.

[a] Sic A. v. Plutarch. II. p. 192. B. Deest locus Trinc.

[b] Εὐδαμίδας] Εὐδαιμονίδας ἀκούσας A. B.

[c] λέγων] λόγων A.

[d] περισεσάλπικται] περισέσάλπιγκται B.

66.

[a] Sic A. Scil. V. 3, 9. Ξενοφῶν Trinc.

[b] ἄλλως] ἄλλος A.

ἀγαθὰ ἐν πολέμῳ, ἢ πολέμιος δοκῶν εἶναι· οὔτ' ἂν ἐχθροὺς [c] πλείους τις βλάψειεν ἄλλως πως, ἢ [d] φίλος δοκῶν εἶναι.

ΠΕΡΙ ΕΙΡΗΝΗΣ. ΝΕ. 367

1 [a] Εὐριπίδου Κρεσφόντου.

Εἰρήνη βαθύπλουτε, καὶ
καλλίστα μακάρων θεῶν,
ζῆλός μοι σέθεν, ὡς χρονίζεις.
δέδοικα δὲ μὴ πρὶν [b] πόνοις
ὑπερβάλῃ με γῆρας,
πρὶν [c] περ χαρίεσσαν [d] προϊδεῖν ὥραν
καὶ [e] καλλιχόρους ἀοιδὰς,
φιλοστεφάνους τε κώμους.
ἴθι μοι, πότνια, πόλιν
τάνδ', ἐχθρὰν στάσιν εἶργ' ἀπ' οἴκων,
τὰν μαινομέναν τ' ἔριν,
[f] θηκτῷ τερπομέναν [g] σιδάρῳ.

2 [a] Ἀριστοφάνους Γεωργῶν.

Εἰρήνη βαθύπλουτε, καὶ ζευγάριον βοϊκόν·
εἰ γὰρ ἐμοὶ παυσαμένῳ [b] τοῦ πολέμου γένοιτο
[c] σκάψαντ' [d] ἀποκλάσαι, καὶ λουσαμένῳ διελκύσαι

[c] πλεῖον τι] πλείους τις A. τις B. πλείους τι Trinc.

[d] φίλος] φίλους A.

1.

[a] Sic A. Scil. fr. 4. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] πόνοις] πόνων Trinc.

[c] γὰρ] σὰν Gesnerus conjecit, Grotius edidit. περ A. B.

[d] πρόειδε] προϊδεῖν A. B. et sic ed. Grotius, qui in ms. rescribendum monet προσιδεῖν e Polybio. Vide reliq. Lib. XII. c. 26. ubi πρὶν ἂν χ. προσιδεῖν. In v. 4. πόνοις om. Polybius.

[e] καλλιχρόνους] καλλιχόρους A. Arsen. Polyb. καλλιχώρους Voss.

[f] θηκτῷ] θνητῷ A.

[g] σιδήρῳ] σιδάρῳ A. Voss.

2.

[a] Sic A. Ἀριστοφ. νήσων Arsen. Simpl. Ἀριστοφάνους. Trinc.

[b] τοῦ πολέμου] τοῦ om. A.

[c] σκάψαντ'] σκάψαιτ' Voss. Arsen. Trinc.

[d] ἀποκλάσαι] ἀποκλᾶσαι τε B. ἀποπλάγξαι scriptum in marg. exempli Grotiani.

Ib. σκάψαντ' ἀπολοῦσαι] Vulgo est σκάψαντ' ἀποκλάσαι. At MS.

τῆς τρυγὸς, [e] ἄρτον λιπαρὸν καὶ ῥάφανον φέροντι.

3 [a] Βακχυλίδου Παιάνων.

Τίκτει δέ τε θνατοῖσιν εἰρήνη μεγάλα,
πλοῦτον, καὶ μελιγλώσσων ἀοιδῶν ἄνθεα,
[b] δαιδαλέων τ' ἐπὶ βωμῶν [c] θεοῖσιν αἴθεται βοῶν
ξανθᾷ φλογὶ [d] μηρία τῶν εὐτρίχων τε μήλων.
γυμνασίων τε νέοις αὐλῶν τε καὶ κώμων [e] μέλει.
ἐν δὲ [f] σιδαροδέτοισι πόρπαξιν [g] αἰθᾶν ἀραχνᾶν
[h] ἱστοὶ πέλονται, ἔγχεά τε λογχωτὰ
ξίφεά τ' [i] ἀμφάκεα (εὐρὼς) [ii] δάμναται· χαλκέων
δ' οὐκέτι σαλπίγγων κτύπος, οὐδὲ [k] συλᾶται μελίφρων [l] ὕπνος
[m] ἀπὸ βλεφάρων ἄμος ὃς [n] θάλπει κέαρ.

A. habebat ἐχθρὰν στάσιν ἀποκλάσαι. Videri potest agricola tralatione uti sumta a more rustico aves clangore abigendi. Sed verius est illud στάσιν huc ex superioribus irrepsisse, et legendum, ut auctore Salmasio posuimus, pro ἀποκλάσαι, ἀπολοῦσαι. Post opus lavabant; loti cibum sumebant. Grotius. ἐχθρὰν στάσιν τ' ἀ. A.

[e] ἀρτὸν] ἄρτον τὸν Arsen.

3.

[a] Sic A. Trinc.

[b] δαιδαλέον] δαιδαλέων A. Trinc.

[c] θεοῖσι τίθενται] θεοῖσιν ἔθεσθε A. Voss. Arsen. Trinc. θεοῖσι αἴθεται citat P. Leopardus Emend. IV. 21. et sic Grotius in annot. mss.

[d] μερίδες] μεριτ^{αν} Voss. μηρῖταν Arsen. ξανθὰ φλο^{γὶ} μηρῦταν εὐτ. A. ξανθᾷ φλογὶ μηρία τῶν Leopardus. ξανθὰ φλογὶ μερίταν Trinc. μηρία τῶν Grotius in ms.

[e] μέλει] μέλειν A. Voss. Ars. Trinc.

[f] σιδαροδέτοισι πόρπαξιν] σιδαροδέτοισιν ὄρπαξιν Voss. Ars. ἔρπαξιν A. ὄρπαξιν αἰὲν ἀραχνᾶν B.

[g] αἰθᾶν ἀραχνᾶν] Vulgo erat αἴθαν ἀράχναν. Sed apparet genitivum esse. Grotius.

[h] ἵστοι] Plutarchi ἔργα commendat Valckenærius Diatr. Eurip. p. 169. Pro πέλονται Ursinus conjicit πλέκονται.

[i] ἀμφάκεα] ἐμφάκέα A.

[ii] δάμναται] εὐρὼς δάμναται Leopardus e Plutarch. Vit. Numæ p. 73. C. quem citat etiam Grotius in ms.

[k] συλᾶται] συλᾶτε A. Voss. Arsen. Trinc.

[l] ὕπνος] ὕπνον Voss. μελίφρον' ὕπνον Trinc.

[m] ἀπὸ] ὑπὸ Voss. Arsen.

[n] ἀπὸ βλεφάρων ἄμον ὃς θάλκει κέαρ] Male θάλκει illud nonnulli sollicitant. Est enim Æolicum. Tum vero ἄμον est ἡμέτερον. Salmasius ἄμος θάλπει legebat pro ἥμος, id est, *quando*. Grotius. ἄμος defendit Koënius in Gregor. Dial. Dor. CLXXIV. ἀμὸν Heynius et Brunckius. θάλπει A. B. Voss. Ar-

[o] συμποσίων δ' ἐρατῶν βρίθοντ' ἀγυιαὶ,
παιδικοί θ' ὕμνοι φλέγονται.

4 [a] Εὐριπίδου Ἐρεχθέως.

[b] Κείσθω δόρυ μοι μίτον ἀμφιπλέκειν ἀράχνᾳ,
μετὰ δ' ἡσυχίας πολιῷ [c] γήραϊ [d] συνοικοίην,
ἀείδοιμι δὲ στεφάνοις κάρα πολιὸν στεφανώσας,
Θρηΐκιον [e] πέλταν πρὸς [f] Ἀθηνᾶς
[g] περικίοσιν [h] ἀγκρεμάσας θαλάμοις,
[i] δέλτων τ' [k] ἀναπτύσσοιμι γῆρυν,
ἂν σοφοὶ [l] κλέωνται.

sen. Gesn. marg.

[o] συμποσίων] γυμνασίων Voss. Arsen.

4.

[a] Sic A. Scil. fr. 6. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] ἀρκείτω μοι] ἀρκείσθω δόρυ μοι (σθω) A. Arsen. ἀρκείτω δόρυ Voss. δόρυ item B. μῖτον A. Voss. μιτὸν Tr.

Ib. Grotius Salmasii dedit conjecturam, Ἄρκυϊ τὠμῷ μίτον ἀμφιπλέκῃ ἀράχνα, non optimam, me judice: nam *rete* dicitur ἄρκυς venatoris, quocum nihil adeo commune fuit Erectheo: quid hujus personam deceret sensit Grotius, cujus ista sunt Latina: *Araneæ circa meam decurrat orsus hastan.* Redeat in suum locum *hasta* Regis, dum vigebat juventa, bellatoris: scripserat Tragicus, Κείσθω δόρυ μοι μίτον ἀμφιπλέκειν Ἀράχναις. *Hasta mea inserviat araneis, quæ circa illam texant telam;* μίτον proprie, *pede quod gracili deducit aranea filum* Ovid. Amor. I. 14, 7. Quam proposui lectionem sic emendatam nuper mihi præbuit eamdem Stobæi codex Vossianus MS. voce δόρυ hic auctior, et verbi ἀρκείτω literis postremis dans inscriptos, σθω. Illam jam ante inveneram in Nicia Plutarchi T. I. p. 529. A. ἐπόθουν τὸν — ἀπόλεμον βίον, ἡδέως μὲν ᾀδόντων τὰ τοιαῦτα χορῶν ἀκούοντες, Κείσθω δόρυ μοι μίτον ἀμφιπλέκειν ἀράχναις. Valcken. Diatr. Eurip. p. 168. Plutarchi locum citat Grotius in ms. Dedi ἀράχνᾳ.

[c] γήραϊ] γῆρας Voss.

[d] συνοικοίην] συνοικείην A. συνοικείην (οι) Voss.

[e] πεάταν] πεάταν sic A. Voss. πέλταν B. Arsen.

Ib. πέλταν] Et hanc emendationem ei, cui multa, Salmasio debeo. Vulgo erat Θρηΐκιον πεάταν. Vult a lecti περιστύλοις pendere scutum, quasi quod nulli jam sit usui. Simile est illud, *Barbiton hanc paries habebit.* Grotius.

[f] ἀθηνᾶν] ἀθηνᾶς A. B. Voss. Arsen. Trinc.

[g] περὶ κιόσιν—θαλάμοις] om. Tr.

[h] ἐγκρεμάσας] ἀγκρεμάσας Voss. Arsen.

[i] δέλτων] δέλτον A.

[k] ἀναπτήσσοιμι] ἀναπτύσσοιμι A. Voss. Arsen. Trinc.

[l] κλέωνται] κέλωνται Arsen. καλέσονται A. B. m. s. F. κλέονται.

5 [a] Φιλήμονος ἐκ Πύρρου.

Οἱ φιλόσοφοι ζητοῦσιν, ὡς ἀκήκοα,
περὶ τουτό [b] θ' ἑαυτοῖς [c] πολὺς ἀναλοῦται χρόνος,
τί ἐστιν ἀγαθόν· [d] κοὐδὲ εἷς εὕρηκέ πω
[e] τί ἐστιν· ἀρετὴν καὶ φρόνησίν φασι, καὶ
πλέκουσι [f] πάντα μᾶλλον, ἢ τί τἀγαθόν.
ἐν ἀγρῷ διατρίβων τήν τε γῆν σκάπτων ἐγὼ
νῦν εὗρον· [g] εἰρήνη 'στιν· ὦ Ζεῦ φίλτατε,
τῆς ἐπαφροδίτου καὶ φιλανθρώπου θεοῦ.
γάμους, ἑορτὰς, συγγενεῖς, παῖδας, φίλους,
πλοῦτον, [h] ὑγιείαν, σῖτον, οἶνον, ἡδονὴν, 368
αὕτη δίδωσι· ταῦτα πάντ' ἂν ἐκλίπῃ,
τέθνηκε κοινῇ πᾶς ὁ τῶν ζώντων βίος.

6 [a] Εὐριπίδου.

Ὅτ' ἂν γὰρ ἔλθῃ πόλεμος εἰς ψῆφον [b] λεὼ,
οὐδεὶς [c] ἔθ' αὑτοῦ θάνατον ἐκλογίζεται,
τὸ δυστυχὲς δὲ τοῦτ' ἐς ἄλλον ἐκτρέπει.
εἰ δ' ἦν παρ' ὄμμα θάνατος ἐν ψήφου φορᾷ,
οὐκ ἄν ποθ' Ἑλλὰς δορυμανὴς ἀπώλλυτο.
καίτοι δυοῖν γὰρ πάντες ἄνθρωποι λόγοιν
τὸν κρείττον' ἴσμεν, καὶ τὰ χρηστὰ καὶ κακὰ,
ὅσῳ τε πολέμου κρεῖττον εἰρήνη βροτοῖς·
ἣ πρῶτα μὲν μούσαισι προσφιλεστάτη,
γόοισι δ' ἐχθρὰ, τέρπεται δ' [d] εὐπαιδίᾳ,

5.

[a] Sic A. Cleric. p. 324. Simpl. φιλήμονος Trinc.

[b] τ' αὐτοῖς] θ' ἑαυτοῖς A. Voss. Trinc. περὶ τοῦ, τότ' B.

[c] πολὺς ἀναλοῦται] ἀναλοῦται πολὺς A. Grotius dedit πουλὺς. Mox τί τἀγαθόν ἐστιν, et λέγουσι pro πλέκουσι Brunck. Aristoph. Plut. 985.

[d] οὐδὲ εἷς] οὐδεὶς A.

[e] τίς] τί A. B. Voss. Grotius.

[f] ταῦτα] πάντα A. B. Voss. Gesn. marg.

[g] εἰρήνης τίν'] εἰρήνη 'στιν Grotius.

[h] ὑγείαν] ὑγίειαν A. in fine versus ἡδονὴν om. Voss. Trinc.

6.

[a] Sic A. Trinc. v. Suppl. 481.

[b] λεὼ] δορὸς B.

[c] ἔθ' αὑτοῦ] ἔτ' ἀ. A. Voss. Trinc. Mox vulg. ἀπόλλυτο.

[d] εὐπαιδίᾳ] ἐν παιδίᾳ Arsen.

χαίρει δὲ πλούτῳ. Ταῦτ᾽ ἀφέντες οἱ κακοὶ
πολέμους [c] ἀναιρούμεσθα, καὶ τὸν ἥττονα
δουλούμεθ᾽ ἄνδρες ἄνδρα, καὶ πόλις πόλιν.

7 [a] Ἀριστοφάνους Νήσων.

Ὦ μῶρε, μῶρε, ταῦτα πάντ᾽ ἐν τῇδ᾽ ἔνι·
οἰκεῖν μὲν ἐν ἀγρῷ τοῦτον ἐν τῷ γηδίῳ
ἀπαλλαγέντα τῶν κατ᾽ ἀγορὰν πραγμάτων,
κεκτημένον ζευγάριον οἰκεῖον βοοῖν,
ἔπειτ᾽ ἀκούειν [b] προβατίων βληχωμένων,
[c] αἰγός τε φωνὴν εἰς λεκάνην ὠθουμένης,
[d] ὄψῳ δὲ χρῆσθαι σπινιδίοις τε καὶ κίχλαις,
καὶ μὴ περιμένειν ἐξ ἀγορᾶς ἰχθύδια
τριταῖα, πολυτίμητα, βεβασανισμένα
ἐπ᾽ ἰχθυοπώλου χειρὶ παρανομωτάτῃ.

8 [a] Τοῦ αὐτοῦ Εἰρήνης.

Ὦ πότνια βοτρυόδωρε, τί προσείπω σ᾽ ἔπος;
πόθεν λάβοιμ᾽ ἂν ῥῆμα μυριάμφορον;

9 [a] Μενάνδρου.

Εἰρήνη γεωργὸν [b] κἂν πέτραις

[c] ἂν αἱρούμεσθα] ἀναιρούμεθα A. Arsen. ἂν αἱρούμεθα Trinc.

7.

[a] A. habet Ἀριστοφάνους νησσῶν, unde *Aristophanes Anatibus* Grotius. νήσσων Gesnerus.

[b] προβάτων] προβατίων emendavit Grotius.

[c] αἰγός] τρυγός A. B. Voss.

Ib. τρυγός τε φωνὴν] Ita diserte ms. A. Si quis tamen malit quod editur αἰγός τε φωνὴν, et λεκάνην interpretari velit *mulctrale*, non vetabo. GROTIUS.

[d] ὄψῳ τε χρῆσθαι πηνιδίοις τε καὶ κ.] Ita pro ὄψων emendavit Salmasius, et ex Hesychio monuit πηνίδια sive πηνία esse ἐντιθέμενά τινα τοῖς πλακοῦσιν· ἔστι δὲ καὶ λευκὰ καὶ προσομοῖα πήνοις. Latine *panniculas* dictas docet Festus. GROTIUS. Idem in notis mss. monet Salmasium Exerc. Plin. 445. [316. d. ed. alt.] corrigere σπινιδίοις. Quæ proculdubio vera est lectio. In eamdem inciderat Tyrwhittus. In ult. f. l. ὑπ᾽ ἰχ.

8.

[a] Sic A. Scil. v. 519. Menandro tribuit Trinc.

9.

[a] Sic A. Cleric. p. 224. Deest lemma Trinc.

[b] κἂν] καὶ Voss. Arsen.

τρέφει καλῶς, πόλεμος δὲ κἀν πεδίῳ [c]κακῶς [ἔφυ.]

10 [a]Ἡροδότου ἱστορίας ᾱ.

Οὐδεὶς γὰρ οὕτως ἀνόητός ἐστιν, ὅστις πόλεμον πρὸ εἰρήνης αἱρέεται.

ΠΕΡΙ ΓΕΩΡΓΙΑΣ ΟΤΙ ΑΓΑΘΟΝ. ΝϚ.

1 [a]Ἀριστοφάνους Εἰρήνης.

[b]Τοῖς πᾶσιν ἀνθρώποισιν εἰρήνης φίλης
πιστὴ τροφὸς, ταμία, συνεργὸς, ἐπίτροπος,
θυγάτηρ, ἀδελφή· πάντα ταῦτ᾽ ἐχρῆτό μοι.
Σοὶ δ᾽ ὄνομα [c]δὴ τί ἐστιν; Ὅτι Γεωργία.

2 [a] Ὦ ποθεινὴ τοῖς δικαίοις καὶ [b]γεωργοῖς ἡμέρα,
ἄσμενός σ᾽ ἰδὼν προσειπεῖν βούλομαι τὰς ἀμπέλους.

3 [a]Μενάνδρου Ἀδελφῶν.

Χαῖρ᾽, ὦ φίλη γῆ, διὰ χρόνου πολλοῦ [b]σ᾽ ἰδὼν
ἀσπάζομαι· [c]τουτὶ γὰρ οὐ πᾶσαν ποιῶ
τὴν γῆν, ὅτ᾽ ἂν δὲ [d]τοὐμὸν ἐσίδω χωρίον.
[e]τὸ γὰρ τρέφον με, τοῦτ᾽ ἐγὼ κρίνω θεόν.

4 [a]Ἄμφιδος Ἐρίθων.

Εἶτ᾽ οὐχὶ χρυσοῦν ἐστι πρᾶγμ᾽ ἐρημία;
ὁ πατήρ γε τοῦ ζῆν ἐστὶν ἀνθρώποις ἀγρὸς, 369

[c] κακὸς] κακῶς Voss.
Ib. Hæc confusa in versus digessimus. κακῶς pro κακὸς rescripsit Salmasius, deleto ἔφυ quod supererat. Grotius. Salmasii rationem probat Bentleius.

10.

[a] Sic A. Scil. I. 87.

1.

[a] Sic A. Pertinet hoc lemma ad n. seq. Simpl. Ἀριστοφάνους Trinc.
[b] τῆς] τοῖς A. B.
[c] δὴ] om. A.

2.

[a] Cohæret cum præcedentibus A. Tr. Vid. Aristoph. Pac. 555.
[b] γεωργὸς] γεωργοῖς Gesn. marg.

3.

[a] Sic A. Cleric. p. 4. Simpl. Μενάνδρου Trinc.
[b] σ᾽ ἰδὼν] δ᾽ ἰδὼν A.
[c] τουτὶ] ταυτὶ Voss.
[d] θοὐμὸν] τοὐμὸν A. Trinc.
[e] τὸ γὰρ] Hunc versum ex Piscatoribus citat Justinus. Grot.

4.

[a] Sic A. Simpl. Ἄμφιδος Trinc.

πενίαν τε συγκρύπτειν [b] ἐπίσταται μόνος·
ἄστυ δὲ θέατρόν [c] ἐστιν ἀτυχίας σαφῶς γέμον.

5 [a] Μενάνδρου Πλοκίῳ.

Ἆρ' ἐστὶν ἀρετῆς καὶ βίου διδάσκαλος
ἐλευθέρου τοῖς πᾶσιν [b] ἀνθρώποις ἀγρός.

6 [a] Φωκυλίδου.

Χρηΐζων πλούτου μελέτην ἔχε πίονος ἀγροῦ,
ἀγρὸν γάρ τε λέγουσιν Ἀμαλθαίης κέρας εἶναι.

7 [a] Μενάνδρου Ἀνεψιοί.

Τὰ κακῶς τρέφοντα χωρί' ἀνδρείους ποιεῖ.

8 [a] Ἀριστοφάνους Ἀχαρνέων.

Ἀποβλέπων εἰς τὸν ἀγρὸν εἰρήνης ἐρῶν,
στυγῶν μὲν ἄστυ, τὸν δ' ἐμὸν δῆμον [b] ποθῶν,
ὃς οὐδεπώποτ' εἶπεν, ἄνθρακας πρίω,
οὐκ ὄξος, οὐκ ἔλαιον, [c] οὐδ' ᾔδη πρίω,
ἀλλ' αὐτὸς ἔφερε πάντα, χὠ πρίων ἀπῆν.

9 [a] Μενάνδρου.

Ἀγροῖκος εἶναι [b] προσποιεῖ πονηρὸς ὤν.

10 [a] Ἀράτου Φαινομένων.

Οὔπω λευγαλέου [b] ποτὲ νείκεος ἠπίσταντο,
οὐδὲ διακρίσιος περιμεμφέος, οὐδὲ κυδοιμοῦ,

[b] ἐπίσταμαι] ἐπίσταται A. B. Gesn. marg.
[c] ἐστιν ἀτυχίας] ἐστιν delevit Grotius. σαφοῦς pro σαφῶς A.

5.

[a] Sic fere A. ubi Μεν. Πλόκῳ. *in Ploca* Gesner. Cleric. p. 156.
[b] ἀνθρώποις deest Trinc.

6.

[a] Sic Trinc. φωκυλλίδου A.

7.

[a] Sic A. Cleric. p. 224. Deest locus Trinc.

8.

[a] Sic A. Sc. v. 32. Simpl. Ἀριστοφάνους Trinc.
[b] ποθῶ] ποθῶν A. Trinc. Initio versus dedi στυγῶν pro στυγῶ, deinde δῆμον pro δήπου.
[c] οὐχὶ δεῖ] οὐχ ἢ δὴ πρίω A. οὐχὶ δεῖ πρίω N. Trinc. Delevi ὄψον, quod habent omnes post ὄξος.

9.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 224.
[b] προσποιῇ] προσποιεῖ A. Grotius.

10.

[a] Sic A. Scil. v. 108. Simpl. Ἀράτου Trinc.
[b] ποτὲ] τότε Gesn. marg.

αὔτως δ' ἔζωον, χαλεπὴ δ' ἀπέκειτο θάλασσα,
καὶ βίον οὔπω νῆες ἀπόπροθεν [c] ἠγίνεσκον·
ἀλλὰ βόες καὶ ἄροτρα, καὶ αὐτὴ πότνια λαῶν
μυρία πάντα παρεῖχε δίκη, δώτειρα δικαίων.

11 [a] Μενάνδρου Ὑδρία.
[b] Ὡς ἡδὺ τῷ μισοῦντι τοὺς φαύλους ἐρημία.

12 [a] Ἀριστοφάνους Νεφελῶν.
Ἐμοὶ γὰρ ἦν ἀγροῖκος ἥδιστος βίος,
εὐρωτιῶν, ἀκόρητος, εἰκῆ κείμενος,
βρύων μελίτταις, καὶ προβάτοις, καὶ στεμφύλοις.

13 [a] Εὐριπίδου Ἀντιόπης.
Τοιαῦτ' ἄειδε, [b] καὶ δόξεις φρονεῖν,
σκάπτων, ἀρῶν γῆν, ποιμνίων ἐπιστατῶν,
ἄλλοις τὰ κομψὰ ταῦτ' ἀφεὶς σοφίσματα.

14 [a] Εὐριπίδου Βουτημένῳ.
Ἄλλη πρὸς ἄλλο γαῖα χρησιμωτέρα.

15 [a] Φιλήμονος.
Δικαιότατον κτῆμ' ἐστὶν ἀνθρώποις ἀγρός·
ὧν ἡ φύσις δεῖται γὰρ ἐπιμελῶς φέρει,
πυροὺς, ἔλαιον, οἶνον, ἰσχάδας, μέλι.
[b] τὰ δ' ἀργυρώματ' ἐστὶν, ἥ τε πορφύρα,

[c] ἠγίνεσκον] γίνωσκον A.

11.

[a] Sic A. Cleric. p. 178. Simpl. Μενάνδρου Trinc.

[b] Deest hic versus B. et delevit manus sec. in A. Inseruisse videtur nescio quis male sedulus ex Tit. LVIII. 8. ubi plura legantur. Ex eo loco Grotius revocavit τρόπους, quæ vox in aliis exemplaribus deest.

12.

[a] Sic A. Scil. v. 43. Simpl. Ἀριστοφάνους Trinc.

13.

[a] Sic A. Scil. Fr. 33. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] καὶ δόξεις φρονεῖν] καὶ βροτοῖς δόξεις φρ. B. Illud βροτοῖς est manifesto a correctore. δόξης φρον A. Vid. Valckenærii Diatr. Euripid. p. 87.

14.

[a] Sic A. Gesn. Deest lemma Trinc. Habet Musgravius in Fr. Temenid. n. 12.

15.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 348.

[b] τὰ δ' ἀργυρώματ' ἐστιν] Ita posui ob versum, cum esset, τἀργυρώματα δ' ἐστιν. Grotius. Idem

εἰς τοὺς [c] τραγῳδοὺς εὔθετ', οὐκ ἐς τὸν βίον.

16 [a] Σωκράτους.

Ὁ Σωκράτης, τὸ τῆς [b] Ἀμαλθείας κέρας ἐξηγούμενος, τοιαύτης τινος ἀναφορᾶς ἠξίωσεν· εἶναι γὰρ σύμβολον, ἂν μή τις ᾖ μάλθων ἀλλὰ ἐργάτης, πάντα ἕξειν τἀγαθά· κατὰ μὲν τὴν ἀμαλθίαν τοῦ μὴ μάλθωνος [c] ταττομένου, κατὰ δὲ τὸ κέρας τοῦ βοὸς [d] ἐργατικωτάτου ὄντος τὸν ἐργάτην ἐνσημαίνεσθαι· βότρυς δὲ ἐν τῷ κέρατι εἶναι καὶ τὰ ὅμοια, ὅτι ἐν τῇ γεωργίᾳ πάντα ἔνεστιν, ὧν χρείαν ἔχομεν. Διὸ καὶ ἔχοντες αὐτὸ εἰσάγονται ὅ τε Ἀγαθὸς Δαίμων καὶ ἡ Ἀγαθὴ Τύχη.

17 [a] Ξενοφῶντος.

Οἶνος τὰς μὲν λύπας, ὥσπερ μανδραγόρας ἄνδρα, [b] κοιμί- 370
ζει, τὰς δὲ φιλοφροσύνας, ὥσπερ ἔλαιον φλόγα, ἐγείρει.

18 [a] Μουσωνίου ἐκ τοῦ Τίς ὁ φιλοσόφῳ προσήκων πόρος.

Ἔστι καὶ ἕτερος πόρος οὐδὲν τούτου κακίων, τάχα δὲ καὶ ἀμείνων νομισθεὶς ἂν οὐκ ἀλόγως ἀνδρί γ' εὐρώστῳ τὸ σῶμα, ὁ ἀπὸ γῆς, ἄν τ' οὖν ἰδίαν ἔχῃ τις, ἄν τε καὶ μή. Πολλοὶ γὰρ δὴ καὶ ἀλλοτρίαν γῆν γεωργοῦντες, ἢ δημοσίαν, ἢ ἰδιωτικὴν, δύνανται τρέφειν οὐ μόνον [b] αὑτοὺς, καὶ τέκνα δὲ καὶ γυναῖκας· ἔνιοί [c] γε δὲ καὶ εἰς ἄγαν ἀπὸ τούτου εὐποροῦσιν, αὐτουργικοὶ καὶ φιλόπονοι ὄντες. Ἀμείβεται γὰρ ἡ γῆ κάλλιστα καὶ δικαιότατα τοὺς ἐπιμελο-

in notis mss. citat "Diogen. "vita Socratis Clem. Pæd." Vide Diogen. Laert. II. 25. ubi τὰ δ' ἀργυρώματ' et v. seq. χρήσιμ' pro εὔθετ'. χρήσιμ' item Clemens Alex. Pæd. II. pag. 87=201=235.

[c] τραγῳδοὺς] στρατηγοὺς B.

16.

[a] Sic A. Vid. Wesseling. ad Diodor. Sic. IV. 35.

[b] ἀμαλθείας] ἀμαλθίας Trinc.

[c] ταττομένου] ταττόμενος A.

[d] ἐργατικωτάτου] ἐργατικώτερον A.

17.

[a] Sic A. Tr. Scil. Sympos. II. 24.

[b] κοιμίζει] κομίζει Trinc.

18.

[a] Sic A. Trinc. Mox νομισθείη Wakefield.

[b] αὑτοὺς] ἑαυτοὺς A.

[c] γε] τε B.

μένους αὐτῆς, πολλαπλάσια ὧν λαμβάνει διδοῦσα, καὶ ἀφθονίαν παρέχουσα πάντων τῶν ἀναγκαίων πρὸς τὸν βίον τῷ βουλομένῳ πονεῖν· καὶ ταῦτα μὲν σὺν τῷ πρέποντι, σὺν αἰσχύνῃ δ' οὐδὲν αὐτῶν. Οὐ γάρ ἐστιν ἀνθρώπων οὐδεὶς μὴ θρυπτικός τε μηδὲ μαλακὸς ὤν, ὃς ἂν φαίη τῶν γεωργικῶν ἔργων [d] ὁτιοῦν αἰσχρὸν, ἢ ἀνάρμοστον ἀνδρὶ ἀγαθῷ εἶναι. [e] Πῶς μὲν γὰρ οὐ καλὸν τὸ φυτεύειν; πῶς δὲ τὸ ἀροῦν; πῶς δὲ τὸ ἀμπελουργεῖν; τὸ δὲ σπείρειν, τὸ δὲ θερίζειν, τὸ δὲ ἀλοᾶν, οὐ πάντ' [f] ἐλευθέρια ταῦτα, καὶ ἀνδράσιν ἀγαθοῖς πρέποντα; καὶ μὴν τὸ ποιμαίνειν ὥσπερ Ἡσίοδον οὐ κατῄσχυνεν, οὐδὲ ἐκώλυεν εἶναι θεοφιλῆ τε καὶ μουσικὸν, οὕτως οὐδ' ἂν ἄλλον οὐδένα κωλύσειεν. Ἐμοὶ μὲν [g] δὴ καὶ ἀρεστὸν τοῦτο πάντων τῶν ἐν γεωργίαις ἔργων, ὅτι τῇ ψυχῇ παρέχει σχολὴν πλείονα [h] διανοεῖσθαί τε καὶ ζητεῖν παιδείας [i] ἐχόμενον. Ὅσα μὲν [k] γὰρ ἔργα πάνυ ἐντείνει τὸ σῶμα καὶ κάμπτει, ταῦτα καὶ τὴν ψυχὴν ἀναγκάζει πρὸς αὐτοῖς εἶναι μόνοις, [l] ἢ μάλιστα, συνεντεινομένην τῷ σώματι· ὅσα δὲ τῶν ἔργων ἐφίησι μὴ ἄγαν ἐντετάσθαι [m] τὸ σῶμα, ταῦτ' οὐκ ἀπείργει τὴν ψυχὴν ἐκλογίζεσθαί τι τῶν κρειττόνων, κἀκ τῶν τοιούτων λογισμῶν αὐτὴν αὑτῆς γίνεσθαι σοφωτέραν, οὗ δὴ καὶ μάλιστα πᾶς φιλόσοφος ἐφίεται. Διὰ ταῦτ' ἐγὼ τὴν ποιμενικὴν ἀσπάζομαι μάλιστα· εἴ γε μὴν ἅμα [n] φιλοσοφοῖ τις καὶ γεωργοῖ, οὐκ ἄλλον ἂν παραβάλλοιμι τούτῳ βίον, οὐδὲ πορισμὸν ἕτερον προτιμήσαιμι ἄν. Πῶς μὲν γὰρ οὐ

[d] οὖν] Lego οὐδὲν, vel ὅτι οὖν Gesner. ὅτι suprascriptum habet A. ὁτιοῦν B. Supra θρυπτικός γε Wakefield.

[e] πῶς μὲν γὰρ οὐ καλὸν] πῶς γὰρ καλὸν A. Illud οὐ suprascriptum est a m. sec.

[f] ἐλευθέρια] ἐλευθεϛ A. m. p. ἐλεύθερα B.

[g] δὴ om. A. m. p.

[h] διανοεῖσθαι] διανεῖσθαι A. m. p.

[i] ἐχόμενον] ἐχόμενα A. m. s. B.

[k] γὰρ om. A.

[l] μάλιστα] ἢ μάλιστα A. Trinc.

[m] τῷ σώματι οὐκ ἀπείργει] τῷ σώματ' αὐτοῦ κἀπείργει Trinc. τὸ σῶμα, ταῦτ' οὐκ ἀ. A. B.

[n] φιλοσοφοῖ—γεωργοῖ] φιλοσοφεῖ—γεωργεῖ A.

κατὰ φύσιν μᾶλλον ἀπὸ γῆς, ἣ τροφός τε καὶ μήτηρ ἐστὶν ἡμῶν, ἢ ἀπ᾽ ἄλλου του τρέφεσθαι; πῶς δ᾽ οὐκ ἀνδρικώτερον τοῦ καθῆσθαι ἐν πόλει, ὥσπερ οἱ σοφισταὶ, τὸ ζῆν ἐν χωρίῳ; πῶς δ᾽ οὐχ ὑγιεινότερον τοῦ [o] σκιατροφεῖσθαι τὸ ἔξω διαιτᾶσθαι; τί δὲ ἐλευθεριώτερον αὐτὸν [p] αὐτῷ μηχανᾶσθαι τὰ ἀναγκαῖα, ἢ παρ᾽ ἑτέρων λαμβάνειν; Ἀλλὰ φαίνεται τὸ μὴ δεῖσθαι ἄλλου πρὸς τὰς χρείας τὰς αὐτοῦ πολὺ σεμνότερον, ἢ τὸ δεῖσθαι. [q] Οὕτως ἄρα καλὸν, καὶ εὐδαιμονικὸν, καὶ θεοφιλὲς τὸ ζῆν ἀπὸ γεωργίας ἐστὶ, σύν γε τῷ καλοκαγαθίας μὴ ὀλιγωρεῖν, ὥστε Μύσωνα τὸν [r] Χηναῖον ὁ θεὸς ἀνεῖπε σοφὸν, καὶ τὸν [s] Ψωφίδιον Ἀγλαὸν [t] εὐδαίμονα προσηγόρευσε, χωριτικῶς ἑκάτερον αὐτῶν βιοῦντα καὶ αὐτουργίᾳ χρώμενον, καὶ τῆς ἐν ἄστει διατριβῆς ἀπεχόμενον. Ἆρ᾽ οὖν οὐκ ἄξιον ζηλοῦν [v] τε καὶ μιμεῖσθαι 371
[w] τούτους, [x] καὶ περιέχεσθαι σπουδῆς [y] τῆς τοῦ γεωργεῖν;

[z] Τί οὖν; οὐ δεινὸν φαίη τις ἂν ἴσως ἄνδρα παιδευτικὸν, καὶ δυνάμενον προβιβάζειν νέους εἰς φιλοσοφίαν, ἐργάζεσθαι γῆν, καὶ τῷ σώματι πονεῖν τοῖς χωρίταις παραπλησίως;

[o] σκιατροφεῖσθαι] σκιατραφεῖσθαι A. ex emend. B. v. Lobeck. ad Phryn. p. 578.

[p] αὐτῷ] ἑαυτῷ A.

[q] οὕτω δ᾽] οὕτως A.

[r] χημαῖον] θηβαῖον A. ex emend. ut vulgo a p. m. Θηβαῖον B. Χηναῖον Stobæo reddendum esse vidit Holstenius ad Steph. Byzant. p. 357.

Ib. Lege Μύσωνα τὸν Χηναῖον (v. Vales. ad Diodor. Sic. II. p. 552. a) vel Χηνιέα, et τὸν Ψωφίδιον Ἀγλαὸν (Pausan. 647.) De utroque notavi ad Steph. Alter erat Lacon, alter Arcas. Aglaum memorat et Valer. Max. Μύσωνα τὸν Χηνέα sapientibus adnumerat Laert. I. 13. 30. 41. ἐν Χηναῖς Μύσων Max. Tyr. Diss. XXXI. 1. Mox χωριτικῶς. Lucian. I. 264, 23. Dounæus Demosth. p. 36. Ælian. IX. 27. χωριτικῶς Suidæ restituit Toup. Suid. 156. [I. p. 199.] Valcken. Videatur Harduinus ad Plin. VII. 47. nec non Wyttenbachius ad Plutarch. pag. 284. C.

[s] ψοφίδιον] ψοφόδιον A.

[t] εὐδαίμονα] καὶ suprascriptum habet A. m. sec. Mox vulgo χωριστικῶς.

[v] τε om. A.

[w] τούτους] τοῦτον a m. p. A.

[x] καὶ om. Trinc.

[y] τοῦ] τῆς τοῦ A. B.

[z] τί οὖν οὐ] τι οὐ δεινὸν A. (δὲ suprascr.) illud δὲ a m. sec. τί δὲ οὐ B.

Ναί. [a]Δεινὸν γὰρ ἂν τοῦτο τῷ ὄντι ἦν, εἴπερ ἐκώλυεν ἡ ἐργασία τῆς γῆς φιλοσοφεῖν, ἢ ἄλλους πρὸς φιλοσοφίαν ὠφελεῖν. Νῦν δὲ καὶ μᾶλλον ἄν μοι δοκοῦσιν ὠφελεῖσθαι οἱ νέοι, οὐκ ἐν πόλει τῷ διδασκάλῳ συνόντες, οὐδ' ἐν τῇ διατριβῇ ἀκούοντες αὐτοῦ λέγοντος, ἀλλ' ἐργαζόμενον ἐπὶ τῆς ἀγροικίας ὁρῶντες, καὶ ἔργῳ ἐνδεικνύμενον, [b]ὥσπερ ὑφηγεῖται ὁ λόγος, ὅτι χρὴ πονεῖν καὶ κακοπαθεῖν τῷ σώματι μᾶλλον ἢ ἑτέρου δεῖσθαι τοῦ τρέφοντος. Τί δὲ τὸ κωλύον ἐστὶ καὶ ἐργαζόμενον μετὰ τοῦ διδασκάλου τὸν μαθητὴν ἀκούειν τι ἅμα περὶ σωφροσύνης, [c]ἢ δικαιοσύνης, ἢ καρτερίας λέγοντος; Πολλῶν μὲν γὰρ λόγων οὐ δεῖ [d]τοῖς φιλοσοφήσουσι καλῶς, οὐδὲ τὸν ὄχλον τούτων τῶν θεωρημάτων ἀναληπτέον πάντως τοῖς νέοις, ἐφ' ᾧ φυσωμένους τοὺς σοφιστὰς ὁρῶμεν· ταῦτα γὰρ δὴ τῷ ὄντι ἱκανὰ [e]κατατρίψαι βίον ἀνθρώπου ἐστί· τὰ δ' ἀναγκαιότατα καὶ χρησιμώτατα μαθεῖν οὐκ ἀδύνατον καὶ πρὸς ἐργασίᾳ γεωργικῇ ὄντας, ἄλλως τε καὶ οὐ διὰ παντὸς ἐργασομένους, ἀλλὰ ἀναπαύλαις χρησομένους. Ὀλίγοι μὲν οὖν τὸν τρόπον τοῦτον ἐθελήσουσι μανθάνειν οἶδ' ἀκριβῶς ἐγώ· ἔστι δὲ ἄμεινον μηδὲ προσεῖναι τῷ φιλοσόφῳ τοὺς πλείονας τῶν φιλοσοφεῖν λεγόντων νέων, ὅσοι σαθροί τε καὶ μαλακοὶ, δι' οὓς προσιόντας ἀναπίμπλαται κηλίδων φιλοσοφία. Τῶν μὲν γὰρ ἀληθινῶν ἐραστῶν φιλοσοφίας οὐκ ἔστιν οὐδεὶς, ὃς οὐκ ἂν ἐθελήσειε μετ' ἀνδρὸς ἀγαθοῦ διάγειν ἐν χωρίῳ, καὶ εἰ χαλεπώτατον [f]τύχοι ὂν τὸ χωρίον, [g]μέλλων γε ἀπολαύειν μεγάλα ταύτης τῆς διατριβῆς, τῷ συνεῖναι τῷ διδασκάλῳ νύκτωρ καὶ μεθ' ἡμέραν, τῷ ἀπεῖναι τῶν ἀστυκῶν κακῶν, ἅπερ ἐμπόδιον τῷ φιλοσοφεῖν, τῷ μὴ δύνασθαι λανθάνειν εὖ ἢ κακῶς τι ποι-

[a] δεινὸν] γὰρ A.
[b] ὥσπερ] ἅπερ A. B.
[c] ἢ] περὶ Trinc.
[d] φιλοσοφήσουσι] τοῖς φιλοσοφοῦσι A. Trinc.
[e] κατατρίψαι] διατρίψαι A.
[f] τύχοι] τύχῃ A. m. sec.
[g] μέλλων] μέλλον Trinc.

ὤν, ὃ δὴ μέγιστον τοῖς παιδευομένοις ὄφελος· καὶ ἐσθίειν δὲ καὶ πίνειν καὶ καθεύδειν [h]ἐφορώμενον ὑπ' ἀνδρὸς ἀγαθοῦ, μέγα ὄφελος. Ἃ δὲ γένοιτ' ἂν ἐξ ἀνάγκης ἐν τῇ συνουσίᾳ τῇ κατ' ἀγρὸν, ταῦτα ἐπαινεῖ καὶ Θέογνις ἐν οἷς φησι,

καὶ μετὰ τῶν [i]σύ γε πῖνε καὶ ἔσθιε, καὶ μετὰ τοῖσιν
[k]ἵζε, καὶ ἄνδανε [l]τοῖς ὧν μεγάλη δύναμις.

[m]ὅτι γε μὴν οὐκ ἄλλους τινὰς ἢ τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας λέγει [n]μεγάλην ἔχειν δύναμιν πρὸς ἀνθρώπων ὠφέλειαν, εἰ [o]συνεσθίοι καὶ συμπίνοι τις αὐτοῖς καὶ συγκαθέζοιτο, [p]δεδήλωκεν·

ἐσθλῶν μὲν γὰρ ἄπ' ἐσθλὰ μαθήσεαι· [q]ἢν δὲ κακοῖσι
συμμιγῇς, ἀπολεῖς καὶ τὸν ἐόντα νόον.

Μηδὲ λεγέτω τις ὅτι [r]τῷ μανθάνειν, ἢ τῷ διδάσκειν ἃ χρὴ, [s]τὸ γεωργεῖν ἐμπόδιον· οὐ γὰρ ἔοικεν οὕτως ἔχειν, εἰ δὴ 372
μάλιστ' [t]ἂν οὕτω καὶ ἐπὶ [v]πλεῖστον ὁ μὲν μανθάνων συνείη τῷ διδάσκοντι, ὁ δὲ διδάσκων διὰ χειρὸς [w]ἔχοι τὸν μανθάνοντα. Τούτου δὲ τοιούτου ὄντος, ὁ πόρος ἐκ γεωργίας φαίνεται ὢν τῷ φιλοσόφῳ [x]χρησιμώτατός τε καὶ πρεπωδέστατος.

19 [a]Ξενοφῶντος ἐκ τῶν Ἀπομνημονευμάτων.

Ταῦτα δὲ, ὦ Κριτόβουλε, ἐγὼ διηγοῦμαι, ἔφη ὁ Σωκράτης, ὅτι περ τῆς γεωργίας οὐδὲ οἱ πάνυ μακάριοι δύνανται

[h] ὑφορώμενον] ἐφορώμενον A.
[i] γε συ] σύ γε A. B.
[k] ἵζε] ἵζεο A. Trinc.
[l] τοῖς] τοῖς δ' Trinc.
[m] ὅτι γε μὴν] ὅτι μὲν οὖν A.
[n] λέγει μεγάλην ἔχειν] μεγάλην ἔχειν λέγει A.
[o] συνεσθίοι] συνεσθίει a p. m. A.
[p] δεδήλωκεν] δ. ἐν τούτοις A. m. sec. et B. In B. leguntur item sequentia. τὸ μέντοι φαύλοις καὶ μοχθηροῖς τὸν τρόπον συνδιατρίβειν καὶ κοινωνεῖν αὐτοῖς διαίτης ὅσον ἐπισφαλὲς, ἐν ἑτέροις.
[q] ἢν] εἰ A. m. p.
[r] τῷ] τὸ τῷ A. m. p.
[s] τῷ] τὸ A. Trinc.
[t] ἂν om. B.
[v] πλεῖστον] πλείστων A.
[w] ἔχοι] ἔχει A.
[x] πρεπωδέστατος] χρησιμώτατός τε καὶ πρεπωδέστατος A. B.

19.

[a] Sic A. m. sec. ἐν ταυτῷ p. m. Simpl. Ξενοφῶντος Tr. v. Œconomic. c. 5.

ἀπέχεσθαι. Ἔοικε γὰρ αὐτῆς ἡ ἐπιμέλεια εἶναι ἅμα τε ἡδυπάθειά τις, καὶ οἴκου αὔξησις, καὶ σωμάτων ἄσκησις, [b] καὶ εἰς τὸ δύνασθαι ὅσα ἀνδρὶ [c] ἐλευθέρῳ προσήκει. Πρῶτον μὲν γὰρ ἀφ᾽ ὧν ζῶσιν ἄνθρωποι, ταῦτα ἡ γῆ φέρει [d] ἐργαζομένοις, καὶ ἀφ᾽ ὧν τοίνυν ἡδυπαθοῦσι προσεπιφέρει· ἔπειτα δὲ [f] καὶ θεοὺς κοσμοῦσι καὶ βωμοὺς καὶ ἀγάλματα, καὶ [g] οἵοις αὐτοὶ κοσμοῦνται, καὶ ταῦτα μετὰ ἡδίστων ὀσμῶν καὶ θεαμάτων παρέχει· ἔπειτα δὲ ὄψα [h] τὰ μὲν πολλὰ φύει, τὰ δὲ τρέφει. Καὶ γὰρ ἡ προβατικὴ τέχνη συνῆπται τῇ γεωργίᾳ, ὥστ᾽ ἔχειν καὶ θεοῖς ἐξαρέσκεσθαι θύοντας, καὶ αὐτοὺς χρῆσθαι. Παρέχουσα δὲ ἀφθονώτατα [i] [ἀγαθὰ] οὐκ ἐᾷ ταῦτα μετὰ μαλακίας λαμβάνειν, ἀλλὰ [k] ψύχη τε χειμῶνος καὶ θάλπη θέρους ἐθίζει καρτερεῖν. Καὶ τοὺς μὲν αὐτουργοὺς γυμνάζουσα διὰ τῶν χειρῶν ἰσχὺν αὐτοῖς προστίθησι, τοὺς δὲ τῇ ἐπιμελείᾳ γεωργοῦντας ἀνδρίζει, πρωΐ τε [l] ἐγείρουσα καὶ πορεύεσθαι σφοδρῶς ἀναγκάζουσα· καὶ γὰρ ἐν τῷ χωρίῳ καὶ ἐν τῷ ἄστει [m] [ἀεὶ] ἐν ὥρᾳ αἱ ἐπικαιρόταται πράξεις εἰσίν. Ἔπειτα δὲ ἤν τε σὺν ἵππῳ ἀρήγειν τῇ [n] χώρᾳ βουληθῇ τις, τὸν ἵππον [o] ἱκανωτάτη ἡ γεωργία [p] τρέφειν· ἤν τε πεζῇ, σφοδρὸν [q] παρέχει τὸ σῶμα ἐν ταῖς [r] θήραις [s] φιλοπονεῖσθαι, [t] συνεπαίρει τε ἡ γῆ, καὶ κυσὶν εὐπέτειαν τροφῆς παρέχουσα, καὶ θηρία συμπαρατρέφουσα. [v] Ὠφελούμενοι δὲ ἀπὸ τῆς γεωργίας καὶ οἱ

[b] καὶ alias abest. GESNER.
[c] ἐλευθέρῳ] ἐλεύθερα A.
[d] ἐργαζομένοις] ἐργαζομένη B.
[f] ὅσα βωμοὺς κοσμοῦσι] καὶ θεοὺς κοσμοῦσι καὶ βωμοὺς A. B. καὶ θεοὺς κοσμοῦσι καὶ ἀγάλματα καὶ βωμοὺς Trinc. Pro θεοὺς f. ὅσοις.
[g] οἷς] οἵοις A. οἴκους Trinc.
[h] πολλὰ τὰ μὲν] τὰ μὲν πολλὰ A. Trinc.
[i] ἀγαθὰ om. A. Trinc.
[k] ψύχει—θάλπει] ψύχη—θάλπη A.
[l] ἐγείρουσα] ἀγείρουσα Trinc.
[m] ἀεὶ om. A. Trinc.
[n] χώρᾳ] πόλει Gesn. marg.
[o] ἱκανωτάτη ἡ γεωργία] ἱκανοτάτη ἡγεμονία Trinc.
[p] συντρέφειν] τρέφειν A. Trinc.
[q] παρέχει] παρέχῃ Trinc.
[r] θήραις τε] τε om. A. Trinc.
[s] φιλοπονεῖσθαι] ἐπιφιλοπονεῖσθαι συνεπαίρει τῇ γῇ Gesn. marg.
[t] συνεπαίρει τε] συνεπαίρεται A. B.
[v] ὠφελόμενοι] ὠφελούμενοι A. Tr.

κύνες καὶ οἱ ἵπποι ἀντωφελοῦσι τὸν χῶρον· ὁ μὲν ἵππος πρωΐ τε κομίζων τὸν κηδόμενον εἰς τὴν ἐπιμέλειαν, καὶ ἐξουσίαν παρέχων [w] τοῦ δείλης ἀπιέναι· αἱ δὲ κύνες τά τε θηρία [x] συνεξαίρουσαι κωλύουσι ἀπὸ λύμης καρπῶν καὶ προβάτων, καὶ τῇ [y] [τε] ἐρημίᾳ τὴν ἀσφάλειαν συμπαρέχουσαι. Συμπαρορμᾷ δέ τι καὶ εἰς τὸ ἀρήγειν σὺν ὅπλοις τῇ χώρᾳ ἡ γεωργία· [[z] καὶ ἡ γῆ τοὺς γεωργοὺς] ἐν τῷ μέσῳ τοὺς καρποὺς [a] τρέφουσα, τῷ κρατοῦντι λαμβάνειν. Καὶ δραμεῖν τε καὶ βαλεῖν καὶ πηδῆσαι τίς ἱκανωτέρους τέχνη [b] γεωργίας παρέχεται; τίς δὲ τοῖς ἐργαζομένοις τέχνη πλείω ἀντιχαρίζεται; τίς δ' ἥδιον τὸν ἐπιμελούμενον δέχεται, προτείνουσα προσιόντι λαβεῖν ὅ τι [c] χρήζει; τίς δὲ ξένους ἥδιον, ἢ ἀφθονώτερον δέχεται; χειμάσαι [d] δὲ πυρὶ ἀφθόνῳ καὶ θερμοῖς λουτροῖς [e] ποῦ πλείων εὐχέρεια [f] ἢ ἐν χωρίῳ; ποῦ δὲ ἥδιον θερίσαι ὕδασί τε καὶ πνεύμασι καὶ σκιαῖς, ἢ κατ' ἀγρόν; τίς δὲ ἄλλη θεοῖς ἀπαρχὰς πρεπωδεστέρας παρέχει, ἢ ἑορτὰς πληρεστέρας ἀποδεικνύει; τίς δὲ οἰκέταις προσφιλεστέρα, ἢ γυναικὶ ἡδίων, ἢ τέκνοις ποθεινοτέρα, ἢ φίλοις εὐχαριστοτέρα; Ἐμοὶ μὲν θαυμαστὸν δοκεῖ εἶναι, [g] εἴ τις ἐλεύ-
θερος ἄνθρωπος [i] ἢ κτῆμά τι [h] τούτου ἥδιον κτᾶται, ἢ ἐπι- 373
μέλειάν τινα ταύτης εὕρηκεν ἡδίω, ἢ ὠφελιμωτέραν εἰς τὸν βίον. Ἔτι δὲ ἡ γῆ [k] θεὸς οὖσα τοὺς δυναμένους καταμαν-

[w] τῆς] τοῦ A. B. ὀψὲ Gesn. marg.

[x] ἀπερύκουσαι] συνεξαίρουσαι κωλύουσι A. B. συνεξαίρουσαι Trinc. ubi desunt seqq. usque ad συμπαρέχουσαι inclusive.

[y] τε om. A. B.

[z] καὶ ἡ γῆ τοὺς γεωργοὺς om. A. Trinc.

[a] τοῦ καρποῦ τρέφουσα καὶ] τοῦ καρποῦ στρέφουσα τῷ A. Trinc.

[b] γεωργίας] γεωργίᾳ Trinc.

[c] χρῄζοι] χρήζει A. m. p.

[d] τε] δὲ A. Trinc.

[e] (ποῦ πλείων εὐμάρεια ἐν χώρῳ τῳ;)] Parenthesis diversitatem lectionis indicat. Gesner. Parenthesi inclusa desunt A. B. Trinc.

Ib. πλείων εὐχέρεια] πλει^ω εὐχέρειαι A. πλείω εὐχέρεια Trinc.

[f] ἢ om. A. Trinc. Mox ἥδιον Trinc.

[g] εἴ τις] ὅτι ὁ A. B. ἤ τις Trinc.

[h] τούτου] τοῦτο Trinc.

[i] ἢ om. A. B.

[k] θέλουσα] θεὸς οὖσα A. Trinc.

θάνειν καὶ δικαιοσύνην διδάσκει· [l]τοὺς γὰρ ἄριστα [m]θεραπεύοντας αὐτὴν πλεῖστα ἀγαθὰ ἀντιποιεῖ. Ἢν δ' ἄρα ὑπὸ πλήθους ποτὲ στρατευμάτων τῶν ἔργων [n]στερηθῇ ἡ γῆ, οἱ ἐν τῇ γεωργίᾳ ἀναστρεφόμενοι, καὶ σφοδρῶς καὶ ἀνδρικῶς παιδευόμενοι, οὗτοι εὖ παρεσκευασμένοι τὰ σώματα καὶ τὰς ψυχὰς, ἐὰν μὴ θεὸς [o]κωλύῃ, δύνανται ἰόντες εἰς τὰ τῶν κωλυόντων λαμβάνειν ἀφ' ὧν θρέψονται· πολλάκις δ' ἐν τῷ πολέμῳ καὶ ἀσφαλέστερόν ἐστι σὺν τοῖς ὅπλοις τὴν τροφὴν μαστεύειν, ἢ σὺν τοῖς γεωργικοῖς ὀργάνοις. Συμπαιδεύει δὲ καὶ εἰς τὸ ἄρχειν [p]ἡ γεωργία· ἐπί τε γὰρ τοὺς πολεμίους μετ' ἀνθρώπων δεῖ ἰέναι, τῆς τε γῆς σὺν ἀνθρώποις ἐστὶν ἡ ἐργασία. Τὸν οὖν μέλλοντα γεωργήσειν εὖ δεῖ τοὺς ἐργαστῆρας καὶ προθύμους παρασκευάζειν καὶ πείθεσθαι ἐθέλοντας· τόν τε ἐπὶ πολεμίους ἄγοντα ταῦτα [q]δεῖ μηχανᾶσθαι, δωρούμενόν τε [r]οἷς δεῖ τοὺς ἀγαθοὺς, καὶ κολάζοντα τοὺς ἀτακτοῦντας. Καὶ παρακελεύεσθαι δὲ πολλάκις οὐδὲν ἧττον δεῖ τοῖς ἐργάταις τὸν γεωργὸν, ἢ τὸν στρατηγὸν τοῖς στρατιώταις· καὶ ἐλπίδων δὲ ἀγαθῶν [s]οὐθὲν ἧττον [t]τῶν ἐλευθέρων οἱ δοῦλοι δέονται, ἀλλὰ καὶ μᾶλλον ὅπως μένειν ἐθέλωσι. Καλῶς δὲ κἀκεῖνος εἶπεν, ὃς ἔφη, τὴν γεωργίαν τῶν ἄλλων τεχνῶν μητέρα καὶ τροφὸν εἶναι· εὖ μὲν γὰρ φερομένης τῆς γεωργίας ἔρρωνται καὶ ἄλλαι τέχναι ἅπασαι, ὅπου δὲ ἀναγκασθῇ ἡ γῆ χερσεύειν, ἀποσβέννυνται καὶ αἱ ἄλλαι τέχναι σχεδόν τι καὶ κατὰ γῆν καὶ κατὰ θάλατταν.

[l] τοὺς] τοῖς A. B.
[m] θεραπεύοντας] θεραπεύουσιν A. B.
[n] στερηθῶσιν] στερηθῇ ἡ γῆ A. Trinc.
[o] κωλύει] κωλύῃ A.
[p] ἡ om. A.
[q] δεῖ] δεῖν A. Trinc.
[r] τοῖς ποιοῦσιν ἃ δεῖ ποιεῖν] οἷς δεῖ A. N. Trinc.
[s] οὐθὲν] οὐδὲν A.
[t] τῶν ἐλευθέρων οἱ δοῦλοι] οἱ δοῦλοι τῶν ἐλευθέρων A.

ΕΤΙ ΠΕΡΙ ΓΕΩΡΓΙΑΣ, ΕΙΣ ΤΟ ΕΝΑΝΤΙΟΝ. ΝΖ.

1 [a] Μενάνδρου.

Ὁ τῶν γεωργῶν ἡδονὴν ἔχει βίος,
ταῖς ἐλπίσιν [b] τἀλγεινὰ παραμυθούμενος.

2 [a] Διφίλου.

Ἓν ὀνάριον ἐξ ἀγροῦ μοι [b] καταβαίνει,
[c] καθ' ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἀγαπητῶς
[d] ὥσπερ [e] κανοῦν μοι [f] πάντ' [g] ἀνεσκευασμένον,
σπονδὴν, [h] ὀλὰς, ἔλαιον, ἰσχάδας, μέλι.

3 [a] Μενάνδρου.

Ἐν τοῖς πολεμίοις ὑπερέχειν τὸν ἄνδρα δεῖ·
τὸ γὰρ γεωργεῖν ἔργον ἐστὶν οἰκέτου.

4 [a] Ἀναξιλάου ἐκ Λυροποιοῦ.

[b] Πῶς ἔχεις; ὡς [c] ἴσχνος εἶ;
[d] Ἀπόλλυμαι· τρέφω γὰρ ἐν ἀγρῷ χωρίον.

1.

[a] Cleric. p. 224. Τοῦ αὐτοῦ A. ubi collocatur hoc fr. infra post n. 9. Εὐριπίδου Trinc.

[b] τἀλγεινὰ] τὰ δεῖνα A.

2.

[a] Sic A. Trinc.

[b] καταβαίνων ἐμοῦ] Hos tres versus ita depravatos ut vix versus viderentur ex conjectura sanavimus. Hoc καταβαίνων ἐμοῦ fecimus ex καταβαίνει. Grotius.

[c] καθ' ἕκαστον τῶν ἐνιαυτῶν ἀγαπητῶς ἄγει] Fuerat ante, καθ' ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἀγαπητῶς, nec quicquam amplius, omissa voce ultima ob initii similitudinem. Salmasius ita malebat, ἓν ὀνάριον ἐξ ἀγροῦ Ἐμοὶ καταβὰν καθ' ἕκαστον ἐνιαυτῶν ἄγει. Grotius.

[d] ὥσπερ] ὥ περ Trinc.

[e] ἱκανοῦν] κανοῦν B. Vide Porsonum ad Aristoph. Pac. 855.

[f] πάντ'] πᾶνγ' B.

[g] ἀνεσκευασμένον] ἐνεσκευασμένον B. Arsen.

Ib. ἐπισκευασμένος] ἐπισκευάζεσθαι proprium est jumentorum. Nos id restituimus, cum esset ὥσπερ ἱκανοῦν μοι πάντ' ἀνεσκευασμένον. Grotius.

[h] ὀλὰς] οὐλὰς A. B.

3.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 224.

4.

[a] Ἀναξιλάου ἐκ μυρπίου (ε superscr.). Sic fere A. Ἀναξιλάου ἐκ μυρεπίου B. *Anaxilai* ἐκ μυροπίου Gesner. Simpliciter *Anaxilaus* Grotius, sed in not. ms. *Anaxilaus in lyrarum fabro.* Ἀναξίων Trinc. Videantur Casaubonus et Schweighæuserus ad Athenæi IV. p. 183. B.

[b] πῶς] παῖς A. εἰς pro ὡς Trinc.

[c] ἴσχανος] Legit ἰσχνὸς Valcken.

[d] ἀπόλλυμαι τρέφω γὰρ ἐν ἀγρῷ

5 [a] Μενάνδρου Γεωργοῦ.

Ἀγρὸν εὐσεβέστερον γεωργεῖν οὐδένα 50
οἶμαι· φέρει γὰρ [b] ὅσα θεοῖς ἄνθη καλὰ,
κιττὸν, δάφνην, [c] κριθὰς δ' ἐὰν σπείρω, πάνυ
[d] δικαίως ἀπέδωκ', ὅσα ἂν καταβάλω.

6 [a] Φιλήμονος.

Ἐγὼ τὸν ἀγρὸν ἰατρὸν ἐλελήθειν ἔχων·
τρέφει γὰρ οὗτος ὥσπερ ἀρρωστοῦντά με,
σιτάρια [b] μικρὰ προσφέρων, οἴνου θ' ὅσον
[c] ὀσμήν· [d] λαχάνων ἄγει τὶ, καὶ, νὴ τὸν Δία,
τὰ [e] πετραγεῖα ταῦτ' ὀψάρια, κάππαριν, θύμον,
[f] ἀσπάραγον· αὐτὰ ταῦτα καὶ δέδοικα μὴ 374
λίαν [g] ἀπισχναίνων με ποιήσῃ νεκρόν.

χωρίον] Sic infra: ἐγώ γ' ὁρῶ τὸν ἀγρὸν, οὐχ ὅπως τρέφῃ Αὐτός με, παρ' ἐμοῦ δ' ἵνα τροφὴν προσλαμβάνῃ. Imitatus est Martialis, *Pascitur heic, ibi pascit ager.* Similem locum Symmachi indicavit Salmasius: *ut rus quod solebat alere, nunc alatur.* Idem Salmasius ἀπόλλυμαι illud recte ad hunc versum retraxit. Grotius.

5.

[a] Sic A. Cleric. p. 32. Deest locus Trinc.

[b] ὅσα θεοῖς] ὡς θεοῖς Grotius.

[c] κριθὰς δ' ἐὰν] Ita posuimus pro κριθάς τε ἄν. Grotius. δ' ἂν A. B.

[d] δίκαιος ἀπέδωκεν τοσ' ὅσσ' ἂν κατέβαλον] Fuerat, δικαίως ἀπέδωχ' ὅσα ἂν καταβάλω. Monuit autem Salmasius δίκαιος recte heic scribi non δικαίως, Polluce auctore, qui sic scribit, Μένανδρος δίκαιον γήδιον καλεῖ ὃ μηδὲν πλέον τοῦ σπέρματος ἐκφέρει, hunc ipsum, ni fallor, locum respiciens. Grotius. Longe melius Bentleius, κριθάς τ' ἐὰν σπείρω, πάνυ Δίκαιος ἀποδίδωσ', ὅσας ἂν καταβάλω. Fragmentum hoc Trincavello deest.

6.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 348.

[b] μικρὰ] σμικρὰ A.

[c] ὀσμὴν ἄγειν, λαχάνων τι] Ita sensui consuluimus: nam in libris legitur ὀσμὴν λαχάνων ἄγει τὶ vocibus transpositis. Grotius. Pace viri magni, sensui hic parum consuluit, verba vero et constructionem labefactavit. Lege, ut Stobæus habet, et distingue, Σιτάρια μικρὰ προσφέρων, οἴνου θ' ὅσον Ὀσμήν· λαχάνων ἄγει τι. Eleganter dixit auctor, οἴνου ὅσον ὀσμὴν, *vini non amplius odorem.* Bentleius.

[d] λαχάνων] λαχάνου A.

[e] πετραγεῖα] πετράνη Arsen. πετράγεια B. πετραῖα Grotius ex emendatione Salmasii.

[f] ἀσπάραγον] ἀσπάραττον A.

[g] ἀπισχναίνων] ἐπισχαίνων Trinc.

7 [a] Κωμικοῦ ποιητοῦ.

[b] Ἐγὼ γεωργῶ τὸν ἀγρὸν, οὐχ [c] ὅπως τρέφῃ
αὐτός με, παρ' ἐμοῦ δ' ἵνα τροφὴν προσλαμβάνῃ.
σκάπτω γὰρ αὐτὸς ἐπιμελῶς, [d] σπείρω τ' ἀεὶ,
καὶ πάντα ποιῶ πρὸς τὸ δοῦναι καὶ λαβεῖν.
ὁ δὲ λαμβάνει μὲν, ἀποδίδωσι δ' [e] οὐδὲ ἕν.
ἀποστερητὴν ἔλαθον ἀγοράσας ἀγρόν.
ἔσπειρα μὲν [f] κριθῶν μεδίμνους εἴκοσι,
τούτων ἀπέδωκεν οὐδ' ὅλους τρισκαίδεκα·
οἱ δ' ἑπτ' ἐπὶ [g] Θήβας ἐστράτευσάν μοι, δοκῶ,
[h] τὸ τῶν γυναικῶν σχῆμα διατηρεῖ μόνον.
[i] Ὀνησιφόρα γένοιτο. Τοῦτο γίγνεται.
ὁ γὰρ φέρει νῦν οὗτος, εἷς ὄνος φέρει.

7.

[a] Sic A. Trinc. Philemoni tribuit Clericus p. 348.

[b] ἔγωγ' ὁρῶ] ἔγωγε ὁρῶ Trinc. e cujus vestigiis ἐγὼ γεωργῶ restituit Dobræus ad Aristophanica Porsoni p. 66.

[c] ὅπως] ἵνα A.

[d] σπείρω] σπέρω Trinc.

[e] οὐδὲ ἕν] οὐδὲν A.

[f] κριθῶν] κριθὴν A.

[g] Θήβας] Θήβαις A.

[h] τὸ τῶν γυναικῶν σῆμα διατηρεῖν μόνον] τὶ τ. γ. σχῆμα διατηρεῖ μ. A. διατηρεῖ item Arsen. Trinc.

Ib. τὸ τῶν γυναικῶν σῆμα διατηρουμένῳ. Pendet ex superiori illo μοι. Ita autem correximus cum exstaret διατηρεῖν μόνον. Grotius. Sed, opinor, rationem hujus correctionis nemo expiscari poterit; neque cum vertit τὸ τῶν γυναικῶν σῆμα *Sepulcrum Niobeidum.* Quid hic faciunt *Niobeides?* aut cur γυναῖκες *mulieres* eas solas hic denotent? Equidem sic potius legerim, Εἰ δ' ἑπτ' ἐπὶ Θήβας ἐστράτευσάν μοι, δοκῶ Τὸ τῶν γυναικῶν σῆμα διατηρεῖν μόνον Ὀνησιφόρα γένοιτο· τοῦτο γίνεται, Ὁ γὰρ φέρει, νῦν οὗτος εἷς ὄνος φέρει. *Quod si septem ad Thebas bellum mihi inferrent, Videor mihi mulierum augurium solum observaturus,* ΟΝΗΣΙΦΟΡΑ ΓΕΝΟΙΤΟ· (*fausta sint.*) *hoc quidem fit, Omne enim quod* ager *fert, unus hic asinus nunc portat.* Videtur alludere ad notum eo tempore drama tragici cujusdam (non enim Æschyli nec Euripidis) ubi chorus mulierum ea verba ὀνησιφόρα γένοιτο quasi omen quoddam usurpaverint. Jocum quoque captat ex ridicula etymologia, quasi ὀνησιφόρα essent, quæ ὄνος φέρειν possit. Bentleius. Grotius in mss. "An Semele bustum? Vide Hyginum "fab. 9."

[i] ὀνησιφόρα] ὀνησιφόρους ut videtur A. ea compendii forma quam exhibet Bastius tab. palæogr. V. l. 3. in v. τριχοφόρους.

8 [a] Φιλήμων ἐν Ὑποβολιμαίῳ.

Ἀεὶ γεωργὸς εἰς νέωτα πλούσιος.

9 [a] Μενάνδρου.

[b] Ἔχει τὶ τὸ πικρὸν τῆς γεωργίας γλυκύ.

10 [a] Φαβωρίνου.

Φασὶ δὲ καὶ ἑταιρικόν τινα ἀναγκαζόμενον ὑπὸ τοῦ πατρὸς γεωργεῖν ἀπάγξασθαι, γράψαντα ἐν [b] γραμματιδίῳ, ὅτι ἀπέραντόν τι καὶ ἀκατάστροφον ἡ γεωργία ἦν· σπείρειν, ὅπως θερίσωμεν, εἶτα θερίζειν, ὅπως σπείρωμεν· ἄτοπόν τι τὸ χρῆμα τῆς περιόδου.

11 [a] Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ τῆς Παιδείας.

Σκάπτω καὶ σπείρω καὶ μάλα μικρὸν γήδιον, οὐ μέντοι πονηρόν γε, ἀλλὰ πάντων δικαιότατον· ὅ τι γὰρ [c] [ἂν] λάβο σπέρμα, καλῶς καὶ δικαίως ἀπεδίδου αὐτό τε, καὶ τόκον οὐδέν τι πολύν, [e] ἤδη δὲ ποτ' ἔδωκεν ὧν ἔλαβε.

12 [a] Ἐκ τῶν Ἀριστοτέλους Χρειῶν.

Ζήνων ὁ Στωϊκὸς φιλόσοφος ὁρῶν τινα τῶν γνωρίμων ὑπὸ τοῦ ἀγροῦ περισπώμενον, εἶπεν· Ἐὰν μὴ σὺ τοῦτον ἀπολέσῃς, οὗτός σε ἀπολέσει.

13 [a] Ἀριστίππου.

Ἀρίστιππος λέγοντος [b] αὐτῷ τινος, Διὰ σὲ ἀπόλωλεν ὁ ἀγρός· Οὐκ οὖν, ἔφη, κάλλιον δι' ἐμὲ τὸν ἀγρὸν, ἢ διὰ τὸν ἀγρὸν ἐμέ;

8.

[a] Sic A. Cleric. p. 334. Simpl. Φιλήμων Trinc.

9.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 226.
[b] τὶ πικρὸν] τὶ τὸ πικρὸν A.

10.

[a] Sic A. Trinc.
[b] γραμματιδίῳ] γράμματι ἰδίῳ A.

11.

[a] Sic A. Scil. Cyropæd. VIII. 3, 38. Simpl. Ξενοφῶντος Trinc.
[b] ἂν λάβοι] λάβῃ A. ἂν om. Tr.
[c] ἢ δήποτ'] ἴδει δὲ ποτ' A. ἴδει δέῃ B. οὐδέποτ' Gesn. marg. Xenophon ἤδη δέ ποτε ὑπὸ γενναιότητος καὶ διπλάσια ἀποδέδωκεν ὧν ἔλαβεν.

12.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

13.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] αὐτῷ τινος] τινος αὐτῷ A. Paullo aliter narrat Diogenes Laertius II. 77. ubi v. Menag.

ΠΕΡΙ ΗΣΥΧΙΑΣ. ΝΗ.

1 [a] Εὐριπίδου Ἀντιόπῃ.

[b] Ὅστις δὲ πράσσει πολλὰ, μὴ πράσσειν παρὸν,
μωρὸς, παρὸν ζῆν ἡδέως ἀπράγμονα.

2 [a] Εὐριπίδου Ἰφιγενείας.

Ζηλῶ σε [b] γέρον,
[c] ζηλῶ σ' ἀνδρῶν, [d] ὃς ἀκίνδυνον
βίον [e] ἐξεπέρασ' [f] ἀγνὼς, ἀκλεής.
τοὺς δ' ἐν τιμαῖς ἧσσον [g] ἐπαινῶ.

3 [a] Εὐριπίδου Βακχῶν.

Ὁ δὲ τᾶς ἡσυχίας
βίοτος, καὶ τὸ φρονεῖν
ἀσάλευτον (τε) μένει, καὶ
ξυνέχει [b] δώματα, [c] πόρρω
γὰρ, ὅμως αἰθέρα ναίοντες ὁρῶσι
τὰ βροτῶν οὐρανίδαι.

4 [a] Εὐριπίδου Ἡρακλειδῶν.

Καλὸν [b] δ' ἔξω πραγμάτων [c] ἔχειν πόδα
εὐβουλίας τυχόντα τῆς ἀμείνονος.

5 [a] Εὐριπίδου Οἰνόμαος.

Ὁ πλεῖστα πράσσων πλεῖσθ' ἁμαρτάνει βροτῶν.

1.

[a] Sic A. Scil. fr. 13. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.
[b] Vide Valckenær. Diatr. Eurip. p. 82.

2.

[a] Sic A. Scil. Aul. 16. Deest lemma Trinc.

[b] γέρον] γέρων Voss.
[c] ζηλῶ δ'] ζηλῶ σε A. Voss. Trinc.
[d] ὃς] ὡς A.
[e] ἐξεπέρασ'] ἐξεπέρασας A. Trinc.
[f] ἀγνώστως] ἀγνὼς Gesn. marg.
[g] ἐπαινῶ] ζηλῶ Gesn. marg.

3.

Sic A. Scil. 388. Deest lemma Trinc.
[b] δώματα] δῶμα Gesn. marg.
[c] πρόσω] πόρρω A. Voss. Trinc. Gesn. marg. Mox ἀλλ' om. A. Voss. Trinc.

4.

[a] Sic A. Scil. 110. Deest lemma Trinc.
[b] δ' ἔξω] δέ γ' ἔξω Grotius ex Euripide.
[c] ἔχειν] ἔχει Trinc.

5.

[a] Sic A. Scil. fr. 1. Αἰσχύλου Tr.

6 [a] Αἰσχύλου Προμηθέως δεσμώτου.

Τὰ μηδὲν ὠφελοῦντα μὴ πόνει μάτην.

7 [a] Ἐπιχάρμου ἐξ Αὐτομόλου.

Ἁ δ' ἡσυχία χαρίεσσα, γυνά, 375
καὶ [b] σωφροσύνας πλατίον οἰκεῖ.

8 [a] Μενάνδρου Ὑδρίας.

Ὡς ἡδὺ τῷ μισοῦντι τοὺς φαύλους τρόπους
ἐρημία· καὶ τῷ μελετῶντι μηδὲ ἓν
πονηρὸν ἱκανὸν κτῆμ' ἀγρὸς [b] τρέφων καλῶς.
ἐκ τῶν ὄχλων δὲ ζῆλος, ἥ τε κατὰ πόλιν
αὕτη τρυφὴ λάμπει μὲν, ἐς δ' [c] ὀλίγον χρόνον.

9 [a] Πινδάρου Ὑπορχημάτων.

Τὸ κοινόν τις ἀστῶν ἐν εὐδίᾳ καταθεὶς,
ἐρευνησάτω [b] μεγαλάνορος [c] ἡσυχίας
ἱερὸν φάος, στάσιν ἀπὸ [d] πραπίδος
[e] ἐπικότον ἀνελὼν, πενίας δότειραν,
ἐχθρὰν κουροτρόφον.

10 [a] Κερκίδα Μιμιάμβων.

[b] Ὁ τᾶς [c] ῥικνᾶς χελώνας [d] ἀμναμονεῖ·
οἶκος γὰρ ἄριστος [e] ἀλαθέως καὶ φίλος.

6.

[a] Sic fere A. qui habet δεσμ^ῶν^. B. Προμηθεὺς δεσμώτης. Sc. v. 44. Deest lemma Trinc.

7.

[a] Sic A. Simpl. Ἐπιχάρμου Tr.
[b] σωφροσύνης] σωφροσύνας Arsen.

8.

[a] Sic A. Cleric. p. 178. Simpl. Μενάνδρου Trinc.
[b] τρέφων—ἥτε om. B. ubi mox πτόλιν.
[c] ὀλίγον χρόνον] ὀλίγον δὲ χρόνον Voss.

9.

[a] Sic A. Simpl. Πινδάρου Trinc. v. Fr. inc. 7.
[b] μεγάλ' ἂν ὅρος] μεγαλάνορος B. et sic Grotius.
[c] ἡσυχίας] ἡσυχίαν Trinc.
[d] πραπίδος] πραπίδων B.
[e] ἐπίκοτον ἀνελών. Sic Grotius. Vulgo ἐπικόπον ἀνέμων. ἐπικότον A. ἐπὶ κόπον B. Mox δώτειραν pro δότειραν Grotius.

10.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.
[b] τὸ] ὁ A. B.
[c] ῥικνᾶς] ῥικνὰς A. B.
[d] ἀμνάμονα] ἀμναμονεῦ A. B. Levitur correxi.
[e] ἀλαθέως] ἀλλὰ θεὸς A. B. Æsop. Fab. Nev. 105. Flor. 79. Schneid. 105. Ζεὺς συγκαλεσάμενος

11 [a] Ἐκ τῶν Βίωνος Βουκολικῶν.

Οὐκ οἶδ', οὐδ' ἐπέοικεν, ἃ μὴ μάθομεν, πονέεσθαι.
εἴ μοι καλὰ πέλει τὰ μελύδρια, καὶ τάδε [b] μῶνα
κῦδος ἐμοὶ θήσοντι, τά μοι πάρος ὤπασε μοῖρα.
εἰ δ' οὐχ ἁδέα ταῦτα, τί μοι πολὺ [c] πλείονα μοχθῆν;
εἰ μὲν γὰρ [d] βιότω διπλόον χρόνον [e] ἄμμιν ἔδωκεν
ἢ Κρονίδας, ἢ Μοῖρα πολύτροπος, ὥστ' ἀνύεσθαι
τὸν μὲν ἐς εὐφροσύναν καὶ χάρματα, τὸν δ' ἐνὶ μόχθῳ,
ἦν τάχα μοχθήσαντί ποθ' ὕστερον ἐσθλὰ δέχεσθαι·
εἰ δὲ θεοὶ κατένευσαν ἕνα χρόνον ἐς βίον [f] ἐλθῆν
ἀνθρώποις, καὶ τόνδε [g] βραχὺν καὶ μήονα πάντων,
ἐς πόσον [h] ἆ δειλοὶ καμάτως κ' εἰς ἔργα πονεῦμες,
ψυχὰν δ' ἄχρι τίνος ποτὶ κέρδεα, καὶ ποτὶ τέχνας
βάλλομες, ἱμείροντες ἀεὶ πολὺ [i] πλήονος ὄλβω;
λαθόμεθ' ἦ ἄρα πάντες ὅτι θνατοὶ γενόμεσθα,
χὼς βραχὺν ἐκ μοίρας λάχομεν χρόνον.

12 [a] Ἀπολλώνιος Διονυσίῳ.

Καλὸν πρὶν παθεῖν διδαχθῆναι [b] πηλίκον ἐστὶν ἡσυχία.

13 [a] Πλάτωνος ἐκ τῆς Σωκράτους Ἀπολογίας.

Οὐ γάρ ἐστιν ὅστις ἀνθρώπων σωθήσεται οὔτε ὑμῖν οὔτε ἄλλῳ πλήθει οὐδενὶ γνησίως ἐναντιούμενος, καὶ διακωλύων

τὰ ζῶα πάντα εἱστία· μόνης δὲ χελώνης ὑστερησάσης, διαπορῶν τὴν αἰτίαν τῇ ὑστεραίᾳ ἐπυνθάνετο αὐτῆς, Διὰ τὶ μόνη ἐπὶ τὸ δεῖπνον οὐκ ἦλθες; Τῆς δὲ εἰπούσης, Φίλος οἶκος ἄριστος οἶκος, ἀγανακτήσας κατ' αὐτῆς παρεσκεύασεν αὐτὴν τὸν οἶκον αὐτὸν βαστάζουσαν περιφέρειν.

11.

[a] Sic A. Trinc. Notandum autem in Trinc. priorem hujus fragmenti versum cum postremo n. 9. cohærere. Secundo versui τοῦ αὐτοῦ præfigit A.

[b] μοῦνα] μόνα A.

[c] πλείονα] μείζονα B.

[d] βιότω] βιώτω A.

[e] ἀμῖν] ἄμβιν A. ἄμμιν B.

[f] ἐλθεῖν] ἐλθῆν Voss.

[g] βραχὺν] βραδὺν et mox μείονα pro μήονα A.

[h] ἆ δειλοὶ] ἀδειλοὶ A. ἆ δ. Trinc. Grotius.

[i] πλήονος] πλέονος Voss. A.

12.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

[b] πηλίκον] τηλίκον A. B.

13.

[a] Sic A. Scil. p. 31. E. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

πολλὰ ἄδικα καὶ παράνομα ἐν τῇ πόλει γίγνεσθαι· ἀλλ' ἀναγκαῖόν ἐστι τὸν τῷ ὄντι μαχούμενον ὑπὲρ τοῦ δικαίου, καὶ εἰ μέλλει ὀλίγον χρόνον σωθήσεσθαι, ἰδιωτεύειν, ἀλλὰ μὴ δημοσιεύειν.

14 [a]Πλουτάρχου ἐκ τοῦ Περὶ Ἡσυχίας.

Σοφὸν ἔοικε χρῆμα τὸ τῆς ἡσυχίας πρός [b]τε τὰ ἄλλα, καὶ εἰς ἐπιστήμην καὶ φρονήσεως μελέτην, λέγω δὲ οὐ τὴν καπηλικὴν καὶ ἀγοραίαν, ἀλλὰ τὴν μεγάλην, ἥ τις ἐξομοιοῖ θεῷ τὸν αὐτὴν ἀναλαβόντα. Αἱ μὲν γὰρ ἐν ταῖς πόλεσι καὶ τοῖς τῶν ἀνθρώπων ὄχλοις γιγνόμεναι μελέται γυμνάζουσι τὴν λεγομένην δριμύτητα, πανουργίαν οὖσαν· ὥστε τοὺς ἐν αὐταῖς ἄκρους οἷον ὑπὸ μαγείρων [c]τῶν ἐν ταῖς πόλεσι χρειῶν διαπεποικιλμένους, πόσα δὲ οὐχὶ καὶ διακονήματα δεινὰ ἐργάζεσθαι· ἡ δ' ἐρημία, σοφίας οὖσα γυμνάσιον, ἠθοποιὸς ἀγαθὴ, καὶ πλάττει καὶ μετευθύνει 376 τῶν ἀνδρῶν τὰς ψυχάς. Οὐδὲν γὰρ αὐταῖς ἐμπόδιόν ἐστι τῆς αὐξήσεως, οὐδὲ πρὸς πολλὰ καὶ μικρὰ νόμιμα προσπταίουσαι κάμπτονται εὐθὺ, καθάπερ αἱ ταῖς πόλεσιν ἐναπειλημμέναι ψυχαί· ἀλλ' ἐν ἀέρι καθαρῷ, καὶ τὰ πολλὰ ἔξω [d]διαιτώμενοι τῶν ἀνθρώπων, ἀνιᾶσιν [e]ὀρθαὶ καὶ πτεροφυοῦσιν, ἀρδόμεναι τῷ διαυγεστάτῳ [f]τε καὶ λειοτάτῳ ῥεύματι τῆς ἡσυχίας, ἐν ᾧ τά τε μαθήματα τοῦ νοῦ [g]θεοειδέστερα, καὶ καθαρώτερον [h]ὁρᾶν. Διὰ τοῦτό [i]τοι καὶ τῶν θεῶν τὰ ἱερὰ, ὅσα ἐκ τοῦ πάλαι ἀρχαίου νενόμισται, τοῖς ἐρημοτάτοις χωρίοις [k]οἱ πρῶτοι. Μάλιστα δὲ Μουσῶν τε

14.

[a] Sic A. Scil. T. V. p. 555 =835. Simpl. Πλουτάρχου Trinc.

[b] τε ἄλλα] τε τὰ ἄλλα Voss. Ars.

[c] τῶν ἐν] τῶν om. A.

[d] διαιτώμενοι] διαιτώμεναι Wyttenbach.

[e] ὀρθαὶ] ὀρθαὶ τῶν ἀνῶν A. τῶ ανων B.

[f] τε καὶ λειοτάτῳ] τελειοτάτῳ A.

[g] θεοδέστερα] θεοειδέστερα A. B. θεωδέστερα Trinc.

[h] ὁρᾶν] ὁρᾷ A. ὁμᾷ B. ὁρᾶν ἐστι Wyttenbach.

[i] τοι] σοι Trinc.

[k] οἱ πρῶτοι] Addo ἵδρυσαν. Gesn. Debebat saltem ἱδρύσαντο, quod habet ipse Plutarchus in loco si-

καὶ Πανὸς, καὶ Νυμφῶν, καὶ Ἀπόλλωνος, καὶ ὅσοι μουσικῆς ἡγεμόνες θεοὶ, διακρίναντες ὡς οἶμαι τὰς παιδείας [1] κατὰ τῶν ἐν ταῖς πόλεσι δεινῶν τε καὶ μιαρῶν τινῶν.

ΠΕΡΙ ΝΑΥΤΙΛΙΑΣ ΚΑΙ ΝΑΥΑΓΙΟΥ. ΝΘ.

1 [a] Ὁμήρου Ὀδυσσείας.

Οὐ μὲν γάρ τί που ἐστὶ κακώτερον [b] ἄλλο θαλάσσης
ἄνδρα τε συγχεῦαι, εἰ καὶ μάλα καρτερὸς εἴη.

2 [a] Ἀλέξιδος ἐκ Συναποθνησκόντων.

Ὅστις διαπλεῖ θάλασσαν, ἢ μελαγχολᾷ,
ἢ πτωχός ἐστιν, ἢ θανατᾷ. Τούτων [b] τριῶν
ἑνός τ' ἀποτυχεῖν τοὐλάχιστον οὐκ ἔνι.

3 [a] Σοφοκλέους Σκυρίων.

[b] Ἦ ποντοναῦται τῶν ταλαιπώρων βροτῶν,
οἷς οὔτε δαίμων οὔτε τὶς θεῶν νέμων
πλούτου ποτ' ἂν νείμειαν ἀξίαν χάριν.
λεπτῆς [c] ἐπὶ ῥοπῆσιν ἐμπολὰς μακρὰς
ἀεὶ παραρρίπτοντες οἱ πολύφθοροι
ἢ 'σωσαν, ἢ 'κέρδαναν, ἢ διώλεσαν.

4 [a] Ἐκ τοῦ Ἀράτου Φαινομένων.

Τῆμος ἐπιρρήσσουσι νότοι, ὁπότ' Αἰγοκερῆϊ

mili II. p. 521. D. ἐνίδρυσαν Wyttenbachius.

[1] κατὰ] ἀπὸ Gesnerus, probante Wyttenbachio, qui in fine quid deesse suspicatur.

1.

[a] Sic A. Scil. Od. Θ. 138. Simpl. Ὁμήρου Trinc.
[b] ἄλλο om. A. Trinc.

2.

[a] Sic A. Εὐριπίδου Trinc.
[b] τριῶν] τῶν τριῶν A. Trinc. τῶνδε τῶν τριῶν B.

3.

[a] Sic A. Scil. fr. 4. Simpl. Σοφοκλέους Trinc.
[b] Ἦ] om. A. οἱ B.
[c] ἐπιρροπῆσιν] ἐπὶ ῥοπῆσιν A. B. v. Porsoni Advers. p. 215. qui versum ultimum, ut edidimus, correxit. Vulgo ἧς ὡς ἂν ᾖ κέρδανον. ἴσως ἂν B. κέρδαναν A. B.

4.

[a] Sic A. Scil. 292. Simpl. Ἀράτου Trinc.

[b] ἐμφέρετ' ἠέλιος· τότε δὲ κρύος ἐκ Διός ἐστι
ναύτῃ [c] μαλκιόωντι κακώτατον· ἀλλὰ καὶ ἔμπης
ἤδη πάντ' ἐνιαυτὸν ὑπὸ στείρῃσι θάλασσα
πορφύρει· ἴκελοι δὲ κολυμβάσιν [d] αἰθυίῃσι,
πολλάκις ἐκ νηῶν πέλαγος περιπαπταίνοντες
ἥμεθ' ἐπ' αἰγιαλοὺς τετραμμένοι· οἱ δ' ἔτι [e] πόρρω
κλύζονται, ὀλίγον δὲ διὰ ξύλον ἄϊδ' ἐρύκει.

5 [a] Φιλήτα Ἐπιγραμμάτων.

Γαῖαν μὲν φανέουσι θεοί ποτε· νῦν δὲ πάρεστιν
[b] λαιψηρῶν ἀνέμων μοῦνον ὁρᾶν [c] τέμενος.

6 [a] Ἀντιφάνους Ἐφεσίας.

Δύστηνος ὅστις ζῇ θαλάττιον βίον.
[b] τῶν γὰρ πλεόντων ζητεῖν ἑκατὸν στάδια
[c] ἐλθεῖν που δὴ κρεῖττον, ἢ πλεῦσαι πλέθρον.

[b] ἐμφέρετ'] συμφέρετ' B. Gesn. marg.

Ib. συμφέρετ'] Ita in Arato exstat. Versio autem Latina est Ciceronis. Grotius.

[c] μαλκιόοντι] μαλκώοντι Voss. μαλκίοντι A.

[d] αἰθύιῃσι] αἰθύῃσι Trinc.

[e] πόρρω] πόρσω B.

5.

[a] Sic A. φιλήτου Trinc.

[b] αἰψηρῶν] λαιψηρῶν A. B.

[c] τέμενος] τὸ μένος Valckenær. Diatr. Eurip. p. 239. Callimach. p. 268. improbante Jacobsio Anthol. Animadv. T. I. p. 388.

6.

[a] Sic A. 'Αντιφάνου Trinc.

[b] τῶν γὰρ πλεόντων ζητεῖν] Grotius, εἰ τῶν πλεόντων ζῇ τις.

[c] ἐλθεῖν που δὴ] ἐλθεῖν σπουδῇ A. B. ἐ. ποῦ διὰ γῆς Grotius in ed. ποδὶ δὴ in ms. nescio an ex Scaligeri vel Schotti emendatione, post δὴ enim scriptum *Sc.* Sic etiam Toupius. Τῶν γὰρ πλεόντων ζῇ τις; ἕκατον στάτια 'Ελθεῖν ποσὶν δὴ κρεῖττον Jacobsius in Athen. p. 186. Mirum neminem vidisse priorem syllabam v. στάδια contra legem et consuetudinem porrigi. Addere possis γὰρ in fine versus et in seq. legere ἐλθεῖν ποδὶ δή που κρ. Cogitavi etiam omissis που δὴ scribi posse, τῶν γὰρ πλεόντων ζῇ τις; . . . . 'Εκατὸν στάδι' ἐλθεῖν κρεῖσσον ἢ πλ. πλέθρον. Elmsleius putat quatuor fragmenta in unum coaluisse, hoc fere modo segreganda. 1. Δύστηνος, ὅστις ζῇ θαλάσσιον βίον. 2. Τῶν γὰρ πλεόντων οὔτινα ζῆν οἴομαι. Aut aliquid hujusmodi. 3. 'Εκατὸν στάδι' ἐλθεῖν ποδὶ κρεῖσσον ἢ πλεῦσαι πλέθρον. 4. Πλεῖς —πωλουμένων.

Ib. Sensus et versus in Græco non constant. Sensus tamen videtur, potius et tutius esse vel centum stadiis per terram aliquo pervenire, quo navigare liceret et-

[d] πλεῖς τὴν θάλατταν σχοινίων [e] πωλουμένων.

7 [a] Ἀρχίππου.

Ὡς ἡδὺ [b] τὴν θάλατταν [c] ἀπὸ τῆς γῆς ὁρᾶν
ὦ μῆτέρ ἐστι, μὴ πλέοντα μηδαμοῦ.

8 [a] Ὁμήρου.

[b] Τυτθὸν γὰρ ὑπ' ἐκ θανάτοιο φέρονται.

9 [a] Μενάνδρου ἐκ Θρασυλέοντος.

Ὁ δεύτερος πλοῦς ἐστὶ δήπου λεγόμενος,
[b] ἂν ἀποτύχῃ τις οὐρίου κώπαισι πλεῖν.

10 [a] Καλλιμάχου.

Ἔνθ' ἀνέμων μεγάλων κῦμα διωλύγιον.

iam uno jugero tantum. GESNER.

[d] πλεῖς τὴν] Elegantissima hæc emendatio a Salmasio est. Vulgo exstat: πλείστην θάλασσαν σχοινίων πωλουμένων. Est autem locutio proverbialis. Nam et Apollodorus dixerat citante Donato, ὦ φίλε γαμεῖς σὺ σχοινίων πωλουμένων; quem sensum sic expressit Juvenalis: *Ferre potes dominam salvis tot restibus ullam?* GROTIUS. Vid. Porsoni *Tracts* p. 305. Grotius in ms. "f. πλεῖ τις — πωλούμενος. "Laco apud Plutarch. οὐ προσέχω "εὐδαιμονίᾳ ἐπὶ σχοινίων ἀπηρτημένῃ. "*Non placet mihi rudentibus apta* "*fortuna* .... navigantibus "σχοινίοις ἐπιτρέπειν τὴν ψυχήν. σχοι-"νία rudentes Eust. Od. β."

[e] πολουμένων] πωλουμένων A. B. Voss. Gesn. marg.

7.

[a] Sic A. Καλλιμάχου Trinc.

[b] μὲν θάλατταν] τὴν θ. A. Voss. Arsen. Trinc.

[c] ἀπὸ γῆς] ἀποιγ A. ἀπὸ γαίης Grotius in textu, sed voluisse videtur ἀπὸ τῆς γῆς, quam lectionem annotationi præfixit. ἀπὸ τῆς γῆς habet ed. Francof. ὡς ἡδὺ τὴν θ. ἄποθεν γῆς ὁρᾶν — μηδαμῶς citat Lambinus ad Lucretii II. init. tanquam ex Menandro. τὴν θάλατταν—τῆς γῆς Gatakerus A. M. P. p. 514.

8.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Il. O. 628.

[b] Habet ed. Bas. post n. 10.

9.

[a] Sic A. Cleric. p. 86. Deest Trinc.

[b] ἂν νηὸς ἀποτύχῃ τις ἐν κ. π.] Festiva interpretatio adagii πλοῦς δεύτερος. Est autem et hoc a nostra conjectura, cum legeretur in editis ἂν ἀποτύχῃ τις πρῶτον ἐν ταῖς κ. π. Favet ex parte MS. A. qui non habet illud πρῶτον. GROTIUS. Idem in mss. "ὅτ' ἀποτυχῶν τις οὐ-"ρίου κωπαῖσι πλεῖ Pausanias Eust. "Od. B. fin. δεύτερος πλοῦς ὁ δι' "ἀνέμου ἔνδειαν δι' εἰρεσίας γινόμενος "Eust." πρῶτον deest item ed. Bas. Non dubitavi reponere οὐρίου. Vide Forsterum ad Platonem p. 390.

10.

[a] Sic A. Fr. 111. Deest lemma Trinc.

11 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Τρισμάκαρ ἡ παύρων ὄλβιός ἐστι μέγα, 377
[b] ναυτιλίῃσιν ἣν ἔχεις βίον· ἀλλ' ἐμὸς αἰὼν
κύμασιν [c] αἰθυίης μᾶλλον ἐσῳκίσατο.

12 [a] Σοφοκλέους Τυμπανιστῶν.

Τί [b] τοῦδε χάρμα μεῖζον ἂν λάβοις ποτὲ,
[c] τοῦ γῆς ἐπιψαύσαντα κᾆτ' [d] ὑπὸ στέγῃ
πυκνῆς ἀκοῦσαι [e] ψακάδος εὑδούσῃ φρενί;

13 [a] Εὐριπίδου Ἐρεχθέως.

Ναῦς ἡ μεγίστη κρεῖσσον ἢ [b] μικρὸν σκάφος.

14 [a] Μενάνδρου.

Τὰ μεγάλα κέρδη ῥᾳδίως ἢ πλουσίους
τοὺς παραβόλως πλέοντας, ἢ νεκροὺς ποιεῖ.

15 [a] Ἀντιφάνους.

[b] Ἐν γῇ πένεσθαι [c] κρεῖττον, ἢ πλουτοῦντα πλεῖν.

16 [a] Εὐφορίωνος Φιλοκτήτου.

Τὸν δ' ἐκάλυψε θάλασσα λιλαιόμενον [b] βιότοιο,

11.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

[b] ναυτιλίῃσιν ἣν ἔχεις βίον] Locus mutilus. GESNER. ναυτιλίης ἀπάνευθ' ὃς ἔχεις βίον dedit Grotius. ἢ παύρων ὄλβιός ἐστι μέτα, Ναυτιλίης ὃς νηῒν ἔχει βίον, præclare Bentleius.

[c] αἰθύης] αἰθυίης B.

12.

[a] Sic A. Scil. fr. 1. Simpl. Σοφοκλέους Trinc.

[b] τούτου] τοῦ A. τοῦδε Grotius in ms. qui citat Ciceron. ad Att. II. 7. Vide Valckenærii Diatr. Eur. p. 194.

[c] τοῦ γῆς] τῷ γῆς Trinc.

[d] ὑπὸ στέγῃ πυκνῇ] καὶ ὑπὸ στ. πυκνῆς A. B. Voss. Trinc. τοῦ γῆς ἐπιψαύσανθ' ὑπὸ στέγῃ πυκνῇ Πυκνᾶς ἀκοῦσαι ψ. ε. φ. citat Lambinus ad Lucretium l. l. κἂν ὑπὸ στ. Cicero, probante Valckenærio. Dedi κᾆτ' pro καὶ.

[e] ψεκάδος] ψακάδος A. et sic fere ms. Ciceronis vetustissimus apud Victorium, qui præbet σακαδος.

13.

[a] Sic A. Omisit Musgravius v. ed. Beck. T. II. p. 496. cf. Brunck. Fragm. Sophocl. falso cit. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] μικρὸν] σμικρὸν B.

14.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 226.

15.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ἐν γῇ] ἐν τῇ Trinc.

[c] κρεῖττον] κρεῖσσον A.

16.

[a] Sic A. Simpl. Εὐφορίωνος Tr.

[b] βιότοιο] πλούτοιο A.

καὶ οἱ [c] πήχεες ἄκρον [d] ὑπερφαίνοντο ταθέντες
[e] ἀχρεῖ' ἀσπαίροντες ἅλις Δολοπιονίδαο
δυστήνου, ζωὴν δὲ μεθ' ὕδατος [f] ἔμβαλε πᾶσαν,
χεῖρας ὑπερπλάζων, ἅλμη δ' ἐκάλυψεν ὀδόντας.

17 [a] Ἀντιφάνους Μελίττης.

[b] Ἐπὶ χρήμασιν δ', ὧν ἔμπορος, φρονεῖ μέγα,
ὧν ἐστι πάντων ἐνίοτ' ἄνεμος κύριος.

18 [a] Εὐριπίδου Φιλοκτήτης.

Μακάριος ὅστις εὐτυχῶν οἴκοι μένει,
ἐν γῇ δ' ὁ φόρτος, [b] καὶ πάλιν ναυτίλλεται.

19 [a] Ἐκ τῶν Μόσχου Βουκολικῶν.

Τὰν ἅλα τὰν γλαυκὰν [b] ὅτ' ἂν ὤνεμος ἀτρέμα βάλλῃ,
τὰν φρένα τὰν δειλὰν ἐρεθίζομαι, [c] οὐδέ τι μοῖσα
ἐντὶ φίλα, [d] ποθέει δὲ πολὺ πλέον ἄμμε γαλάνα.
ἀλλ' [e] ὅτ' ἂν ἀχήσῃ πολιὸς βυθὸς, ἁ δὲ θάλασσα
κυρτὸν ἐπαφρίζῃ, τὰ δὲ κύματα μακρὰ [f] μεμήνῃ,
ἐς χθόνα [g] παπταίνω καὶ δένδρεα, τὰν δ' ἅλα φεύγω·

[c] πήχεες] πήχεος A.

[d] ὑπερβαίνοντο] ὑπερφαίνοντο Voss. Arsen. A. Trinc.

[e] ἀχρεῖα σπαίροντες] ἀχρεῖ' ἀσπαίροντες A.

[f] ἔμβαλε] Euphorionis loco e Philoctete (hoc suspectum quia mox Eurip. Philoctete citatur) leg. saltem ἔκβαλε. An tertio versu Ἀχρεῖ' ἀσπαίροντες ἅλης Δολ.? Sed et nomen mihi ob πι productum non videtur sincerum. Valcken.

17.

[a] Sic A. Simpl. Ἀντιφάνους Tr.

[b] ἐπὶ χρήμασ' ἰδὼν] ἐπὶ χρήμασ' ἰνδῶν Voss. Arsen. B. Gesn. marg. ἐπὶ χρμήμασ' ἴδὼν A. ἐπὶ χρήμασιν μῶν ἐ. φ. μ. Valckenærius. Longe melius Dobræus ad Porsoni Aristophanica p. (108.) ἐπὶ χρήμασιν δ', ὧν ἔμπορος, φρονεῖ (f. φρονεῖς) μέγα.

18.

[a] Sic A. Scil. fr. 8. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] καὶ] lego κοὐ. Gesner. καὶ πόλιν Scottus apud Grotium in mss.

19.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ὅταν om. B. Mox βάλλοι Tr.

[c] οὐδέ τι μοῖσα] οὐδ' ἔτι μ. Gesner. οὐδέ τι μοι γᾶ Salmasius apud Grotium.

[d] ποθέει δὲ πολὺ πλεόνα μεγάλαν ἅλα] ποθί A. ποθίη Voss. ποθίῃ Trinc. ποθέω B.—πλέονα μἔγάλαν ἅλα A. πλείονα τὰν ἅλα μώσης B. ποτάγει δὲ πολὺ πλέον ἄμμε γαλάνα Grotius e Moschi libris.

[e] ὅταν ἀχήσῃ] ὅτ' ἀναχήσῃ Trinc.

[f] μεμήνῃ] μακρὰ μεμήνῃ B. πάντα vel δεινὰ Gesnerus. μακρὰ Grotius.

[g] παπταίνω] παπταίνων Trinc.

γᾶ δέ μοι [h] ἀσπαστὰ, χὰ δάσκιος εὔαδεν ὕλα,
ἔνθα καὶ ἢν πνεύσῃ πολὺς ὤνεμος, ἁ πίτυς ᾄδει.
ἦ κακὸν ὁ γριπεὺς ζώει βίον, ᾧ δόμος ἁ ναῦς,
καὶ πόνος ἐντὶ θάλασσα, καὶ ἰχθὺς ἁ [i] πλανὸς ἄγρα.
αὐτὰρ ἐμοὶ γλυκὺς ὕπνος ὑπὸ πλατάνῳ βαθυφύλλῳ,
καὶ παγᾶς φιλέοιμι τὸν ἐγγύθεν ἦχον ἀκούειν,
[k] ἁ τέρπει ψοφέοισα τὸν [l] ἀγρικὸν, οὐχὶ ταράσσει.

20 [a] Δημοσθένους Ὀλυνθιακῶν.

Ἕως ἂν σώζηται τὸ σκάφος, ἄν τε μεῖζον ἄν τ᾽ ἔλαττον ᾖ, τότε χρὴ καὶ ναύτην καὶ κυβερνήτην καὶ πάντ᾽ ἄνδρα ἑξῆς [b] προθύμους εἶναι, καὶ ὅπως μήθ᾽ ἑκὼν [c] μήτ᾽ ἄκων μηδεὶς ἀνατρέψῃ, τοῦτο σκοπεῖσθαι· ἐπειδ᾽ ἂν δ᾽ ἡ θάλαττα [d] ὑπέρσχῃ, μάταιος ἡ σπουδή.

21 [a] Γλαύκωνος.

Γλαύκων ὁ κωμῳδὸς ἥδιον ἔλεγε παρὰ τὴν [b] θάλατταν πεζεύειν ἢ παρὰ τὴν γῆν πλεῖν.

ΥΠΕΡ ΤΕΧΝΩΝ. Ξ.

1 [a] Ἄμφιδος ἐξ Ἀμπελουργοῦ.

Οὐκ ἔστιν οὐδὲν ἀτυχίας ἀνθρωπίνης
παραμύθιον γλυκύτερον ἐν βίῳ τέχνης.
ἐπὶ τοῦ μαθήματος γὰρ ἑστηκὼς ὁ νοῦς
[b] αὐτοῦ λέληθε παραπλέων τὰς συμφοράς.

[h] ἁ πιστὰ] ἀσπαστὰ A. B. Mox χὰ pro τάχα Reizius.
[i] ἀπλανῶς] ἁ πλάνος B. Grotius e Moscho.
[k] ἀτερπῆ] ἁ τέρπει B.
[l] ἀγροῖκ᾽] ἀγροῖκον A. Ars. Voss.

20.

[a] Sic A. Scil. p. 128, 21. Simpl. Δημοσθένους Trinc.
[b] προθύμους] πρόθυμον Voss. Arsen.
[c] μήτ᾽ ἄκων om. Trinc.
[d] ὑπέρσχῃ] ὑπερέχῃ A. B. Voss. ὑπερίσχῃ Arsen.

21.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.
[b] τὴν θάλατταν] τὸν ἅλα A. τὴν ἅλα B.

1.

[a] Sic A. Simpl. Ἄμφιδος Trinc.
[b] αὐτοῦ—παραπλέον] αὐτοῦ—παραπλέων Grotius. παραπλέων habet Trinc. et Gesn. 1.

2 [a] Ἱππάρχου ἐκ Ζωγράφου. 378

Πολύ γ' ἐστὶ πάντων κτῆμα τιμιώτατον
ἅπασιν ἀνθρώποισιν εἰς τὸ ζῆν τέχνη.
τὰ μὲν γὰρ ἄλλα καὶ πόλεμος καὶ μεταβολαὶ
τύχης [b] ἀνάλωσ', ἡ [c] τέχνη δὲ σώζεται.

3 [a] Ἑρμοδότου.

Οὐχ ὁ λόγος αὔξει τὴν τέχνην περισσὸς ὤν·
ἀλλ' αὐτὰ κοσμεῖ τὴν τέχνην τὰ πράγματα.

4 [a] Σιμύλου.

Οὔτε φύσις ἱκανὴ γίγνεται τέχνης ἄτερ
πρὸς οὐδὲν ἐπιτήδευμα παράπαν οὐδενὶ,
οὔτε [b] πάλι τέχνη μὴ φύσιν κεκτημένη.
τούτων ὁμοίως [c] τοῖν δυοῖν συνηγμένων
εἰς ταυτὸν, ἔτι δεῖ [d] προσλαβεῖν χορηγίαν,
ἔρωτα, μελέτην, καιρὸν, [e] εὐφυῆ χρόνον,
[f] κριτὴν τὸ ῥηθὲν δυνάμενον συναρπάσαι.
ἐν ᾧ γὰρ ἂν [g] τούτων τὶς ἀπολειφθεὶς τύχῃ,
οὐκ ἔρχετ' ἐπὶ τὸ τέρμα τοῦ προκειμένου.
φύσις, θέλησις, ἐπιμέλει', εὐταξία,
σοφοὺς τίθησι κἀγαθούς· [h] ἐτῶν δέ τοι
ἀριθμὸς οὐδὲν ἄλλο [i] πλὴν γῆρας ποιεῖ.

2.

[a] Sic A. Simpl. Ἱππάρχου Trinc.

[b] ἀνάλωσεν] ἀνήλωσ. Gesn. marg. Vero proxime Trinc. ἀνάλωσε τέχνη δ. σ. In versu superiore τὰ μὲν γὰρ ἄλλα πόλεμος ἢ καὶ μετ. Salmasius apud Grotium.

[c] ἀνάλωσεν ἡ τέχνη δὲ] ἀνήλωσε τέχνη δὲ μόνη A.

3.

[a] Sic A. Trinc.

4.

[a] Sic A. Trinc.

[b] οὔτε πᾶν] οὔτε πάλιν B. πάλι legendum monstrat Porsonus Adv. p. 304. Grotius dedit οὔτ' αὖτε.

[c] τοῖν] τῶν A. Gesn. marg.

[d] προσλαβεῖν] προλαβεῖν Trinc.

[e] εὐφυῆ χρόνον] εὐφυῆ χορὸν corrigit Dobræus ad Porsoni Aristophanica p. (104.)

[f] κριτὴν] κριθὴν A. τριβὴν B.

[g] τούτων om. A. mox idem habet ἀποληφθεὶς cum Trinc. τις om. Trinc.

[h] ἐτῶν] ἐπῶν Trinc.

[i] πλὴν] ἢ A.

5 [a] Μενάνδρου Αὐλητρίδος.

[b] Τὰ πατρῷα μὲν [c] ποιεῖ καιρός ποτε . . . .
ἀλλότρια, σώζει δ' αὐτά που τὰ σώματα.
βίου δ' ἔνεστι [d] μί' ἀσφάλει' ἐν ταῖς τέχναις.

6 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Σοφιστοῦ.

Ἀλλὰ μὴν γε τῶν τεχνῶν [b] σχεδὸν πασῶν εἴδη δύο. Πῶς; Γεωργία μὲν, καὶ ὅση περὶ τὸ θνητὸν [c] πᾶν σῶμα θεραπεία, τό τ' αὖ περὶ τὸ σύνθετον καὶ πλαστὸν, ὃ δὴ σκεῦος ὠνομάκαμεν, ἥ τε [d] μιμητικὴ, ξύμπαντα ταῦτα δικαιότατα ἑνὶ προσαγορεύοιτο ἂν ὀνόματι. Πῶς, καὶ τίνι; Πᾶν ὅπερ ἂν μὴ πρότερον [[e] τὶς ὂν, ὕστερον] εἰς οὐσίαν ἄγῃ, τὸν μὲν ἄγοντα ποιεῖν, τὸ δὲ ἀγόμενον [f] ποιεῖσθαί που φαμέν. Ὀρθῶς. Τὰ δέ γε νῦν [[g] ἃ δὴ] [h] διήλθομεν ἅπαντα εἶχεν εἰς τοῦτο τὴν [i] αὐτῶν δύναμιν. Εἶχε γὰρ οὖν. Ποιητικὴν τοίνυν αὐτὰ συγκεφαλαιωσάμενοι προσείπωμεν. Ἔστω. Τὸ δὴ [j] μαθητικὸν αὖ μετὰ τοῦτο εἶδος ὅλον, καὶ τὸ τῆς γνωρίσεως, τό τε χρηματιστικὸν, καὶ ἀγωνιστικὸν, καὶ [k] θηρευτικὸν, ἐπειδὴ δημιουργεῖ μὲν οὐδὲν τούτων, τὰ [l] δὲ ὄντα καὶ γεγονότα, τὰ μὲν χειροῦται λόγοις καὶ πράξεσι, τὰ δὲ τοῖς χειρουμένοις οὐκ ἐπιτρέπει, μάλιστ' ἄν που διὰ ταῦτα ξυνάπαντα τὰ

5.

[a] Sic A. Cleric. p. 20. Simpl. Μενάνδρου Trinc.

[b] τὰ πατρῷα] τὰ γὰρ πατ. Grotius.

[c] ποιεῖ] πο̃ A.

[d] μὴ ἀσφάλει'] μία ἀσφ. A. μί' ἀσφαλ. Trinc. Gesn. 1. Francof. utrumque μὴ et μί' om. Gesn. ed. 3. Jacobsius Anthol. T. XII. p. 105. ita corrigit: τὰ μὲν πατρῷα μεταποιεῖ καιρός ποτε, Ἀλλοτριώσει τ' αὐτά που τὰ σώματα, Βίου δ' ἔνεστι μί' ἀσφάλει' ἐν ταῖς τέχναις.

6.

[a] Sic A. Scil. p. 219. A. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] σχεδὸν] σχεδῶν A.

[c] πᾶν σῶμα] πᾶν om. Trinc.

[d] μιμητικὴ] τιμητικὴ Trinc.

[e] τις ὢν, ὕστερον om. A. Trinc. Mox ἄγει A.

[f] ποιεῖσθαί που] που ποιεῖσθαι A. B.

[g] ἃ δὴ om. A. Trinc.

[h] διήλθομεν] διέλθομεν Trinc.

[i] αὐτῶν] αὐτοῦ Trinc.

[j] μαθηματικὸν] μαθητικὸν A.

[k] θηρευτικὸν] θεραπευτικὸν A. B.

[l] δὲ ὄντα] δέοντα B.

μέρη, τέχνη τὶς κτητικὴ λεχθεῖσα [m] ἂν πρέψειεν. Ναί· [n] πρέποι γὰρ ἄν. Κτητικῆς [o] δὴ καὶ ποιητικῆς ξυμπασῶν οὐσῶν τῶν τεχνῶν, ἐν ποτέρᾳ τὴν [p] ἀσπαλιευτικὴν, ὦ Θεαίτητε, τιθῶμεν; Ἐν κτητικῇ δήπου δῆλον. Κτητικῆς δὲ ἆρ' οὐ [q] δύο εἴδη; τὸ μὲν ἑκόντων [r] πρὸς ἑκόντας μεταβλητικὸν ὂν, διά τε δωρεῶν [[s] καὶ ἀγοράσεων] καὶ μισθώσεων· τὸ δὲ λοιπὸν ἢ κατ' ἔργα ἢ κατὰ λόγους χειρούμενον [t] ξύμπαν, χειρωτικὸν ἂν εἴη; Φαίνεται γοῦν ἐκ τῶν εἰρημένων. Τί [u] δὲ, τὴν χειρωτικὴν; ἆρ' οὐ διχῇ τμητέον; Πῇ; Τὸ μὲν ἀμφαδὸν ὅλον ἀγωνιστικὸν τιθέντας, τὸ δὲ κρυφαῖον αὐτῆς πᾶν, θηρευτικόν; Ναί. Τήν γε μὴν θηρευτικὴν ἄλογον τὸ μὴ οὐ τέμνειν διχῇ. Λέγε ὅπῃ. Τὸ μὲν ἀψύχου γένους διελομένους, τὸ δὲ ἐμψύχου. Τί μήν; εἴπερ ἐστόν γε ἄμφω. Πῶς δ' οὐκ [w] ἔστον; καὶ δεῖ γε ἡμᾶς τὸ μὲν τῶν ἀψύχων 379
[x] ἀνώνυμον, πλὴν κατ' ἔνια τῆς κολυμβητικῆς ἄττα μέρη καὶ τοιαῦτ' ἄλλα βραχέα, χαίρειν ἐᾶσαι· τὸ δὲ τῶν ἐμψύχων, ζώων οὖσαν θήραν, προσειπεῖν ζωοθηρικήν. Ἔστω. [y] Ζωοθηρικῆς δὲ ἆρα οὐ διπλοῦν εἶδος [z] ἂν λέγοιτο ἐν δίκῃ; τὸ μὲν πεζοῦ γένους, πολλοῖς εἴδεσι καὶ ὀνόμασι διῃρημένον, πεζοθηρικόν· [[a] τὸ δ' ἕτερον] νευστικοῦ ζώου πᾶν, ἐνυγροθηρικόν; Πάνυ γε. Νευστικοῦ [b] μὴν τὸ μὲν πτηνὸν φῦλον ὁρῶμεν· τὸ δὲ, ἔνυδρον. Πῶς δ' οὔ; Καὶ τοῦ πτηνοῦ μὲν [c] γένους [d] πᾶσα ἡμῖν ἡ θήρα λέγεταί που [e] ὀρνιθευτική. Λέγεται

[m] ἐκτρέψειεν] ἀντρέψειεν A. B. i. e. ἂν πρέψειεν. ἂν διαγράψειε Ges. marg.
[n] πρέποι] πρέπει A.
[o] δὴ] δὲ A. B.
[p] ἀσπαλιευτικὴν] ἁλιευτικὴν B.
[q] δύο] δύο εἴδη A.
[r] πρὸς ἑκόντας μεταβλητικὸν] προσέχοντας μετακλητικὸν Trinc.
[s] καὶ ἀγοράσεων om. A. Trinc.
[t] ξύμπαν χειρωτικὸν] ξύμπαντα χειρωτικὰ A. B.
[u] δὲ] δαὶ A. Trinc.
[w] ἔστιν] ἔστον A.
[x] ἀνώνυμον ἐᾶν] ἐᾶν om. A.
[y] ζωοθηρικῆς δὲ] ζωοθηρικὴ A. B.
[z] ἂν λέγοιτο] λέγοιτο ἂν A. B.
[a] τὸ δ' ἕτερον om. A. Trinc.
[b] δὲ] μὴν A. Trinc.
[c] γένους om. A. γε habet Trinc.
[d] πᾶσα] πᾶσιν A.
[e] ὀρνεοτευτική] ὀρνϊετευτικὴ A. ὀρνιθευτικὴ B.

[[f]γὰρ οὖν.] Τοῦ δ' ἐνύδρου σχεδὸν ἁλιευτικὴ τὸ σύνολον. [[g]Ναί.] Τί δέ; ταύτην αὖ τὴν θήραν, ἆρα οὐκ ἂν κατὰ τὰ μέγιστα μέρη δύο [h]διέλοιμεν; Κατὰ ποῖα; Καθ' ἃ τὸ μὲν ἕρκεσιν αὐτόθι ποιεῖται τὴν θήραν, τὸ δὲ πληγῇ; Πῶς λέγεις; καὶ πῇ διαιρούμενος ἑκάτερον; Τὸ μέν, [i]ὅτι πᾶν ὅσον ἂν ἕνεκα κωλύσεως [k]εἴργῃ τὶ περιέχον, ἕρκος εἰκὸς ὀνομάζειν. Πάνυ μὲν οὖν. Κύρτους [l]δή, καὶ δίκτυα, καὶ πόρκους, καὶ βρόχους, καὶ τὰ τοιαῦτα, μῶν ἄλλο τι πλὴν ἕρκη [m]χρὴ προσαγορεύειν; Οὐδὲν [[n]ἄλλο.] Τοῦτο [o]μὲν ἄρα ἑρκοθηρικὸν τῆς ἄγρας τὸ μέρος φήσομεν, ἤ τι τοιοῦτον. Ναί. Τὸ δὲ ἀγκίστροις καὶ τριόδουσι πληγῇ γιγνόμενον, ἕτερον μὲν ἐκείνου, πληκτικήν δέ τινα [p]θήραν ἡμᾶς προσειπεῖν [q]ἐν τῷ νῦν χρεών, [r]ἤ τι τὶς ἄν, ὦ Θεαίτητε, εἴποι κάλλιον; Ἀμελῶμεν τοῦ ὀνόματος, ἀρκεῖ γὰρ [s]καὶ τοῦτο. Τῆς μὲν τοίνυν πληκτικῆς, τὸ μὲν νυκτερινὸν οἶμαι πρὸς πυρὸς φῶς γιγνόμενον ὑπ' [t]αὐτῶν τῶν περὶ τὴν θήραν πυρευτικὴν ῥηθῆναι [[u]συμβέβηκε.] Πάνυ γε. Τὸ δέ γε μεθημερινόν, ὡς ἐχόντων ἐν ἄκροις ἄγκιστρα καὶ τῶν τριοδόντων, [w]παναγκιστρευτικήν; Λέγεται γὰρ οὖν. Τοῦ τοίνυν ἀγκιστρικευτικοῦ τῆς πληγῆς τὸ μὲν ἄνωθεν εἰς τὸ κάτω γινόμενον διὰ τὸ τοῖς τριόδουσιν οὕτω μάλιστα χρῆσθαι, τριοδοντικὰ τὶς, οἶμαι, κέκληται. Φασὶ γοῦν τινες. Τὸ δέ γε λοιπὸν ἐστὶν ἓν ἔτι μόνον ὡς εἰπεῖν εἶδος. Ποῖον; Τὸ τῆς ἐναντίας ταύτῃ πληγῆς ἀγκίστρῳ τε γιγνόμενον καὶ

[f] γὰρ οὖν om. A. Trinc.
[g] ναί om. A. Trinc. Mox Trinc. τὶ δαί.
[h] διελοίμην] διέλοιμεν A. Trinc.
[i] ὅτι] τὸ A. om. B.
[k] εἴργει] εἴργη A.
[l] δὴ om. A.
[m] χρὴ] δὴ Trinc. i. e. δεῖ.
[n] ἄλλο om. A. Trinc.
[o] μὲν om. A.
[p] θήραν ἡμᾶς] ἡμᾶς θήραν A.
[q] ἑνὶ λόγῳ] ἐν τῷ A. Trinc.
[r] εἴ τι] εἴ τι B.
[s] καὶ om. A.
[t] αὐτῶν τῶν] αὐτοῦ Trinc.
[u] συμβέβηκε om. A. Trinc.
[w] παναγκιστρευτικήν.] παναγκιστρικευτικήν A. Reliqua quæ sequuntur usque ad εἰλήφαμεν ἱκανῶς exhibui ex A. B.

τῶν ἰχθύων, οὐχ [x] ᾗ τις ἂν τύχῃ τοῦ σώματος ὥσπερ τοῖς τριόδουσι, ἀλλὰ περὶ τὴν κεφαλὴν καὶ τὸ στόμα τοῦ θηρευθέντος ἑκάστοτε, καὶ κάτωθεν εἰς τοὐναντίον ἄνω, ῥάβδοις καὶ καλάμοις ἀνασπώμενον, οὗ τι φήσομεν, ὦ Θεαίτητε, δεῖν τοὔνομα λέγεσθαι. Δοκῶ μὲν, ὅπερ ἄρτι προυθέμεθα [y] δεῖν ἐξευρεῖν, τοῦτο αὐτὸ νῦν ἀποτετελέσθαι. Νῦν ἄρα τῆς ἀσπαλιευτικῆς, περὶ οὗ σύ τε κἀγὼ συνωμολογήκαμεν, οὐ μόνον τοὔνομα ἀλλὰ καὶ τὸν λόγον, περὶ αὐτὸ τοὔργον εἰλήφαμεν ἱκανῶς. Ξυμπάσης [z] τοιγαροῦν τέχνης τὸ μὲν ἥμισυ μέρος κτητικὸν ἦν· κτητικοῦ δὲ, χειρωτικόν· χειρωτικοῦ δὲ, θηρευτικόν· τοῦ δὲ θηρευτικοῦ, [a] ζωοθηρικόν· ζωοθηρικοῦ δὲ, [b] ἐνυγροθηρικόν· ἐνυγροθηρικοῦ δὲ, τὸ κάτωθεν τμῆμα ὅλον, ἁλιευτικόν· ἁλιευτικῆς δὲ, πληκτικόν· πληκτικῆς δὲ, ἀγκιστρευτικόν· τούτου δὲ τὸ περὶ τὴν κάτωθεν ἄνω πληγὴν ἀνασπωμένην ἀπ᾽ αὐτῆς τῆς πράξεως ἀφομοιωθὲν τοὔνομα ἡ νῦν [c] ἀσπαλιευτικὴ ζητηθεῖσα ἐπίκλην γέγονε. [d] Πάντως [e] μὲν οὖν τοῦτό γε ἱκανῶς δεδήλωται.

7 [a] Ἐν ταυτῷ.

Κατὰ δὴ τὸν παρεληλυθότα τρόπον τῆς διαιρέσεως, ἔγωγέ μοι καὶ νῦν φαίνομαι [b] δύο καθορᾶν εἴδη τῆς μιμητικῆς. Τὴν [c] δὲ ζητουμένην ἰδέαν ἐν ὁποτέρῳ ποθ᾽ ἡμῖν οὖσα τυγχάνει καταμαθεῖν οὐδέ πω μοι δοκῶ νῦν δυνατὸς εἶναι. Σὺ δ᾽ ἀλλ᾽ εἰπὲ [d] πρῶτον, καὶ δίελε ἡμῖν τίνε τὼ δύο λέγεις. Μίαν μὲν τὴν εἰκαστικὴν [e] ὁρῶν ἐν αὐτῇ τέχνην· ἔστι δ᾽ αὕτη μά-

[x] εἴ A.
[y] δ᾽ A.
[z] τοιγαροῦν] γὰρ A. B. Gesn. marg.
[a] ζωοθηρικόν om. B.
[b] ἐνυγροθηρικὸν om. B.
[c] ἀσπαλιευτικὴ] ἁλιευτικὴ B.
[d] πάντως] πάντας Trinc.
[e] μὲν] εἰ μὲν A. Trinc. In πάντας εἰ latet scriptura apud Platonem obvia παντάπασι.

7.

[a] Sic A. Scil. p. 235. Deest Trinc.
[b] δύο usque ad τυγχάνει om. B.
[c] δὲ] γὰρ A.
[d] πρῶτον καὶ δίελε] καὶ δίελε πρῶτον A. B. Mox τίνε om. A. B.
[e] ὁρῶ] ὁρῶν A. B.

λιστα, ὁπότ᾽ ἂν κατὰ τὰς τοῦ παραδείγματος συμμετρίας τὶς ἐν μήκει καὶ [e] βάθει καὶ πλάτει, [f] καὶ πρὸς τούτοις ἔτι χρώματα ἀποδιδοὺς τὰ προσήκοντα ἑκάστοις τὴν τοῦ μιμήματος γένεσιν ἀπεργάζηται. Τί δ᾽, οὐ πάντες οἱ μιμούμενοί [g] τι τοῦτ᾽ ἐπιχειροῦσι δρᾶν; Οὐκ οὖν ὅσοι γε τῶν μεγάλων που τὶ πλάττουσιν ἔργων ἢ γράφουσιν. Εἰ γὰρ ἀποδιδοῖεν τὴν τῶν καλῶν ἀληθινὴν συμμετρίαν, οἶσθ᾽ ὅτι [h] σμικρότερα μὲν τοῦ δέοντος τὰ ἄνω, μείζω δὲ τὰ κάτω φαίνοιτ᾽ ἂν, διὰ τὸ τὰ μὲν πόρρωθεν τὰ [i] δ᾽ ἐγγύθεν ὑφ᾽ ἡμῶν ὁρᾶσθαι. Πάνυ μὲν οὖν. Ἆρ᾽ οὖν οὐ χαίρειν τὸ ἀληθὲς ἐάσαντες οἱ δημιουργοὶ νῦν, οὐ τὰς οὔσας συμμετρίας, ἀλλὰ τὰς [k] δοξούσας εἶναι καλὰς τοῖς εἰδώλοις ἐναπεργάζονται. Πάνυ μὲν οὖν. Τὸ μὲν ἄρα ἕτερον [l] οὐδὲ δίκαιον, εἰκός γε ὂν, εἰκόνα καλεῖν; [[m] Παντάπασί γε. Ἆρ᾽ οὖν τὸ μὲν ἕτερον δίκαιον εἰκαστικὸν καλεῖν;] Ναί. Καὶ [n] τῆς γε [o] μιμητικῆς τὸ ἐπὶ [p] τούτῳ μέρος κλητέον ὅπερ εἴπομεν ἐν τῷ πρόσθεν, εἰκαστικήν; Κλητέον. Τί δαὶ, τὸ φαινόμενον μὲν διὰ τὴν [q] τοῦ καλοῦ θέαν [r] εἰκέναι τῷ καλῷ, δύναμιν δὲ εἴ τις [s] λάβοι τὰ τηλικαῦτα ἱκανῶς ὁρᾶν, [t] μηδὲ ἐοικὸς ᾗ ᾧ φησιν ἐοικέναι, τί καλοῦμεν; ἆρ᾽ οὐκ, ἐπείπερ φαίνεται μὲν, ἔοικε δὲ οὔ, φάντασμα; Τί μήν; Οὐκ οὖν πάμπολυ καὶ κατὰ [u] τὴν ζωγραφίαν τοῦτο τὸ μέρος ἐστὶ, καὶ κατὰ τὴν ξύμπασαν μιμητικήν; Πῶς δ᾽ οὔ; Τὴν δὴ φάντασμα ἀλλ᾽ οὐκ εἰκόνα ἀπεργαζομένην τέχνην, ἆρ᾽ οὐ φανταστικὴν

[e] βάθει καὶ πλάτει] πλάτει καὶ βάθει B.
[f] καὶ om. A. B.
[g] τέ] τι A. B.
[h] σμικρότερα] σμικρο| A. σμικρότατον B.
[i] δ᾽] μὲν A.
[k] δοξούσας] δοξάσας A. B.
[l] οὐδὲ] om. A. B.
[m] παντάπασι—καλεῖν om. A. B.
[n] τῆς] τοῖς A. B.
[o] μιμητικῆς] μιμεῖται A. B.
[p] τούτῳ] τοῦτο A. B.
[q] οὐκ ἐκ] τοῦ A.
[r] ἐοικέναι] εἰκέναι A. B.
[s] λάβοι] λάβῃ A. B.
[t] μηδὲ εἰκὸς ᾧ] μὴ δ᾽ ἐοικὸς ᾗ A. B.
[u] τὴν] om. A. B. et mox ante ξύμπασαν.

[w] ὀρθότατ᾽ ἂν προσαγορεύοιμεν; Πολύ γε. [x] Τούτω τοίνυν [y] τὼ δύο ἔλεγον εἴδη τῆς εἰδωλοποιητικῆς, εἰκαστικὴν [z] καὶ φανταστικήν. Ὀρθῶς.

8 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Θεὸς μὲν πάντα καὶ μετὰ θεοῦ τύχη καὶ καιρὸς [b] τἀνθρώπινα διακυβερνῶσι ξύμπαντα· ἡμερώτερον μὴν τρίτον συγχωρῆσαι τούτοις ἕπεσθαι δεῖν, τέχνην.

9 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Πολιτικοῦ.

Πρῶτον μὲν τοίνυν δύο τέχνας οὔσας περὶ πάντα τὰ δρώμενα θεασώμεθα. Τίνας; Τὴν μὲν [b] τῆς γενέσεως οὖσαν συναίτιον, τὴν δὲ αὐτὴν αἰτίαν. Πῶς; [c] Ὅσαι μὲν τὸ πρᾶγμ᾽ αὐτὸ [d] μὴ δημιουργοῦσι, ταῖς δὲ δημιουργούσαις ὄργανα παρασκευάζουσιν, ὧν μὴ παραγενομένων οὐκ ἄν ποτ᾽ ἐργασθείη τὸ προστεταγμένον ἑκάστῃ τῶν τεχνῶν· ταύτας μὲν [e] οὖν ξυναιτίους, τὰς δ᾽ αὐτὸ τὸ πρᾶγμ᾽ ἀπεργαζομένας, αἰτίας. Ἔχει γὰρ οὖν λόγον.

10 [a] Πλουτάρχου ἐκ τοῦ Περὶ Μαντικῆς.

Τῶν τεχνῶν, ὡς ἔοικε, τὰς μὲν ἡ χρεία συνέστησεν ἐξ ἀρχῆς, καὶ μέχρι νῦν διαφυλάσσει·

[b] χρειὼ πάντ᾽ ἐδίδαξε· τί δ᾽ οὐ χρειώ κεν [c] ἀνεύροι

τῶν ἀναγκαίων; ὑφαντικήν, οἰκοδομικήν, ἰατρικήν, [d] γεωργίαν, καὶ ὅσαι περὶ [e] γεωργίαν ἀναστρέφονται· τὰς δ᾽ ἡδονή τις προσηγάγετο καὶ κατέσχε, τὴν τῶν μυρεψῶν, καὶ τῶν

[w] ὀρθότατ᾽ ἂν] ὀρθότητα A. B.
[x] τούτω] τοῦτο A. B.
[y] τὼ om. A. B.
[z] καὶ] τε καὶ A.

8.

[a] Sic A. Scil. Legg. IV. p. 709. Deest lemma Trinc.
[b] τἀνθρώπινα] ἀνθρώπινα A.

9.

[a] Sic A. Scil. p. 281. D. Deest lemma Trinc.
[b] τῆς] τὴν A. Trinc.
[c] ὅσαι] ὡς αἱ A. Trinc.
[d] μὴ om. A. Trinc.
[e] οὖν] γ᾽ οὖν A. B.

10.

[a] Sic A. Scil. T. V. p. 549 = 826. Simpl. Πλουτάρχου Trinc.
[b] χρειὼ] ὁ χρ. A. Mox τὶ δὲ χρ. Trinc.
[c] ἀνεύροι] ἂν εὕροι B. μὲν pro κεν Trinc.
[d] γεωργίαν om. A.
[e] γεωργίαν] γεωργίας A.

ὀψοποιῶν, καὶ κομμωτικὴν πᾶσαν, καὶ [f] ἀνθοβαφίαν. Ἔστι δὲ ὧν τὴν πιθανότητα καὶ τὴν ἀκρίβειαν καὶ τὸ καθάριον ἀγαπῶντες ἐκμανθάνουσι καὶ περιέπουσιν· ὡς ἀριθμητικὴν, καὶ γεωμετρίαν, καὶ κανονικὴν πᾶσαν, καὶ ἀστρολογίαν, ἅς [g] φησιν ὁ Πλάτων καίπερ ἀμελουμένας, βίᾳ ὑπὸ χάριτος αὔξεσθαι.

11 [a] Ξενοφῶντος ἐν γ̄ Ἀπομνημονευμάτων.

Εἰσελθών ποτε πρὸς [b] τὸν Παρράσιον τὸν ζωγράφον, Ἆρα, 381 ἔφη, ὦ Παρράσιε, [c] ἡ γραφική ἐστιν εἰκασία τῶν ὁρωμένων; τὰ γοῦν κοῖλα, καὶ τὰ ὑψηλὰ, καὶ τὰ σκοτεινὰ, καὶ τὰ φωτεινὰ, καὶ τὰ σκληρὰ, καὶ τὰ μαλακὰ, καὶ τὰ τραχέα, καὶ τὰ λεῖα, καὶ τὰ νέα, καὶ τὰ παλαιὰ σώματα διὰ τῶν χρωμάτων ἀπεικάζοντες ἐκμιμεῖσθε. Ἀληθῆ λέγεις, ἔφη. Καὶ μὴν τά γε καλὰ εἴδη ἀφομοιοῦντες, [d] ἐπειδὴ οὐ ῥᾴδιον ἑνὶ ἀνθρώπῳ περιτυχεῖν ἄμεμπτα πάντα ἔχοντι, ἐκ πολλῶν συνάγοντες τὰ ἐξ ἑκάστου κάλλιστα, οὕτως ὅλα τὰ σώματα καλὰ ποιεῖτε φαίνεσθαι. Ποιοῦμεν γὰρ, ἔφη, οὕτω. Τί γὰρ, ἔφη, τὸ πιθανώτατον, καὶ ἥδιστον, καὶ φιλικώτατον, καὶ ποθεινότατον, καὶ ἐρασμιώτατον ἀπομιμεῖσθε τῆς ψυχῆς [e] ἦθος, ἢ οὐδὲ μιμητὸν τοῦτο; Πῶς γὰρ [f] ἂν, ἔφη, μιμητὸν εἴη, ὦ Σώκρατες, ὃ μήτε συμμετρίαν, μήτε χρῶμα, μήτε ὧν σὺ εἶπας ἄρτι μηδὲν ἔχει, μηδὲ ὅλως ὁρατόν ἐστιν; Ἆρ' οὖν, ἔφη, γίγνεται ἐν ἀνθρώπῳ [g] τό τε φιλοφρόνως καὶ τὸ [h] ἐχθρῶς βλέπειν πρός τινας; Ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη. Οὐκ οὖν τό γε μιμητὸν ἐν τοῖς [i] ὄμμασι; Καὶ μάλα, ἔφη. Ἐπὶ δὲ τοῖς τῶν φίλων ἀγαθοῖς καὶ τοῖς κακοῖς ὁμοίως σοι δοκοῦσιν ἔχειν τὰ πρόσωπα οἵ τε φροντίζοντες καὶ οἱ μή;

[f] ἀντοβάφειαν] ἀνθοβαφίαν A. B. ἀνθοβάθειαν Trinc.
[g] φασιν] φησιν A. Trinc.

11.

[a] Sic A. Scil. III. 10. Simpl. Ξενοφῶντος Trinc.
[b] τὸν om. A.
[c] ἡ] ὡς ἡ A. B.
[d] ἐπειδὴ] ἐπεὶ A.
[e] ἦθος] εἶδος A. B.
[f] ἂν om. A.
[g] τοτε] πώποτε καὶ Gesn. marg.
[h] ἐχθρῶς] αἰσχρῶς A. Trinc.
[i] ὄμμασι] σώμασι A.

Μὰ Δί' οὐ δῆτα, ἔφη. Ἐπὶ μὲν γὰρ τοῖς ἀγαθοῖς φαιδροὶ, ἐπὶ δὲ τοῖς κακοῖς σκυθρωποὶ γίνονται. Οὐκ οὖν, ἔφη, καὶ ταῦτα [k] δυνατὸν ἀπεικάζειν; Καὶ μάλα, ἔφη. Ἀλλὰ μὴν καὶ τὸ μεγαλοπρεπές τε καὶ τὸ ἐλευθέριον, [καὶ [l] τὸ ταπεινόν τε καὶ ἀνελεύθερον,] καὶ τὸ [m] σωφρονικόν τε καὶ φρόνιμον, καὶ τὸ ὑβριστικόν τε καὶ τὸ ἀπειρόκαλον, καὶ διὰ τοῦ προσώπου, καὶ διὰ τῶν σχημάτων, καὶ ἑστώτων καὶ κινουμένων ἀνθρώπων [n] διαφαίνει. Ἀληθῆ λέγεις, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ ταῦτα μιμητά; Καὶ μάλα, ἔφη. Πότερον οὖν, ἔφη, νομίζεις ἥδιον ὁρᾶν τοὺς ἀνθρώπους δι' ὧν τὰ καλά τε [o] καὶ τὰ ἀγαθὰ καὶ ἀγαπητὰ ἤθη φαίνεται, ἢ δι' ὧν τὰ αἰσχρά τε καὶ πονηρὰ καὶ μισητά; Πολὺ νὴ Δί', ἔφη, διαφέρει, ὦ Σώκρατες.

Πρὸς δὲ Κλίτωνα τὸν ἀνδριαντοποιὸν εἰσελθών ποτε καὶ διαλεγόμενος αὐτῷ, Ὅτι μὲν, ἔφη, ὦ Κλίτων, ἀλλοίους ποιεῖς, δρομεῖς τε καὶ παλαιστὰς, καὶ πύκτας, καὶ παγκρατιαστὰς, ὁρῶ γε καὶ οἶδα· ὃ δὲ μάλιστα ψυχαγωγεῖ διὰ τῆς ὄψεως [p] τοὺς ἀνθρώπους τὸ ζωτικὸν φαίνεσθαι, πῶς τοῦτο ἐνεργάζῃ τοῖς [q] ἀνδριάσιν; Ἐπεὶ δὲ ἀπορῶν ὁ Κλίτων οὐ ταχὺ ἀπεκρίνατο, Ἆρα, ἔφη, τοῖς τῶν ζώντων εἴδεσιν ἀπεικάζων τὸ ἔργον [r] ζωτικώτερον ποιεῖς φαίνεσθαι τοὺς ἀνδριάντας; Καὶ μάλα, ἔφη. Οὐκ οὖν τά τε ὑπὸ τῶν σχημάτων [s] καταρτώμενα, καὶ [t] τὰ ανασπώμενα ἐν τοῖς σώμασι, καὶ τὰ συμπιεζόμενα, καὶ τὰ διελκόμενα, καὶ [u] ἐντεινόμενα, καὶ τὰ ἀνειμένα ἀπεικάζων,

[k] δυνατὸν] δυνατοὶ A.
[l] τὸ ταπεινόν τε καὶ ἀνελεύθερον om. A. Trinc.
[m] σωφρονητικόν] σωφρονικόν A. Trinc. σωφρονηκόν B. καὶ φρόνιμον om. B. Trinc. καὶ τὸ ὑβριστικόν τε om. Trinc.
[n] διαφαίνει] διαφέρει Gesn. marg.
[o] καὶ τὰ] τε καὶ A. B.
[p] τοὺς ἀνθρώπους om. A. B.
[q] ἀνδριάσιν] ἀνδράσιν A.
[r] ζωτικώτερον] ζωτικωτέρους Gesn. marg.
[s] καταρτώμενα] κατασπώμενα Gesn. marg.
[t] τὰ om. A. B.
[u] ἐκτεινόμενα] ἐντεινόμενα A. B.

ὁμοιότερά τε τοῖς ἀληθινοῖς καὶ [w] πιθανώτερα ποιεῖς φαίνεσθαι; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Τὸ δὲ καὶ τὰ [x] ἤθη τῶν ποιούντων τι σωμάτων ἀπομιμεῖσθαι οὐ ποιεῖ τινα τέρψιν τοῖς θεωμένοις; Εἰκὸς γοῦν, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ τῶν μὲν μαχομένων [y] ἀπειλητικὰ τὰ ὄμματα εἰκαστέον, τῶν δὲ νενικηκότων, εὐφραινομένων ἡ ὄψις μιμητέα; Σφόδρα γ', ἔφη. [z] Δεῖ ἄρα, ἔφη, τὸν ἀνδριαντοποιὸν τὰ τῆς ψυχῆς ἔργα τῷ εἴδει [a] προσεικάζειν.

ΕΤΙ ΠΕΡΙ ΤΕΧΝΩΝ ΕΙΣ ΤΟ ΕΝΑΝΤΙΟΝ. ΞΑ. 382

1 [a] Μενάνδρου Ἁλιέως.

Ὁ πρῶτος εὑρὼν διατροφὴν πτωχῷ τέχνην
πολλοὺς ἐποίησεν ἀθλίους· ἁπλοῦν γὰρ ἦν
τὸν μὴ δυνάμενον ζῆν ἀλύπως ἀποθανεῖν.

2 [a] Ἀντιφάνους ἐκ Κναφέως.

Ὅστις τέχνην [b] κατέδειξε πρῶτος τῶν θεῶν,
οὗτος μέγιστον εὗρεν ἀνθρώποις κακόν.
ὅτ' ἂν γὰρ ἀπορῆταί τις, ἂν μὲν ἀργὸς ἦν,
ἐλθὼν ἀπεκινδύνευσεν ἡμέραν μίαν,
ὥστ' ἢ γεγονέναι λαμπρὸν, ἢ τεθνηκέναι.
ἡμεῖς δ' ἔχοντες ἀρραβῶνα τὴν τέχνην
τοῦ ζῆν, ἀεὶ πεινῶμεν ἐπὶ ταῖς ἐλπίσιν.
ἐξόν τε μικρὸν διαπορηθῆναι χρόνον,
τὸν βίον ἅπαντα τοῦτο δρᾶν αἱρούμεθα.

[w] πιθανώτερα] πιθανωτέροις A. B.
[x] ἤθη] πάθη Gesn. marg.
[y] ἀπειλητικὰ] ἀπείληται A.
[z] δεῖ ἄρα ἔφη om. Trinc.
[a] προσεικάζειν] προσηκάζειν A.

1.

[a] Sic A. Simpl. Μενάνδρου Tr. Cleric. pag. 8. In titulo ἔτι π. τεχνῶν om. A.

2.

[a] Sic A. Simpl. Ἀντιφάνους Tr.
[b] κατέδειξε πρῶτος] πρῶτος κατέδειξε A.

3 [a] Μενάνδρου Ὑμνίδος.

Οὐ πάνυ [b] τι γηράσκουσιν αἱ τέχναι καλῶς,
ἂν μὴ λάβωσι προστάτην φιλάργυρον.

4 [a] Εὐριπίδου Πολυείδου.

Οἱ τὰς τέχνας δ' ἔχοντες [b] ἀθλιώτεροι
τῆς [c] φαυλότητός τε γὰρ ἐν κοινῷ ψέγειν
ἅπασι κεῖσθαι δυστυχὲς, οὐκ εὐτυχές.

5 [a] Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ Οἰκονομικοῦ.

Καλῶς, ἔφη, λέγεις, ὦ Κριτόβουλε. Καὶ γὰρ αἱ βαναυσικαὶ καλούμεναι καὶ [b] ἐπίρρητοί εἰσι, καὶ εἰκότως μὲν [c] δὴ πάνυ ἀδοξοῦνται ὑπὸ τῶν πόλεων· καταλυμαίνονται γὰρ τὰ σώματα [d] τῶν τε ἐργαζομένων καὶ ἐπιμελουμένων, καὶ τὰς ψυχὰς [e] ἀναγκάζουσι [f] καθῆσθαι, καὶ [g] σκιατραφεῖσθαι, ἔνιαι δὲ καὶ πρὸς πῦρ ἡμερεύειν. Τῶν δὲ σωμάτων θηλυνομένων καὶ αἱ ψυχαὶ ἐπιπολὺ ἀρρωστότεραι γίγνονται. Καὶ ἀσχολίας δὲ μάλιστα ἔχουσι καὶ φίλων καὶ πόλεων συνεπιμελεῖσθαι [h] βαναυσικαὶ καλούμεναι. Ὥστε [i] εἰκότως σοι δοκοῦσι κακοὶ ἂν καὶ φίλοις [k] χρῆσθαι, καὶ ταῖς

3.

[a] Sic A. Simpl. Μενάνδρου Tr. Cleric. p. 180.

[b] τι] τοι A. et sic Max. Tyrius (XXX). XI. ed. Reiskii p. 202. quem citat Grotius in mss.

4.

[a] Sic A. Scil. Fr. 3. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] ἀθλιώτεροι] Grotius dedit ἀθλιώτατοι, auctorèm citans A. Vocem quidem habet compendiose scriptam codex Parisinus, satis tamen perspicue ἀθλιώτεροι ut vulgo.

[c] φαυλότητός τε] φαυλοτ A. (suprascr. ας ... ς) Illud ας suprascriptum est solenni hujus syllabæ compendio. τῆς φαυλότητός τοι γὰρ Grotius ex Scaligeri emendatione, et v. seq. κοὐκ pro οὐκ. Legit et interpungit Musgravius, ἀθλιώτεροι Τῆς φαυλότητος· καὶ γὰρ ἐν κ. ψ. ἅ. κ. δ. κοὐκ ἐ.

5.

[a] Sic A. Scil. IV. 2. Simpl. Ξενοφῶντος Trinc.

[b] ἐπιρρητοί] ἐπιρητοὶ A.

[c] τοι] δὴ A. Trinc.

[d] τῶν] τῶν τε A. B.

[e] ἀναγκάζουσαι] ἀναγκάζουσι A. B.

[f] καθῆσθαι] καθεισθαι (suprascr. η) A.

[g] σκιατροφεῖσθαι] σκιατραφεῖσθαι A.

[h] βαναυσικαὶ] βασανικαὶ A. B.

[i] εἰκότως σοι] οἱ τοιοῦτοι δοκοῦσι Gesn. marg. δοκοῦσι post σοι inserunt A. B.

[k] χρῆσθαι om. A. B.

[l] πατρίσιν ἀλεξητῆρες εἶναι. Καὶ ἐν ἐνίαις μὲν [m] τῶν πόλεων, μάλιστα δὲ ἐν ταῖς εὐπολέμοις δοκούσαις εἶναι, [n] οὐδ' ἔξεστι τῶν πολιτῶν οὐδενὶ βαναυσικὰς τέχνας ἐργάζεσθαι.

6 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Πολιτικοῦ.

Ἆρ' οὖν οὐκ ἀριθμητικὴ μὲν [b] καὶ τινες ἕτεραι ταύτῃ συγγενεῖς τέχναι ψιλαὶ τῶν πράξεών εἰσι, τὸ δὲ γνῶναι [c] παρέσχοντο μόνον; Ἔστιν οὕτως. Αἱ δέ γε περὶ τεκτονικὴν αὖ καὶ ξύμπασαν χειρουργίαν, ὥσπερ ἐν ταῖς πράξεσιν [d] ἐνοῦσαν ξύμφυτον τὴν ἐπιστήμην κέκτηνται, καὶ [e] συναποτελοῦσι τὰ γιγνόμενα ὑπ' αὐτῶν σώματα, πρότερον οὐκ ὄντα; Τί μήν; Ταύτῃ τοίνυν ξυμπάσας ἐπιστήμας διαίρει· τὴν μὲν πρακτικὴν προσειπὼν, τὴν δὲ μόνον [f] γνωστικήν. Ἔστω [g] σοι ταῦτ' ὡς μιᾶς ἐπιστήμης τῆς ὅλης εἴδη δύο.

7 [a] Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Φιλήβου.

Ἐν δὴ ταῖς χειροτεχνικαῖς διανοηθῶμεν πρῶτον, εἰ τὸ μὲν ἐπιστήμης αὐτῶν μᾶλλον ἐχόμενον, τὸ δ' ἧττον ἔνι. Καὶ [b] δεῖ τὰ μὲν ὡς καθαρώτατα νομίζειν, τὰ δὲ ὡς [c] ἀκαθαρτότερα. Οὐκ οὖν χρή. Τὰς τοίνυν [d] ἡγεμονικὰς διαληπτέον ἑκάστων αὐτῶν χωρίς. Ποίας καὶ πῶς; Οἷον πασῶν που τεχνῶν [e] ἄν τις [f] ἀριθμητικὴν χωρίζῃ καὶ μετρητικὴν καὶ στατικὴν, ὡς ἔπος εἰπεῖν, φαῦλον τὸ καταλειπόμενον

[l] πατρίσιν] πατράσιν B.
[m] τῶν πόλεων] deest articulus A.
[n] οὐδ' ἔξεστι τῶν πολιτῶν οὐδενὶ] οὐδ' ἐξ(π)αιότων τ. π. οὐδὲν ἢ A. οὐ δέξαιό τι τῶν π. οὐδὲν ἢ Trinc.

6.

[a] Sic A. Scil. p. 258. D. Simpl. Πλάτωνος Trinc.
[b] καί τινες ἕτεραι] καὶ ἕτεραι ἄλλαι A. Mox ταύτης A. Trinc.
[c] παρέχονται] παρέσχοντο A. Tr.
[d] ἐνοῦσαν] ἐνοῦσαι A. B.
[e] συναποτελοῦσι] νῦν ἀποτελοῦσαν A. Trinc.
[f] γνωστικὴν] γνωριστικὴν A. B.
[g] σοι om. A.

7.

[a] Sic A. Scil. p. 55. D. Deest lemma Trinc. Mox πρῶτα, εἰς Tr.
[b] δεῖ] δὴ A.
[c] ἀκαθαρτότατα] ἀκαθαρτότερα A. Trinc.
[d] ἡγεμονικὰς] ἡγεμονίας A. Trinc.
[e] ἄν τις] ἄν γ' εἰς Trinc.
[f] ἀριθμητικὴν] ἀριθμητικὴ B. ubi mox μετρητικὴ—στατικὴ.

ἑκάστης ἂν [g] γίγνοιτο. Φαῦλον μὲν [h] δή. Τό γ' οὖν [i] μετὰ ταῦτα εἰκάζειν λείποιτ' ἄν, καὶ τὰς αἰσθήσεις καταμελετᾶν ἐμπειρίᾳ καί τινι τριβῇ, ταῖς [k] τῆς στοχαστικῆς προσχρωμένους δυνάμεσιν, ἃς οἱ πολλοὶ τέχνας ἐπονομάζουσι, μελέτῃ καὶ πόνῳ τὴν ῥώμην [l] ἀπειργασμένας. Ἀναγκαιότατα λέγεις. 383

ΠΕΡΙ ΔΕΣΠΟΤΩΝ ΚΑΙ ΔΟΥΛΩΝ. ΞΒ.

1 [a] Εὐριπίδου Ἑλένη.

Κακὸς γὰρ ὅστις μὴ σέβει τὰ δεσποτῶν,
καὶ ξυγγέγηθε, καὶ [b] ξυνωδίνει κακοῖς.

2 [a] [b] Ἐγὼ μὲν εἴην, [c] κεἰ πέφυχ' ὅμως λάτρις,
ἐν τοῖσι γενναίοισιν ἠριθμημένος
δούλοισι, [d] τοὔνομ' οὐκ ἔχων ἐλεύθερον,
[e] τὸν νοῦν δέ. Κρεῖσσον γὰρ [f] τόδ' ἢ δυοῖν κακοῖν
[g] ἕν' ὄντα χρῆσθαι, τὰς φρένας [h] τ' ἔχειν κακὰς,
ἄλλων τ' ἀκούειν [i] δοῦλον ὄντα τῶν πέλας.

3 [a] Εὐριπίδου Μελεάγρῳ.

Ὡς ἡδὺ δούλοις δεσπότας χρηστοὺς λαβεῖν,
καὶ δεσπόταισι δοῦλον εὐμενῆ δόμοις.

[g] γίγνοιτο] γένοιτο A.
[h] τοι] δὴ A. Trinc.
[i] μετὰ] μέγα A. μελετᾶν Trinc. Mox λείποι Trinc.
[k] τῆς om. A.
[l] ἀπειργασμένους] ἀπειργασμένας Trinc.

1.

[a] Sic A. Scil. 732. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.
[b] ξυνωδίνει κακοῖς] συνδιώκει N. Trinc. κακοῖς om. N. A. B.

2.

[a] Hæc a præcedentibus separat A. addito lemmate Εὐριπίδου Ἑλένη. Lemma delevi cum Trincavello. Is tamen a prioribus distinguit, quæ cohærent in Euripide.
[b] ἐγὼ μὲν εἴην καὶ] ἐγὼ δ' εἰ δοῦλος A. B. ἐγὼ δὲ δοῦλος N. Trinc.
[c] καὶ πέφυκ'] εἰ πέφυκ' Trinc. ὑπεφηκ' (φυκ') N. ὁμοίως pro ὅμως B.
[d] τοὔνομ'] τοῦτ' ὄμμα A. B. τοῦτ' ὄνομ' Trinc.
[e] τὸν νοῦν] τὸν νοῦν δὲ A. Trinc.
[f] τόδ' ἢ] τοδὲ A. Trinc.
[g] ἐνδόντα] ἕν ὄντα Gesn. marg. ἕν' Grotius.
[h] τ'] τῷ A. Trinc.
[i] δοῦλον] δῆλον A. B.

3.

[a] Sic A. Scil. Fr. 8. Deest lemma Trinc.

4 [a] Εὐριπίδου Ἀντιγόνη.

Οὐ χρή ποτ' ἄνδρα δοῦλον ὄντ' ἐλευθέρας
γνώμας διώκειν, οὐδ' ἐς ἀργίαν βλέπειν.

5 [a] Μενάνδρου.

Λυπεῖ με δοῦλος μεῖζον οἰκέτου φρονῶν.

6 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ὅτ' ἂν τύχῃ τὶς εὐνοοῦντος οἰκέτου,
οὐκ ἔστιν οὐθὲν κτῆμα κάλλιον βίῳ.

7 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ὡς κρεῖττόν ἐστι δεσπότου χρηστοῦ τυχεῖν,
ἢ ζῆν ταπεινῶς καὶ κακῶς ἐλεύθερον.

8 [a] Φιλήμονος Θηβαίων.

Ἐμοῦ γάρ ἐστι κύριος [b] μὲν εἷς ἀνήρ·
[c] τούτων δὲ καὶ σοῦ μυρίων τ' ἄλλων νόμος,
ἑτέρων τύραννος, τῶν τυραννούντων φόβος.
δοῦλοι βασιλέων εἰσὶν, [d] ὁ βασιλεὺς θεῶν,
ὁ θεὸς ἀνάγκης. Πάντα δ', ἂν σκοπῇς ὅλως,
ἑτέρων πέφυκεν, [e] ἡττόνων δὲ μείζονα·
τούτοις ἀνάγκη ταῦτα δουλεύειν ἀεί.

4.

[a] Sic A. Gesner: *Ejusdem in Antiope,* nec mutavit Grotius. Vid. fr. Antiop. 14.

5.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 226.

6.

[a] Sic A. Cleric. ib. Deest lemma Trinc.

7.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Ibid. *Ejusdem, alias ad Philemonem refertur.* Gesner. *Incertus,* Grotius: vide n. 35.

8.

[a] Sic A. Cleric. p. 306. Philisco tribuit Grotius. Simpl. Φιλήμονος Trinc.

[b] μὲν εἷς] μὲν om. A. Trinc. habet B.

[c] τούτων] τοῦτον A.

[d] ὁ βασιλεὺς] Dedimus ὁ δὲ βασιλεὺς ob versum. Sunt autem hæc ex Thebanis Tragœdia: proinde Philisci, non Philemonis, qualia sæpe mutavimus. Grotius. Δὲ recte abest, si vel metrum vel sententiam spectes. Et recte abesse monuit Dobræus ad Aristophanica Porsoni p. 114.

[e] μειζόνων δ' ἐλάττονα] Ita recte emendat Scaliger. Male vulgo ἡττόνων δὲ μείζονα. Grotius.

Ib. ἡττόνων] ἧττον A. μειζόνων δὲ μείονα vel κρεισσόνων δὲ μ. legendum suspicatur Valckenærius.

9 [a] Ἀντιφάνους.

[b] Δούλῳ γὰρ οἶμαι πατρίδος ἐστερημένῳ
χρηστὸς γενόμενός ἐστι [c] δεσπότης πατρίς.

10 [a] Μενάνδρου.

Τί διακενῆς εἶ χρηστός; [b] ὁ δεσπότης
[c] αὐτὸς ἀπολαύει πάντα, σὺ δὲ μὴ [d] λαμβάνεις,
[e] σαυτὸν ἐπιτρίβεις, οὐκ ἐκεῖνον ὠφελεῖς.

11 [a] Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.

Κρεῖσσον [b] γὰρ οὔτε δοῦλον οὔτ' ἐλεύθερον
τρέφειν ἐν οἴκοις [c] ἀσφαλὲς τοῖς σώφροσι.

12 [a] Εὐριπίδου Ἀντιόπῃ.

Τὸ δοῦλον οὐχ ὁρᾷς ὅσον κακόν;

13 [a] Εὐριπίδου Ἀρχελάου.

Ἔσωσα δούλην οὖσαν. Οἱ γὰρ ἥσσονες
τοῖς κρείσσοσιν φιλοῦσι δουλεύειν βροτῶν.

14 [a] Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου.

Σοφὸς μὲν οὖν εἶ, Πρίαμ', ὅμως δέ σοι λέγω,
δούλου φρονοῦντος μᾶλλον ἢ φρονεῖν χρεὼν
οὐκ ἔστιν ἄχθος μεῖζον, οὐδὲ δώμασι.

9.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.
[b] δούλῳ] δοῦλος A. B.
[c] δεσπότης πατρίς] δ' ἔπος τῆς πατρίδος A. B.

10.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 226.
[b] εἶ ὁ δεσπότης] εἶ addidimus versu postulante. Grotius. εἶθ' Bentleius. Malim εἶ γ'.
[c] αὐτὸς ἀπόλλει] αὐτὸς ἀπολλύει A. B. αὐτὸς μὲν ἀπολεῖ Grotius. E mss. vestigiis restitui ἀπολαύει.

[d] λαμβάνεις] λαμβάνˢˢ A. λαμβάνῃ B.
[e] σεαυτὸν] σαυτὸν Grotius.

11.

[a] Sic A. Scil. Fr. 15. Simpl. Εὐριπίδου Trinc. Ibidem desunt lemmata usque ad n. 26.
[b] γὰρ οὔτε] γάρ τε A.
[c] ἀσφαλὲς] κἀσφαλὲς Grotius edidit. Delet tamen κ' in ms. et in v. superiore scribit κρέσσονα. κρείσσονα Musgravius.

12.

[a] Sic A. Scil. Fr. 15.

13.

[a] Sic A. Scil. Fr. 16.

14.

[a] Sic fere A. ubi Ἀλεξαν^δρ'. Scil. Fr. 6.

κτῆσις κακίων, οὐδ' ἀνωφελεστέρα.

15[a] Ἤλεγχον· οὕτω γὰρ κακὸν δοῦλον γένος. 384
γαστὴρ ἅπαντα, τοὐπίσω δ' οὐδὲν σκοπεῖ.

16 [a] Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου.

Δούλων ὅσοι φιλοῦσι δεσποτῶν γένος,
πρὸς [b] τῶν ὁμοίων πόλεμον αἱροῦνται μέγαν.

17 [a] Μενάνδρου Προεγκαλῶν.

[b] Τὸ δ' εὖ
κελευόμενον μέν ἐστιν ἀσφαλέστατον
[c] δούλῳ ποιεῖν, ὥς φασιν.

18 [a] Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου.

Ὦ παγκάκιστοι, καὶ τὸ δοῦλον οὐ λόγῳ
ἔχοντες, ἀλλὰ τῇ τύχῃ κεκτημένοι.

19 [a] Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου.

Δούλους γὰρ οὐ
καλὸν πεπᾶσθαι κρείσσονας τῶν δεσποτῶν.

20 [a] Εὐριπίδου Ἀλκμαίωνος.

Μέτεστι τοῖς δούλοισι δεσποτῶν νόσου.

21 [a] Εὐριπίδου Βουσίριδος.

Δούλῳ γὰρ οὐχ οἷόν τε τἀληθῆ λέγειν,
εἰ δεσπόταισι μὴ πρέποντα τυγχάνοι.

15.

[a] Deest locus A. v. Fr. Alexandr. 8.

16.

[a] Sic A. Scil. Fr. 9.
[b] τῶν] τὸν A. Trinc.

17.

[a] Sic A. Cleric. p. 158. Deest locus Trinc.
[b] Servavi vulgata. Dedit Grotius τὸ δὲ κελευόμενόν ἐστιν ἀ. Plura mutat Jacobsius in Athen. p. 187.
[c] δουλοποιεῖν] δούλῳ ποιεῖν Grotius.

18.

[a] Sic Gesner. Scil. Fr. 7. Nihil enotavi ex A.

19.

[a] Sic fere A. ubi Ἀλεξαν. (δέ) Scil. Fr. 10.

20.

[a] Sic Gesner. Scil. Fr. 4. Nihil enotatum ex A.

21.

[a] Sic Gesner. Scil. Fr. 1. Nihil enotatum ex A.

22 [a] Εὐριπίδου Ἀλκμαίωνος.

Ὅστις δὲ δούλῳ φωτὶ πιστεύει βροτῶν,
πολλὴν παρ' ἡμῖν μωρίαν ὀφλισκάνει.

23 [a] Εὐριπίδου Εὐρυσθέως.

Πιστὸν μὲν οὖν [b] εἶναι χρὴ τὸν διάκονον
[c] τοιοῦτον εἶναι, καὶ [d] στέγειν τὰ δεσποτῶν.

24 [a] Εὐριπίδου Ἀλκμήνης.

Ἀεὶ δ' ἀρέσκειν τοῖς κρατοῦσι· ταῦτα γὰρ
δούλοις ἄριστα, [b] κἀφ' ὅτῳ τεταγμένος
εἴη τὶς, ἀνδάνοντα δεσπόταις ποιεῖν.

25 [a] Εὐριπίδου Ἑκάβης.

[b] Αἲ αἲ, τὸ δοῦλον ὡς κακὸν πέφυκ' ἀεὶ,
τολμᾷ θ' ἃ μὴ χρὴ τῇ βίᾳ κρατούμενον.

26 [a] Εὐριπίδου Ἴωνος.

Ἓν [b] γάρ τι τοῖς δούλοισιν αἰσχύνην φέρει
τοὔνομα· τὰ δ' ἄλλα πάντα τῶν ἐλευθέρων
οὐδεὶς κακίων δοῦλος, ὅστις ἐσθλὸς ᾖ.

27 [a] Μενάνδρου Παιδίου.

[b] Ἅπαντα δουλεύειν ὁ δοῦλος μανθάνει,
πονηρὸς ἔσται. Μεταδίδου παρρησίας,

22.

[a] Sic A. Scil. Fr. 5.

23.

[a] Sic A. Scil. Fr. 4.

[b] εἶναι χρὴ] Reliqui mendosa. αἰνῶ γε conjicit Musgravius: πιστὸν οὖν χρὴ διάκονον Grotius, pessime.

[c] τοιοῦτόν τ'] τε om. A.

[d] στέργειν] στέγειν A. B. Gesn. marg.

24.

[a] Sic A. Scil. Fr. 5.

[b] κἀφ' ὅτῳ] κἀφί τῳ A.

25.

[a] Sic A. Scil. v. 332.

[b] αἲ αἲ] οὐαὶ A. B.

26.

[a] Sic A. Scil. v. 872.

[b] γάρ τι] ἄργει A. Trinc.

27.

[a] Sic Gesner. Cleric. p. 140. Simpl. Μενάνδρου Trinc. Nihil enotatum ex A. Deest locus B.

[b] ἅπαντα] εἰ πάντα Gesn. marg. et sic edidit Grotius. Idem in mss. " ἂν πάνθ' ὁ—ἡσυχάζων. et v. " seq. μεταδιδοὺς Philo 321."

βέλτιστον αὐτὸν τοῦτο ποιήσει πολύ.

28 [a] Φιλήμονος Ἐξοικιζομένου.

Κἂν δοῦλος [b] ᾖ τις, οὐθὲν ἧττον, [c] δέσποτα,
ἄνθρωπος οὗτός ἐστιν, ἂν ἄνθρωπος ᾖ.

29 [a] Φιλήμονος Παίδων.

Κακόν ἐστι δούλῳ δεσπότης πράσσων κακῶς·
μετέχειν ἀνάγκη τῶν κακῶν γὰρ γίγνεται.

30 [a] Σοφοκλέους Ἀκρισίῳ.

Δῆλον γὰρ ἐν δεσμοῖσι δραπέτης ἀνὴρ
κῶλον ποδισθεὶς πᾶν πρὸς ἡδονὴν λέγει.

31 [a] Μενάνδρου Θεττάλῃ.

Εὐθυμία [b] βίε τὸν δοῦλον τρέφει.

32 [a] Εὐβούλου.

Πολλοὶ φυγόντες δεσπότας, ἐλεύθεροι
ὄντες, πάλιν ζητοῦσι τὴν αὐτὴν φάτνην.

33 [a] Σοφοκλέους.

Εἰ σῶμα δοῦλον, ἀλλ' ὁ νοῦς ἐλεύθερος.

34 [a] Μενάνδρου.

Ἐμοὶ πόλις ἐστὶ, καὶ καταφυγὴ, καὶ νόμος,
καὶ τοῦ δικαίου τοῦ τ' ἀδίκου παντὸς κριτὴς,
ὁ δεσπότης· πρὸς τοῦτον ἕνα δεῖ ζῆν ἐμέ.

28.

[a] Sic A. Cleric. p. 350. Simpl. Φιλήμονος Trinc.

[b] ἦν] ᾖ B.

[c] δέσποτα] δεσποτὶς A.

29.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Cleric. p. 300.

30.

[a] Sic A. Fr. 3. Simpl. Σοφοκλ. Trinc.

31.

[a] Sic A. Cleric. p. 82. Deest locus Trinc.

[b] βίε τῶν δούλων τρέφει] βί' τὸν δοῦλον στρέφει A. βίου τὸν δοῦλον B. Deest fragmentum Trincavello. Εὐθυμία τοι, Τίβιε, τὸν δοῦλον τρέφει, Bentleius. Mihi in mentem venit, E. βέλτιστε, τὸν δοῦλον τρέφει.

32.

[a] Sic A. Trinc.

33.

[a] Sic A. Trinc. Fr. inc. 22.

34.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 236.

35 [a] Φιλίππου.

Ὡς κρεῖττόν ἐστι δεσπότου χρήστου τυχεῖν,
ἢ ζῆν ταπεινῶς καὶ κακῶς ἐλεύθερον.

36 [a] Θεόγνιδος.

Οὔ ποτε δουλείη κεφαλὴ εὐθεῖα πέφυκεν,
ἀλλ' ἀεὶ σκολιὴ, καὐχένα λοξὸν ἔχει.

37 [a] Εὐριπίδου Μηδείας.

Χρηστοῖσι δούλοις ξυμφορὰ τὰ δεσποτῶν
κακῶς [b] πίπτοντα, καὶ φρενῶν ἀνθάπτεται.

38 [a] Εὐριπίδου Μελανίππης.

Δοῦλον γὰρ ἐσθλὸν τοὔνομ' οὐ [b] διαφθείρει·
πολλοὶ δ' ἀμείνους εἰσὶ τῶν ἐλευθέρων.

39 [a] Εὐριπίδου Φρίξος.

Πολλοῖσι δούλοις τοὔνομ' αἰσχρόν· ἡ δὲ φρὴν
τῶν οὐχὶ δούλων ἔστ' ἐλευθερωτέρα.

40 [a] Ἀλέξιδος.

Ἀλλ' ἐπὶ τὸ πλῆθος ἐμφερεῖς τοὺς οἰκέτας
ἔχοντας ὄψει τοὺς τρόπους τοῖς δεσπόταις.
[b] τοῖς ἤθεσιν γὰρ τοῖς ὑπηρετοῦσι καὶ

35.

[a] Sic A. Deest locus Trinc. Omisit item editor Francofurtensis.

[b] Qui heic apud Stobæum sequuntur versus mendose repetiti sunt, cum supra exstent. Grotius. V. supra n. 7.

36.

[a] Sic A. Trinc. Scil. v. 535.

37.

[a] Sic A. Scil. v. 54. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] πίπτοντα] πιτνοῦντα Gesner. marg.

38.

[a] Sic A. Scil. Fr. 6. Deest lemma Trinc.

[b] διαφθείρει] διαφθερεῖ Grotius.

39.

[a] Sic A. Scil. Fr. 10. Deest lemma Trinc.

40.

[a] Sic A. Trinc.

[b] τοῖς ἤθεσιν γὰρ τοῖς ὑπηρετοῦσι καὶ] L. τοῖς ἤθεσιν γὰρ οἷς ὑπηρετοῦσ' ἀεί. Valcken.

Ib. τοῖς ἤθεσιν γὰρ τῶν δ' ὑπηρετοῦσι] Nimirum dominorum. Ita nos, cum esset τοῖς ὑπηρετοῦσι sine sensu. Grotius. Idem in mss. "Tertullianus libro de Patientia "idem quod hic dicit: *Probos* "*quosque servos et bonæ mentis*

[c] προσέχουσα τούτοις ἡ φύσις κεράννυται.

41 [a] Εὐριπίδου Ἀντιόπης.

Φεῦ φεῦ· τὸ δοῦλον ὡς ἁπανταχῇ γένος
πρὸς τὴν ἐλάσσω μοῖραν ὥρισεν θεός. 385

42 [a] Δίωνος ἐν τῷ Περὶ Δουλείας.

[b] Οἱ ἀγαθοὶ οἰκέται, ἐλεύθεροι· οἱ πονηροὶ ἐλεύθεροι, δοῦλοι πολλῶν ἐπιθυμιῶν.

43 [a] Φαβωρίνου.

Ζάμολξις οἰκέτης ἦν Πυθαγόρου, καὶ προσεκύνησαν αὐτὸν [b] οἱ τότε.

44 [a] Μητροδώρου.

Δοῦλος ἀναγκαῖον μὲν κτῆμα, οὐχ ἡδὺ δέ.

45 [a] Δημοκρίτου.

[b] Οἰκέτῃσιν ὡς μέρεσι τοῦ σκήνεος χρῶ, [c] ἄλλῳ πρὸς ἄλλο.

46 [a] Δίωνος ἐκ τοῦ Οἰκονομικοῦ.

Χρὴ οὖν δεσπόζειν ἐπιεικῶς, καὶ ἀνεθῆναί ποτε βουλομένοις ἐπιτρέπειν. Αἱ γὰρ ἀνέσεις παρασκευαστικαὶ πόνων εἰσί· καὶ τόξον, καὶ λύρα, καὶ ἄνθρωπος, ἀκμάζει δι᾽ ἀναπαύσεως.

47 [a] Διογένους.

Διογένης, ἀποδράντος τοῦ οἰκέτου, οὐκ ἐφρόντιζε· δεινὸν

"pro ingenio dominico conversa-
"ri videmus, siquidem artificium
"promerendi obsequium est."*

[c] προσέχουσα] προέχουσα Gesn. marg.

41.

[a] Sic A. Scil. Fr. 16. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

42.

[a] Sic A. suprascripto tamen a p. manu Βιωνος, quod habet Tr. vid. supra II. 39. *Bionis in libro de Servitute* Gesner.

[b] φησὶ ὁ Βίων, Οἱ ἀ. A.

43.

[a] Φαβουρίνου A. Deest locus Trinc.

[b] οἱ τότε] οἱ πότε A. B. οἱ Γέται emendat Hemsterhusius ad Thomam Mag. p. 188.

44.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

45.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

[b] οἰκέτῃσιν] οἰκέταισι A. B.

[c] ἄλλῳ] ἄλλο A. B.

46.

[a] Sic A. Simpl. Δίωνος Trinc.

47.

[a] Sic A. Tanquam ex Serino Trinc.

εἶναι λέγων, εἰ Διογένης μὲν χωρὶς αὐτοῦ ζῆν οὐ δύναται, αὐτοῦ δ' ἐκεῖνος χωρὶς δύναται.

48 [a] Ἐκ τῶν Σερήνου ἀπομνημονευμάτων.

[b] Πολλίας ὁ Ἀκραγαντῖνος ἐπιξενωθεὶς ἀνδρὶ σκληρῷ καὶ ἀπὸ παντὸς πορίζοντι, ὃς [c] οὐδὲ καθεύδειν τοῖς οἰκέταις ἐπέτρεπεν, ἀλλ' ἄλλος ἄλλό τι τὴν νύκτα εἰργάζετο· ὑποδεξάμενος καὶ αὐτὸς τοῦτον εἰς Ἀκράγαντα ἀφικόμενον, μετὰ δεῖπνον συνεκάλει τὰ παιδία τῶν οἰκετῶν, τὰ δὲ ἦν πάμπολλα, καὶ τοῖς μὲν ἐδίδου κάρυα, τοῖς δὲ σῦκα ξηρά. Ἐρομένου [d] δ' ἐκείνου, Πόθεν παιδία τοσαῦτα; Ταῦτα, ἔφη, οἱ ἐμοὶ οἰκέται [e] ἐν νυξὶ ποιοῦσι.

49 [a] Πλάτωνος.

Δουλεία γὰρ καὶ ἐλευθερία ὑπερβάλλουσα μὲν ἑκατέρα, [b] πάγκακος· ἔμμετρος δὲ οὖσα, πανάγαθον. Μετρία δὲ ἡ θεῷ δουλεία· ἄμετρος δὴ ἡ τοῖς [c] ἀνθρώποις. Θεὸς δὲ ἀνθρώποις σώφροσι νόμος.

50 [a] Ὁ μὴ δουλεύσας οὐδ' ἂν δεσπότης γένοιτο ἄξιος ἐπαίνου.

51 [a] Ἡροδότου ἱστορίας η̄.

Πρὸς δὲ, ὦ βασιλεῦ, καὶ τόδε ἐς θυμὸν [b] βάλεο, ὡς τοῖσι μὲν χρηστοῖσι τῶν ἀνθρώπων κακοὶ δοῦλοι φιλέουσι γίγνεσθαι, τοῖσι δὲ κακοῖσι, χρηστοί.

52 [a] Πλάτωνος Νόμων ϛ̄.

Ἐπειδὴ δύσκολόν ἐστι τὸ θρέμμα ἄνθρωπος, καὶ πρὸς τὴν

48.
[a] Sic A. nisi quod habet Σερίνου. Tr. præfigere videtur n. 47.
[b] Γελλίας] Πολλίας A. B.
[c] οὐδὲ] μηδὲ A.
[d] δ' ἐκείνου om. A.
[e] ἐν νυξὶ om. Trinc.

49.
[a] Sic A. Trinc. Scil. Epist. 8. p. 354. E.
[b] πάγκακος] πάμκακ A.
[c] ἀνθρώποις] ἀνθρώποισι A.

50.
[a] Cum prioribus conjungunt A. Trinc. Recte Gesnerus: *Ejusdem Legum* 6. Scil. p. 762. E.

51.
[a] Sic A. Scil. VIII. 68. Simpl. Ἡροδότου Trinc.
[b] βάλλε] βάλεο A. B.

52.
[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 777.

ἀναγκαίαν διόρισιν, τὸ δοῦλόν τε ἔργῳ [c] διορίζεσθαι καὶ ἐλεύθερον καὶ δεσπότην, οὐδαμῶς εὔχρηστον ἐθέλειν εἶναί τε καὶ γίγνεσθαι φαίνεται, χαλεπὸν δὴ τὸ κτῆμα· ἔργῳ γὰρ πολλάκις ἐπιδέδεικται περὶ τὰς Μεσσηνίων συχνὰς εἰωθυίας ἀποστάσεις γίγνεσθαι, [καὶ [d] περί γε τὰς τῶν ἐκ μιᾶς φωνῆς πολλοὺς οἰκέτας κτωμένων πόλεις, ὅσα κακὰ ξυμβαίνει,] καὶ ἔτι τὰ τῶν λεγομένων [e] περιδείνων, τῶν περὶ τὴν Ἰταλίαν γιγνομένων [f] παντοδαπῶν καὶ κλοπῶν ἔργα τε καὶ παθήματα· πρὸς ἅ τις [g] ἂν πάντα βλέψας [h] διαπορήσαι τί χρὴ [i] δρᾶν περὶ πάντων τῶν τοιούτων. Δύο δὴ [k] λείπεσθον [l] μόνω μηχανά· μήτε πατριώτας ἀλλήλων εἶναι τοὺς μέλλοντας ῥᾷον δουλεύσειν, ἀσυμφώνους τε εἰς δύναμιν ὅτι μάλιστα, τρέφειν [m] δὲ αὐτοὺς ὀρθῶς, μὴ μόνον ἐκείνων [n] οὕνεκα, πλέον δὲ [o] αὑτῶν προτιμῶντας. Ἡ δὲ τροφὴ τῶν τοιούτων, μήτε τινὰ [p] ὕβριν ὑβρίζειν [q] εἰς τοὺς οἰκέτας, ἧττον δὲ εἰ δυνατὸν ἀδικεῖν, ἢ τοὺς ἐξ ἴσου· διάδηλος γὰρ ὁ φύσει καὶ μὴ πλαστῶς σέβων τὴν δίκην, μισῶν δὲ [r] ὄντως τὸ ἄδικον ἐν τούτοις τῶν ἀνθρώπων, ἐν οἷς αὐτῷ ῥᾴδιον ἀδικεῖν. [[s] Ὁ] περὶ τὰ τῶν δούλων οὖν ἤθη καὶ πράξεις γιγνόμενός τις ἀμίαντος, τοῦ τε ἀνοσίου πέρι καὶ ἀδίκου, σπεί- 386
ρειν εἰς ἀρετῆς ἔκφυσιν ἱκανώτατος ἂν εἴη· ταυτὸν δ' ἔστιν εἰπεῖν τοῦτο ὀρθῶς ἅμα λέγοντα ἐπί τε δεσπότῃ καὶ τυράννῳ καὶ πᾶσαν δυναστείαν δυναστεύοντι πρὸς ἀσθενέστε-

[c] διωρίσθαι] διορίζεσθαι A. B. καὶ addunt A. B. Trinc.
[d] περί γε usque ad ξυμβαίνει om. A. Trinc.
[e] περιδίνων] περιδεινῶν A. περὶ δεινῶν Trinc.
[f] παντοδαπὰ] παντοδαπῶν καὶ A.
[g] ἅπαντα] ἂν πάντα A. B. ἂν Trinc. sine πάντα.
[h] διαπορήσειε] διαπορήσαι A. Tr.
[i] δρᾶν] δ' ἂν A. Trinc. Mox A. om. τῶν.
[k] λίπεσθον] λείπεσθον A.
[l] μόνον μηχανὰ] μόνονήχανα A. B.
[m] δὲ om. A.
[n] ἕνεκα] οὕνεκα A. Trinc.
[o] αὑτῶν προτιμῶντες] αὐτὸν προτινῶντες A. αὑτῶν προτιμῶντες Trinc.
[p] ὕβριν] om. A.
[q] τοὺς] εἰς τοὺς A.
[r] ὄντως] ὄντος A.
[s] ὁ περὶ] ὁ om. A. Trinc. Mox σπέρειν Trinc.

ρον ἑαυτοῦ. Κολάζειν γε μὴν ἐν δίκῃ δούλους δεῖ, καὶ μὴ νουθετοῦντας ὡς ἐλευθέρους θρύπτεσθαι ποιεῖν· τὴν δὲ οἰκέτου πρόσρησιν χρὴ σχεδὸν ἐπίταξιν πᾶσαν γίγνεσθαι, μὴ προσπαίζοντας μηδαμῇ μηδαμῶς οἰκέταις, μήτ' οὖν θηλείαις μήτ' ἄρρεσιν· ἃ δὴ πρὸς δούλους φιλοῦσι πολλοὶ σφόδρα ἀνοήτως θρύπτοντες χαλεπώτερον ἀπεργάζεσθαι τὸν βίον ἐκείνοις τε ἄρχεσθαι, καὶ [t] ἑαυτοῖς ἄρχειν.

ΠΕΡΙ ΑΦΡΟΔΙΤΗΣ ΠΑΝΔΗΜΟΥ ΠΑΡΕΧΟΥΣΗΣ ΤΗΝ ΑΙΤΙΑΝ ΤΗΣ ΓΕΝΕΣΕΩΣ ΤΟΙΣ ΑΝΘΡΩΠΟΙΣ, ΚΑΙ ΠΕΡΙ ΕΡΩΤΟΣ ΤΩΝ ΚΑΤΑ ΤΟ ΣΩΜΑ ΗΔΟΝΩΝ. ΞΓ.

1 [a] Εὐριπίδου Αἰόλῳ.

Τῇ δ' ἀφροδίτῃ πόλλ' ἔνεστι ποικίλα·
τέρπει τε γὰρ μάλιστα, καὶ λυπεῖ βροτούς.
τύχοιμι δ' αὐτῆς, ἡνίκ' ἐστὶν εὐμενής.

2 [a] Εὐριπίδου Ἀντιόπῃ.

[b] Κόρος δὲ πάντων· καὶ γὰρ ἐκ καλλιόνων
λέκτροις ἐν αἰσχροῖς εἶδον ἐκπεπληγμένους.
δαιτὸς δὲ πληρωθείς τις ἄσμενος πάλιν
φαύλῃ διαίτῃ προσβαλὼν ἥσθη στόμα.

3 [a] Εὐριπίδου Ἱππολύτῳ.

Οἱ γὰρ Κύπριν φεύγοντες ἀνθρώπων ἄγαν,
νοσοῦσ' ὁμοίως [b] τοῖς ἄγαν θηρωμένοις.

[t] ἑαυτοῖς] αὑτοῖς A. B.

1.

[a] Sic A. Scil. Fr. 10. Simpl. Εὐριπίδου Trinc. ubi desunt lemmata usque ad n. 5.

2.

[a] Sic A. Scil. Fr. 27.

[b] Videatur Valcken. Diatr. Eurip. p. 64. In v. ult. ἤσῃ A. οἴσει B.

3.

[a] Sic A. Scil. Fr. 5.

[b] τοῖς ἄγαν θηρωμένοις] Optime hanc lectionem Salmasius ex duabus vitiosis concinnavit. Nam heic erat τοῖς διώκουσιν ἄγαν contra versum: at apud Plutarchum

4 [a] Εὐριπίδου Ἀντιγόνῃ.

Ἀνδρὸς δ' [b] ἐρῶντος εἰς Κύπριν νεανίου
ἀφύλακτος ἡ τήρησις· [c] ἂν γὰρ φαῦλος ᾖ
[d] τἄλλ', εἰς ἔρωτα πᾶς ἀνὴρ σοφώτερος·
ἣν δ' [e] ἂν προσῆται Κύπρις, ἥδιστον λαβεῖν.

5 [a] Εὐριπίδου Ἱππολύτῳ.

Κύπρις γὰρ οὐ [b] φορητὸν, ἢν πολλὴ ῥυῇ·
ἣ τὸν μὲν [c] εἴκονθ' ἡσυχῇ μετέρχεται,
[d] ὃν δ' ἂν περισσὰ καὶ φρονοῦνθ' εὕρῃ μέγα,
τοῦτον λαβοῦσα, [e] πῶς δοκεῖς, καθύβρισεν.

6 [a] Σοφοκλέους.

Ὦ παῖδες, ἥ τοι Κύπρις οὐ Κύπρις μόνον,
ἀλλ' ἔστι πάντων ὀνομάτων ἐπώνυμος.
ἔστιν μὲν Ἅδης, ἔστι δ' ἄφθιτος βία,
ἔστιν δὲ λύσσα μαινὰς, ἔστι δ' ἵμερος
ἄκρατος, ἔστ' οἰμωγμός· [b] ἐν ἐκείνῃ τὸ πᾶν
σπουδαῖον, [c] ἡσύχαιον, εἰς βίαν ἄγον.
ἐντήκεται γὰρ [d] πλευμόνων ὅσοις ἔνι
ψυχή. τίς οὐχὶ [e] τῆσδε τῆς θεοῦ [f] βορά;

(p. 778. B.) τοῖς ἀγάθ' ἠρημένοις contra sensum. Grotius. Vide Valckenærium ad Euripid. Hippol. 113.

4.

[a] Sic A. Scil. Fr. 6.

[b] ἐρῶντος] ὁρῶντος Valcken. Diatr. p. 198. 242. post Musgravium.

[c] κἂν] ἂν Grotius.

[d] τἄλλ'] τὰ δ' ἀλλ' Voss. τὰ δ' ἄλλα A. m. p. Trinc. τά γε A. m. sec. τά γ' εἰς ἔρωτα B. ἔρωτας A.

[e] ἂν] Lego, εὖ. Gesner. ἣν δ' οὐ προσῆται, κύπριν Valcken. ἣν δ' ἂν—*quamcumque autem appetiverit Venus*, Musgravius.

5.

[a] Sic A. Scil. v. 443.

[b] φορητὸν] φορητὸς Gesn. marg.

[c] εἴκονθ'] ἥκονθ' Voss. Arsen. Trinc.

[d] ὃν δ' ἂν] ὃν δ' αὖ περισσὸν Gesn. marg.

[e] πῶς δοκεῖς] οὕτω πῶς A. N. Voss. Arsen. Trinc.

6.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Fr. inc. 23.

[b] ἐν ἐκείνῃ] ἐν om. Arsen. κείνῃ Voss.

[c] ἡσυχαῖον] ἡσύχιον A. Gesner. marg.

[d] πλευμόνων] πνευμόνων B.

[e] τῆσδε om. A.

[f] βορός] Forte φορὸς. Gesner: Grotius dedit τί δ' οὐχὶ τῆσδε τῆς θεοῦ βορά. Recepi οὐχὶ pro οὔτι et βορά.

εἰσέρχεται μὲν ἰχθύων [g] πλωτῷ γένει·
ἔνεστι δ' ἐν χέρσου τετρασκελεῖ [h] γονῇ·
νωμᾷ δ' ἐν οἰωνοῖσι τοὐκείνης πτερὸν,
ἐν θηρσὶν, ἐν βροτοῖσιν, ἐν θεοῖς ἄνω.
τίν' οὐ παλαίουσ' ἐς τρὶς ἐκβάλλει θεῶν;
εἴ μοι θέμις, θέμις δὲ τἀληθῆ λέγειν,
Διὸς τυραννεῖ πλευμόνων· ἄνευ δορὸς,
ἄνευ σιδήρου πάντα τοι συντέμνεται 387
Κύπρις τὰ θνητῶν καὶ θεῶν βουλεύματα.

7 [a] Ἐκ τῶν Βίωνος Βουκολικῶν.

Ταὶ Μοῖσαι τὸν ἔρωτα τὸν ἄγριον [b] ἢ φοβέονται,
[c] ἢ 'κ θυμῶ φιλέοντι, καὶ ἐκ ποδὸς αὐτῷ ἕπονται.
κ' ἢν μὲν ἄρα ψυχάν τις ἔχων ἀνέραστον [d] ἀείδῃ,
τῆνον ὑπεκφεύγοντι, καὶ οὐκ ἐθέλοντι διδάσκειν·
[e] ἢν δὲ νόον τῷ ἔρωτι δονεύμενος ἁδὺ μελίσδῃ,
ἐς τῆνον μάλα πᾶσαι ἐπειγόμεναι προρέοντι.
μάρτυς ἐγὼν, ὅτι μῦθος [f] ὅδ' ἔπλετο πᾶσιν ἀληθής.
[g] ἢν μὲν γὰρ [h] βροτὸν ἄλλον ἢ [i] ἀθανάτων τινὰ μέλπω,
[k] βαμβαίνει [l] μευ γλῶσσα, καὶ ὡς πάρος οὐκ ἔτ' ἀείδει·
ἢν δ' [m] αὖτ' ἐς τὸν ἔρωτα καὶ ἐς Λυκίδαν τὶ μελίσδω,
καὶ τόκα μοι χαίροισα διὰ στόματος [n] ῥέει ᾠδά.

8 [a] Ζωπύρου.

Μηδεὶς ἄπειρος τῶν ἐμῶν εἴη φίλων
[b] ἔρωτος· εὐτυχῶν δὲ τὸν θεὸν λάβοι.

[g] πλωτῷ] πλωτῶν Arsen.
[h] γονῇ] γένει A.

7.

[a] Sic A. Trinc.
[b] οὐ φοβέουσαι] ἢ φοβέονται A. N. Trinc. οὐ φοβέονται Voss.
[c] ἐκ θυμῶ] ἢ 'κ A. B. Trinc.
[d] ὀπηδεῖ] δεῖ δὴ A. p. m. ἀείδη B. δὴ δὴ Trinc.
[e] ἢν δὲ] εἴ δη Voss. κἢν δὲ B. ἢ δὲ Trinc.
[f] ὅθ'] ὅδ' A. ὃ δ' Trinc.
[g] ἢν] κἢν B.
[h] βροτὸν] θεὸν B.
[i] ἀθάνατον] ἀθανάτων B.
[k] καμβαίνει] βαμβαίνει A. B.
[l] μεῦ] μοι A.
[m] αὖτ' ἐς] αὐτὸν B.
[n] ῥέει] ῥεῖ Trinc.

8.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.
[b] βροτὸς] ἔρωτος Gesn. marg.

9 [a] Ἀριστάρχου.

Ἔρωτος ὅστις μὴ πεπείραται βροτῶν,
οὐκ οἶδ' ἀνάγκης θεσμόν· ᾧ πεισθεὶς ἐγὼ,
οὕτω κρατηθεὶς, τάσδ' [b] ἀπεστάλην ὁδούς.
οὗτος γὰρ ὁ θεὸς καὶ τὸν ἀσθενῆ σθένειν
τίθησι, καὶ τὸν ἄπορον εὑρίσκειν [c] πόρον.

10 [a] Ἀναξανδρίδου.

Ἔρως σοφιστοῦ γίγνεται διδάσκαλος
σκαιοῦ πολὺ [b] κρείττων πρὸς τὸν ἀνθρώπων βίον.

11 [a] Εὐριπίδου Αὐγῇ.

Ἔρωτα δ' ὅστις μὴ θεὸν κρίνει μέγαν,
καὶ τῶν ἁπάντων δαιμόνων ὑπέρτατον,
ἢ σκαιός ἐστιν, ἢ καλῶν ἄπειρος ὢν,
οὐκ οἶδε τὸν μέγιστον ἀνθρώποις θεόν.

12 [a] Ἀντιφάνους.

[b] Εἴ τις φησὶ τοὺς ἐρῶντας οὐχὶ νοῦν ἔχειν,
ἦ που τίς ἐστι τοὺς τρόπους ἀβέλτερος.
εἰ γὰρ ἀφέλοι τὶς τοῦ βίου τὰς ἡδονὰς,
[c] καταλείπετ' οὐδὲν [d] ἕτερον, ἢ τεθνηκέναι.

13 [a] Ἀλέξιδος.

Οὐκ ἔστι παιδαγωγὸς ἀνθρώποις ἄρα

9.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ἀπεστάλην] ἐπιστάμην Voss. Arsen. ἐπεστάλην B.

[c] πόρον] πόρους tacite citat Jacobsius Cur. Secund. pag. 213. notante Blomfieldio Mus. Crit. Cantab. II. p. 501. quem vide etiam in Æschyli Prom. 59.

10.

[a] Sic A. Trinc.

[b] κρείτττων] κρεῖττον A.

11.

[a] Sic A. Scil. Fr. 3. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

[b] Cæcilius: *Amorem qui non esse deum summum putet, Aut stultum, aut rerum esse imperitum existimo.* Grotius in mss. Vid. Valckenær. Diatr. p. 157.

12.

[a] Sic A. Trinc.

[b] εἴ τις φησι] ὅς φησι Grotius, qui hanc aliam in notis proponit conjecturam: Εἴ τοὺς ἐρῶντας φησί τις νοῦν οὐκ ἔχειν. Cæterum hos versus Theophilo in Philaulo tribuit Athenæus XIII. p. 563. A. ubi MSS. præbent τίς φησι sine εἰ. edd. habent ὅς cum Grotio. Εἰ τοὺς ἐ. φησί τις Gesneri margo.

[c] καταλείπετ'] καταλείποιτ' Voss.

[d] ἕτερον ἢ] ἄλλο πλὴν Athenæus.

13.

[a] Sic A. Trinc.

ἔρωτος οὐδεὶς ἄλλος ἐπιμελέστερος.
[b] εἶτ' οὖν μέγιστός ἐστι τῶν θεῶν ἔρως,
καὶ τιμιώτατός [c] γε τῶν πάντων πολύ.
οὐδεὶς γὰρ οὕτως ἐστὶ φειδωλὸς σφόδρα
ἄνθρωπος, οὐδ' οὕτως ἀκριβὴς τοὺς τρόπους,
ὃς οὐχὶ τούτῳ μερίδα [d] τῷ θεῷ νέμει.

14 [a] Μενάνδρου Θησαυρῶν.

Τῆς οὐσίας [b] ὅσοις μὲν οὖν πράως [c] ἔχει,
[d] νέοις ἔτ' οὖσι τοῦτο [e] προστάττει ποιεῖν·
οἱ δ' εἰς τὸ γῆρας ἀναβολὰς ποιούμενοι,
οὗτοι προσαποτίνουσι [f] τοῦ χρόνου τόκους.

15 [a] Μενάνδρου Συναριστώσαις.

Ἔρως δὲ τῶν θεῶν
ἰσχὺν ἔχων πλείστην ἐπὶ [b] τούτου δείκνυται·
διὰ τοῦτον ἐπιορκοῦσι τοὺς ἄλλους θεούς.

16 [a] Μιμνέρμου.

Τίς [b] δὲ βίος, τί δὲ τερπνὸν ἄτερ χρυσῆς Ἀφροδίτης;
τεθναίην, ὅτε μοι μηκέτι ταῦτα μέλοι,
[c] κρυπταδίη φιλότης, καὶ μείλιχα δῶρα, καὶ εὐνή·

[b] εἶτ' οὖν] εἶτ' οὐ Valckenærius Diatr. pag. 158. cum interrogatione. Et sic Jacobsius ad Athen. p. 180. et Tyrwhittus. Suspicatur porro Tyrwhittus quinque, qui sequuntur, versus a prioribus sejungendos, et cum proximo fragmento ita connectendos esse, ὃς οὐχὶ τ. μ. τ. θ. νέμει τῆς οὐσίας. Ὅσοις μὲν οὖν—Præclare, ut opinor.
[c] γε om. A.
[d] τῷ θεῷ] τῶν θεῶν A.

14.

[a] Sic A. Cleric. p. 84. Simpl. Μενάνδρου Trinc.
[b] ὅσοις om. A.
[c] ἔχει] ἔχ A.
[d] νέοις αἰτοῦσι] νέοις ἔτ' οὖσι conjicit Gesnerus, et sic B.
[e] προστάττειν] προστάττει A. B.
[f] ὡραίους] τοῦ χρόνου A. B. Gesn. marg. Sub ὡραίους aliud quid latere suspicatur Bentleius, forte ἀωρίας.

15.

[a] Sic A. Cleric. p. 168. Deest locus Trinc.
[b] τούτου] τούτοις B.

16.

[a] Sic A. Trinc.
[b] δὲ] δαὶ Arsen.
[c] κρυπταδίη] Desunt reliqua Tr.

[d] ἄνθεα τῆς ἥβης γίγνεται ἁρπαλέα
ἀνδράσιν ἠδὲ γυναιξίν· [c] ἐπεὶ δ' ὀδυνηρὸν ἐπέλθῃ 388
γῆρας, ὅ τ' αἰσχρὸν ὁμῶς καὶ καλὸν ἄνδρα τιθεῖ,
αἰεὶ μὲν φρένας ἀμφὶ κακαὶ τείρουσι μέριμναι,
οὐδ' αὐγὰς [f] προσορῶν τέρπεται ἠελίου·
ἀλλ' ἐχθρὸς μὲν παισὶν, ἀτίμαστος δὲ γυναιξίν.
οὕτως ἀργαλέον γῆρας ἔθηκε θεός.

17 [a] Μενάνδρου Ναυκλήρῳ.

Καὶ φύσει πῶς [b] εὐάγωγόν ἐστι πᾶς ἀνὴρ ἐρῶν.

18 [a] Μενάνδρου Θησαυροῖς.

Πολλοῖς ὑπέκκαυμ' ἐστ' ἔρωτος μουσική.

19 [a] Θεοκρίτου.

Ἔστι καὶ ἐν κενεοῖσι [b] φιλήμασιν ἀδέα τέρψις.

20 [a] Μενάνδρου.

Ὀργὴ φιλούντων ὀλίγον ἰσχύει χρόνον.

21 [a] Μενάνδρου Ἥρωι.

Δέσποιν', ἔρωτος οὐδὲν ἰσχύει πλέον·
οὐδ' αὐτὸς ὁ κρατῶν τῶν ἐν οὐρανῷ [b] θεῶν
Ζεὺς, ἀλλ' [c] ἐκείνῳ [d] πάντ' ἀναγκασθεὶς [e] ποιεῖ.

22 [a] Εὐριπίδου Ἀνδρομέδας.

Ὅσοι γὰρ [b] εἰς ἔρωτα πίπτουσιν βροτῶν,

[d] ἄνθεα εἰ ἥβης] εἰ ἥβης ἄνθεα A. B. ἄνθεα τῆς ἥβης Grotius.
[e] ἐπεὶ δ'] ἐπεί τ' A. B.
[f] προσορῶν] προσορᾶν Grotius.

17.

[a] Sic A. Cleric. p. 128. Simpl. Μενάνδρου Trinc.
[b] εὐάγωγον] εὐάγωγος Grotius in ed. sed correxit in ms.

18.

[a] Sic A. Cleric. p. 84. Deest locus Trinc.

19.

[a] Sic A. Trinc. Scil.
[b] φιλήμασιν] φιλάμασιν B.

20.

[a] Sic A. Cleric. p. 16. Deest locus Trinc.

21.

[a] Sic A. Cleric. p. 76. Simpl. Μενάνδρου Trinc. In pr. ὦ δέσπ. A.
[b] θεῶν om. A. Τῶν post κρατῶν supplevit Grotius in nota.
[c] ἐκείνῳ] ἐκεῖνο Voss.
[d] πάντα ἀναγκασθεὶς] ἀναγκασθεὶς πάντα A.
[e] ποιεῖ] ποεῖ Voss. Trinc.

22.

[a] Sic A. Scil. Fr. 12. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.
[b] εἰς Gesnero excidit.

ἐσθλῶν ὅτ' ἂν τύχωσι τῶν ἐρωμένων,
οὐκ ἔστι ποίας λείπεται [c]τόθ' ἡδονῆς.

23 [a] Εὐριπίδου Ἱππολύτῳ.

Ἔχω δὲ τόλμης καὶ θράσους διδάσκαλον
ἐν τοῖς [b]ἀμηχάνοισιν εὐπορώτατον,
Ἔρωτα, πάντων δυσμαχώτατον θεόν.

24 [a] Σοφοκλέους Τραχινίαις.

Ἔρωτι μὲν [b]γοῦν ὅστις ἀντανίσταται
πύκτης ὅπως ἐς χεῖρας, οὐ καλῶς φρονεῖ.
οὗτος γὰρ ἄρχει καὶ θεῶν ὅπως θέλει.

25 [a] Σοφοκλέους Φαίδρα.

Ἔρως γὰρ ἄνδρας οὐ [b]μόνους ἐπέρχεται,
οὐδ' αὖ γυναῖκας, ἀλλὰ καὶ θεῶν ἄνω
ψυχὰς [c]χαράσσει, κἀπὶ πόντον ἔρχεται.
καὶ τόνδ' ἀπείργειν οὐδ' ὁ παγκρατὴς σθένει
Ζεὺς, ἀλλ' ὑπείκει καὶ θέλων ἐγκλίνεται.

26 [a] Ἐκ τῶν Βίωνος Βουκολικῶν.

Ἁ μεγάλα [b]μοι Κύπρις ἔθ' ὑπνώοντι παρέστα,
νηπίαχον τὸν Ἔρωτα καλᾶς ἐκ χειρὸς ἄγοισα
ἐς χθόνα νευστάζοντα, τόσον δέ μοι ἔφρασε μῦθον·
μέλπειν μοι φίλε βοῦτα λαβὼν τὸν Ἔρωτα δίδασκε.
ὡς λέγε· χὰ μὲν [c]ἀπῆλθεν· ἐγὼ δ' ὅσα βουκολίασδον,
νήπιος, ὡς ἐθέλοντα μαθεῖν τὸν [d]Ἔρωτα δίδασκον·

[c] τόθ'] τοῦθ' B.

23.

[a] Sic A. Scil. Fr. 6. Deest lemma Trinc.

[b] ἀμηχάνοισιν] ἀμηχάνεσιν B.

24.

[a] Sic A. Scil. v. 441. Simpl. Σοφοκλέους Trinc.

[b] γοῦν] οὖν. A. B.

25.

[a] Sic A. Scil. Fr. 4. ubi v. Brunckium. Euripidi tribuit Voss. Deest lemma Trinc.

[b] μόνους] Male μόνον Cl. (i. e. Clemens Alexandrinus Str. VI. p. 745.) Grotius in mss.

[c] χαράσσει] ταράσσει Cl. Grotius in mss. Vide Fragmenta Sophoclis Phædræ 4. et Brunckium.

26.

[a] Sic A. Trinc. Scil. 3.

[b] μοι om. A. Mox ὑπνόωντι Tr.

[c] ἀπῆλθεν] ἀπήλυθεν Voss.

[d] ἔρωτα δίδασκον] ἔρωτ' ἐδίδασκον Voss.

ὡς εὗρεν πλαγίαυλον ὁ Πὰν, ὡς αὐλὸν Ἀθάνα,
ὡς χέλυν Ἑρμάων, κίθαριν ὡς ἁδὺς Ἀπόλλων.
ταῦτά μιν [e]ἐξεδίδασκον· ὁ δ' οὐκ ἐμπάζετο μύθων,
ἀλλά μοι αὐτὸς ἄειδεν [f]ἐρωτύλα, καί μ' ἐδίδασκε
θνατῶν ἀθανάτων τε [g]πόθους, καὶ ματέρος ἔργα.
[h]κήγὼν ἐκλαθόμαν μὲν [i]ὅσων τὸν Ἔρωτα δίδασκον,
ὅσσα δ' Ἔρως [k]με δίδαξεν ἐρωτύλα, πάντ' ἐδιδάχθην.

27 [a]Τοῦ αὐτοῦ.

Ἕσπερε, τᾶς ἐρατᾶς χρύσεον φάος [b]Ἀφρογενήας,
Ἕσπερε κυανέας ἱερὸν φίλε νυκτὸς ἄγαλμα,
τόσσον ἀφαυρότερον μήνας, ὅσον ἔξοχος ἄστρων,
χαῖρε φίλος, καί μοι ποτὶ ποιμένα κῶμον ἄγοντι
ἀντὶ σελαναίας τὺ δίδου φάος, ὥνεκα τήνα
σάμερον [c]ἀρχομένα τάχιον δύεν. οὐκ ἐπὶ [d]φωρᾶν
ἔρχομαι, οὐδ' ἵνα νυκτὸς ὁδοιπορέοντ' [e]ἐνοχλήσω· 389
ἀλλ' ἐράω· καλὸν δέ τ' [f]ἐρασσαμένῳ συνεράσθαι.

28 [a]Τοῦ αὐτοῦ.

Ὄλβιοι οἱ φιλέοντες, [b]ἐπὴν ἴσον ἀντεράωνται.
ὄλβιος ἦν [c]Θασεὺς τῷ Πειριθόῳ [d]παρεόντος,
εἰ καὶ ἀμειλίκτοιο κατήλυθεν εἰς ἀΐδαο.
ὄλβιος [e]ἦν χαλεποῖσι ἐν ἀξείνοισιν [f]Ὀρέστας,

[e] ἐξεδίδασκον] ἐδίδασκον Trinc.
[f] ἐρωτύλα] ἐρωτίλα Gesn. marg. Voss.
[g] πόθους] πόθη B.
[h] κήγὼν ἐκλαθόμαν] κἀγὼ ἐκλαθόμᾱν Voss.
[i] ὅσων] ὅσον A.
[k] μ' ἐδίδασκεν] με δίδαξεν A.

27.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] ἀφρογενήας] ἀφρογενείας B.
[c] ἀρχομένα] ἐρχομένα Gesn. marg.
[d] φωρᾶν] φωρὰν B. ἐπιφωρῶν Tr.
[e] ἐνοχλήσω] ἐνοχλέω Voss. Trinc. ὁδοιπορέοντα ἐνοχλῶ A. Leg. forte, ὁδοιπορέοντας ἐνοχλέω.
[f] ἐρασσαμένῳ] ἐρασσαμένην B.

28.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.
[b] ἐπήνισον ἀντεράοντε] ἐπὰν ἴσων ἀντεράοντ(αι) A. ἐπὰν ἴσον ἀντεράωνται B. ἐπ' ἴσον τ' Gesner.
[c] θησεὺς] θασεὺς A.
[d] παρεόντος] παριόντος A. m. sec. B.
[e] ἦν] om. A. B.
[f] Ὀρέστης] Ὀρέστας A. B.

οὕνεκά οἱ ξυνὰς Πυλάδας [g] ἄροιτο κελεύθους.
ἦν μάκαρ Αἰακίδας ἑτάρῳ ζώοντος Ἀχιλλεὺς,
ὄλβιος ἦν [h] θνάσκων ὅτι οἱ μόρον αἰνὸν ἄμυνεν.

29 [a] Ἐκ τῶν Μόσχου τοῦ Σικελιώτου Βουκολικῶν.

Ἤρα Πὰν Ἀχῶς [b] τᾶς γείτονος, ἤρατο δ' Ἀχὼ
[c] σκιρτητᾶ Σατύρῳ, Σάτυρος δ' [d] ἐπεμήνατο [e] Λύδᾳ.
ὡς Ἀχὼ τὸν Πᾶνα, τόσον Σάτυρος φλέγεν Ἀχῶ,
καὶ Λύδα Σατυρίσκον· Ἔρως δ' [f] ἐσμύχετ' ἀμοιβᾷ.
ὅσσον γὰρ τήνων τὶς ἐμίσεε τὸν φιλέοντα,
τόσσον ὁμῶς φιλέων [g] ἠχθαίρετο, πάσχε δ' ἄποινα.
ταῦτα λέγω πᾶσι τὰ διδάγματα τοῖς ἀνεράστοις,
στέργετε τοὺς φιλέοντας, ἵν' ἢν φιλέητε φιλῆσθε [h].

30 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Συμποσίου.

Ὁ δὲ [b] δεινότατον, ὥς γε λέγουσιν οἱ πολλοὶ, ὅτι καὶ 393 ὀμνύντι [c] μόνῳ ξυγγνώμη παρὰ θεῶν, ἐκβάντι τὸν ὅρκον· Ἀφροδίσιον γὰρ ὅρκον οὔ φασιν εἶναι. Οὕτω καὶ οἱ θεοὶ καὶ οἱ ἄνθρωποι πᾶσαν ἐξουσίαν πεποιήκασι τῷ ἐρῶντι, ὡς ὁ νόμος φησὶν [d] ὁ ἐνθάδε.

31 [a] Χρυσίππου.

Εἰπόντος τινὸς, οὐκ ἐρασθήσεται ὁ σοφός· μαρτυρεῖ γοῦν

[g] ἄρκτο] ἄροι (το) A. illud το m. sec. ἄροιτο B. φίλος addit Gesnerus.

[h] θράσκων] θνάσκων A. B. θνάσκοντ' ὅτε conjecit Gesnerus.

29.

[a] Sic A. Trinc. Scil.

[b] τᾶς γείτονος] τῶς γείτονας A.

[c] σκιρτητὰ] σκιρτατᾶ B. σκιρτᾶ Trinc.

[d] ἐπεμήνατο] ἐπεμείνατο A.

[e] λύδαν] λύδᾳ B. A. m. s. Λήδαν conj. Gesnerus.

[f] ἐσμύχετ'] ἐσμήχετ' Voss.

[g] ἠχθαίρετο, πάσχε δ' ἄποινα] ἤχθαιρεν δ' ἔπασχε δ' ἃ ποίη A. ἤχθαιρεν ἔπασχε δ' ἃ ποίη B. ἔχθαιρε δόπασχεδαποί (σ) Voss. ἔχθαιρε δόπασκε δ' ἀποίνα Trinc.

[h] Multa hic inseruit Gesnerus de suo ut opinor. Non enim in mss. leguntur, nec in ed. Trinc. Igitur omisi.

30.

[a] Sic A. Scil. p. 183. Simpl. Πλάτωνος Trinc.

[b] δεινότατον] δεινότατος A. B. Mox γε om. A.

[c] μόνῳ] μόνον A. B.

[d] ὁ ἐνθάδε] ὁ om. Trinc.

31.

[a] Sic Gesner. Εὐρυσίππου A. Deest locus Trinc.

Μενέδημος, Ἐπίκουρος, [b] Ἀλεξῖνος· Ταύτῃ, ἔφη, χρήσομαι ἀποδείξει· εἰ γὰρ Ἀλεξῖνος ὁ ἀνάγωγος, καὶ Ἐπίκουρος ὁ ἀναίσθητος, καὶ Μενέδημος, [c] οὔ φησιν ἐρασθήσεται ἄρα.

32 [a] Ἀριστοτέλους.

[b] Ἀριστοτέλης ὁ Κυρηναῖος φιλόσοφος [c] ἐρωτηθεὶς εἰ ὁ ἔρως ἕνεκα [d] συνουσίας γίγνεται· Οὔτ', ἔφη, διὰ τοῦτο, οὔτ' ἄνευ τούτου.

33 [a] Δημοκρίτου.

Ἐρωτικὴν μέμψιν ἡ ἀγαπωμένη λύει.

34 [a] Ἐκ τῶν Πλουτάρχου Περὶ Ἔρωτος.

Τῶν Μενάνδρου δραμάτων [b] ὁμαλῶς ἁπάντων ἓν συνεκτικόν ἐστιν, ὁ ἔρως, οἷον πνεῦμα κοινὸν διαπεφυκώς. Ὃν οὖν [c] μάλιστα θιασώτην τοῦ θεοῦ καὶ ὀργιαστὴν τὸν ἄνδρα συμπεριλαμβάνομεν εἰς [d] τὴν ζήτησιν, ἐπεὶ καὶ λελάληκε [e] περὶ τοῦ πάθους φιλοσοφώτερον. Ἄξιον [f] γὰρ εἶναι θαύματος φησὶ τὸ περὶ τοὺς ἐρῶντας, ὥσπερ [g] ἔστιν, ἅμα λαλεῖ· εἶτα ἀπορεῖ καὶ ζητεῖ πρὸς ἑαυτόν·

τίνι [h] δεδούλωταί ποτε;
ὄψει; φλύαρος· τῆς γὰρ αὐτῆς πάντες ἂν

[b] ἀλεξεῖνος] ἀλεξῖνος A. B. et sic mox.

[c] * οὔ φησιν] Locus mutilus. GESNER. qui ita supplet in versione *Si—et Menedemus canis et delirus (sic enim illum Eretrienses vocabant) amore capti non sunt, ne sapiens quidem eo capietur.* (*Argumentum a minore.*)

32.

[a] Sic A. m. p. Ἀρίστιππος m. sec.

[b] Ἀριστοτέλης] Ἀρίστιππος B. ὁ Κυρηναῖος φιλόσοφος om. Voss.

[c] ἐρωτηθεὶς] ἐρωτηθεὶς ὑπό τινος A. B.

[d] συνουσίας] τῆς συνουσίας A. B.

33.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.

34.

[a] Sic A. Scil. fr. 25. T. V. p. 565 = 848. Simpl. Πλουτάρχου Tr.

[b] ὁμαλῶς] οὐ κακῶς A. B.

[c] μάλιστα om. A. Pro ὃν οὖν— συμπεριλαμβάνομεν Wyttenbachius conjicit οὐκοῦν--συμπεριλαμβάνοιμεν.

[d] τὴν om. A. Enotavi item ex A. ὡσεὶ, quod nescio quo referendum.

[e] περὶ τοῦ πάθους] περιεργέστερον ῥᾶδι ἀπὸ τοῦ πάθους B. ἀπὸ τοῦ πάθους A.

[f] γὰρ θαύματος] γὰρ εἶναι θαύματος A. B.

[g] ἔνεστιν] ἔστι A. B. Conjicit Wyttenbachius θαύματος, φησὶ, τὸ περὶ τοῦ ἔρωτος, ὅθεν γένεσιν ἄρα λαμβάνει. Dedi φησὶ pro φῆσαι.

[h] δεδούλωται] δεδούλωνται B.

ἤρων· κρίσιν γὰρ τὸ βλέπειν ἴσην ἔχει.
ἀλλ' ἡδονή τις τοὺς ἐρῶντας ἐπάγεται
συνουσίας; πῶς οὖν ἕτερος ταύτην ἔχων
οὐδὲν πέπονθεν, ἀλλὰ ἀπῆλθε καταγελῶν,
ἕτερος ἀπόλωλε; [i] καιρός ἐστιν ἡ νόσος
ψυχῆς· ὁ πληγεὶς δ' [k] εἴσω δὴ τιτρώσκεται.

Ταῦτα [l] τίν' ἐστὶ σκεψώμεθα· καὶ γὰρ ἔχει τι κρουστικὸν, καὶ κινητικὸν [m] αἴτιον· μήτε τὴν [n] συνουσίαν αἰτίαν εἶναι πιθανὸν ἐστι· ἀρχαὶ γὰρ αὐταί τινες ἴσως· ἡ δὲ ἰσχὺς καὶ ῥίζωσις τοῦ πάθους ἐν ἑτέροις. Ἡ δ' ἀπόδειξις ἐλαφρὰ, 394
καὶ οὐδ' ἀληθής· οὐ γὰρ ἔχει κρίσιν τὸ [o] βλέπειν, ὥσπερ οὐδὲ τὸ γεύεσθαι. Καὶ γὰρ ὄψις ὄψεως, καὶ ἀκοῆς ἀκοὴ, φύσει τε μᾶλλον διήρθρωται, καὶ τέχνῃ συγγεγύμνασται πρὸς τὴν τοῦ καλοῦ διάγνωσιν· ἐν μὲν ἁρμονίαις καὶ μέλεσιν αἱ τῶν μουσικῶν, ἐν δὲ μορφαῖς καὶ ἰδέαις [p] αἱ τῶν [q] ζώων φρένες· ὥσπερ εἰπεῖν ποτε Νικόμαχον [r] λέγουσι πρὸς ἄνθρωπον ἰδιώτην, φήσαντα μὴ καλὴν αὐτῷ φανῆναι τὴν Ζεύξιδος Ἑλένην· [s] Λάβε γὰρ, ἔφη, τοὺς ἐμοὺς ὀφθαλμοὺς, καὶ θεός σοι φανήσεται. [t] Πολὺ δὲ καὶ μυρεψοὶ περὶ τὰ ὀσφραντὰ, καὶ νὴ Δία ὀψοποιοὶ περὶ τὰ γευστὰ, διατριβῇ καὶ συνηθείᾳ διαφέρουσαν ἡμῶν κρίσιν ἔχουσι. Πάλιν δὲ τὸ συνουσίᾳ τὸν ἔρωτα μὴ κρατεῖσθαι, διὰ τὸ τῇ αὐτῇ συγγενόμενον [u] ἄλλον ἀπαλλαγῆναι καὶ καταφρονῆσαι, τοιοῦτόν

[i] καιρὸς] ἔρως A. m. sec. Mox ἐστι νόσος Trinc.

[k] δ' εἴσω δὴ] Grotius conjicit, ὡς ἔδει: Bentleius δ' εἰσβολῇ, quod minus etiam placet. Forte legendum, δ' εἰς ὃ δεῖ. Conferatur notula nostra ad Opp. Mor. p. 763. B. Wyttenbach.

[l] τινα] τι A. B. Mox τινα pro τι Trinc.

[m] αἰτίαν] αἴτιον A. B.

Ib. Locus mutilus forte ita supplendus: Μήτε οὖν τὴν γένεσιν τοῦ ἔρωτος μόνῃ τῇ ὄψει ἀποδῶμεν, καίπερ ἔχει τι κρουστικόν. Wyttenbach.

[n] συνουσίαν] οὐσίαν A.

[o] βλέπειν] ἴσην addit Gesnerus probante Wyttenbachio.

[p] αἱ τῶν] αὐτῶν A. B. et sic mox B.

[q] ζώων φρένες] ζωγράφων legit Gesnerus, probante Wyttenbach.

[r] λέγουσι om. A.

[s] λάβε] λάβε γὰρ ἔφη A. B.

[t] πολλοὶ] πολὺ A. B.

[u] ἄλλον ἀπαλλαγῆναι] Forte, ἄλ-

ἐστιν, οἷον, εἰ [w] λέγοι τὶς μηδὲ χυμῶν ἡδονῇ δεδουλῶσθαι Φιλόξενον τὸν ὀψοφάγον, ὅτι τῶν αὐτῶν Ἀντισθένης γευσάμενος οὐδὲν ἔπαθε τοιοῦτον· μηδὲ ὑπὸ οἴνου μεθύειν Ἀλκιβιάδην, ὅτι Σωκράτης πίνων τὸν ἴσον οἶνον ἐνηφεν. Ἀλλὰ ταῦτα μὲν ἐάσωμεν, τὰ δ᾽ ἐφεξῆς, ἐν οἷς ἤδη τὴν αὐτοῦ δόξαν ἀποφαίνεται, σκοπῶμεν·

[x] Καιρός ἐστιν ἡ νόσος
ψυχῆς.

Εὖ [y] καὶ ὀρθῶς. [z] Δεῖ γὰρ ἅμα τοῦ πάσχοντος εἰς ταυτὸ καὶ τοῦ ποιοῦντος ἀπάντησιν γενέσθαι, πρὸς ἀλληλά πως ἐχόντων· ὡς ἄκυρον εἰς τὴν τοῦ τέλους ἀπεργασίαν ἡ δραστικὴ δύναμις, ἂν μὴ παθητικὴ διάθεσις ᾖ. Τοῦτο δὲ εὐστοχίας ἐστὶ καιροῦ τῷ παθεῖν [a] ἐμοί πως συνάπτοντος ἐν ἀκμῇ τὸ ποιεῖν [b] πεφυκός.

35 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Συμποσίου.

Ἡ γὰρ πάλαι ἡμῶν φύσις, οὐχ αὐτη [b] ἦν ἥπερ νῦν, ἀλλὰ ἀλλοία. Πρῶτον μὲν γὰρ τρία ἦν γένη τὰ τῶν ἀνθρώπων, οὐχ ὥσπερ νῦν [c] δύο, ἄρρεν καὶ θῆλυ, ἀλλὰ [[d] καὶ] τρίτον προσῆν κοινὸν ἀμφοτέρων τούτων, οὗ νῦν ὄνομα λοιπὸν, αὐτὸ δὲ ἠφάνισται. Ἀνδρόγυνον [e] γὰρ τότε μὲν ἦν, καὶ εἶδος καὶ ὄνομα ἐξ ἀμφοτέρων κοινὸν, [f] τοῦ τε ἄρρενος καὶ θήλεος· νῦν δὲ οὐκ ἔστιν ἀλλ᾽ ἢ [g] ἐν ὀνείδει ὄνομα κείμενον. Ἔπειτα ὅλον ἦν ἑκάστου τοῦ ἀνθρώπου τὸ εἶδος στρογγύλον, νῶτόν τε καὶ πλευρὰς κύκλῳ ἔχον, χεῖρας δὲ τέσσαρας εἶχε, καὶ

λον μὲν δουλοῦσθαι, ἄλλον δὲ ἀπαλλαγῆναι, quod vertendo reddidit Gesnerus. WYTTENBACH.

[w] λέγοι] λέγει A. Mox ὅτε Σωκρ. Trinc.

[x] καιρὸς] ἔρως A.

[y] καὶ om. A.

[z] δεῖ] ἀεὶ A. B.

[a] ἐμοὶ] ἔμοιγέ A. B. ὁμοῦ Wyttenb. Forte leg. ἀμωσγέπως.

[b] πεφυκὸς] πεφυκῶς B.

35.

[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 189.

[b] ἦν] ἐστι A.

[c] δύο om. A. B.

[d] καὶ om. A. Trinc.

[e] γὰρ τότε μὲν] μὲν γάρ τοτε A.

[f] τοῦτο A. et mox δὲ post νῦν A. B.

[g] ἐν] ἂν A.

σκέλη [h] τὰ ἴσα ταῖς χερσὶ, καὶ πρόσωπα δύο ἐπὶ αὐχένι κυκλοτερεῖ, ὅμοια πάντῃ· κεφαλὴν δὲ ἐπ' ἀμφοτέροις τοῖς προσώποις ἐναντίοις [[i] κειμένοις] μίαν, καὶ ὦτα τέτταρα, καὶ αἰδοῖα δύο, καὶ τἄλλα πάντα [k] ὅσα ἀπὸ τούτων ἄν τις εἰκάσειεν· ἐπορεύετο δὲ καὶ ὀρθὸν ὥσπερ νῦν [l] ὁποτέρως βουληθείη, καὶ ὁπότε ταχὺ ὁρμήσειε [m] θεῖν, ὥσπερ οἱ κυβιστῶντες καὶ εἰς [n] ὀρθὰ ὄντα σκέλη περιφερόμενοι κυβιστῶσι κύκλῳ, τότε ὀκτὼ οὖσι τοῖς μέλεσιν ἀπερειδόμενοι ταχὺ ἐφέροντο κύκλῳ. Ἦν δὲ διὰ ταῦτα τρία [o] τὰ γένη καὶ τοιαῦτα, ὅτι τὸ μὲν ἄρρεν ἦν τοῦ ἡλίου τὴν ἀρχὴν ἔκγονον, τὸ δὲ θῆλυ τῆς γῆς· τὸ δὲ ἀμφοτέρων μετέχον τῆς σελήνης, ὅτι καὶ ἡ σελήνη ἀμφοτέρων [p] μετεῖχεν. Περιφερῆ δὲ [q] δὴ ἦν καὶ αὐτὰ, καὶ ἡ πορεία αὐτῶν, διὰ τὸ τοῖς γονεῦσιν ὅμοια εἶναι. Ἦν οὖν τὴν ἰσχὺν δεινὰ καὶ τὴν ῥώμην, καὶ 395
τὰ φρονήματα μεγάλα εἶχον. Ἐπεχείρησαν δὲ τοῖς [r] θεοῖς, καὶ ὃ λέγει Ὅμηρος περὶ Ἐφιάλτου [s] τε καὶ Ὤτου περὶ ἐκείνων λέγεται, τὸ εἰς τὸν οὐρανὸν ἀνάβασιν ἐπιχειρεῖν ποιεῖν, ὡς ἐπιθησομένων τοῖς θεοῖς. Ὁ [t] οὖν Ζεὺς καὶ οἱ ἄλλοι θεοὶ ἐβουλεύοντο ὅ τι χρὴ αὐτοὺς ποιῆσαι, καὶ ἠπόρουν· οὔτε γὰρ ὅπως [u] ἀποκτείναιεν εἶχον, καὶ ὥσπερ τοὺς γίγαντας κεραυνώσαντες τὸ γένος ἀφανίσαιεν· αἱ τιμαὶ γὰρ αὐτοῖς καὶ τὰ ἱερὰ τὰ παρὰ τῶν ἀνθρώπων ἠφανίζετο, οὔτε ὅπως ἐῷεν ἀσελγαίνειν. Μόλις δὲ ὁ Ζεὺς ἐννοήσας, λέγει ὅτι, Δοκῶ μοι, ἔφη, ἔχειν μηχανὴν, ὡς ἂν [w] εἶέν τε ἄνθρωποι, καὶ παύσαιντο τῆς ἀκολασίας ἀσθενέστεροι γενόμενοι.

[h] τὰ om. B.
[i] κειμένοις om. A. Trinc.
[k] ὅσα] ὡς Gesn. marg.
[l] ὁποτέρωσε] ὁποτέρως A. Trinc.
[m] θεῖν] ἐλθεῖν Gesn. marg.
[n] ὄρθα] ὀρθὸν τὰ σκέλη Gesn. marg.
[o] γένη] τὰ γένη A. B.
[p] μετεῖχεν] μετέχει Gesn. marg.
[q] δὴ om. A. B.
[r] θείοις] θεῖοις A. θεοῖς Gesn. marg. B.
[s] τε om. A.
[t] οὖν] γοῦν A.
[u] ἀποκτειναιεν] ἀποκτεινε A.
[w] εἶέν τε] ἴωνται A. B.

[x] Νῦν μὲν γὰρ αὐτοὺς, ἔφη, διατεμῶ δίχα ἕκαστον, καὶ ἅμα μὲν ἀσθενέστεροι ἔσονται, ἅμα δὲ χρησιμώτεροι ἡμῖν διὰ τὸ πλείους τὸν ἀριθμὸν γεγονέναι, καὶ βαδιοῦνται ὀρθοὶ ἐπὶ δυοῖν σκελοῖν· ἐὰν δὲ ἔτι δοκῶσιν ἀσελγαίνειν, καὶ μὴ θέλωσιν ἡσυχίαν ἄγειν, πάλιν [y] αὖ, ἔφη, τεμῶ δίχα, ὥστε ἐφ' ἑνὸς πορεύσονται σκέλους [z] ἀσκωλίζοντες. [a] Ταῦτα εἰπὼν, [b] ἔτεμνε τοὺς ἀνθρώπους δίχα, ὥσπερ οἱ τὰ ᾠὰ τέμνοντες καὶ μέλλοντες ταριχεύειν, ἢ ὥσπερ οἱ τὰ ᾠὰ ταῖς θριξίν· ὅντινα δὲ τέμοι, τὸν [c] Ἀπόλλω ἐκέλευε τό τε πρόσωπον μεταστρέφειν καὶ τὸ τοῦ αὐχένος ἥμισυ πρὸς τὴν τομὴν, ἵνα θεώμενος τὴν αὐτοῦ τμῆσιν κοσμιώτερος εἴη ὁ ἄνθρωπος, καὶ τἄλλα ἰᾶσθαι ἐκέλευεν. Ὁ δὲ τό τε πρόσωπον μετέστρεφε, καὶ ξυνέλκων πανταχόθεν τὸ δέρμα ἐπὶ τὴν γαστέρα νῦν καλουμένην, ὥσπερ τὰ σύσπαστα βαλάντια, ἓν στόμα ποιῶν, [d] ἀπέδει κατὰ [e] μέσην τὴν γαστέρα, ὃ δὴ τὸν ὀμφαλὸν καλοῦσι. Καὶ τὰς μὲν ἄλλας ῥυτίδας [[f] τὰς] πολλὰς ἐξελέαινε, καὶ τὰ στήθη διήρθρου, [g] ἔχων τι τοιοῦτον ὄργανον, οἷον οἱ σκυτοτόμοι περὶ τὸν καλάποδα λεαίνοντες τὰς τῶν σκυτῶν ῥυτίδας· ὀλίγας δὲ κατέλιπε τὰς περὶ αὐτὴν τὴν γαστέρα καὶ τὸν ὀμφαλὸν, μνημεῖον εἶναι τοῦ παλαιοῦ [h] πάθους. Ἐπεὶ οὖν ἡ φύσις δίχα ἐτμήθη, ποθοῦν ἕκαστον τὸ ἥμισυ τὸ αὑτοῦ ξυνῄει, καὶ περιβάλλοντες τὰς χεῖρας καὶ [i] συμπλεκόμενοι ἀλλήλοις, ἐπιθυμοῦντες [k] ξυμφῦναι, ἀπέθνησκον ὑπὸ τοῦ λιμοῦ καὶ τῆς ἄλλης ἀργίας, διὰ τὸ μηδὲν ἐθέλειν χωρὶς ἀλλήλων ποιεῖν. Καὶ ὁπότε [l] τι ἀπο-

[x] νῦν μὲν γὰρ] νῦν δὲ γὰρ Trinc.
[y] αὖ] om. A. B.
[z] ἀσκωλίζοντες] ἀσχαλίζοντες A. B. ἀσκολιάζοντες Gesn. marg.
[a] καὶ ταῦτα] καὶ om. A.
[b] ἔτεμνε] ἔτεμε A. B.
[c] Ἀπόλλω ἐκέλευε] Ἀπόλλωνα ἐκέλευσε A.
[d] ἀπέδει] ἀπέδησε A. B.
[e] μέσην] μεσ ην ον A.
[f] τὰς om. A. Trinc.
[g] ἔχων] ἔχον Trinc.
[h] πάθος] πάθους A. Trinc.
[i] συμπλεκόμενοι] ἀμπλεκόμενοι A. B.
[k] ξυμφῆναι] ξυμφύναι Trinc.
[l] τι ἀποθάνοι] τις ἀποθάνοι Trinc.

θάνοι τῶν ἡμίσεων, τὸ δὲ λειφθείη, τὸ λειφθὲν ἄλλο ἐζήτει καὶ [m] ξυνεπέπλεκτο, εἴτε γυναικὸς τῆς ὅλης ἐντύχοι [n] ἡμίσει, ὃ δὴ νῦν γυναῖκα καλοῦμεν, εἴτε ἀνδρός· [o] καὶ οὕτως [p] ἀπώλλυτο. Ἐλεήσας δὲ ὁ Ζεὺς ἄλλην μηχανὴν πορίζεται, καὶ μετατίθησιν αὐτῶν τὰ αἰδοῖα εἰς τὸ πρόσθεν· τέως γὰρ καὶ ταῦτα ἐκτὸς εἶχον, καὶ ἐγέννων, καὶ ἔτικτον οὐκ εἰς ἀλλήλους ἀλλ' εἰς γῆν, ὥσπερ οἱ τέττιγες. Μετέθηκέ τε οὖν οὕτως αὐτῶν εἰς τὸ ἔμπροσθεν, καὶ διὰ τοῦτο τὴν γένεσιν [q] νέαν ἀλλήλοις ἐποίησε, διὰ τοῦ ἄρρενος ἐν τῷ θήλει, [r] τῶνδε ἕνεκα· ἵνα ἐν τῇ συμπλοκῇ ἅμα μὲν εἰ ἀνὴρ γυναικὶ ἐντύχοι, γεννῷεν, καὶ [s] γίγνοιτο τὸ γένος· ἅμα δ' εἰ καὶ [t] ἄρρεν ἄρρενι, πλησμονὴ γοῦν γίγνοιτο τῆς συνουσίας, καὶ διαπαύοιντο, καὶ ἐπὶ τὰ ἔργα τρέποιντο, καὶ [u] τοῦ ἄλλου βίου ἐπιμελοῖντο. Ἔστι δὴ οὖν ἐκ [w] τόσου ὁ ἔρως ἔμφυτος ἀλλήλων 396
τοῖς ἀνθρώποις, καὶ τῆς ἀρχαίας φύσεως συναγωγὸς, καὶ ἐπιχειρῶν ποιῆσαι [x] ἓν ἐκ δυοῖν, καὶ ἰάσασθαι τὴν φύσιν τὴν ἀνθρωπίνην. Ἕκαστος οὖν ἡμῶν ἐστιν ἀνθρώπου σύμβολον, ἅτε [y] τετμημένος, ὥσπερ αἱ ψῆτται ἐξ ἑνὸς δύο. Ζητεῖ δὴ ἀεὶ τὸ αὑτοῦ ἕκαστον σύμβολον. Ὅσοι μὲν οὖν τῶν ἀνδρῶν τοῦ κοινοῦ [z] τμήματός εἰσιν, ὃ δὴ τότε ἀνδρόγυνον ἐκαλεῖτο, φιλογύναικές τέ εἰσι, καὶ οἱ πολλοὶ τῶν μοιχῶν ἐκ τούτου τοῦ γένους γεγόνασι· καὶ ὅσαι αὖ γυναῖκες φίλανδροί τε καὶ [a] μοιχεύτριαι, ἐκ τούτου τοῦ γένους γίγνονται. Ὅσαι δὲ τῶν γυναικῶν γυναικὸς τμῆμά εἰσιν, οὐ πάνυ αὗται τοῖς

[m] συνεπλέκετο] ξυνεπέπλεκτο A. συνεπέπλεκτο Trinc.
[n] ἡμίσει] ἡμισείας A. B.
[o] καὶ οὕτως] οὔτε A. B. καὶ om. Trinc.
[p] ἀπώλλυντο] ἀπόλλυτο A. ἀπώλλυτο B. Trinc.
[q] νέαν] ἐν Gesn. marg.
[r] τῶνδε] τῶνδε γὰρ A. B.
[s] γίγνοιτο] γένοιτο A. B.
[t] ἄρρεν ἄρρεν] ἄρρην ἄρρενι Gesn. marg. ἄρρεν ἄρρενι A. B.
[u] τοῦ ἄλλου] τοῦ om. Trinc.
[w] τόσου ὁ] τοῦ θεοῦ B. ἐκ τὸς οὗ ὁ Trinc.
[x] ἕν] ἕνα A. Trinc.
[y] τετμημένος] τετιμημένος A.
[z] τμήματος] τμῆμα Gesn. marg.
[a] μοιχεύτριαι] φιλομοιχεύτριαι A. B. ἐκ τούτου τ. γ. γ. om. Trinc.

ἀνδράσι τὸν νοῦν προσέχουσιν, ἀλλὰ μᾶλλον πρὸς τὰς γυναῖκας τετραμμέναι εἰσὶ, καὶ ἑταιρίστριαι ἐκ τούτου τοῦ γένους γίγνονται. Ὅσοι δ' ἄρρενος τμῆμά εἰσι, τὰ ἄρρενα διώκουσι· καὶ τέως μὲν ἂν παῖδες ὦσιν, ἅτε [[b]τεμμάχια] ὄντα τοῦ [c]ἄρρενος, φιλοῦσι τοὺς ἄνδρας, καὶ χαίρουσι ξυγκατακείμενοι καὶ ξυμπλεκόμενοι τοῖς ἀνδράσι· καὶ εἰσὶν οὗτοι βέλτιστοι τῶν παίδων καὶ [d]μειρακίων, ἅτε ἀνδρειότατοι ὄντες φύσει. Φασὶ [e]δὲ δή [f]τινες αὐτοὺς ἀναισχύντους εἶναι, ψευδόμενοι· οὔτε γὰρ ὑπ' ἀναισχυντίας [g]δρῶσι τοῦτο, ἀλλ' ὑπὸ θάρρους καὶ ἀνδρείας καὶ ἀρρενωπίας τὸ ὅμοιον αὐτοῖς ἀσπαζόμενοι. Μέγα δὲ τεκμήριον· καὶ γὰρ τελεωθέντες μόνοι ἀποβαίνουσιν εἰς τὰ πολιτικὰ ἄνδρες οἱ τοιοῦτοι· ἐπειδ' ἂν [h]δὲ ἀνδρωθῶσι, παιδεραστοῦσι, καὶ πρὸς γάμους καὶ παιδοποιΐας οὐ προσέχουσι τὸν νοῦν [i]φύσει, ἀλλ' ὑπὸ τοῦ νόμου ἀναγκάζονται· ἀλλ' ἐξαρκεῖ αὐτοῖς μετ' ἀλλήλων καταζῆν ἀγάμοις οὖσι. Πάντως μὲν οὖν ὁ τοιοῦτος παιδεραστής τε καὶ φιλεραστὴς γίγνεται, ἀεὶ τὸ ξυγγενὲς ἀσπαζόμενος. Ὅτ' ἂν μὲν οὖν αὐτῷ ἐκείνῳ ἐντύχῃ τῷ αὐτοῦ ἡμίσει καὶ ὁ παιδεραστὴς καὶ ἄλλος πᾶς, τότε καὶ θαυμαστὰ ἐκπλήττονται, φιλίᾳ τε καὶ οἰκειότητι καὶ ἔρωτι οὐκ ἐθέλοντες ὡς ἔπος εἰπεῖν χωρίζεσθαι ἀλλήλων οὐδὲ ἐπὶ σμικρὸν χρόνον· καὶ οἱ διατελοῦντες μετ' ἀλλήλων διὰ βίου, οὗτοί εἰσιν οἱ οὐδ' ἂν ἔχοιεν εἰπεῖν ὅ τι βούλονται σφίσι παρ' ἀλλήλων γίγνεσθαι· οὐδενὶ γὰρ ἂν δόξειε τοῦτ' εἶναι ἡ τῶν ἀφροδισίων ξυνουσία, ὡς ἄρα τούτου ἕνεκα ἕτερος ἑκατέρῳ χαίρει συνὼν οὕτως ἐπὶ μεγάλης σπουδῆς· ἀλλ' ἄλλο τι βουλομένη ἡ ψυχὴ ἑκατέρου δήλη ἐστὶ ὃ οὐ δύναται εἰπεῖν, ἀλλὰ μαντεύεται ὃ βούλεται, καὶ αἰνίττεται.

[b] τεμμάχια om. A. Trinc.
[c] ἄρσενος] ἄρρενος A. B.
[d] μειρακίων] τῶν μ. A. B.
[e] δὲ om. A. B.
[f] τινας] τινες A. B.
[g] δρῶσι τοῦτο] τοῦτο δρῶσι A.
[h] δὲ om. A.
[i] φύσει. Reliqua quæ sequuntur addidimus ex A. B.

36 [a] Ἐν ταυτῷ.

Φημὶ οὖν ἐγὼ, πάντων θεῶν εὐδαιμόνων ὄντων, Ἔρωτα, εἰ θέμις καὶ ἀνεμέσητον εἰπεῖν, εὐδαιμονέστατον εἶναι αὐτῶν, κάλλιστον ὄντα καὶ ἄριστον. Ἔστι δὲ κάλλιστος ὢν, τοιόσδε. Πρῶτον μὲν, νεώτατος θεῶν, ὦ Φαῖδρε· μέγα δὲ τεκμήριον [b] τῷ λόγῳ αὐτὸς παρέχεται, φεύγων [c] φυγῇ τὸ γῆρας ταχὺ ὂν δηλονότι, θᾶττον γοῦν τοῦ δέοντος ἡμῖν προσέρχεται· ὃ δὴ πέφυκεν Ἔρως μισεῖν, καὶ οὐδ' [d] ἔντος πολλοῦ πλησιάζειν. Μετὰ δὲ νέων αἰεὶ ξύνεστί τε καὶ ἔστιν· ὁ γὰρ παλαιὸς λόγος εὖ ἔχει, ὡς ὅμοιον ὁμοίῳ [e] δεῖ πελάζειν. Ἐγὼ δὲ Φαίδρῳ πολλὰ ἄλλα ὁμολογῶν, τοῦτο οὐχ ὁμολογῶ, ὡς Ἔρως Κρόνου καὶ Ἰαπετοῦ ἀρχαιότερός ἐστιν· ἀλλὰ φημὶ νεώτατόν τε αὐτὸν εἶναι θεῶν, καὶ ἀεὶ νέον· τὰ δὲ παλαιὰ πράγματα περὶ θεοὺς, ἃ Ἡσίοδος καὶ Παρμενίδης λέγουσιν, ἀνάγκῃ καὶ οὐκ Ἔρωτι γεγονέναι, [[f] εἰ ἐκεῖνοι] ἀληθῆ [g] λέγουσι. Οὐ γὰρ ἂν ἐκτομαὶ οὐδὲ δεσμοὶ ἀλλήλων ἐγένοντο, καὶ ἄλλα [h] πολλὰ καὶ βίαια, [i] εἰ Ἔρως ἐν αὐτοῖς ἦν, ἀλλὰ φιλία καὶ εἰρήνη, ὥσπερ νῦν, ἐξ οὗ Ἔρως τῶν θεῶν βασιλεύει. Νέος μὲν οὖν ἐστι, πρὸς δὲ τῷ νέῳ ἁπαλός. Ποιητοῦ δέ ἐστιν ἐνδεὴς, οἷός περ ἦν ὁ Ὅμηρος, πρὸς τὸ ἐπιδεῖξαι [k] θεοῦ ἁπαλότητα. Ὅμηρος γὰρ Ἄτην θεόν τέ φησιν εἶναι καὶ ἁπαλήν· τοὺς γοῦν πόδας αὐτῆς ἁπαλούς φησιν εἶναι, λέγων·

τῆς μέν θ' ἁπαλοὶ πόδες· οὐ γὰρ ἐπ' [l] οὔδεος
[m] πίλναται, ἀλλ' ἄρα ἥγε κατ' ἀνδρῶν κράατα βαίνει.

Καλῷ οὖν μοι δοκεῖ τεκμηρίῳ τὴν ἁπαλότητα ἀποφαίνειν, 397

36.
[a] Sic A. Trinc. Scil. p. 195. Mox αὐτὸν Trinc.
[b] τῷ λόγῳ] τῶν λόγων A. B.
[c] φυγῇ] ἐν φυγῇ A. B.
[d] ὄντος] ἔντος A. Gesn. marg. Tr.
[e] αἰεὶ πελάζει] δεῖ πελάζειν A. Tr.
[f] εἰ ἐκεῖνοι] om. A. Trinc.
[g] ἔλεγον] λέγουσι A. Trinc.
[h] πολλὰ] καὶ πολλὰ A.
[i] εἰ ἔρως] ἱερῶς Trinc.
[k] θεοῦ] θεῶν A. m. p.
[l] οὔδει] οὔδεος A. Trinc.
[m] πίλναται] πιτνᾶται A. B.

ὅτι οὐκ ἐπὶ σκληροῦ βαίνει, ἀλλ' ἐπὶ μαλθακοῦ. Τῷ αὐτῷ [n] δὴ καὶ ἡμεῖς [o] χρησόμεθα τεκμηρίῳ περὶ Ἔρωτος, ὅτι ἁπαλός· οὐ γὰρ ἐπὶ γῆς βαίνει, οὐδ' ἐπὶ κρανίων, ἅ ἐστιν οὐ πάνυ μαλακὰ, ἀλλ' ἐν [p] τοῖς μαλακωτάτοις τῶν ὄντων βαίνει καὶ οἰκεῖ. Ἐν γὰρ ἤθεσι καὶ ψυχαῖς θεῶν καὶ ἀνθρώπων τὴν οἴκησιν ἵδρυται· καὶ οὐκ αὖ ἐν πάσαις ἑξῆς ταῖς ψυχαῖς, ἀλλὰ ἥτινι ἂν σκληρὸν ἦθος ἐχούσῃ ἐντύχῃ, ἀπέρχεται· ᾗ δ' ἂν μαλακὸν, οἰκίζεται. Ἁπτόμενον οὖν ἀεὶ καὶ ποσὶ καὶ πάντῃ ἐν μαλακωτάτοις τῶν μαλακωτάτων [[q] ἁπαλώτατον] ἀνάγκη εἶναι. Νεώτατος μὲν δή ἐστι καὶ ἁπαλώτατος· πρὸς δὲ τούτοις, ὑγρὸς τὸ εἶδος. Οὐ γὰρ ἂν οἷός τε ἦν πάντῃ περιπτύσσεσθαι, οὐδὲ διὰ πάσης [r] τῆς ψυχῆς καὶ εἰσιὼν τὸ πρῶτον λανθάνειν καὶ ἐξιὼν, εἰ σκληρὸς ἦν. Συμμέτρου δὲ καὶ ὑγρᾶς [s] οὐσίας μέγα τεκμήριον ἡ εὐσχημοσύνη, ὃ δὴ [[t] καὶ] διαφερόντως ἐκ πάντων ὁμολογουμένως Ἔρως ἔχει· ἀσχημοσύνῃ γὰρ καὶ Ἔρωτι πρὸς ἀλλήλους ἀεὶ πόλεμος. Χρόας δὲ κάλλος [u] ἡ κατ' ἄνθη δίαιτα τοῦ θεοῦ [w] σημαίνει· ἀνανθεῖ γὰρ καὶ ἀπηνθηκότι καὶ σώματι καὶ ψυχῇ καὶ ἄλλῳ ὁτῳοῦν οὐκ ἐνίζει Ἔρως, οὗ δ' ἂν εὐώδης τε καὶ εὐανθὴς τόπος ᾖ, ἐνταῦθα [x] δὲ καὶ ἵζει καὶ μένει.

Περὶ μὲν οὖν κάλλους τοῦ θεοῦ καὶ ταῦτα ἱκανὰ, καὶ [y] ἔτι πολλὰ λείπεται· περὶ δὲ ἀρετῆς ἔρωτος μετὰ ταῦτα λεκτέον. Τὸ μὲν μέγιστον, ὅτι Ἔρως [z] οὔτε ἀδικεῖ οὔτε ἀδικεῖται οὔτε ὑπὸ [a] θεοῦ οὔτε θεῶν, οὔτε ὑπ' ἀνθρώ-

[n] δὴ καὶ] δὲ καὶ Trinc.
[o] χρησόμεθα] χρησώμεθα A.
[p] τῷ μαλακωτάτῳ] τοῖς μαλακωτάτοις A. B.
[q] ἁπαλώτατον om. A. Trinc.
[r] τῆς ψυχῆς] τῆς om. A. Trinc.
[s] οὐσίας] ἰδέας Gesn. marg.
[t] καὶ om. A. Trinc.
[u] ἡ κατ' ἄνθη δίαιτα] ἢ καὶ τὰ ἄνθη δὴ (δὲ B) τὰ τοῦ A. B. ἡ κατ' ἄνθη δὴ τὰ Trinc.
[w] σημαίνειεν. ἀνανθεῖ] σημήνει (αι supra). ἄνθεῖ A. σημαίνειεν, ἀνθεῖ Trinc.
[x] δὲ καὶ ἵζει] δ' ἐνίζει B.
[y] ἔτι] ὅτι A. B.
[z] οὔτε ἀδικεῖ om. A. B.
[a] θεοῦ — ἀνθρώπου] θεῶν — ἀνθρώπων B.

που οὔτε ἀνθρώπων· οὐδὲ γὰρ αὐτὸς βίᾳ πάσχει, εἴ τι πάσχει, βία γὰρ Ἔρωτος οὐχ ἅπτεται, οὔτε [[b] βίᾳ] ποιῶν ποιεῖ· [c] πᾶς γὰρ ἑκὼν Ἔρωτι πάνθ' ὑπηρετεῖ· [d] ἃ δ' ἂν [τις] ἑκὼν ἑκοντὶ ὁμολογήσῃ, φασὶν οἱ [e] τῶν πόλεων βασιλεῖς νόμοι δίκαια εἶναι. Πρὸς δὲ τῇ δικαιοσύνῃ σωφροσύνης πλείστης μετέχει· εἶναι γὰρ ὁμολογεῖται σωφροσύνη τὸ κρατεῖν ἡδονῶν καὶ ἐπιθυμιῶν· ἔρωτος δὲ μηδεμίαν ἡδονὴν κρείττω εἶναι. [f] Εἰ δὲ ἥττους κρατοῖντ' ἂν ὑπὸ [[g] τοῦ] Ἔρωτος, ὁ δὲ κρατεῖ, κρατῶν δὲ ἡδονῶν καὶ ἐπιθυμιῶν ὁ Ἔρως διαφερόντως ἂν σωφρονοίη. Καὶ μὴν εἴς γε ἀνδρείαν Ἔρωτι οὐδὲ Ἄρης ἀνθίσταται· οὐ γὰρ ἔχει Ἔρωτα Ἄρης, ἀλλὰ Ἔρως [h] Ἄρην Ἀφροδίτης, ὡς λόγος· [i] κρείττων δὲ ὁ ἔχων τοῦ ἐχομένου· τοῦ δὲ ἀνδρειοτάτου τῶν ἄλλων κρατῶν [k] πάντων ἂν ἀνδρειότατος εἴη.

Περὶ μὲν οὖν δικαιοσύνης καὶ σωφροσύνης καὶ [l] ἀνδρείας τοῦ θεοῦ, εἴρηται· περὶ δὲ σοφίας λείπεται. Ὅσον οὖν δυνατὸν, πειρατέον μὴ ἐλλείπειν· καὶ πρῶτον μὲν, ἵν' [m] αὖ καὶ ἐγὼ τὴν ἡμετέραν τέχνην τιμήσω ὥσπερ [n] Ἐρυξίμαχος τὴν αὑτοῦ, ποιητὴς ὁ θεὸς σοφὸς οὕτως ὥστε καὶ ἄλλον ποιῆσαι. Πᾶς γοῦν ποιητὴς γίγνεται,

κἂν ἄμουσος [o] ᾖ τὸ πρὶν,

οὗ ἂν Ἔρως ἅψηται. Ὧι δὴ πρέπει ἡμᾶς μαρτυρίῳ χρήσασθαι, ὅτι ποιητὴς ὁ Ἔρως ἀγαθὸς ἐν κεφαλαίῳ πᾶσαν ποίησιν τὴν κατὰ μουσικήν. Ἃ γάρ τις ἢ μὴ ἔχει, ἢ μὴ 398
οἶδεν, οὔτ' ἂν ἑτέρῳ δοίη, οὔτε ἂν ἄλλον διδάξειε. Καὶ [p] μὴν

[b] βίᾳ om. A. Trinc.
[c] πᾶς] πῶς B.
[d] ἃ δ' ἄν τις ἑκὼν] ἀν δ' ἀνέκων A. ἄν δ' ἑκὼν B. τις om. Trinc.
[e] τῶν πόλεων] τῶν om. A.
[f] οἱ δὲ] εἰ δὲ A.
[g] τοῦ ἔρωτος] τοῦ om. A. Trinc.
[h] ἄρη] ἄρῆ A. ἄρην B. In superioribus allusio est ad Sophocl. Thyest. fr. 1.
[i] κρείττων] κρεῖττον A.
[k] πάντων ἂν] ἂν om. Trinc.
[l] ἀνδρείας] ἀνδρίας A.
[m] αὖ] οὖν A. B.
[n] ἐρυξίμαχος] ἐριξίμαχος A. B.
[o] ᾖ] εἴη A. p. m. B.
[p] μὲν τὴν] μὴν A. μὴν pro μὲν Trinc.

τήν γε τῶν ζώων ποίησιν [q] πάντων τίς ἐναντιώσεται μὴ οὐχὶ Ἔρωτος εἶναι σοφίαν, ᾗ γίγνεται καὶ φύεται πάντα [r] ζῶα; ἀλλὰ τὴν τῶν τεχνῶν δημιουργίαν οὐκ ἴσμεν, ὅτι οὗ μὲν ἂν ὁ θεὸς οὗτος διδάσκαλος γένηται, ἐλλόγιμος καὶ φανὸς ἀπέβη, οὗ δ᾽ ἂν Ἔρως μὴ ἐφάψηται, σκοτεινός; τοξικήν γε μὴν καὶ ἰατρικὴν καὶ μαντικὴν Ἀπόλλων ἀνεῦρεν, ἐπιθυμίας καὶ ἔρωτος ἡγεμονεύσαντος· ὥστε καὶ οὗτος Ἔρωτος ἂν εἴη μαθητὴς, καὶ Μοῦσαι μουσικῆς, καὶ Ἥφαιστος χαλκείας, καὶ Ἀθηνᾶ ἱστουργίας, καὶ Ζεὺς [s] κυβερνᾶν θεῶν τε καὶ ἀνθρώπων· ὅθεν δὴ καὶ κατεσκευάσθη τῶν θεῶν τὰ πράγματα, Ἔρωτος ἐγγιγνομένου δηλονότι κάλλους· [t] αἴσχει γὰρ οὐκ ἔπεστιν Ἔρως. [u] Πρὸ τοῦ δὲ, ὥσπερ ἐν ἀρχῇ εἶπον, πολλὰ καὶ δεινὰ θεοῖς ἐγίγνετο, ὡς λέγεται, διὰ τὴν τῆς ἀνάγκης βασιλείαν· ἐπειδὴ δ᾽ ὁ θεὸς οὗτος ἔφυ ἐκ τοῦ ἐρᾶν τῶν καλῶν, πάντ᾽ ἀγαθὰ γέγονε καὶ θεοῖς καὶ ἀνθρώποις. Οὕτως ἐμοὶ δοκεῖ, ὦ Φαῖδρε, Ἔρως [w] πρῶτον [x] αὐτὸς ὢν κάλλιστος καὶ ἄριστος, μετὰ τοῦτο τοῖς ἄλλοις [y] ἄλλων τοιούτων αἴτιος εἶναι. Ἐπέρχεται δέ μοι [z] τὶ καὶ ἔμμετρον εἰπεῖν, ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ ποιῶν

εἰρήνην [a] μὲν ἀνθρώποις, πελάγει δὲ γαλήνην,
νηνεμίαν τ᾽ ἀνέμων, κοίτην τ᾽, ὕπνον τ᾽ ἐνὶ κήδει.

οὗτος [b] γὰρ ἡμᾶς [c] ἀλλοτριότητος μὲν κενοῖ, [d] οἰκειότητος δὲ πληροῖ· τὰς τοιάσδε ξυνόδους μετ᾽ ἀλλήλων πάσας τιθεὶς ξυνιέναι, ἐν ἑορταῖς, ἐν χοροῖς, [e] ἐν εὐθυμίαις γιγνόμενος ἡγε-

[q] πάντων] πάντως A. B.
[r] ζῶα] τὰ ζῶα B.
[s] κυβερνήσεως] κυβερνᾶν A. B. καὶ Z.—ἀνθρώπων om. Trinc.
[t] αἴσχει usque ad αἴτιος εἶναι om. Trinc.
[u] πρὸ τοῦ] πρώτου A. B.
[w] πρῶτον] πρὸ τῶν A.
[x] αὐτὸς] αὐτῶν B.
[y] ἄλλων] ἄλλως B.
[z] τι] τε A. om. B.
[a] μὲν] μὲν ἐν B.
[b] δὲ] γὰρ A. Trinc.
[c] ἀλλοτριότητος] ἀλλοτριώτατος A. B.
[d] οἰκειότητος] οἰκειότατος B.
[e] ἐν εὐθυμίαις] ἐν θυσίαις Gesn. marg.

μῶν, πρᾳότητα μὲν πορίζων, ἀγριότητα δὲ ἐξορίζων· [f] φιλόδωρος εὐμενείας, ἄδωρος δυσμενείας· ἵλεως [g] ἀγαθοῖς, θεατὸς σοφοῖς, ἀγαστὸς θεοῖς, ζηλωτὸς ἀμοίροις, κτητὸς εὐμοίροις· τρυφῆς, ἁβρότητος, χλιδῆς, χαρίτων, ἱμέρου, [h] πόθου πατήρ· ἐπιμελὴς ἀγαθῶν, ἀμελὴς κακῶν· ἐν πόνῳ, ἐν φόβῳ, ἐν πόθῳ, ἐν λόγῳ κυβερνήτης, ἐπιβάτης, [i] παραστάτης τε καὶ σωτὴρ ἄριστος· [k] ξυμπάντων τε θεῶν καὶ ἀνθρώπων κόσμος, ἡγεμὼν κάλλιστος καὶ ἄριστος, ᾧ χρὴ ἕπεσθαι πάντ' ἄνδρα ἐφυμνοῦντα [[l] καλῶς] καλῆς ᾠδῆς μετέχοντα, [m] ἣν ᾄδει θέλγων πάντων θεῶν τε καὶ ἀνθρώπων νόημα.

ΨΟΓΟΣ ΑΦΡΟΔΙΤΗΣ· ΚΑΙ ΟΤΙ [a] ΦΑΥΛΟΣ Ο ΕΡΩΣ, ΚΑΙ ΠΟΣΩΝ ΕΙΗ ΚΑΚΩΝ ΓΕΓΟΝΩΣ ΑΙΤΙΟΣ. ΞΔ.

1 [b] Διογένους.

Ὅτ' ἂν δ' ἔρωτος ἐνδεθῶμεν ἄρκυσι,
θᾶσσον θυραίοις τὴν χάριν ποιούμεθα,
ἢ [c] τοῖς ἀνάγκης ἐν γένει πεφυκόσι.

2 [a] Μενάνδρου Ἀφροδισίων.

Ἀλλ' ὅτ' ἂν ἐρῶντα νοῦν ἔχειν τὶς ἀξιοῖ,
[b] παρά τινι [c] τἀνόνητον οὗτος ὄψεται.

3 Μενάνδρου.

[b] μόνος ἔστ' ἀπαρηγόρητον ἀνθρώποις ἔρως.

[f] φιλόδωρος] φιλόδωρος εὐμενείας A. Trinc.
[g] ἀγαθοῖς] ἀγαθὸς Gesn. marg.
[h] πόθου] om. A. B.
[i] καταστάτης] παραστάτης A. B. Gesn. marg.
[k] ξυμπάντων—ἄριστος om. A. B.
[l] καλῶς om. A. Trinc.
[m] ἵν' ἄδει] ἵνα ἄδῃ A. ἵν' ἄδῃ Tr.

1.

[a] ΦΑΥΛΟΣ] φαῦλον A.
[b] Sic A. Δικαιογένους Trinc. Gesn. Grot.

οἷς
[c] τοῖς] τῆς Voss.

2.

[a] Sic A. Cleric. p. 28. Simpl. Μενάνδρου Trinc.
[b] παρὰ τίνι τ'] Malim παρά τινι. Gesner. Sic A.
[c] ἀνώνητον] Lego τἀνόνητον. Gesner. Sic A. ἀνόητα γ' B. παρὰ τίνι τὸ ἀνόητον edidit Grotius.

3.

[b] μόνον] μόνος A. Adscripsit Grotius: "Non cohæret; hoc μόνον est

4 [a] Εὐριπίδου Ἀντιγόνη.

Ἥρων· τὸ μαίνεσθαι δ᾽ ἄρ᾽ ἦν ἔρως βροτοῖς.

5 [a] Εὐριπίδου Δανάη.

Ἔρως γὰρ ἀργὸν κἀπὶ [b] τοῖς ἀργοῖς ἔφυ.
φιλεῖ κάτοπτρα καὶ κόμης ξανθίσματα, 399
φεύγει δὲ μόχθους· [c] ἓν δέ μοι τεκμήριον,
οὐδεὶς προσαιτῶν βίοτον ἠράσθη βροτῶν,
ἐν τοῖς δ᾽ ἔχουσιν [d] † ἡβητὴς πέφυχ᾽ ὅδε.

6 [a] Εὐριπίδου.

[b] Σὺ δ᾽, ὦ κάκιστε θεῶν τε κἀνθρώπων (Ἔρως,)
ἢ μὴ δίδασκε [c] τὰ κακὰ φαίνεσθαι καλὰ,
ἢ τοῖς ἐρῶσιν εὐμενὴς [d] παρίστασο.

7 [a] Εὐριπίδου Ἀνδρομέδας.

Ἔρωτα δεινὸν [b] ἔχομεν· ἐκ δὲ τῶν λόγων

"tamen Menandri." Scilicet in A. collocatur hic versus post n. 5. cum lemmate Μενάνδρου. Vulgo cohæret cum præcedentibus.

4.

[a] Sic A. Scil. fr. 7. Deest lemma Trinc. et sic usque ad n. 10. inclusive.

5.

[a] Sic A. Scil. Fr. 5.

[b] τοῖς ἔργοις] τοιούτοις Plutarch. Amatorio. (p. 757. A.) Grotius in ms. τοῖς ἀργοῖς Piersonus Verisim. p. 135. Vid. Valckenærius Diatr. Euripid. p. 7.

[c] ἓν δέ μοι] ἐν δ᾽ ἐμοὶ A.

[d] ἡ βητὴς] Grotius dedit ἡδυπαθὴς cum hac annotatione: "Nostra "est emendatio, cum vulgo esset "ἡβητὴς, nullo sensu. Delicatus "ille, inquit, non vult nisi cum "divitibus morari. Anapæstus in "quarta sede apud Tragicos ra-"rus non est. At Salmasius ma-"lebat νηπύτης πέφυχ᾽ ὅδε." Alia conjecerunt viri eruditi; v. g. Musgravius ἀμβάτης, Valckenærius, ἐν τοῖς δ᾽ ἔχουσ᾽ ἔφηβος ἐμπέφυχ᾽ ὅδε, Luzacius, ἐν τοῖς δ᾽ ἔχουσι πέφυκεν ἡβητὴς ὅδε. Omnes perperam: nescio an ipse melius, ἐν τοῖς δ᾽ ἔχουσι χρήματ᾽ ἐμπέφυχ᾽ ὅδε.

6.

[a] Sic A. v. Fr. Andromedæ 7.

[b] σὺ δ᾽ ὦ κάκιστε παῖ θεῶν τε καὶ βροτῶν. Hæc est Scaligeri emendatio cum exstaret, Σὺ δ᾽ ὦ κάκιστε πάντων θεῶν κἀνθρώπων. Grotius. Idem in mss. "Vide hunc locum "ampliorem ex Athenæo." (XIII. p. 561. B.) ubi σὺ δ᾽ ὦ τύραννε θεῶν τε κἀνθρώπων ἔρως.

[c] τὰ κακὰ] τὰ καλὰ Arsen. B. et sic Athenæi ms. Reliqua sic leguntur apud Athenæum. Ἢ τοῖς ἐρῶσιν, ὧν σὺ δημιουργὸς εἶ, Μοχθοῦσι μόχθους εὐτυχῶς συνεκπόνει.

[d] παρίστασο] περίστασο Trinc.

7.

[a] Sic A. Scil. Fr. 13.

[b] ἔχομεν] ἔχωμεν A.

ἑλοῦ τὰ βέλτισθ᾽· ὥστ᾽ ἄπιστον ἔστ᾽ ἔρως,
[c] κἂν τῷ κακίστῳ τῶν φρενῶν [d] οἰκεῖν φιλεῖ.

8 [a] Εὐριπίδου Δίκτυϊ.

Κύπρις γὰρ οὐδὲ νουθετουμένη χαλᾷ,
[b] ἄν τ᾽ αὖ βιάζῃ, μᾶλλον [c] ἐντείνειν φιλεῖ,
κἄπειτα τίκτει πόλεμον· εἰς δ᾽ ἀνάστασιν
δόμων περαίνει πολλάκις τὰ τοιάδε.

9 [a] Θεοκρίτου.

Τὰν [b] δ᾽ ἄρα χὼ Δάφνις ποταμείβετο, [c] Κύπρι βαρεῖα,
Κύπρι [d] νεμεσσατὰ, Κύπρι θνατοῖσιν ἀπεχθής.

10 [a] Εὐριπίδου ἐκ Μελεάγρου.

Ἡ γὰρ Κύπρις πέφυκε [b] τῷ σκότῳ φίλη·
τὸ φῶς δ᾽ ἀνάγκην προστίθησι σωφρονεῖν.

11 [a] Ἀρχιλόχου.

Τοῖος γὰρ φιλότητος ἔρως ὑπὸ καρδίην ἐλυσθεὶς
πολλὴν κατ᾽ ἀχλὺν ὀμμάτων ἔχευε,
κλέψας [b] ἐκ στηθέων ἀπαλὰς φρένας.

12 [a] Ἀρχιλόχου.

Δύστηνος, ἔγκειμαι πόθῳ
ἄψυχος, χαλεπῇσι θεῶν ὀδύνῃσιν [b] ἕκητι
πεπαρμένος δι᾽ ὀστέων.

[c] κᾀν] καὶ A. Pro ὥστ᾽ ἄπιστον Piersonus apud Valckenær. Diatr. p. 159. ὡς κάκιστον.
[d] οἰκεῖν] ναρκεῖν A.

8.

[a] Sic A. Scil. Fr. 6.
[b] ἀντ᾽ αὖ βιάζῃ] ἀντὰ βιάζην A.
[c] ἐντείνειν] ἐκτείνειν A.

9.

[a] Sic A. Sc. I. 100. Deest locus Trinc.
[b] δ᾽ ἀχὼ] δ᾽ ἄρα χὼ A.
[c] κύπρι βαρεῖα] Κύπριν βαρεῖαν A.
[d] νεμασσατὰ] μεσσατὰ A.

10.

[a] Sic A. Scil. fr. 22.
[b] τῷ σκότῳ] τῶν σκότων Voss.

11.

[a] Sic A. Trinc.
[b] ἐν στηθέων] ἐκ στήθεων A. B. Gesn. marg.

12.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.
[b] ἕκτῃ] ἕκητι A. Trinc.

13 [a] Σοφοκλέους ἐν Ἀχιλλέως Ἐρασταῖς.

[b] Νόσημ' ἔρωτος τοῦτ' [c] ἐφίμερον κακὸν,
ἔχοιμ' ἂν αὐτὸ μὴ κακῶς ἀπεικάσαι,
ὅτ' ἂν πάγου φανέντος αἰθρίου [d] χεροῖν
κρύσταλλον ἁρπάσωσι [e] παῖδες ἀσταγῆ,
τὰ πρῶτ' ἔχουσιν ἡδονὰς [f] ποταινίους,
τέλος δ' ὁ χυμὸς οὔδ' ὅπως ἀφῇ θέλει,
οὔτ' ἐν χεροῖν τὸ κτῆμα σύμφορον μένειν,
[g] οὕτω γε τοὺς ἐρῶντας αὑτὸς ἵμερος
δρᾶν καὶ τὸ μὴ δρᾶν πολλάκις προΐεται.

14 [a] Φανοκλέους.

Ἢ ὡς [b] Οἰάγροιο πάϊς [c] Θρηΐκιος Ὀρφεὺς
ἐκ θυμοῦ Κάλαϊν στέρξε Βορηϊάδην,
πολλάκι δὲ σκιεροῖσιν ἐν ἄλσεσιν [d] ἕζετ' ἀείδων

13.

[a] Sic A. Scil. Fr. 1. Simpl. Σοφοκλ. Trinc.

[b] ἔρωτος γὰρ νόσημα] ἔρως νόσημα τοῦτ' Grotius. νόσημ' ἔρωτος B. et sic Brunckius.

[c] ἐφήμερον] ἐφίμερον Ars. Brunck. e Meursii correctione.

[d] χερσὶ] χεροῖν B. Brunck. et sic Grotius e Scaligeri emend.

[e] παιδιαῖς ἄγῃ] Salmasius optime emendavit, παῖδες ἀσταγῆ. Ἀσταγὲς et ἄστακτον dicitur quod non stillat. Scaliger conjecerat παιδίαις ἄγει. GROTIUS. Idem in mss: Plutarchus de Garrulitate p. 508. C. ὥσπερ οἱ παῖδες τὸν κρύσταλλον οὔτε κατέχειν οὔτε ἀφεῖναι θέλουσι. Zenobius Cent. V. Prov. 58. ὁ παῖς τὸν κρύσταλλον] ἐπὶ τῶν μήτε κατέχειν δυναμένων, μήτε μεταθεῖναι βουλομένων ἡ παροιμία εἴρηται· μέμνηται αὐτῆς Σοφοκλῆς Ἀχιλλέως Ἐρασταῖς.

[f] ποτ' ἐνίους] ποταινίους B. Brunck. v. Koën. ad Gregor. Dial. Ion. CLXX.

Ib. προσηνέας] Hoc προσηνέας fecimus ex ποτ' ἐνίους, pro quo Scaliger ποταινίους. Malit forte alius προσηνίους. GROTIUS. Idem in mss. προσηνέας] ποταινίους fuerat: non male. fuerat ποτ' ἐνίους. ποταίνιον τὸ νεωστὶ συμβὰν, πρόσφατον. Eustat.

[g] οὔτε] οὕτω γε Grotius e Scaligeri emend. et sic Gesneri margo. οὕτω—αὐτῆς B. ὡὑτὸς Brunck.

14.

[a] Sic A. Trinc.

[b] Οἰάγροιο πάϊς] οἰάγρου παῖδες A. m. p. De toto hoc poemate consulatur inprimis Ruhnkenius Ep. Crit. II. p. 300.

[c] Θρηικίου] Θρηΐκιος A. B. sed in A. a m. sec.

[d] ἕζετ'] ἵζετ' e Voss. citat Valcken. Diatr. p. 199. Sed credo perperam. E Parisiensi A. ἵζετ'

ὃν πόθον, οὐδ᾽ ἦν οἱ θυμὸς ἐν ἡσυχίῃ,
ἀλλ᾽ αἰεί μιν ἄγρυπνοι ὑπὸ [e]ψυχῇ [f]μελεδῶναι
ἔτρυχον θαλερὸν [g]δερκομένου Κάλαϊν.
τὸν μὲν Βιστονίδες κακομήχανοι ἀμφιχυθεῖσαι
ἔκτανον, [h]εὐήκη φάσγανα θηξάμεναι,
οὕνεκα [i]πρῶτος [k]δεῖξεν ἐνὶ Θρήκεσσιν ἔρωτας
ἄρρενας, οὐδὲ πόθους ᾔνεσε θηλυτέρων.
τοῦ δ᾽ ἀπὸ μὲν κεφαλὴν χαλκῷ τάμον, αὐτίκα δ᾽ [l]αὐτὴν
εἰς ἅλα Θρηϊκίην ῥῖψαν ὁμοῦ χέλυϊ
[m]ἥλῳ καρτύνασαι, ἵν᾽ ἐμφορέοιντο θαλάσσῃ
ἄμφω ἅμα, γλαυκοῖς τεγγόμεναι ῥοθίοις.
τὰς δ᾽ ἱερῇ Λέσβῳ πολιὴ ἐπέκελσε θάλασσα·
ἠχὴ δ᾽ ὡς λιγυρῆς πόντον ἐπέσχε λύρης,
νήσους τ᾽, αἰγιαλοὺς θ᾽ ἁλιμυρέας, ἔνθα λίγειαν 400
ἀνέρες Ὀρφείην ἐκτέρισαν κεφαλήν.
ἐν δὲ χέλυν τύμβῳ λιγυρὴν θέσαν, ἣ καὶ ἀναύδους
πέτρας, καὶ Φόρκου [n]στυγνὸν ἔπειθεν ὕδωρ.
ἐκ κείνου μολπαί τε καὶ ἱμερτὴ κιθαριστὺς
[o]νῆσον ἔχει, [p]πασέων δ᾽ ἐστὶν ἀοιδοτάτη.
Θρῆκες δ᾽ ὡς ἐδάησαν [q]Ἀρήϊοι ἔργα γυναικῶν

enotaverat Grotius, in quo tamen ἕζετ᾽ perspecte legitur.

[e] ψυχῇ] ψυχὴν B.

[f] μελεδῶνες] μελεδῶναι A. B. Voss. Ars. Sed vulgatum defendit Ruhnkenius ex Hesiod. Opp. 66. Apollon. Rhod. III. 812. Atqui in Hesiodo μελεδώνας præbet codex ms. omnium, quotquot supersunt, ut videtur, optimus.

[g] δερκόμενον] δερκομένου A. B. Voss.

[h] εὐμήκη] εὐήκη Gesn. marg. A. Voss. Arsen.

[i] πρῶτον] πρῶτος A. m. sec. B.

[k] ἔδειξεν] δεῖξεν A. Trinc.

[l] αὐτίκα δ᾽ αὐτὴν] Trinc. et reliquæ edd. item MS. Leid. vitiose, αὐτίκα δ᾽ ὑπήν. Sed Gesnerus bene correxit αὐτίκα δ᾽ αὐτήν. Quod in ms. Paris. reperit Grotius. RUHNKEN. αὐτὴν habet B. et A. ex em. prius scriptum ᾽ἄπῆν. ὑπῆν Voss. ὑπῆν Arsen. Mox θρηικίαν A. p. m.

[m] ἥλῳ] κύκλῳ Arsen.

[n] στυγνὸν] πικρὸν Gesn. marg. Voss. in textu cum στυγνὸν in marg. φόρτον στυγνὸν ἔπυθεν Trinc.

Ib. Φόρκου—ὕδωρ] Mare scilicet, qualiter dictum, *Phorcique exercitus omnis.* At ὅρκου malebat Salmasius ut Styx intelligatur, Diis jurata. GROTIUS.

[o] νῆσον] νηῶν Voss. Arsen.

[p] πασέων τ᾽] πασέων δ᾽ A. Deest particula Trinc.

[q] ἀρήϊα] ἀρήϊοι A. Voss. Arsen. Gesn. marg.

ἄγρια, καὶ πάντας δεινὸν ἐσῆλθεν ἄχος,
ἃς ἀλόχους ἔστιζον, ἵν' ἐν χροῒ σήματ' ἔχουσαι
κυάνεα στυγεροῦ μὴ [r] λελάθοιντο [s] φόνου.
ποινὰς δ' Ὀρφῆϊ κταμένῳ [t] στίζουσι γυναῖκας
εἰς ἔτι νῦν κείνης εἵνεκεν ἀμπλακίης.

15 [a] Μενάνδρου Ἀνδρία.

Τὸ δ' ἐρᾶν ἐπισκοτεῖ
[b] ἅπασιν, ὡς ἔοικε, καὶ τοῖς εὐλόγως,
καὶ τοῖς καλῶς ἔχουσιν.

16 [a] Κλεινίου.

Μή τις τιμάτω θνητῶν πολύδακρυν ἔρωτα,
μηδὲ πόθον παίδων, μηδ' ἱμερτὴν φιλότητα,
τάων ἰότητι [b] Μορῶν κατέβη πολύκλαυστον ἐς ᾅδην.

17 [a] Μενάνδρου Ἀνεψιός.

Φύσει γὰρ ἔστ' Ἔρως
τοῦ [b] νουθετοῦντος κωφὸν, ἅμα δ' οὐ ῥᾴδιον
νεότητα νικᾶν ἐστι καὶ θεὸν λόγῳ.

18 [a] Τοῦ αὐτοῦ Θησαυρῷ.

Ὅτ' ἂν δ' [b] ἐρῶντος τόλμαν ἀφέλῃς, οἴχεται,

[r] λελάθοιντο] ἐκλελάθοιντο B.

[s] φόνου] πόνου A.

[t] στίζουσι] στίξουσι A. p. m. Sine causa in τίνουσι γυναῖκες mutavit Ruhnkenius. Simili loquendi ratione usus est Suidas v. Ἄρκτος. Χρηστηριαζομένοις δὲ τοῖς Ἀθηναίοις εἶπε λύσιν τῶν κακῶν ἔσεσθαι, εἰ τῆς τελευτησάσης ἄρκτου ποινὰς (sic enim mss. non ut vulgo τινας) ἀρκτεύειν τὰς ἑαυτῶν παρθένους ἀναγκάσουσι.

15.

[a] Sic fere A. ubi ἀνδρεία. Cleric. p. 14. Simpl. Μενάνδρου Tr.

[b] ἅπασιν om. Voss. Trinc. Mox κακῶς Clericus.

16.

[a] Sic A. Trinc.

[b] μορῶν] μοιρῶν A. B. Voss. Arsen. τῶν δ' ἰότητι μόρων dedit Grotius, τῶν δ' e sua, μόρων e Scaligeri correctione. Forte ὧν ἰ. Μύρων. E præcedentibus male repetitur τα, et οι υ sæpe confunduntur.

17.

[a] Sic A. et fere Voss. ubi ἀνεψιός. Cleric. p. 18. Simpl. Μενάνδρου Trinc.

[b] νουθετοῦντας] νομοθετοῦντος A. B. Tr.

18.

[a] Sic A. Cleric. p. 84. Deest lemma Trinc.

[b] ἔρωτος] Argutius hoc mihi vi-

εἰς τοὺς ἰαλέμους [c] τε τοῦτον [d] ἔγγραφε.

19 [a] Ἐκ τῶν Μόσχου Σικελιώτου Βουκολικῶν.

Ἀλφειὸς μετὰ [b] Πίσαν ἐπὴν κατὰ πόντον ὁδεύῃ,
ἔρχεται εἰς Ἀρέθοισαν ἄγων κοτινηφόρον ὕδωρ,
ἕδνα φέρων καλὰ φύλλα καὶ ἄνθεα καὶ κόνιν ἱράν·
καὶ βαθὺς ἐμβαίνει τοῖς κύμασι, [c] τὰν δὲ θάλασσαν
νέρθεν ὑποτροχάει, [d] κοὐ μίγνυται ὕδασιν ὕδωρ.
ἁ δ' οὐκ οἶδε θάλασσα [e] διερχομένου ποταμοῖο.
κῶρος δεινοθέτας, κακομάχανος, [f] αἰνὰ διδάσκων,
καὶ ποταμὸν διὰ φίλτρον Ἔρως ἐδίδαξε [g] κολυμβῆν.

20 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Χρῶτα μὲν οὐ λευκὸς, πυρὶ δ' [b] ἴκελος· ὄμματα δ' αὐτῷ
δριμύλα καὶ φλογόεντα, κακαὶ φρένες, ἁδὺ λάλημα·
οὐ γὰρ ἶσον νοέει καὶ φθέγγεται· ὡς μέλι φωνά·
[c] ἐν δὲ χολᾷ νόος ἐστὶν ἀνάμερος, ἠπεροπευτάς.
καὶ πτερόεις [d] ὡς ὄρνις ἐφίπταται ἄλλον ἐπ' ἄλλῳ,
ἀνέρας ἠδὲ γυναῖκας, ἐπὶ σπλάγχνοις δὲ κάθηται.

21 [a] Ἐκ τῶν Βίωνος Σμυρναίου Βουκολικῶν.

Ἰξευτὰς ἔτι κῶρος ἐν ἄλσεϊ δενδράεντι
ὄρνεα θηρεύων, τὸν ἀπότροπον εἶδεν Ἔρωτα

sum quam quod vulgo ἐρῶντος. Grotius. Vulgatum omnino retinendum censet Bentleius.

[c] δὲ] Vulgo γε. Grotius. Immo vulgo τε, quod servandum existimat Bentleius. Mox ταὐτὸν pro τοῦτον Bentl.

[d] ἔγραφε] ἔγγραφε B. Arsen. Gesn. marg.

19.

[a] Sic A. Ἐκ τ. M. τ. Σικελικοῦ Trinc.

[b] Πίσσαν] πεῖσαν A. πίσαν B. πῖσαν Grotius.

Ib. Confer carmen Græcum in Anthol. I. 73, 1. et Stat. Papinium Epith. St. V. (203.) Grotius in mss.

[c] τὴν] τὰν B.

[d] κοὐ] καὶ A.

[e] διερχομένου] διερχομένω B.

[f] αἰνὰ διδάσκων] ἀναδιδάσκων A.

[g] κολυμβῆν] κολυμβεῖν A. κολυμβᾶν B.

20.

[a] Sic A. Trinc.

[b] ἴκελος] εἴκελος B.

[c] ἐν] ἦν B.

[d] ὡς—ἄλλον—ἄλλῳ] ὅσον—ἄλλοτ'—ἄλλους B.

21.

[a] Sic A. Trinc.

ἐσδόμενον πύξοιο ποτὶ κλάδον· ὡς δ' ἐνόασε,
χαίρων, ὥνεκα δὴ μέγα φαίνετο ὄρνεον αὐτῷ,
τὼς καλάμως ἅμα πάντας ἐπ' ἀλλάλοισι συνάπτων, 401
τᾷ καὶ τᾷ τὸν Ἔρωτα μετάλμενον ἀμφεδόκευεν.
χὠ παῖς [b] ἀσχαλάων ἕνεχ' οἱ τέλος οὐδὲν ἀπάντη,
τὼς καλάμως ῥίψας ποτ' ἀροτρέα πρέσβυν ἵκανεν,
ὅς νιν τάνδε τέχνην ἐδιδάξατο, καὶ λέγεν αὐτῷ,
καί οἱ δεῖξεν Ἔρωτα καθήμενον· αὐτὰρ ὁ πρέσβυς
μειδιάων κίνησε κάρη, καὶ ἀμείβετο παῖδα·
φείδεο [c] τᾶς θήρας, μηδ' ἐς [d] τόδε τ' ὄρνεον ἔρχευ.
φεῦγε μακράν· κακόν ἐντι τὸ θηρίον· ὄλβιος ἐσσῇ,
εἰσόκα μή μιν ἕλῃς· ἢν δ' ἀνέρος ἐς μέτρον ἔλθῃς,
οὗτος ὁ νῦν φεύγων καὶ [e] ἀπάλμενος αὐτὸς ἀφ' αὐτῷ
ἐλθὼν ἐξαπίνας κεφαλὰν ἐπὶ σεῖο καθιξεῖ.

22 [a] Τοῦ αὐτοῦ.

Ἅμερε Κυπρογένεια, Διὸς τέκος [b] ἠδὲ θαλάσσας,
τίπτε τόσον θνατοῖσι καὶ ἀθανάτοισι χαλέπτεις;
τυτθὸν ἔφαν, τί νυ τόσσον [c] ἀπέχθεο, καὶ [d] τί νιν αὐτὰ
ταλίκον ὡς πάντεσσι κακὸν τὸν Ἔρωτα τέκηαι,
ἄγριον, ἄστοργον, μορφᾷ νόον οὐδὲν ὅμοιον;
[e] ἐς τί δέ νιν πτανὸν καὶ ἑκαβόλον ὤπασας [f] ἦμεν,
ὡς μὴ πικρὸν ἐόντα δυναίμεθα τῆνον ἀλύξαι;

23 [a] Θεοκρίτου.

Νῦν ἔγνων τὸν Ἔρωτα· βαρὺς θεός· ἦ ῥα λεαίνης

[b] ἀσχαλάων ἕνεκ' οἱ] ἀσχαλωνῦ- ονεχάοι A. ἤσχαλεν B. οὕνεκα οἱ Trinc. Mox ὃς δὴ τάνδε A.
[c] τὰς θήρας] τὰν θήραν Trinc.
[d] τόδε τ'] τόδ' A. τὤρνεον B.
[e] ἐπάλμενος] ἀπάλμενος A. B.

22.

[a] Sic A. Deest locus Trinc.
[b] ἠδὲ] ἠὲ A. B.
[c] ἀπέχθεο] ἀπήχθεο A. B.
[d] τίναυτα. Vox corrupta. GESNER. τί νιν αὐτὰ A. m. s. B. τί νυ αὐτὰ Grotius e Scaligeri emendatione.
[e] ἐς τί] ἔτι B.
[f] ἡμῖν] ἦμεν A.

23.

[a] Sic A. Trinc.

μαστὸν [b] ἐθήλαξεν, δρυμῷ τέ νιν ἔτραφε μάτηρ,
ὅς με [c] κατασμύχων [d] καὶ ἐς ὀστέον ἄχρις ἰάπτει.

23 [a] Εὐριπίδου Μηδείας.

Φεῦ φεῦ· βροτοῖς ἔρωτες ὡς κακὸν μέγα.

24 [a] Εὐριπίδου Ῥαδάμανθυς.

Ἔρωτες ἡμῖν εἰσι παντοῖοι βίου.
ὁ μὲν γὰρ εὐγένειαν ἱμείρει λαβεῖν·
τῷ δ' οὐχὶ τούτου φροντὶς, ἀλλὰ χρημάτων
πολλῶν κεκλῆσθαι βούλεται πατὴρ δόμοις·
ἄλλῳ δ' ἀρέσκει μηδὲν ὑγιὲς [b] ἐκ φρενῶν
λέγοντι πείθειν τοὺς πέλας τόλμῃ κακῇ·
οἱ δ' αἰσχρὰ κέρδη πρόσθε τοῦ καλοῦ βροτῶν
ζητοῦσιν. Οὕτω βίοτος ἀνθρώπων πλάνη.

25 [a] Ξενοφῶντος ἐν τῷ ᾱ Ἀπομνημονευμάτων.

Ὦ τλῆμον, ἔφη ὁ Σωκράτης, καὶ τί [b] ἂν οἴει [c] παθεῖν καλὸν φιλήσας; ἆρα οὐκ ἂν αὐτίκα μάλα δοῦλος μὲν εἶναι ἀντ' ἐλευθέρου; πολλὰ δὲ δαπανᾶν εἰς βλαβερὰς ἡδονάς; πολλὴν δ' ἀσχολίαν ἔχειν τοῦ ἐπιμεληθῆναί τινος καλοῦ κἀγαθοῦ; [d] σπουδάζειν δ' ἀναγκασθῆναι, ἐφ' οἷς οὐδ' ἂν μαινόμενος σπουδάσειεν; [e] Ἡράκλεις, ἔφη ὁ Ξενοφῶν, ὡς δεινήν τινα λέγεις δύναμιν τοῦ φιλήματος εἶναι. Καὶ τοῦτο, ἔφη ὁ Σωκράτης, θαυμάζεις; οὐκ [f] οἶσθα ὅτι τὰ φαλάγγια οὐδ' [g] ἡμιωβολιαῖα τὸ μέγεθος ὄντα προσαψάμενα μόνον

[b] ἐθήλαξεν] ἐθήλασδε B. Mox δρυμῷ τεῖν Trinc.
[c] κατασμύχων] κατασμήχων Ars.
[d] καὶ ὀστέων] καὶ ἐς ὀστέον B. ὀστέον Voss.

23.

[a] Sic A. Scil. v. 330. Μενάνδρου Trinc.

24.

[a] Sic A. Scil. Fr. 2. Simpl. Ῥαδαμάνθυος Trinc.
[b] ἐκ φρ.] ἐκ om. A.

25.

[a] Sic A. Scil. I. 3, 11. Simpl. Ξενοφῶντος Trinc.
[b] ἂν] ἂν (οὐκ) A. ἄρ B. καὶ ἂν Trinc.
[c] παθεῖν] πείθειν A. m. p.
[d] σπουδάζων] σπουδάζειν Trinc.
[e] ὁ ἡρακλῆς A. p. m.
[f] οἶσθα] οἶσθα ἔφη B.
[g] ἡμιολιαῖα] ἡμιοβολιαῖα A. B. ἡμιωβολίαια Trinc.

τῷ στόματι [h] ταῖς ὀδύναις ἐπιτρίβει τοὺς ἀνθρώπους, καὶ τοῦ φρονεῖν ἐξίστησι; Ναὶ μὰ Δί', ἔφη [i] ὁ Ξενοφῶν· ἐνίησι γάρ τι τὰ φαλάγγια κατὰ τὸ δῆγμα. Ὦ μωρὲ, ἔφη ὁ Σωκράτης, τοὺς δὲ καλοὺς οὐκ οἴει φιλοῦντας ἐνιέναι τὶ, [k] ὃ σὺ 402
οὐχ ὁρᾷς; οὐκ οἶσθα ὅτι τοῦτο τὸ θηρίον ὃ καλοῦσι καλὸν καὶ ὡραῖον, τοσούτῳ δεινότερόν ἐστι [l] τῶν φαλαγγίων, ὅσῳ ἐκεῖνα μὲν ἁψάμενα, τοῦτο [m] δὲ οὐδ' ἁπτόμενον ἐὰν δέ τις αὐτὸ θεᾶται ἐνίησί [n] τι καὶ πάνυ [o] πρόσωθεν τοιοῦτον, ὥστε μαίνεσθαι ποιεῖν· ἴσως δὲ καὶ οἱ ἔρωτες τοξόται διὰ τοῦτο καλοῦνται, ὅτι καὶ [p] πόρρωθεν οἱ καλοὶ τιτρώσκουσιν. Ἀλλὰ ξυμβουλεύω σοι, ὦ Ξενοφῶν, ὁπότ' ἂν ἴδῃς τινὰ καλὸν, φεύγειν προτροπάδην· σοὶ δ', ὦ Κριτόβουλε, συμβουλεύω [q] ἀπενιαυτίσαι· μόγις γὰρ ἂν ἴσως ἐν τοσούτῳ χρόνῳ τὸ δῆγμα ὑγιὲς γένοιτο.

26 [a] Φαβωρίνου.

Πάθος τί [b] μοι προσέπεσε τῇ ψυχῇ, καὶ τί μέν ἐστιν οὐκ οἶδα· ἔρωτα δὲ αὐτὸ λέγουσιν εἶναι οἱ [c] μεμυημένοι. Βάσκανε δαῖμον καὶ ἀλόγιστε, ἀσθενεῖ προσελήλυθας σώματι φέρειν σε μὴ δυναμένῳ· ἐξίσταμαί σου, δαῖμον, παραχωρῶ σοι τῆς μάχης· οὐκ εἰμί [d] σου στρατιώτης.

27 [a] Θεοφράστου.

Ἔρως δέ ἐστιν ἀλογίστου τινὸς ἐπιθυμίας ὑπερβολή, ταχεῖαν μὲν ἔχουσα τὴν πρόσοδον, βραδεῖαν δὲ τὴν ἀπόλυσιν.

[h] ταῖς τ'] deest copula A. Trinc.
[i] Ξενοφῶν] ὁ Ξενοφῶν A. Trinc.
[k] ὃ σὺ] ἢ γὰρ A. ὅτι σὺ B.
[l] φαλαγγίων] τῶν φαλαγγίων A. Trinc. Mox μὲν om. Trinc.
[m] δὲ om. A.
[n] τι] τε ni fallor A.
[o] πρόσωθεν] πόρρωθεν B.
[p] πόρρωθεν] πρόσωθεν Gesn. marg. καὶ addit A.
[q] ἀπενιαυτίσαι] ἀπαντῆσαι A.p.m.

26.
[a] Sic A. Trinc.
[b] μου] μοι A. B.
[c] μεμυημένοι] μεμνημένοι A. N.
[d] σου] σοι A.

27.
[a] Sic A. Trinc. Dictum hoc Theophrasti exstat apud Schol. Theocriti a me e cod. Barocc. vulgatum Id. I. 92. Plura dabit Wyttenbachius Bibl. Crit. XII. p. 25.

28 [a] Προδίκου.

Ἐπιθυμίαν μὲν διπλασιασθεῖσαν ἔρωτα εἶναι, ἔρωτα δὲ διπλασιασθέντα μανίαν γίγνεσθαι.

29 [a] Θεοφράστου.

[b] Θεόφραστος ἐρωτηθεὶς τί ἐστὶν ἔρως, Πάθος, ἔφη, ψυχῆς σχολαζούσης.

30 [a] Ἐκ τῶν Πλουτάρχου Ὅτι οὐ κρίσις ὁ Ἔρως.

Οἱ μὲν γὰρ νοῦν τὸν ἔρωτα, οἱ δ' ἐπιθυμίαν, οἱ δὲ μανίαν, οἱ δὲ θεῖόν τι κίνημα τῆς ψυχῆς καὶ δαιμόνιον· οἱ δὲ ἄντικρυς θεὸν ἀναγορεύουσιν. Ὅθεν ὀρθῶς ἐνίοις ἔδοξε τὸ μὲν ἀρχόμενον ἐπιθυμίαν εἶναι· τὸ δ' ὑπερβάλλον, μανίαν· τὸ δὲ ἀντίστροφον, φιλίαν· τὸ δὲ [b] ταπεινότερον, ἀρρωστίαν· τὸ δ' εὐημεροῦν, ἐνθουσιασμόν. Διὸ καὶ πυρφόρον αὐτὸν οἵ τε ποιηταὶ λέγουσιν, οἵ τε πλάσται καὶ γραφεῖς δημιουργοῦσιν· ὅτι καὶ τοῦ πυρὸς τὸ μὲν λαμπρὸν ἥδιστόν ἐστι· τὸ δὲ καυστικὸν, ἀλγεινότατον.

31 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ὥσπερ γὰρ τοὺς φίλους ὑγιαίνοντας μὲν, ἂν πλημμελῶσιν, ἐξελέγχειν καὶ νουθετεῖν κράτιστόν ἐστιν, ἐν δὲ ταῖς παρακοπαῖς καὶ τοῖς φρενιτισμοῖς εἰώθαμεν μὴ διαμάχεσθαι μηδὲ ἀντιτείνειν, [b] ἀλλὰ καὶ συμπεριφέρεσθαι καὶ συνεπινεύειν· οὕτω [c] τοὺς μὲν δι' ὀργὴν ἢ πλεονεξίαν ἁμαρτάνοντας ἀνακόπτειν τῇ παρρησίᾳ δεῖ καὶ κωλύειν, τοῖς δ' ἐρῶσιν, ὥσπερ νοσοῦσι, συγγνώμην ἔχειν. Διὸ κράτιστον μὲν ἐξ ἀρχῆς τοιούτου πάθους σπέρμα μὴ [d] παρέχεσθαι,

28.

[a] Sic A. Trinc.

29.

[a] Sic A. Trinc.

[b] Θεόφραστος] Θεόφραστος ὁ φιλόσοφος ἐρωτηθεὶς παρά τινος A. Vid. Menag. Diogen. Laërt. VI. 51. ἔφη om. Trinc.

30.

[a] Sic A. Trinc. v. T. V. pag. 567=851.

[b] ταπεινότερον] ταπεινώτερον Voss.

31.

[a] Sic A. Trinc. v. ibid.

[b] ἀλλὰ καὶ] καὶ om. A.

[c] τοὺς] τοὺς μὲν A. B.

[d] παρέχεσθαι] παραδέχεσθαι A. m. sec. B. Recepit Wyttenbach.

[e] μηδὲ ἀρχήν· ἂν δὲ ἐγγένηται, ἴθι ἐπὶ ἀποτροπαίων βωμοὺς [f] θεῶν, κατὰ τὸν Πλάτωνα, ἴθι ἐπὶ τὰς τῶν σοφῶν ἀνδρῶν συνουσίας, ἐξέλασον [g] αὐτοῦ τὸ θηρίον, πρὶν ὄνυχας φῦσαι καὶ ὀδόντας· εἰ δὲ μὴ, μαχέσῃ τελείῳ κακῷ τὸ παιδίον τοῦτο [h] καὶ νήπιον ἐναγκαλιζόμενος. Τίνες δέ εἰσιν οἱ τοῦ ἔρωτος ὄνυχες καὶ ὀδόντες; ὑποψία, ζηλοτυπία. Ἀλλὰ ἔχει τὶ πιθανὸν καὶ ἀνθηρόν· ἀμέλει καὶ [i] ἡ Σφὶγξ εἶχεν ἐπαγωγὸν τὸ ποίκιλμα τοῦ πτεροῦ, καὶ

εἰ μὲν πρὸς αὐγὰς [k] ἡλίου, χρυσωπὸν ἦν 403
[l] νώτισμα θηρός· εἰ δὲ πρὸς νέφη βάλοι,
κυανωπὸν, ὥς τις Ἶρις, [m] ἀνταυγεῖ σέλας.

Οὕτω δὴ καὶ ὁ ἔρως ἔχει τὶ χάριεν καὶ οὐκ ἄμουσον, ἀλλὰ αἱμύλον καὶ ἐπιτερπές· ἁρπάζει [n] δὲ καὶ βίους, καὶ οἴκους, καὶ γάμους, καὶ [o] ἡγεμόνας, οὐκ αἰνίγματα προβάλλων, ἀλλ' αὐτὸς αἴνιγμα δυσεύρετον ὢν καὶ δύσλυτον, εἰ βούλοιτό τις προτείνειν, [p] τί μισεῖ καὶ φιλεῖ, τί φεύγει καὶ διώκει, τί ἀπειλεῖ καὶ ἱκετεύει, τί ὀργίζεται καὶ ἐλεεῖ, βούλεται παύσασθαι καὶ οὐ βούλεται, τί χαίρει τῷ αὐτῷ μάλιστα καὶ ἀνιᾶται, [q] τοῦτο λῦσαι καὶ θεραπεῦσαι. Τῆς μὲν γὰρ Σφιγγὸς τὸ αἴνιγμα τὰ πλεῖστα καὶ πεπλασμένα ἔχει· οὔτε γὰρ τρίπους ὁ γέρων ἀληθῶς, [r] εἰ προσείληφε

[e] μηδὲ ἀρχὴν. Hæc verba punctis notantur tanquam delenda in A.B.

[f] θεῶν om. A.

[g] αὐτοῦ] σαυτοῦ A. m. s. B. σαυτοῦ vel ἑαυτοῦ Gesn. marg.

[h] καὶ om. B.

[i] σφὶγξ] ἡ σφὶγξ A. m. s.

[k] ἡλίου] ἡλίου (τρέψειε) A. ἡλίου τρέψειε B.

[l] νότισμα] νώτισμα A. B. Gesn. marg.

[m] ἀνταυγεῖ] ἀντηύγει A. ex emend. B. Locum hunc ex Euripidis Œdipode sumtum judicat Valckenær. Diatr. Euripid. p. 194.

[n] δὲ καὶ] καὶ om. A. m. sec.

[o] ἡγεμόνας] ἡγεμονίας conj. Wyttenbach.

[p] τί μισεῖ] τίμιος εἶ A. Mox τι ante βούλεται inserit Wakefield.

[q] τοῦτο λῦσαι καὶ θεραπεῦσαι] Et corrupta hæc sunt, et quædam præterea excidisse videntur. Forte reponendum, τὸ αὐτὸ λυμαίνεται καὶ θεραπεύει· τοὺς λύοντας ἀπαγορεύειν ποιήσει. WYTTENBACH.

[r] εἰ προσείληφε] Addo βακτηρίαν: GESNER. Hoc vel βοήθειαν reponendum censet Wyttenbachius. Verius f. εἴ τι προσ.

τοῖς ποσὶ βοηθεῖν· οὔτε τετράπους ὁ νήπιος, ἐπεὶ ταῖς χερσὶν ἐπερείδει τὴν τῶν βάσεων ὑγρότητα καὶ ἀσθένειαν. Τὰ δὲ τῶν ἐρώντων πάθη, ἀληθῆ· στέργουσιν, ἐχθραίνουσι· τὸν αὐτὸν ποθοῦσιν ἀπόντα, τρέμουσι [s]παρόντα· κολακεύουσι, λοιδοροῦσι, προαποθνήσκουσι, φονεύουσιν, εὔχονται μὴ φιλεῖν, καὶ παύσασθαι φιλοῦντες οὐ θέλουσι· σωφρονίζουσι, καὶ [t]πειρῶσι· παιδεύουσι, καὶ διαφθείρουσιν· ἄρχειν θέλουσι, καὶ δουλεύειν ὑπομένουσι. Τοῦτο αἴτιον γέγονε μάλιστα [v]τοῦ μανίαν ὑποληφθῆναι τὸ πάθος.

ἤρων· [w]τὸ μαίνεσθαι δ' ἄρ' ἦν [x]ἔρως βροτοῖς,

ἐρωτικὸς ἀνὴρ Εὐριπίδης φησίν.

32 [a]Τοῦ αὐτοῦ Περὶ Ἔρωτος.

Ὁ ἔρως οὔτε τὴν γένεσιν ἐξαίφνης λαμβάνει καὶ ἀθρόαν, ὡς ὁ θυμὸς, οὔτε παρέρχεται ταχέως, καίπερ εἶναι πτηνὸς λεγόμενος, ἀλλ' ἐξάπτεται [b]μαλακῶς, καὶ σχεδὸν οἷον [c]ἐντήκων ἑαυτόν· ἁψάμενός τε τῆς ψυχῆς παραμένει πολὺν χρόνον, οὐδ' ἐν γηρῶσιν ἐνίοις ἀναπαυόμενος, ἀλλὰ ἐν πολιαῖς ἀκμάζων ἔτι πρόσφατος καὶ νεαρός. Ἂν δὲ καὶ λήξῃ καὶ διαλυθῇ, χρόνῳ μαρανθεὶς, ἢ λόγῳ τινὶ [d]κατασβεσθεὶς, οὔπω παντάπασιν ἐξαπήλλακται τῆς ψυχῆς· ἀλλ' ἐναπολείπει [e]πυρίκαυτον ὕλην καὶ σημεῖα θερμὰ, καθάπερ οἱ κεραυνοὶ τυφόμενοι. Λύπης μὲν γὰρ οὐδὲν ἀπαλλαγείσης ἴχνος ἐν τῇ ψυχῇ παραμένει συνοικοῦν, οὐδ' ὀργῆς τραχείας πεσούσης, στέλλεται δὲ καὶ φλεγμονὴ, ἐπιθυμίας παρεχούσης τραχὺ κίνημα· τὰ δὲ ἐρωτικὰ δήγματα, κἂν ἀποστῇ τὸ θηρίον, οὐκ ἐξανίησι τὸν ἰόν· ἀλλὰ

[s] παρόντα] παρόντος A. Supra ὑπερείδει Trinc.

[t] πηρῶσι] πειρῶσι legendum censet Wyttenbachius.

[v] τοῦ] τὸ A.

[w] τὸ] τοῦ A. m. p. τὸ suprasc. τοῦτο B.

[x] ἔρως] πάθος A. B.

32.

[a] Sic A. v. ibid.

[b] μαλακῶς] μαλακὸς Trinc.

[c] ἐκτήκων] ἐντήκων A. B. Gesn. marg.

επασθεὶς

[d] κατασβεσθεὶς] κατασκευασθεὶς A. κατεπασθεὶς B. Mox Tr. οὔτω.

[e] πυρίκαυτον] πυρίκαυστον Trincavell. Mox σύνοικον Trinc.

[f] ἔνιδροι τὰ ἐντὸς σπαράγματα, καὶ [g] ἀγνοεῖται τί ἦν, πῶς συνέστη, πόθεν εἰς τὴν ψυχὴν ἐνέπεσεν.

33 [a] Σωστράτου ἐν β Κυνηγετικῶν.

Κυανίππος τῷ γένει Θεσσαλὸς γήμας Λευκώνην, τὰ πολλὰ διὰ φιλοκύνηγον ἐνέργειαν ἐν ὕλαις διέτριβεν. Ἡ δὲ νεόνυμφος ὑπολαμβάνουσα συνήθειαν αὐτὸν ἔχειν μεθ' ἑτέρας γυναικὸς κατ' ἴχνος ἠκολούθησε [b] τῷ προειρημένῳ, καὶ ἔν τινι κατακρυβεῖσα συνδένδρῳ τὸ μέλλον ἀπεκαραδόκει. Τῶν δὲ πέριξ κλάδων αἰφνιδίως σεισθέντων, οἱ στιβευταὶ κύνες [c] δόξαντες καὶ αὐτὴν ἀλόγου ζώου δίκην διεσπάραξαν. Τῆς δὲ πράξεως αὐτόπτης γενόμενος Κυάνιππος ἑαυτὸν [d] ἐπικατέσφαξεν.

34 [a] Ἐκ τῶν Θεοδώρου Μεταμορφώσεων.

Σμύρνα Κινύρου θυγάτηρ εἰς ἐπιθυμίαν ἐμπεσοῦσα τοῦ 404
[b] γεννήσαντος [c] τῇ τροφῷ τὴν ἀνάγκην ἐδήλωσεν· ἡ δὲ δόλῳ τὸν δεσπότην [d] ἐνήδρευσεν, εἶπε γὰρ ἐρᾶν τινὰ αὐτοῦ γείτονα παρθένον. Ἀσεβῶς οὖν κατ' ἄγνοιαν ἀναστρεφόμενος, καὶ γνοὺς ὕστερον, ξιφήρης τὴν ἀσελγεστάτην [e] ἐπεδίωκεν· ἡ δὲ [f] περικατάληπτος γινομένη κατὰ πρόνοιαν Ἀφροδίτης εἰς ὁμώνυμον δένδρον μετεμορφώθη.

35 [a] Σωστράτου ἐν δευτέρῳ Τυραννικῶν.

Αἴολος τῶν κατὰ Τυρρηνίαν βασιλεὺς τόπων ἔσχεν ἐξ

[f] ἐνιδροῖ] Sic A. m. p. Est aliud quid a m. sec. quod quale sit non satis perspicio.
[g] ἀγνοεῖται] ἀγνοεῖ B.

33.

[a] Sic A. Trinc.
[b] τούτῳ] τῷ προειρημένῳ A. B.
[c] δόξαντες καὶ αὐτὴν] Malim δήξαντες αὐτήν. GESN. Leg. θηρίον δόξαντες εἶναι e Plutarch. II. p. 310. E.
[d] συγκατέσφαξεν] ἐπικατέσφαξεν A. B. κατέσφαξεν Voss. Arsen.

34.

[a] Sic A. Voss. Trinc. v. Plutarch. II. p. 310. F. ισαντος
[b] γεννήσαντος] γεννήτορος Voss. Arsen.
[c] τῇ τροφῷ] τὸ τροφῷ Trinc.
[d] ἐνέδρυσεν] ἐνήδρευσεν A. B. Voss. Arsen. ἐνύδρευσαν Trinc.
[e] ἐδίωκεν] ἐπεδίωκεν A. B. Voss. ἐπεδίωξεν Arsen. Gesn. marg.
[f] περικατάληπτος] περὶ κατάνην προσγινομένη Trinc.

35.

[a] Sic A. Deest locus Trinc. v. Plutarch. II. p. 312. C.

Ἀμφιθέας θυγατέρας ἓξ καὶ τὸν αὐτὸν ἀριθμὸν ἀρρένων παίδων, ὧν ὁ πρεσβύτατος Μακαρεὺς Κανάκης τῆς ἀδελφῆς [b] ἐρασθεὶς ἐβιάσατο τὴν προειρημένην. Αἴολος δὲ περὶ τούτων μαθὼν τῇ θυγατρὶ ξίφος ἔπεμψεν· ἡ δὲ ὡς νόμον δεξαμένη τὸν σίδηρον αὑτὴν ἀνεῖλε. Μακαρεὺς δὲ τὸν γεννήσαντα προεξιλεωσάμενος ἔδραμεν εἰς τὸν θάλαμον· εὑρὼν δὲ τὴν ἀγαπωμένην αἱμορραγοῦσαν τῷ αὐτῷ ξίφει τὸν βίον περιέγραψε.

36 [a] Κλείταρχος ἐν ε̄ περὶ Ἀλεξάνδρου.

Θε̄. .βυβλι. .οὗπερ κάλλει τὴν ἀνθρωπίνην διενεγκόντος φύσιν τὴν ἰδίαν ἐρασθῆναι θυγατέρα Μύρραν ὀνόματι . . . .

37 [a] Ἀριστοκλέους ἐν ᾱ Παραδόξων.

Ἐφέσιος τῷ γένει νεανίας τῶν ἐπισήμων, υἱὸς Δημοστράτου, ταῖς δ' ἀληθείαις Ἄρεως, [b] τοῦτο τὸ θῆλυ μισῶν γένος, νυκτὸς βαθείας εἰς τὰς πατρῴας ἔτρεχεν ἀγέλας, καὶ ὄνῳ [c] συνεγένετο θηλείᾳ. Ἡ δὲ [d] ἔγκυος [e] γενομένη ἔτεκε κόρην εὐειδεστάτην Ὀνοσκελίαν τοὔνομα, τὴν προσηγορίαν λαβοῦσαν ἀπὸ τοῦ συμπτώματος.

38 [a] Ζωπύρου ἐν γ̄ Θησηΐδος.

Θησεὺς Αἰγέως καὶ Αἴθρας παῖς, ταῖς δ' ἀληθείαις Ποσειδῶνος, ἔχων υἱὸν ἐξ Ἱππολύτης Ἀμάζονος Ἱππόλυτον, ἐπέγημεν αὐτῷ μητρυιὰν Φαίδραν τὴν Μίνωος θυγατέρα καὶ Πασιφάης. Αὕτη τοῦ προγόνου εἰς ἐπιθυμίαν ἐμπεσοῦσα

[b] ἐρασθεὶς] Reliqua dedi ex A. B.

36.

[a] Dedi hunc locum, utcunque mutilum, ex A. Plura ibi legere non potui. In principio legendum forte Θείας . . Βύβλου vel simile quid: cf. Schol. Lycophronis 829.

37.

[a] Sic A. Tr. nisi quod habet ἐν δευτέρῳ π. v. Plutarch. II. p. 312. E.

[b] τοῦτο] οὕτως suprascrip. in B.

[c] συνεγένετο] συνεγίνετο A. B.

[d] ἔγκυος] ἔγγυος A. Trinc.

[e] γενομένη] γινομένη Voss.

38.

[a] Dedi hunc locum ex A. Plutarch. II. p. 314. B. Obiter nota in seqq. προγόνου vertendum esse *privigni.*

τὴν τροφὸν αὐτῷ περὶ συνόδων ἀπέστειλεν· ὁ δ' ὡς κατέλιπε τὰς Ἀθήνας κυνηγίαις προσευκαίρει· τῆς δὲ προαιρέσεως ἡ ἀσελγὴς ἀποτυχοῦσα ψευδεῖς κατὰ τοῦ σώφρονος ἐπιστολὰς ἐχάραξε, καὶ διὰ τὴν ὑπερβολὴν τῶν ἐρώτων βρόχῳ τὸν βίον περιέγραψε. Θησεὺς δὲ ἐκ Θηβῶν ὑποστρέψας, καὶ τὰς διαβολὰς ἀναγνοὺς, ἐκ τῶν τριῶν εὐχῶν ἃς εἶχε παρὰ Ποσειδῶνος μίαν εἰς τὸν υἱὸν ἐδαπάνησεν· ἐαριζομένου δὲ τοῦ Ἱππολύτου παρὰ τὸν αἰγιαλὸν τῆς θαλάσσης ταῦρος ἐπιφανεὶς ἐπτοίησε τοὺς ἵππους, οἵτινες ἀνατρέψαντες τὸ ἅρμα καὶ σύροντες τὸν δεσπότην ἀπέκτειναν.

39 [a] Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδρου.

Καὶ μὲν δὴ βελτίονί σοι προσήκει [b] γίγνεσθαι ἐμοὶ πειθομένῳ, ἢ ἐραστῇ. Ἐκεῖνοι μὲν γὰρ καὶ παρὰ τὸ [c] βέλτιστον τά τε λεγόμενα καὶ τὰ πραττόμενα ἐπαινοῦσι, τὰ μὲν δεδιότες μὴ ἀπέχθωνται, τὰ δὲ καὶ αὐτοὶ χεῖρον διὰ τὴν ἐπιθυμίαν γιγνώσκοντες. Τοιαῦτα γὰρ ὁ ἔρως ἐπιδείκνυται· δυστυχοῦντας μὲν, ἃ μὴ λύπην τοῖς ἄλλοις παρέχει, ἀνιαρὰ [d] ποιεῖ νομίζειν· εὐτυχοῦντας δὲ, καὶ τὰ μὴ ἡδονῆς ἄξια παρ' ἐκείνων ἐπαίνων ἀναγκάζει τυγχάνειν. Ὥστε πολὺ μᾶλλον ἐλεεῖν [e] τοὺς ἐρωμένους, ἢ ζηλοῦν αὐτοὺς προσήκει.

40 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ἄγετε δὴ, [b] ὦ Μοῦσαι, εἴτε δι' ᾠδῆς εἶδος [c] λίγειαι, εἴτε διὰ γένος μουσικὸν τὸ λιγὺ ὂν, ταύτην ἔσχετ' ἐπωνυμίαν, ξύμμοι [d] λάβεσθε τοῦ μύθου, ὅν με ἀναγκάζει ὁ βέλτιστος οὑτοσὶ λέγειν.

39.

[a] Sic A. Scil. p. 233.

[b] γίνεσθαι] γίγνεσθαι A.

[c] βέλτιον] βέλτιστον A. B. Gesn. marg.

[d] ποιεῖ] ποιεῖν B. Trinc.

[e] τοὺς ἐρωμένους] τοῖς ἐρωμένοις A.

40.

[a] Sic A. Scil. p. 237.

[b] ὦ Μοῦσαι] Deest ὦ Trinc.

[c] λίγειαι] λιγεῖαι B. Mox ἔχετ' Tr.

[d] λάβεσθε] λαβέσθαι A.

41 [b]Ὅτι μὲν οὖν δὴ ἐπιθυμία τὶς [c]ὁ ἔρως, ἅπαντι δῆλον· ὅτι δ᾽ αὖ καὶ μὴ ἐρῶντες ἐπιθυμοῦσι τῶν [d]καλῶν, ἴσμεν. Τῷ δὴ τὸν ἐρῶντά τε καὶ μὴ κρινοῦμεν; Δεῖ αὖ νοῆσαι, ὅτι ἡμῶν [e]ἐν ἑκάστῳ δύο [f]τινὲ ἐστὸν [g]ἰδέα, ἄρχοντε καὶ ἄγοντε, [h]οἷν ἑπόμεθα ᾗ ἂν ἄγητον· ἡ μὲν ἔμφυτος οὖσα ἐπιθυμία ἡδονῶν· ἄλλη δὲ ἐπίκτητος δόξα ἐφιεμένη τοῦ [i]ἀρίστου. Τούτω δὲ ἐν ἡμῖν τοτὲ μὲν ὁμονοεῖτον, ἔστι δὲ ὅτε στασιάζετον· καὶ [k]ποτὲ μὲν ἡ ἑτέρα, ἄλλοτε δὲ ἡ ἑτέρα κρατεῖ. Δόξης μὲν οὖν ἐπὶ τὸ ἄριστον λόγῳ ἀγούσης καὶ κρατούσης, τῷ κράτει σωφροσύνη ὄνομα· [l]ἐπιθυμίας δὲ ἀλόγως ἑλκούσης ἐπὶ ἡδονὰς καὶ ἀρξάσης ἐν ἡμῖν, τῇ ἀρχῇ ὕβρις ἐπωνομάσθη. Ὕβρις δὲ δὴ πωλυώνυμον, πολυμελὲς γὰρ καὶ πολυειδές. Καὶ τούτων τῶν [m]ἰδέων ἐκπρεπὴς ἢ ἂν τύχῃ γενομένη, τὴν αὐτῆς ἐπωνυμίαν ἐπονομαζόμενον τὸν ἔχοντα παρέχεται οὔτε τινὰ καλὴν οὔτε ἐπαξίαν κεκλῆσθαι. Περὶ μὲν γὰρ ἐδωδὴν κρατοῦσα τοῦ λόγου τε τοῦ ἀρίστου καὶ τῶν ἄλλων ἐπιθυμιῶν ἐπιθυμία, γαστριμαργία [n]τε καὶ τὸν ἔχοντα ταυτὸν τοῦτο κεκλημένον παρέξεται· περὶ δὲ αὖ μέθας τυραννεύσασα, τὸν κεκτημένον 405 ταύτῃ ἄγουσα, δῆλον οὗ τεύξεται προσρήματος· καὶ τἄλλα δὴ τὰ τούτων ἀδελφὰ καὶ ἀδελφῶν ἐπιθυμιῶν ὀνόματα, τῆς ἀεὶ δυναστευούσης, [o]ὃ προσήκει καλεῖσθαι, πρόδηλον. Ἧς δ᾽ ἕνεκα πάντα [p]τὰ πρόσθεν εἴρηται, σχεδὸν μὲν ἤδη φανερόν· λεχθὲν δὲ ἢ μὴ λεχθὲν πάντως σαφέστερον. Ἡ

41.

[b] Hic μῦθος omittitur, quem narrandum promittit. GESNER.
[c] ὁ ἔρως] Deest ὁ A.
[d] καλῶν, ἴσμεν. τῷ δὴ] καλῶν, ἴσμεν γε δὴ Trinc.
[e] ἐν ἑκάστῳ] ἕνεκα τὼ Trinc.
[f] τινε] τινες B.
[g] εἰδέε] ἕνεκά τὼ ἴδεαι A. ἰδέαι B. εἰδέα Trinc.
[h] οἷον] οἷν Trinc.
[i] ἀρίστου] καλοῦ ἀρίστου A.
[k] πότε] τότε Trinc.
[l] ἐπιθυμίας] ἐπιθυμίαι Trinc.
[m] ἡδέων] ἰδέων A.
[n] τε καὶ] τε om. A.
[o] ᾗ] ὁ A. Trinc.
[p] τὰ om. A. Trinc.

γὰρ ἄνευ λόγου δόξης ἐπὶ τὸ ὀρθὸν ὁρμώσης κρατήσασα ἐπιθυμία, πρὸς ἡδονὴν ἀχθεῖσα κάλλους, καὶ [q] ὑπὸ αὖ τῶν ἑαυτῆς συγγενῶν ἐπιθυμιῶν ἐπὶ σωμάτων [r] κάλλος ἐρρωμένως ῥωσθεῖσα νικήσασα ἀγωγὴ, ἀπ' αὐτῆς τῆς ῥώμης [s] ἐπωνυμίαν λαβοῦσα, ἔρως ἐκλήθη.

42 [b] Εἶεν, ὦ φέριστε. Ὃ μὲν δὴ τυγχάνει ὂν περὶ οὗ βουλευτέον, εἴρηταί τε καὶ ὥρισται. Βλέποντες δὲ δὴ πρὸς αὐτὸ τὰ λοιπὰ λέγωμεν, τίς ὠφέλεια ἢ βλάβη ἀπό τε ἐρῶντος καὶ μὴ τῷ χαριζομένῳ ἐξ [c] εἰκότος συμβήσεται. Τῷ [d] μὲν δὴ ὑπὸ ἐπιθυμίας ἀρχομένῳ δουλεύοντί τε ἡδονῇ ἀνάγκη που τὸν ἐρώμενον ὡς ἥδιστον ἑαυτῷ [e] παρασκευάζειν. Νοσοῦντι δὲ πᾶν ἡδὺ [f] [τὸ] μὴ ἀντιτεῖνον· κρεῖττον δὲ καὶ ἴσον, ἐχθρόν. Οὔτε δὴ κρείττω οὔτε ἰσούμενον ἑκὼν ἐραστὴς παιδικὰ ἀνέξεται, ἥττω δὲ καὶ ὑποδεέστερον ἀεὶ ἀπεργάζεται. Ἥττων δὲ ἀμαθὴς σοφοῦ, δειλὸς ἀνδρείου, ἀδύνατος εἰπεῖν ῥητορικοῦ, βραδὺς ἀγχίνου. Τοσούτων κακῶν καὶ ἔτι πλειόνων κατὰ τὴν διάνοιαν [g] ἐραστὴν ἐρωμένῳ ἀνάγκη γιγνομένων τε καὶ φύσει ἐνόντων, τῶν μὲν ἥδεσθαι, τὰ δὲ παρασκευάζειν, ἢ στέρεσθαι τοῦ παραυτίκα ἡδέος. Φθονερὸν δὴ [h] ἀνάγκη εἶναι, καὶ πολλῶν μὲν ἄλλων συνουσιῶν [i] ἀπείργοντα καὶ ὠφελίμων, ὅθεν ἂν μάλιστ' ἀνὴρ γίγνοιτο, μεγάλης [k] αἴτιον εἶναι βλάβης, μεγίστης δὲ τῆς ὅθεν ἂν φρονιμώτατος εἴη. Τοῦτο δὲ ἡ θεία φιλοσοφία τυγχάνει ὂν, ἧς ἐραστὴν παιδικὰ ἀνάγκη πόρρωθεν εἴργειν, περίφοβον

[q] ὑπὸ om. A. Trinc.
[r] κάλλος] καλῶν Gesn. marg. ἐρρωμένως om. Trinc.
[s] ἐπωνυμίαν] τὴν ἐπωνυμίαν B.

42.

[b] εἶεν. Hic apud Platonem circiter 6. vers. adhuc leguntur, hic omissi. Gesner. ἐκλήθη. εἶεν cohærent in A.
[c] εἰκότος] εἰκότως B. ἐξηκότως Tr.
[d] μὲν] om. A. Trinc.
[e] παρασκευάζειν] παρασκευάζειν κρείττοσ) A. ubi mox om. δέ. κρείττοις B. π. κρείττοσι δὲ Trinc.
[f] τὸ om. A. Trinc. Mox ἀπεργάζεται. ἥττω Trinc.
[g] τοῦ ἐραστοῦ] ἐραστὴν A. Trinc.
[h] ἀνάγκη] ἀνάγκη εἶναι A. Tr.
[i] ἀπείργοντα] ἀπείργονται A.
[k] αἴτιον] αἴτιον εἶναι A. Trinc.

ὄντα [l] τοῦ καταφρονηθῆναι, τά τε ἄλλα μηχανᾶσθαι, ὅπως ἂν ᾖ πάντα ἀγνοῶν καὶ πάντα [m] ἀποβλέπων εἰς τὸν ἐραστήν, οἷος ὢν τῷ μὲν ἥδιστος, ἑαυτῷ δὲ [n] βλαβερώτατος εἴη. Τὰ μὲν οὖν κατὰ διάνοιαν ἐπίτροπός τε καὶ κοινωνὸς οὐδαμῇ λυσιτελὴς ἀνὴρ ἔχων ἔρωτα. Τὴν δὲ τοῦ σώματος ἕξιν τε καὶ θεραπείαν οἵαν τε καὶ ὡς θεραπεύσει, οὗ ἂν γένηται κύριος, ὃς ἡδὺ πρὸ ἀγαθοῦ ἠνάγκασται διώκειν, δεῖ μετὰ ταῦτα ἰδεῖν. Ὀφθήσεται δὲ μαλθακόν τινα καὶ οὐ στερεὸν διώκων, οὐδ᾽ ἐν ἡλίῳ καθαρῷ [o] τεθραμμένον, ἀλλ᾽ ὑπὸ συμμιγεῖ σκιᾷ, πόνων μὲν [p] ἀνδρείων καὶ ἱδρώτων [q] ξηρῶν ἄπειρον, ἔμπειρον δὲ ἁπαλῆς καὶ ἀνάνδρου διαίτης, ἀλλοτρίοις [[r] τε] χρώμασι καὶ κόσμοις, χήτει οἰκείων, κοσμούμενον, ὅσα τε καὶ ἄλλα τούτοις ἕπεται πάντα ἐπιτηδεύοντα. Ἃ δῆλα, καὶ οὐκ ἄξιον περαιτέρω προβαίνειν, ἀλλ᾽ ἓν κεφάλαιον ὁρισαμένους ἐπ᾽ ἄλλο ἰέναι· τὸ γὰρ [s] τοιοῦτον σῶμα, ἐν πολέμῳ τε καὶ ἄλλαις χρείαις ὅσαι μεγάλαι, οἱ μὲν ἐχθροὶ θαρροῦσιν, οἱ δὲ φίλοι καὶ αὐτοὶ οἱ ἐρασταὶ φο- 406
βοῦνται. Τοῦτο μὲν οὖν, ὡς δῆλον, ἐατέον· τὸ δ᾽ ἐφεξῆς ῥητέον, τίνα ἡμῖν ὠφέλειαν ἢ τίνα βλάβην περὶ τὴν κτῆσιν ἡ τοῦ ἐρῶντος ὁμιλία τε [t] καὶ ἐπιτροπία παρέξεται. Σαφὲς δὴ τοῦτό γε παντὶ μέν, μάλιστα δὲ τῷ ἐραστῇ, ὅτι τῶν φιλτάτων καὶ εὐνουστάτων καὶ θειοτάτων [v] κτημάτων ὀρφανὸν [w] πρὸ πάντος εὔξαιτ᾽ ἂν εἶναι τὸν ἐρώμενον. Πατρὸς γὰρ καὶ μητρὸς καὶ συγγενῶν καὶ φίλων στέρεσθαι ἂν αὐτὸν [x] δέξαιτο, διακωλυτὰς καὶ ἐπιτιμητὰς ἡγούμενος τῆς ἡδίστης πρὸς αὐτὸν ὁμιλίας. Ἀλλὰ μὴν οὐσίαν

[l] τοῦ] τῷ A.
[m] βλέπων] ἀποβλέπων A. Trinc.
[n] βλαβερώτατος] βλαβερώτερος Tr.
[o] τεθραμμένον] τεθραμμένος B.
[p] ἀνδρείων] ἀνδρεῖον B.
[q] ξηρῶν om. A. B.
[r] τε om. A. Trinc.

[s] τοιοῦτο] τοιοῦτον A. Trinc.
[t] καὶ ἐπιτροπία usque ad ὅτι om. A. B.
[v] πραγμάτων] κτημάτων A. B.
[w] πρὸ πάντων] παντὸς εὔξαιτ᾽ Gesn. marg.
[x] δέξαιτο] εὔξαντο B.

γ᾽ ἔχοντα χρυσοῦ, ἤ τινος ἄλλης κτήσεως, οὔτε εὐάλωτον ὁμοίως, οὔτε ἁλόντα εὐμεταχείριστον ἡγήσεται. Ἐξ ὧν πᾶσα ἀνάγκη ἐραστὴν παιδικοῖς φθονεῖν μὲν οὐσίαν κεκτημένοις, [y] ἀπολλυμένης δὲ χαίρειν. Ἔτι τοίνυν, ἄγαμον, ἄπαιδα, ἄοικον, ὅτι πλεῖστον χρόνον παιδικὰ ἐραστὴς εὔξαιτ᾽ ἂν γενέσθαι, τὸ αὑτοῦ γλυκὺ ὡς πλεῖστον χρόνον καρποῦσθαι ἐπιθυμῶν. Ἔστι μὲν δὴ καὶ ἄλλα κακά, ἀλλά τις δαίμων ἔμιξε τοῖς πλείστοις ἐν τῷ παραυτίκα ἡδονήν· οἷον κόλακι, δεινῷ θηρίῳ καὶ βλάβῃ μεγάλῃ, ὅμως ἐπέμιξεν ἡ φύσις ἡδονήν τινα οὐκ ἄμουσον· καί τις ἑταίραν ὡς βλαβερὸν ψέξειεν ἄν, καὶ ἄλλα πολλὰ τῶν τοιουτοτρόπων θρεμμάτων τε καὶ ἐπιτηδευμάτων, οἷς τό γε καθ᾽ ἡμέραν ἡδίστοις [z] εἶναι ὑπάρχει· παιδικοῖς δὲ ἐραστὴς πρὸς τῷ βλαβερῷ καὶ εἰς τὸ συνημερεύειν πάντων ἀηδέστατον. Ἥλικα γὰρ δὴ καὶ ὁ [a] παλαιὸς (λόγος) [b] τέρπειν τὸν ἥλικα. Ἡ γάρ, οἶμαι, χρόνου ἰσότης ἐπὶ ἴσας ἡδονὰς ἄγουσα δι᾽ ὁμοιότητα φιλίαν παρέχεται· ἀλλ᾽ ὅμως κόρον γε καὶ ἡ τούτων συνουσία ἔχει. Καὶ μὴν τό γε ἀναγκαῖον [c] αὖ βαρὺ παντὶ περὶ πᾶν λέγεται.

43 Οὐκ ἄρα ἔδει ποτὲ ἐρῶντι καὶ ὑπ᾽ ἀνάγκης ἀνοήτῳ χαρίζεσθαι, ἀλλὰ πολὺ μᾶλλον μὴ ἐρῶντι καὶ νοῦν ἔχοντι· εἰ δὲ μή, ἀναγκαῖον εἴη ἐνδοῦναι αὑτὸν ἀπίστῳ, δυσκόλῳ, φθονερῷ, ἀηδεῖ, βλαβερῷ μὲν πρὸς οὐσίαν, βλαβερῷ δὲ πρὸς τὴν τοῦ σώματος ἕξιν, πολὺ δὲ βλαβερωτάτῳ πρὸς τὴν τῆς ψυχῆς παίδευσιν, [b] ἧς οὔτε ἀνθρώποις οὔτε θεοῖς τῇ ἀληθείᾳ τιμιώτερον οὔτε ἐστὶν, οὔτε ποτὲ ἔσται. Ταῦτά τε οὖν χρή, ὦ παῖ, ξυννοεῖν, καὶ εἰδέναι τὴν ἐραστοῦ φιλίαν, ὅτι οὐ μετ᾽ εὐνοίας γίγνεται, ἀλλὰ σιτίου τρόπον χάριν πλησμονῆς.

[y] ἀπολλυμένοις] ἀπολλυμένης A. Trinc.
[z] εἶναι] συνεῖναι A. B.
[a] παλαιὸς] παλαιὸς φησὶ λόγος B.
[b] τέρπει] τέρπειν A. Trinc.
[c] αὖ] εἶναι A. B. Mox ἂν ante λέγεται om. A. B. Cohærent hæc cum seqq. in A.

43.

[b] ἧς] οἷς A. v. p. 241. B.

ΥΠΕΡ ΚΑΛΛΟΥΣ. ΞΕ.

1 [a] Εὐριπίδου Αἰόλῳ.

Ἴδοιμι δ' αὐτῶν ἔκγον' ἄρρεν' ἀρρένων,
πρῶτον μὲν εἶδος ἀξίους τυραννίδος.
πλείστη γὰρ ἀρετὴ τοῦθ' ὑπάρχον ἐν βίῳ,
τὴν ἀξίωσιν τῶν καλῶν τὸ σῶμ' ἔχειν.

2 [a] Μενάνδρου.

Ὅτ' ἂν φύσει τὸ κάλλος ἐπικοσμῇ τρόπος
χρηστὸς, διπλασίως ὁ προσιὼν ἁλίσκεται. 407

3 [a] Ὁμήρου.

Νιρεὺς [b] αὖ Σύμηθεν ἄγεν τρεῖς νῆας ἐΐσας·
Νιρεὺς Ἀγλαΐης υἱὸς Χαροποῖο τ' ἄνακτος,
Νιρεὺς, ὃς κάλλιστος ἀνὴρ ὑπὸ Ἴλιον ἦλθε.

4 [a] Ἐκ τῶν Βίωνος Βουκολικῶν.

Μορφὰ θηλυτέρῃσι πέλει καλὸν, ἀνέρι δ' ἀλκά.

5 [a] Φιλήμονος Πυρφόρου.

Οὐκ ἔστιν οὔτε ζωγράφος, [b] μὰ τοὺς θεοὺς,
οὔτ' ἀνδριαντοποιὸς [c] ὅστις ἂν πλάσαι
κάλλος [d] τοιοῦτον, οἷον ἡ ἀλήθει' ἔχει.
οὔτ' ἀνδριάντος γὰρ καλῶς [e] πεπλασμένου,
ἂν μὴ τὸν αἰσθησόμενον ἡ τέχνη λάβῃ.

1.

[a] Sic A. Scil. fr. 20. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.

2.

[a] Sic A. Trinc. Cleric. p. 228.

3.

[a] Sic A. Trinc. Scil. Il. Β. 671.
[b] αὖ σύμηθεν] αἰσύμηθεν A. B.

4.

[a] Sic A. Trinc.

5.

[a] Sic A. Cleric. p. 326. Simpl. Φιλήμονος Trinc.
[b] μὰ] μετὰ A.
[c] τις] ὅστις A. οὔτις conj. Gesnerus.
[d] τοιοῦτον] τοσοῦτον A.
[e] πεπλασμένου. Memini olim Porsonum audire dicentem versiculum hic excidisse, tali fere modo supplendum: οὔτ' ὄφελός ἐστ' οὐδ' εὖ γεγραμμένης γραφῆς. Vide *Tracts* p. 255.

6 [a] Ὁμήρου.

Ἤϊεν ἐκ θαλάμοιο περίφρων Πηνελόπεια
Ἀρτέμιδι ἰκέλη ἠδὲ χρυσῇ Ἀφροδίτῃ.

7 [a] Μηνοφίλου Δαμασκηνοῦ Πλοκαμίδων.

Εὐρώπην [b] Λιβύην τε καὶ Ἀσίδα πᾶσαν ἀμείψας,
[c] θαύμασα μυρία καλὰ [d] πολυπλανίης ὑπὸ λυγρῆς,
ἀλλ᾽ οὔπω τοιοῦτον ἴδον σέλας, οὐδ᾽ ἐν Ὀλύμπῳ
αὐτοὺς ἀθανάτους [e] περ οἴομαι ἶσον ἰδέσθαι,
οἷον ἄελπτον ἄπιστον ἐμὸν νόον ἥρπασε φάσμα
καρτερὸν, οὔ τι [f] φατειόν· ὑπ᾽ [g] ἀμφασίῃ δ᾽ ἀλεγεινῇ
θυμὸς ἄδην πεπότητο, λύθεν δέ μοι ἅψεα πάντα
ἐκ κεφαλῆς εἰς ἴχνος, ἀπώλετο δ᾽ [h] Ἑλλὰς ἅπασα
ἐκ στηθέων, καὶ πάντα χαμαὶ πέσεν, ὅσσα περ ἔτλην
ὑγρῇ τε [i] τραφερῇ τε κυλινδόμενος περὶ νόστον.
τόσσον γὰρ περὶ θυμὸν [k] ἀπείριτον ἵκετο θάμβος.
μέλψαι δὲ [l] μνήσειας ἀειθαλέας πλοκαμῖδας,
[m] οἵαν κυδιόωσαν ἀπ᾽ ὀλβίστων σε λοετρῶν
φαιδρὴν εἶδον ἅπασαν, ἐειδομένην Χαρίτεσσιν
ἐρχομέναις πρὸς Ὄλυμπον [n] Ἀκιδαλίης ἀπὸ πηγῆς.

8 [a] Φαβωρίνου.

Ἱκανὸν [b] μὲν οὖν ἴσως καὶ τὸ τῆς ὄψεως, ἂν δὲ ὁ καλὸς

6.

[a] Sic A. Scil. Od. P. 36. Deest Trinc.

7.

[a] Sic fere A. ubi Μηνοφι^λ δ. πλοκαμι^δ. Trinc. Μηνοφίλου Δαμασκηνοῦ. Gesner: *Menopili Damasceni in Plocamisi.* Grotius, *Menophilus Cincinnis.*

[b] λιβύην] λυβίην Trinc.

[c] θαύματα] θαύμασα A. Trinc.

[d] πολύπλανίης] πολὺ πλάνης A. πολυπλανίος B. πολυπλάνης Trinc.

[e] περ om. A. Trinc.

[f] φάτεινον] φατειὸν A. B. ut e conjectura Scaliger. φάτιον Trinc.

[g] ἀφασίῃ] ἀμφασίῃ A. B. ἀμφαδίῃ Gesn. marg. et Grotius.

[h] ἔλασα πᾶσα] ἑλλὰς ἅπασα A. B. Grotius et Scaligeri emend.

[i] τραφερῇ τε] τε om. Trinc. mox ib. κυλινδόμενὸν.

[k] ἀπείριτον] ἀπείρατον N. Trinc.

[l] μνήσειας] μνησίας A.

[m] οἵαν] οἷα Trinc. An οἵαις?

[n] ἀκιδαλέης] ἀκηδαλίης A. Trinc.

8.

[a] Sic Trinc. Φαβουρίνου A.

[b] μὲν οὖν] οὖν om. Trinc.

καὶ αἱμύλος ᾖ καὶ [c] διαλεκτικός. Λέγε, ὦ νεανίσκε· λέγε Ἀντίλοχε· γλυκερώτερον Νέστορος ἐρεῖς· λέγε Τηλέμαχε· σφοδρότερον Ὀδυσσέως ἐρεῖς· λέγε Ἀλκιβιάδη· κἂν μεθύῃς, ἀκουσόμεθα τοῦ μεθύοντος ἡδέως. Τοιοῦτόν ἐστι τὸ καλὸν εἶναι· εὐφραίνει μὲν βλεπόμενος, εὐφραίνει δὲ ἀκουόμενος. Εἰ δέ τῳ κατὰ Πλάτωνα τὸ θάρρος ἦν, εἶπον ἂν ὅτι καὶ πάσας τὰς αἰσθήσεις ὁ καλὸς εὐφραίνει, καὶ οὐκ ἂν ἔδεισα τὴν εὐωχίαν τὴν τῶν καλῶν. Τί γὰρ ἄλλο ποιοῦσιν οἱ τῷ στόματι ψαύοντες; συνάπτουσι τὰς ψυχάς· εἰ γὰρ θέμις [d] ἦν τὸ [e] σῶμα ὑπερβῆναι. Νῦν δὲ ἐοίκασιν περὶ τὸ σῶμα λιπαρεῖν, ὡς περὶ [f] θύρας.

9 [a] Ἐκ τοῦ Μελαγκόμα.

Ἐγὼ οὖν πρῶτον αὐτὸν εὐδαιμονίζω τοῦ κάλλους, ὃ δὴ τῶν ἀνθρωπίνων ἐστὶν ἀγαθῶν ἀριδηλότατον μὲν καὶ ἥδιστον θεοῖς, ἥδιστον δὲ ἀνθρώποις, ἀλυπότατον δὲ τῷ ἔχοντι, καὶ ἐπιγνωσθῆναι ἄριστον. Τὰ μὲν γὰρ ἄλλα ἀγαθὰ κἂν [b] λάθῃ προσόντα, καὶ [c] ἀνδρεία καὶ φρόνησις, εἰ μὴ [d] τύχοι 408
ἔργου τινὸς ἀποδεικνύντος· τὸ δὲ κάλλος οὐχ οἷόν τε λαθεῖν, ἅμα γὰρ τῷ ἔχοντι φαίνεται· εἴποι δ' ἄν τις ὅτι καὶ πρότερον οὕτως ὀξεῖαν αἴσθησιν ἑαυτοῦ παρέχει. Ἔτι δὲ τοῖς μὲν ἀγαθοῖς οἱ πλεῖστοι φθονοῦσι, καὶ δυσμενεῖς [e] γίγνονται· τὸ δὲ κάλλος τοὺς αἰσθανομένους ἑαυτοῦ φίλους ποιεῖται, καὶ οὐδένα ἐχθρὸν ἐᾷ γίγνεσθαι.

[c] λεκτικὸς] διαλεκτικὸς A. B. Gesnerus quædam deesse putat, hunc in sensum supplenda, *magis erit laudandus, vel tale quid.*

[d] ὦν] ὦν (ἦν) A. ἦν B. quod e conjectura reponit Jacobsius in Athen. p. 61. quem vide Anthol. T. VI. p. 337.

[e] σῶμα] σωμα (στό) A. στόμα B.

[f] θύρας] θήρας Trinc.

9.

[a] Sic A. Ἐκ τοῦ Μελαγκομίου Trinc. Vid. Dion. Chrysost. Or. XXIX. p. 293.

[b] λάθοι] λάθῃ A.

[c] ἀνδρεία] ἀνδρία A.

[d] τύχοι] τύχῃ B.

[e] γίνεσθαι] γίγνεσθαι A. γίνονται B.

10 [a] Ἀγησιλάου.

Ἀγησίλαος, πυθομένου τινὸς διὰ τί [b] κομῶσιν, [c] εἶπεν, ὅτι [d] τῶν κόσμων ἀδαπανώτατός ἐστι.

11 [a] Ἀριστοτέλους.

Ἀριστοτέλης ἔφη, τὸ κάλλος πάσης ἐπιστολῆς συστατικώτερον εἶναι.

12 [a] Πλουτάρχου ὑπὲρ Κάλλους.

Τί γάρ; οὐ [b] σύνθετος φύσις ἀνθρώπων ἐκ σώματος καὶ ψυχῆς; ἢ θάτερον ἀρκοῦν ἡμῖν; [c] καὶ πῶς οἷόν τε; τὸ μὲν γὰρ οὐκ ἂν εἴη μὴ χρώμενον ψυχῇ, ψυχὴ δ' οὐκ ἂν εἴη μὴ ἔχουσα τὸ συνερεῖδον. Τί οὖν; ὥσπερ ἐξ ἴσου κοσμεῖται ἑκάτερα τοῖς συγγενέσιν· ἡ μὲν δικαιοσύνῃ καὶ σωφροσύνῃ καὶ φρονήσει, τὸ δὲ ἰσχύϊ καὶ κάλλει καὶ ὑγείᾳ· καὶ πῶς οὐ θαυμαστὸν λέγειν [d] τὰ τῆς ψυχῆς καλὰ, τὰ τοῦ σώματος ὑπερορῶντα;

13 [a] Ἐν ταυτῷ.

Ἡ γοῦν τοῦ σώματος εὐμορφία ψυχῆς ἐστιν ἔργον σώματι χαριζομένης δόξαν εὐμορφίας· πεσέτω γοῦν θανάτῳ τὸ σῶμα, καὶ τῆς ψυχῆς μετῳκισμένης, οὐ στάσις, οὐ χρῶμα, οὐκ ὀφθαλμὸς, οὐ φωνὴ, οὐδὲν ἔτι καταλείπεται τῶν ἐρασμίων προδεδομένον ὑπὸ τῶν ἀρχαίων οἰκητόρων· ὥστε καὶ ψυχὴν συνυβρίζεις λανθάνων, ἧς ἐστιν ἀνθρώπου κάλλος.

14 [a] Ἀριστοτέλους.

Ἀριστοτέλης ἐρωτηθεὶς διὰ τί τῶν καλῶν ὁ ἔρως; Τυφλοῦ, εἶπεν, ἡ ἐρώτησις.

10.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Vid. Wyttenbach. Plut. II. p. 189. F.

[b] κομῶσιν] κ. οἱ Λάκωνες B.

[c] εἶπεν om. Trinc.

[d] τοῦ κόσμου] τῶν κόσμων A. B.

11.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. v. Menag. Diog. Laërt. V. 18. Mox συντατικώτερον Trinc.

12.

[a] Sic A. Scil. T. V. p. 571 = 857. Simpl. Πλουτάρχου Trinc.

[b] σύνθετον] σύνθετος A. B.

[c] καὶ πῶς] καὶ delet Wyttenb.

[d] τὰ] om. A.

13.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

14.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Vide Menag. Diog. Laërt. V. 19.

15 [a] Διογένους.

Διογένης τὰς εὐμόρφους τῶν ἑταιρῶν [b] ἐκάλει βασιλίσσας, πολλοὺς γὰρ [c] πράττειν ἃ ἂν προστάττωσι.

16 [a] Δίου Πυθαγορείου ἐκ τοῦ Περὶ Καλλονῆς.

[b] Τίς ἀγωγὰ βιοτᾶς ὄντως [c] ναμερτὲς εὐδαίμων ζωά; καὶ τίνας [d] ποκὰ χρὴ κρίνεν εὐδαίμονας; ἢ νὴ Δία τὼς [e] σκάνεος καλλονὰν ἔχοντας, δώρημα φύσιος; τούτως γὰρ ὡς [f] ἔνι μασσότερον οἱ πλεῦνες ὡς θεὼς ἢ θεῶν ἱδρύματα [g] ὑποτρέχοντι καὶ θεραπεύοντι θρησκεύοντες οὐ καλὰν θρησκείαν. Καὶ ὄντως ἔμοιγε κατοπτίλλεται ἔχεν τὶ σεμνὸν καὶ θαυμασμῶ ἄξιον. Τὼς μὲν γὰρ [h] ἀτέρως τῶν ἀνθρώπων χάριν [i] ἀπαιτεῦντι οἱ εὖ ἔρξαντες· τοῖς δ' εὐμόρφοις τοὐναντίον οἱ [k] εὐεργετήσαντες χάριν ἔχοντι, ὅτι καὶ ὑπέμειναν εὖ παθεῖν [l] παρ' αὐτῶν. [m] Τουτέως οὖν εὐδαίμονας οἶδα

15.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc. Vid. Diog. Laërt. VI. 63. et Menag. ad V. 19.

[b] ἐκάλει βασιλίσσας] βασιλίσσας ἐκάλει A.

[c] πράττειν] πράττει Trinc.

16.

[a] Sic A. Δίου πυθαγορείου Trinc.

[b] Initium fragmenti, et seqq. minus esse sana, nemo negabit: poterunt autem, mea opinione, Dii verba hac ratione restitui: Τίς ἀγωγὰ βιοτᾶς ναμερτέως εὐδαίμων ζωά; καὶ τίνας ποτε χρὴ κρίνειν εὐδαίμονας; ἢ νὴ Δία τὼς σκάνεος καλλονὰν ἔχοντας, δώραμα φύσιος; τούτως γὰρ ὡς ἔνι μασσότερον οἱ πλεῦνες ὡς θεὼς ἢ θεῶν ἱδρύματα περιέχοντι. Pro ὑπερέχουσι, quod vulgatur, posset etiam legi περιέποντι. Ceteræ correctiones sunt facillimæ: ναμερτᾶς non sollicitassem nisi in ultimo p. 409, 17. legeretur ἁμαρτέως itidem in ναμερτέως commutandum. VALCKENÆR. Ep. ad Rover. p. LXV. In pr. vulgo τίς ἀγὼν ἢ β.

[c] ναμερτᾶς] ναμερτὴς A. Gesn. marg. Litera mutata dedi ναμερτὲς, cujus ὄντως videtur interpretatio.

[d] ποτὲ] ποκὰ A. B.

[e] σκήνεος καλλονὰ] σκάνεος καλὸν ἂν A. B. καλονὰν Trinc.

[f] ἐνὶ] Lego ἔνι. GESN. Sic A. B.

[g] ὑπερέχουσι] ὑποτρέχοντι καὶ θεραπεύοντι A. B. Gesn. marg. περιέποντι καὶ θεραπεύοντι. Valckenær. ad Schol. Euripid. Phœniss. 342.

[h] ἀτέρως] ἀτέρους A.

[i] ἀπαιτεῦντι] ἐπαιτεῦντι Trinc.

[k] εὐεργετήσαντες] εὐεργετήξαντες A. οἱ εὐεργ.—ὑπ' αὐτῶν om. Trinc.

[l] ὑπ'] παρ' A. B.

[m] τουτέως] τούτως τέως ὧν εὐδαίμονας οἶδα, ἕως ἔμμεν δοκοῦντι τοῖς τὰν ὥραν αὐτῶν δηλομένοις ὀπωρίξασθαι. VALCKEN. τούτως ὧν εὐδαίμονας οἶδα τῇ ἔμμεν δοκοῦντι τοῖς τὰν ὥραν αὐτῶν δηλομένοις ὀπωρίξασθαι. ποθ' ὧς, ὑπὸ νομοθέτα, τοιόσδε ἀπαντασεῖται λόγος. KOEN. ad Gregor.

[n] τῆ ἔμμεν [o] δοκεῦντι τοῖς τὰν ὥραν [p] αὐτῶν βολλομένοις ὀπωρίξασθαι· [q] πόθ' ὡς ὑπὸ νομοθέτα τοιόσδε ἀπαντασεῖται λόγος οὐκ ἀσυφάλως μυθεύμενος. Τάδε [r] ἐγὼν, ὦ κράτιστοι ἀνδρῶν, ποτιβλέπων, ἅπαντα τὰ νέα φυλακᾶς τε [s] καὶ ἐπιμελείας δεόμενα, καθάπερ τὰ [t] ζώφυτα περὶ τὸν πρῶτον καιρὸν τῆς αὐξήσιος, τῷ ἀκροσφαλῶς ἔχεν ποτὶ σωτηρίαν, [u] ὑπέλαβον μὴ παρέργως δεῖν αὐτῶν με φυλάσσεν τὰν ἀσθένειαν· ὑμεῖς [w] δέ γ' οἱ ὀρίγνεσθε σωματικᾶς ἁδονᾶς, τέλος 409
ποιεύμενοι, καθάπερ κνώδαλα, τὸν κόρον τῷ πλατιασμῷ, οὐχ ὅτι χάριτος ἢ τιμᾶς ἀλλὰ καὶ μέμψιος ποτὶ κολάσει δικαίως ἐστὲ ἄξιοι τυγχάνεν διὰ [x] τὰς αὐταύτων ἀκολασίας, ἐμβαλλόμενοι [y] ῥύπον [z] ἐν ζωὰν ἐλευθέρων παίδων.

17 [a] Ἐν ταυτῷ.

[b] Ἁ δέ γα εὐμορφία τοῖς [c] ποτοκέλλουσιν ἁδονὰς παρέχει [d] ποθερπύζοισα, καθάπερ ἄγαλμα ἢ γραφὰ ἢ ἅτερον 10

Dial. Dor. XCVII. τούτως ὧν εὐδαίμονας οἶδα ὡς ἔμμεν δοκεῦντι τοῖς τὰν ὥραν αὐτῶν βολλομένοις ὀπωρίξασθαι. Toup. Theocr. XXVIII. 15.

[n] ὡς] τῆ A. τῶ B. τὰ Tr. οἶδα om. Tr.

[o] δοκοῦντι] δοκεῦντι A. B.

[p] αὐτοῖς βαλλομένοις ὀπωρίξασθαι.] Forte αὐτῶν βουλομένοις ὀπωρίζεσθαι. Gesner.

[q] (πόθως ὑπὸ νομοθέταν. τοιόσδε ἅπαντας εἴτε λογος οὐκ ἀσυφάλως μυθεύμενος)] Notata parenthesi imperfecta videntur. Gesn. Vocabula τοιόσδε ἅπαντας om. A. B. Locum feliciter expedivit Koenius.

[r] ἐγὼν] ἐγὼ A. B. ἀγὼν Trinc.

[s] καὶ ἐπιμελείας] καὶ τὰ ἐπιμελείας A. καὶ τἀπιμελείας Trinc.

[t] ζώφυτα] Forte νέα φυτά. Gesner.

[u] ὑπέλαβον] ὑπέλαβον A.

[w] δέ γ' ἃ ὀρίγνεσθ' ἀρωματικᾶς] Lego οἱ ὀρίγνεσθε σωματικᾶς. Gesner. ὑμεῖς δέ γα, οἱ ὀριγνᾶσθε σωματικᾶς. Koenius ad Gregor. Dial. Dor. LX. δ' ἀρίγνεσθ' A. B. δέ γ' ἀορίγνεσθ' Trinc.

[x] τᾶς αὐτῶν] τὰς αὐτῶν B. τὰς ἀντ' αὐτῶν Trinc. Vide supra I. 74.

[y] ῥύπον] ῥῦπ ἂν A.

[z] ἐν ζωᾷ ἀνελευθέρων] ἐν ζωὰν ἐλευθέρων Salmasius, probante Koenio, et conferente Maittair. Dial. p. 250 D. Post παίδων cum A. habeat ἐν ταὐτῷ (non ἐνταῦθα ut Grotius) alterius sectionis indicium feci.

17.

[a] Ἐν ταυτῷ. Sic A. Vulgo cohæret cum præcedentibus. Deest locus Trinc.

[b] ἁ γὰρ εὐμορφία] ἁ δὲ γᾶ A. δέ γ' ἁ B.

[c] ποτικέλλουσιν] ποτοκέλλουσιν A. B. ποτοπτίλλουσιν Ruhnkenius apud Koenium.

[d] πόθον πήξασα] ποθερπύζοισα A. B. ἀδονὰς pro ἀδονᾶς Koenius, qui mox γραφὰ pro γραφὰν.

[c] χειρόκματον [f] ἐπιτήδευμα. Διὸ κἂν θέλοιμι ἔγωγε ἅτερον [g] ἔχεν τὸ κάλλος, ἢ αὐτὸς ἦμεν εὔμορφος· ὥσπερ [h] καὶ οἶνον πιεῖν ἁδὺν καὶ [i] πολύωρον ἢ αὐτὸς [k] ἦμεν βουνὸς, καὶ χιλὸν ποτιφέρεσθαι ἁδὺν, καὶ ἀμπέχεσθαι ἀμπεχόναν καλὰν, ἢ [l] ἦμεν [αὐτὸς] χιλὸς ἢ ἀμπεχόνα. Ἀλλ' ὑποδραμών τις σχεδὸν φάσει· Ἀλλ' ἐγὼ χαίρω ἐπὶ [m] τᾷ ἐμαυτοῦ εὐμορφίᾳ τῷ καὶ ἀτρεκῶς ἀγάλλεσθαι. Ποθ' ὃν ὑποβληδὰν φατίζω πάλιν· [n] Ἀγάλλευ μειράκιον· εὐδαίμονα μὲν γὰρ οὐκ ἔχω ὅπως [o] τὺ φατίζω ναμερτέως [p] μυθαρευόμενος.

18 [a] Πλάτωνος Πολιτείας γ.

Οὐκ οὖν, ἦν δ' ἐγὼ, ὅτου ἂν ξυμπίπτῃ ἔν τε τῇ ψυχῇ καλὰ ἤθη ἐνόντα, καὶ ἐν τῷ εἴδει ὁμολογοῦντα ἐκείνοις καὶ ξυμφωνοῦντα τοῦ αὐτοῦ μετέχοντα τύπου, [b] τοῦτ' ἂν εἴη κάλλιστον θέαμα τῷ δυναμένῳ θεᾶσθαι; [c] Πάνυ γε. [d] Καὶ μὴν τό γε κάλλιστον, ἐρασμιώτατον. Πῶς δ' οὔ; Τῶν δὴ ὅτι μάλιστα τοιούτων ἀνθρώπων ὅ γε μουσικὸς [e] ἐρῴη ἄν· εἰ δὲ ἀξύμφωνος εἴη, οὐκ ἂν ἐρῴη. Οὐκ ἂν εἴγε τι, ἔφη, κατὰ τὴν ψυχὴν [f] ἐλλίποι, εἰ [g] μέντοι κατὰ τὸ σῶμα ὑπομείνειεν ἂν ὥστε θέλειν ἀσπάζεσθαι. Μανθάνω, ἦν δ' ἐγὼ, ὅτι

[e] χειρόκμητον] χειρόκματον A. B.
[f] ἐπίτευγμα] ἐπιτήδευμα A. B.
[g] ἔχεν ἢ] ἔχεν τὸ κάλλος καὶ A. B.
[h] καὶ] εἰ A. B.
[i] πολύωρον] Forte πολυφόρον. GESNER.
[k] ἦμεν] εἶμεν A. B.
[l] ἦμεν αὐτὸς ἢ] εἶμεν χιλὸς ἢ A. B. ἢ ἦμεν αὐτὸς χιλὸς ἢ ἀμπεχόνα Koenius ad Greg. Dial. Dor. CXVII.
[m] τᾷ ἐμαυτοῦ] τᾀμαυτοῦ A. Ejecto χαίρω locum sic refingit Hemsterhusius ad Thomam M. p. 5. ἀλλ' ἐγὼν ἐπὶ τᾷ ἐμωῦτοῦ εὐμορφίᾳ λῶμαι ἀτρεκέως ἀγάλλεσθαι. Koenius l. l: ἀλλ' ἐγὼν χαίρω ἐπὶ τᾷ ἐμαυτοῦ εὐμορφίᾳ τῷ καὶ ἀτέρως ἀγάλλεσθαι. ἀτέρως Dorice pro ἑτέρους: propterea et ipse ob formam meam lætor, quod alii ea delectantur.
[n] ἀγάλλευ] ἀγάλλεο A.
[o] σε φατίζω ἁμαρτέως] τὺ φατίζων ἁμαρτέως A. B.
[p] μυθεύμενος] μυθαρευόμενος A. B.

18.

[a] Sic A. Scil. p. 402. Simpl. Πλάτωνος Trinc.
[b] οὔτ' A. ὅταν pro τοῦτ' ἂν Tr.
[c] πάνυ γε] πολύ γε Gesn. marg.
[d] καὶ τόγε] καὶ μὴν τόγε A. Tr.
[e] ἐρῴη] ἐρῴη ἂν A. Trinc.
[f] ἐλλίποι] ἐλλείποι B.
[g] μέν τοι] μέν τι τοι A. Trinc.

ἔστι σοι ἢ γέγονε παιδικὰ τοιαῦτα, καὶ συγχωρῶ· ἀλλὰ τόδε μοι εἰπέ· σωφροσύνῃ καὶ ἡδονῇ ὑπερβαλλούσῃ ἔστι τὶς κοινωνία; Καὶ πῶς; ἔφη· εἴγε ἔκφρονα ποιεῖ οὐχ ἧττον ἢ λύπη. Ἀλλὰ τῇ ἄλλῃ ἀρετῇ; Οὐδαμῶς. Τί δέ; [h] ὕβρει τε καὶ ἀκολασίᾳ; Πάντων μάλιστα. Μείζω δὲ [i] τινὰ καὶ ὀξυτέραν ἔχεις εἰπεῖν ἡδονὴν τῆς περὶ τὰ ἀφροδίσια; Οὐκ ἔχω, ἦ δ' ὅς, οὐδέ γε μανικωτέραν. Ὁ δὲ [k] ὀρθῶς ἔρως πέφυκε κοσμίου τε καὶ καλοῦ σωφρόνως τε καὶ μουσικῶς ἐρᾶν. Καὶ μάλα, ἦ δ' ὅς. Οὐδὲν ἄρα προσοιστέον μανικὸν οὐδὲ ξυγγενὲς ἀκολασίας τῷ ὀρθῶς [l] ἔρωτι. Οὐ προσοιστέον.

ΚΑΤΑ ΚΑΛΛΟΥΣ. ΞϚ.

1 [a] Εὐριπίδου Οἰδίποδος.

Νοῦν χρὴ [b] θεᾶσθ'· οὐδέν τι τῆς εὐμορφίας
ὄφελος, ὅτ' ἄν τις μὴ [c] φρένας καλὰς ἔχῃ.

2 [a] Εὐριπίδου Χρυσίππῳ.

Γνώμῃ σοφός μοι καὶ χέρ' ἀνδρείαν [b] ἔχοι.
δύσμορφος εἴην μᾶλλον, ἢ καλὸς κακός.

3 [a] Φαβωρίνου.

Ἔτι καὶ νῦν Σωκράτης καλός· Ἀλκιβιάδην δὲ καὶ ζῶντα ἐπιλελοίπει τὸ κάλλος, καὶ πολλοὶ κατόπιν τῆς ὥρας

[h] ὕβρει] ὕβρις A. B.
[i] τινα om. Trinc.
[k] ὀρθῶς] ὀρθὸς B. οὐδὲ pro ὅδε Trinc.
[l] ἔρωτι] ἔρωντι B.

1.

[a] Sic A. Scil. fr. 8. Simpl. Εὐριπίδου Trinc.
[b] θεάσασθαι] θεᾶσθαι Grotius, et sic B. Nescio tamen an melius θεάσασθαι retinere, deleto οὐδέν. Νοῦν χρὴ θεάσασθαι· τί τῆς εὐμορφίας Ὄφελος, ὅτ' ἂν τις μὴ φρένας καλὰς ἔχῃ; Interrogativam, inquit Porsonus Hec. 300., sæpe expulit negativa.
[c] φρένας] τὰς φρένας A. Trinc.

2.

[a] Sic A. Scil. fr. 3. Deest lemma Trinc.
[b] ἔχοι] ἔχειν A. mox κάλλος idem pro καλός. Εἴη pro εἴην conjicit Valckenærius Diatr. p. 20.

3.

[a] Φαβουρίνου A. Deest locus Trinc.

ἀφιγμένοι, ἔνιοι δὲ καὶ τῶν τεθεαμένων αὐτὸν καὶ νῦν ὁρώντων ἐζήτουν [b] τὸν Ἀλκιβιάδην.

4 [a] Πλουτάρχου.

Ἀλλὰ μὴν, ὥσπερ ἔφην, [b] οὐδὲν τῶν ἄλλων κινδύνων 410
γένεσίς ἐστιν, ἀλλὰ μόνου τοῦ σώματος. Τὰ μὲν γὰρ τῆς ψυχῆς κάλλη [c] καὶ σωτηρίας ἐλπίδες εἰσὶ, φρόνησις, εὐσέβεια, δικαιοπραγία· καὶ τὸ παιδείας εὐπρόσωπον κάλλος [d] οἴκου καὶ πόλεως καὶ [e] ἐθνῶν ἀθόρυβος εἰρήνη διατελεῖ γενομένη· ἡ δὲ γυναικῶν εὐμορφία ἀφορμὴ τοῖς πάθεσι καὶ ταῖς ἐπιθυμίαις.

5 [a] Βίωνος.

Βίων πρὸς τοὺς λέγοντας ὅτι τὸ κάλλος τυραννίδα ἔχει, Τὸ κάλλος φεῦ, ἔλεγε, τυραννίδος [b] τριχὶ καταλυομένης.

6 [a] Φαβωρίνου.

Ἡ φύσις ἢ ἑστῶσα σώζεται ἢ φερομένη· ἡ ἑστῶσα μὲν ἐξ ἀθανασίας, φερομένη δὲ ἐξ [b] ἐπιγονῆς. Πρὸς ταῦτα γελοῖος ἂν φανείη ὁ Ἀνακρέων καὶ μικρολόγος τῷ παιδὶ [c] μεμφόμενος ὅτι τῆς κόμης ἀπεκείρατο, λέγων ταῦτα·

ἀπέκειρας δ' ἁπαλῆς
κόμης ἄμωμον ἄνθος.

[b] τὸν Ἀλκ.] Deest articulus A. B.

4.

[a] Sic A. Trinc. v. T. V. p. 572=858.

[b] οὐδὲν—σώματος] Desidero hujusmodi scripturam, οὐδὲν τῶν καλῶν, ἀλλ' ἢ μόνα τὰ τοῦ σώματος, γένεσίς ἐστι κινδύνων. Wyttenbach. Forte leg. οὐδενὸς τῶν ἄλλων, scil. τὸ κάλλος.

[c] καὶ σωτηρίας] Forte, καὶ σώματι σωτηρίας. Wyttenbach.

[d] οἴκου] οὔκουν A.

[e] ἐθῶν] ἐθνῶν A. m. sec. B.

5.

[a] Sic A. Deest lemma Trinc.

[b] τριχῆ] τριχὶ legendum esse apparet ex Plutarch. Amor. II. p. 770. B. ἔτι δὲ φορτικώτερον ὁ σοφιστὴς Βίων τὰς τῶν καλῶν τρίχας Ἁρμοδίους ἐκάλει καὶ Ἀριστογείτονας, ὡς ἅμα καλῆς τυραννίδος ἀπαλλαττομένους ὑπ' αὐτῶν τοὺς ἐραστάς. In verbis quæ hunc locum præcedunt, vulgo etiam legitur τριχῆ αἱρεῖσθαι τὴν φιλίαν pro τριχὶ διαιρεῖσθαι, ut præclare emendavit Ruhnkenius ad Tim. p. 190. Jacobs. in Anthol. IX. p. 128. Leg. τριχὶ pro τριχῆ. em. Plut. ad Platon. III. p. 190. Valcken.

6.

[a] Sic Trinc. Φαβορίνου A.

[b] ἐπιτομῆς] Forte διαδοχῆς Gesner. F. ἐπιγονῆς Wyttenbach. Hoc verum; v. infra p. 417, 4.

[c] μεμφόμενος] φθεγγόμενος A. B.

ἀλλ', ὦ Ἀνάκρεον, μικρὸν ἐπίμεινον, καὶ ὄψει πάντα ἀποκεκαρμένα· ἀποκεκαρμένην μὲν τὴν τῶν ὀμμάτων αὐγήν· ἀποκεκαρμένην δὲ τὴν τοῦ μετώπου χάριν ἀτεχνῶς κατὰ τὸν Ὅμηρον·

[d] Κάρψε μέν οἱ χρόα καλὸν [e] ἐπὶ γναπτοῖσι μέλεσσι,
ξανθὰς δ' ἐκ κεφαλῆς ὄλεσε τρίχας· ἀμφὶ δὲ δέρμα
πάντεσσιν μελέεσσι παλαιοῦ θῆκε γέροντος.

ταῦτα [f] δ' Ἀθηνᾶ μὲν διέθηκε τὸν Ὀδυσσέα· ὁ δὲ χρόνος, πάντας τοὺς καλούς. Εἶτα Ὀδυσσεὺς μὲν ἀναλήψεται καὶ σάρκας καὶ κόμην καὶ χρῶμα· σὺ δέ, ὦ καλὲ παίδων, ἐπειδ' ἂν [g] ταῦτα ἅπαξ ἀποβάλῃς, οὐκ ἔστι σοι πάλιν [h] ἀναβῆναι.

7 [a] Πλουτάρχου ἐκ τοῦ Περὶ Ἔρωτος.

Καὶ τοὺς καλοὺς ὁρᾶν μὲν ἐπιτερπέστατον, ἅψασθαι δὲ καὶ λαβεῖν [b] οὐκ ἀδύνατον οὐδ' ἀκίνδυνον. Μᾶλλον δέ, ὥς φησιν ὁ Ξενοφῶν, τὸ μὲν πῦρ τοὺς ἁψαμένους καίει μόνον, οἱ δὲ καλοὶ καὶ τοὺς μακρὰν ἑστῶτας ὑφάπτουσιν· ἡ γὰρ ὄψις λαβὴ τοῦ πάθους ἐστί.

8 [a] Ξενοφῶντος ἐκ τῆς πρὸς Ἀγλαϊτάδαν ἐπιστολῆς.

Τὸ χαυνοῦσθαι ἐπὶ τῆς ὥρας τῷ κάλλει οὐ μόνον Φυλλίδα τοῦ υἱέως σου φαῖμεν [b] ἂν εἶναι ἁμάρτημα, ἀλλὰ καὶ σόν. Δοκεῖς γάρ μοι οὔτε Λακωνικὸν παθεῖν, οὔθ', ὅπερ χρὴ ἐννοεῖν τὸν σώφρονα, ἀληθεῖ καὶ δικαίῳ ἐπαίνῳ τὸν νοῦν προσέχειν. Τίς γὰρ σαρκὸς οὐ πρὸς ἰσχὺν ἐρρωμένης, ἡδονῆς δὲ ὑπομνήσει ἐπαινουμένης, ἐν δικαίῳ γένοιτ' ἂν λόγος;

[d] μάρψε] κάρψε Arsen. καρψάμενοι junctim A. B.
[e] ἐπιγαμπτοῖσι] ἐπιγναπτοῖσι A.
[f] δ'] δὴ A.
[g] ταῦτα ἅπαξ] ἅπαξ ταῦτα A.
[h] ἀναβῆναι] Lego ἀναλαβεῖν. GESNER. Melius forte ἀνηβᾶν. Theognis 1003. οὐ γὰρ ἀνηβᾶν Δὶς πέλεται πρὸς θεῶν.

7.
[a] Sic A. Simpl. Πλουτάρχου Tr. v. T. V. p. 570=856.
[b] οὐκ ἀκίνδυνον] οὐκ ἀδύνατον οὐδ' ἀκίνδυνον A.

8.
[a] Sic A. Simpl. Ξενοφῶντος Tr.
[b] ἂν om. A.

Σώματος γὰρ ἄνθρωποι ἠγάσθησαν διὰ τὸ ἐπὶ ψυχῇ εἶναι. Τῶν δὲ μικρὸν ὕστερον τὸν ἔπαινον ἀποδρασομένων δι' ὥρας ἀπάνθησιν ἥκιστα χρὴ φροντίζειν τὸν τῷ ὄντι Λάκωνα. Ποιητῶν τε ὅσοι ἀρετὴν ἐπῄνεσαν σώματος ἢ οὐδὲν ἢ ὀλίγιστον ἐπαίνου πέρι ὕμνησαν· ἔργα δὲ ψυχῆς μεγάλα τε καὶ σοφίας ἐγγὺς δι' ᾠδῆς αἰῶνι ἔδοσαν. Σκόπει δὲ, ὦ Ἀγλαϊτάδα, καὶ ἕπου θείῳ λόγῳ, ὃς πιστοῦται ὅτι ψυχὴν μετὰ θεοὺς χρὴ τιμᾶν, [c] τρίτον δὲ Ὀλυμπίων τὸ σῶμα. Ψυχῆς [d] δὲ τιμὴ, μάθησις, καὶ νοῦς συντεταγμένος ἐπὶ φρόνησιν· ὡς οὐκ ἔστιν ὡς [e] ἐπιπολὺ ἀνθρώποις ἄλλο συγ- 411
γενὲς πρὸς θεοὺς παίδευμα. Καὶ τοίνυν τῶν μὲν ἀφρόνων τὸ σῶμα, οὐδ' ἂν εὖ ἡρμοσμένον ἴδῃς, φήσεις καλὸν εἶναι. [f] Ἀνδρεία γὰρ κάλλους ἔλαχεν ἔπαινον, [g] ἐπὶ φρονήσει τέχνης. Τῷ γὰρ ὄντι ἂν [h] φαίης τὰ στερόμενα νοῦ ἔμφρονος αἰσχρὰ πάντα καὶ ἄδικα ἐν ἀνθρώποις ἔσεσθαι. Γεγενῆσθαι οὖν ἐν Λάκωσι τότε σοι ἔσται, ἐπειδ' ἂν νόμων Λακωνικῶν ὑπηρέτην τὸν παῖδα ἀποδείξῃς. [i] Ἀνὴρ δὲ οὔτε τὶς Λάκων, οὔτε Ἀττικὸς ἐγένετο. Ῥεῦμα δὲ ὑπὸ θεῶν ἐπὶ ζώων γενέσει, τῶν τε ἄλλων ὅσα ἡ γῆ ἀνίησι, [k] μετηγμένον.

[c] τρίτον] τρίτων A. B.
[d] δὲ om. A. B.
[e] ἐπιπολὺ] ἐπιτοπολὺ Gesn. marg.
[f] ἀνδρεία] ἀνδρία A.
[g] ἐπιφρονήσει] ἐπὶ φρονήσει duabus vocibus. Gesner.
[h] φαίης] φαίην A. B.
[i] ἀνὴρ] ἀὴρ A.
[k] μετιμένων] μετηγμένον A. B. μετιμένον Trinc.

